महामहोपाध्याय

पं. गोपीनाथ कविराज

तान्त्रिक साहित्य

हिन्दी समिति

तान्त्रिक साहित्य

हिन्दी समिति
सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश शासन
लखनऊ

हिन्दी समिति ग्रन्थमाला—२००

तान्त्रिक साहित्य

[विवरणात्मक ग्रन्थसूची]

•

महामहोपाध्याय,

पं० श्री गोपीनाथ कविराज, एम. ए.; डी. लिट्, पद्मविभूषण

(भूतपूर्व प्रिंसिपल; गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, वाराणसी)

•

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन हिन्दी भवन,

महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ

तान्त्रिक साहित्य

प्रथम संस्करण

१९७२

•

मूल्य ३०.०० रुपये

•

मुद्रक

भार्गव भूषण प्रेस,

त्रिलोचन, वाराणसी

२७/४-७२

प्रकाशकीय

हमें सुख और सन्तोष है कि आज हिन्दी समिति ने अपना एक यज्ञ पूरा कर लिया। वस्तुतः इस ग्रन्थ का प्रकाशन एक प्रकार का यज्ञ ही तो है। हमें अच्छी तरह याद है, जब आज से दशाधिक वर्ष पूर्व महामहोपाध्याय श्री कविराजजी से अनुरोध किया गया था कि आप हिन्दी-समिति के लिए एक ऐसे ग्रन्थ का प्रणयन कर दें जिससे तन्त्र में तथा तन्त्र-साहित्य में अभिरुचि रखनेवाले और इस विषय के जिज्ञासुओं के लिए आवश्यकीय पथ-निर्देश और सामग्री मिल जाय, तब उन्होंने सहज भाव से, अपनी उदार और उदात्त प्रकृति के स्वरूप इस कार्य के लिए स्वीकृति दे दी थी। कविराजजी ने तो स्वीकृति दे दी थी, किन्तु उनका अत्यधिक व्यस्त जीवन और स्वाध्याय एवं साधनामयी दिनचर्या देखते हुए शासन की ओर से यह व्यवस्था की गयी कि कोई योग्य लेखक उनके निकट बैठकर, उनकी सुविधा और निर्देश के अनुसार, यह लेख-कार्य सम्पन्न करें और उसी आवश्यकीय व्यवस्था के अनुसार आज जब यह ग्रन्थ एक प्रकार से पूर्ण हुआ है तो ऐसा लगा कि एक महत्त्वपूर्ण कार्य की सिद्धि और उपलब्धि हुई है।

वैदिक साहित्य के समान ही तान्त्रिक साहित्य भी बहुत विस्तृत और रहस्यपूर्ण है। यों तो दार्शनिक दृष्टि से दोनों का अन्तिम लक्ष्य—परम तत्व एक ही रूप में अवगत होता है, केवल प्रारम्भ की साधन-प्रक्रिया कुछ भिन्न रहती है। एक विशेष आकर्षणवश पूरे देश में तन्त्रशास्त्र का व्यापक प्रचार रहा है और रहस्यात्मक विद्या के रूपमें प्राचीन काल से ही न केवल भारत अपितु तिब्बत, मंगोलिया, नेपाल, चीन, इण्डोनेशिया के निवासियों तथा आधुनिक पाश्चात्य विद्यानुरागियों के बीच भी ये तन्त्र-ग्रन्थ मनन-चिन्तन के रोचक आश्रय रहे हैं। इसलिए यह ग्रन्थराशि व्यापक रूप से लिखित, ताड़पत्रांकित एवं मुद्रित रूपों में निजी संग्रहों, राजभवनों, पुस्तकालयों में संगृहीत रहती आयी है। किन्तु अब कालक्रम से ऐसे अनेकानेक ग्रन्थ विलुप्त होते जा रहे हैं। रहस्य या विधि की अनभिज्ञता और अशिक्षा के कारण इन ग्रन्थों की उपेक्षा भी होने लगी है। फलतः अनेक ऐसे ग्रन्थरत्न कीड़ों के ग्रास बन गये, जीर्ण-शीर्ण हो गये, कुछ देश-देशान्तरों के संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रहे हैं। परिणाम यह हो रहा है कि तान्त्रिक विद्या के अनुशीलनकर्त्ता अभिलाषियों को ये ग्रन्थ न तो सुलभ हो पाते हैं न विषयवस्तु की कुछ जानकारी ही मिल पाती है।

सौभाग्यवश भारतवर्ष के अनुपम निगम-आगमरहस्यज्ञ, महामहोपाध्याय डाक्टर गोपीनाथजी कविराज प्राच्य-प्रतीच्य रहस्य-विद्याओं के मार्मिक ज्ञाता होने के साथ ही, तन्त्रविद्या के अनुभवी व्याख्याता माने जाते हैं और अपनी जराजीर्ण अवस्था में भी जिज्ञासुओं का मार्ग दर्शन करते आ रहे हैं। देश-विदेश के दुर्लभ तन्त्र-ग्रन्थ-संग्रहों का परिशीलन, संशोधन, प्रकाशन और उपदेश आपके विद्याव्यसन का रोचक विषय रहा है। आपने अपने सुदीर्घ अनुसंधान और स्वाध्याय के आधार पर प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना कर हिन्दी समिति को गौरवान्वित किया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ कोश के रूप में अकारादि क्रम में निर्मित है; इसमें प्रायः भारत के निजी, संस्थागत, पुस्तकालयस्थ तन्त्र-ग्रन्थों के लिखित, मुद्रित या केवल उद्धरण रूप में नाम मात्र चर्चित विवरणों का उल्लेख हुआ है और नेपाल दरबार पुस्तकालय, ब्रिटिश म्यूजियम संग्रहालय आदि में तथा विदेशों में सुरक्षित तन्त्र-ग्रन्थों का प्रकरणानुसार विषय-विवेचन भी किया गया है, जो इस कृति की अपनी विशेषता है।

अपने प्रदेश के मुख्य मंत्री पण्डित कमलापति त्रिपाठीजी के भी हम विशेष रूप से कृतज्ञ हैं, जिन्होंने हमारे अनुरोध पर इस ग्रन्थ की भूमिका के स्वरूप दो शब्द लिखने का अनुग्रह किया है। अपने व्यस्त जीवन से कुछ क्षण निकाल कर उन्होंने जो विचार दिये हैं, वे उनके हिन्दी एवं संस्कृत के प्रति प्रेम और भारतीय संस्कृति और निगमागम साहित्य के उन्नयन और प्रकाशन के प्रति उनकी उत्कृष्ट अभिरुचि के प्रतीक है। इस ग्रन्थ के मूल प्रेरणा-स्रोत आदरणीय डाक्टर सम्पूर्णानन्दजी और डा० रामप्रसाद त्रिपाठी रहे हैं, किन्तु इस योजना को सक्रिय बनाने में हमारे मुख्य मंत्री जी का विशेष योगदान रहा है, यह कहना अन्यथा न होगा।

सुविज्ञ जन इस ग्रन्थ की उपलब्धि के लिए पहले से ही उत्सुक रहे हैं। कतिपय अप्रत्याशिक कठिनाइयों के कारण इसके प्रकाशन में पर्याप्त समय लग गया। प्रस्तुत स्वतन्त्रता रजत-जयन्ती वर्ष-समारोह के अवसर पर अपनी ग्रन्थमाला का यह २००वाँ ग्रन्थरत्न पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए समिति विशेष हर्ष का अनुभव करती है। आशा है, अभिलाषी विज्ञजन इसे प्राप्त कर आनन्दित होंगे।

दीपावली, २०२९ वि.
लखनऊ

काशीनाथ उपाध्याय भ्रमर
सचिव, हिन्दी समिति
उत्तर प्रदेश शासन.

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

आमुख

कविराजजी के इस ग्रन्थ पर भूमिका के रूप में कोई टीका करने का अधिकार मुझे नहीं है। अच्छा हुआ होता कि किसी अधिकारी व्यक्ति से, जो तन्त्रशास्त्र का ज्ञाता हो, हम भूमिका लिखवाने की चेष्टा करते। फिर भी इस ग्रन्थ का प्रकाशन शीघ्र हो जाय, इसमें और अधिक विलम्ब न हो, इस कारण यह आवश्यक प्रतीत हुआ विद्वानों के सम्मुख यह ग्रन्थ प्रस्तुत हो जाय।

संस्कृत वाङ्मय में तन्त्र-साहित्य का अपना एक अत्यन्त विशिष्ट स्थान है। यह साहित्य अत्यन्त विशाल

है। ऐसा लगता है, और इतिहास इसका साक्षी है, कि युग-युग से तन्त्र की पद्धति किसी न किसी रूप में निरन्तर साधना के क्षेत्र में अपना स्थान रखती चली आयी है। दुःख की बात है कि वाङमय के इस अतिविशद साहित्य-भंडार की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया और साधकों, तपस्वियों तथा तान्त्रिक पूजा-पद्धति में विश्वास रखनेवालों के सिवाय इस ओर किसी की दृष्टि नहीं गयी।

विद्वानों में बराबर यह विवाद चला आया है कि तान्त्रिक पद्धति वैदिक है अथवा अवैदिक। आगम में तो विशेष स्थान इसे प्राप्त है ही, पर कुछ लोगों का मत है कि पुराणों को जिस प्रकार वैदिक आधार उपलब्ध है उस तरह तन्त्र को प्राप्त नहीं है। बहुत से विशिष्ट विद्वान इस मत से सहमत नहीं हैं और उनका विचार है कि वैदिक साहित्य भी तान्त्रिक विचारों से अछूता नहीं है। वेदों के सिवाय बौद्ध और जैन विचारधारा में तान्त्रिक पद्धति का उदय हुआ स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। हमारी सांस्कृतिक परम्परा का आधार विशेष रूप से पुराण हैं और पुराणों में तान्त्रिक विचारों का बृहद् रूप में समावेश स्पष्ट दिखाई देता है। यह दुर्भाग्य की बात है कि आरम्भ से ही तन्त्र का साहित्य, तान्त्रिक विचारधारा, दर्शन, उसकी साधना, योगाचार, मन्त्रों की सिद्धि की पद्धति और पूजा का क्रम एक रहस्यमय ढंग से अवतरित हुआ और गोपनीयता के आवरण में आरम्भ से ही ढँक गया। धीरे धीरे अज्ञान के वशीभूत यह व्यापक विचार फैला कि तान्त्रिक साधना का स्वरूप केवल जादू-टोना,

मारण, मोहन, और निम्न-स्तर पर कामनाओं की पूर्ति के लिए मन्त्रों की सिद्धि तक ही परिसीमित है। भूत-प्रेतों की सिद्धि, डाकिनियों, पिशाचिनियों की शक्ति की उपलब्धि तान्त्रिक पद्धति की विशेषता है। कदाचित् इसी कारण इस अत्यन्त विशिष्ट, उच्च और उज्ज्वल साधना का पथ विस्मृत होता चला गया और इस साहित्य की उपेक्षा होती चली गयी।

इस ओर विशेष रूप से ध्यान लोगों का तब आकृष्ट हुआ जब कतिपय विदेशी विद्वानों ने लेखनी उठायी और उनके अनुशीलन तथा अनुसंधान के फलस्वरूप तथ्य सामने आये। कविराजजी का ग्रन्थ उन समस्त पहलुओं पर मौलिक प्रकाश डालता है और समस्त ग्रन्थों तथा सारे तान्त्रिक साहित्य का उल्लेख करके उन्होंने विद्वन्मण्डली का ध्यान वेगपूर्वक आकृष्ट किया है। कविराजजी की वह पुस्तक जो 'तान्त्रिक वाङ्मय में शाक्त दृष्टि' के शीर्षक से कुछ वर्ष पूर्व पटना में राष्ट्र भाषा परिषद् की ओर से प्रकाशित हुई है, इस दिशा की जानकारी प्राप्त करने के लिए बहुमूल्य कृति है जिसका अध्ययन तन्त्र-साहित्य का गहरा रूप व्यक्त करता है।

भारतीय वाङ्मय में शाक्त दृष्टि सदा से रही है। इस दृष्टि से जिस शाक्त दर्शनका आविर्भाव हुआ है उसके प्रति मेरी स्वयं परम श्रद्धा है। विशेष जानकारी तो मुझे उपलब्ध नहीं, किन्तु इस विषय में रुचि रखनेवाले एक अति छोटे-से व्यक्ति के रूप में थोड़ा-बहुत विचार करने पर मैं तो इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि यह शाक्त

दर्शन जिस प्रकार अद्वैत की कल्पना की स्पष्ट परिभाषा करता है और धृष्टता न समझी जाय तो नम्रतापूर्वक कह सकता हूँ कि जो शंकाएँ सम्मुख आती हैं उनका जैसा समाधान करता है वैसा और कहीं उपलब्ध नहीं होता। शांकर वेदान्त की महिमा अनोखी है। पर सबके लिए उसका बोधगम्य होना सरल नहीं है। भगवान् शंकराचार्य की तर्क शैली, विषय का निरूपण, उनकी दैवी दार्शनिक दृष्टि और निरपेक्ष सत्य को प्रतिभासित करने के लिए विचारों का अति उत्कृष्ट और ऊँचा धरातल सबको सुलभ नहीं हो पाता। उनका ज्ञान अतीन्द्रिय और अगोचर है और केवल अनुभवगम्य है। पर शाक्त दर्शन जिस प्रकार अद्वैत कल्पना का प्रतिपादन करता है वह सीधे हृदय को और बुद्धि को स्पर्श करता है और शंकाओं का उस प्रकार उन्मूलन करता है जिससे मन आश्वस्त हो जाता है। निर्गुण, निर्विकल्प, विशुद्ध, विभु, चैतन्य शिव की चिति वह पराशक्ति है जो स्वयं निर्विकार और साकार, स्वेच्छया तथा स्वतंत्र रूप से समस्त सृष्टि की स्थिति और लय का कारण है। वह गुणों से अतीत किन्तु गुणाश्रय भी है।

सीधे शब्दों में कहें तो कह सकते हैं कि चैतन्य शिव की चिति जब बहिर्मुख होती है तो वह 'शक्ति' है और जब अन्तर्मुख होती है तो स्वयं 'शिव' है। फलतः शिव और शक्ति का रूप एक ही है जिसकी व्याख्या वाणी से करने पर दो शब्द प्रयुक्त हो जाते हैं। शाक्त दर्शन की यह कल्पना मेरे जैसे साधारण बुद्धि के प्राणी की सभी शंकाओं का उन्मूलन कर देती है। इस

दर्शन के आधार पर योग-साधना की पद्धति का निर्माण हुआ है और तान्त्रिक पूजा-पद्धति इस साधना का सोपान है। यह कल्पना कि मूलाधार कुण्डलिनी के रूप में बैठी महाशक्ति का सम्मिलन, चक्रों का भेदन करके अन्त में मनुष्य में ही निवसित शिव के साथ होता है वह यौगिक प्रक्रिया है जिसकी साधना महापुरुषों, साधकों तथा योगियों द्वारा स्वयं हुई है। तन्त्रों में मन्त्रों का अपना बड़ा उत्कृष्ट स्थान है। मन्त्रों की सिद्धि साधक को उस उच्च स्तर पर ले जाती है जहाँ उसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष–समस्त पुरुषार्थचतुष्टय–को उपलब्ध कराने में समर्थ होती है।

विशेष यौगिक प्रक्रिया, गोपनीय पूजा और साधना का पथ रहस्यमय तन्त्र-पद्धति की विशेषता है जिसका बड़ा भारी साहित्य-भंडार उपलब्ध है। हमारी प्रार्थना और अनुरोध पर कविराजजी ने यह कृपा की। इसके लिए हम ही नहीं, भारतीय संस्कृति और साहित्य के प्रति आस्था रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति और विदेशी जिज्ञासु, जिन्हें हमारी विचार-निधि का ज्ञान प्राप्त करने की अभिलाषा रहती है, वे भी कविराजजी के प्रति कृतज्ञ होंगे और वाङ्मय के उस पक्ष की ओर अध्ययन और अनुशीलन की प्रेरणा प्राप्त करेंगे जो अपना एक अपूर्व और अनूठा स्थान रखता है।

(कमलापति त्रिपाठी)
मुख्य मन्त्री, उत्तर प्रदेश.

लखनऊ,
३१ अक्टूबर, १९७२

तन्त्रायिणे नमः

—यजुर्वेद

* * *

जयति स्वपरिस्पन्दानन्दान्दोलनलीलया ।
मन्त्र तत्त्वं त्रितत्त्वात्म तन्त्रयन्नेत्रमैश्वरम् ।।

—क्षेमराज

* * *

अविगीता च प्रसिद्धिरागमः ।

—अभिनवगुप्त

* * *

न विद्या मातृकापरा ।

—स्वच्छन्दतन्त्र

* * *

आगतं पञ्चवक्त्रात्तु गतं च गिरिजानने ।
मतं च वासुदेवस्य तस्मादागममुच्यते ।।
गुरुशिष्यपदे स्थित्वा स्वयं देवः सदाशिवः ।
प्रश्नोत्तरपदैर्वाक्यैस्तन्त्रं समवतारयत् ।।

—महास्वच्छन्द

भूमिका

तान्त्रिक साधना का निगूढ़ रहस्य तो बहुत दूर रहा, साधारण तत्त्व भी अभी तक इस प्रकार आलोचित नहीं हुआ है कि सुगमता से लोगों को हृदयङ्गम हो सके। परम श्रद्धेय स्वर्गीय शिवचन्द्र विद्यार्णव ने स्वरचित तन्त्रतत्त्व के द्वारा तन्त्रों की ओर शिक्षित समाज का ध्यान आकृष्ट किया था। उनके पश्चात् उनकी प्रेरणा तथा आशीर्वाद से उनके अनुगत उच्चन्यायालयाधीशसर जान जार्ज उडरफ (Sir John George Woodroffe) महोदय तान्त्रिक साधना में श्रद्धासम्पन्न हुए। उन्होंने विभिन्न ग्रन्थों की रचना, कतिपय मूल ग्रन्थों के प्रकाशन तथा भाषान्तर सम्पादन द्वारा लोक-शिक्षा कार्य का व्रत लिया। उनके इस महान् उद्योग में स्वामी प्रत्यगात्मानन्द ने, जिनका उस समय का नाम प्रमथनाथ मुखोपाध्याय था, उनके साथ जो सहयोग किया, वह अनुपम है।

भारतीय संस्कृति अथवा हिन्दू संस्कृति में तान्त्रिक साधना का अत्यन्त उच्च स्थान है। किसी-किसी का मत है कि आर्यसंस्कृतिमूलक प्राचीन संस्कृति के इतिहास में जितने स्तर हैं उनके क्रम-विकास से ही ब्राह्मण संस्कृति तथा हिन्दू संस्कृति का आविर्भाव हुआ है। आर्य संस्कृति में, उनके मतानुसार, वैदिक भावना के तुल्य अवैदिक भावना का भी स्थान रहा है। इसके अतिरिक्त आर्येतर संस्कृति का प्रभाव भी उसके ऊपर पड़ता रहा है। इसीलिए परवर्ती ब्राह्मण संस्कृति में वैदिक, अवैदिक तथा अनार्य संस्कृति का भी प्रभाव पड़ा है। और तो और, विदेशीय संस्कृति ने भी रूपान्तरित होकर विभिन्न युगों में भारतीय संस्कृति को कुछ-न-कुछ स्वांश भेंट किया है। उनका विचार है कि सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वैदिक धर्म में चित् और जड़ के बीच कोई कृत्रिम भेद रेखा नहीं है। दोनों ही सम्मिलित होकर एक अखण्ड सत्ता की, जो चेतना का लक्ष्य है, अनुभूति में सहायक होते हैं।

योग और तन्त्रशास्त्र में इसी साधना की पुष्टि हुई है। योगसाधना के क्षेत्र में मानव-प्रकृति की साधारण प्रवृत्ति के अनुसार आन्तर साधना का समन्वय हुआ है और तन्त्र-साधना में बाह्य साधना का समन्वय हुआ है। तन्त्र वस्तुतः योग से भी व्यापक हैं। वेदवाद

का पहला स्वरूप अलौकिक है। यह सीमा के भीतर पुष्ट हुआ। उसका दूसरा रूप लौकिक है, जिसका भाव समाज के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त है। इसीलिए श्रुति शब्द से वैदिक और तान्त्रिक दोनों श्रुतियों का ग्रहण होता है। दोनों ही प्रामाणिक तथा अपौरुषेय हैं।
(अनिर्वाण, वेदमीमांसा, खण्ड १)।

भारतीय संस्कृति तथा साधना की भली भाँति आलोचना करने के लिए यह आवश्यक है कि वैदिक साहित्य के तुल्य पौराणिक तथा तान्त्रिक साहित्य का भी पूर्ण रूप से ग्रहण किया जाय। यह कहना अनावश्यक है कि पुराण तथा तन्त्र के प्रति वर्तमान शिक्षित समाज का औदासीन्य पूर्ण मात्रा में लक्षित होता है। अवश्य इस औदासीन्य का कारण है, परन्तु वह कारण अल्पाधिक मात्रा में बाह्य और अपरिहार्य है। इन कारणों से प्रत्येक क्षेत्र में अयोग्यता के कारण तथा जागतिक क्षुद्र भाव के सम्बन्ध से शुद्ध वस्तु में भी मल का संचार हो जाता है। परन्तु गम्भीर दृष्टि से निरीक्षण करने पर पता चलता है कि दोनों साधनाओं का एक अनन्य विशिष्ट तात्पर्य है। जब तक इस तात्पर्य का ग्रहण न हो तब तक उस साधना को निष्फल समझना स्वाभाविक है। वह केवल निष्फल ही नहीं, हानिकारक भी हो सकती है। किसी भाव के साथ जैसे उसके गुण का अविच्छिन्न रूप से सम्बन्ध रहता है वैसे ही जागतिक क्षेत्र में बहुत-से दोषों का भी सम्बन्ध रहता है। ये सब दोष आगन्तुक हैं, सांसिद्धिक नहीं हैं। भाव का मूल्य निरूपण करते समय इन सब वर्जनीय दोषों को दूर कर भाव की स्वरूप योग्यता का निरूपण करना चाहिए। आदर्श ही लक्ष्य है। आचरण में आदर्श की जो विकृति होती है वह हेय है।

पौराणिक साहित्य की ओर पार्जिटर (Pargiter) महोदय के समय से विद्वानों की दृष्टि अल्पाधिक मात्रा में आकृष्ट हुई है। इस क्षेत्र में कुछ कार्य भी हुआ है, यह सत्य है। वर्तमान समय में काशी-नरेश की कृपा से व्यापक रूप में पौराणिक आलोचना का सूत्रपात हुआ है। तान्त्रिक साधना के विषय में भी उसी प्रकार आलोचना का सूत्रपात आवश्यक है।

परन्तु यह सहज कार्य नहीं है, क्योंकि इस साधना का यथार्थ स्वरूप अत्यन्त गुह्य है। यद्यपि वर्तमान भारतवर्ष में सर्वत्र ही तान्त्रिक साधना का अल्पाधिक प्रसार है और इसमें विभिन्न आचार और विभिन्न प्रकरण पद्धतियाँ भी परम्परा-क्रम से प्रचलित हैं तथापि गुह्य तत्त्व के विषय में परिज्ञान उतना अधिक है ऐसा प्रतीत नहीं होता।

तान्त्रिक साधना का सम्यक् ज्ञान तथा सर्वाङ्ग परिचय प्राप्त करने के लिए सबसे पहले तान्त्रिक साहित्य का परिज्ञान प्राप्त करना होगा। तान्त्रिक साहित्य का अति-

प्राचीन रूप हम लोगों के निकट अज्ञात है। वैदिक तथा उत्तर वैदिक साहित्य में इसके विषय में बहुत इङ्गितात्मक निदर्शन हैं एवं उस समय के बहुत-से ग्रन्थों में अनति प्राचीन तन्त्र तथा आगम शास्त्र के नाम और वचनों के उद्धरण दिखाई देते हैं, जिससे उस साधना का एक साधारण परिचय प्राप्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त बहुत-से तन्त्र और आगम के ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं, जिनमें अधिकांश अमुद्रित हैं, वे विभिन्न ग्रन्थागारों में सुरक्षित हैं एवं कुछ-कुछ मुद्रित भी हुए हैं।

तान्त्रिक साहित्य की विशालता

तान्त्रिक साहित्य के नाना प्रकार के श्रेणि-विभाग मृगेन्द्र तन्त्र में उल्लिखित हैं—परमेश्वर ने सृष्टिकाल में जीवों के भोग और परापर मुक्तिरूप पुरुषार्थ की सिद्धि के लिए पञ्चस्रोतों में विभक्त निर्मल ज्ञान प्रकाशित किया था। ऊर्ध्व, पूर्व, दक्षिण, उत्तर और पश्चिम ये पाँच स्रोत प्रसिद्ध हैं। निष्कल शिव से अवबोध रूप ज्ञान पहले नाद के आकार में प्रसृत होता है। तदनन्तर वह ज्ञान सदाशिवरूप भूमि में आकर तन्त्र तथा शास्त्र के आकार को प्राप्त होता है। कामिक-आगम के अनुसार सदाशिव के ही प्रत्येक मुख से पाँच स्रोतों का निर्गम हुआ है। उनमें पहला लौकिक है, दूसरा वैदिक है, तीसरा आध्यात्मिक है, चौथा अतिमार्ग और पाँचवाँ मन्त्रात्मक है। मुख पाँच हैं, इसलिए स्रोतों की संख्या समष्टि रूप में २५ है। लौकिक तन्त्र पाँच प्रकार के हैं। वैदिकादि प्रत्येक तन्त्र भी पाँच प्रकार के हैं। सर्वात्मशम्भु कृत सिद्धान्तदीपिका में लौकिकादि विभागों का विवरण दिया गया है। मान्त्रिक तन्त्र पाँच प्रकार के हैं। वे क्रमशः ऊर्ध्व आदि वक्त्रों के भेद से भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। उनमें जो ऊर्ध्व मुख से उत्पन्न है, वह मुक्ति देने वाला सिद्धान्तागम है, जो पूर्वमुख से उत्पन्न है, वह सब प्रकार के विषों को हरने वाला गारुड तन्त्र है, जो उत्तर मुख से उद्भूत है, वह सबके वशीकरण के लिए उद्दिष्ट है, जो पश्चिम मुख से उत्पन्न है, वह भूतग्रह निवारक भूततन्त्र है और जो दक्षिण मुख से उद्गत है, वह शत्रुक्षयकर भैरव-तन्त्र है। यह सम्पूर्ण विवरण कामिकागम में है। तान्त्रिक लोग कहते हैं कि नादरूप ज्ञान के अतिरिक्त शास्त्ररूप ज्ञान में वेदादि अपर ज्ञान से सिद्धान्तज्ञान उत्कृष्ट है। सिद्धान्त-ज्ञान में भी शिवज्ञान तथा रुद्रज्ञान में परापर भेद है। शिवज्ञान में भी परापर भेद है और रुद्रज्ञान में भी वह समान रूप से विद्यमान है। इसका मूल है प्रवक्ता का क्रम।

यह शब्दज्ञानात्मक शास्त्र का भेद है। अवबोधरूप ज्ञान में भी वैचित्र्य है––शुद्ध मार्ग का ज्ञान, अशुद्ध मार्ग का ज्ञान, शिव का ज्ञान, सदाशिव का ज्ञान, पशु का ज्ञान इत्यादि। माया के प्रकाशकत्व भेद से बोध में भी वैचित्र्य है। दीक्षा रूप जो ज्ञान है उसमें भी नाना प्रकार के भेद हैं––जैसे नैष्ठिक, भौतिक, निर्बीज, सबीज, शिवधर्मी, लोकधर्मी इत्यादि। इसीलिए स्वायम्भुव आगम में कहा गया है कि शिवमुख से उत्पन्न ज्ञान स्वरूपतः एक होने पर भी अर्थसम्बन्ध-भेद से विभिन्न प्रकार का है। इस दृष्टि से शिवज्ञान १० प्रकार का और रुद्रज्ञान १८ प्रकार का है। वक्ता के भेद से जैसे ज्ञान भिन्न होता है वैसे ही एक-वक्तृज्ञान भी श्रोता के भेद से भिन्न होता है। शिवागमों में पारम्पर्य तीन हैं और रुद्रागमों में दो हैं। इसीलिए १०×३=३० तथा १८×२=३६, दोनों को मिला कर कुल ६६ भेद हैं।

किरणागम के मतानुसार १० शिवागमों के भेद इस प्रकार हैं––

क्रम सं०	**आगमात्मक ज्ञान**	**प्रथम पाने वाले**	**२य पाने वाले**	**३य पाने वाले**
१	कामिक	प्रणव	त्रिकल	हर
२	योगज	सुधा	भस्मसंग	प्रभु
३	चिन्त्य	दीप्ताख्य	गोपति	अम्बिका
४	कारण	कारणाख्य	शर्व	प्रजापति
५	अजित	सुशिव	उमेश	अच्युत
६	सुदीप्त	ईश	त्रिमूर्ति	हुताशन
७	सूक्ष्म	सूक्ष्म	भव	प्रभञ्जन
८	सहस्र	काल	भीम	मन
९	सुप्रभेद	गणेश	अविघ्नेश	शशी
१०	अंशुमान्	अंशु	अग्र	रवि

इसी प्रकार किरणागम के अनुसार १८ रुद्रागमों के भेद इस प्रकार हैं ––

क्रम सं०	**आगमात्मक ज्ञान**	**१म प्राप्तिकर्ता**	**२य प्राप्तिकर्ता**
१	विजय	अनादि	परमेश्वर
२	परमेश्वर	श्रीरूप	उशना
३	निःश्वास	दशार्ण	शैलसंभवा

क्रम सं०	आगमात्मक ज्ञान	१म प्राप्तिकर्ता	२य प्राप्तिकर्ता
४	प्रोद्गीत	शूली	कच
५	मुखविम्ब	प्रशान्त	दधीचि
६	सिद्धमत	विन्दु	चण्डेश्वर
७	सन्तान	शिवनिष्ठ	हंसवाहन
८	नारसिंह	सौम्य	नृसिंह
९	चन्द्रहास	अनन्त	बृहस्पति
१०	भद्र	सर्वात्मा	वीरभद्र
११	स्वायंभुव	निधन	ब्रह्मा
१२	विरज	तेज	प्रजापति
१३	कौरव्य	ब्रध्नेश	नन्दिकेश्वर
१४	माकुट	शिव	ध्वजाश्रय
१५	किरण	देवपिता	संवर्तक
१६	ललित	आलय	भैरव
१७	आग्नेय	व्योम	हुतभुक्
१८	?	शिव	×

तन्त्रालोक की टीका जयरथी में उद्धृत श्रीकण्ठीसंहिता के अनुसार १० शिवागमों में कहीं-कहीं थोड़ा अन्तर दिखाई देता है। वहाँ 'कारण' के स्थान पर 'मकुट' तथा 'सुदीप्त' के स्थान पर 'दीप्त' लिखा गया है। 'कारण' एक प्रतिष्ठा तन्त्र है, जिसमें लगभग शतलक्ष श्लोक हैं। इसके वक्ता हैं रुद्र और श्रोता हैं ब्रह्मा। इसमें चार संहिताएँ हैं।

श्रीकण्ठी-मत के अनुसार ये १० आगम भेद-प्रतिपादक हैं। शक्ति ही शिव का मुख है। उसकी दो अवस्थाएँ होती हैं——एक उद्भव-उन्मुख और दूसरी उद्भूत अवस्था। उद्भव-उन्मुख के ईशान, तत्पुरुष और सद्योजात——इन तीन मुखों में से प्रत्येक मुख से १।१ कुल ३, उद्भूत तीन में से ३, उन तीन मुखों में दो के परस्पर मिलन से १।१ कुल ३ और तीन मुखों के परस्पर मिलन से १ सर्वसमष्टि मिलकर १०। ये सब भेदप्रधान शैव तन्त्र हैं। वामदेव और अघोर नाम के मुखों का उपयोग इनमें नहीं है। श्रीकण्ठी के अनुसार १८ रुद्रागम भेदाभेदप्रधान हैं। किरणागम की सूची में जहाँ प्रोद्गीत है वहाँ श्रीकण्ठी के अनुसार मद्गीत समझना चाहिए। उसी प्रकार चन्द्रहास के स्थान पर चन्द्रांशु, भद्र के

स्थान पर वीरभद्र, विरज के स्थान पर विसर, कौरव्य के स्थान पर रौरव और माकुट के स्थान पर विमल समझना चाहिए। अन्यत्र मुखविम्व के स्थान पर चन्द्रज्ञान मिलता है। कहीं-कहीं नारसिंह के स्थान पर विसर और सौरभेय के स्थान पर मकुट, शर्वोक्त और वातुल समझना चाहिए। ये सब परमेश्वर की भेदाभेदमय रुद्र अवस्था से उद्भूत हैं। इन १८ आगमों में एकक दो हैं, द्विक तीन, त्रिक आठ, चतुष्क चार और पञ्चक एक है।

नेपाल दरबार लाइब्रेरी में निःश्वासतन्त्रसंहिता नाम की एक पुस्तक मिली थी। यह प्राचीन गुप्तलिपि में लिखी गयी है, जो ईस्वी की आठवीं शताब्दी में प्रचलित थी। इस ग्रन्थ को जिन्होंने देखा है वे कहते हैं कि इसमें पाँच विभाग हैं। प्रत्येक विभाग का नाम सूत्र है। उन सूत्रों के नाम इस प्रकार हैं—लौकिक धर्मसूत्र, मूलसूत्र, उत्तरसूत्र, नयसूत्र और गुह्यसूत्र। लौकिक धर्मसूत्र प्रायः उपेक्षित रहा। उत्तरसूत्र में अठारह प्राचीन शिवसूत्रों का नाम है। वास्तव में ये सूत्र भिन्न-भिन्न आगमों के ही नाम हैं। ये सब आगम शिवतन्त्र के नाम से प्रसिद्ध थे। उनके नाम ये हैं—(१) विजय, (२) निःश्वास, (३) स्वायम्भुव, (४) वाथुल, (५) वीरभद्र, (६) रौरव, (७) माकुट, (८) विरस, (९) चन्द्रहास, (१०) ज्ञान (११) मुखविम्व, (१२) प्रोद्गीत, (१३) ललित, (१४) सिद्ध, (१५) सन्तान, (१६) सर्वोद्गीत, (१७) किरण और (१८) पारमेश्वर।[1]

ब्रह्मयामल में भी १८ आगमों के नाम हैं—जैसे विरज, निःश्वास, स्वायंभुव, वाथुल, वीरभद्र, रौरव, मकुट, वीरेश, चन्द्रज्ञान, प्रोद्गीत, ललित, सिद्धसन्तान, सर्वोद्गीत किरण और पारमेश्वर। प्रतीत होता है कि २८ आगमों में १८ आगम अधिकतर प्राचीन हैं, क्योंकि ये सब ग्रन्थ ईस्वी अष्टम शताब्दी से भी बहुत पहले से प्रचलित थे। कुछ लोगों का कहना है कि ये सब आगम ग्रन्थ उत्तर भारत में ही प्रचलित थे, क्योंकि इनमें

१. **विजयं प्रथमं ज्ञेयं निःश्वासं तदनन्तरम्।**
स्वायम्भुवमतञ्चैव वाथुलं तदनन्तरम्॥
वीरभद्रमिति ख्यातं रौरवं माकुटं तथा।
विरसं चन्द्रहासं च ज्ञानं च मुखबिम्बकम्॥
प्रोद्गीतं ललितं चैव सिद्धं सन्तानमेव च।
सर्वोद्गीतं च विज्ञेयं किरणं पारमेश्वरम्॥
Fol. 24a
[निःश्वासतन्त्रसंहिता नेपाल दरबार लाइब्रेरी में सुरक्षित।]

अधिकांश स्थलों में आर्यावर्त के ब्राह्मण ही शिवाचार्य के रूप में, योग्य समझ कर, वृत होते थे। कामरूप, कश्मीर, कलिङ्ग, कोङ्कण, काञ्ची, कावेरी प्रभृति देशों के ब्राह्मणों की योग्यता अपेक्षाकृत न्यून मानी जाती थी। यह विवरण है १० शिवागमों तथा १८ रुद्रागमों के विषय में।[१८]

इनके अतिरिक्त ६४ आगमों या ६४ तन्त्रों के नाम भी शास्त्रों में यत्र तत्र मिलते हैं। श्रीकण्ठीसंहिता में ये सब अद्वैतभावप्रधान भैरवागम के नाम से प्रसिद्ध हैं। वामकेश्वरतन्त्र में भी ६४ तन्त्रों का नामोल्लेख है। ऋजु-विमर्शिनी टीकाकार लक्ष्मण तथा अर्थ-रत्नावलीकार के मतों की आलोचना भी उसमें है। सेतुबन्ध में भास्करराय ने इन सब की समालोचना की है और इनके विषय में अपना मत भी व्यक्त किया है। श्री शङ्कराचार्य की सौन्दर्यलहरी में भी ६४ तन्त्रों का उल्लेख है। टीकाकार लक्ष्मीधर के मत से ये सब तन्त्र अवैदिक हैं। परन्तु भास्करराय ने सेतुबन्ध में कहा है कि यह कहना ठीक नहीं है कि **ये सब तन्त्र अवैदिक हैं**। सर्वानन्द के सर्वोल्लास तन्त्र में भी ६४ तन्त्रों के नाम दिये गये हैं। परन्तु यह सूची तोडलोत्तर के आधार पर बनी हुई है। महासिद्धिसार तन्त्र में जगत् के तीन विभागों की कल्पना की गयी है––रथक्रान्ता, विष्णुक्रान्ता और अश्वक्रान्ता। प्रत्येक विभाग में अपने-अपने दृष्टिकोण के अनुसार ६४ तन्त्र हैं।

नीचे इन ६४ तन्त्रों की भिन्न-भिन्न सूचियाँ दी जा रही हैं––(क) श्रीकण्ठीसंहिता के अनुसार, (ख) लक्ष्मीधर सम्मत वामकेश्वर तन्त्र के अनुसार, (ग) भास्करराय सम्मत, (घ) सर्वोल्लास तन्त्र में उद्धृत तोडलोत्तर तन्त्र के अनुसार तथा (ङ. च. छ) महासिद्धिसार तन्त्र के क्रान्ताभेद से तीन।

(क) श्रीकण्ठीसंहिता के अनुसार **भैरवतन्त्र** (१ से ८ तक)––१. स्वच्छन्द तन्त्र, २. भैरव, ३. चण्ड, ४. क्रोध, ५. उन्मत्तभैरव, ६. असिताङ्गभैरव, ७. महोच्छुष्म और ८. कपालीश; **यामल तन्त्र** (९ से १६ तक)––९. ब्रह्मयामल, १०. विष्णुयामल, ११. स्वच्छन्दयामल, १२. रुरुयामल, १३. (?), १४. अथर्वण, १५. रुद्र, १६. वेताल; **मततन्त्र** (१७ से २४ तक)—१७. रक्त, १८. लम्पट, १९. रश्मिमत, २०. मत, २१. चालिका, २२. पिङ्गला, २३. उत्फुल्ल, २४. विश्वाद्य; **मङ्गलतन्त्र** (२५ से ३२ तक)—२५. पिचुभैरवी, २६. तन्त्रभैरवी, २७. तत, २८. ब्राह्मीकला, २९. विजया, ३०. चन्द्रा, ३१. मङ्गला, ३२. सर्वमङ्गला; **चक्राष्टक** (३३ से ४० तक)––३३. मन्त्रचक्र, ३४. वर्णचक्र, ३५. शक्तिचक्र, ३६. कलाचक्र, ३७. बिन्दुचक्र, ३८. नादचक्र, ३९. गुह्यचक्र, ४०. खचक्र; **बहुरूपतन्त्र** (४१ से ४८ तक)––४१. अन्धक, ४२. रुरुभेद, ४३. अज, ४४. मूल, ४५. वर्ण-

मण्ट, ४६. विडङ्ग, ४७. मात्रादन, ४८. ज्वालिन; **वागीश** (४९ से ५६ तक)––४९. भैरवी, ५०. चित्रिका, ५१. हंसा, ५२. कदम्बिका, ५३. हृल्लेखा, ५४. चन्द्रलेखा, ५५. विद्युल्लेखा, ५६. विद्युमत; **शिखातन्त्र** (५७ से ६४ तक)––५७. भैरवी, ५८. वीणा, ५९. वीणामणि, ६०. संमोह, ६१. डामर, ६२. अथर्वक, ६३. कबन्ध और ६४. शिरश्छेद

(ख) लक्ष्मीधर संमत वामकेश्वर तन्त्रानुसार––१. महामाया, २. शम्बर, ३. योगिनीजालशम्बर, ४. तत्त्वशम्बर, ५. सिद्धभैरव, ६. बटुकभैरव, ७. कंकालभैरव, ८. कालभैरव, ९. कालाग्निभैरव, १०. योगिनीभैरव, ११. महाभैरव, १२. शक्तिभैरव, (बहुरूपाष्टक)––१३. ब्राह्मी, १४. माहेश्वरी, १५. कौमारी, १६. वैष्णवी, १७. वाराही, १८. माहेन्द्री, १९. चामुण्डा, २०. शिवदूती; यामलाष्टक (२१ से २८), २९. चन्द्र-ज्ञान, ३०. मालिनी विद्या, ३१. महासंमोहन, ३२. वामजुष्ट, ३३. महादेव तंत्र, ३४. वातुल, ३५. वातुलोत्तर, ३६. कामिक, ३७. हृद्भेद, ३८. तन्त्रभेद, ३९. गुह्य-तन्त्र, ४०. कलावाद, ४१. कलासार, ४२. कुण्डिकामत, ४३. मतोत्तरसत, ४४. वीणाख्य, ४५. त्रोतल, ४६. त्रोतलोत्तर, ४७. पञ्चामृत, ४८. रूपभेद, ४९. भूतो-ड्डामर, ५०. कुलसार, ५१. कुलोड्डीश, ५२. कुलचूडामणि, ५३. सर्वज्ञानोत्तर, ५४. महाकालीमत, ५५. अरुणेश, ५६. मोदिनीश, ५७. विकुण्ठेश्वर, ५८. पूर्वपक्ष, ५९. पश्चिमपक्ष, ६०. उत्तरपक्ष, ६१. निरुत्तर, ६२. विमत, ६३. विमलोत्थ, और ६४. देवीमत ।

(ग) १. महामाया, २. शम्बर, ३. योगिनी, ४. जालशम्बर, ५. तत्त्वशम्बर, ६. भैरवाष्टक, बहुरूपाष्टक––७. ब्राह्मी, ८. माहेश्वरी ९. कौमारी, १०. वैष्णवी, ११. वाराही, १२. माहेन्द्री, १३. चामुण्डा, १४. शिवदूती, यामलाष्टक––१५. ब्रह्म-यामल, १६. विष्णुयामल, १७. रुद्रयामल, १८. लक्ष्मीयामल, १९. उमायामल, २०. स्कन्दयामल, २१. गणेशयामल, २२. जयद्रथयामल, २३. चन्द्रज्ञान, २४. वासुकि, २५. महासंमोहन, २६. महोच्छुष्म, २७. वातुल, २८. वातुलोत्तर, २९. हृद्भेद, ३०. तन्त्रभेद, ३१. गुह्यतन्त्र, ३२. कामिक, ३३. कलावाद, ३४. कलासार, ३५. कुब्जिकामत, ३६. तन्त्रोत्तर, ३७. वीनाख्य, ३८. त्रोतल, ३९. त्रोतलोत्तर, ४०. पञ्चामृत, ४१. रूपभेद, ४२. भूतोड्डामर, ४३. कुलसार, ४४. कुलोड्डीश, ४५. कुलचूडामणि, ४६. सर्वज्ञानोत्तर, ४७. महाकालीमत, ४८. महालक्ष्मीमत, ४९. सिद्धयोगेश्वरीमत, ५०. कुरूपिकामत, ५१. रूपिकामत, ५२. सर्ववीरमत, ५३. विमलामत, ५४. पूर्वाम्नाय, ५५. पश्चिमाम्नाय, ५६. दक्षिणाम्नाय, ५७. उत्तरा-

म्नाय, ५८. ऊर्ध्वाम्नाय, ५९. वैशेषिक तन्त्र, ६०. ज्ञानार्णव, ६१. वीरावली, ६२. अरुणेश, ६३. मोहिनीश, ६४. विशुद्धेश्वर।[1]

(घ) १. अक्षया, २. उड्डीश, ३. उत्तर, ४. उत्तम, ५. ऊर्ध्वाम्नाय, ६. काली, ७. कुमारी, ८. कुलार्णव, ९. कालिकाकुलसर्वस्व, १०. कालिकाकल्प, ११. कुक्कुट, १२. कामधेनु, १३. कालीविलास, १४, कामाख्या, १५. कुब्जिका, १६. कुलचूडामणि, ७. गुप्तसाधन, १८. गणेश, १९. गन्धर्व., २०. गौतमीय, २१. चिदम्बरनट, २२. चिन्तामणि, २३. ज्ञानार्णव, २४. ज्ञानदीप, २५. तोडल, २६. तारा, २७. तन्त्रमुक्तावली, २८. त्रिपुरासार, २९. निर्वाण, ३०. नील, ३१. निरुत्तर, ३२. नारायणी, ३३. नित्या, ३४. फेत्कारिणी, ३५. बृहत्श्रीक्रम, ३६. भैरव, ३७. भूततन्त्र, ३८. भैरवीतन्त्र, ३९. भावचूड़ामणि, ४०. मुण्डमाला, ४१. मालिनी, ४२. महामाया,

१ काश्मीर सिरीज आफ टेक्स्ट एण्ड स्टडीज No LXVI में प्रकाशित वामकेश्वरीमत पुस्तक में ६४ तन्त्रों का निम्नलिखित पाठ दिखाई देता है––

[१]महामाया [२]शम्बरं च [३]योगिनी [४]जालशम्बरम् ।
[५]तत्त्वशम्बरकं चैव [६–१३]भैरवाष्टकमेव च ॥
[१४–२१]बहुरूपाष्टकं [२२]ज्ञानं [२३–३०]यामलाष्टकमेव च ।
[३१]चन्द्रज्ञानं [३२]वासुकिं च [३३]महासंमोहनं तथा ॥
[३४]महोच्छुष्मं महादेव [३५]वाथुलं च [३६]नयोत्तरम् ।
[३७]हृद्भेदं [३८]मातृभेदं च [३९]गुह्यतन्त्रं च [४०]कामिकम् ॥
[४१]कालपादं [४२]कालसारं तथान्यत् [४३]कुब्जिकामतम् ।
[४४]तन्त्रोत्तरं च [४५]वीणाख्यं [४६]त्रोतलं [४७]त्रोतलोत्तरम् ॥
[४८]पञ्चामृतं [४९]रूपभेदं [५०]भूतोड्डामरमेव च ।
[५१]कुलसारं [५२]कुलोड्डीशं [५३]कुलचूडामणिं तथा ॥
[५४]सर्वज्ञानोत्तरं देव [५५]महापिचुमतं तथा ।
[५६]महालक्ष्मीमतं देव [५७]सिद्धयोगीश्वरीमतम् ॥
[५८]कुरूपिकामतं देव [५९]रूपिकामतमेव च ।
[६०]सर्ववीरमतं देव [६१]विमलामतमेव च ॥
[६२]अरुणेशं [६३]मोदनेशं [६४]विशुद्धेश्वरमेव च ।

पृष्ठ १६–१७।

४३. माया, ४४. मातृका, ४५. मातृभेद, ४६. योगिनीविजय, ४७. योनि, ४८. योगिनीहृदय, ४९. योगिनी, ५०. लिङ्गार्चन, ५१. लतार्चन, ५२. वाराही, ५३. वरदा, ५४. विज्ञापन, ५५. वीरभद्र, ५६. विश्वसार, ५७. वीर, ५८. वामकेश्वर, ५९. शिवसार, ६०. सनत्कुमार, ६१. स्वतन्त्र, ६२. समय और ६३. हंस ।

(ङ) रथक्रान्ता के अनुसार—१. आकाशभैरव २. आचारचार, ३. इन्द्रजाल, ४. उड्डामरेश्वर, ५. एकजटा, ६. कंकालमालिनी, ७. कृकलासदीपिका, ८. करालभैरव, ९. कैवल्य, १०. कुलसद्भाव, ११. कृत्तिसार, १२. कालभैरव, १३. कालोत्तम, १४. गरुड, १५. चिन्मय, १६. चीनाचार, १७. छायानील, १८. ज्ञानभैरव, १९. देवडामर, २०. दक्षिणामूर्ति, २१. नवरत्नेश्वर, २२. नागार्जुन, २३. नारदीय, २४. पुरश्चरणचन्द्रिका, २५. पुरश्चरणरसोल्लास, २६. पञ्चदशी, २७. पिच्छिला, २८. प्रपञ्चसार, २९. परमेश्वर, ३०, वृहद्गौतमीय, ३१. बालाविलास, ३२. वृहद्योनि, ३३. ब्रह्मजाल, ३४. बीजचिन्तामणि, ३५. भूतभैरव, ३६. भूतडामर, ३७. मत्स्यसूक्त, ३८. महिषमर्दिनी, ३९, मातृकोदय, ४०. महानील, ४१. मेरु, ४२. महानिर्वाण, ४३. महाकाल, ४४. महालक्ष्मी, ४५. यक्षिणी, ४६. योगस्वरोदय, ४७. योगसार, ४८. यक्षडामर, ४९. राजराजेश्वरी, ५०. रेवती, ५१. वर्णोद्धृति, ५२. वर्णविलास, ५३. वासुदेवरहस्य, ५४. शक्तिकागमसर्वस्व, ५५. शक्तिसंगम, ५६. शारदा, ५७. षोढा, ५८. षडाम्नाय, ५९. स्वरोदय, ६०. सरस्वती, ६१. सारस, ६२. संमोहन, ६३. सिद्धितद्धरि (?) और ६४. हंस माहेश्वर।

(च) विष्णुक्रान्ता के अनुसार—१. उत्तर, २. काली, ३. कुलार्णव, ४. कुलप्रकाश, ५. क्रियासार, ६. कुब्जिका, ७. कालीविलास, ८. कुलोड्डीश, ९. कुलामृत, १०. कुमारी, ११. कामधेनु, १२. कामाख्या, १३. कुलचूड़ामणि, १४. गणेशविमर्शिनी, १५. गवाक्ष, १६. गन्धर्व, १७. चामुण्डा, १८. ज्ञानार्णव, १९. तन्त्रराज, २०. तन्त्रान्तर, २१. देव्यागम, २२. देवी (?), २३. देवप्रकाश, २४. नवरत्नेश्वर, २५. निबन्ध, २६. नित्या, २७. नील, २८. निरुत्तर, २९. फेत्कारी, ३०. ब्रह्मयामल, ३१. बृहत्श्रीक्रम, ३२. भावचूडामणि, ३३. भूतडामर, ३४. भैरव, ३५. भैरवी, ३६. मत्स्यसूक्त, ३७. मुण्डमाला, ३८. मालिनी, ३९. महाकाल, ४०. मालिनीविजय, ४१. मायातन्त्र, ४२. यामल, ४३. यन्त्रचिन्तामणि, ४४. योगिनीहृदय, ४५. योगिनीतन्त्र, ४६. योनि, ४७. राधातन्त्र, ४८. रुद्रयामल, ४९. ललितातन्त्र, ५०. विश्वसार, ५१. वाराही, ५२. विशुद्धेश्वर, ५३. श्रीक्रम, ५४. शिवागम, ५५. सुकुमुदिनी,

५६. सिद्धेश्वर, ५७. सिद्धसार, ५८. सिद्धसारस्वत, ५९. सिद्धियामल, ६०. सनत्कुमार, ६१. समयाचार, ६२. संमोहन, ६३. स्वतन्त्र तथा ६४. हंस महेश्वर।

(छ) अश्वक्रान्ता के अनुसार––१. उड्डामरेश्वर, २. क्रियासार, ३. काल, ४. कामिनी, ५. कामुकेश्वर, ६. कामरत्न, ७. कुरञ्ज, ८. गायत्री, ९. गुर्वर्चन, १०. गोप्य, ११. गोपी, १२. गौरी, १३. गुप्त, १४. गुप्तसार, १५. गुप्तदीक्षा, १६. गोपलीलामृत, १७. चूडामणि, १८. चीनतन्त्र, १९. जयराधामाधवतन्त्र, २०. तत्त्वचिन्तामणि, २१. तत्त्वसार, २२. तीक्ष्ण, २३. धूमावती, २४. बृहत्सार, २५. बृहत्-चीन, २६. बृहत्तोडल, २७. बृहन्निर्वाण, २८. बृहत्कङ्कालिनी, २९. बृहद्योगिनी, ३०. बिन्दुतन्त्र, ३१. बृहन्मोक्ष, ३२. बृहन्मालिनी, ३३. बिन्दु, ३४. ब्रह्माण्ड, ३५. भूतलिपि, ३६. भूतशुद्धि, ३७. भूतेश्वरी, ३८. भेरुण्डा, ३९. भुवनेश्वरी, ४०. महावीर, ४१. मन्त्रचिन्तामणि, ४२. महानिरुत्तर, ४३. मोहन, ४४. मोहिनी, ४५. मद्गुली, ४६. माया, ४७. महामालिनी, ४८. मोक्ष, ४९. महामाया, ५०. महायोगिनी, ५१. योगार्णव, ५२. यन्त्रचूडा(?), ५३. योगतन्त्र, ५४. लीलावती, ५५. विशुद्धेश्वर, ५६. विद्युल्लता, ५७. वर्णसार, ५८. शिवार्चन, ५९. शवर, ६०. शूलिनी, ६१. शिवतन्त्र, ६२. सिद्धतन्त्र, ६३. सारात्सार तथा ६४. समीरण।

ब्रह्मयामल के १९ वें अध्याय में स्रोतभेदों का विवरण दिया गया है। उसमें तीन स्रोतों का निर्देश है––१. दक्षिणस्रोत (शङ्कर के दक्षिण मुख से उद्भूत), २. वामस्रोत और ३. मध्यस्रोत (शङ्कर के ऊर्ध्व मुख से उद्भूत)। ये तीन स्रोत वस्तुतः शङ्कर की तीन धाराओं के ही नाम हैं। इनके अतिरिक्त भैरव स्रोत का भी वहीं उल्लेख मिलता है। उससे भी तन्त्रों का उद्भव हुआ है। पीठों के अनुसार भी तन्त्रों का भेद कहीं-कहीं किया गया है। विद्यापीठ, मन्त्रपीठ, मुद्रापीठ और मण्डलपीठ––ये चार पीठ हैं। विद्यापीठ में आठ भैरव और आठ यामल हैं। आठ भैरवों के नाम यों हैं––स्वच्छन्दभैरव, क्रोधभैरव, उन्मत्तभैरव, उग्रभैरव, कपालिभैरव, झङ्कारभैरव, शेखरभैरव और विजयभैरव। आठ यामलों के नाम यों हैं––रुद्रयामल, स्कन्दयामल, ब्रह्मयामल, विष्णुयामल, यमयामल, वायुयामल, कुबेरयामल और इन्द्रयामल। इस पीठ के तन्त्रों के नाम यों हैं–योगिनीजाल, योगिनीहृदय, मन्त्रमालिनी, अघोरेशी, लाकिनीकल्प इत्यादि। मन्त्रपीठ में भी भैरवों के नाम हैं––वीरभैरव, चण्डभैरव, महाभैरव इत्यादि। मध्यस्रोत के तन्त्र यों वर्णित हैं–विजय, निःश्वास, स्वायंभुव, वातुल, वीरभद्र, रौरव, माकुट और वीरेश। ये सब शिवागम हैं। इनसे भी ऊपर चन्द्रजाल, विश्व, प्रोद्गीत, ललित, सिद्धसन्तान, सर्वोद्गीत, किरण और पारमेश्वर हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि ये सब रुद्रागमों के अन्तर्गत हैं।

आम्नाय भेद से भी तन्त्रों का विभाग किया जाना प्रसिद्ध है। इसमें और दृष्टियाँ भी हैं। निःश्वास तन्त्र में ५ सूत्रों की बात कही गयी है। पहला जो सूत्र है वह लौकिक धर्मविषयक है। शेष चार सूत्र मूलसूत्र, उत्तरसूत्र, नयसूत्र और गुह्यसूत्र के नाम से प्रसिद्ध हैं। उत्तरसूत्र में १८ शैव (अर्थात् रुद्र) आगमों के नाम हैं।

जयद्रथयामल से पता चलता है कि ये भैरव स्रोत के तन्त्र हैं (विद्यापीठ के)। इसमें चार पीठों की बातें वर्णित हैं। ३६ अध्यायों में विद्यापीठ के तन्त्रों के नाम हैं। जैसे–सर्ववीरसमायोग, सिद्धयोगेश्वरीमत, पञ्चामृत, विश्वाद्य, योगनीजालशम्बर, विद्याभेद, शिरश्छेद तथा महासंमोहन। इसमें आठ यामल हैं––ब्रह्म, विष्णु, स्कन्द, गौतमीय, रुद्र और हरि। मङ्गल आठ हैं––भैरवमङ्गल, चतुर्गर्भमङ्गल, शनिमङ्गल, सुमङ्गल, सर्वमङ्गला, विजया, उग्रमङ्गला और सद्भावमङ्गला।

संमोहन तन्त्र में तान्त्रिक वाङ्मय का बहुत व्यापक परिचय मिलता है। उसमें भी बहुत-से पीठों की बातें वर्णित हैं। इस तन्त्र में क्षेत्र-भेद से प्रचलित तन्त्रों की संख्या दी गयी है। इसमें कहा गया है कि चीन में १०० मूल तन्त्र और ३७ उपतन्त्र हैं, द्रविड़ में २० मूल तन्त्र और २५ उपतन्त्र हैं, केरल में ६० मूल तन्त्र और ५०० उपतन्त्र हैं, कश्मीर में १०० मूल तन्त्र और १० उपतन्त्र हैं एवं गौड़ में २७ मूल तन्त्र और १६ उपतन्त्र हैं। इसके षष्ठाध्याय में शैव, वैष्णव, गाणपत्य और सौर भेद से तन्त्रादि की संख्या जैसी दिखलायी गयी है वह नीचे दी जाती है।

	शैव	वैष्णव	गाणपत्य	सौर
तन्त्र	३२	७५	५०	३०
उपतन्त्र	३२५	२०५	२५	९६(?)
संहिता	१०	८	–	४
उपसंहिता	–	–	–	४
अर्णव	५	१	–	२
यामल	२	१	–	२
डामर	३	२	१	२
उड्डाल	१	–	–	५,२(?)
उड्डीश	२	२	२	२
कल्प	८	२०	९	१०,३

	शैव	वैष्णव	गाणपत्य	सौर
उपसंख्या	८	–	–	–
चूडामणि	२	८	३	५,३(?)
विमर्शिनी	२	–	२	३
सूक्त	५	–	–	–
चिन्तामणि	२	२	३	–
पुराण	९	५	२	५(?)
कक्षपुट	२	५	३	२
कल्पद्रुम	३	–	–	–
कामधेनु	२	–	–	–
तत्त्व	५	–	२	९(?)३(?)
तत्त्वबोधविमर्शिनी	–	३	–	–
अमृततर्पण	–	२	–	–
अवतार	२	–	–	२(?)
अमृत	–	–	२,५	३
सागर	–	–	३	३
दर्पण	–	–	–	–
चन्द्रयामल	–	–	–	–
पांचरात्र	–	–	–	–

उपास्यदेवता-भेद से तन्त्रभेद : दशमहाविद्या

प्रचलित तन्त्रसाहित्य के बहुत ग्रन्थ उपास्य देवताओं के भेद के अनुसार विभिन्न श्रेणियों में विभक्त किये जा सकते हैं। बौद्ध और जैन तन्त्र साहित्य के विषय में भी कुछ अंशों में यह बात सत्य है। किन्तु यहाँ उस साहित्य की आलोचना की आवश्यकता नहीं है। बौद्ध तन्त्र साहित्य अतिविशाल है। जैन तन्त्र साहित्य उसकी अपेक्षा अल्पकाय है। वाडवानलीय तन्त्र में लिखा है ——

योगिनी वज्रपूर्वा च पन्नगी नैर्ऋतेश्वरी ।
अधराम्नायपीठस्था जैनमार्गप्रपूजिताः ॥ (पुरश्चर्यार्णव पृ० १३)

अर्थात् वज्रयोगिनी, पन्नगी तथा नैर्ऋतेश्वरी अधराम्नाय की देवियाँ हैं। महाकाल संहिता के अनुसार भीमा देवी भी अधराम्नाय की देवी है।

उपासना की दृष्टि से तान्त्रिक विभाग का दिग्दर्शन––नाना प्रकार से तान्त्रिक साहित्य का विभाग किया जाता है। उसका दिग्दर्शन पहले कराया जा चुका है। उपास्यभेद से भी उसका विभाग किया जाता है। उपास्यों में देवी के प्रकार भेद के अनुसार जो विभाग प्रचलित है उसमें महाविद्यानुसारी विभाग ही अधिक प्रसिद्ध है। उस दृष्टि से काली, तारा तथा श्रीविद्या के विषय में कुछ विवरण देकर शेष महाविद्याओं के विषय में संक्षेप में लिखने का विचार है।

काली

महाविद्या-क्रम में सबसे प्रथम काली का स्थान माना जाता है। तदनुसार काली के अर्चन तथा तत्त्व का अवलम्बन कर जितने सिद्धान्त तथा प्रयोग ग्रन्थ प्रसिद्ध हुए हैं उनमें से दो-चार का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है। कालीतत्त्व के विषय में महाकालसंहिता अति उत्कृष्ट ग्रन्थ है। इसका आयतन अत्यन्त विशाल है, किन्तु यह अखण्ड रूप में सर्वत्र उपलब्ध नहीं होता। नेपाल में इसका अपेक्षाकृत कुछ अधिक अंश उपलब्ध है। कालज्ञान कालीविषयक एक अच्छा ग्रन्थ है। कालोत्तर के नाम से इसका एक परिशिष्ट भी था। यह भी प्राचीन ग्रन्थ है, क्योंकि कश्मीर के क्षेमराज ने साम्बपञ्चाशिका की टीका में इसका उल्लेख किया है। हेमाद्रि, रघुनन्दन तथा कमलाकर भट्ट को भी इस ग्रन्थ का परिचय था। इस प्रकार के अन्यान्य ग्रन्थों में कालीकुलक्रमार्चन (विमलबोध कृत), भद्रकालीचिन्तामणि, व्योमकेशसंहिता, कालीयामल, कालीकल्प, कालीसपर्याक्रमकल्पवल्ली, श्यामारहस्य (पूर्णानन्द कृत), कालीविलासतन्त्र, कालीकुलसर्वस्व, कालीतन्त्र, कालीपरा, कालिकार्णव, विश्वसारतन्त्र, कामेश्वरीतन्त्र, कुलचूडामणि, कौलावली, कालीकुल, कुलमूलावतार आदि ग्रन्थ विशेष रूप से अध्ययन योग्य हैं। काशीनाथ तर्कालङ्कार भट्टाचार्य कृत श्यामासपर्या भी अच्छा ग्रन्थ है। शक्तिसंगमतन्त्र का कालीखण्ड, कालिकार्चामुकुर, कालीकुलामृत प्रभृति ग्रन्थों की भी प्रसिद्धि कुछ कम नहीं है। आद्यानन्दन या नवमीसिंह कृत कुलमुक्तिकल्लोलिनी का प्रचार नेपाल में अधिक है। स्तोत्रों में महाकाल विरचित कर्पूरस्तव प्रसिद्ध है। उस पर बहुत-सी टीकाएँ हैं। कालीभुजङ्गप्रयात स्तोत्र की प्रसिद्धि भी कुछ कम नहीं है। भैरवीतन्त्र में जो कालीमाहात्म्य प्रकाशित हुआ है, वह भी दर्शनीय है। इसविद्या के विषय में कालिकोपनिषत् नामक एक उपनिषत्

भी है। कौल सम्प्रदाय के वहुत-से ग्रन्थ काली के विषय में प्रसिद्ध ही हैं। उन सबका यहाँ विवरण देना संभव नहीं है। विशेष जिज्ञासुओं के लिए कौलिकार्चनदीपिका, कुमारीतन्त्र, कुब्जिकातन्त्र, कुलार्णव आदि ग्रन्थों का निर्देश किया जा सकता है। शारदातिलककार राघवभट्ट ने कालीतत्त्व नामक एक उत्कृष्ट ग्रन्थ की रचना की थी, जिसका प्रचार उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थानों में हुआ था।

दश महाविद्याओं के नाम, जैसे कि मुण्डमालातन्त्र में हैं, प्रसिद्ध ही हैं। शक्तिसंगम-तन्त्र में भी यह नामावली दिखाई देती है। महाकालसंहिता में लिखा है कि विभिन्न देवता विभिन्न युगों में फल प्रदान करते हैं, किन्तु चारों युगों में फल प्रदान की सामर्थ्य एकमात्र दश महाविद्याओं में है। उनमें भी काली, तारा और सुन्दरी का विशेष उत्कर्ष है। त्रिशती में लिखा है कि श्रीविद्या ही मोक्ष की कारणभूत एकमात्र विद्या है।[1]

कालीसाधना के विषय में मुख्य ग्रन्थों के नाम ऊपर दिये जा चुके हैं। कालीतन्त्र में दक्षिणा काली का वर्णन इस प्रकार है––करालवदना मुक्तकेशी दिगम्बरा मुण्डमाला-विभूषिता चतुर्हस्ता––निम्न वामहस्त में सद्यश्छिन्न मस्तक, ऊर्ध्ववाम हस्त में खड्ग, निम्न दक्षिण हस्त में वरमुद्रा तथा ऊर्ध्व दक्षिण हस्त में अभय मुद्रा। महामेघवत् श्यामला, स्मेराननना, शवरूप महादेव के हृदय पर स्थित, अष्टमी के चन्द्र के तुल्य अर्थात् अर्ध चन्द्र-तुल्य भालवती, शवकरों से विनिर्मित काञ्चीधारिणी, दोनों कर्णों में अवतंसरूप शव धारण की हुई, दायें और बायें दोनों ओष्ठ-प्रान्तों से रक्तधारा स्राविणी, घोरदंष्ट्रा, महारावा, रक्तस्राविणी, मुण्डावलियों की माला को कण्ठ में धारण करनेवाली।

काली के वामहस्त में जो छिन्न मस्तक है, वह महामोह का प्रतिरूप है, यह बात रुद्रयामल में लिखी हुई है। (द्रष्टव्य–रमानाथकृत कर्पूरस्तव-टीका)। काली त्रिनयना हैं। उनके ये तीन नेत्र अग्नि, सूर्य और चन्द्ररूप जानने चाहिए।

स्थानान्तर में काली का ध्यान इस प्रकार है––त्रिनयना, नितम्ब (कटि पश्चाद् भाग) में जो काञ्ची है वह मृत काम, क्रोधादि रिपुओं के बाहुओं से निर्मित है। यहाँ बाहु शब्द से कूर्पर (कुहनी) से लेकर अंगुलियों के अग्रभाग पर्यन्त बाहु अंश समझना चाहिए। वह दिगम्बरा है। श्मशान तल्प में महादेव रूपी शव के हृदय में महाकाल के सहित सुरत में मग्न है। रंगनाथ ने कहा है कि ये महाकाल देवी द्वारा ही सृष्टि के लिए उत्पादित किये

१ मोक्षैकहेतुर्विद्या श्रीश्रीविद्या नात्र संशयः ॥११९॥––त्रिशती.

गये थे। यह विपरीत रमण का व्यापार है। परन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि यह काली दक्षिणा काली नहीं हैं, किन्तु महाकाली हैं। इस रमण का काल तीस अर्बुद छह वृन्द, पचास पद्मकोटियुग परिमित है। यह बात भी रुद्रयामल में लिखी हुई है। जगत्सृष्टि का निदान यही है।

काली के विषय में परातन्त्र नाम से प्रसिद्ध एक प्राचीन तन्त्र ग्रन्थ है, जिसमें चार पटल है (ए. वं. ५९५३)। उसमें लिखा है कि एक ही महाशक्ति षट्सिंहासनारूढ़ (अलग-अलग छह सिंहासनों में आरूढ़) छह आम्नायों की देवी है। उसमें पूर्वाम्नाय की देवी का नाम है पूर्णेश्वरी, दक्षिणाम्नाय की देवी का नाम है विश्वेश्वरी, पश्चिमाम्नाय की देवी का नाम है कुब्जिका, उत्तराम्नाय की देवी का नाम काली है एवं ऊर्ध्वाम्नाय की अधिष्ठात्री का नाम श्रीविद्या है। उस ग्रन्थ में २ य पटल से ४र्थ पटल तक भगवती काली का ही क्रम निर्णीत है।

तारा

तारा की उपासना के विषय में मुख्य ग्रन्थ ये हैं—तारातन्त्र (तारिणीतन्त्र), तारासूक्त, तोडलतन्त्र, तारार्णव, नीलतन्त्र, महानीलतन्त्र, नीलसरस्वतीतन्त्र, चीनाचार, तन्त्ररत्न, ताराशाबरतन्त्र, तारोपनिषत्, एकजटीतन्त्र, एकजटाकल्प, ब्रह्मयामलस्थ महाचीनाचारक्रम, एकवीरतन्त्र, तारिणीनिर्णय आदि।

प्रकरण ग्रन्थों में लक्ष्मणभट्ट कृत ताराप्रदीप, नरसिंह ठक्कुर कृत ताराभक्तिसुधार्णव, आगमाचार्य शङ्कर कृत तारारहस्य तथा उसकी वृत्ति, प्रकाशानन्द कृत ताराभक्तितरङ्गिणी, विमलानन्द कृत ताराभक्तितरङ्गिणी, काशीनाथ कृत ताराभक्तितरङ्गिणी, नित्यानन्द कृत[1] ताराकल्पलतापद्धति, श्रीविद्वदुपाध्याय कृत तारिणीपारिजात, महोग्रताराकल्प इत्यादि ग्रन्थ उल्लेख योग्य हैं। तारा-स्तोत्रों में ताराकर्पूरस्तोत्र तथा तारासहस्रनाम विशेष रूप से उल्लेख योग्य हैं। इस सहस्रनामस्तोत्र पर विश्वेश्वर-पुत्र लक्ष्मीधर की व्याख्या है।

तान्त्रिक सम्प्रदाय में यह प्रसिद्ध है कि तत्त्वदृष्टि से तारा परावाक्स्वरूपा है। यह पूर्णाहन्तामयी है। तान्त्रिक सम्प्रदाय में यह भी प्रसिद्धि है कि वाम, दक्षिण तथा सिद्धान्त आचारों से सालोक्य मुक्ति हो सकती है, परन्तु सायुज्य मुक्ति नहीं होती। उसके लिए कुलाचार आवश्यक है। किन्तु इस विषय में कहीं-कहीं मतभेद भी लक्षित होता है।

१ इन नित्यानन्द का पूर्वाश्रम का नाम नारायण भट्ट था। ये श्रीनिवास भट्ट अथवा नित्यानन्दनाथ के शिष्य थे।

श्रीविद्या (षोडशी)

दश महाविद्याओं में 'षोडशी' नाम श्रीविद्या या त्रिपुरसुन्दरी का ही वाचक है। त्रिपुरा, ललिता आदि नामों से एक ही विद्या (श्रीविद्या) वर्णित होती है। शक्तिसंगम-तन्त्र के अनुसार सुन्दरी का नामान्तर भैरव, ललितेश्वर अथवा त्रिपुरभैरव है। महाशक्ति के अनन्त रूप हैं और नाम भी अनन्त हैं। परन्तु उनका परम रूप एक तथा अभिन्न है। त्रिपुरा के उपासक कहते हैं कि ब्रह्माजी तथा अन्यान्य देवगण त्रिपुरा के ही उपासक हैं। इनका परम स्वरूप इन्द्रिय तथा मन से अतीत है। एकमात्र मुक्तस्वरूप ही उसे जान सकते हैं। यह पूर्णाहन्तामय तुरीयरूपा हैं। इनका परम रूप वासनात्मक है अर्थात् मनोमय है और सूक्ष्मरूप मन्त्रात्मक है। वह श्रोत्र और वाग् इन्द्रियों का अगोचर है एवं इनका स्थूल-रूप कर, चरण आदि से सम्पन्न है। यह नेत्र और करों का विषय है।

त्रिपुरा के उपासकों में सर्वत्र काम या मन्मथ का ही प्राधान्य है। वह विद्याप्रवर्तक होने के कारण विद्येश्वर है। भगवती की कृपा से विद्याप्रवर्तक काम के सदृश बारह विद्येश्वरों का पता चलता है। उनके नाम यों हैं—मनु, चन्द्र, कुबेर, लोपामुद्रा, मन्मथ, अगस्त्य, अग्नि, सूर्य, इन्द्र, स्कन्द, शिव और क्रोधभट्टारक अथवा दुर्वासा। इन लोगों को भगवती की कृपा से पृथक्-पृथक् फलों की प्राप्ति हुई है। इसीलिए इनको मुख्य प्रवर्तक मानते हैं। अन्यान्य बीज और मन्त्रों की भी उपासना पद्धति प्रचलित है। परन्तु प्राधान्य इन बारह विद्येश्वरों का ही है। इन विद्याप्रवर्तकों में अधिकांशों का सम्प्रदाय लुप्त हो गया है। केवल मन्मथ अथवा कामराज का सम्प्रदाय और कियदंश में लोपामुद्रा का सम्प्रदाय जीवित है। कामराजविद्या है कादि पञ्चदश वर्णात्मक (द्रष्टव्य तन्त्रराज और त्रिपुरोपनिषत्) काम, योनि, कमला, वज्रपाणि इत्यादि। लोपामुद्रा विद्या हादि पञ्चदश वर्णात्मक है। कामेश्वर के अङ्कस्थ कामेश्वरी के पूजाक्षेत्र में दोनों विद्याओं का उपयोग होता है। लोपामुद्रा अगस्त्य ऋषि की धर्मपत्नी थीं। वह राज-कन्या थी। लोपामुद्रा को पिता के घर में ही पराशक्ति के प्रति भक्ति का उद्रेक हो गया था। लोपामुद्रा के पिता त्रिपुरा की मुख्य शक्ति भगमालिनी देवी की उपासना करते थे। लोपामुद्रा बाल्यावस्था से ही पिता की सर्वविध सेवा करती थी। वह पिता की उपासना देख कर स्वयं भी प्रभावित हो गयी थी। उनकी उपासना से प्रसन्न होकर देवी ने उनको वर दिया था, जिससे जगन्माता की सेवा करने का उन्हें अधिकार प्राप्त हुआ था। उन्होंने त्रिपुराविद्या का उद्धार किया था। तब उन्हें विद्या के विषय में ऋषित्व की प्राप्ति हुई (द्रष्टव्य त्रिपुरारहस्य माहात्म्य खण्ड,

अध्याय ५३) । अगस्त्य वैदिक ऋषि थे। वे पहले तान्त्रिक नहीं थे। इसलिए भगवती के ध्यान में पदार्पण करने का भी उन्हें अधिकार प्राप्त नहीं हुआ था। परन्तु उन्होंने अपनी पत्नी से दीक्षा ली। तदनन्तर वे भगवती की उपासना में अधिकारसम्पन्न हुए। दुर्वासा सम्प्रदाय भी प्रायः लुप्त-सा ही है।

श्री विद्या ही शक्तिचक्र की सम्राज्ञी है और ब्रह्मविद्यास्वरूपा आत्मशक्ति है। यह प्रसिद्धि है——

यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः ।
श्रीसुन्दरीसेवनतत्पराणां भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ॥

श्रीविद्या केवल तन्त्रसिद्ध ही नहीं है, वेदानुमोदित भी है। ऋग्वेद के अन्तर्गत शाङ्खायन आरण्यक में लिखा है——"तिस्रः पुरः त्रिपक्षः विश्व चर्षिणी यत्रा (?) कथापरा सन्निविष्टा अधिष्ठायैनामजरा पुराणी महत्तरा महिमा देवतानाम् । कामो योनिः कमला वज्रपाणिः।" इत्यादि। श्री शङ्करमठों में सर्वत्र श्रीविद्या की उपासना तथा श्रीचक्र का पूजन अभी भी प्रचलित है।

बारह विद्येश्वरों की बात पहले कही गयी है। तीन गुरु प्रधान हैं——मित्रीश, षष्ठीश और उड्डीश। ये लोग आचार्य हैं। ये सब शिवासक्त हैं और उपासना के प्रभाव से इन्होंने महेश्वरपद प्राप्त किया है।

देवी के प्रधान स्थान तीन हैं——१. पूर्व सागर के तीर पर कामगिरि, २. मेरु के शिखर पर जालन्धर और ३. पश्चिम सागर के तीर पर पूर्णगिरि। ये त्रिकोण के तीन बिन्दु हैं और मध्य में है उड्डीश। भारत में देवी के द्वादश रूप प्रसिद्ध हैं——१. कामाक्षी (काञ्चीपुर में), २. भ्रामरी (मलय गिरि में), ३. कुमारी [कन्या] (केरल——मलाबार में), ४. अम्बा (आनर्त——गुजरात में), ५. महालक्ष्मी (करवीर में), ६. कालिका (मालव में), ७. ललिता (प्रयाग में), ८. विन्ध्यवासिनी (विन्ध्याचल में), ९. विशालाक्षी (वाराणसी में), १०. मङ्गलचण्डी (गया में), ११. सुन्दरी (वंग में) तथा १२. गुह्येश्वरी (नेपाल में) (द्रष्टव्य ब्रह्माण्डपुराण ४।३९)।

त्रिपुरा की स्थूल मूर्ति है। प्रसिद्धि है कि अगस्त्य मुनि पीठों की यात्रा के सिलसिले में जीवों को दुःखमग्न देख कर करुणावश विगलित हो उठे थे। तब उन्होंने काञ्चीपुर में महाविष्णु को अपनी तपस्या से खूब प्रसन्न किया। अगस्त्य मुनि ने प्रसन्न हुए महाविष्णु से पूछा——'भगवन्, जगदुद्धार का उपाय क्या है ? महाविष्णु ने त्रिपुरा की स्थूल मूर्ति

ललिता का माहात्म्य उन्हें बतलाया अर्थात् संक्षेप में भण्डासुरवध आदि का वर्णन किया। विस्तारपूर्वक उसे उन्हें सुनाने के लिए अपने अंशभूत हयग्रीव मुनि को नियुक्त किया। तदुपरान्त हयग्रीव ने अगस्त्य को विस्तारपूर्वक भण्डासुर की कथा सुनायी। भण्डासुर तपोबल से शिवजी का वरदान प्राप्त कर १०५ ब्रह्माण्डों का अधिपति बन गया था।

श्रीविद्या का एक भेद कादि विद्या है, दूसरा भेद हादि विद्या है और तीसरा भेद कहादि विद्या है। श्रीविद्या कादि गायत्री का अतिगुप्त रूप है। यह अति गुप्त तत्त्व चारों वेदों में है। जो गायत्री हम लोगों में प्रचलित है उसका रूप स्पष्ट और अस्पष्ट है। उसके तीन पाद स्पष्ट हैं और चतुर्थ पाद अस्पष्ट है (परो रजसे सावदोम्)। गायत्री वेद का सार है और वेद चौदह विद्याओं का सार है। इन सब विद्याओं से शक्ति का ही परिज्ञान होता है। कादि विद्या अत्यन्त गोपनीय है। इसमें वाग्भवकूट, कामराजकूट तथा शक्तिकूट नामक तीनों कूट हैं। वाग्भवकूट में वर्ण संख्या अठारह है, कामराजकूट में बाइस एवं शक्तिकूट में वर्ण संख्या अठारह है, सब का योग ५८ होता है। इसमें मात्रा संख्या का भी विचार है। वह यों है––वाग्भवकूट में ७ मात्राएँ हैं, हृल्लेखा में एक लव कम ४ मात्राएँ, कामराजकूट में ७।। और हृल्लेखा में एक लव कम ४ मात्राएँ एवं शक्तिकूट में ४।। मात्राएँ और हृल्लेखा में १ लव कम ४ मात्राएँ हैं। हृल्लेखा की मात्रा संख्या यों है––हकार=ह, रकार, ई २, बिन्दु $\frac{१}{२}$= १२८ लव, शक्ति ४ लव, व्यापिनी २ लव, समना १ लव। सब मिलाकर १ लव कम ४ मात्राएँ हुई। यह भास्करराय का मत है। वाग्भवकूट में वर्णसमूह (बिन्दुहीन) प्रलयाग्नि सदृश है। यह मूलाधार से अनाहत तक व्याप्त है। कामराजकूट में वर्णसमूह (बिन्दुहीन) कोटि सूर्यवत् अनाहत से आज्ञाचक्र तक व्याप्त है। शक्तिकूट में वर्णसमूह (बिन्दुहीन) चन्द्रवत् आज्ञाचक्र से ललाट तक व्याप्त है। ये सब वर्ण माला में गुँथी मणियों के समान एक के ऊपर एक विराजमान हैं। सुषुम्णा के मूल में तथा अग्रभाग में दो अलग-अलग सहस्रदल कमल विद्यमान हैं, उनमें एक है रक्त वर्ण और ऊर्ध्वमुख एवं दूसरा है श्वेत-वर्ण और अधोमुख। इन दोनों कमलों के मध्य में अष्टदल से ३० कमल विद्यमान हैं।

व्यष्टिकूट तीन और समष्टिकूट एक है। व्यष्टि और समष्टि दोनों कूटों को मिला कर चार कूट हैं। इन चार कूटों में चार बीज हैं, जो सृष्टि, स्थिति, संहार और अनाख्या के प्रतिपादक हैं। अनाख्या अनुग्रह तथा तिरोधान में अथवा पञ्चकृत्यों में ही औदासीन्य अवलम्बन रूप अवस्था की वाचक है।

मूल विद्या पञ्चदशी है। कादि विद्या के उपासक रहे कामदेव और हादि विद्या की उपासिका रहीं लोपामुद्रा (द्रष्टव्य परशुरामकल्पसूत्र ३ और श्रीक्रम ३ पृ० १०१)। संमोहनतन्त्र में कहा गया है कि तारा-साधक कादि और हादि दोनों मतों के अधिष्ठाता हंसतारा के अनुगत हैं। हंसतारा महाविद्या महायोगेश्वर तथा कादियों की काली है,हादियों की सुन्दरी है और कहादियों के लिए हंस है (द्रष्टव्य गार्लेण्ड आफ लेटरस् पृ० १५५)।

श्रीविद्यार्णव के मतानुसार कादिमत का नामान्तर मधुमतीमत है। यह त्रिपुरा की उपासना का प्रथम भेद है। द्वितीय मत है मालिनीमत, यही कादिमत है। कादिमत का स्वरूप जगत्चैतन्यरूपिणी मधुमती महादेवी के साथ तादात्म्य-लाभ करना है। कालीमत का स्वरूप है विश्वविग्रहा मालिनी महादेवी के साथ तादात्म्य लाभ करना। इन दोनों के विषय में विस्तृत विवरण श्रीविद्यार्णव में देखना चाहिए (१। ५०८; १। ९१०)। गौड़ सम्प्रदाय के मत से श्रेष्ठ मत कादि है, परन्तु कश्मीर और केरल के मत से त्रिपुरा और तारा श्रेष्ठ मत हैं (द्रष्टव्य शक्ति एण्ड शाक्त, २य संस्करण पृ० १५६, १५७)। कादियों की देवी काली है, हादियों की देवी त्रिपुरसुन्दरी है और कहादियों की देवी तारा अथवा नीलसरस्वती है।

त्रिपुरोपनिषद् और भावनोपनिषद् कादिमत के ग्रन्थ हैं। संभवतः कौलोपनिषद् भी ऐसी ही है। इन पर भास्करराय की टीका है। त्रिपुरोपनिषद् के व्याख्याकार भास्करराय के उपोद्घात श्लोक के अनुसार यह उपनिषत् शाङ्खायन आरण्यक के अन्तर्गत है। हादिविद्या का प्रतिपादन त्रिपुरातापिनी उपनिषत् में है। प्रसिद्धि है कि दुर्वासा मुनि त्रयोदशाक्षरा (१३ अक्षर वाली) हादिविद्या की उपासना करते थे। दुर्वासा विरचित ललितास्तवरत्न बम्बई से प्रकाशित हुआ है। एक हस्तलिखित पोथी मेरे दृष्टिगोचर हुई थी, जिसका नाम था परमशम्भुस्तुति। वह भी दुर्वासा विरचित ही है। इस ग्रन्थ के रचयिता का नाम क्रोधभट्टारक कहा गया है। मुझे उसमें निम्न लिखित प्रकरण दिखाई दिये थे। इस ग्रन्थ के प्रत्येक प्रकरण का नाम स्कन्धरश्मि प्रकरण रखा गया है। प्रकरणों के विषय यों हैं—क्रियाशक्ति स्कन्धरश्मि, कुण्डलिनी स्कन्धरश्मि, मातृका स्कन्धरश्मि, षडन्वयविवेक स्कन्धरश्मि, शम्भु०, पावक ध्यानयोग, परमशिव-महाविभूति विषयक, अन्तर्याग विशेषोपचार परामर्शन स्कन्धरश्मि इत्यादि। इस स्तुति में एक श्लोक यों है—

अक्रान्तं ब्रह्मतत्त्वं निजहृदयदरीलीनमात्मप्रकाशं
व्यक्तीकर्तुं स्वनित्याक्षरविदितमहामातृकात्वं प्रपन्नः।

त्वं विद्याम्नायविद्यासुविदितमहिमानन्तशक्तिप्रकाशः
तत्तद्वर्णात्मभेदैरुपदिशसि पदं श्रीगुरोस्तत्स्वरूपम् ॥

दुर्वासा का एक और स्तोत्र है। उसका नाम त्रिपुरामहिम्नस्तोत्र है। उस पर नित्यानन्दनाथ की टीका है।

श्रीविद्यार्णव के अनुसार कादि अथवा मधुमतीमत के मुख्य ग्रन्थ चार हैं,[१] अर्थात् तन्त्रराज, मातृकार्णव, योगिनीहृदय और त्रिपुरार्णव।

१. तन्त्रराज की बहुत टीकाएँ हैं। उनमें सुभगानन्दनाथ कृत मनोरमा प्रधान है। टीकाकार का नामान्तर है प्रपञ्चसारसिंहराजप्रकाश। उनका वास्तविक नाम श्रीकण्ठेश था। वे कश्मीर के एक राजकर्मचारी थे। १६६० वि० या १६०४ ई० में उन्होंने इस ग्रन्थ की टीका की। वे सेतुबन्ध तीर्थ यात्रा करने दक्षिण देश में गये थे। इस प्रसङ्ग में दक्षिण के किसी एक मण्डल के राजा नृसिंहराज से उनका परिचय हो गया था। नृसिंहराज के आश्रय में उन्हीं के आदेश से उन्होंने २२ प्रकाश पर्यन्त तन्त्रराज की यह टीका रची थी। शेष अंश की टीका की पूर्ति उनके शिष्य प्रकाशानन्द ने की।

प्रेमनिधि पन्त कृत सुदर्शन नाम की टीका भी तन्त्रराज पर है। प्रसिद्धि है कि प्रेमनिधि ने अपने मृत पुत्र सुदर्शन की स्मृतिरक्षा के हेतु सुदर्शन नाम की टीका रची थी। परन्तु टीका देखने से पता चलता है कि इस टीका की रचयित्री प्रेमनिधि पन्त की तृतीया पत्नी प्राणमञ्जरी हैं। किसी-किसी ग्रन्थ की पुष्पिका से पता चलता है कि प्रेम-

१ मतान्तर में चार के स्थान पर नौ ग्रन्थ माने जाते हैं। यह मत तन्त्रराज की टीका मनोरमा का है। ये नौ ग्रन्थ यों हैं—चन्द्रज्ञान, सुन्दरीहृदय, नित्याषोडशिकार्णव, मातृकाहृदय, संमोहन, वामकेश्वर, बहुरूपाष्टक, प्रस्ताव-चिन्तामणि और मेरुप्रस्तार। परन्तु यह अमूलक है, क्योंकि सुन्दरीहृदय, योगिनीहृदय, नित्याषोडशिकार्णव या वामकेश्वर वस्तुतः पृथक् ग्रन्थ नहीं हैं। अंशांशी के रूप में एक ही ग्रन्थ है। बहुरूपाष्टक किसी एक ग्रन्थ का नाम नहीं है। यह आठ ग्रन्थों की समष्टि का नाम है। ६४ तन्त्रों का उल्लेख सुन्दरीलहरी में जहाँ किया गया है वहाँ सभी टीकाकारों ने इस विषय को स्पष्ट कर दिया है। विशेषतः लक्ष्मीधर की टीका इसके लिए देखनी चाहिए। भास्करराय ने सेतुबन्ध में (६१ पृ०) कहा है—तन्त्रराज में जो नित्याहृदय की बात कही गयी है वह योगिनीहृदय का ही नामान्तर है, जो कि वामकेश्वरतन्त्र का उत्तरार्द्ध रूप है—"नित्याहृदयमित्येतत् तत्र उत्तरार्द्धः सयोगिनीहृदयः ससंगः।

निधि ने ही स्वयं इसकी रचना की थी। यह १८वीं शताब्दी का ग्रन्थ है। क्योंकि ग्रन्थकार का दूसरा ग्रन्थ शिवताण्डव-व्याख्यान मल्लादर्श १६४८ शकाब्द या १७२६ ई० में लिखा गया था। भास्करराय रचित भी एक टीका तन्त्रराज पर थी ऐसा भास्करराय के वरिवस्या-रहस्य आदि ग्रन्थों से ज्ञात होता है। तन्त्रराजोत्तर नाम से इसका एक परिशिष्ट ग्रन्थ भी प्राचीन समय में प्रसिद्ध था। ताराभक्तिसुधार्णव में उसका उल्लेख है।

२. योगिनीहृदय तान्त्रिक रहस्य ग्रन्थों में एक प्रधान ग्रन्थ है। यह पाँच अध्यायों में पूर्ण है। यह वामकेश्वर तन्त्र का चतुःशती रूप एक अंश है। भास्करराय ने अपने भावनोपनिषद्-भाष्य में (पृ० १२३) तथा तन्त्रराज के टीकाकारों ने भी इसे कादि के अन्तर्गत माना है। परन्तु वरिवस्यारहस्य में (पृ० ६८) भास्करराय ने कहा है कि इसकी हादिमतानुकूल टीका भी है। योगिनीहृदय के सुन्दरी-हृदय, नित्याहृदय इत्यादि नामान्तर हैं।

परमानन्द तन्त्र अथवा परानन्द तन्त्र किसी-किसी के मतानुसार श्रीविद्योपासना के लिए एक विशिष्ट ग्रन्थ है। उस पर सौभाग्यानन्द-सन्दोह नाम की एक टीका थी, जिसका उल्लेख रामेश्वर कृत परशुरामकल्पसूत्रवृत्ति में (पृ० १३३) मिलता है। इस पर और भी टीकाएँ थीं (द्रष्टव्य सं० वि० २३९२०)।

परमानन्द तन्त्र के अनुसार निर्मित प्रधान और प्रसिद्ध ग्रन्थ सौभाग्यकल्पद्रुम है, जिसके रचयिता का नाम है माधवानन्दनाथ, जो यादवानन्दनाथके शिष्य थे। यह महाग्रन्थ विभिन्न खण्डों में विभक्त था और काशी में ही रचा गया था। इसका रचनाकाल कल्यब्द ४९२३ है। ग्रन्थकार सेतुबन्ध रामेश्वर के निवासी थे। क्षेमानन्द कृत सौभाग्यकल्पलतिका, ज्ञात होता है, इसी कल्पद्रुम के आधार पर रची गयी थी।[1]

श्रीविद्या की उपासना के विषय में अन्यान्य और ग्रन्थों के नाम नीचे दिये जा रहे हैं—
१. वामकेश्वरतन्त्र, इसका पूर्वभाग पूर्वचतुःशती और उत्तर भाग उत्तरचतुःशती कहलाता है। इसमें षोडशनित्याओं का वर्णन है। इस पर भास्करराय की सेतुबन्ध नाम की टीका है। प्राचीन ग्रन्थों की समालोचना से ज्ञात होता है कि वामकेश्वर-विवरण नाम से प्रसिद्ध जयरथ को भी एक टीका है। २. ज्ञानार्णव (२६ पटल), यह ग्रन्थ प्रकाशित हो

१ सौभाग्यकल्पलतिका में शिवानन्दयोगीन्द्र, त्रिपुरार्णव, ज्ञानार्णव प्रभृति नामों का उल्लेख दिखाई देता है।

गया है। ३., ४. श्रीक्रमसंहिता और बृहत्-श्रीक्रमसंहिता, ५. दक्षिणामूर्तिसंहिता (६६ पटलों में पूर्ण), ६. स्वच्छन्दतन्त्र—स्वच्छन्दसंग्रह यह कश्मीर संस्कृत सीरीज में प्रकाशित हो गया है। ७. कालोत्तरवासना, सौभाग्य-कल्पद्रुम में इसका उल्लेख है। ८. श्रीपराक्रम, योगिनीहृदयदीपिका में इसका उल्लेख है। ९. ललितार्चनचन्द्रिका (१७ अध्याय) सच्चिदानन्दनाथ कृत। १०. सौभाग्यतन्त्रोत्तर, सौभाग्यकल्पद्रुम में इसका उल्लेख है। ११. सौभाग्यरत्नाकर सच्चिदानन्दनाथ-शिष्य विद्यानन्दनाथ कृत, इसका भास्करराय कृत सौभाग्यभास्कर में उल्लेख है। १२. सौभाग्यसुभगोदय अमृतानन्दनाथ कृत, इसका योगिनीहृदयदीपिका में उल्लेख है। १३. शक्तिसंगमतन्त्र—सुन्दरी खण्ड, १४. त्रिपुरारहस्य—ज्ञानखण्ड तथा माहात्म्यखण्ड—दोनों काशी से प्रकाशित हैं। इसका चर्याखण्ड भी है, परन्तु वह उपलब्ध नहीं है। १५. श्रीक्रमोत्तम, निज-प्रकाशानन्दनाथ मल्लिकार्जुन योगीन्द्र कृत। ग्रन्थकार की गुरु-परम्परा इस प्रकार है—प्रकाशानन्द, माधवेन्द्र सरस्वती तथा नृसिंह। काशी में स्वर्गीय अम्बिकादत्त व्यास जी के ग्रन्थागार में मैंने इसकी एक प्रति देखी थी, जिसकी पृष्ठ संख्या ९७ तथा लिपिकाल १७३७ वि० अथवा १६८० ई० था। १६. सुभगार्चापारिजात, १७. सुभगार्चारत्न, १८. आज्ञावतार, १९. संकेतपादुका, २०. चन्द्रपीठ, २१. सुन्दरीमहोदय शंकरानन्द विरचित। ये ग्रन्थकार रामानन्दनाथ के शिष्य थे। (द्रष्टव्य नित्योत्सवनिबन्ध तथा काशीनाथ भट्ट कृत मन्त्रराजसमुच्चय)। ये शंकरानन्द पूर्वाश्रम में कविमण्डन शम्भुभट्ट के नाम से प्रसिद्ध थे और सुप्रसिद्ध विद्वान् भाट्टदीपिका आदि ग्रन्थों के रचयिता उभय-मीमांसानिष्णात खण्डदेव के शिष्य थे। इन्होंने पूर्वाश्रम में भाट्टदीपिका पर प्रभावली नाम की टीका लिखी थी। यह टीका १७६४ वि०या १७०७ ई० में काशी में ही रची गयी थी। शम्भुभट्ट विशिष्ट धर्माचार्य भी रहे। रघुनाथ भट्ट के कालतत्त्व विवेचन पर उनकी सारसंग्रह नाम की टीका प्रसिद्ध है। उनके संन्यास-गुरु परमहंस परिव्राजकाचार्य रामानन्द सरस्वती दशनामी संन्यासी थे। सुन्दरीहृदय के अन्त में शंकरानन्द ने लिखा है—

शङ्करानन्दनाथेन कविमण्डनशम्भुना ।
कृतं ग्रन्थं गुरुप्रीत्यै भजन्तु समुपासकाः ॥

इससे स्पष्टतया प्रतीत होता है कि कविमण्डन शम्भुभट्ट का ही संन्यासाश्रम का नाम शंकरानन्द है। प्रभावली में भी उन्होंने "सर्वाभीष्टपदं नौमि श्रीरूपं सुन्दरं महः।"

कह कर मङ्गलाचरण किया है। वे त्रिपुरा के उपासक थे इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। अपने पिता बालकृष्ण के विषय में उन्होंने कहा है—"वे वेद शास्त्रार्णव-पारदृश्वा थे, यज्ञादि कर्म कराने में अतिदक्ष तथा सदाशिव के अर्चन से शुद्धचित्त थे।" २२. हृदयामृत उमानन्द कृत। इसका रचनाकाल १७४२ ई० है। २३. नित्योत्सवनिबन्ध, यह भी उमानन्द कृत है और प्रकाशित भी हो चुका है। उमानन्द भास्करराय के शिष्य थे। निबन्ध अर्थात् नित्योत्सवनिबन्ध का रचनाकाल है ४८४६ कल्यब्द "रसार्णवकरिवेद" अर्थात् १७४५ ई०। उमानन्द का पूर्वाश्रम का नाम जगन्नाथ था। ये महाराष्ट्र ब्राह्मण थे। भोसलवंशीय राजा के सभासद थे। इनके पिता का नाम बालकृष्ण और माता का नाम लक्ष्म्यम्बा था। २४. लक्ष्मीतन्त्र, इसमें संक्षेप में त्रिपुरामाहात्म्य का वर्णन है। २५. ललितोपाख्यान, यह ब्रह्माण्डपुराण के उत्तरखण्ड से गृहीत है। सौभाग्यभास्कर में भी इसका उल्लेख है। यह ४० अध्यायों में पूर्ण है। इसका निर्णयसागर प्रेस, बम्बई से प्रकाशन हो चुका है। इसमें संक्षेपतः ललितामाहात्म्य का वर्णन है। २६. त्रिपुरासार-समुच्चय लालभट्ट कृत। इस पर सम्प्रदायदीपिका नाम की एक टीका है। २७. श्रीतत्त्वचिन्तामणि पूर्णानन्दपरमहंस कृत। इसका रचना-काल १४९९ शकाब्द अथवा १५७७ ई० है। ये पूर्णानन्द स्वामी ब्रह्मानन्द के शिष्य थे। २८. शाक्तक्रम, यह भी पूर्णानन्दपरमहंस कृत है। २९. विरूपाक्षपञ्चाशिका, ३०. कामकलाविलास पुण्यानन्द कृत। ये ग्रन्थकार हादिमत के उपासक थे (द्रष्टव्य एभेलेन की भूमिका)। इस पर चिद्वल्ली नाम की एक टीका है, जिसके रचयिता नटनानन्द हैं। यह विभिन्न स्थानों से प्रकाशित हो चुकी है। ३१. सौभाग्यचन्द्रोदय, ३२. वरिवस्यारहस्य, ३३. वरिवस्याप्रकाश, ३४. शाम्भवानन्दकल्पलता—ये चारों ग्रन्थ भास्करराय विरचित हैं। ३५. त्रिपुरासार, सर्वोल्लास तन्त्र में इसका उल्लेख है। ३६. संकेतपद्धति, सौभाग्यभास्कर में इसका उल्लेख है। ३७. सौभाग्यसुधोदय, इसका भी सौभाग्यभास्कर में उल्लेख है। ३८. परापूजाक्रम, श्रीक्रमोत्तम, चिदम्बरनट तथा सौभाग्यकल्पद्रुम में इसका उल्लेख है।

श्रीविद्याविषयक साहित्य जैसा व्यापक है वैसा ही प्राचीन भी है, क्योंकि श्रीविद्या की उपासना भी अति प्राचीन काल से विभिन्न कोटि के साधकों में चली आ रही है। इतिहास से पता चलता है कि देवलोक में भी विभिन्न देवगण इसके उपासक थे। सिद्धों में भी विभिन्न ऋषि, मुनि आदि इसी के उपासक थे। मनुष्य कोटि में भी बड़े-बड़े साधक प्राचीन काल से ही इस विद्या की साधना में निरत रहे हैं। देवताओं में इन्द्रादि विभिन्न

देवताओं के नामों का श्रीविद्या के साधक के रूप में उल्लेख मिलता है। ऋषियों में दुर्वासा, अगस्त्य, विश्वामित्र आदि ऋषियों के नाम श्रीविद्योपासक रूप से प्रसिद्ध हैं। मनुष्यों में, वर्तमान युग में, शंकराचार्य के परम गुरु गौडपादाचार्य का नाम विशेषरूप से उल्लेख योग्य है। आचार्य गौड़पाद ने इस विषय में सुभगोदयस्तुति के नाम से ५२ श्लोकों के एक स्तोत्र का निर्माण किया था, जिस पर श्री शंकराचार्य की व्याख्या थी, ऐसी प्रसिद्धि है। आचार्य लक्ष्मीधर (सौन्दर्यलहरी के व्याख्याकार) ने भी इस पर एक टीका रची थी, ऐसा उन्होंने स्वयं उल्लेख किया है। आचार्य श्री गौड़पाद का इस विषय का दूसरा ग्रन्थ श्रीविद्यारत्नसूत्र है। यह ग्रन्थ सूत्रात्मक है। इस पर श्रीशंकरारण्य की एक व्याख्या भी है। दोनों काशी सरस्वतीभवन-ग्रन्थमाला से प्रकाशित हैं। श्री शंकराचार्य त्रिशती-भाष्यकार के रूप से इस सम्प्रदाय में प्रसिद्ध हैं। हस्तलिखित तान्त्रिक ग्रन्थों का अवलोकन करने पर यह प्रतीत होता है कि विभिन्न तान्त्रिक सम्प्रदाय अपनी-अपनी गुरु-परम्परा में श्रीशंकराचार्य का स्थान निर्देश करते हैं। इस प्रकार प्राचीन काल में बड़े-बड़े आचार्य श्रीविद्या के उपासक थे और उन्होंने इस विषय में कुछ न कुछ लिखा भी था। इस संक्षिप्त भूमिका में इस विषय की विस्तृत आलोचना अप्रासंगिक होगी।

भुवनेश्वरी

भुवनेश्वरी की उपासना के विषय में सर्वप्रधान ग्रन्थ है भुवनेश्वरीरहस्य (२६ पटल)। इसमें भुवनेश्वरी की अर्चन-पद्धति साङ्गोपाङ्ग वर्णित है। इसके निर्माता पृथ्वीधराचार्य थे। यह प्रसिद्धि है कि ये पृथ्वीधर गोविन्दभगवत्पाद-शिष्य भगवत्पाद श्रीशंकराचार्य के साक्षात् शिष्य थे। इस ग्रन्थ की एक प्रति रायल एशियाटिक सोसाइटी बंगाल के पुस्तकालय में है। उक्त पुस्तक १६९४ में लिखी गयी थी। उसमें पृथ्वीधर का शिष्यक्रम इस प्रकार प्रदर्शित है—ब्रह्मचैतन्य, शिवचैतन्य, आनन्दचैतन्य, देवचैतन्य, जनार्दनचैतन्य। ये शृङ्गेरी मठ से सम्बद्ध थे। यह परम्परा रायल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल के पुस्तकालय में नं० ५८१ की बालार्चनविधि नामक पुस्तक में है। इन्हीं पृथ्वीधर द्वारा विरचित भुवनेश्वरीस्तोत्र जर्मनी में है। (द्रष्टव्य वेवर १७७०;—लिपजिग १३७४ से १३७७ तक)। भुवनेश्वरी के विषय में भुवनेश्वरी-तन्त्र तथा भुवनेश्वरी परिजात भी प्रामाणिक ग्रन्थ हैं।

भैरवी

भैरवी का रहस्य विशेष रूप से भैरवीतन्त्र से ज्ञात हो सकता है। भैरवीरहस्य तथा भैरवीसपर्याविधि भी प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। इस विषय का सबसे विशिष्ट ग्रन्थ है भैरवी-यामल, जिसके महत्त्व के सम्बन्ध में पुरश्चर्यार्णव आदि ग्रन्थों में उल्लेख है। भैरवी के प्रकार भेद बहुत हैं जैसे सिद्धिभैरवी, त्रिपुराभैरवी, चैतन्यभैरवी, भुवनेश्वरीभैरवी, कमलेश्वरीभैरवी, सम्पत्प्रदाभैरवी, कौलेशीभैरवी, कामेश्वरीभैरवी, षट्कूटाभैरवी, नित्याभैरवी, रुद्रभैरवी, भद्रभैरवी इत्यादि। सिद्धिभैरवी उत्तराम्नाय पीठ की देवी है, त्रिपुराभैरवी ऊर्ध्वाम्नाय की देवी है, नित्याभैरवी पश्चिम सिंहासनारूढ़ा है, जिसके उपासक स्वयं शिव हैं। भद्रभैरवी दक्षिण सिंहासन पर आरूढ़ है और विष्णु उसके उपासक हैं। त्रिपुराभैरवी चतुर्भुजा हैं। भैरवी का भैरव बटुक है। मुण्डमालातन्त्र के अनुसार भैरवी और नृसिंह अवतार अभिन्न हैं।

छिन्नमस्ता

छिन्नमस्ता के विषय में शक्तिसंगमतन्त्र का छिन्ना खण्ड देखना चाहिए।

धूमावती

धूमावती का भैरव काल भैरव है। देवियों में यह विधवा हैं। इसीलिए किसी किसी के मत से इनका भैरव नहीं है। यह अक्षय तृतीया के दिन प्रदोष काल में आविर्भूत हुई थीं। धूमावती उत्तराम्नाय की देवी हैं और काकध्वज रथ में आरूढ़ हैं। यह वामनावतार से अभिन्न हैं। इनके हाथ में सूप है और इनका चेहरा क्षुधा और पिपासा से कातर दिखाई देता है। शत्रु के मारण, मोहन और उच्चाटन के लिए धूमावती का उपयोग किया जाता है। प्राणतोषिणी तन्त्र में इनके आविर्भाव का वृत्तान्त वर्णित है।

वगला

वगला के विषय में मुख्य तन्त्र है शाङ्खायन तन्त्र (३० पटल), जो ईश्वर और क्रौञ्चभेदन का संवाद रूप है। काशी सरस्वतीभवन में इसकी एक सम्पूर्ण प्रति है। वगला त्रैलोक्यस्तंभिनी विद्या है। पूर्वोत्तर शाङ्खायन तन्त्र 'षड्विद्यागम' नाम से प्रसिद्ध है। वगला के विषय में वगलाक्रमकल्पवल्ली नाम का एक अच्छा ग्रन्थ है। संमोहन तन्त्र में वगला के आविर्भाव का वर्णन है। सत्ययुग में जब चराचर के विनाश के लिए वातक्षोभ हुआ था तब विष्णु ने तपस्या से वगला को प्रसन्न किया। देवी प्रसन्न होकर सौराष्ट्र में प्रकट हुई थी।

मातङ्गी

मातङ्गी के नामान्तर सुमुखी अथवा उच्छिष्ट-चाण्डालिनी या महापिशाचिनी हैं। मातङ्गी के उपासकों के लिए द्रष्टव्य ग्रन्थ ये हैं——कुलमणि गुप्त कृत मातङ्गी-क्रम, रामभट्ट कृत मातङ्गीपद्धति इत्यादि। ये शिवानन्द जगन्निवास गोस्वामी के पुत्र थे। यह पद्धति सिंहसिद्धान्तविन्दु का एक अध्यायमात्र है। यह राजा देवसिंह के राजत्वकाल में लिखी गयी थी। ये देवसिंह बुन्देलखण्ड के मधुकर शाह के प्रपौत्र थे। सुमुखीपूजापद्धति के नाम से प्रसिद्ध एक और ग्रन्थ है, जिसके रचयिता शंकर (सुन्दरानन्द के शिष्य) थे। सुन्दरानन्द सुप्रसिद्ध विद्यारण्य स्वामी की अधस्तन शिष्य-परम्परा में छठी पीढ़ी में थे। इसमें लिखा है कि गौड़पाद के शिष्य गोविन्दपाद थे। उनके शिष्य आचार्य शंकर थे। शंकराचार्य के शिष्य विरूपाचार्य (विश्वरूपाचार्य) थे। विरूपाचार्य की शिष्य-परम्परा इस प्रकार है——शंकर, वोधधन, ज्ञानधन, ज्ञानोत्तम, सिद्धगिरि, भारतीतीर्थ और विद्यारण्य। मातङ्गी के नाना भेद हैं। जैसे——उच्छिष्ट-मातङ्गी, राजमातङ्गी, सुमुखी, वश्यमातङ्गी, कर्णमातङ्गी इत्यादि। यह दक्षिण तथा पश्चिम आम्नाय की देवी है। ब्रह्मयामल में लिखा है कि मतङ्ग मुनि की सुदीर्घ तपस्या से देवी ने प्रसन्न होकर उनकी कन्या के रूप में जन्म लिया था।[1] मातङ्गी के भैरव का नाम है मतङ्ग अथवा सदाशिव।

कमला

दश महाविद्याओं में दशमी महाविद्या कमला है। तन्त्रसार, शारदातिलक, शाक्त-प्रमोद आदि ग्रंथों में उनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार किया गया है——इनकी देहकान्ति सुवर्ण के तुल्य अति मनोहर है, शरीर पर सुन्दर रक्तवर्ण की कौशेष साड़ी शोभित है, सिर पर रत्नजटित किरीट, बायें दो हाथों में दो मंजुल कमल तथा दाहिने ऊर्ध्व हस्त में अभय मुद्रा है। हिमाच्छन्न हिमगिरि शिखकार चार शुभ्र गज अपने शुण्डादण्डों से गृहीत सुवर्ण कलशों से इनका अभिषेक करते हैं। ये अरुण कमल पर आसीन हैं तथा मणिमाणिक्य के विविध प्रकार के आभरणों से विभूषित हैं।

१ तन्त्रवाङमय से यह पता चलता है कि कदम्बवन में मतङ्ग ऋषि तपस्या करते थे। वहाँ सुन्दरी अर्थात् त्रिपुरसुन्दरी के नेत्र से एक तेज निकला। काली ने उसी तेज से श्यामल रूप धारण किया और राजमातङ्गिनी के नाम से प्रसिद्ध हुई।

(द्रष्टव्य संमोहन तन्त्र)

तान्त्रिक सम्प्रदाय-भेद

तान्त्रिक सम्प्रदाय शब्द से हम लोग प्रधानतः शाक्त सम्प्रदाय ही समझते हैं। किन्तु शिव और शक्ति में घनिष्ठ सम्बन्ध रहने के कारण शैव सम्प्रदाय भी प्राचीन काल से ही तन्त्र-सम्प्रदाय के रूप में परिगणित होता आया है। काल-क्रम से तान्त्रिक सम्प्रदाय के साधन तथा सिद्धान्त गत कुछ वैशिष्टच वैष्णवादि-सम्प्रदायों में भी लक्षित होने लगे। इसलिए पञ्चरात्र तथा सात्वत सम्प्रदाय भी तान्त्रिक नाम से परिचित हुए। इसीलिए आचार्य यामुन मुनि ने 'आगमप्रामाण्य" ग्रन्थ लिख कर आगमों में वैदिकत्व प्रदर्शन करने का प्रयत्न किया, क्योंकि यदि वे आगम न मानते तो आगम के वैदिकत्व प्रदर्शन का प्रयोजन ही क्या था। परन्तु इस ग्रन्थ में हमने वैष्णव तन्त्र-साहित्य को साधारणतः अपनी आलोचना का विषय नहीं माना है।

लक्ष्मीधर ने सनत्कुमारसंहिता से वचन उद्धृत कर यह दिखाने की चेष्टा की थी कि मध्ययुग में जिन विभिन्न तान्त्रिक सम्प्रदायों का प्रसार रहा, उनमें से एकमात्र समयाचारनिष्ठ शुभागमतत्त्ववेदी ब्रह्मवादी गण ही वैदिक थे। वे लोग भगवती की आभ्यन्तरिक पूजा करते थे। इस प्रसंग में पाँच शुभागमों के नाम भी प्रसिद्ध हैं। कुछ लोग समझते हैं कि ये ग्रन्थ पृथक्-पृथक् ग्रन्थ नहीं हैं किन्तु वेद का गुह्य अर्थ प्रकाशन करने वाले केवल व्याख्यानमात्र (टीकामात्र) हैं। ये सब वेदभाष्य सायणाचार्य से बहुत पहले प्रसिद्ध थे। सायण ने अपने वेद-भाष्य में विभिन्न स्थलों पर उनका नाम-निर्देश पूर्वक उनके वचनों को उद्धृत किया है। सुना जाता है कि पण्डित अनन्तकृष्ण शास्त्री ने तैत्तिरीय आरण्यक पर वसिष्ठ कृत टीका की पुस्तक देखी थी।

समयाचार के अतिरिक्त विभिन्न आचार वाले सम्प्रदाय प्रायः सभी अवैदिक थे, ऐसा किसी-किसी का मत है। सनत्कुमारसंहिता में इस प्रसङ्ग में निम्नोक्त सम्प्रदायों के नाम उल्लिखित हुए हैं--(१) कौल, लक्ष्मीधर के अनुसार ये लोग आधार चक्र में पूजन करते हैं। (२) क्षपणक, प्रसिद्धि है कि ये लोग प्रत्यक्ष त्रिकोण में पूजन करते हैं। यह सम्प्रदाय दिगम्बर सम्प्रदाय की एक शाखा है। चतुःशती के मतानुसार जो चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों की सूची दी गयी है उसमें 'पूर्व' से लेकर 'देवीमत' पर्यन्त जो तन्त्र-साहित्य प्रदर्शित है, वह इसी सम्प्रदाय से सम्बद्ध है। अर्थात् पूर्व, पश्चिम, दक्ष, उत्तर, निरुत्तर,

विमल, विमलोत्थ और देवीमत इसके अन्तर्गत हैं। (३) कापालिक, ये लोग प्रत्यक्ष त्रिकोण तथा आधार चक्र—दोनों का पूजन करते हैं। (४) दिगम्बर, ये भी कापालिकों के तुल्य प्रत्यक्ष त्रिकोण तथा आधार चक्र का पूजन करते हैं। यह सम्प्रदाय कापालिक सम्प्रदाय का ही एक देश है। इन लोगों के सिद्धान्त का प्रतिपादक साहित्य ६४ तन्त्रों की पूर्वोक्त सूची के अन्तर्गत सर्वज्ञानोत्तर, महाकालीमत, अरुणेश, मोदिनीश और विकण्ठेश्वर तन्त्र हैं। (५) इतिहासक, ये लोग भैरवयामल के अनुसार उपासना करते हैं। (६) वामक, इस सम्प्रदाय के लोग वामकेश्वर तन्त्र का अनुसरण करने वाले हैं। लक्ष्मीधर के अनुसार ये सभी चक्रपूजक हैं और बाह्य पूजा में अनुरक्त अवैदिक साधक हैं।

लक्ष्मीधर कहते हैं (सौन्दर्यलहरी की टीका श्लोक ३१) कि समयमार्ग वैदिक मत है। इसका प्रतिपादन पूर्व उल्लिखित 'शुभागमपञ्चक' में है। इस पञ्चक में वसिष्ठ-संहिता, सनकसंहिता, शुकसंहिता, सनन्दनसंहिता और सनत्कुमारसंहिता—ये पाँच संहिताएँ हैं। इन पर अवलम्बित जो आचार है वह समयाचार कहलाता है। जिन चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों का उल्लेख सौन्दर्यलहरी में है, वे इनसे भिन्न हैं। वे अवैदिक हैं, क्योंकि वे कौल, कापालिक तथा वाममार्ग के हैं। चन्द्रकलाष्टक नाम से ख्यात जो आठ तन्त्र-ग्रन्थ हैं, उनमें भी श्रीविद्या का प्रतिपादन है। ये आठ विद्याएँ 'चन्द्रकला' नाम से प्रसिद्ध हैं। ज्योत्स्नावती, कुलार्णव, कुलेश्वरी, भुवनेश्वरी, बार्हस्पत्य और दुर्वासा भी इनके अन्तर्गत हैं। इन तन्त्रों में त्रिवर्ण का भी अधिकार है और शूद्र का भी अधिकार है। परन्तु त्रिवर्ण का अधिकार है दक्षिण मार्ग में और शूद्र का अधिकार है वाम मार्ग में। ६४ तन्त्रों में केवल शूद्रादि का अर्थात् शूद्र और मूर्धाभिषिक्तादि अनुलोम और प्रतिलोम जातियों का अधिकार है, अतएव सिद्धान्त यह है कि चतुषष्टि (६४) तन्त्र कौलमार्गीय तथा अवैदिक हैं।

और भी एक बात ज्ञातव्य है। वह यह कि चतुःषष्टि तन्त्रों में भी चन्द्रज्ञान नामक एक तन्त्र है, जिसमें षोडश नित्याओं का प्रतिपादन है, फिर भी वह कापालिक मत ही है, इसलिए हेय है। चन्द्रकलाविद्याष्टक में भी श्रीविद्या का प्रतिपादन है और शुभागमपञ्चक में भी है। अर्थात् कौल, मिश्र तथा वैदिक तीनों मार्गों में श्रीविद्या की उपासना प्रचलित है। परन्तु उनमें भेद है। समयमत में षोडश नित्याएँ मूल विद्या के अन्तर्गत रूप में अर्थात् अङ्गरूप में मानी जाती हैं, परन्तु चन्द्रज्ञान-विद्या में जो षोडश नित्याओं की चर्चा है वह प्रधान रूप में है, किसी के अङ्गरूप में नहीं है।

वैदिक मत में षोडश नित्याएँ श्रीचक्र में अङ्ग रूप से अन्तर्भूत हैं। ये सब नित्याएँ अष्टवर्णात्मक हैं। इसीलिए अष्टदल कमल के अष्ट पत्रों में स्थित हैं और क्रम से अष्ट-कोण चक्र में पूर्व कोण से लेकर एक-एक कोण में दो-दो कर के अन्तर्भूत हैं, उनमें सोलह नित्याएँ हैं। षोडश नित्याएँ षोडश दलों में तथा षोडश स्वर दो दशारों में अन्तर्भूत हैं। सोलहों के भीतर पहली दो नित्याएँ त्रिकोण में भी विन्दुरूप में स्थित हैं, शेष चौदह नित्याएं चौदह कोणों में अन्तर्भूत हैं। मेखलात्रय और भूपुरत्रय वैन्दव और त्रिकोण में अन्तर्भूत हैं। इस अन्तर्भाव का नामान्तर है मेरुप्रस्तार। अतएव चन्द्रकलाविद्या चक्रविद्या की अङ्गभूत है।

सनन्दनसंहिता में कहा गया है कि ये षोडश नित्याएँ चन्द्रकला चक्रविद्या की अङ्ग-रूप हैं। ये षोडश नित्याएँ स्वरात्मक पञ्चदशाक्षरी मन्त्रगत एकारादिभूत अकार और विसर्गात्मक सकार के द्वारा संगृहीत होकर जीवकला के रूप में वैन्दवस्थान में स्थित हैं और उसी के अन्तर्गत हैं। क से म पर्यन्त वर्ण पाशाङ्कुश वीज होकर अष्टार में और दो दश कोणों में अन्तर्भूत हैं, शेष सब वर्ण अर्थात् य से लेकर नौ वर्ण दो बार आवर्तित होकर चतुर्दशार के कोणों में अन्तर्भूत हैं। शेष चार वर्ण चार शिवचक्रों में अन्तर्भूत हैं। इस अन्तर्भाव का नाम है—कैलासप्रस्तार। इससे प्रतीत होता है कि सब नित्याएँ चक्रविद्या में अन्तर्भूत हैं अर्थात् अङ्गरूप हैं।

सनत्कुमारसंहिता में भी यह दिखलाया गया है कि षोडश नित्याएँ चक्रविद्या में अङ्ग-भूत हैं। श्रीचक्र की अङ्गभूता नित्याएँ वशिन्यादि के साथ दो-दो मिल कर वैन्दव और त्रिकोण को छोड़ कर अष्टकोणों में अन्तर्भूत हैं। मध्य में त्रिपुरसुन्दरी विराजमान हैं। वशिन्यादि आठ हैं, नित्याएँ सोलह हैं, योगिनियाँ बारह हैं और गन्धाकर्षिणी आदि चार हैं। यहाँ एकमात्र शक्ति को छोड़ कर ४३ कोणों में ४३ देवताओं का अन्तर्भाव है, एक त्रिपुरसुन्दरी विन्दु स्थान के नीचे और गन्धाकर्षिणी आदि चार द्वारों में स्थित हैं। इस प्रकार ज्ञात होता है कि नित्याएँ अङ्गरूपा हैं। इस प्रकार के अन्तर्भाव का नाम भू-प्रस्तार है।

वशिन्यादि आठ, योगिनियाँ बारह और गन्धाकर्षिणी आदि चार के नाम लक्ष्मीधर ने सौन्दर्यलहरी के १७ वें श्लोक की टीका में दिये हैं।

चक्रलेखन में जो तीन प्रस्तार हैं वे ही मेरुप्रस्तार आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। उनमें मेरुप्रस्तार षोडश नित्याओं का तादात्म्य है, कैलासप्रस्तार मातृका-तादात्म्य

है और भू-प्रस्तार वशिन्यादि का तादात्म्य है। (द्रष्टव्य सौन्दर्यलहरी-टीका लक्ष्मीधरी श्लोक ११)।

अब तक जो कुछ कहा गया है, इससे कौलमत का किञ्चित् आभास अवगत होगा। परन्तु तान्त्रिक साहित्य का अवलोकन करने पर इस मत के विषय में कहीं-कहीं विस्तृत विवरण भी मिलता है। तदनुसार ज्ञात होता है कि कौल मत पूर्व तथा उत्तर भेद से दो प्रकार का है। पूर्व कौल के मतानुसार भगवती परा संवित् आनन्दभैरवी के नाम से परिचित है। वह भगवान् या शिव अर्थात् आनन्दभैरव की शरीररूपा है। सूर्य और चन्द्र उसके दो स्तन हैं और आत्मा है नवात्मक शम्भु। शम्भु शब्द से यहाँ आनन्दभैरव समझने चाहिए, जिनके स्वरूप में नव व्यूह एकीभूत होकर विद्यमान हैं। भैरव और भैरवी में शेष-शेषिभाव है, अर्थात् भैरव हैं शेषी और भैरवी या शक्ति हैं शेष, अथवा भैरवी हैं शेषी और भैरव हैं शेष। यह समरस परानन्द है। यह शेषशेषि-भाव विशेष विचार से ग्रहण करने योग्य तत्त्व है। नव व्यूह यों हैं––(१) कालव्यूह––निमेषादि कल्पान्त से अवच्छिन्न काल है। सूर्य और चन्द्र कालावच्छेदक होने के कारण उसके अन्तर्गत हैं। (२) कुलव्यूह––अर्थात् नीलादि रूपव्यूह। (३) नामव्यूह––अर्थात् संज्ञास्कन्ध। (४) ज्ञानव्यूह––विज्ञानस्कन्ध, इसका नामान्तर है भागव्यूह, सभाग यानी सविकल्प और विभाग यानी निर्विकल्प। (५) चित्तव्यूह––अहङ्कार, चित्त, बुद्धि, महत् और मन ये पञ्च स्कन्धों के नामान्तर हैं। (६) नादव्यूह––राग, इच्छा, कृति और प्रयत्न-स्कन्ध। यह कहना अनुचित न होगा कि मातृका के चार रूप नादव्यूह के अन्तर्गत हैं। परा इत्यादि इसके अन्तर्गत हैं। परा अन्तःकरण में जो ऊह या तर्क सहित स्फुरित होती है। योगियों को केवल युक्तावस्था में इसका परिचय प्राप्त होता है। कामकला विद्या में इसे ही परा माहेश्वरी कहा गया है। यह परा वाक् जब अपेक्षाकृत स्पष्ट रूप में प्रतिभासमान होती है तब उसका नाम होता है पश्यन्ती। तब यह त्रिमातृकात्मक होकर चक्ररूप धारण करती है––"स्पष्टा पश्यन्त्यादिमातृकात्मा चक्रतां याता।" त्रिमातृका शब्द का अर्थ है त्रिखण्डयुक्ता पञ्चदशाक्षरी मातृका। यही चक्ररूप में परिणत होती है। इस पश्यन्ती वाक् का युक्तावस्था में अतिसूक्ष्म रूप में अनुभव किया जाता है। परा और पश्यन्ती इन दो वाकों से मध्यमा वाक् का उदय होता है। इसके स्थूल और सूक्ष्म दो भेद हैं। वामा, ज्येष्ठा, रौद्री और अम्बिका इन चार शक्तियों की जो समष्टि अवस्था है वही सूक्ष्म मध्यमा है; इनकी जो व्यष्टि अवस्था है, वही स्थूल मध्यमा है। वामादि चार शक्तियाँ ही

श्रीचक्र के अन्तर्गत ऊर्ध्वमुख योनिस्वरूप हैं। इन नवव्यूहात्मक शक्तियों के कारण भगवती को नवात्मक कहते हैं। इसका प्रकार इस भाँति प्रदर्शित हो सकता है—

परा

|

अपरा

|

सूक्ष्मा (स्थिरा) स्थूला (नवनादमयी)

(७) विन्दुव्यूह—यह पट्चक्रसंघ का ही नामान्तर है।

(८) कलाव्यूह—यह वर्णात्मक पचास कलाओं का समूह है।

(९) जीवव्यूह—यह भोक्तृवर्ग का नामान्तर है।

ये नौ व्यूह भोक्ता, भोग और भोग्य रूप से तीन प्रकार के हैं। भोक्ता है आत्मव्यूह, भोग ज्ञानव्यूह है एवं भोग्य है कालव्यूहादि-समुदाय। सभी व्यूह जीवव्यूह के सर्वत्र अन्वय युक्त हैं। इसलिए सर्वत्र ऐक्य है। कालव्यूह अवच्छेद है; इससे वहाँ भी ऐक्य है। नाद और कला एक होने से परमेश्वर के नवव्यूह रूप हैं इसलिए भैरव और भैरवी के मध्य नौ प्रकार का ऐक्य माना गया है। यही कौल मत है। इसलिए कौल मत में परमेश्वर नवात्मक है। कौलगण कहते हैं—

नवव्यूहात्मको देवः परानन्दपरात्मकः।
नवात्मा भैरवो देवो भुक्तिमुक्तिप्रदायकः।।
परानन्दपराशक्तिश्चिद्रूपानन्दभैरवी।
तयोर्यदा सामरस्यं सृष्टिरुत्पद्यते तदा।।

आनन्दभैरव और पराभैरव का तादात्म्य है। दोनों ही समरूप से नवात्मक हैं। ऐसी स्थिति में शेषशेषिभाव की जो बात कही गयी है वह आपेक्षिक है। जब सृष्टि आदि में दोनों का प्रयत्न उत्पन्न होता है तब भैरवी की प्रधानता के कारण महाभैरवी, प्रधान, प्रकृति आदि शब्दों से अभिहित होती हैं। उनकी यह प्रधानता ही शेषित्व है। आनन्दभैरव तब अप्रधान, गौण, शेष हो जाते हैं। सबके उपसंहार काल में प्रकृति तन्मात्र में अवस्थित होती है एवं भैरवी स्वात्मा में अन्तर्भूत होती है। तब भैरव शेषी और भैरवी शेष होती हैं। संहारकाल में कार्य-कारण के उपसंहार के बाद स्वयं कारण रूप में स्थिति होती है। पूर्व कौल मत का यही सारांश है।

उत्तर कौल कहते हैं कि प्रधान ही जगत् का कर्ता है। प्रधान होने के कारण उस का शेषभाव नहीं होता, क्योंकि इस दृष्टि में शिव नहीं हैं, वे पंचतत्त्व के रूप में परिणत हो गये रहते हैं। मनस्तत्त्वादि के रूप में प्रधानात्मिका शक्ति का ही परिणाम होता है। तत्त्ववर्ग स्वरूप-परिणाम है। शक्ति जब कार्यरूप समस्त प्रपंच को अपने में समेट कर कारण रूप में अवस्थित होती है तब उसका नाम पड़ता है आधार कुण्डलिनी। यही संक्षेप में पूर्व कौल मत से उत्तर कौल मत की विलक्षणता है।

समयियों का षट्चक्रपूजन नियत नहीं है। परन्तु सहस्रदल कमल में पूजन नियत है। सहस्रदल कमल बैन्दव स्थान होने के कारण उसके मध्यवर्ती चन्द्रमण्डल का चतुरस्ररूप में अनुसन्धान करना पड़ता है। उसके मध्य में स्थित बिन्दु का पञ्चविंशतत्त्वातीत षड्विंशात्मक अर्थात् शिवशक्तिमिलनात्मक सादाख्यरूप में अनुसन्धान करना पड़ता है। इसीलिए समयीमत में बाह्य आराधना नहीं है। षोडश कमल में षोडश उपचार रूप पूजाङ्गकला तो दूर की बात है। इसीलिए आधार से लेकर छह चक्रों का तादात्म्य त्रिकोणादि छह चक्रों के साथ माना जाता है। बिन्दुस्थान चतुरस्र का तादात्म्य सहस्रदल कमल रूप में है। बिन्दु और शिव का तादात्म्य भी है। इसी प्रकार शिव और देह का तादात्म्य है। कुल तीन प्रकार के तादात्म्य हैं। चक्र और मन्त्र का ऐक्य है। इस प्रकार चार प्रकार के ऐक्य हैं उनका अनुसन्धान करना चाहिए। यही समयाराधन है। किसीं-किसी के मत के अनुसार ऐक्य छह प्रकार के हैं। भगवत्तत्त्व नाद, बिन्दु और कला से अतीत है, यह आगमरहस्य है। नाद से परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी का बोध होता है, जिनमें परा है त्रिकोण, पश्यन्ती है अष्टकोण चक्र, मध्यमा है दो दशार और वैखरी है चतुर्दशार। सब शिवचक्र इन्हीं के अन्तर्गत हैं। चतुश्चक्रात्मक श्रीचक्र ही नाद है, बिन्दु हैं मूलाधारादि छह चक्र तथा कलाएं है ५० या ३६०। भगवती इन नाद, बिन्दु और कलाओं से अतीत हैं। सहस्रदल कमल बिन्दु से अतीत बैन्दव स्थान अथवा सुधासिन्धु या सरघा है। नादातीत तत्त्व है बिन्दु के अन्तःस्थित सुन्दरी (तुलनीय–दर्शा, दृष्टा, दर्शता इत्यादि) ५० वर्णात्मक ३६० संख्यक महाकाल रूप पञ्चदश कलातीत सादाख्य श्रीविद्या चित्कला ब्रह्मविद्या अथवा भगवती है। इसीलिए भगवत्तत्त्व नादबिन्दुकलातीत है। इन नाद, बिन्दु और कलाओं का परस्पर ऐक्यानुसन्धान छह प्रकार से होता है। ये छह प्रकार ऐक्यानुसन्धान द्वारा पूजन करने पर सादाख्य में विलीन हो जाते हैं। तदनन्तर इन छह प्रकारों के ऐक्यानुसन्धान के प्रभाव से भगवती परा संवित् अकस्मात् मूलाधार और स्वाधिष्ठान चक्रों का भेदन कर मणिपूर में प्रकट होती है।

अभ्यास के समय गुरुमुख से महाविद्या का ग्रहण कर ऋषि, देवता, छन्द आदि का स्मरण करते हुए गुरु द्वारा उपदिष्ट मार्ग से गुरूपदिष्ट मूल मन्त्र का शुष्क जप किया जाता है। तदुपरान्त आश्विन मास की शुक्ला महानवमी में अर्थात् अष्टमी के निशीथ काल में गुरु के चरणों का उपसंग्रहण करना चाहिए। तब गुरु-हस्त तथा अपने मस्तक का संयोग होता है अर्थात् गुरु शिष्य के मस्तक पर हस्तन्यास करते हैं, फिर मन्त्र का उपदेश होता है, तब षट्चक्रों के पूजन प्रकार के उपदेश तथा छह प्रकार के ऐक्यानुसन्धान के उपदेश के प्रभाव से शैव महावेध होता है अर्थात् सादाख्य का प्रकाश होता है।

महावेध हो जाने के अनन्तर भगवती परासंवित् मणिपूर में प्रत्यक्ष होती है। तदनन्तर उनकी आराधना की जाती है। इस आराधना में अर्घ्य, पाद्य आदि और भूषण-परिधान आदि पूजाङ्ग सब विद्यमान रहते हैं। इसके अनन्तर अनाहत मन्दिर में अर्थात् हृदयमन्दिर में भगवती को धारण कर धूपदान से लेकर नैवेद्यादिदान तथा हस्तप्रक्षालनादि सम्पूर्ण कर्म करने चाहिए। तदुपरान्त विशुद्ध चक्र में भगवती को सिंहासन पर बैठाकर सखियों के साथ संलापादि कराने के समय शुद्ध स्फटिकवत् मणियों से पूजन करना चाहिए। ये सब वस्तुतः भौतिकादि नहीं हैं, किन्तु अपने षोडश दल के अन्तर्गत षोडश चन्द्रकलाएँ है। तदुपरान्त देवी को आज्ञाचक्र में आरोहण कराना पड़ता है। वहाँ कामेश्वरी को नीराजन आदि से प्रसन्न करना पड़ता है। इसके पश्चात् झटिति विद्युल्लता के तुल्य सहस्रदल में भगवती का अनुप्रवेश होता है। उस समय वह सुधासमुद्र में कल्पतरु–छायायुक्त मणिद्वीप में सरघा के भीतर सदाशिव के साथ विहार करने लगती हैं। उस समय तिरस्करिणी या परदा तानकर साधक मन्दिर में स्वयं वास करे। जब तक भगवती निकल कर फिर मूलाधार कुण्ड में प्रवेश न करे तब तक साधक को मन्दिर में अवस्थान (निवास) करना चाहिए। यही समयियों का मत है।

परन्तु शङ्कर भगवान् का मत है कि चार प्रकार के ऐक्यानुसन्धानों के अनन्तर भगवती का साक्षात्कार मणिपूर में होता है। जिस रूप में उनका आविर्भाव होता है उसका वर्णन 'क्वणत्काञ्ची' (सौ० ल० ७) इत्यादि श्लोक में दिया गया है। इस रूप में वह चतुर्भुजा हैं और उनकी चार भुजाओं में धनुष, बाण, पाश और अंकुश ये चार आयुध हैं।

लक्ष्मीधर के मतानुसार छह प्रकार के ऐक्यानुसन्धानों के बाद मूलाधार और स्वाधिष्ठान चक्रों में भेद के अनन्तर मणिपूर में प्रसन्ना भगवती दशभुजायुक्त रूप में प्रकट होती हैं। इन दश भुजाओं में वह धनुष, बाण, पाश, अंकुश, वर, अभय, पुस्तक, अक्षमाला और

वीणा धारण किये रहती हैं। इस विषय में एक वैकल्पिक मत भी है जिसके अनुसार उक्त भुजाओं में पाश, अङ्कुश, पुण्ड्र, इक्षुचाप, पुष्पवाण, अक्षमाला, शुक, अभय और वर हैं। दो हाथ वक्षःस्थल पर वीणा के साथ रखे हुए हैं। ये दोनों मत लक्ष्मीधर के संमत हैं।

कोई-कोई ऐसा कहते हैं कि समयियों का वाह्यपूजन निषिद्ध होने के कारण देवी को सूर्यमण्डल के अन्तर्गत समझ कर पूजन करना भी उनके लिए निषिद्ध ही है। परन्तु यह बात ठीक नहीं है। पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड के चन्द्र और सूर्य अभिन्न हैं, इसलिए चन्द्रकलाओं से जो अमृत-स्यन्दन होता है उससे सूर्य उज्जीवित रहते हैं, इसीलिए सूर्य का सम्पर्क होने पर भी चन्द्रकला विद्या के तेज का तिरोभाव नहीं होता। इसीलिए चन्द्र (सूर्य-?) मण्डल के अन्तर्गत रूप से चन्द्रकला विद्या का पूजन हो सकता है।

परन्तु यह जो निषेध-वाक्य है कि चन्द्रगत विम्वरूप से देवी का पूजन निषिद्ध हैं, उसका तात्पर्य है आज्ञाचक्र के ऊपर स्थित आन्तर चन्द्र के सहस्रदल कमल के अन्तर्गत चन्द्रकलामृत के निस्यन्द से उज्जीवन होता है। इसीलिए उसकी पूजा में निर्बन्ध नहीं है। अतएव पिण्ड और ब्रह्माण्ड के अभिन्न होने के कारण ब्रह्माण्डस्थित चन्द्रमण्डल में भी पूजा का निर्बन्ध नहीं है। अतएव हृदय-कमल में ही देवी की आराधना करने से ऐहिक तथा आमुष्मिक फल का लाभ होता है। समयी की दृष्टि से आन्तर पूजा ही सर्वविध फल देनेवाली है।

भगवान् शङ्कर के पूजाक्रम में आधार-कमल आदि नहीं हैं। आज्ञाचक्र से अवरोह-क्रम के द्वारा पूजा होती है। पहले आकाश, फिर वायु, उसके बाद अग्नि, फिर जल, तदनन्तर सर्वान्त में पृथिवी। इसीलिए मणिपूर के बाद स्वाधिष्ठान का निरूपण है। इसका तात्पर्य संवर्त अग्नि से दग्ध जगत् के उज्जीवन के अनन्तर उत्पत्ति-प्रदर्शन करना है। शुकसंहिता में इस विषय की विस्तृत आलोचना की गयी है।

कौल-धारा में अवान्तर विभाग भी हैं। तान्त्रिक साधना में सभी लोग कौलधर्मी नहीं हैं। कौलसाहित्य में कुल-साधना का जो चित्र दिखाई देता है, कुलसाधना के विरोधियों ने अपनी रचनाओं में उसका यथार्थ रूप न दिखला कर विकृत रूप दिखलाया है। कुलप्रदीप नामक ग्रन्थ में लिखा है कि जिन ग्रन्थों में भगवान् सदाशिव ने कुलमार्ग का वर्णन किया है वे सभी ग्रन्थ कलियुग में प्रायः दुर्लभ हैं। इसीलिए कुल-साधना का रहस्य बहुत कम लोगों को ज्ञात है। उक्त ग्रन्थ में कहा गया है—

गुरोः कृपा यस्य भवेत्प्रभूता श्रीदेवतायाश्च महान् प्रसाद-
स्तस्यैव पुंसः कुलशास्त्रबोधस्तस्यात्र भवितर्न कदापनोद्या।
येषां दृढा भक्तिरिहास्ति शास्त्रे विदन्ति सम्यक् सकलं रहस्यं
प्राग् जन्मपुण्याद् विमला मनीषा ते निन्दका नास्य भवन्ति लोकाः॥
भिन्नाः पशुभ्यो निजगोपनार्थं निन्दन्ति केचित् कुलशास्त्रमेतत्।
केचिच्च निन्दानिरता अबोधा दौष्टयेन ये ते निरये पतन्ति॥

कुलाचार क्या है? सेतुबन्धकार ने कहा है कि परशुरामकल्पसूत्र में व्यवहार, देश आदि से 'परे तु शास्त्रानुशिष्टाः' यहाँ तक जो आचार वर्णित हुआ है वही कुलाचार है। कौलज्ञान के श्रेष्ठत्व के विषय में कहा जाता है कि शैव, वैष्णव, दौर्ग, गाणपत्य प्रभृति मन्त्रों से चित्तशुद्धि होने के अनन्तर कौल ज्ञान का उदय होता है। सेतुबन्ध में उद्धृत कुलार्णव का वचन है—

सर्वेभ्यश्चोत्तमा वेदा वेदेभ्यो वैष्णवं परम्।
वैष्णवादुत्तमं शैवं शैवाद् दक्षिणमुत्तमम्॥
दक्षिणादुत्तमं वामं वामात् सिद्धान्तमुत्तमम्।
सिद्धान्तादुत्तमं कौलं कौलात्परतरं नहि॥

इस मत के अनुसार वेदों से लेकर विभिन्न मतों में कौलमत ही सर्वोत्तम मत है। इसके समर्थक वचन भी शास्त्र में मिलते हैं—

पुराकृततपोदानयज्ञतीर्थजपव्रतैः।
शुद्धचित्तस्य शान्तस्य धर्मिणो गुरुसेविनः॥
अतिगुप्तस्य भक्तस्य कौलज्ञानं प्रकाशते।

कौलों के विषय में ऐसी प्रसिद्धि भी है कि—

अन्तःशाक्ता बहिःशैवाः सभामध्ये च वैष्णवाः।
नानारूपधराः कौला विचरन्ति महीतले॥

इस प्रसङ्ग में यह स्मरण रखना चाहिए कि इस मत का सब लोग अनुमोदन नहीं करते, क्योंकि त्रिकवादियों का वचन है—

वेदादिभ्यः परं शैवं शैवाद् वामं तु दक्षिणम्।
दक्षिणात्परतः कौलं कौलात्परतरं त्रिकम्॥

(द्रष्टव्य—विज्ञान-भैरव की क्षेमराजकृत टीका, पृष्ठ ४)।

इस सिलसिले में कौल साहित्य का संक्षेप में कुछ परिचय दिया जाता है। कौल-सिद्धान्त तथा आचार के प्रतिपादक कतिपय ग्रन्थों के नाम—कुलार्णव, कुलचूडामणि, रुद्रयामल, भावचूडामणि, देवीयामल, कुलपञ्चामृत, उत्तरतन्त्र, कुलतन्त्र, कुलामृत, तन्त्रचूडामणि, कुलकमल, कुलगह्वर, कुलतत्त्वसार, कुलदीपिनी, कुलपञ्चाशिका, कुल-प्रकाश, कुलमत, कुलमूलावतार, कुलरत्नमातृका, कुलरत्नमाला, महारहस्य, मेरुतन्त्र, कुलरत्नावली, कुलशासन, कुलसंग्रह, कुलसर्वस्व, कुलसार, कुलेश्वर, कुलावतार, कुलार्चनतन्त्र, कुलाम्नाय, कुलानन्दसंहिता, कुलागम, कौलतन्त्र, कुलोत्तम, कुलोड्डीश, कौलिकार्चनदीपिका, आगमसार, वामकेश्वरतन्त्र, तन्त्रराज, शांभवीतन्त्र, गन्धर्वतन्त्र, परमानन्दतन्त्र, दक्षिणामूर्तिसंहिता, श्रीतत्त्वचिन्तामणि, कुलप्रदीप (शिवानन्दकृत), रहस्यार्णव इत्यादि। नित्याषोडशिकार्णव के अन्तिम अंश में लिखा है कि कुलाचार-ज्ञान और गुरुपादुका के यजन के विना इस शास्त्र में प्रवेश नहीं हो सकता।

लक्ष्मीधर ने सौन्दर्यलहरी की टीका में विभिन्न स्थलों में कौलों की अप्रामाणिक तथा अवैदिक कह कर निन्दा की है। परन्तु भास्करराय ने सेतुबन्ध-टीका में कहा है—ये सब बातें या तो प्रतारणा हों या भ्रान्तिवश कही गयी हों। किसी-किसी तन्त्र में कौलधर्म की जो निन्दा दीख पड़ती है उसका तात्पर्य तत्-तत् तन्त्रों की केवल स्तुति में है—कौलों की निन्दा में नहीं, क्योंकि कौलग्रन्थ में ही शिव का ऐसा वचन है—

पशुशास्त्राणि सर्वाणि मयैव कथितानि हि।
मूर्त्यन्तरं समासाद्य मोहनाय दुरात्मनाम्॥
महापापवशान्नृणां तेषु वाञ्छाभिजायते।
तेषां हि सद्गतिर्नास्ति कल्पकोटिशतैरपि॥

असली बात यह है कि कौल उपासना चरम भूमि की बात है। उसका अधिकारी अत्यन्त दुर्लभ है। इसीलिए अधिकारी होते हुए भी उसमें प्रवृत्त होने पर विरुद्धाचरण का दोष अवश्यंभावी है। इसीलिए उसकी निन्दा की जाती है। अधिकारी होने पर भी अत्यन्त रहस्य विषय में किसी की प्रवृत्ति न हो इसीलिए निन्दा की गयी है। कुलार्णव में भी लिखा है—

कुलमार्गरतो देवि न मया निन्दितः क्वचित्।
आचाररहिता येऽत्र निन्दितास्ते न चेतरे॥

स्थानान्तर में भी लिखा है—

कुलधर्ममिमं ज्ञात्वा मुच्येयुः सर्वमानवाः ।
इति मत्वा कुलेशानि मया लोके विगर्हितम् ।।

सर्वजनपूज्य महासिद्ध आचार्य अभिनव गुप्त तन्त्रप्रक्रिया और कुलप्रक्रिया दोनों में सिद्ध थे। उनके दोनों प्रक्रियाओं के गुरु भी पृथक्-पृथक् थे। तन्त्रालोक में उन्होंने दोनों गुरुओं को पृथक्-पृथक् नमस्कार किया है। उनके कुलगुरु थे शम्भुनाथ। भगवती या दूती के साथ अभिनवगुप्त ने उन्हें नमस्कार किया है (द्रष्टव्य तन्त्रालोक १।३१)। उस प्रसङ्ग में उन्होंने गुरु को 'जगदुद्धारपरायण' कहा है। इन शम्भुनाथ के गुरु थे सोम या सोमदेव। ये कुलमार्ग या अतिमार्ग के गुरु थे। यह मार्ग त्र्यम्बकधारा के नाम से प्रसिद्ध है। सोमदेव के गुरु का नाम सुमति था। (द्रष्टव्य, जयरथ कृत तन्त्रालोक की टीका १।२१३) शम्भुनाथ ने जालन्धर पीठ से ख्याति प्राप्त की थी। किसी-किसी स्थान में उन्हें सुमति का शिष्य भी कहा गया है। कुलमार्ग या अतिमार्ग 'अतिनय' के नाम से भी प्रसिद्ध है। यही कालीनय है। अर्धत्र्यम्बक मठ से इसका सम्बन्ध है। कुलमार्ग का आदि स्थान है कामरूप महापीठ। इसके प्रवर्तक थे मीनसिद्ध। मीनसिद्ध ही मत्स्येन्द्र के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस विद्या का अवतरण-क्रम यों है—पहले भैरव, तदनन्तर भैरवी, भैरवी से सिद्धमीन अथवा मच्छन्दर अर्थात् मत्स्येन्द्रनाथ। यह मठ चतुर्थ है। इसीलिए मत्स्येन्द्रनाथ को तुरीयनाथ भी कहा जाता है। सुमतिनाथ का सम्बन्ध दक्षिण पीठ से था। पहले कहा जा चुका है कि परशुराम कुल-साधना के अति प्राचीन आचार्य हैं।

वर्तमान युग में भट्टोजि दीक्षित ने तन्त्रप्रामाण्य का खण्डन करते हुए एक ग्रन्थ लिखा था, जिसमें कौलधर्म की भी निन्दा की गयी है। उनके गुरु अप्पय्य दीक्षित ने त्रिपुरा महोपनिषद् की व्याख्या में कौलमार्ग के ऊपर कटाक्षपात किया है।

कौल सम्प्रदाय की एक शाखा का नाम सांसारिक कुलाम्नाय था। इसके प्रवर्तक थे अल्लट अथवा भाविरक्त नाम के एक तपस्वी। ये विश्वरूप नामक एक पाशुपत साधु के शिष्य प्रशस्त के शिष्य अर्थात् विश्वरूप के प्रशिष्य थे। ये विश्वरूप पञ्चार्थ लाकुलाम्नाय के अन्तर्गत थे। प्रतीत होता है कि पाशुपत और कौल—इन दो सम्प्रदायों में घनिष्ठ सम्बन्ध था। कौलाचार्य मत्स्येन्द्र के शिष्य गोरक्षनाथ का कहीं-कहीं पाशुपत कह कर सम्मान किया गया है। सिद्ध योगेश्वरी-मत की धारा नकुलेश से आविर्भूत होकर उनके शिष्य अनन्त और अनन्त के शिष्य गहनेश के द्वारा प्रवर्तित हुई। सिद्ध योगेश्वरी-मत

के विषय में तन्त्रालोक में ऐसा गुरुपरम्परा-क्रम मिलता है—भैरव—भैरवी—स्वच्छन्द—नाकुल—अनन्त—गहनेश। विश्वरूप अनन्तगोत्र थे (द्रष्टव्य, वी. एस. पाठक लिखित शैविज्म इन अर्ली मेडिवल इण्डिया १९५९ (Shaivism in Early Medieval India)।

कौल-साधना का क्रम इस प्रकार है—पहले शाक्ताभिषेक, तदनन्तर पूर्णाभिषेक, तदुपरान्त क्रमदीक्षाभिषेक इत्यादि।

कौल तथा समयी मार्ग के विषय में कुछ कहा गया है। शैव मत के अनुयायियों में पाशुपत, कालामुख आदि अवान्तर भेद वाले सम्प्रदाय प्राचीन काल में थे। सोमसिद्धान्त, महाव्रतधारी, जंगम, भट्ट, भैरव, रौद्र, वाम, सिद्धान्त प्रभृति सम्प्रदाय भी प्रचलित थे। कापालिक का नाम पहले ही दिया जा चुका है। यह जो भैरवधारा की बात कही गयी है, सम्भवतः यह कौल सम्प्रदाय का ही नामान्तर है। पाशुपत सम्प्रदाय में भी अवान्तर भेद हैं। कश्मीर में प्रत्यभिज्ञा, स्पन्द, महार्थ, सहस प्रभृति भावधाराओं का परिचय सर्वत्र प्रसिद्ध ही है।

ऐसा ज्ञात होता है कि एक ओर पाशुपतों में कोई-कोई न्यायदर्शन के अनुरागी थे—जैसे उद्योतकर (न्यायवार्तिककार)। शैवों में कोई-कोई वैशेषिक दर्शन के अनुरागी थे—जैसे व्योमशिवाचार्य (प्रशस्तपादभाष्य की टीका व्योमवती के रचयिता)। पाशुपतों में जो लोग न्यायदर्शन के पक्षपाती नहीं थे वे पञ्चार्थवादी थे। कापालिक सम्प्रदाय अति प्राचीन है, इसमें सन्देह नहीं; क्योंकि मैत्री-उपनिषद् में कापालिकों का उल्लेख मिलता है। परवर्ती काल में मत्तविलास, मालतीमाधव, कर्पूरमञ्जरी, प्रबोधचन्द्रोदय, चण्डकौशिक प्रभृति ग्रन्थों में कापालिकों का थोड़ा-बहुत विवरण मिलता है। महाव्रतधारी सम्प्रदाय के साथ कापालिकों का कुछ सम्बन्ध था तथा कालामुख या कालानन सम्प्रदाय से भी उनका सम्बन्ध था। विभिन्न पुराणों में तथा आगम-प्रामाण्य नामक ग्रन्थ में इन लोगों का अत्यधिक परिचय मिलता है। सोमसिद्धान्त सम्प्रदाय का उल्लेख भी विभिन्न ग्रन्थों में है। ये लोग भी पार्वती से समालिङ्गित शङ्कर के उपासक थे। इनका मूलग्रन्थ सोमसिद्धान्त नाम से प्रसिद्ध है। कूर्मपुराण तथा ईशानशिवगुरुपद्धति में इनका उल्लेख है। रौद्र सम्प्रदाय के सब उपासक हाथ में त्रिशूल धारण करते थे। कोई-कोई पाशुपत भी ललाटपर, दोनों भुजाओं में तथा नाम में लिङ्ग (शिवलिङ्ग) धारण करते थे। जंगम लोग हृदय में त्रिशूल तथा मस्तक पर लिङ्ग धारण करते थे। भट्ट लोग दोनों भुजाओं में डमरू

तथा लिङ्ग चिह्न (शिवलिङ्ग चिह्न) भी धारण करते थे। कोई-कोई शैव साधक दोनों भुजाओं में लिङ्ग धारण करते थे। श्रीकरभाष्य में कूर्म-पुराण का वचन उद्धृत है। उससे पता चलता है कि पूर्वोक्त पाशुपत सभी तान्त्रिक थे, यह बात नहीं है। उनमें कोई-कोई वैदिक थे और कोई-कोई मिश्र भी थे। वैदिक लोग लिङ्ग, रुद्राक्ष आदि धारण करते थे। इसी प्रकार प्रत्येक सम्प्रदाय का कुछ-न-कुछ वैशिष्ट्य था। कौल सम्प्रदाय की सांसारिक कुलाम्नायधारा के विषय में पहले कुछ कहा जा चुका है। इस सम्प्रदाय के साथ पञ्चार्थ-पाशुपत सम्प्रदाय का सम्वन्ध था। तान्त्रिक और कुलमत में जो भेद है वह प्रत्यभिज्ञा-हृदय तथा नेत्रतन्त्र से स्पष्ट प्रतीत होता है। दोनों से त्रिक का भेद है, यह भी स्पष्ट है। तन्त्र-मत में आत्मतत्त्व विश्वोत्तीर्ण (विश्वातीत) है, कुल-मत में आत्मतत्त्व विश्वमय है एवं त्रिकादि-दर्शनों के मतानुसार आत्मतत्त्व विश्वोत्तीर्ण (विश्वातीत) होने पर भी विश्वमय है। कुब्जिकामत, योगिनी-सम्प्रदाय, रहस्यधारा प्रभृति भिन्न भिन्न उपासनाओं के मार्ग योग-अनुभूति के सूक्ष्म वैचित्र्य का परिचय देते हैं। इस प्रसङ्ग में तान्त्रिक-सम्प्रदाय भेद के विषय में अधिक विस्तार से लिखने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

हमने इस भूमिका में तान्त्रिक साहित्य और सम्प्रदायों का संक्षिप्त पर्यालोचन किया है। यदि इसे दिग्दर्शनमात्र कहा जाय तो अनुचित न होगा। भविष्य में कोई अनुसन्धित्सु विद्वान् विचार कर तान्त्रिक साहित्य के विषय में आलोचना करना चाहेंगे तो तन्त्र-साहित्य की यह विवरणात्मक सूची उनके पथप्रदर्शन का कार्य करेगी। जो ग्रन्थ चिरकाल तक पाठकों के समक्ष रहे किन्तु उनके रक्षण और प्रकाशन की सुव्यवस्था न होने के कारण वे वर्तमान समय में ज्ञानपिपासुओं को सुलभ नहीं हो रहे हैं।

तान्त्रिक साहित्य की इस सूची के द्वारा हम तन्त्रसाहित्य के अमूल्य रत्नों की ओर विद्वानों की दृष्टि आकृष्ट करना चाहते हैं ताकि ये ग्रन्थ केवल भारत के ग्रन्थागारों में ही रहकर कालप्रभाव से एक समय जीर्ण से जीर्णतम अवस्था को प्राप्त हो नष्ट न हो जायें।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व भारत के कतिपय प्रयत्नशील विद्याप्रेमियों के व्यक्तिगत प्रयत्नों से वहुत-से तन्त्रग्रन्थ प्रकाश में आये थे। इस प्रसङ्ग में शिवचन्द्र विद्यार्णव, आर्थर एवेलन, ढाका के रसिकमोहन चट्टोपाध्याय, सुलभतन्त्र के प्रकाशक शरत्कुमार सेन, जीवानन्द विद्यासागर, आगमानुसन्धान समिति, कश्मीर संस्कृत सीरीज के अमूल्य ग्रन्थ-रत्न, त्रिवेन्द्रम् संस्कृत सीरीज के कतिपय ग्रन्थ, गायकवाड संस्कृत सीरीज बडोदा तथा

चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी के कुछ ग्रन्थ, गणेश कम्पनी मद्रास, एशियाटिक सोसायटी बंगाल, मैसूर विश्वविद्यालय, पीताम्बरापीठ, दतिया, कल्याण मन्दिर, प्रयाग, वाणी-विलासप्रेस श्रीरङ्गम्, संस्कृत कालेज वाराणसी, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के योग-तन्त्र विभाग आदि संस्था तथा व्यक्तियों के नाम श्रद्धा तथा हर्ष के साथ स्मरण हो आते हैं।

शेषोक्त वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय का योग-तन्त्र विभाग केन्द्रीय सरकार, उत्तर प्रदेशीय सरकार तथा संस्कृत विश्वविद्यालय के अधिकारियों के विशेष प्रयत्न से १९६४ में स्थापित हुआ। इस विभाग का मुख्य उद्देश्य है लुप्तप्राय तन्त्र और योग साहित्य का जीर्णोद्धार करना। उद्देश्य अत्यन्त स्तुत्य एवं महान् है इसमें सन्देह नहीं। इस उद्देश्य के अनुसार इस बीच के कतिपय वर्षों में इस विभाग ने शिवानन्द तथा विद्यानन्द नाम के दो प्राचीन आचार्यों की टीका के साथ नित्याषोडशिकार्णव का प्रकाशन किया और उक्त ग्रन्थ के परिशिष्ट भाग में कतिपय स्तोत्र-ग्रन्थों का समावेश भी किया है। तन्त्रसंग्रह नामक एक प्राचीन तन्त्र ग्रन्थ भी उसी विभाग द्वारा प्रकाशित किया गया है। उसका प्रथम भाग देखने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। उसमें विरूपाक्षपञ्चाशिका, साम्बपञ्चाशिका, त्रिपुरामहिम्नस्तोत्र, स्पन्दप्रदीपिका, अनुभवसूत्र तथा वातुल शुद्धाख्यतन्त्र ये दुर्लभ तन्त्रग्रन्थ प्रकाशित किये गये हैं। द्वितीय भाग में निर्वाण-तन्त्र, तोड़लतन्त्र, कामधेनुतन्त्र, फेत्कारिणीतन्त्र, ज्ञानसंकलिनीतन्त्र तथा सटीक देवीकालोत्तरागम का प्रकाशन किया गया है। इस विभाग के और एक महत्त्वपूर्ण कार्य का उल्लेख करना इस प्रसंग में आवश्यक प्रतीत होता है। वह कार्य है लुप्तागमसंग्रह नामक ग्रन्थ का प्रकाशन। उक्त ग्रन्थ में लुप्त तन्त्र और आगमों के जो वचन भिन्न-भिन्न तन्त्रों में उद्धृत मिलते हैं उन्हीं का संकलन किया गया है। वर्तमान समय में गङ्गानाथ झा रिसर्च इंस्टीट्यूट, इलाहाबाद एक दुर्लभ तन्त्रग्रन्थ का प्रकाशन कर रहा है। वह है महाकालसंहिता। उस ग्रन्थ का कामकलाखण्ड भी शीघ्र ही प्रकाशित हो जायगा ऐसी आशा है। उसी संस्था ने उक्त संहिता के गुह्यकाली खण्ड की मातृका भी बहुत द्रव्य व्ययकर उपलब्ध कर ली है। आशा है वह ग्रन्थ भी यथासंभव शीघ्र ही पाठकों के संमुख प्राप्त होगा।

आज से कुछ वर्ष पूर्व १९६० ई० में उत्तरप्रदेश सरकार की हिन्दी समिति के द्वारा तन्त्र-साहित्य की एक विवरणात्मक सूची प्रस्तुत करने का कार्यभार मुझे सौंपा गया था।

कार्य कठिन तथा श्रमसापेक्ष था लेकिन दीर्घकाल के परिश्रम तथा धैर्य से मेरे परमस्नेहभाजन तथा आशीर्वादभाजन पं० श्री श्रीकृष्ण पन्त ने मेरे निर्देश तथा सहयोग से उसे प्रस्तुत कर प्रकाशनार्थ हिन्दीसमिति को अर्पित किया। दीर्घकाल तक उसका प्रकाशन रुका रहा। मुझे आशा न थी कि यह ग्रन्थ एक दिन प्रकाशित होकर सामने आयेगा। जिस समय इस कार्य में मैंने हाथ लगाया था उस समय मेरा स्वास्थ्य अक्षुण्ण था किन्तु इस समय मेरा शरीर वार्धक्य तथा रोग से पूर्ववत् सवल नहीं है। श्री पन्तजी का अकुंठ तथा परिश्रमपूर्ण सहयोग न होता तो, इस कार्य का पूर्ण होना संभव न था। मेरी अस्वस्थावस्था में इसका सम्पादन भी श्री पन्तजी ने ही किया, इसलिए मैं श्री पन्तजी को हार्दिक आशीर्वाद देता हूँ। साथ ही मैं अपने परमस्नेहभाजन शिष्य श्री श्रीहेमेन्द्रनाथ चक्रवर्ती को आशीर्वाद प्रदान करता हूँ जिनके सहयोग से भूमिका लिखने में शारीरिक असमर्थता रहते हुए भी किसी प्रकार की वाधा उत्पन्न नहीं हुई। अन्त में हिन्दी समिति के वर्तमान तथा भूतपूर्व सचिवों को एवं श्री निशाकान्त पाठक को उनके निरन्तर सहयोग के लिए धन्यवाद प्रदान करता हूँ। शीघ्रतापूर्वक शुद्ध तथा सुन्दर छपाई के लिए भार्गव भूषण प्रेस के स्वामी श्री नरेन्द्र भार्गव को भी मैं धन्यवाद प्रदान करता हूँ।

गोपीनाथ कविराज

तमिल
साहित्य

हिन्दी
समिति

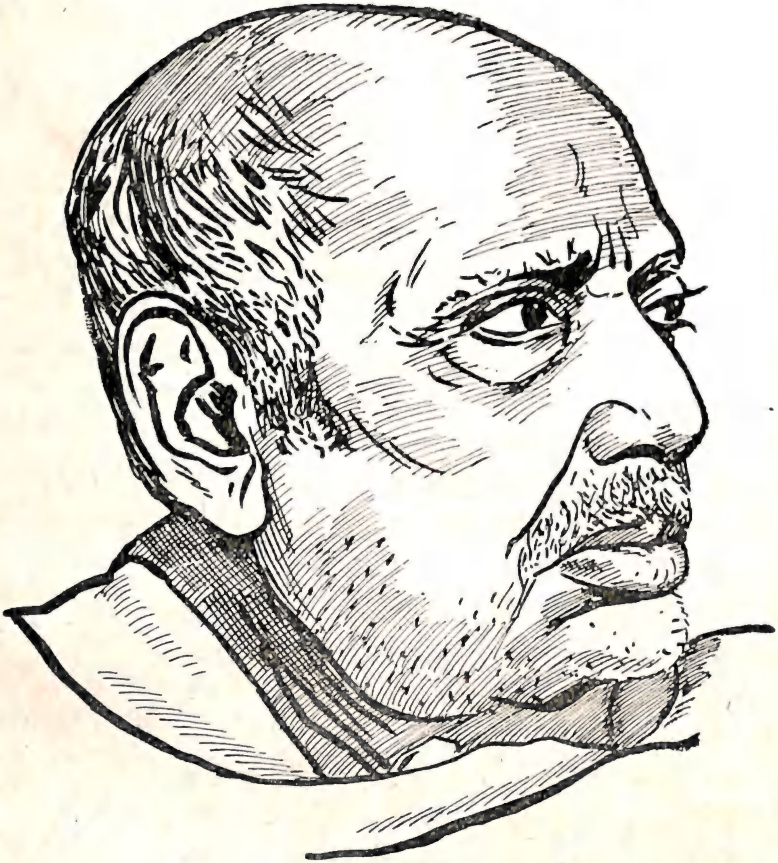

ग्रन्थ के प्रणेता

तान्त्रिक साहित्य

सङ्केत-सूची

१. इ० आ० (इण्डिया आफिस पुस्तकालय, लंदन का सूचीपत्र)	कैटलाग आफ संस्कृत मेनुस्क्रिप्ट् इन लाइब्रेरी आफ इंडिया आफिस।
२. ए० बं० (एशियाटिक सोसाइटी बंगाल का सूचीपत्र)	डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ़ सं० मेनु० एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल।
३. ने० द० (नेपाल दरबार पुस्तकालय का सूचीपत्र)	कैटलाग आफ़ पामलीफ एण्ड सेलेक्टेड पेपर मेनु० इन दरबार लाइब्रेरी, नेपाल।
४. नो० सं० (संस्कृत पुस्तकों पर म० म० हरप्रसाद शास्त्री के विवरण)	नोटिसेज आफ सं० मेनु० सेकेंड सीरीज़ बाई म. म. हरप्रसाद शास्त्री।
५. रा० ला० (राजेन्द्रलाल मित्र के संस्कृत पुस्तकों पर विवरण)	नोटिसेज़ आफ सं० मेनु० बाई राजेन्द्रलाल मित्र।
६. बी० कै० (बीकानेर पुस्तकालय का सूचीपत्र)	ए कैटलाग आफ़ सं० मेनु० इन दी लाइब्रेरी आफ महाराजा, बीकानेर।
७. रा. पु० (राजस्थान पुरातत्त्व ग्रन्थ-सूची)	राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर हस्तलिखित ग्रन्थसूची।
८. ट्रि० कै० (त्रिवेन्द्रम् पुस्तकालय का सूचीपत्र)	ए डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ सं० मेनु० इन क्यूरेटर्स आफिस लाइब्रेरी आफ त्रिवेन्द्रम्।
९. अ० ब० (बड़ौदा पुस्तकालय का अकारादि सूचीपत्र)	एन अलफाबेटिकल लिस्ट आफ मेनु० इन ओरिएंटल इंस्टीटयूट, बड़ौदा।
१०. म० द० (मद्रास राजकीय पुस्तकालय का सूचीपत्र)	ए डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ दी सं० मेनु० इन दी गवर्नमेण्ट ओ० मेनु० लाइब्रेरी, मद्रास।

११. वं० प० (वंगीय साहित्य परिषद् का सूचीपत्र)	डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ सं० मेनु० इन वंगीय साहित्य परिषद्, कलकत्ता।
१२. र० मं० (रघुनाथ मंदिर पुस्तकालय जम्मू का सूचीपत्र)	कैटलाग आफ़ दी सं०मेनु० इन दी रघुनाथ टैम्पल् लाइब्रेरी महाराज आफ जम्मू।
१३. तं० म० (तंजोर राजमहल पुस्तकालय का सूचीपत्र)	क्लासिफाइड इंडेक्स—दी सं० मेनु० इन पैलेस लाइब्रेरी आफ तंजोर।
१४. डे० का० (डेकन कालेज पूना का सूचीपत्र)	ए कैटलाग आफ कलेक्टिव मेनु० डिपोजिटेड इन दी डेकन कालेज।
१५. ज० का० (जम्मू कश्मीर के महाराजा के निजी पुस्तकालय का सूचीपत्र)	डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ सं० मेनु० इन दी प्राइवेट लाइब्रेरी आफ महाराजा, जम्मू एण्ड कश्मीर।
१६. क० का० (कलकत्ता संस्कृत कालेज पुस्तकालय का सूचीपत्र)	डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ संस्कृत मेनु० डिपाजिटेड इन दी सं० कालेज लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१७. सं० वि० (संस्कृत विश्वविद्यालय पुस्तकालय वाराणसी का सूचीपत्र)	ए डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ सं० मेनु० डिपाजिटेड इन दी सं० यूनीवर्सिटी लाइब्रेरी, वाराणसी।
१८. भ० रि० (भण्डारकर रिसर्च संस्थान पुस्तकालय पूना का सूचीपत्र)	डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ सं० मेनु० डिपाजिटेड इन भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना।
१९. वि० रि० (विहार अनुसन्धान समिति का संस्कृत सूचीपत्र)	विहार रिसर्च सोसाइटी डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ सं० मेनु०।
२०. न्यू कैट्० कैट्०	न्यू कैटलागस कैटोलोगोरम्।
२१. कैट्० कैट्०	कैटलागस कैटोलोगोरम्—एन अल्फावेटिकल रजिस्टर आफ सं० वर्क्स एंड आथर्स, इन थ्री पार्ट्स।
२२. ए० स० व० (एशियाटिक सोसाइटी वम्वई का सूचीपत्र)	

तान्त्रिक साहित्य

(विवरणात्मक ग्रन्थसूची)

अंशुमत् आगम

लिखित। नामान्तर––अंशुमत्कल्प, अंशुमद्भेद, अंशुमत्तन्त्र और अंशुमान्कल्प। २८ शैवागमों में अन्यतम। इसमें मन्दिर-निर्माण, प्रतिमा-विज्ञान आदि विविध विषय वर्णित हैं। काश्यपमत, काश्यपशिल्प अथवा अंशुमत्काश्यपीय इसी के शिल्पभाग हैं।

––न्यू कैट्. कैट्. १।१

किरणागम के अनुसार यह १० शिवागमों में अन्यतम है। उसी के अनुसार इसके प्रथम श्रोता अंशु, उनसे द्वितीय श्रोता अग्र और अग्र से तृतीय श्रोता रवि हैं। उन्हीं के द्वारा इसका प्रचार हुआ। ऊपर जो २८ शैवागमों में अन्यतम कहा गया है वह १० शिवागमों में १८ भैरवागमों का योग करके कहा गया समझना चाहिए।

अकथहचक्र

लि०––(१) (क) श्लोक सं० प्रायः २०। पूर्ण (यह केवल ऋणधनचक्र रूप है)।
(ख) श्लोक सं० लगभग ६२ पूर्ण।

––सं० वि० (क) २४४८६, (ख) २४८२६

(२) ––न्यू कैट्. कैट्. १।२

अकुलकालिकात्रिंशिका

रम्यदेवकृत

उल्लिखित––ग्रन्थकार द्वारा स्वरचित भावोपहारस्तोत्र-विवरण पृ० ३८ में।

––न्यू कैट्. कैट्. १।७

अकुलकौलिकात्रिंशिका

रम्यदेवकृत

उ०––ग्रन्थकाररचित भावोपहारस्तोत्र-विवरण पृ० ८ में।

––न्यू कैट्. कैट्. १।७

अकुलवीरतन्त्र

—प्राप्त ग्रन्थ-सूची से ।

अकुलागममहातन्त्र

लि०—नामान्तर—योगसारसमुच्चय । कुछ लोगों ने योगसारसमुच्चय को अकुलागमतन्त्र के अन्तर्गत १० या ९ पटलों का पृथक् तन्त्रग्रन्थ माना है। कुछ का कहना है कि योगसारसमुच्चय अकुलागम का एक पटल है। यह 'अकुलागमे योगशास्त्रे योगसारसमुच्चयो नाम नवमः पटलः' अकुलागम के ९ म पटल की पुष्पिका (नो० सं० १ । १) से स्पष्ट है। किन्तु अकुलागम और योगसारसमुच्चय के पटलों में प्रतिपादित विषयों का मिलान करने से यही निश्चय होता है कि ये दो ग्रन्थ नहीं, किन्तु एक के ही दो नाम हैं। योगसारसमुच्चय के आरंभ में दिये गये श्लोकों से भी इसी निश्चय की पुष्टि होती है। "अकुलागमनामेदं तत्तेऽहं कथयाम्यथ । अयं योगः सर्वशास्त्रे विज्ञातव्यो वरानने। गुरुप्रसादाद् ज्ञातव्यं रहस्यं ह्यकुलागमे ।।"

यह ग्रन्थ बहुत प्राचीन नहीं है। १७५८ वि० के आसपास का है, क्योंकि भ० रि० की पुस्तक का लिपि-काल १७५८ वि० है। इ०आ० २५६६ के अनुसार इसका लिपि-काल १६२९ वि० है।

(१) ईश्वर पार्वती संवाद, योग और योगियों की चर्या पर जिसका सब वर्ग और आश्रमों द्वारा अनुष्ठान किया जा सकता है। (क) १० पटलों में पूर्ण; (ख) ९ पटलों में पूर्ण। —इ० आ० (क) २५६५, (ख) २५६६

(२) नारद शिव संवादरूप, श्लोक सं० १०००। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—योग, ज्ञान आदि, कर्म और अकर्म आदि का निरूपण, विन्दुनिर्धारण आदि, वह्निमार्ग, धूममार्ग आदि का स्वरूप, तीन गुणों के विभाग आदि, स्थूल, सूक्ष्म आदि का निरूपण, षट्चक्र आदि का निरूपण, दीक्षा शब्द की व्युत्पत्ति, दीक्षा-माहात्म्य, आश्रम आदि का निरूपण इत्यादि। —नो० सं० १।१

(३) —ए० बं० ६११३

(४) लिपि-काल १७५८। —भ० रि०

(५) —न्यू कैट्. कैट्. १।७

अक्रमकल्लोलकारिका

रम्यदेव विरचित

उ०—ग्रन्थकार द्वारा स्वरचित भावोपहारस्तोत्र-विवरण पृ० ४ में।

अक्षमालाशोधन

लि०—श्लोक सं० लगभग ४८, पूर्ण।

—सं. वि. २६११३

अक्षयातन्त्र

उ०—सर्वोल्लासतन्त्र, उल्लास २, श्लोक ९ में।

अक्षरमालिका

लि०—वर्णों के आध्यात्मिक स्वरूप-रहस्य पर, फेत्कारिणीतन्त्रान्तर्गत।

—न्यू कैट्. कैट्. १।११

अक्षोभ्यतन्त्र

लि०—अक्षोभ्यतन्त्रे रात्रिपूजा।

—न्यू कैट्. कैट्. १।१२

अक्षोभ्यसंहिता

लि०—अक्षोभ्यसंहितायां तारासहस्रनाम।

—न्यू कैट्. कैट्. १।१३

अखण्डकापालिक

लि०—श्लोक सं० ३६, अपूर्ण।

—सं. वि. २५५७४

अगस्त्यसंहिता

लि०-(१)—अगस्त्य सुतीक्ष्ण संवादरूप, श्लोक सं० ७९५३। विषय—तामस प्रकृतियों की मुक्ति का उपाय, ईश्वर की साकारता में प्रमाण, तपस्या का माहात्म्य, श्रीरामचन्द्रजी की आराधना आदि, तुलसी-माहात्म्य, नारदजी द्वारा पूजा विधि का निरूपण,

न्यास आदि का निरूपण, तप, संतोष, आस्तिकता, ईश्वराराधन, लज्जा, दान, मति, व्रत आदि में से प्रत्येक का लक्षण, श्रीरामप्रतिमाविधान आदि, श्रीराम, गोपाल आदि की प्रतिष्ठा के वार, तिथि, समय आदि का निरूपण, श्रीरामजी के मन्त्र, पूजा, पुरश्चरण आदि का निरूपण, श्रीराम के स्तोत्र, कवच आदि।

—नो० सं० १।१

(२) (क) श्लोक सं० १५००, अध्याय, १९ अपूर्ण; (ख) श्लोक सं० १२००, अपूर्ण, (ग) श्लोक सं० १६००, अध्याय ३२, अपूर्ण; (घ) श्लोक सं० १४००, अध्याय २८, अपूर्ण। —अ. व. (क) ५७३७, (ख) ७९९१, (ग) ६६५४, (घ) १२७६०

(३) अध्याय ३२। —बं० प० २७६

(४) पूर्ण। —र० मं० ५२९४

(५) (क) श्लोक सं० २९७२, पूर्ण; (ख) श्लोक सं० ३२१, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २५११४, (ख) २६११८

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा तन्त्रसार में।

अगस्त्यसूत्र

लि०—नामान्तर—शक्तिसूत्र या शाक्तसूत्र।

—न्यू कैट्. कैट्. १।२२

अग्निस्तम्भन

लि०—इन्द्रजाल, भुवनेश्वरीकक्षपुट से गृहीत।

—न्यू कैट्. कैट्. १।३७

अघोरकल्प

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. १।४७

अघोरतन्त्र

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. १।४७

अघोरतन्त्रागम

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. १।४७

अघोरनृसिंहकल्प

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. १।४७

अघोरपञ्चाङ्ग

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत।

—न्यू कैट्. कैट्. १।४७

अघोरपत्रिका

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. १।४७

अघोरपटल

लि०—श्लोक सं० ७५, पूर्ण। —सं० वि० २४४९४

अघोरपूजापद्धति

लि०—रुद्रयामलतन्त्र में अघोरसहस्राख्यकल्प के अन्तर्गत, श्लोक सं० १०२, पूर्ण।

—सं० वि० २४४९५

अघोरयामलतन्त्र

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. १।४७

अघोररुद्रमन्त्र

लि०—(१) कालाग्निरुद्रमन्त्र और सद्योजातमन्त्र के साथ, श्लोक सं० ४५, पूर्ण।

—सं० वि० २५४००

(२) —न्यू कैट्. कैट्. १।४७

अघोरविद्याप्रकरण

लि०—भैरवीतन्त्र से गृहीत। —न्यू कैट्. कैट्. १।४७

अघोरवीरनृसिंह

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. १।४७

अघोरशिवपद्धति

लि०—शैवभूषण के अनुसार शैवाचार्योंकी १८ पद्धतियों में अन्यतम। अघोरशिवाचार्य कृत।

—न्यू कैट्. कैट्. १।४९

अङ्कतन्त्र

लि०—(१) विश्वालयतन्त्रान्तर्गत । पन्ने १७, पूर्ण ।

—र० मं० २०५४

(२) —न्यू कैट्. कैट्. १।४२

अङ्कयन्त्र तथा अङ्कयन्त्रश्लोक, व्याख्यासहित

लि०—(क) श्रीहर्षकृत, श्लोक सं० १२०, पूर्ण ।

(ख) श्लोक सं० ९८, अपूर्ण ।

—सं. वि. (क) २६२१६, (ख) ३६२२८

अङ्कयन्त्रविधि

लि०—(१) श्रीसूर्यराम वाजपेयी के पुत्र श्रीरामचन्द्र के शिष्य श्रीहर्षविरचित । श्लोक सं० ३००, अपूर्ण । नाना तन्त्रों का अवलोकन कर, गुरुमुख से उनका भलीभाँति अध्ययन कर ग्रन्थकार ने इसमें लोकोपकार के लिए अङ्कों से बननेवाले ९ और १६ कोष्ठों के विविध यन्त्रों का प्रतिपादन किया है, जिनके धारण से वैदिक मार्ग में आस्था रखनेवाले पुरुषों के स्वर्ग और अन्यान्य सभी हित पदार्थों की सिद्धि होती है । इसपर ग्रन्थकार की स्वरचित टीका है ।

ग्रन्थकार हर्ष का प्रेमनिधि ने शिवताण्डव की स्वरचित टीका में उल्लेख किया है ।

—ए. वं. ६५८४

(२) —न्यू कैट्. कैट्. १।५०

अङ्कोलकल्प

लि०—(१) यह उन तान्त्रिक मन्त्रों का संग्रह है जो ओषधियों के उपयोग के समय काम में लाये जाते हैं । मन्त्र संस्कृत में हैं और उनकी प्रयोगविधि हिन्दी में है ।

—बी० कै० १२४३

(२) —न्यू कैट्. कैट्. १।५०

अङ्कोलतैलविधि

लि०—उलूककल्प के साथ, श्लोक सं० ८१, पूर्ण ।

—सं० वि० २५३५७

अङ्गभैरव

लि०——रुद्रयामलान्तर्गत।

——न्यू कैट्. कैट्. १।५१

अङ्गलिङ्गप्रतिष्ठा

लि०——कामिकतन्त्र से गृहीत

——न्यू कैट्. कैट्. १।५२

अङ्गिराकल्प या अङ्गिरःकल्प

लि०——(१) अङ्गिरा पिप्पलाद संवाद। श्लोक सं० ८२८, पूर्ण। इसमें आसुरी देवी की पूजाविधि विस्तारपूर्वक वर्णित है।

——ए० बं० ६०६१

(२) श्लोक सं० ८२८, पूर्ण। आङ्गिरस मन्त्र बहुत-से वर्णित हैं। उनमें आसुरी महामन्त्र सर्व कर्मों में मुख्य है। पहले पहल ब्रह्मा ने उसका अङ्गिरा ऋषि के लिए उपदेश किया था। इसके अङ्गिरा ऋषि, अनुष्टुप् छन्द और संहारकारिणी आसुरी शक्ति देवता हैं।

विषय——पिप्पलाद के साथ अङ्गिरा के संवाद द्वारा आसुरी महामन्त्र का निरूपण, आसुरी महामन्त्र के अर्थ आदि, उक्त मन्त्र के उद्धार आदि की विधि, कुण्ड आदि के लक्षण, उक्त मन्त्र के प्रयोग की विधि, आत्मपूजा-विधि, आसुरी महामन्त्र का माहात्म्य आदि, अशकुन होने पर भी उक्त मन्त्र के माहात्म्य से इष्टसिद्धि होती है, होमविधि, छह भावनाओं का निरूपण, महामन्त्रविधि, शत्रु को वश करने की विधि, विद्वेष करने की विधि, मारण आदि की विधि, शूद्र आदि को वश में करने की विधि आदि ——रा० ला० ४०४६।

अचिन्त्य आगम

उ०——शिवाग्रयोगीन्द्रज्ञान शिवाचार्य कृत शैवपरिभाषा तथा उमापति कृत शतरत्नसंग्रह में।

संभवतः यह १० शिवागमों में अन्यतम चिन्त्यशिवागम से अभिन्न हो। श्रीकण्ठी तथा मृगेन्द्र की भूमिका में इसका चिन्त्यागम के नाम से उल्लेख है। किरण के मतानुसार चिन्त्य का प्रथम ग्रहीता दीप्त, उससे २रा ग्रहणकर्ता गोपति और गोपति से ग्रहण करने वाली ३ री अम्बिका हैं।

संभवतः कवीन्द्राचार्य सूचीपत्र १४७१ में अचिन्त्याह्वयागम नाम से इसी का उल्लेख है।

अज आगम

६४ आगमों के अन्तर्गत वहुरूपाष्टक वर्ग में अन्यतम।

अजडप्रमातृसिद्धि

लि०—(१) यह उत्पलदेवकृत तीन सिद्धियों में अन्यतम काश्मीर शैव मत का ग्रन्थ है। अन्य दो सिद्धियों पर जैसे ग्रन्थकार की स्वरचित टीका है वैसे इसपर उनकी टीका नहीं है।

—न्यू कैट्. कैट्. १।६३

(२) उत्पलदेव कृत, पूर्ण—डे.का. ४३३, ४३४, ४३५ सभी १८७५–७६ में संगृहीत।

उ०—परमार्थसार की योगराजकृत टीका, प्रत्यभिज्ञाहृदय, शिवसूत्रविमर्शिनी तथा महार्थमञ्जरी-परिमल में।

अजपा

अजपाकल्प, अजपागायत्री, अजपागायत्रीकल्प, अजपागायत्रीपद्धति, अजपागायत्री-मन्त्र, अजपागायत्रीविधान, अजपागायत्रीविधि, अजपागायत्रीस्तोत्र, अजपाजप, अजपा-जपमन्त्र, अजपापद्धति, अजपामन्त्र, अजपाविधान, अजपाविधि, अजपासाधन, अजपा-स्तोत्र, अजपास्तोत्रविधि।

ये सब नाम एक ही विषय अजपा का प्रतिपादन करते हैं। वह है अजपामन्त्र (हंस-मन्त्र–अहं सः) का अव्यक्त जप, जो कि अद्वैत उपासना का उन्नत स्तर है। पूर्वोक्त सब ग्रन्थ थोड़ा-बहुत अन्तर के साथ उसी मन्त्र के प्रतिपादक हैं।

—न्यू कैट्. कैट्. १।६३

अजपागायत्री

लि०—(१) इसमें अजपास्तुति आवश्यक पूर्वाङ्गविधि के साथ प्रतिपादित है।

—क० का० २

(२) इसमें अजपागायत्री महामन्त्र के ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति तथा कीलक का प्रतिपादनपूर्वक उदित हो रहे करोड़ों सूर्यों के तुल्य भास्वर जगद्व्यापक शब्द-ब्रह्ममय हंस का हृदयकमल रूपी नीड से श्वासप्रश्वासरूप से निरन्तर चल रहा जप प्रति-पादित है। हंसगायत्री का निरूपण कर सलोम विलोम अङ्ग न्यास आदि भी दरशाये गये हैं।

—म० द० ५८५२ से ५८६० तक

(३) (क) श्लोक सं ६२, पूर्ण; (ख) श्लोक सं० १२५, पूर्ण ।

—सं. वि. (क) २५१४८, (ख) २६१६१

(४) हंसरहस्य से गृहीत।

—न्यू कैट्. कैट्. १।६३

अजपागायत्रीजपविधि

लि०––(१) (क) श्लोक सं० ६०, पूर्ण, लिपिकाल १७८४ वि०; (ख) श्लोक सं० ५०, अपूर्ण।

—सं. वि. (क) २४९१९, (ख) २५५८४

[सं. वि. में ५ प्रतियाँ और हैं––सं० २५७८९, २६५७२, २६६२५, २६६४५ तथा २६६९०]

(२) —न्यू कैट्. कैट्. १।६३, ६४

अजपातन्त्र

लि०––अजपातन्त्रान्तर्गत दत्तात्रेय-स्तोत्र।

—न्यू कैट्. कैट्. १।६४

अजपापद्धति

लि०––(१) श्लोक सं. ७०, पूर्ण। —ए० बं० ६५२१

(२) श्लोक सं० १५०। —अ० ब० ११७५७

(३) श्लोक सं० लगभग ३८४, अपूर्ण। —सं० वि० २४९९५

[ये तीनों भिन्न-भिन्न ग्रन्थ प्रतीत होते हैं]

अजित आगम

लि०––शैवागमों में अन्यतम। इसकी पटल सं० ६२ और श्लोक सं० १०,००० है। (दे०, अजिततन्त्र, शैव)

—न्यू कैट्. कैट्. १।६९

यह १० शिवागमों में अन्यतम है। किरणागम के अनुसार इसके प्रथम श्रोता हैं सुशिव, उनसे श्रवण करने वाले द्वितीय श्रोता उमेश हैं एवं उनसे तृतीय श्रोता अच्युत हैं।

अजितमहातन्त्र

लि०––दे०, अजित आगम।

—न्यू कैट्. कैट् १।६७

अज्ञानध्वान्तदीपिका (१)

लि०—(१) १० प्रकाशों में पूर्ण। म० म० महेशनाथ-पुत्र सोमनाथ कृत। इसमें गणेश, दुर्गा, लक्ष्मी तथा विष्णु के मन्त्र प्रतिपादित हैं। शावर मन्त्र भी १० म प्रकाश में वर्णित हैं। ग्रन्थकार ने अपने पिता का नाम 'महेश' लिखा है—"सोमनाथो महेशजः।" किन्तु पुष्पिका में उनके पिता का नाम कहीं महेशनाथ और कहीं महेशानन्द कहा गया है।

—ए० वं० ६२४१

(२) ९ प्रकाशों में पूर्ण। महेशभट्ट-पुत्र सोमनाथ कृत।

—र० मं० ४९६६

(३) श्लोक सं० ३००, अपूर्ण। —अ० व० ११३४४

(४) सोमनाथभट्ट कृत, अपूर्ण।

—सं० वि० २४३१४

(५) १० प्रकाशों में पूर्ण। महेश्वरभट्ट-पुत्र सोमनाथ भट्ट कृत। किसी-किसी ने ग्रन्थकार के पिता का नाम महेशानन्द या महेशभट्ट भी कहा है।

—न्यू कैट्. कैट्. १।७०

अज्ञानध्वान्तदीपिका (२)

लि०—काशीनाथ विरचिता, श्लो० सं० १२०, १ म पटलमात्र, अपूर्ण।

—अ० व० १०८२१

अथर्वकतन्त्र

६४ आगमों के अन्तर्गत शिखाष्टक वर्ग में अन्यतम।

अथर्वतत्त्वनिरूपण

लि०—(१) श्लोक सं० ७५, पूर्ण। इसकी शैली उपनिषत् की सी है। इसके प्रारम्भ में 'अथान्योपनिषत्' कहा गया है। इसमें प्रधान रूप से कुमारीपूजा का प्रतिपादन है। कुमारीपूजन से साधक सब सिद्धियों का अधिपति होता है एवं अणिमा आदि विभूतियों का स्वामी होता है इत्यादि कुमारीपूजा का फल कहा गया है।

—ए० वं० ६१३५

(२) यह उपनिषत् की तरह कहा गया है। —न० द्वी० ७

अद्वयसम्पत्ति

(हर्षदत्त-पुत्र ह्लस्वनाथ कृत)

उ०––विज्ञानभैरव की शिवोपाध्याय रचित टीका में।

अद्वयोल्लास

उ०––महार्थमञ्जरी-परिमल में।

अनुत्तरप्रकाशपञ्चाशिका

लि०––विद्यानाथ कृत। काश्मीर शैव मत का प्रतिपादक। डे० का० ४३६ (१८७५-७६ का संगृहीत), रिपोर्ट २८।

अनुत्तरब्रह्मतत्त्वरहस्य

लि०––नामान्तर––ऋष्यशृङ्गसंहिता।

––तैं० म० १७६२०, २१

अनुत्तरभट्टारक (भैरवस्रोत)

नामान्तर––अनुत्तरस्तोत्र विद्याधिपति कृत।

उ०––शिव उपाध्याय कृत विज्ञान भैरवटीका, महार्थमञ्जरीपरिमल तथा तन्त्रसार में।

अनुत्तरसंविदर्चनाचर्चा

लि०––इसमें परम शिव की यथार्थता का प्रतिपादन है। इसकी श्लोक सं० ४० है।

––ट्रि० कै० १०७४ (ग), १०७५ (ख),

यह काश्मीर शैव मत का प्रतिपादक है।

––न्यू कैट्. कैट्. १।१५४

अनुष्ठानपद्धति

लि०––(१) श्लोक सं० ३२००। इसमें विष्णु, शिव, नारायण, दुर्गा, सुब्रह्मण्य, गणपति और शास्ता की मन्त्र-बिम्ब में पूजाविधि, मन्दिर-शुद्धि, कलश प्रकार, मन्दिर उत्सवविधि, अभिषेक, भूतबलि आदि का विवरण है।

––ट्रि० कै० ९१५

अनुष्ठानसमुच्चय

लि०—(१) (क) मातृदत्त-पौत्र, नारायण और पार्वती के पुत्र नारायण कृत। श्लोक सं० ७८००, पूर्ण। इसमें चल विम्ब और स्थिर विम्ब की प्रतिष्ठा आदि की सिद्धि के लिए गुरु-वरण आदि कृत्यों का प्रतिपादन किया गया है।

(ख) श्लोक सं० ३६०० । कर्ता पूर्वोक्त ही। इसमें मन्दिर को पताका और वन्दनवारों से सजाना, द्वार पर कलश आदि का पूजन, अग्नि की उत्पत्ति, शय्यापूजन, शयनघट आदि की स्थापना, विम्ब की विशुद्धि आदि कर्मों का निरूपण है।

—ट्रि० कै० ९१६ (क), ९१७ (ख)

(२) नामान्तर—तन्त्रसमुच्चय नारायण द्विज कृत। दे०, तन्त्रसमुच्चय।

—न्यू कैट्. कैट्. १।१६२

अनूपविवेक

लि०—(१) अनूपसिंहदेवकृत, पूर्ण। —र० मं० ४९०३, ९३७

(२) श्लोक सं० २५५६, पञ्चम उल्लासपर्यन्त; शालग्रामप्रशंसा।

—सं. वि. २५२९९

(३) श्लोक सं० २०००, शालग्रामपरीक्षा पर बीकानेर के राजा अनूपसिंह के आग्रह पर रामभट्ट होशिंग द्वारा विरचित शालग्राममाहात्म्य वर्णन रूप।

—न्यू कैट्. कैट्. १।१६४

अन्नदाकल्प

लि०—(१) श्लोक सं० ७००, पटल १७, पूर्ण। अन्नपूर्णा की पूजा-उपासना पर। १७ पटलों के विषय—अन्नदा की प्रशंसा, उनके मन्त्र ग्रहण की विधि, मन्त्रोद्धार, मन्त्र का पुरश्चरण, साधक के स्नानादि की विधि, आचमन से लेकर पीठन्यास तक का विवरण, 'हृदयरूपी पद्मासन' इत्यादि मानस पूजा कथन, पूजा की समाप्ति तक रहने वाले विशेष अर्घ्य का संस्कार, अन्नदा की पीठपूजा, विशेष मन्त्रों से प्रक्षालित कलश का तीर्थजल से से पूरण, अठारह वर्ष की स्वीया अथवा परकीया नारी का विशेष मन्त्र से अभिषेक कर उसके साथ पात्र स्थापन, स्थापित पात्र आदि के जल से बटुक आदि तथा अन्नदा की तृप्ति (तर्पण) कर पूर्वादि भागों में बटुक आदि के लिए बलि प्रदान, आवाहन से लेकर बलिदान

तक का विवरण, देवता, गुरु और मन्त्रों का अभेद से जप, नारियल, केले, पके आम आदि द्रव्यों से किये गये होमादि से साधना का उपाय कथन, नायिकासाधन रूप काम्यविधि का प्रतिपादन एवं अन्नदाकवच। —रा० ला० ४५६

(२) (ख) श्लोक सं० ५००, पटल १८। —अ० ब० १२२१८

अन्त्येष्टिप्रयोग

लि०—श्लोक सं० ४००, अपूर्ण। यह अन्त्येष्टिप्रयोग जिसे निर्वाण दीक्षा प्राप्त हो गयी उसके लिए है। —अ० ब० ६७४३ (ख)

अन्नपूर्णाकल्प

लि०—रुद्रयामल से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।१९

अन्नपूर्णाकल्पलता

लि०—व्रजराज विरचित।

—कैट्. कैट् १।१९

अन्नपूर्णाकल्पवल्ली

लि०—शिवरामेन्द्र सरस्वती विरचित।

—कैट्. कैट्. १।१९

अन्नपूर्णापञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक सं० २४०, पूर्ण।

—सं० वि० २५०६६

अन्नपूर्णापूजापद्धति

लि०—(क) श्लोक सं० २००, पूर्ण; (ख) श्लोक सं० ३७०, पूर्ण; (ग) श्लोक सं० ३७५, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४४८७, (ख) २४९९२, (ग) २६११४

अन्नपूर्णामहाविद्याकल्प

लि०—विश्वसारोद्धारतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ५८, अपूर्ण।

—सं० वि० २५१४०

अन्नपूर्णासहस्रनाम

लि०—(क) रुद्रयामल से गृहीत । —कैट्. कैट्. २।४
(ख) विश्वसारतन्त्र से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।२०

अन्नपूर्णेश्वरीपञ्चाङ्ग

लि०—रुद्रयामल से गृहीत

—कैट्. कैट्. २।४

अन्धकागम

६४ आगमों के अन्तर्गत वहुरूपाष्टक वर्ग में अन्यतम।

अपराजिताकल्प

लि०—अथर्वणरहस्यान्तर्गत । श्लोक सं० ८४, पूर्ण।

—सं० वि० २४४१८

अपराजिताप्रयोग

लि०—श्लोक सं० लगभग ८०, पूर्ण।

—सं० वि० २६१२५

अपराजिताविद्या

लि०—(१) श्लोक सं० ९०, अपूर्ण। —सं० वि० २४०६३
(२) —कैट्. कैट्. २।४,३।५

अपेक्षार्थद्योतनिका

उ०—राघवभट्ट कृत पदार्थादर्श (शारदातिलक की टीका) में।
—वी० कै० १३२४, १३२६।

अभिज्ञानरत्नावली

लि०—श्लोक सं० १०,२००, अपूर्ण। श्रीविष्णवानन्द-पुत्र श्रीरामानन्द भूसुर तर्कालङ्कार कृत। इसमें बड़े-बड़े ४ रत्न (अध्याय) हैं। चौथे के बहुत अधिक भाग के

साथ तीन पूरे हैं। पहले रत्न में शक्ति की सर्वोत्कृष्टता, २ रे में मन्त्र, कुण्ड, मण्डल और वास्तुयाग, ३ रे में दीक्षा, पूजा, न्यास आदि और ४ थे में पुरश्चरण, बलिदान और दिनचर्या प्रतिपादित है। यह एक बृहत्काय तान्त्रिक निबन्ध है। इसमें मुख्यतः शक्तिपूजा प्रतिपादित है।

—ए० बं० ६२११

अभिधार्थचिन्तामणि

लि०—श्लोक सं० ३१, पूर्ण। यह लक्ष्मीधर-पुत्र विश्वेश्वर कृत तारासहस्रनाम की व्याख्या है। दे०, तारासहस्रनामव्याख्या।

—र० मं० ४९७२

अभिषेकदीक्षापद्धति

लि०—श्लोक सं० ८८, पूर्ण।

—सं० वि० २६५९२

अभिषेकपद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० १७०, अपूर्ण। इसमें मालासंस्कार, कवचसंस्कार, शाक्ताभिषेक और पूर्णाभिषेक की विधि वर्णित है।

—ए० बं० ६५२९

(२) श्लोक सं० १७१, विषय पूर्ववत्।

—रा० ला० १५३६

(३) श्लोक सं० १४४, पूर्ण।

—सं० वि० २६१७४

अभिषेकविधि

लि०—(१) उत्तरतन्त्रान्तर्गत, श्रीराजराजेश्वरी संवाद। सर्वसिद्धिप्रद अभिषेक-पटल मात्र, पूर्ण।

—ए० बं० ६१४७

(२) प्रश्नीसंहिता का ७ वाँ अध्याय, श्लोक सं० १००।

—अ० ब० ११२४६ (बी)

(३) अपूर्ण।

—वं० प० १०९९

(४) उत्तरा, तन्त्रान्तर्गत श्लोक, सं० २२४, अपूर्ण ।

——सं० वि० २४५४०, २४५५७

(५)

——कैट्. कैट्. १।२६

अभेदकारिका या अभेदार्थकारिका

काश्मीर शैव मत का प्रतिपादक, सिद्धनाथ कृत।

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

अमनस्कयोगशास्त्र

लि०—(१) २ अध्यायों में पूर्ण। रचनाकाल संवत् १९१८ वि० ईश्वर और वामदेव संवाद रूप, योगपरक। इसकी एक प्रति (III बी. १४) सोसाइटी के प्राचीन संग्रह में स्वयंबोध के नाम से अभिहित है जो शिवरहस्य का एक भाग कहा गया है। इसके दो अध्यायों में लययोग और तत्त्वज्ञान का निरूपण है।

——ए० वं० ६१२४

(२) इसका दूसरा नाम स्वयंबोध है।

——कैट्. कैट्. २।५

अमरनाथपटल

लि०—पटल ११ तक। भृङ्गीशसंहिता के अन्तर्गत। इसमें अमरनाथ-यात्रा का माहात्म्य वर्णित है।

—रा० पु० ५७८१

अमृतेशतन्त्र

लि०—नामान्तर—मृत्युञ्जिदमृतीशविधान तथा मृत्युजिद्भट्टार। जिसे हाल ने क्षेमराज द्वारा शिवसूत्रविमर्शिनी में उद्धृत कहा है, संभवतः यही है। यह २४ पटलों में पूर्ण है।

इस प्रति में इसका रचनाकाल ३२० ने० सं० (१२०० ई०) कहा गया है। किन्तु १०वीं शताब्दी के क्षेमराज ने इसका उद्धरण दिया है, इसलिए यह उससे भी प्राचीन ठहरता है।

इसमें तन्त्रावताराधिकार, मन्त्रोद्धारविधि, यजनाधिकार, दीक्षाधिकार, अभिषेक-साधनाधिकार, स्थूलाधिकार, सूक्ष्माधिकार, कालवञ्चन, सदाशिवाधिकार, दक्षिण-

चक्राधिकार, उत्तरतन्त्राधिकार, कुलाम्नायाधिकार, सर्वविद्याधिकार, सर्वाधिकार, व्याप्त्यधिकार, पञ्चाधिकार, वश्याकर्षणाधिकार, राजरक्षाधिकार, इष्टपाताद्यधिकार, जीवाकर्षणाद्यधिकार, मन्त्रविचार, मन्त्रमाहात्म्य आदि विषय २४ पटलों में वर्णित हैं।

यह अमृतेश और भैरवमृत्युजित् को एक ही देव का पर और अपर स्वरूप के रूप में प्रतिपादन करता है। (द्रष्टव्य ने० द० Vol. I भूमिका पृ० ५७)

—ने० द० २८५ (ख); (पृ० ११, १२५)

अम्बास्तव

उ०—आनन्दलहरी की अरुणामोदिनी टीका में।

अम्बिकापूजन

लि०—श्लोक सं० लगभग ४०, अपूर्ण।

—सं० वि० २६५१६

अयोध्यामाहात्म्य (१)

लि०—(१) श्लोक सं० ५००, पूर्ण। यह रुद्रयामलान्तर्गत हरगौरी संवाद रूप है। इसमें १० अध्यायों में अयोध्या का माहात्म्य प्रतिपादित है और मुख्य-मुख्य अनेक तीर्थों का अयोध्या में अन्तर्भाव बतलाया गया है।

—ए० बं० ५८८७

(२) रुद्रयामलान्तर्गत —कैट्. कैट्. ३।७

अयोध्यामाहात्म्य (२)

लि०—(क) स्कन्दपुराणान्तर्गत। —कैट्. कैट्. १।२९

(ख) पद्मपुराणान्तर्गत। —कैट्. कैट्. २।६

(ग) ब्रह्माण्डपुराणान्तर्गत। —कैट्. कैट्. ३।७

अरुणामोदिनी

लि०—आनन्द,लहरी (सौन्दर्यलहरी के प्रथमांश) पर कामेश्वरकृत टीका।

—न्यू कैट्. कैट्. १।२७८

यह आनन्दलहरी की कामेश्वर मिश्र कृत व्याख्या है। कामेश्वर के पिता गङ्गाधर, माता नागमाम्बा और पितामह मल्लेश्वर थे। यह प्रकाशित हो चुकी है। प्रकाशक—गणेश एण्ड को प्राइवेट लिमिटेड मद्रास, सन् १९५७।

अरुणेश्वरतन्त्र

६४ तन्त्रों के अन्तर्गत। लक्ष्मीधर के मतानुसार यह कापालिक के एकदेशी दिगम्बर-मत का है।

उ०—वामकेश्वरतन्त्र में दी गयी तन्त्र-सूची, कृष्ण विद्यावागीश भट्टाचार्य कृत तन्त्र-रत्न तथा कवीन्द्राचार्यकृत ग्रन्थ-सूची में।

अर्गलास्तोत्र-विवरण

लि०—पूर्ण, नारायणभट्ट कृत।

—र० मं० ४९५८ (ख)

अर्चन-संग्रह

लि०—प्राणपति उपाध्याय कृत। श्लोक सं० १२००, आदि और अन्त में अपूर्ण। इसमें तान्त्रिक पूजा के विभिन्न अङ्गों के प्रमाण और पद्धति निर्दिष्ट हैं। इसमें प्रारंभिक ४ विवेक हैं। उनमें से प्रथम में गुरु आदि पर प्रकाश डाला गया है, द्वितीय में दीक्षा के विविध भेदों का प्रदर्शन करते हुए दीक्षा पर प्रकाश डाला गया है, तृतीय में पुरश्चरण और पुरश्चरणसम्बन्धी विधि वर्णित है एवं ४र्थ में स्नान, सन्ध्या आदि के साथ साङ्गोपाङ्ग पूजाविधि प्रतिपादित है।

—ए० बं० ६२१२

अर्चनातिलक

लि०—(१) नृसिंह वाजपेयी विरचित, श्लोक सं० ५७०।१३ अध्यायों में पूर्ण। इसमें विष्णु की षट्काल पूजा वर्णित है। यह वैखानसागमसम्बन्धी ग्रन्थ है।

—ट्रि० कै० ९१८

(२) नृसिंह अग्निचित् द्वारा पञ्चरात्र आगम के आधार पर रचित।

—न्यू कैट्. कैट्. १।२८१

अर्चनात्रिंशिका

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

अर्चापद्धति

लि०—श्लोक सं० १५००।

—अ० ब० ३६४७

अर्जुनपारिजातव्याख्या

लि०—अपूर्ण, यह रामचन्द्र कवि विरचित अर्जुनपारिजात, अर्जुनार्चनकल्पलता अथवा अर्जुनार्चापारिजात की व्याख्या का अल्प अंश है।

—ए० बं० ६५१२

अर्जुनार्चापारिजात

लि०—(१) श्लोक सं० ३००, अपूर्ण, रामचन्द्र कवि कृत।

—अ० ब० ५३५८।

(२) इसमें कार्तवीर्यार्जुन की पूजा प्रतिपादित है। नामान्तर—अर्जुनार्चनकल्पलता।

—कैट्. कैट्. १।३१

(३) (क) रामचन्द्र विरचित, श्लोक सं० ७६८, प्रथम कुसुम से पञ्चम कुसुम पर्यन्त, अपूर्ण;

(ख) रामचन्द्र कृत, श्लोक सं० ५४०, प्रथम से पञ्चम कुसुम तक।

—सं० वि० (क) २५३४४, (ख) २५६१५

अर्जुनार्चापारिजातव्याख्या

लि०—श्लोक सं० २०००, पूर्ण, यह रामचन्द्र कवि प्रणीत अर्जुनार्चापारिजात, अर्जुनपारिजात अथवा अर्जुनार्चनकल्पलता पर पद्माकर विरचित व्याख्या है।

—अ० ब० १२२२५

अर्थदीपिनी

लि०—अरुणाचार्य कृत। शक्तिरहस्य से संगृहीत। श्लोक सं० १००।

—अ० ब० ९६५८ (क)

अर्थरत्नावली (१)

लि०—५ पटल तक, पूर्ण। यह चतुःशती (शाक्ततन्त्र) पर विद्यानन्दनाथ विरचित टिप्पणी है। दे०, चतुःशती।

—म० द० ५६१९-२१

उ०—भास्कर कृत सेतुबन्ध में।

अर्थरत्नावली (२)

लि०—अपूर्ण। यह विमलस्वात्मशम्भु कृत वामकेश्वर तन्त्र की व्याख्या (टिप्पणी) है। श्लोक सं० ६५०, अपूर्ण। दे०, वामकेश्वरतन्त्र।

—ट्रि० कै० १०४१ (ख)

अर्द्धनारीश्वरप्रयोग

लि०—वशीकरण-विधि पर, श्लोक सं० १०, अपूर्ण।

—सं० वि० २५७५७

अवतारभेदप्रकाशिका

लि०—काशीनाथ विरचित, श्लोक सं० ३००, पूर्ण। इसमें वैष्णव और शैवों के भेद और उनके लक्षण बतलाते हुए महाविद्या आदि बहुत-सी देवी और देवताओं की उत्पत्ति, विष्णु के कुछ अवतार और उनकी पूजा आदि वर्णित है।

—ए० बं० ६२२१।

अवधूत सिद्धपाद (ग्रन्थकार)

उ०—योगराज रचित परमार्थसार की टीका में।

अशेषकुलवल्लरी

लि०—कैवल्याश्रम रचित आनन्द-(सौन्दर्य-) लहरी की टीका में।

अश्वारूढापूजाविधि

लि०—श्लोक सं० लगभग ४०, अपूर्ण।

—सं० वि० २५१९५

अश्वारूढामन्त्रप्रयोग

लि०—श्लोक सं० ३२, पूर्ण। इसमें बगलामुखी के यन्त्र और मन्त्र का प्रयोग भी वर्णित है।

—सं० वि० २३८९०

अष्टबन्धनप्रयोग

लि०—श्लोक सं० ४००।

—अ० ब० ६८३० (ग)

अष्टबन्धनग्रन्थ

लि०—(१) श्लोक सं० ४४००। यह कामिक (ागम?)के अनुसार सदाशिवाचार्य कृत है।

—अ० ब० ६८३७

(२) शैवागम से गृहीत, (२ प्रतियां)।

—न्यू कैट्. कैट्. १।३३०

अष्टबन्धनविधि

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ३२०, कामिक के अनुसार।
(ख) श्लोक सं० २५००, विविध आगमों से संगृहीत।

—अ० ब० (क) ६८३० (घ), (ख) ६८३५

(२) (क) अनलागम से गृहीत
(ख) वातुलागम से ,,
(ग) सहस्रागम से ,,
(घ) सूक्ष्मतरङ्ग (शैवागम) से ,,

—न्यू कैट्. कैट्. १।३३०

अष्टाङ्गनिर्णयामृतचषक

लि०—(क) श्लोक सं० ३९०, पूर्ण।

(ख) अमृतानन्द विरचित, श्लोक सं० ३४०। यह अष्टाङ्गनिर्णयामृत पर चषक नाम की व्याख्या प्रतीत होती है।

—सं० वि० (क) २३८६२, (ख) २५६१७

अष्टाङ्गनिर्णयामृत व्याख्यासहित

लि०—श्लोक सं० ३५०। व्याख्याकार अमृतानन्द।

—अ० ब० ३४२०

अष्टादश पीठ

लि०––(१) इसमें अठारह विभिन्न देवीनाम प्रतिपादित हैं जिनसे विभिन्न पवित्र स्थानों (पीठों) पर शक्ति देवी की पूजा की जाती है तथा जिनके स्मरणमात्र से उपासकों के पाप-ताप, दारिद्र्य, अपमृत्यु आदि मिट जाते हैं।

––म० द० ५५५१

(२) ––न्यू कैट्० कैट्० १।३४०

अष्टादशाक्षरमहामन्त्रपद्धति

लि०––यह गोपालमन्त्रपरक है।

––रा० पु० ५२२

अष्टादशोत्तरशतश्लोकी

लि०––कृष्णनगर (नवद्वीप) निवासी महाराज श्री शिवचन्द्रकृत देवीस्तुति। ये शिवचन्द्र कृष्णनगर के भूतपूर्व महाराज सतीशचन्द्र राय के प्रपितामह (पर दादा) थे। श्लोक सं० २६०।

––रा० ला० ३८

अष्टावक्रसंहिता

लि०––(१) द्वितीय प्रकरण के दो (१ ला और २ रा) अध्यायमात्र। अपूर्ण।

––बं० प० १०९७

(२) द्वितीय प्रकरण के प्रथम दो उल्लास मात्र।

––न्यू कैट्. कैट्. १।३४

उ०––प्राणतोषिणी, पृष्ठ २ में।

असाध्यसाधनविधि

लि०––श्लोक सं० लगभग ३८, पूर्ण।

––सं० वि० २५८१

असिताङ्गभैरव

यह ६४ आगमों के अन्तर्गत भैरवाष्टक वर्ग में अन्यतम है।

उ०––लक्ष्मीधर रचित सौन्दर्यलहरी टीका में।

असिताङ्गादियामल

लि०--फेत्कारिणीतन्त्र से गृहीत।

--कैट्. कैट्. १।३७

असितादेवीपूजाविधि

लि०--श्लोक सं० २३०, पूर्ण।

--सं० वि० २६४२१

आकाशभैरवकल्प

लि०--(१) प्रत्यक्ष सिद्धिप्रद उमामहेश्वर संवादरूप। श्लोकसंख्या २०००। और ७८ अध्यायों में पूर्ण। यह मन्त्रशास्त्र साङ्ग, सलक्षण, वेदसारभूत तथा सब जीव-जन्तुओं का अभीष्टप्रद और ज्ञानप्रदायक एवं साधक-सुखदायी कहा गया है। देवी पार्वतीजी के महेश्वर से यह प्रार्थना करने पर कि हे दयानिधे, जो शास्त्र लोक में अत्यन्त गुप्त हो, जो सब अभीष्टों को देने वाला हो और जो साधकश्रेष्ठों का हितकारी हो उसे आप कहने की कृपा करें--महेश्वर ने इसका उपदेश किया। इसके ७८ अध्यायों के मुख्य विषय ये हैं--उत्साह-प्रक्रम, यजनविधि, उत्साहाभिषेक, मन्त्र-यन्त्र प्रक्रम, चित्र-माला मन्त्र, वश्य और आकर्षण प्रयोग, मोहन एवं द्रावण प्रयोग, स्तम्भन और विद्वेषण तथा प्रयोग, उच्चाटन-निग्रह प्रयोग, भोगप्रद विधि, आशुतार्क्ष्यविधि, आशु गारुड़ प्रयोग, शिष्याचारविधि, शरभसालुवपक्षिराजकल्प, शरभेशाष्टकस्तोत्र आदि, रक्षाभिषेक-विधि, बलिविधान, मायाप्रयोगविधि, आचारविधि, मातृकावर्णन, भद्रकालीविधि, औषधविधि, शूलिनी दुर्गा कल्प, शूलिनीविधि, वीरभद्रकल्प, जगत्क्षोभण मालामन्त्र, त्रपाविधि, भैरवविधि, दिक्पालविधि, व्याधिकल्पन, मृत्युविधि, मन्मथविधि, चामुण्डा-विधि, मोहिनीविधि, द्राविणीविधि, शब्दाकर्षिणीप्रयोग, भाषासरस्वतीप्रयोग, महासर-स्वतीप्रयोग, महालक्ष्मीप्रयोग, मायाविधि, पुलिन्दिनीविधि, महाशान्त (न्ति ?) विधि, संक्षोभिणीविधि, धूमावतीविधि, धूमावतीप्रयोग, चित्र-विद्याविधि, देशिकस्तोत्र, दुःस्वप्न-नाशन मन्त्रविधि, पाशविमोचनविधि, औषधमन्त्रविधि, कालमन्त्रविधि, षण्मुखमन्त्र-विधि, त्वरिताविधि, वडवानलभैरवविधि, ब्राह्मी प्रभृति सप्तमातृ विधि, नारसिंहीविधि एवं शरभहृदय आदि।

--ने० द० ३।२४६ (ग)

(२) (क) श्लोक सं० २४००, अध्याय ७८, उपदेशक शङ्कर।
(ख) श्लोक सं० १०००, अध्याय ३६।

—अ० व० (क) ५६०१, (ख) १०६६८

(३) महाशैव तन्त्र से गृहीत। २० उपदेशों में पूर्ण।

—कैट्. कैट्. १।३८,३।९

(४) श्लोक सं० १३७५, अध्याय १—४५ तक; महाशैवतन्त्रान्तर्गत। अपूर्ण।

—सं० वि० २६३७८

उ०—प्राणतोषिणी में।

आकाशभैरवतन्त्र

लि०—(१) (क) शिव-पार्वती संवादरूप, श्लोक सं० ३९००, १३६ पटलों में पूर्ण। इस ग्रन्थ में मुख्य रूप से साम्राज्यलक्ष्मी की पूजा का वर्णन है। तदनन्तर राजप्रासाद किस प्रकार का बनाना चाहिए, किस प्रकार के गज और शस्त्रास्त्र उसमें रखने चाहिए, यह वर्णन है। २९ पटलों में पुरलक्षण, उसके मार्ग, बाजार, और गृहों का सन्निवेश किस प्रकार का हो यह वर्णित है। प्राचीर के बीच में राजा अपना महल बना कर प्राचीर के चौगिर्द जामाताओं, पुत्रों, बन्धु-बान्धवों और सम्बन्धियों के गृहों का निर्माण करावे। उसके चारों ओर अपने रथ के संचारयोग्य मार्ग बनावे। प्राचीर के ऊँचे फाटक के निर्माण के साथ-साथ राजमार्ग के चारों ओर पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में विभिन्न बाजारों का निर्माण करावे।

(ख) अपूर्ण।
(ग) पटल २१ से ३२ तक, अपूर्ण।
(घ) पटल १२३ से १३३ तक, अपूर्ण।
(ङ) पटल १२९, अपूर्ण।

—तै. म. ६७०७ (क), ६७०८ (ख), ६७०९ (ग), ६७१० (घ), ६७१६ (ङ),

(२) यह इसी तन्त्र का उमामहेश्वरसंवादात्मक २ रा भाग है। इसमें छोटे-छोटे ७२ अध्याय हैं। विभिन्न देवताओं की पूजा प्रतिपादित है। —तै० म० ६७१५

(३) शरभसहस्रनाममात्र। —कैट्. कैट्. १।३८
शरभकवचमात्र। —कैट्. कैट्. २।८

शरणपूजापद्धतिमात्र। —कैट्. कैट्. ३।९

(४) (क) नो. सं. भाग (vol) ११ की भूमिका

(ख) नो. सं. सेकण्ड सीरोज भाग (vol) २, पृष्ठ २०७, २०८

उ०—प्राणतोषिणी में।

आकाशभैरवमन्त्र

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २।६

आकाशभैरवपूजाविधि

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २।६

आकाशभैरवागम

लि०—(१) गजशान्तिमात्र। —कैट्. कैट्. १।३८

(२) —न्यू कैट्. कैट्. २।६

आकाशभैरवीमन्त्र

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २।६

आकुलागमतन्त्र

लि०— —दे० अकुलागमतन्त्र। —न्यू कैट्. कैट्. २।६

आखुनाशकतन्त्र

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २।७

आगमकल्प

लि०—गङ्गापूजा का प्रतिपादक। —न्यू कैट्. कैट्. २।११

आगमकल्पद्रुम

लि०—जगन्नाथ-पुत्र गोविन्द विरचित। रचनाकाल १४२४ शकाब्द (१५०२ ई०)।

उ०—(१) पुरश्चर्यार्णव, तन्त्रसार, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, आगमकल्पलता, मन्त्ररत्नाकर, पूर्णाभिषेकदीपिका, लक्ष्मीधरकृत सौन्दर्यलहरीव्याख्या तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

आगमकल्पलता

लि०—(१) (क) श्लोक सं० लगभग ४३९६, पूर्ण।

(ख) श्लोक सं० १०५, केवल आरंभ के पन्ने मात्र। रचयिता यदुनाथ शर्मा। अपूर्ण। —र० मं० (क) ४९१४, (ख) ४९८८

(२) यदुनाथ विरचित यह संभवतः आगमकल्पवल्ली से अभिन्न है।

—कैट्. कैट्. १।३९, ३।८

(३) श्लोक सं० १४६, अपूर्ण।

—सं. वि. २४४८२

(४) —न्यू कैट्. कैट्. २।१२

उ०—मन्त्रजपविधि में।

आगमकल्पलतिका

लि०—(१) श्लोक सं० ८०००, आदि और अन्त में खण्डित, अपूर्ण। यदुनाथ चक्रवर्ती विरचित।

—अ० ब० ११३४८

(२) यदुनाथ विरचित—दे० नो० सं० भाग ५ की भूमिका पे० ९।

—कैट्. कैट्. ३।१

(३) २७ पटलों में पूर्ण। —रा० ब० ८१८

(४) —ज० का० २३।

आगमकल्पलता और आगमकल्पलतिका ये दोनों अभिन्न हैं।

(५) —न्यू कैट्. कैट्. २।१२

आगमकल्पवल्ली

लि०—(१) श्लोक सं० ३५०, अपूर्ण। यदुनाथशर्मा द्वारा विरचित यह ग्रन्थ २५ पटलों में पूर्ण है। इसकी एक २५ पटल की पूर्ण प्रति सोसायिटी के पुराने संग्रह में है। इसमें विविध देव-देवियों, विशेषतः महाविद्याओं की पूजा का विवरण है। वर्तमान पुस्तक में सिर्फ २ पूरे और तीसरे पटल का कुछ ही अंश है। ग्रन्थकार ने प्रपञ्चसारसिद्धान्त, शारदातिलक, सारसमुच्चय, दीपिका, लघुदीपिका, पूजाप्रदीप, पुरश्चरणचन्द्रिका, मन्त्रदर्पणसिद्धान्त, मन्त्रनेत्र, श्रीरामार्चनचन्द्रिका, मन्त्रमुक्तावली, रत्नावली, ज्ञानार्णव,

सनत्कुमारतन्त्र, नारदीयचतुःशती, सोमशंभुमत, अगस्त्य-संहिता आदि ग्रन्थों का उल्लेख किया है। —ए० बं० ६२१९

(२) श्लोक सं० १०००, अपूर्ण (अन्त में खंडित) —अ० ब० ११७०८

(३) श्लोक सं० १९८०, अपूर्ण। —सं० वि० २६१८५

आगमकौमुदी

लि०—(१) महामहोपाध्याय रामकृष्ण कृत। श्लोक सं० १८४८, रचनाकाल १६२१ शकाब्द, पूर्ण। यह ग्रन्थ तन्त्र की साधारण विधियों और विविध देवी, देवताओं की पूजा का प्रतिपादन करता है। —ए० बं० ६२१३

(२) इसमें शीघ्र आरोग्य लाभ करानेवाली, धनसम्पत्तिप्रद तथा शत्रु का शीघ्र विनाश करनेवाली विद्या कही गयी है। यह शाक्ताचार पर विभिन्न तन्त्रों से संगृहीत ग्रन्थ है। इसमें संक्षेपतः शाक्त सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण तथा शाक्त देवियों के पूजा के प्रायः सभी मुख्य-मुख्य मन्त्र दिये गये हैं। इसके प्रधान विषय—पहले अकथहचक्र, नक्षत्र-चक्र, राशिचक्र, भूतचक्र, नाडीचक्र, अकडमचक्र, जातिचक्र तथा ऋणिधनिचक्र यों प्रतिपादित हैं। अदीक्षित पुरुष रूप पशु और गुरुक्रम लक्षण दिये गये हैं। तदनन्तर पञ्चदेवपूजा, स्त्री और शूद्र को प्रणवरहित मन्त्रदान, शूद्र को मन्त्रदान निषेध, सिद्ध मन्त्र में कुछ विचार नहीं, दीक्षा में चान्द्र और सौर का विचार, हरचक्र, चक्रशुद्धि का प्रकरण, मन्त्रों के दस संस्कार, दीक्षा-प्रकरण, षट्चक्रनिरूपण, आधारशक्ति-ध्यान, आवाहनमुद्रा, शिवपूजा-प्रकरण, स्वाहा-स्वधा-विचार, माला-लक्षण, जप-लक्षण, माला-संस्कार, प्रणाम-लक्षण, मन्त्र-ग्रहणविधि, उपदेश-प्रकरण, राम और कृष्ण की उपासना के मन्त्र, राम और कृष्ण की गायत्री, लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा के मन्त्र, काली आदि शक्तियों के मन्त्र, भुवनेश्वरी के मन्त्र, मन्त्रों के विविध भेद, मालामन्त्र, सुन्दरी, तारा, श्यामा, अनिरुद्ध, प्रचण्ड-चण्डिका तथा गणेश के मन्त्र, उपविद्याएँ, योगिनी, मृत्युञ्जय, कर्णपिशाची, हनुमान् तथा गरुड़ के मन्त्र, यन्त्रों के संस्कार, मन्त्रगायत्री, भूमि पर माला गिरने से हुए दोष, प्रकीर्ण विषय कथन, प्रत्यङ्गिरा-कथन आदि। —रा० ला० १५४९

(३) रामकृष्ण विरचित —कैट्. कैट्. १।३९

(४) रामकृष्ण विरचित —न्यू कैट्. कैट्. २।१२

आगमचन्द्रिका (१)

लि०—कायस्थ कृष्णमोहन रचित, श्लोक सं० १९५०, अन्त में खंडित। दीक्षा-प्रकार-नियम नामक प्रथम उल्लास की पुष्पिका दी गयी है। फिर आगे उल्लासों की

पुष्पिकाएँ नहीं दिखायी देती। बहुत-सी अवान्तर पुष्पिकाएँ दी गयी हैं। जैसे इति काली-प्रकरणम्, इति ताराप्रकरणम् इत्यादि। इसमें दीक्षा के नियमों का प्रतिपादन किया गया है तथा काली, तारा, श्रीविद्या, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता और लक्ष्मी की पूजा का विस्तृत विवरण दिया गया है।

प्रथम उल्लास की पुष्पिका में लिखा है—'श्रीकृष्णमोहनकृतागमचन्द्रिकाया उल्लास एवं प्रथमो जनमानसतामसघ्नः।

—ए० बं० ६२०१

आगमचन्द्रिका (२)

लि०—(१) श्लोक सं० १५२५, अपूर्ण। यह रघुनाथ तर्कवागीश-पुत्र रामकृष्ण विरचित तान्त्रिक संग्रह ग्रन्थ है। इसमें दीक्षा-विधि, स्नान-विधि, विविध देवियों की पूजा तथा विविध चक्रों का निरूपण है। इसके आरंभ में स्वयं ग्रन्थकार ने लिखा है—श्रीरामकृष्णः संक्षिप्य तनोत्यागमचन्द्रिकाम्। ऊपर लिखे आगमचन्द्रिका ग्रन्थ से यह भिन्न है। यह रघुनाथ तर्कवागीश कृत आगमतत्त्वविलास का संक्षेप है।

—रा० ला० २६९

(२) रामकृष्ण विरचित, रचनाकाल १७२२ ई० —कैट्. कैट्. १।३९

(३) रामकृष्ण तर्कालङ्कार कृत। ग्रन्थकार के पिता द्वारा रचित आगमतत्त्व-विलास का संक्षेप। —न्यू कैट्. कैट्. २।१२

आगमचिन्तामणि

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

आगमतत्त्वविलास

लि०—(१) नापादि ग्रामनिवासी रघुनाथ तर्कवागीश विरचित। श्लोक सं० १४,४००। यह ग्रन्थ ५ परिच्छेदों में पूर्ण है। ग्रन्थकार ने ग्रन्थान्त में अपनी वंशावली का यों उल्लेख कियाहै—सर्वानन्द मिश्र से बलभद्र, उनसे काशीनाथ, काशीनाथ से चन्द्रवन्द्य, उनसे सकल शास्त्र पारंगत सुकवि शिवराम चक्रवर्ती, शिवराम चक्रवर्ती से आततमहाशक्ति रघुनाथ तर्कवागीश। उन्होंने शकाब्द १६०९ (१६८७ ई०) चैत्र में इसकी रचना पूर्ण की। यह एक विशाल तान्त्रिकसारभूत ग्रन्थ है। इसमें दीक्षा, योग आदि जैसे साधारण विषय प्रतिपादित हैं, साथ ही विभिन्न देवताओं के पूजा आदि विषय वर्णित हैं। ग्रन्थकार के पुत्र रामकृष्ण ने इसका सार आगमचन्द्रिका के नाम से १७२५ शकसंवत्सर में (ए० बं० ६२१४ के अनुसार) लिखा, किन्तु आगमचन्द्रिका में स्वयं रामकृष्ण ने "मुनिवेदनृप

शके" लिखकर १६३७ शकसंवत्सर ग्रन्थ-निर्माणकाल बतलाया है। सांख्यकारिका पर सांख्यतत्त्वविलास नाम की टीका ग्रन्थकार की एक कृति और है।

—ए० बं० ६२१४

(२) श्लोक सं० १३२३७। ५ परिच्छेदों में पूर्ण है। इसमें सर्वप्रथम प्रमाणरूप से उद्धृत तन्त्र-ग्रन्थों के नाम दिये गये हैं। उनकी संख्या १५६ है। तदनन्तर—गुरूपदेशादि-विधि, मन्त्र विचार-विधि, दीक्षा-विधि, दीक्षा में काल शुद्धि आदि का निरूपण, चक्रभेद कथन शुद्ध मन्त्र बिचार, मन्त्रों के दस संस्कार, अक्षरनिर्णय, मन्त्राभिधान कथन, लक्ष्मीवीजाभि-धान वर्णन, स्त्रीबीजाभिधान कथन। वर्णाभिधान, वर्गाभिधान कथन, बीज निर्णय की व्यवस्था, वीज के अर्थ का अभिधान, दीक्षापद का अर्थ निरूपण, स्त्री और शूद्र की दीक्षा में मन्त्र की व्यवस्था, पञ्चाङ्ग शुद्ध दीक्षा का निरूपण, अरिमन्त्र के त्याग की व्यवस्था, महाविद्या-निर्णय, मन्त्र की उपासना का विवेक, मन्त्र चैतन्य प्रकरण, संक्षेपदीक्षा का प्रकरण, करमाला का निर्देश, माला के सूत्र, नियम आदि का निरूपण, माला धारण में अंगुलिनियम कथन, रुद्राक्षमाला की विधि, महाशंख की माला के संस्कार, कपाल पात्र की शुद्धि का निरूपण, त्रिलोही-मुद्रा का क्रम वर्णन, वलिदान का क्रम कथन, बलिदान में अपने शरीर का रुधिर प्रदान करने की व्यवस्था, देवता के भेद से वाम और दक्षिण आचार की व्यवस्था, जल में आसन नियम, पूजा आदि में गुण-नियम, षोडशोपचार नियम, दशोपचार नियम, पञ्चोपचार नियम, अष्टादशोपचार नियम, यन्त्रधारण की विधि, यन्त्र लिखने के पदार्थों का नियम, मारणविधि, आकर्षणविधि, वशीकरणविधि, विद्वेषणविधि, उच्चाटन, स्तंभन, अभिचार आदि की विधियाँ, षट्कर्मलक्षण, भूतोदय-विधि, योनिमुद्रा आदि के मन्त्रार्थ का निरूपण, भूतलिपिविधि, युग के भेद से जपादिका नियम, कूर्मचक्र का निरूपण, रहस्य-पुरश्चरणविधि, वीरसाधनविधि, चितादिसाधन, शवसाधन, योगिनीसाधन, मनोहरा योगिनीसाधन, कनकावती योगिनीसाधन, कामेश्वरी योगिनी साधन, रतिसुन्दरी योगिनी-साधन, पद्मिनी आदि योगिनियों के साधन की विधियाँ, योगिनियों के आकर्षण की मुद्रा का क्रम कथन, शङ्कटा किन्नरीसाधन, यक्षकन्यासाधन, पिशाचादि के साधन की विधि, योगिनी आदि के साधन काल का निरूपण, दृष्टिसिद्धिनिरूपण, मन्त्रसिद्धि के लक्षण, मन्त्र के दोष और दोषाभाव, मन्त्र के दोष की शान्ति की विधि, बालक मन्त्र के संस्कार की विधि, पीठ-स्थान आदि के नियम, स्वयंभू कुसुम आदि का विवेचन, विभिन्न कुसुमों के रक्षण की विधि, यन्त्रों के नियमादि का वर्णन, भावरहस्य कथन, अन्तर्याग कथन, कुमारीपूजा-विधि, दूतीयागविधि, कुलपूजाक्रम, मदिरादिशोधनविधि। शक्तिशोधनविधि, वीर-

पुरश्चरणविधि, पान के अधिकारियों का निरूपण, मांस आदि की व्यवस्था, वामाचार के अनुकल्पों का निर्देश, यन्त्र, पात्र आदि का निर्णय, चक्रपादोदक-माहात्म्य आदि, यन्त्रादि का नाश होने पर प्रायश्चित्त, तत्तत् पूजाओं के आधार का निरूपण, पङ्कशुद्धिनिरूपण, कुण्डनिरूपण, स्थण्डिलविधि, होमविधि, स्रुक्स्रुवादि-लक्षण, होमद्रव्यनिरूपण, अग्निस्थापनादि-विधि, अग्नि के नामकरणादि की विधि, शाक्ताभिषेकविधि, मार्तण्डभैरव-पूजाविधि, गणेश, सूर्य आदि की पूजाविधि, इन्द्रादि की पूजाविधि, विष्णुपूजाविधि, रत्नाभिषेकविधि, दधिवामनपूजा, हरगौरीपूजाविधि, अर्धनारीश्वरपूजाविधि, चण्डाग्रशूलपाणिपूजाविधि, मञ्जुघोषपूजाविधि, मृतसंजीविनी विद्या का वर्णन, बटुकपूजा, लक्ष्मीपूजा, महालक्ष्मीपूजा, धनदापूजा, वागीश्वरीपूजा, भुवनेश्वरीपूजा, अन्नपूर्णापूजा, त्रिपुटापूजा, त्वरितापूजा, शूलिनीपूजा, दुर्गापूजा, जयदुर्गा, महिषमर्दिनी, काली आदि की पूजाविधियाँ, गुह्यकाली, भद्रकाली, महाकाली, श्मशानकाली आदि की पूजा का क्रमकथन, तारापूजा का क्रमकथन, आठ ताराओं के विभिन्न मन्त्रों का कथन, प्रचण्ड चण्डिका का पूजाक्रम कथन, छिन्नमस्ता, भैरवी, त्रिपुरसुन्दरी, श्रीविद्या आदि की पूजा का क्रम कथन, शङ्कटा, वगला, मातङ्गी, उच्छिष्टचाण्डालिनी, धूमावती, कर्णपिशाची आदि की पूजा का क्रम कथन, विषहराग्निमन्त्र, आर्द्रपटीविधि, हरिद्रागणेश-मन्त्र आदि सैकड़ों विषय वर्णित हैं।

—नो० सं० १।२३

(३) यह ग्रन्थ दो खण्डों में विभक्त है। इस प्रति में केवल १ म खण्ड का ही विवरण है। २य खण्ड सम्प्रति उपलब्ध नहीं है। पन्ने २०४, श्लोक सं० ७३७७। यह विशाल तन्त्र-ग्रन्थ सम्पूर्ण तन्त्र और आगम ग्रन्थों का सारभूत है। ग्रन्थकार ने इसकी रचना में लगभग १६० तन्त्र और आगम ग्रन्थों का अवलोकन कर उनसे सहायता ली है॥। ग्रन्थारंभ में सब ग्रन्थों की लम्बी सूची स्वयं ग्रन्थकार ने दे दी है। तदनन्तर विषयों की सूची भी ग्रन्थकार ने ग्रन्थारंभ में सन्निविष्ट कर दी है। बीज वर्ण निर्णय, सृष्टि का क्रम,

॥ अत्रोल्लिखिततन्त्रादिनामानि यथा——

स्वतन्त्रतन्त्रं फेत्कारीतन्त्रमुत्तरतन्त्रकम् । नीलतन्त्रं वीरतन्त्रं कुमारीतन्त्रमुज्ज्वलम् ॥
कालीनारायणीतन्त्रे तारिणीतन्त्रमुत्तमम । बालातन्त्रञ्च समयातन्त्रं भैरवतन्त्रकम् ॥
भैरवीत्रिपुरातन्त्रे वामकेश्वरतन्त्रकम् । कुक्कुटेश्वरतन्त्रञ्च मातृकातन्त्रमेव च ॥
सनत्कुमारतन्त्रञ्च विशुद्धेश्वरतन्त्रकम् । सम्मोहनाख्यतन्त्रञ्च गोतमीयञ्च तन्त्रकम्॥
बृहद्गौतमीयतन्त्रं भूतभैरवतन्त्रकम् । चामुण्डापिङ्गलातन्त्रे वाराहीतन्त्रकं तथा ॥

दीक्षा-प्रकरण, दीक्षा दो प्रकार की है नित्य और काम्य, दीक्षापद की निरुक्ति, गुरुलक्षण,

मुण्डमालाख्यतन्त्रञ्च योगिनीतन्त्रमुत्तमम् । मालिनीविजयं तन्त्रं तन्त्रं स्वच्छन्दभैरवम् ॥
महातन्त्रं शक्तितन्त्रं तन्त्रं चिन्तामणिं परम् । उन्मत्तभैरवं तन्त्रं त्रैलोक्यसारतन्त्रकम् ॥
विश्वसाराह्वयं तन्त्रं तथा तन्त्रामृताभिधम् । महाफेत्कारीयतन्त्रं वायवीयञ्च तोडलम् ॥
मालिनीललितातन्त्रे त्रिशक्तितन्त्रकं तथा । राजराजेश्वरीतन्त्रं महामोहस्वरोत्तरम् ॥
गवाक्षतन्त्रं गान्धर्वं तन्त्रं त्रैलोक्यमोहनम् । हंसमाहेश्वरं हंसपरमेश्वरतन्त्रकम् ॥
कामधेन्वाख्यतन्त्रञ्च तन्त्रं वर्णविलासकम् । मायातन्त्रं मन्त्रराजं कुब्जिकातन्त्रमुत्तमम् ॥
विज्ञानलतिकां लिङ्गागमं कालोत्तरं तथा । ईशानसंहितां तद्वत् श्रीविनायकसंहिताम् ॥
अगस्त्यसंहितां पुण्यां नन्दिकेश्वरसंहिताम् । वशिष्ठसंहितां दक्षसंहितां मनुसंहिताम् ॥
ब्रह्मणः संहितां दिव्यां सनत्कुमारसंहिताम् । कुलानन्दसंहिताञ्च वैशम्पायनसंहिताम् ॥
नृसिंहतापनीयञ्च दक्षिणामूर्तिसंहिताम् । ब्रह्मयालकञ्चादियामलं रुद्रयामलं ॥
बृहद्यामलकं सिद्धयामलं कल्पसूत्रकम् । मत्स्यसूक्तं कल्पसूक्तं कामराजं शिवागमम्॥
उड्डीशञ्च कुलोड्डीशमुड्डीशं वीरभद्रकम् । भूतडामरकं तद्वद् डामरं यक्षडामरम् ॥
कालिकाकुलसर्वस्वं कुलसर्वस्वमेव च । कुलचूणार्मणिं दिव्यं कुलसारं कुलार्णवम् ॥
कुलामृतकुलावल्यौ तथा कालीकुलार्णवम् । कुलप्रकाशं वाशिष्ठं सिद्धसारस्वतं तथा ॥
योगिनीहृदयं कालीहृदयं मातृकार्णवम् । योगिनीजालकुरकं तथा लक्ष्मीकुलार्णवम् ॥
तारार्णवं चन्द्रपीठं मेरुचन्द्रं चतुःशतीम् । तत्त्वबोधं महोग्रञ्च स्वच्छन्दसारसंग्रहम् ॥
ताराप्रदीपं सङ्केतचन्द्रोदयमतिस्फुटम् । षट्त्रिंशत्तत्त्वकं लक्ष्यनिर्णयं त्रिपुरार्णवम् ॥
विष्णुधर्मोत्तरं मन्त्रदर्पणं वैष्णवामृतम् । मानसोल्लासकं पूजाप्रदीपं भक्तिमञ्जरीम्॥
भुवनेश्वरीं पारिजातं प्रयोगसारमुत्तमम् । कामरत्नं क्रियासारं तथैवागमदीपिकाम् ॥
भावचूड़ामणिग्रन्थं तन्त्रचूड़ामणिं परम् । वृहच्छ्रीक्रमसंज्ञञ्च तथा श्रीक्रमसंज्ञकम् ॥
सिद्धान्तशेखरं ग्रन्थं तां गणेशविमर्शिनीम् । मन्त्रमुक्तावलीं तत्त्वकौमुदीं तन्त्रकौमुदीम् ॥
मन्त्रतन्त्रप्रकाशाख्यं श्रीरामार्चनचन्द्रिकाम् । शारदातिलकं ज्ञानार्णवं सारसमुच्चयम् ॥
कल्पद्रुमं ज्ञानमालां पुरश्चरणचन्द्रिकां । आगमोत्तरकं तत्त्वसागरं सारसंग्रहम् ॥
देवप्रकाशिनीं तन्त्रार्णवञ्च क्रमदीपिकाम् । तारारहस्यं श्यामाया रहस्यं तन्त्ररत्नकम् ॥
तन्त्रप्रदीपं ताराया विलासं विश्वमातृकाम् । प्रपञ्चसारं तं तन्त्रसारं रत्नावलीं तथा ॥
एवं षष्ट्युत्तरशतं ग्रन्थानां स्फुटमागमे । कल्पान् कुमारीकल्पादीन् श्रुतीश्चोपनिषद्गणान् ।
ज्योतिःस्मृतिपुराणानि पाणिनीयादिकौशलम् ॥ इति ॥

गुरुदोष, पिता, पितामह तथा अपने से न्यून अवस्था आदि वाले से दीक्षा ग्रहण का निषेध, स्वप्नलब्ध मन्त्र की विधि, वहाँ गुरु यदि मिल गया हो तो कर्तव्य कर्म का कथन, शिष्य-लक्षण, दीक्षा में मास आदि का नियम, समय की अशुद्धि का निरूपण, देवपर्व कथन, षट्पदचक्र, अष्टवर्गचक्र, नक्षत्रचक्र, तारामैत्री-विचार, अकथहादिचक्र, ऋणिधनिचक्र का दूसरा प्रकार, हरचक्र, उपासना-निर्णय आदि सैकड़ों विषय वर्णित हैं।

—रा० ला० ३१८६

(४) रघुनाथ तर्कवागीश कृत। —कैट्. कैट्. ३।९

(५) शिवराम-पुत्र रघुनाथ तर्कवागीशकृत, १६८७ ई. में रचित

—न्यू कैट्. कैट्. २।१२

उ०—नारायणकृत तन्त्रसारसंग्रह की भूमिका में।

आगमतत्त्वसंग्रह

लि०—(१) श्लोक सं० ९००, अपूर्ण, २ य परिच्छेद मात्र है। यह ग्रन्थ दो परिच्छेदों में पूर्ण है। १ म परिच्छेद में आगमों में प्रामाण्य सिद्ध किया गया है, २य परिच्छेद में आगम-प्रमेय का संक्षेपतः विवेचन किया गया है। इसके निर्माता सौभाग्य-कल्पतरु के रचयिता माधव के प्रशिष्य, कल्पलतिका के रचयिता क्षेमानन्द के शिष्य महाराष्ट्र वंश में उत्पन्न तुङ्गभद्रातीरनिवासी विश्वरूप केशव शर्मा हैं। इसका निर्माण काल आश्विन-शुक्ल ५ कलि संवत्सर ४९३३ है। इसमें आगम-तत्त्वों का विशद और उपयोगी संग्रह है। इसमें प्रमाण रूप से उद्धृत आगम और तन्त्र के ग्रन्थों की संख्या ६० के लगभग है।

—ए० बं० ६२१५

(२) प्रणम्य सर्वात्ममयीं महेश्वरीं गुरूंश्च सर्वान् विदुषः कृताञ्जलिः।
द्वितीयभागं प्रकरोमि मेयप्रकाशकं ह्यागमतत्त्वसंग्रहे ॥

इसमें भी केवल प्रमेय-प्रकाशक २य ही परिच्छेद है। तन्त्रों में तीन काण्डों द्वारा निरूपित कर्म, उपासना और ज्ञान में से प्रत्येक का स्वरूप इसमें बतलाया गया है।

—रा० ला० १७६०

(३) केशव विश्वरूप विरचित। —कैट्. कैट्. १।३९

(४) तुङ्गभद्रा निकट निवासी महाराष्ट्र केशव विश्वरूप, जो सौभाग्यकल्पलतिका के रचयिता क्षेमानन्द के प्रशिष्य तथा सौभाग्यकल्पद्रुम के रचयिता माधवानन्दनाथ के शिष्य थे, द्वारा कलि संवत्सर ४९३३ में विरचित। —न्यू कैट्. कैट्. २।१३

आगमतन्त्र

लि०—वाराहीकवच मात्र। —न्यू कैट्. कैट्. २।१३

आगमदीक्षाविधि-आगमाह्निक

लि०—अघोरशिवाचार्य कृत। इसका एक खण्ड क्रियाक्रमद्योतिका है।

—न्यू कैट्. कैट्. २।१३

आगमदीपिकातन्त्र

उ०—आगमतत्त्वविलास में।

आगमद्वैतनिर्णय

लि०—विद्यापति ठाकुर(?) कृत।

—न्यू कैट्. कैट्. २।१३

आगमपुराण

(गोपीप्रेमामृत मात्र)

लि०—(१) श्लोक सं० ३२। यह श्रीकृष्णार्जुन संवादरूप है। इसमें गोपियों की भगवद्भक्तों में परम श्रेष्ठता प्रतिपादित है। —नो० सं० ३।४१

(२) —न्यू कैट्. कैट्. २।१३

आगममन्त्रदीपिका

लि०—यशोधर मिश्र कृत, श्लोक सं० १२६, केवल ८ वाँ पटल, पूर्ण।

—सं० वि० २५८१७

आगमरहस्य

(अथवा आगमरहस्यस्तोत्र)

लि०—

—कैट्. कैट्. १।३९

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

आगमशिरोमणि

उ०—दक्षिणामूर्ति कृत उद्धारकोश में।

आगमसंक्षिप्तसार

लि०——द्विजानन्द कृत, २२ पटलों में पूर्ण।

——न्यू कैट्. कैट्. २।१४

आगमविवेक

(द्वितीय रामकण्ठ कृत)

उ०——नादकारिका में।

आगमशास्त्रविवरण

लि०—— ——वि० रि० ५४

आगमसंग्रह

नामान्तर——एकजटाकल्प

लि०——श्लोक सं० ४९६१, १६ पटलों में पूर्ण। इसके निर्माता कात्यायनीचरण-नखचन्द्र चकोरचित्त श्रीरामकान्त-पुत्र हैं। इन्होंने बहुत तन्त्रों का अवलोकन कर श्रीतारा के विषय में होने वाले संशयों का निरासक यह एकजटाकल्प रचा।

विषय——तारा, उग्रतारा, एकजटा आदि के एकरूप होने पर भी नामभेद से भेद निरूपण, उनके मन्त्रों में भेद कथन, एकजटा के अधिकार में प्रातः कृत्य आदि का निरूपण, सहस्रार का विवेचन, कुण्डलिनी के अवस्थान आदि का निरूपण, प्रातः कृत्य किये बिना पूजा करने में दोष कथन, पशु और वीर के प्रातः कृत्य में विशेष कथन, पतित की संन्ध्या-व्यवस्था, संक्रान्ति आदि में वैदिक सन्ध्या का निषेध होने पर भी तान्त्रिक सन्ध्या की आवश्यकता, सूतक आदि में भी तान्त्रिक सन्ध्या, पूजा आदि की कर्तव्यता का निरूपण, तान्त्रिक तर्पणविधि, कामनाओं के भेद से वस्त्र के परिमाण का कथन, पीठ-चिन्तनविधि, पुष्पादि शोधनविधि, विजयाविधि, उसके पीने के समय आदि का निरूपण, मुद्राविधि, जीव-न्यासादिविधि, षोढा, गुह्यषोढा, व्यापकादि न्यासों की विधि, वैध हिंसा विचार, रुधिर दान विधि, लेपधारणादि विधि, त्रिविध रात्रिपूजा विधि, महानिशादिनिरूपण, ब्राह्मण की मद्यपान आदि विधि पर विचार, प्रायश्चित्तादि, शोधनविधि, चितासाधन-विधि, चिता के लक्षण आदि कथन, शवसाधनादिविधि कथन, पञ्च मुद्रादि साधनविधि, मन्त्रसिद्धि के उपाय कथन, शक्तिकवचादि निरूपण, लतासाधनविधि, शक्ति के गमनागमन का विवेक

कथन, महाशंख यन्त्रादिविधि, वज्र पुष्पादिशोधनविधि, उग्रतारा, नीलसरस्वत्यादि के कवच कथन, कौलप्रायश्चित्त कथन, पूर्णाभिषेकादि विधि। —रा० ला० २२४७

(२) आगमसंग्रहे एकजटाकल्पः। रामकान्त और कात्यायनी के पुत्र द्वारा विरचित। —कैट्. कैट्. १।३९

आगमसंहिता

उ०—तन्त्रसार में।

आगमसार

लि०—(१) विविध विद्याविद्योतित महादानी श्रीरामभद्र भट्टाचार्य के छठे पुत्र श्री रघुमणि इसके निर्माता हैं। श्लोक सं० ३०५२। यह तन्त्रशास्त्र में वर्णित विविध प्रकरणों का संग्रह है। इसमें विष्णुस्त्रोत्र भी दिया गया है। उसकी संस्तुति में ग्रन्थकार कहते हैं कि साधक धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए जगन्मय जगन्नाथ को इस स्तुति से प्रसन्न करे। —रा० ला० २६३

(२) रामभद्र-पुत्र रघुमणि विरचित। आगमससार में भुवनेश्वरीकवच, आगमसार में लक्ष्मीकवच। —कैट्. कैट्. १।३९

(३) रामभद्र-पुत्र रघुमणि विद्याभूषण कृत। —न्यू कैट्. कैट्. २।१५

उ०—तन्त्रसार, शक्तिरत्नाकर तथा पुरश्चर्यार्णव में।

आगमसारसंग्रह (१)

नामान्तर—तत्त्वतरङ्गिणी

लि०—(१) श्रीयोगेन्द्र विरचित। श्लोक सं० १६७; अपूर्ण। द्वितीय उल्लास की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि द्वितीय उल्लास का ही नाम तत्त्वतरङ्गिणी है—इति श्रीयोगेन्द्रप्रकाशिते आगमसारसंग्रहे ब्रह्मनिरूपणे तत्त्वतरङ्गिणी नाम द्वितीयोल्लासः।

ग्रन्थ के आरंभ वाक्य से मालूम पड़ता है कि पूरे ग्रन्थ का नाम तत्त्वतरङ्गिणी है—

नत्वा गुरुपदद्वन्द्वं योगेन्द्रेण च धीमता।
नानातन्त्रानुसारेण कृता तत्त्वतरङ्गिणी॥

इसमें केवल प्रारम्भिक दो उल्लास है। प्रमाण रूप से २० के लगभग तन्त्र ग्रन्थों का उल्लेख है। इसमें विषय इस प्रकार हैं—सदाशिव की निर्गुणता का प्रतिपादन, बिन्दु-स्वरूप आदि का कथन, सत्त्वादि गुणों के संपर्क से ब्रह्म का सगुणत्व आदि कथन, जीव-

ध्यान प्रकार, शक्तिस्वरूपादि कथन, श्रीकृष्ण आदि का प्रकृतिमयत्व कथन, कुलज्ञान की महिमा, कौलिकों की प्रशंसा आदि। --रा० ला० ४०५०

(२) इसके दो उल्लासों में शक्ति की सर्वोत्कृष्टता और कौलपूजा प्रकार तथा आचार की महत्ता प्रतिपादित है। --ए० बं० ६२२०

(३) योगेन्द्र विरचित। इसके २ य उल्लास का नाम तत्त्वतरंगिणी है।

--कैट्. कैट्. १।३९; २।८,

आगमसारसंग्रह (२)

लि०--आनन्दमिश्र विरचित। --न्यू कैट्. कैट्. २।१५

आगमसिद्धान्त

उ०--पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

आगमसारोद्धार

लि०--श्रीसूक्तविधानमात्र। --न्यू कैट्, कैट. २।१५

आगमसिद्धान्त

उ०--कुलमुक्तिकल्लोलिनी तथा शिवानन्दकृत सिंहसिद्धान्तसिन्धु में।

आगमसिन्धु

उ०--दक्षिणामूर्तिकृत उद्धारकोश में।

आगमाद्युत्पत्ति

लि०-- --न्यू कैट्. कैट्. २।१५

आगमाधिकार

प्रत्यभिज्ञा-शैव ग्रन्थ।

उ०--सर्वदर्शनसंग्रह आनन्दाश्रम-संस्करण पृ० ७८ में।

आगमामृत

उ०--दक्षिणामूर्ति के उद्धारकोश में।

आगमामृतमञ्जरी

उ०--दक्षिणामूर्ति के उद्धारकोश में।

आगमार्णवपीयूष

उ०—दक्षिणामूर्ति के उद्धारकोश में।

आगमार्थसंग्रह

लि०—शैवागम। —न्यू कैट्. कैट्. २।१५

आगमालङ्कार

उ०—दक्षिणामूर्ति के उद्धारकोश में।

आगमाह्निक

लि०—(१) (क) पत्रे १२२,
(ख) पत्रे ५५ तमिल अर्थ के साथ,
(ग) पत्रे ७६,
(घ) पत्रे २४७ नूतन लिखित। इसकी ये ४ प्रतियाँ उपलब्ध हैं।
इस संग्रहतन्त्रग्रन्थ में आगमानुसार दैनिक स्नानादि कृत्यों का प्रतिपादन है।
—तै.म. (क) ११३९०, (ख) ११३९४, (ग) ११३९५, (घ) ११३९७
(२) —कैट्. कैट्. १।३९
(३)—दे० आगमदीक्षाविधि। —न्यू कैट्. कैट्. २।१६

आगमोत्तर (तन्त्र)

उ०—आगमतन्त्रविलास, सौन्दर्यलहरीव्याख्या तथा तन्त्रसार में।

आगमोत्पत्त्यादिवैदिकतान्त्रिकनिर्णय

लि०—रचयिता भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र वाराणसीगर्भज दक्षिणाचारमत-प्रवर्तक काशीनाथ। श्लोक सं० ३३०, पूर्ण। ग्रन्थारम्भ श्लोकों में एक में जैसा कि इसका नाम आगमोत्पत्तिनिर्णय कहा गया है—'काशीनाथः प्रतनुते आगमोत्पत्तिनिर्णयम्'। यह ग्रन्थ केवल तन्त्रों की उत्पत्ति या तन्त्रग्रन्थों की संख्या का ही प्रतिपादन नहीं करता बल्कि यह तान्त्रिक क्रियाओं तथा विशेषतः तन्त्रानुयायियों के अवश्य कर्तव्य नियमों का भी प्रतिपादन करता हे। वैदिक और तान्त्रिक विभेद कैसे हुआ इत्यादि विषय विस्तार से इसमें वर्णित है। इसलिए इसका नाम आगमोत्पत्त्यादि-वैदिकतान्त्रिकनिर्णय पड़ा। इसके प्रारम्भ में सम्पूर्ण आगम ग्रन्थों की संख्या बतलाते हुए

उनमे से कितने भूलोक में, कितने स्वर्ग में और कितने पाताल में हैं यह प्रतिपादन किया गया है। तन्त्रग्रन्थ और संहिताग्रन्थों की लम्बी सूची भी दी गयी है। इसमें दिये गये विषय— आगमों की उत्पत्ति, युगधर्म, कौलिक और वैदिक कर्म विचार, षोडश संस्कार, स्वप्न में प्राप्त मन्त्र का उपासनाक्रम, पूर्णाभिषेक की प्रणाली, बृहत्तन्त्रसार में उक्त द्विविध पूर्णाभिषेकविधि का प्रकार, महाविद्या के छह आम्नायों का प्रकार, श्रीविद्यायन्त्र के धारण की महिमा, वाममार्गियों की अन्त्येष्टि क्रिया आदि है।

—ए० बं० ६२२६

आगमोद्योत

उ०—दक्षिणामूर्ति के उद्धारकोश में।

आग्नेय आगम

यह अष्टादश (१८) रुद्रागमों में अन्यतम है। किरणागम के अनुसार इसके प्रथम श्रोता व्योमशिव और उनसे द्वितीय श्रोता हुताशन है।

आग्नेयास्त्र

लि०—(१) —कैट. कैट्. १।३९

(२) आग्नेयास्त्र (विधि)। —न्यू कैट्. कैट्. २।१८

आङ्गिरसतन्त्र

लि०—पाञ्चरात्र, पाद्मतन्त्र में परिगणित।

—न्यू कैट्. कैट्. २।२०

आचारकथन

लि०—आकाशभैरवकल्प से गृहीत। —न्यू कैट्. कट्. २।२१

आचारकुसुमावली

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

आचारचिन्तामणि

लि०—(१) पन्ने ८, पूर्ण। यह मौलिक तन्त्रग्रन्थ है।

—बं० प० १२४५

(२) श्लोक सं० १०५, अपूर्ण। —सं० वि० २६३०१

आचारतन्त्र

लि०——(१) श्लोक सं० १६०, पूर्ण। ——र० मं० ४९८२ (ख)

(२) ७ पटलों में पूर्ण। ——दे० चीनाचार तथा महाचीनाचारतन्त्र।

——न्यू कैट्. कैट्. २।२३

आचारनिर्णय

लि०——श्लोक सं० ६६, यह हर-गौरी संवादरूप ग्रन्थ ३५ पटलों में पूर्ण है, किन्तु इस प्रति में केवल ३५ वाँ पटल मात्र है। इसमें कायस्थों की उत्पत्ति, ब्राह्मणों के कर्तव्य, सुयज्ञ राजा के प्रति सुतपा नामक ब्राह्मण का उपदेश, कलियुग में शूद्र का क्षत्रिय कर्म करना, चित्राङ्गद के प्रति ब्राह्मणों का शाप तथा वगलामंत्र जप की महिमा——वगलामन्त्र के ग्रहण मात्र से कायस्थ ब्राह्मण हो जाता है। केवल इस ३५ वें पटल के पढ़ने और सुनने से मनुष्य सफलमनोरथ हो जाता है और वगला देवी की स्तुति कर कालीविग्रह बन जाता है इत्यादि विषय वर्णित हैं। ——रा० ला० ५९९

आचारनिलयतन्त्र

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२५

आचारप्रकरण (प्रसरण ?)

उ०——शतरत्नसंग्रह में।

आचारसारप्रकरण

लि०——(१) ब्रह्मयामल से गृहीत ——कैट्. कैट्. १।४०

(२) ——रा० ला० ३१९

आचारसार तन्त्र

नामान्तर——महाचीनक्रमाचार, चीनाचारसारतन्त्र तथा आचारतन्त्र। यह शिव-पार्वती संवादरूप है। विशेष विवरण 'महाचीनक्रमाचार' में देखें।

(१) लि०——श्लोक सं० २७८। प्रस्तुत प्रति ५ पटल तक गयी है। इ० आ० ने इसके ७ पटल कहे हैं। यह विविधतन्त्रसंग्रह में महाचीनाचारतन्त्र के नाम से ५ पटलों में छप चुका है। उस संस्करण में ५ वें पटल की समाप्ति के बाद बहुत-से श्लोक दिये गये हैं जो प्रस्तुत प्रति में नहीं दिखायी देते।

——ए० बं० ५९९३

(२) यह मौलिक तन्त्र ग्रन्थ ८ पटलों में पूर्ण है। इसमें कौलाचार प्रतिपादित है। अन्य तन्त्रों के समान इसमें भी श्रीपार्वतीजी के महाचीनाचार पर शिवजी से प्रश्न करने पर उन्होंने वसिष्ठजी का वृत्तान्त कहा। वसिष्ठजी ने श्रीतारादेवी को प्रसन्न करने के निमित्त कामाख्या योनिमण्डल में १० वर्ष तक उनकी आराधना की, किन्तु ताराजी का अनुग्रह उन्हें प्राप्त नहीं हुआ। पिता ब्रह्माजी के सदुपदेश से वे जनार्दन रूपी बुद्ध से चीनाचार की शिक्षा लेने चीन गये। उन्होंने कौलाचार का उन्हें उपदेश दिया। उससे उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई इत्यादि। इसके अनेक नाम हैं। —क०का० ४

(३) इसके ७ पटल कहे गये हैं। किन्तु इसमें प्रारम्भिक ३ पटल नहीं है। ४ र्थ पटल में कौल धर्म कहे गये हैं, ५ म में काम, क्रोध आदि शत्रुओं के दमन के साधन (उपाय) वर्णित है, ६ष्ठ में कौलाचार से शक्ति की साधना आदि निर्दिष्ट हैं और ७म में संविदाख्य ज्ञान जनक उपाय बतलाये गये हैं। —रा० ला० ४७०

(४) श्लोक सं० २०२। विषय—कौलिकों के आचार। जैसे संविदा स्वीकार की विधि, उसके शोधन के मन्त्र, दूध आदि में मिलाकर संविदा पीने का विशेष फल, त्रिकटु आदि के चूर्ण के साथ घी में भूँजी विजया के ग्रहण का फल और माहात्म्य, पञ्चतत्त्वविधि, मद्य आदि के शोधन की विधि, सुरा के ध्यान आदि, स्वयंभू कुसुम के शोधन की विधि एवं पूजाविधि कथन पूर्वक गुरुस्तोत्र प्रतिपादन, पात्र संस्था निरूपण, पूजा-काल के सिवा पीने का निषेध, पात्रवन्दन आदि की विधि, चक्र में वर्जनीयों का कथन, शक्ति नहीं तो पान नहीं करना, पात्र के परिमाण आदि, कौलिक लक्षण, शक्तिशोधनविधिरहस्य, पुरुश्चरणविधि आदि। —नो० सं० १।२३

(५) इसकी श्लोक सं० ४०० कही गयी है। यह प्रति ७ पटलों में पूर्ण है। —अ. व० १०६२७ (घ)

(६) (क) श्लोक सं० ३५७, पटल १–९ तक, अपूर्ण;
(ख) श्लोक सं० ५१५, पूर्ण। —सं. वि. (क) २५०००, (ख) २५४५५
—कैट्. कैट्. १।४०

(७) (क)
(ख) आचारसार और आचारसारप्रकरण। —दे० चीनाचारसारतन्त्र।
—कैट्. कैट्. २।८

उ०—प्राणतोषिणी, कालिकासपर्याविधि (काशीनाथ कृत) में।

आज्ञावतार

उ०––योगिनीहृदयदीपिका तथा भास्करराय द्वारा स्वकृत ललिता-सहस्रनाम-व्याख्या में।

आञ्जनेयकल्प

लि०––छह अध्यायों में पूर्ण। सुदर्शनसंहिता से गृहीत।

––न्यू कैट्. कैट्. २।४१

आञ्जनेयमाला मन्त्र

लि०––शौनक संहिता से गृहीत। ––न्यू कैट्. कैट्. २।४१

आञ्जनेयसहस्रनामस्तोत्र (हनुमद्वज्रकवचसहित)

लि०––सुदर्शनसंहिता से गृहीत। ––न्यू कैट्. कैट्. २।४१

आत्मज्ञान

लि०––श्लोक सं० १५०, अपूर्ण। ––अ० ब० ९९८८

आत्मज्ञाननिर्णय

लि०––महानिर्वाणतन्त्र से गृहीत। ––न्यू कैट्. कैट्. २।४६

आत्मनाथनित्यपूजानुक्रमणी

लि०––प्रज्ञानदीपिका से गृहीत। ––न्यू कैट्. कैट्. २।४८

आत्मनाथार्चनविधि

लि०––प्रज्ञानदीपिका से गृहीत। १८ स्कन्धों में पूर्ण। सूत्र-शैली के रूप में निर्मित।

––न्यू कैट्. कैट्. २।४८

आत्मपूजा

लि०––श्रीनाथ विरचित। श्लोक सं० २०००। यह ग्रन्थ १९ उल्लासों में पूर्ण है। इसके आरंभिक दो उल्लासों में तान्त्रिक विषयों का वर्णन है। उसके बाद ३ य उल्लास से गुरु शिष्य संवाद के रूप में दार्शनिक विषय ही प्रचुरमात्रा में वर्णित हैं। इसमें वर्णित विषय ये हैं––१ युगानुसार शास्त्राचरण, पश्वाचार, वैष्णवाचार, शैवाचार आदि आचार भेद, २–शाक्ताचार, पञ्चतत्त्वप्रमाण, शक्तिप्रमाण, दक्षिणाचार, पञ्चतत्त्व

कथन, चक्र में जाति-भेद नहीं, वामाचार, सिद्धान्ताचार और कौलाचार, ३—आत्मरहस्य के अधिकारी का निरूपण, ४—ब्रह्मचैतन्य कथन, ५—स्वात्मचैतन्य कथन, ६—जीव और परमेश्वर का ऐक्य कथन, ७—ब्रह्म की सर्वस्वरूपता, ८—मायाशक्ति कथन, कारण शरीर कथन, सूक्ष्म स्वरूप कथन के सिलसिले में २४ तत्त्वों की उत्पत्ति, षट्चक्रनिरूपण, काशीमहात्म्य आदि। —ए० बं० ६२०१

आत्मबोध

लि०—गोरक्षनाथ कृत। —न्यू कैट्. कैट्. २।५१

आत्मयाग (१)

लि०—(क) श्लोक सं० १९२, पूर्ण, शक्तिसंगमबृहत्तन्त्र के अन्तर्गत।
(ख) श्लोक सं० लगभग ३८, अपूर्ण।
—सं० वि० (क) २४११३, (ख) २५१६०

आत्मयाग (२)

लि०—दत्तात्रेयपूजा। —न्यू कैट्. कैट्. २।५६

आत्मयोग

लि०—शैव योगज-उपागम। कामिक वर्ग में अन्यतम।
—न्यू कैट्. कैट्. २।५६

आत्मरहस्य

लि०—श्रीनाथ कृत, १९ अध्यायों में पूर्ण। —न्यू कैट्. कैट्. २।५६

आत्मरहस्यतन्त्र

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २।५६

आत्मसंबोध

उ०—स्पन्ददीपिका में।

आत्मसप्तति

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

आत्मसाधन

लि०—श्लोक सं० १०२, पूर्ण। —सं० वि० २४९१६

आत्मार्थपूजापद्धति

लि०—श्लोक सं० ५०००। यह शैव तन्त्र है।

—अ० ब० १०२५८

आत्रेयतन्त्र

लि०—पञ्चरात्रान्तर्गत। —न्यू कैट्. कैट्. २।६७

आथर्वणतन्त्रसार

लि०—कटकाचार्यकृत। —न्यू कैट्. कैट्. २।६९

आथर्वणकात्यायनतन्त्र

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २।६८

आथर्वणतन्त्र

दे० अथर्वतन्त्र।

उ०—कालीतन्त्र में।

आथर्वणप्रयोगमालिका

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २।६९

आथर्वणप्रोक्त देवीरहस्यस्वरूपक्रमोपासनाप्रयोग

लि०—भावनोपनिषद् तथा भास्कररायकृत भावनोपनिषद्भाष्य के आधार पर जगन्नाथसूरि (भास्करराय-शिष्य) कृत।

—न्यू कैट्. कैट्. २।६९

आथर्वणरहस्य

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २।६९

आथर्वणमन्त्रार्णव

लि०—वाञ्छाकल्पलतोपस्थान मात्र।

—न्यू कैट्. कैट्. २।६९

आर्थवण्यस्त्रमन्त्र

लि०—कालिकागमान्तर्गत रुद्रतन्त्र से गृहीत।

—न्यू कैट्. कैट्. २।७०

आथवर्ण्यस्त्रविद्या

लि०—कालिकागम से गृहीत। —न्यू कैट्. कैट्. २१७०

आदित्ययामल

उ०—तन्त्रसार तथा पुरश्चर्यार्णव में।

कैट्. कैट्. १।४५ में यह आदियामल के नाम से अभिहित है। तन्त्रसार और नक्षत्रसमुच्चय में इसका उल्लेख बतलाया गया है।

आदित्यविधान

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २१७६

आदिनाथानन्दभैरव

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २१८२

आदिपुराण

लि०—शिवागम। ॐकारस्तोत्र मात्र। —न्यू कैट्. कैट्. २१८३

आदिवातुलतन्त्र

उ०—फेत्कारिणी तन्त्र में।

आदिवाराहीपञ्चाङ्ग

लि०—उड्डामरतन्त्र से गृहीत। —न्यू कैट्. कैट्. २१८८

आदिशास्त्रतन्त्र

लि०—सनकादि विरचित, श्लोक सं० लगभग ८१, अपूर्ण।
—सं० वि० २४२६५

आद्यलक्ष्मीपूजाविधान

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २१८९

आद्यादिमहालक्ष्मीहृदयस्तोत्र

लि०—आथर्वणरहस्य से गृहीत। —न्यू कैट्. कैट्. २१८९

आद्यादिमहालक्ष्मीहृदय

लि०— —कैट्. कैट्. ३।१०

आद्यादीपदानविधि

लि०--(१) वृन्दावन विरचित । --कैट्. कैट्. १।४५
(२) --ने० द० ३।४६
(३) --न्यू कैट्. कैट्. २।९०

आद्यापञ्चाङ्ग

लि०--(१) --कैट्. कैट्. १।४५
(२) --न्यू कैट्. कैट्. २।९०

आनन्दकल्पलतिका

लि०--(अवधूत) महेश्वर तेजानन्दनाथ कृत ।
--न्यू कैट्. कैट्. २।९८

आनन्दगह्वरतन्त्र

उ०--तन्त्रालोक में ।

आनन्दतन्त्र

लि०--श्लोक सं० १९१३ । यह देवी और कामेश्वर संवादरूप ग्रन्थ २० पटलों में पूर्ण है । लिङ्गरहस्य और शक्ति की अर्चा साङ्गोपाङ्ग इसमें वर्णित है । शक्ति-पूजा का विस्तृत विवरण १५ पटलों तक है । अन्तिम पाँच पटलों में जातिभेद का निषेध, विविध दर्शन शास्त्रों का तथा तान्त्रिक दर्शनों का विवेचन किया गया है । उत्तर भारत में इसका प्रचार बहुत कम है, किन्तु दक्षिण भारत में इसका बहुत अधिक प्रचार है । प्रथम पटल की पुष्पिका[1] से ज्ञात होता है कि यह नित्याषोडशिकार्णवतन्त्र के अन्तर्गत भगमालिनीसंहिता का एक अंश है । नित्याषोडशिकार्णव तन्त्र की श्लोक सं० बत्तीस करोड़ है और तदन्तर्गत भगमालिनीसंहिता की श्लोक सं० एक लाख है । --इ० आ० २५४१
(२) २० पटलों में --कैट्. कट्. २।९
(३) पञ्चरात्रों में परिगणित । --न्यू कैट्. कैट्. २।१०३
उ०--तन्त्रालोक में ।
संभवतः यह अभिनव गुप्ताचार्य के तन्त्रसार में उल्लिखित आनन्दशास्त्र से अभिन्न है ।

१--इति द्वात्रिंशत्कोटिविस्तीर्णे नित्याषोडशिकार्णवतन्त्रे भगमालिनीसंहितायां शतसाहस्त्र्यामानन्दतन्त्रे प्रथमः पटलः ॥

आनन्दताण्डवविलासस्तोत्र

(महेश्वरानन्द के गुरु महाप्रकाश कृत)

उ०——महार्थमञ्जरी-परिमल में।

आनन्ददीपिनीटीका

लि०——श्लोक सं० ८००। यह कर्पूरस्तोत्र की ब्रह्मानन्द सरस्वती कृत व्याख्या है। कर्पूरस्तोत्र के २२ श्लोकों पर ग्रन्थकार ने यह सुन्दर टीका रची है। इसमें कालिका का मन्त्रोद्धार भी है। ——रा० ला० ३३०

आनन्दपटल

उ०——सर्वोल्लास में।

आनन्दबोधलहरी

लि०——श्रीशङ्कराचार्य विरचित, श्लोक सं० ३०। यह स्तोत्र अठारह श्लोकों में पूर्ण है। यह जीवन्मुक्तानन्दतरङ्गिणी के नाम से प्रसिद्ध है। यह १७ श्लोकों में श्रीशङ्कराचार्य ग्रन्थमाला (वाणीविलास प्रेस, श्रीरङ्गम्) में प्रकाशित है।

——ए० बं० ६८०८

आनन्दभैरव

लि०——(१) कार्तवीर्यार्जुनसहस्रनाम मात्र।

——कैट्. कैट्. १।४८

(२) ,, ——न्यू कैट्. कैट्. २।१०९

उ०——शिवसूत्रविमर्शिनी में

आनन्दमयी-पूजा

लि०——इसमें आनन्दमयी की गुप्त तान्त्रिक पूजा वर्णित है। इस पूजा को जान कर उत्तम साधक शिवसायुज्य को प्राप्त होता है। इसमें कौलाचारसंगत देवीपूजा वर्णित है। इसमें रुद्रयामल, लिङ्गागम, कुलार्णव, कुलसार आदि तन्त्र-ग्रन्थ उल्लिखित हैं।

——ए० बं० ६४५०

आनन्दलहरी

लि०——श्रीशङ्कराचार्य कृत १०७ श्लोकों में पूर्ण। समयाचारमूलक सुभगोदया (श्री

गौडपादाचार्य कृत) के आधार पर श्रीशङ्कराचार्य ने १०२ श्लोकों की रचना की। उनमें आरंभ के ४१ श्लोक आनन्दलहरी के नाम से परिचित हैं। शेष सौन्दर्यलहरी के नाम से प्रसिद्ध हैं। किसी-किसी टीकाकार ने ४१ श्लोकों के बदले ३५ श्लोकों को आनन्दलहरी कहा है और किसी ने ३० श्लोकों को। आनन्दलहरी की व्याख्या सुधाविद्योतिनी आदि के मत से निम्नलिखित श्लोक आनन्दलहरी के हैं —— १, २, ८, ९, १०, ११, १४ से २१ तक, २६, २७ तथा ३१ से ४१ तक शेष सौन्दर्यलहरी के।

आनन्दलहरी की टीकाएँ

१——रहस्यप्रकाश (जगदीशतर्कालङ्कार विरचित) पन्ने ५८।

——इ० आ० २६२३

२——तत्त्वबोधिनी (सुबुद्धिमिश्र-प्रपौत्र, विद्यासागर-पौत्र, यादवचक्रवर्ती के पुत्र महादेव विद्यावागीश भट्टाचार्य कृत) पन्ने ६१। निर्माण काल १५२७ शकसंवत्सर।

——इ० आ० २६२४

३——सौभाग्यवर्द्धिनी (कैवल्याश्रम कृत)——इ० आ० २६२२, ए० बं० ६६७९

४——आनन्दलहरी-व्याख्या (कविराजशर्मा कृत)। ——ए० बं० ६६९७

५——सुबोधिनी (निरञ्जन कृत)। ——ए० ब० ६६९८

६——विस्तारचन्द्रिका (गोविन्दतर्कवागीश भट्टाचार्य कृत), श्लोक सं० ५८८, पूर्ण।

——रा० ला० ३३७३; वं. प० ३३४

७——(क) तत्त्वदीपिका (गङ्गाहरिकृत) श्लोक सं० २७६। ——रा० ला० ७५०

(ख) ,, श्लोक सं० १२१६। ——नो. सं. १२८

८——(क) मञ्जुभाषिणी (वल्लभाचार्य-पुत्र तर्कालङ्कार भट्टाचार्य श्रीकृष्णाचार्य कृत) श्लोक सं० १६७४। ——रा० ला० २४१५

(ख) ,, ,, ——वं० प० १२६२

९——(क) हरिभक्तिसुधोदया (विश्वामित्रगोत्रोद्भव हरिनारायण कृत) यह व्याख्या शक्तिपक्ष और विष्णुपक्ष में की गयी है। श्लोक सं० १४००, अपूर्ण।

——नो० सं० २।१७,

(ख) श्लोक सं० १७००, अपूर्ण। ——ए० वं० ६६९३

१०——आनन्दलहरीदीपिका (श्रीचन्द्रमौलि-पुत्र रघुनन्दन कविचक्रवर्ती कृत)

(क) श्लोक सं० ८०० अपूर्ण। ——ए० वं० ६६९५

(ख) श्लोक सं० ६००, अपूर्ण। ——नो० सं० ३।२४

११—मनोरमा (श्रीविश्वनाथ-पुत्र सर्वविद्याविशारद रामभद्र कृत) श्लोक सं० ११००, पूर्ण (१०२ श्लोक तक)। —ए० बं० ६६९६

१२—भवानीपक्ष में और विष्णुपक्ष में आनन्दलहरी की व्याख्या (नरसिंह कृत) श्लोक सं० १४६३। —रा० ला० १७३२।

१३—मन्त्रादिपक्षीय (महामहोपाध्याय गोपीरमण तर्कपञ्चानन भट्टाचार्य कृत) श्लोक सं० ६६१। —नो० सं० १।२६

१४—(सामन्तसारनिलय जगन्नाथचक्रवर्ती कृत) श्लोक सं० ११३१। —नो० सं० १।२७

१५—आनन्दलहरीरहस्यप्रकाश (जगदीश पञ्चानन भट्टाचार्य कृत) श्लोक सं० १८४५, पूर्ण। —नो० सं० १।२९

१६—आनन्दलहरीभाष्यालोचन (पदवाक्यप्रमाणज्ञ अतिरात्रयाजी महाभट्टार कविन्द-लोचनाचार्य-पुत्र श्रीराम कविडिण्डिम मुकुटराय महापात्रकृत) श्लोक सं० २४००। —नो० सं० ४।३३

१७—आनन्दलहरीतरि (गौरीकान्त सार्वभौम कृत)। —कैट्. कैट्. १४८

१८—भावार्थदीपिका (ब्रह्मानन्दकृत)। —कैट्. कैट्. १४८

१९—सुधाविद्योतिनी सुधानिष्यन्दिनी (?) प्रवरसेन (पुत्र?) कृत। —कैट्. कैट्. ३।११

२०—सुधाविद्योतिनी विद्वन्मनोरमा (?) सहजानन्दनाथ कृत ?)। —कैट्. कैट्. ३।११

२१—विष्णुपक्षीय टीका —कैट्. कैट्. १४८

२२—पदार्थचन्द्रिका —कैट्. कैट्. ३।११

२३—अप्पयदीक्षित कृत —कैट्. कैट्. १४८

२४—अच्युतानन्द कृत —कैट्. कैट्. १४८

२५—आदिनाथ कृत —कैट्. कैट्. १४८

२६—केशवभट्ट कृत —कैट्. कैट्. १४८

२७—गङ्गाधर कृत —कैट्. कैट्. १४८, ३।११

२८—गोपीरामकृत —कैट्. कैट्. १४८

२९—जगन्नाथ पञ्चानन कृत —कैट्. कैट्. १४८

३०—मल्लभट्ट कृत

३१—माधववैद्य कृत —कैट्. कैट्. १।४८
३२—रामचन्द्रमिश्र कृत —कैट्. कैट्. १।४८, ३।११
३३—रामसूरि कृत
३४—रामानन्द तीर्थ कृत —कैट्. कैट्. १।४८
३५—लक्ष्मीधरदेशिक कृत —कैट्. कैट्. १।४८, २।९, ३।११
३६—विश्वम्भर कृत —कैट्. कैट्. १।४८
३७—श्रीकालभट्ट कृत —कैट्. कैट्. १।४८, ३।११
३८—श्रीरंगदास कृत —कैट्. कैट्. २।९
३९—सदाशिव कृत
४०—अप्पय्यदीक्षित कृत टीका —तै० म०
४१—विष्णुपक्षीय टीका (आनन्दलहरी की)

आनन्दविनोद

लि०—कामराजदीक्षित कृत। —न्यू कैट्. कैट्. २।११५

आनन्दाधिकशास्त्र

उ०—तन्त्रालोक में।

आनन्दार्णवतन्त्र

लि०—श्लोक सं० ४८०। श्रीविद्या की पूजा का प्रतिपादन करने वाला यह ग्रन्थ १० पटलों में पूर्ण है। यह इ० आ० २५४१ आनन्दतन्त्र से सर्वथा भिन्न है। यह सर्वमङ्गला और सर्वज्ञ संवादरूप है। इसके १० पटलों के विषय संक्षेप में ये है—श्री विद्या का स्वरूप, जन्मचक्रक्रम, दीक्षाकरण, त्रिपीठ, चक्र, चक्रों से विविध विद्याएँ, विभूतियाँ आदि, नवयोन्यङ्कित अस्त्र चक्र, दीक्षित द्वारा गुरुपादुका-पूजन, श्रीविद्या का साधन, वाक्सिद्धि आदि निखिल सिद्धियों की प्राप्ति के उपाय, मालामन्त्र आदि। इसका चतुःशतीसंहिता भी नामान्तर है। —ए० बं० ६०१७

आनन्देश्वरतन्त्र

इसकी श्लोक सं० १२००० है।

उ०—तन्त्रालोक की टीका जयरथी में।

आनन्देश्वरपत्रिका

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २।१२०

आनन्देश्वरपद्धति

लि०—— —न्यू कैट्. कैट्. २।१२०

आनन्दोद्दीपिनी

लि०——श्लोक सं० ३००। रचनाकाल शक संवत्सर १७५४ लिखा है। यह फेत्कारिणी तन्त्र में उक्त प्रकृति के स्वरूप का निरूपक स्वरूपाख्यस्तोत्र की ब्रह्मानन्द सरस्वती कृत व्याख्या है। —नो० सं० ३६१

(इसके तथा आनन्द-दीपिनी के कर्ता समान हैं। आरंभिक श्लोक भी प्रायः एक से ही हैं। इसलिए इनके विषय में यह विचारणीय है कि ये दो पृथक् २ ग्रन्थ हैं या एक ही है।)

आन(ण?)बोपधिसूत्रव्याख्या

लि०——श्लोक सं० ४०, अपूर्ण। —अ० ब० १०३४६

आपदुद्धरणपद्धति

लि०——रुद्रयामल से गृहीत। —न्यू कैट्. कैट्. २।१२२

आपदुद्धारकबटुकभैरव

लि०—— —न्यू कैट्. कैट्. २।१२२

आपदुद्धारकल्प

लि०——विश्वसार अथवा विश्वसारोद्धार तन्त्रान्तर्गत।
—न्यू कैट्. कैट्. २।१२२

आपदुद्धार-(ण)कवच

लि०——रुद्रयामल, कालीकल्प या कालीरहस्य से गृहीत।
—न्यू कैट्. कैट्. २।१२२

आपदुद्धार-(ण)कालीकवच

लि०—— —न्यू कैट्. कैट्. २।१२२

आम्नाय

लि०——(१) श्लोक सं० २६०, पूर्ण। इसमें पूर्वाम्नाय, दक्षिणाम्नाय, पश्चिमाम्नाय, उत्तराम्नाय, ऊर्ध्वाम्नाय, दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ, ऊर्ध्वौघ, परौघ, कामराजौघ, लोपामुद्रौघ, कामराजविद्याचरणवासना, लोपामुद्राविद्याचरणवासना, स्रोतश्चरणवासना, शाम्भवचरणविद्या, शाम्भवचरणवासना, परापादुकाक्रम, लोपामुद्रापादुकाक्रम, महा-

पादुका, सत्ताईस रहस्य, पाँच अम्बाएँ, नौ नाथ, छह आधारविद्याएँ, छह अध्वविद्याएँ, छह दर्शन, आठ वाग्देवता, छह योगिनियों की विद्याएँ, नित्याके मन्त्र, पाँच पञ्चिकाएँ, चक्रेश्वरी विद्या, सब देवी-देवताओं के मन्त्र आदि विषय वर्णित हैं।

—ए० बं० ६२८५

(२) (क) श्लोक सं० ५०० । (ख) श्लोक सं० ५००। (ग) श्लोक सं. ५००
(घ) श्लो० सं० १५०, (ङ) श्लोक सं० ३४०। (च) श्लोक सं० ३४०।
—अ० ब० (क) १३४२३ (b), (ख) १३४३८, (ग) १३४५६, (घ) १०३२८ (a), (ङ) ११७४८ (a), (च) ११७४८ (b)

(३) आम्नाय या आम्नायप्रकाश। —न्यू कैट्. कैट्. २।१४७

आम्नाय (२)

लि०—देवस्थली कृत। —न्यू कैट्. कैट्. २।१४७

आम्नायगुरुमण्डलदेवार्चनक्रमवल्ली

—र० मं० ४८९८

लि०—(१) श्लोक सं० १३०।

(२) —न्यू कैट्. कट्. २।१४७

आम्नायदीक्षा

लि०—पारानन्दतन्त्र से गृहीत। —न्यू कैट्. कैट्. २।१४७

आम्नायदीक्षाक्रम

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २।१४७

आम्नायदीक्षाविधि

लि०—पारानन्दतन्त्र से गृहीत। —न्यू कैट्. कैट्. २।१४७

आम्नायदेवता

लि०— —न्यू कैट्. कैट् २।१४७

आम्नायदेवतापूजा

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २।१४७

आम्नायपद्धति (१)

लि० (१)—श्लोक सं० १५००। रुद्रयामल से गृहीत।

—अ० ब० १०६९१

(२)——श्लोक सं० ७८, अपूर्ण । ——सं० वि० २६५७९

(३) चार पटलों (पूर्व, उत्तर, ऊर्ध्व और अनुत्तर इन चार पटलों) में पूर्ण ।

——न्यू कैट्. कैट्. २।१४७

आम्नायपद्धति (२)

लि०——भास्कररायकृत । ——न्यू कैट्. कैट्. २।१४७

आम्नायपारायण

लि०——सौभाग्यतन्त्र से गृहीत । ——न्यू कैट्. कैट्. २।१४७

आम्नायपूजा

लि०——(१) (क) श्लोक सं० १२०; (ख) श्लोक १० ।

——अ० व० (क) ११७८३, (ख) ५९९१

आम्नायप्रकार

लि०——श्लोक सं० १००० । ——अ० व० १०३१३

आम्नायमञ्जरी

लि०——यह संपुटतन्त्रराज पर अभयगुप्त की टीका है ।

उ०——अभयगुप्तकृत वज्रावली मण्डलोपायिका में ।

आम्नायमन्त्र

लि०——(१) श्लोक सं० ६० । ——अ० व० ५६९०

(२) इसकी प्रथम पुष्पिका में लिखा है——'ऊर्ध्वाम्नायः षट्शाम्भवीन्यासः' ।

——न्यू कैट्. कैट्. २।१४८

आम्नायरहस्य

उ०——शारदातिलक-टीका राघवभट्टी तथा सेतुबन्ध (भास्करराय कृत), मदनरत्न-प्रदीप, विश्वनाथकृत कुण्डरत्नाकर, शङ्करभट्टकृत कुण्डोद्योतरत्नाकर, हेमाद्रिदानखण्ड तथा कुण्डकौमुदी में ।

आम्नायलक्षण

लि०——यह याज्ञवल्क्यसूत्र पर टीका है ।

——न्यू कैट्. कैट्. २।१४८

आम्नायविद्या

लि०-- --न्यू कैट्. कैट्. २।१४८

आम्नायव्याख्यान

लि०--यह मूल सूत्रों अर्थात् सुन्दरीतापनीयोक्त गौडपादीय मन्त्ररत्नाकरसूत्रों पर व्याख्यान है। --न्यू कैट्. कैट्. २।१४८

आम्नायषट्क

लि०--(१) श्लोकसं० ३८०, पूर्ण। --सं० वि० २६१९५

(२) --न्यू कैट्. कैट्. २।१४८

आम्नायषडावरणदेवता

लि०--श्लोक सं० १००। --अ० ब० १०८१४

आम्नायसार

लि०-- --न्यू कैट्. कैट्. २।१४८

आम्नायादि

लि०--श्लोक सं० १००, अपूर्ण। --अ० ब० ११७५८

आम्नायावली

लि०-- --न्यू कैट्. कैट्. २।१४८

आम्नायोपनिषद्

लि०-- --न्यू कैट्. कैट्. २।१४८

आराधनक्रम

लि०--पाञ्चरात्रागम पद्मसंहिता से गृहीत।

--न्यू कैट्. कैट्. २।१४८

आराधनरत्नमाला

लि०--शङ्कर पण्डित कृत --न्यू कैट्. कैट्. २।१४८

आराधनविधि (१)

आराधनाविधि (२)

लि०--आकाशभैरव का २५ वाँ अध्याय।

--न्यू कैट्. कैट्. २।१४८,९

आर्द्रपटीविधान

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।१६७

आर्द्रोत्सवाद्युत्सवपटल

लि०——शैव कारणागम से गृहीत। ——न्यू कैट्. कैट्. २।१६७

आलयनित्यार्चनपद्धति व्याख्यासहित

लि०——पञ्चरात्र–पाद्म संहिता के आधार पर रंगस्वामी भट्टाचार्यकृत।
——न्यू कैट्. कैट्. २।१८२

आलयसंप्रोक्षणविधि

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।१८२

आलयाराधनविधि

लि०——पद्मसंहिता से गृहीत। ——न्यू कैट्. कैट्. २।१८२

आलोकमाला

उ०——स्पन्दप्रदीपिका तथा स्पन्दनिर्णय में।

आवरणचक्र

लि०——दे० मातृकावर्णचक्र।

आवरणपीठ

लि०——श्लोक सं० ६०, पूर्ण। ——सं० वि० २५६०७

आवरणपूजा

लि०——(१) क. श्लोक सं० ४००। ——अ० ब० १०५०४
(२) शैवागम। ——न्यू कैट्. कैट्. २।१८५

आवरणपूजाविधान

लि०——आगम। ——न्यू कैट्. कैट्. २।१८५

आवरणविधि

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।१८५

आवेशभैरवमन्त्रप्रयोग

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।१९२

आवेशविजयभैरवमन्त्र

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।१९२

आवेशहनुमत्कल्प

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।१९२

आश्चर्यनामाष्टोत्तरशतदिव्यनामामृतस्तोत्र

लि०——गर्भकौलागम से गृहीत। ——न्यू कैट्. कैट्. २।११

आश्चर्ययोगमाला

लि०——(१) श्लोक सं० ४५०।

नामान्तर——योगरत्नावली या योगरत्नमाला। नागार्जुन कृत। इसपर विवृति श्वेताम्बर जैन मुनि गुणाकर कृत है। इसका रचनाकाल १२४० ई० (१२९६ वि०) है।
——अ० ब० १३०१

(२) यह आश्चर्ययोगमाला अनुभवसिद्ध है। इसके रचयिता नागार्जुन हैं। यह सब लोगों के हृदय को प्रिय लगने वाली तथा सूत्रों से समर्थित है। इसमें वशीकरण, स्तम्भन, शत्रुमारण, स्त्रियों के आकर्षण की विविध विधियाँ सिद्ध करने के अनेक उपाय बतलाये गये हैं। ——बी० कै० १२४४

(३) श्लोक सं० ४००। ——डे० का ३५०

आश्चर्याष्टोत्तरशतनामावली

लि०——गर्भकौलागम उत्तरतंन्त्र से गृहीत।

——न्यू कैट्. कैट्. २।२१२

आसननियम

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२३१

आसननिरूपण

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२३१

आसनाक्षमालाजपसिद्धिनियममासतिथिवारादिफल

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२३१

आसुरीकल्प (१)

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ८०, रचनाकाल १७४९ वि०, पूर्ण। इसमें आसुरी देवी के मन्त्रों से मारण, मोहन, स्तम्भन आदि तान्त्रिक षट्कर्मों की सिद्धि का प्रतिपादन है।

(ख) श्लोक सं० ७५, पूर्ण। इसमें सर्वप्रथम षट्कर्मों के लिए देवी के मन्त्रों की जपविधि कही गयी है। तदनन्तर देवी के मन्त्रों से षट्कर्मों की सिद्धि की विधि कही गयी है। इसका उत्तरार्द्ध ऊपर लिखी प्रति ए० वं० ६०७० से मिलता-जुलता है।

—ए० वं० (क) ६०७०, (ख) ६१५६

(२) (क) श्लोक सं० ३५०। —अ० ब० (क) ७१३९

(ख) श्लोक सं० १५०। ,, (ख) ४८१५

(ग) श्लोक सं० ४२०। ,, (ग) १०२८५ (क)

(घ) श्लोक सं० ५१०। ,, (घ) ११४१२

(३) पूर्ण। —सं० वि० २५१८८

(४) —न्यू कैट्. कैट्. २।२३२

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

आसुरीकल्प (२)

लि०—(१) श्लोक सं० २२०, पूर्ण। यह विभिन्न ग्रन्थों के अंशों का संग्रह है। इसमें तान्त्रिक षट्कर्मों की सिद्धि आसुरी मन्त्रों से प्रतिपादित है। ये विभिन्न ग्रन्थों से संगृहीत चार आसुरी कल्प हैं—आसुरीविधान, राजवशीकरण, वन्ध्या का पुत्रजनन, देहन्यास आदि के साथ आसुरीमन्त्र का प्रतिपादन। इसमें चतुर्थ कल्प शिव-कार्तिकेय संवादरूप है। —ए० बं० ६०७१

(२) श्लोक सं० ९३, सूर्ण। —र० मं० ४८९५

(३) इसमें ४र्थ कल्प शिव-कार्तिकेय संवादरूप है। —वी० कै० १२४५

(४) यह विभिन्न प्रकार का है।

(क) यह अथर्ववेद का ३५ वाँ परिशिष्ट है।

(ख) महापुराण से गृहीत।

(ग) अथर्ववेदका एक परिशिष्ट।

—कैट्. कैट्. (क) १।५७, (ख) २।११, (ग) ३।१३

(५) —न्यू कैट्. कैट्. २।२३२

आसुरीकल्पविधि

लि०--(१) आसुरीकल्पसमुच्चय में प्रतिपादित वशीकरण आदि षट्कर्मों की पद्धति इसमें प्रतिपादित है। --बी० कै० १२४७

(२) --कैट्. कैट्. १।५७

(३) --न्यू कैट्. कैट्. २।२३२

आसुरीकल्पसमुच्चय

लि०--पन्ने ३०० । --बी० कै० १२४६

आसुरीतन्त्र

लि०-- --न्यू कैट्. कैट्. २।२३२

आसुरीतन्त्रसमुच्चय

लि०--श्लोक सं० १०० । यह शिव-कार्तिकेय संवादरूप है । आसुरीकल्प की इच्छा से कार्तिकेयजी ने शिवजी से आसुरीकल्प की विधि, ऋतु, वर्ष, मास, तिथि, वार, नक्षत्र, वेला आदि तथा ध्यान आदि के विषय में प्रश्न किया। उसी का उत्तर इसमें प्रतिपादित है ।

आसुरीतन्त्र के मुख्य विषय मारण, मोहन आदि हैं।

--नो० सं० ४।३६

आह्निक

लि०--(१) श्लो० सं० १६०। प्रातः काल से सायंकाल पर्यन्त के और सायंकाल से प्रातः काल पर्यन्त के धार्मिक कृत्यों का इसमें वर्णन है।

--ट्रि० कै० ११२७ ड.

(२) --न्यू कैट्. कैट्. २।२३६

आह्निकचन्द्रिका

लि०--(१) केशव-पुत्र धनराज विरचित। श्लोक सं० ७००, पूर्ण। तान्त्रिक पूजा में अधिकार प्राप्ति के लिए प्रातःकाल के कृत्य तथा न्यास आदि इसमें वर्णित हैं। शिवपूजा विधि भी विस्तार से वर्णित है । साथ ही साथ दुर्गा, वगलामुखी और महालक्ष्मी की पूजा भी संक्षेपतः वर्णित है। --ए० बं० ६४६५

इन्द्रजाल

लि०--नित्यनाथ विरचित। --कैट्. कैट्. १।५९

इन्द्रजाल या इन्द्रजालतन्त्र

लि०—(१) यह शिवप्रोक्त कहा गया है।

—जं० का० ९८५

(२) श्लोक सं० २४, अपूर्ण (हिन्दी में)

—सं० वि० २४५०९

(३) श्लोक सं० २७०, अपूर्ण (इसका नाम 'इन्द्रजालतन्त्र' कहा गया है)।

—अ० ब० १४४४

उ०—प्राणतोषिणी तथा कक्षपुटतन्त्र में।

इन्द्रजाल उड्डीश

लि०—रावणकृत। —न्यू कैट्. कैट्. २।२५१

इन्द्रजालकक्षपुट

लि०—कालीप्रसन्न विद्यारत्न द्वारा संगृहीत।

—न्यू कैट्. कैट्. २।२५१

इन्द्रजालकौतुक (१)

लि०—महादेवोक्त।

इन्द्रजालकौतुक (२)

लि०—पार्वती-पुत्र नित्यनाथ सिद्ध या सिद्धनाथ कृत।

—न्यू कैट्. कैट्. २।२५१

इन्द्रजालपद्धति

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २।२५१

इन्द्रजालप्रकरण

लि०—सिद्धशाबरतन्त्र से गृहीत। —न्यू कैट्. कैट्. २।२५१

इन्द्रजालविद्या

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २।२५१

इन्द्रजालमहेन्द्रजाल

लि०—सिद्धनागार्जुनकृत कक्षपुट से गृहीत।

—न्यू कैट्. कैट्. २।२५१

इन्द्रजालविधान

लि०——नागोजी कृत। ——न्यू कैट्. कैट्. २।२५१

इन्द्रजालादिसंग्रह

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२५१

इन्द्रयामलतन्त्र

उ०——ताराभक्तिसुधार्णव में।

इन्द्राक्षीपञ्चाङ्ग

लि०——(१) (क) पन्ना १ से १२ तक, (ख) पन्ना १ से ५ तक, तथा (ग) पन्ना १–२ इस प्रकार ३ खण्डों में विभक्त है। पूर्ण।

प्रथम खण्ड में——३ पन्नों में रुद्रयामलान्तर्गत शिव-पार्वती संवादरूप इन्द्राक्षीपटल है। ४र्थ से १० तक रुद्रयामलान्तर्गत उमा-महेश्वर संवादरूप इन्द्राक्षीपद्धति है एवं १० से १२ तक रुद्रयामलान्तर्गत ईश्वर-पार्वती संवादरूप इन्द्राक्षीकवच है। २ य खण्ड में——रुद्रयामलान्तर्गत उमा-महेश्वर संवादरूप इद्राक्षीसहस्रनामस्तोत्र है तथा ३ य खण्ड में रुद्रयामलान्तर्गत उमा-महेश्वर संवादरूप इन्द्राक्षीस्तोत्र है। अन्त में देवी इन्द्राक्षी का ध्यान दिया गया है। ——ए० बं० ६४३२

(२) (क) श्लोक सं० ४२८, पूर्ण।
(ख) श्लोक सं० ४५०, पूर्ण। ——र० मं० (क) ४८१६, (ख) ४९०५

(३) श्लोक सं० ४५५, अपूर्ण। इसमें इन्द्राक्षीनित्यपूजापद्धति, जगच्चिन्तामणिकवच तथा अपूर्ण स्त्रोत्र ये तीन ही हैं।

(४) उमा-महेश्वर संवादरूप रुद्रयामल से गृहीत। ——सं० वि० २५०६३
——न्यू कैट्. कैट्. २।२५६

इन्द्राक्षीपद्धति

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२५६

इन्द्राक्षीप्रत्यङ्गिरायन्त्र

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२५६

इन्द्राक्षीयन्त्र

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२५६

इन्द्राणीतन्त्र

उ०— आक्सफोर्ड १०९ (क) के अनुसार इसका उल्लेख है।

—कैट्. कैट्. १।५९

इष्टार्थद्योतिनी (१)

लि०—श्लोक सं० ५२३०, ३२ पटलों में पूर्ण। विविध ओषधियाँ तथा वशीकरण, उच्चाटन, विद्वेषण, मोहन, मारण आदि षट्कर्म इसमें प्रतिपादित हैं।

—ट्रि० कै० ९२१

इष्टार्थद्योतिनी (२)

लि०—प्रयोगसार की टीका।　　　　—न्यू कैट्. कैट्. २।२६१

इष्टोपदेशतन्त्र

उ०—स्पन्ददीपिका में।

ईशान (१)

लि०—शैवागम। शर्वप्रोक्तागम का उपागम। कामिक वर्ग के अन्तर्गत।

—न्यू कैट्. कैट्. २।२६४

ईशान (२)

लि०—शैवागम। अंशुमदागम का उपागम। कामिक वर्गान्तर्गत।

—न्यू कैट्. कैट्. २।२६४

ईशानशिवगुरुदेवपद्धति

लि०—(१) ईशानशिवगुरुदेवमिश्र कृत। श्लोक सं० ८०००। केवल मन्त्रपाद पर्यन्त।

—अ० ब० १३७४५

(२) नामान्तर—तन्त्रपद्धति। इसका अन्तिम भाग सिद्धान्तसार (ईशानशिव कृत) कहा गया है।

—न्यू कैट्. कैट्. २।२६५

ईशानसंहिता (१)

लि०—(१) श्लोक सं० २१५; पूर्ण। यह कुलार्णव तन्त्रान्तर्गत शिव-पार्वती संवाद-रूप फिर नारद-गोतम संवादरूप वैष्णवतन्त्र है। शिवजी के छठे मुखसे, जो गुप्त और ईशान

कहलाता है, निकलने के कारण यह ईशान कहलाता है। तन्त्र के छह आम्नाय, जो विविध देवी-देवताओं की पूजाविधि का प्रतिपादन करते हैं, शिवजीके छह मुखों से निकले हैं। जैसे इसी तन्त्र के प्रारम्भ में कहा है—भुवनेश्वरी, अन्नपूर्णा, महालक्ष्मी और सरस्वती ये देवियाँ चतुर्वर्ग देने वाली हैं। इनके मन्त्र बांछित फल देने वाले हैं। इनके सब मन्त्र तथा साधन पूर्व मुख से कहे गये हैं। दक्षिणामूर्ति, गोपाल और विष्णु ये भी चतुर्वर्ग देने वाले हैं इनके मन्त्र साधनों सहित मैंने दक्षिण मुख से कहे हैं। कृष्ण, नारायण विष्णु, रामचन्द्र, नरसिंह, वराह, शङ्कर आदि भी चतुर्वर्गप्रद हैं। उनके मन्त्र मैंने पश्चिम मुख से कहे हैं। काली, तारा, महिषमर्दिनी, त्वरिता, वगला, जयदुर्गा तथा मातङ्गिनी आदि प्रत्येक युग में पूर्णकला हैं। कलियुग में तो उनकी पूर्ण कला विशेषण रूप से व्यक्त है। उनके मन्त्र और साधन उत्तर मुख से मैंने कहे हैं। त्रिपुरेश्वरी, चण्डा, त्रिपुरभैरवी, त्रिपुरा, नित्या तथा अन्यान्य देवता चतुर्वर्गप्रद हैं। साधनों सहित उनके मन्त्र मैंने मनुष्यों के भोग और मोक्ष के लिए ऊर्ध्व मुख से कहे हैं। सूर्य, चन्द्रमा, हनुमान्, गौराङ्गी, अपराजिता, प्रत्यंगिरा तथा अन्यान्य देवता चतुर्वगफलप्रद है। इनके मंत्र और साधन गुप्त मुख से मैंने कहे हैं।

—ए० बं० ५९१३

(२) अपूर्ण।

—८०४

(३) श्लोक सं० १८१। यह नारदगौतम संवादरूप गुप्ताम्नाय कुलार्णव का एक अंश है। इसमें वैष्णवों के आचार और धर्म निरूपित हैं।

—रा० ला० ४२४

उ०—आगमतत्त्वविलास तथा आगमकल्पलता में।

ईशानसंहिता (२)

लि०—यदुनाथकृत आगमकल्पलता का आधारभूत ग्रन्थ।

—न्यू कैट्. कैट्. २।२६६

ईशानसंहिता (३)

लि०—ईश्वर-अगस्त्य संवादरूप। ज्ञानरत्नाकर तथा अमरीकल्प आदि इसी से गृहीत हैं।

—न्यू कैट्. कैट्. २।२६६

ईशान संहिता (४)

लि०—शैव।

उ०—गीताव्याख्या परमशिवेन्द्र सरस्वतीकृत तथा लिङ्गार्चनचन्द्रिका में।

ईश्वरकल्प

उ०--पुरश्चर्यार्णव में।

ईश्वरतन्त्र

लि०-- --न्यू कट्. कैट्. २।२७४

ईश्वरप्रत्यभिज्ञा

लि०--उत्पलाचार्य कृत, श्लोक सं० २००। यह काश्मीर शैव सम्प्रदाय का ग्रन्थ है।
--अ० ब० १८०६

ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी

लि०--श्लोक सं० ३५००। इसको चतुःसाहस्री भी कहते हैं।
--अ० ब० १८२८

ईश्वरमततन्त्र

लि०--वगलामुखीपञ्चाङ्ग मात्र। --न्यू कैट्. कैट्. २।२७४

ईश्वरविमर्शिनी

उ०--महार्थमञ्जरी-परिमल में।

ईश्वरप्रत्यभिज्ञाव्याख्या

लि०--श्लोक सं० ५५०। --अ० ब० १८०७

ईश्वरसंहिता (नृसिंहकल्प)

लि०--ईश्वर-पार्वती संवादरूप। पञ्चरात्रागम।
--न्यू कैट्. कैट्. २।२७९

ईश्वरसिद्धि

उ०--महार्थमञ्जरी-परिमल में।

ईश्वरीकल्प

लि०--श्लोक सं० ७५। --सं० वि० २४३७५

ईश्वरीतन्त्र

उ०--सुन्दरदेव द्वारा उल्लिखित। --कैट्. कैट्. १।६१

ईषतन्त्र

नामान्तर--(१) कातन्त्र। जयदेव विरचित।

उ०--Oxford १६९ (क) के अनुसार त्रिलोचनदास द्वारा इसका उल्लेख किया गया है।
--कैट्. कैट्. १।६१

(२) --न्यू कैट्. कैट्. २।२८०

उग्रचण्डातन्त्र

लि०--कालिकापुराण में उक्त। --न्यू कैट्. कैट्. २।२८३

उग्रचण्डेश्वरतन्त्र

लि०--वेतालकवचमात्र। --न्यू कैट्. कैट्. २।२८३

उग्रतारानीलसरस्वतीविधि

लि०-- --न्यू कैट्. कैट्. २।२८३

उग्रतारापञ्चाङ्ग

लि०--श्लोक सं० ४२०, पूर्ण। देवी-भैरव संवादरूप इस ग्रन्थ में उग्रतारा की पूजा-विधि तथा उक्त देवी के कई स्तव प्रतिपादित हैं। इनमें ३ रुद्रयामल से गृहीत कहे गये हैं तथा २ कुलसर्वस्व से। नित्यपूजापद्धति गद्य में है एवं साधारणपूजापद्धतिसी है। देवी पार्वतीजी के यह प्रश्न करने पर कि हे देव, आपने पहले जगच्चैतन्यरूपिणी सृष्टि, स्थिति और लय करने वाली उग्रतारा नाम से जो देवी कही थी, उसका पञ्चाङ्ग कहने की कृपा कीजिए। भगवान् भैरव ने उग्रतारा देवी का पञ्चाङ्ग कहा--

(१) रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत	(१)	उग्रतारापटल।
,,	(२)	उग्रतारानित्यपूजापद्धति।
,,	(३)	उग्रताराकवच।
कुलसर्वस्वान्तर्गत	(४)	उग्रतारासहस्रनामस्तव।
,,	(५)	उग्रतारास्तव।

--ए० बं० ६३३२

उग्रतारापद्धति

लि०--(१) श्लोक सं० ६००। इसके अन्त में पीठपूजाक्रम भी है।

--अ० ब० ११९७१

(२) पत्रे ३८। नारायणभट्ट विरचित। यह दुर्गा देवी की स्वरूपान्तर्भूता उग्रतारा की पूजा पर संग्रह ग्रन्थ है। —वी० कै० १३६३

पत्रे १४ (८×३६) श्लोक सं० लगभग २५२, पूर्ण।

—र० मं० ४८६०।

यह ग्रन्थ पूर्व के ग्रन्थों से भिन्न प्रतीत होता है। नाम से भी और आकार से भी।

उग्रतारापूजापद्धति

—न्यू कैट्. कैट्. २।२८३

उग्रतारायन्त्र

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २।२८३

उग्रतारासहस्रनाम

लि०—अक्षोभ्यसंहिता से गृहीत। —न्यू कैट्. कैट्. २।२८३

उग्रतारासहस्रनामस्तोत्र

लि०—पूर्ण। यह तारातन्त्रान्तर्गत कहा गया है। किन्तु वीरेन्द्र रिसर्च सोसाइटी से प्रकाशित संस्करण (तारातन्त्र) में यह स्तोत्र उपलब्ध नहीं होता है।

—वं० प० १२४६

उग्रतारास्तोत्र

लि०—(१) योगिनीतन्त्र से गृहीत।
(२) रुद्रयामल से गृहीत।
(३) गौतम ऋषि कृत।
(४) स्वायंभुवपुराण से गृहीत।

—न्यू कैट्. कैट्. २।२८३

उग्ररथशान्तिकल्पप्रयोग

लि०—(१) श्लोक सं० ५००। —अ० ब० ६५७१

(२) श्लोक सं० ६५०। यह शैवागमान्तर्गत शिव-षण्मुख संवाद रूप है। षण्मुख (कार्तिकेय) जी ने शिवजी से निवेदन किया—भगवन्, सब प्राणियों का विनाश करने वाला, पुत्र पौत्रों का विनाशक, धनधान्य का नाश करने वाला तथा राजाओं को

राज्यच्युत कराने वाला यह उग्ररथ कौन है और इससे जीवों को त्राण कैसे मिल सकता है ? इसी प्रश्न का शिवजी ने इसमें उत्तर दिया है। इसमें प्रतिपादित विषय है—जब पुरुष ६० वर्ष का हो जाय तब उसे कल्याण प्राप्ति तथा धनधान्य और पुत्र पौत्रादि की रक्षा के लिए शैवागमोक्त विधि से उग्ररथ शान्ति करनी चाहिए तथा उसकी विधि और प्रयोग आदि का कथन।

—रा० ला० ३२३४

उच्चाटनप्रयोगक्रम

लि०—

—न्यू कैट्. कैट्. २१२८४

उच्चाटनमन्त्र

लि०—

—न्यू कैट्. कैट्. २१२८४

उच्चाटनादिविधि

लि०—

—न्यू कैट्. कैट्. २१२८४

उच्छिक

नित्यानन्दनाथ द्वारा रसरत्नाकर में उक्त।

—न्यू कैट्. कैट्. २१२८५

उच्छिष्टगणपतिकल्प

लि०—(१) श्लो० सं० २००।

—अ० ब० ५६६०

(२) रुद्रयामल आदि से गृहीत।

—न्यू कैट्. कैट्. २१२८५

उच्छिष्टगणपति (गणेश) कवच

लि०—श्लोक सं० ६०। विश्वसारतन्त्र से गृहीत।

—न्यू कैट्. कैट्. २१२८५

उच्छिष्टगणपतिचतुरङ्ग

लि०—रुद्रयामलोक्त। इसके प्रारंभ में गणपति-मन्त्र हैं।

—रा० पु० ५७८३

उच्छिष्टगणपतिजपविधि तथा कवच

लि०—(१) दो प्रतियाँ, श्लोक सं० ४८, पूर्ण। यह दोनों रुद्रयामलतन्त्रागृहीत हैं।

—र० मं० ११५२

(२) रुद्रयामल से गृहीत। ——न्यू कैट्. कैट्. २।२८५

उच्छिष्टगणपति-(गणेश) पञ्चाङ्ग

लि०——(१) रुद्रयामल से गृहीत।

(२) शिवार्चनचन्द्रिका से गृहीत।

——न्यू कैट्. कैट्. २।२८५

उच्छिष्टगणपति-(गणेश) पटल

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२८५

उच्छिष्टगणपतिपूजा

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२८५

उच्छिष्टगणपतिमन्त्र

लि०——(१) श्लोक सं० ९०। ——अ० ब० ५७०१

(२) श्लोक सं० ४०, अभिषेकमन्त्रसहित, पूर्ण।

——सं० वि० २३८७८

उच्छिष्टगणपति-(गणेश) मन्त्रकवच

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२८५

उच्छिष्टगणपतियन्त्रविधानविधि

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२८५

उच्छिष्टगणपतिविधान

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२८५

उच्छिष्टगणपतीय

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२८५

उच्छिष्टगणेशपञ्चाङ्ग

लि०——(१) श्लोक सं० २९०, पूर्ण। उमा-महेश्वर संवादरूप।

रुद्रयामलान्तर्गत (१) उच्छिष्टगणेशपटल।

" (२) उच्छिष्टगणेशपूजन।

" (३) गणेशकवच।

रुद्रयामलान्तर्गत (४) उच्छिष्टगणेशसहस्रनाम।
,, (५) उच्छिष्टगणेशस्तोत्र।

ऊपर कहे गये ५ विषय इसमें वर्णित हैं। ——ए० बं० ६५०९

(२) उच्छिष्टगणेशपटल। श्लोक सं० लगभग ७२, अपूर्ण।
——सं० वि० २५६७१

(३) उच्छिष्टविनायकपद्धति। श्लोक सं० लगभग ३८०, पूर्ण।
——सं० वि० २५८०१

(४) शिवार्चनचन्द्रिका से गृहीत ——कैट्. कैट्. ३।१४

उच्छिष्टगणेशप्रकरण

उ०——गणेशविमर्शिनी में।

——न्यू कैट्. कैट्. २।२८५

उच्छिष्टगणेशसहस्रनामस्तव (१)

लि०——हरमेखलातन्त्र से गृहीत। श्लोक सं० २०३। नाम सं० १०३४।
——न्यू कैट्. कैट्. २।२८५

उच्छिष्टगणेशसहस्रनामस्तव (२)

लि०——रुद्रयामल से गृहीत। ——न्यू कैट्. कैट्. २।२८५

उच्छिष्टचण्डालीपटल

वि०——फेत्कारिणीतन्त्र से गृहीत। ——न्यू कैट्. कैट्. २।२८६

उच्छिष्टचण्डालीपद्धति

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२८६

उच्छिष्टचण्डालीप्रकरण

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२८६

उच्छिष्टचण्डालीप्रयोग

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२८६

उच्छिष्टचण्डालीमन्त्र

लि०—— ——न्यू कैट्. कैट्. २।२८६

उच्छिष्टचण्डालीमन्त्रादि

लि०––प्रयोगसहित। सुरेन्द्रसंहिता के पञ्चागमशास्त्रसे गृहीत।

––न्यू कैट्. कैट्. २।२८६

उच्छिष्टचाण्डालिनीपद्धति

लि०––श्लोक सं० ३३, पूर्ण। यह मन्त्रदेवप्रकाशिका के अन्तर्गत है।

––सं० वि० २५७३३

उच्छिष्टचाण्डाली

लि०––नामान्तर चण्डाली या चाण्डालिनी।

––न्यू कैट्. कैट्. २।२८६

उच्छिष्टचाण्डालीकल्प

लि०––(१) श्लोक सं० १०६, पूर्ण। इसमें उच्छिष्टचाण्डाली की पूजा का विवरण है। विशेष रूप से मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि षट्कर्मों की पूर्वपीठिका के रूप में जिनका रुद्रयामल तन्त्र से लम्बा अंश उद्धृत है। इसमें दक्षिणकाली की पूजा-विधि भी वर्णित है। यह अंश भी रुद्रयामल से ही गृहीत है। पुष्पिका में इस ग्रन्थ का नाम सुमुखीकल्प भी दिया गया है। ––ए० बं० ६३८९

(२) ईश्वर के प्रति उक्त रुद्रयामल से गृहीत। ––न्यू कैट्. कैट्. २।२८६

उच्छिष्टतन्त्र

प्राप्त ग्रन्थ सूची से

उ०––कक्षपुटतन्त्र तथा दत्तात्रेयतंत्र में।

उच्छिष्टभैरवादिबलिप्रकार

लि०–– ––न्यू कैट्. कैट्. २।२८६

उच्छुष्मभैरव

नामान्तर––उच्छुष्मशास्त्र।

उ०––शिवसूत्रविमर्शिनी तथा स्वच्छन्दतन्त्र (भाग ३ य) में। अभिनवगुप्ताचार्य के तन्त्रसार में उच्छुष्मशास्त्र के नाम से इसी का उल्लेख है।

उच्छुष्मशास्त्र

उ०—परात्रिंशिकाव्याख्या (अभिनवगुप्तकृत) में।

उज्ज्वलतन्त्र

उ०—आगमतत्त्वविलास में।

उड्डयनतन्त्र

लि०—डामरखण्डान्तर्गत गौरीकल्प से गृहीत भगवद्वस्त्र-(?)पटल मात्र।

—न्यू कैट्. कैट्. २।२९०

उड्डामरतन्त्र

(१) लि०—श्लोक सं० ५५०, पूर्ण। यह १५ पटलों में पूर्ण है। इसके विषय—३ य पटल में अञ्जनाधिकार, ७ म में पुरुषवश्याधिकार, १३ वें में भूतभैरव, १४ और १५ वें में मन्त्रकोष वर्णित है। —ए० बं० ५८४८

(२) —कैट् कैट्. १।६२

मु०—रसिकमोहन चटर्जी के द्वारा सम्पादित विविधतन्त्रसंग्रह में यह रुद्रयामलोद्धृत कहा गया है।

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

उड्डामरेश्वरतन्त्र

लि०—(१) शिवप्रोक्त, श्लोक सं० ७६०। यह १६ पटलों में पूर्ण है। यह महातन्त्र रुद्रयामल से उद्धृत महादेव-पार्वती संवादरूप है।

गौरी देवी ने सिर से प्रणाम कर शङ्करजी से पूछा—हे देव, मैं धर्मार्थसाधन वशीकरण, उच्चाटन, मोहन, स्तंभन तथा शान्तिक, पौष्टिक आदि सुनना चाहती हूँ। आप सुनाने का अनुग्रह कीजिए। इसपर भगवान् ने भूतज्वर लगा देना, उच्चाटन, विद्वेषण, मारण आदि की सिद्धि करा देना, फोड़े, फुंसियाँ पैदा कर देना, जल रोक देना, खेत पर खड़ी फसल उजाड़ देना, पागल और अन्धा बना देना, विष उतार देना, अञ्जनसिद्धि कर देना जिससे गुप्त वस्तुएँ भी दीख पड़ें, मन उच्चाटन कर देना, भूत, ब्रह्मराक्षस आदि को पीछे लगा देना, पञ्चभूतों के अक्षरों से शुभाशुभ जानना, जड़ी बूटी उखाड़ने की विधि, नारी के गर्भ-धारण का उपाय, नाना प्रकार की ओषधियों का प्रयोग, वश में करनेवाले तिलक, अञ्जन आदि का निर्माण, संमोहन चूर्ण का निर्माण, डाकिनीदमन, ८ और ३६ यक्षिणियों का साधन,

चेटक-साधन, नाना सिद्धियों के उत्पादक मन्त्र, विविध प्रकार के लेप, मन्त्रों के अभिषेक का फल और विधि, महावृष्टि, रोगशान्ति, वशीकरण, आकर्षण आदि सिद्धियों का साधन, विद्याधर बन जाना, खडाऊँ और वेताल की सिद्धि कर लेना, अदृश्य हो जाना आदि विविध विषयों का प्रतिपादन किया गया है। —ज० का० ९८६

(२) श्लोक सं० १५२, अपूर्ण। —सं० वि० २४५१४

उड्डामर-(ईश्वर) तन्त्र

लि०—कार्तवीर्यार्जुनकल्प तथा कार्तवीर्यार्जुनकवच मात्र।

—न्यू कैट्. कैट्. २।२९१

उड्डामरतन्त्र

लि०—कार्तवीर्यपद्धति, कार्तवीर्यमन्त्र, कार्तवीर्यार्जुनमन्त्रविधान, कार्तवीर्यार्जुन-सहस्रनाम, कार्तवीर्यस्तवराज, चण्डिका-पूजाविधि, दत्तात्रेयकल्प, दत्तात्रेयकवच, दत्तात्रेय-विषयक मन्त्रादि, पञ्जर-विधान, परादेवीसूक्त, प्रत्यङ्गिराकल्प, भैरवसहस्रनामस्तोत्र आदि विविध विषय इसमें वर्णित हैं। —न्यू कैट्. कैट्. २।२९१

उड्डामरमहातन्त्रशास्त्रसारोद्धार

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २।२९०

उड्डीयानमहेश्वरतन्त्र

लि०—आम्नायस्तवमात्र। —न्यू कैट्. कैट्. २।२९१

उड्डीश-उत्तरखण्ड

लि०—(क) श्लोक सं० ३५०। शिवकालिका संवादरूप यह ७ पटलों में पूर्ण है। यद्यपि यह उड्डीश है पर इसका वशीकरण आदि षट्कर्मों से कोई सम्बन्ध नहीं है। उनके विपरीत यह ऊँचे आध्यात्मिक विचारों का प्रतिपादक है। प्रस्तुत प्रति तथा आगे उक्त (ख) और (ग) चिह्नित दो प्रतियों में ६ पटल हैं। कुछ पद्य और हैं। वे सातवें पटल का कुछ अंश हो सकते हैं।

शिवजी ने महेशानी से निवेदन किया कि हे देवि, आप अपना सूत्रभूत उड्डीशोत्तरखण्ड, जो भ्रान्तिनाशक है, मुझ से कहिए। उड्डीश तो आपने पहले बहुत बार मुझसे कहा, किन्तु उत्तरखण्ड का माहात्म्य नहीं कहा। कौल ज्ञान को ही सर्वयोगमय कहा गया है। उसके बिना अतिभयावह अन्धकार छिन्न नहीं हो सकता। हे देवि, मेरा उससे बढ़कर दूसरा

प्रिय नहीं, इसलिए मैं बार-बार आपसे प्रार्थना करता हूँ। इस पर देवी ने कौलाचार, साधनमूल शक्ति, शक्तिपूजा, शक्तिमन्त्र, साधनसूत्र आदि विषय कहे।

(ख) श्लोक सं० ३६०, पूर्ण।

(ग) श्लोक सं० ३५०, पूर्ण।

—ए० बं० (क) ५८३३, (ख) ५८३४, (ग) ५८३५

उ०—पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमतत्त्वविलास तथा महामोक्षतन्त्र में।

उड्डीशकल्प

लि०—पन्ने ९४। —रा० पु० ४१५२

उड्डीश या उड्डीशतन्त्र

लि०—(१) गौरीशङ्कर संवादरूप। गौरीजी के यह निवेदन करने पर कि भगवन्, मुझे वशीकरण, उच्चाटन, मोहन, स्तंभन, शान्तिक, पौष्टिक, नेत्रहानि, मनोनाश, श्रुतहानि, ज्ञानहानि, इन्द्रियग्लानि, शोषण आदि के साधन तन्त्र, मन्त्र आदि सुनने की इच्छा है। भगवान् शङ्कर ने उनका प्रतिपादन किया। यह आभिचारिक श्रेणि का कौल तन्त्रग्रन्थ है। —क० का० ६

(२) (क) पूर्ण, एकादश पटल तक।

(ख) अपूर्ण, अष्टम पटल तक।

(ग) अपूर्ण, षष्ठ पटल तक।

—वं० प० (क) १४०६, (ख) १२७६, (ग) ४८६।

वंगीय साहित्य परिषत् की इस तन्त्र की प्रतियाँ इस तन्त्र के मुद्रित संस्करण से मिलती नहीं। यद्यपि सं० १४०६ संग्रह-ग्रन्थ सा प्रतीत होता है पर मार्जिन के हेडिङ्ग तथा अन्त पुष्पिका में यह उड्डीश कहा गया है।

(३) यह कौल तन्त्र है। इसमें वशीकरण, संमोहन, उच्चाटन, स्तंभन, विद्वेषण, शान्तिक, पौष्टिक, चक्षुहानि, मनोहानि, कर्णहानि, ज्ञानहानि, क्रियाहानि, कीलन, कार्य-स्तंभ, जलस्तंभ, अन्धीकरण, शरीरसंकोचन, गूँगा बना देना, बहिरा बना देना, भूतज्वर कर देना, शस्त्रको शान्त कर देना, सब आपत्तियों को हटा देना, दही और शहद का नाश कर देना, पागल बना देना, हाथी और घोड़ों को बिगाड़ देना, सापों को आकृष्ट कर देना, मनुष्यों को आकृष्ट कर देना, खड़ी फसल नष्ट कर देना, वृक्ष आदि के पत्ते उजाड़ देना, गर्भ धारण करा देना आदि के मन्त्र, उनकी जपसंख्या आदि, तदनन्तर किस तिथि में किस

कर्म का अनुष्ठान करना, किस काष्ठ की कलम से किस मन्त्र को लिखना एवं मन्त्रसिद्धि का प्रकार आदि विषय प्रतिपादित हैं।

—बी० कै० १३६२

(४) श्लोक सं० ४९६, पूर्ण। यह गौरीशङ्कर संवादरूप ग्रन्थ ११ पटलों में पूर्ण है। इसमें प्रतिपादित मन्त्रों का एकान्त में जप करना चाहिए एवं इसमें उक्त देवी, देवताओं और मन्त्रों का श्रद्धायुक्त मन से ध्यान करना चाहिए। बी० कै० १३६२ में प्रतिपादित वशीकरण, मोहन, उच्चाटन आदि सभी विषय इसमें भी प्रतिपादित हैं। यह कौल तन्त्र विविध प्रकार के टोने टुटके, झाड़ फूंक, ओझाई आदि का प्रतिपादन करता है।

—रा० ला० ९८९

(५) श्लोक सं० ४७५, पूर्ण। यद्यपि इसका प्रारंभिक अंश उपर्युक्त रा० ला० ९८९ के प्रारंभिक अंश से मिलता-जुलता है, किन्तु प्रारंभिक वाक्य द्वारा यह मन्त्रचिन्तामणि कहा गया है—'अथ मन्त्रचिन्तामणिर्लिख्यते।' इस ग्रन्थ की प्रस्तुत प्रति तथा अन्य प्रतियों के विभिन्न पटलों की पुष्पिकाएँ इसका विभिन्न नामों से निर्देश करती हैं. जसे उड्डामरेश्वरतन्त्र, उड्डामरमहातन्त्र, उड्डीश, वीरभद्रतन्त्र, वीरभद्रोड्डीश, रावणोड्डीश आदि। विषय—अञ्जनाधिकार, भूतवाद, मन्त्रपटल, वशीकरण, नारीवराङ्ग-संकोचन, लिङ्गपाटव-पटल, स्वरपटल, चाण्डालीपटल आदि विषय इसमें वर्णित है।

—ए० बं० ५८३०

(६) श्लोक सं० २६६, अन्त में खण्डित, अपूर्ण। इस प्रति में पुष्पिका नहीं है। प्रथम पृष्ठ पर इसका नाम वीरभद्रतन्त्र दूसरी कलम से लिखा है।

—ए० बं० ५८३१

(७) श्लोक सं० ३२०, पूर्ण, तथा तान्त्रिक चक्रों और यन्त्रों से विभूषित। सभी पटलों की जो इसमें ५ हैं, पुष्पिकाओं में यह ग्रन्थ उड्डीश वीरभद्र कहा गया है। इसके कुछ श्लोक भैरवीतन्त्र से गृहीत कहे गये हैं। —ए० बं० ५८३२

(८) ईश्वरप्रोक्त —ज० का० ९८८

(९) (क) श्लोक स० १५४, पूर्ण।
(ख) श्लोक सं० २२५, पूर्ण। वीरभद्र महातन्त्रान्तर्गत।
(ग) श्लोक सं० ६८२, पूर्ण। मयूरशिखाकल्पान्त।
(घ) श्लोक सं० ५६८, पूर्ण। वीरभद्रतन्त्र में उक्त।

उक्त--(इनके अतिरिक्त सं० वि० में अपूर्ण प्रतियाँ भी हैं, जिनकी संख्या है--२४२०८, २४५१३, २४५७०, २४६७७ तथा २४७०६।)

--सं० वि० (क) २६७१४, (ख) २४९२६, (ग) २५५९१, (घ) २५६७२

(१०) नामान्तर--उड्डीश महातन्त्र या उड्डीशशास्त्र या रावणोड्डीश अथवा रावणोड्डीश डामर-तन्त्रसार या उड्डामरतन्त्र या वीरभद्रतन्त्र अथवा उड्डीशवीरतन्त्र।

--न्यू कैट्. कैट्. २।२९२

उ०--कक्षपुट, सिद्धचामुण्डी, ताराभक्ति सुधार्णव तथा सर्वोल्लास में।

उड्डीशतन्त्रव्याख्या

लि०--श्लोक सं० ६०४, पूर्ण। --सं० वि० २४६४३

उड्डीशवीरभद्र

लि०--श्लोक सं० ३२०, पूर्ण। यह ५ पटलों में पूर्ण है। प्रत्येक पटल की पुष्पिका में यह उड्डीशवीरभद्र कहा गया है। यद्यपि यह उड्डीशतन्त्र के शीर्षक से वर्णित है पर इसे उड्डीशवीरभद्र ही समझना चाहिए। इसमें उपर्युक्त पुष्पिकाएँ प्रमाण हैं।

--ए० बं० ५८३२

उड्डीशसार

लि०--(१) श्लोक सं० ५५०, अन्त के ६ पन्ने खण्डित, अपूर्ण।

--अ० ब० ११७२७

(२) श्लोक सं० ३३५, अपूर्ण। --सं. वि. २४८९४

उत्तमतन्त्र

उ०--आगमतत्त्वविलास में। वामकेश्वरतन्त्र पृ० ८७ में भी इसका उल्लेख किया गया है।

उत्तरकल्प

उ०--शाक्तानन्दतरङ्गिणी में।

उत्तरकामाख्यातन्त्र

लि०--(१) श्लोक सं० ३१५। पार्वती-ईश्वर संवादरूप यह तंत्र पूर्वखण्ड और उत्तरखण्ड के नाम से दो खण्डों में विभक्त है। उत्तरखण्ड में संभवतः १३ पटल हैं। प्रस्तुत प्रति में उत्तरखण्ड के केवल अन्तिम ४ पटल हैं--१० म, ११ श, १२ श और १३

श। उनके विषय हैं—चार युगों के धर्म-कथन, भिन्न-भिन्न महीनों में भिन्न-भिन्न देवताओं की पूजा का फल कथन, अन्तर्याग का निरूपण, भगवान् विष्णु के चक्र से कटकर गिरे हुए सती देवी के अङ्ग प्रत्यङ्गों से उत्पन्न पीठों में शक्ति और भैरवों के नामों का निर्देश।

—रा० ला० ५७५

(२) —न्यू कैट्. कैट्. २।३००

उ०—कौलिकार्चनदीपिका में।

उत्तरकामिक

लि०—शिवभक्तप्रतिष्ठाविधि मात्र। शैवागम। —न्यू कैट्. कैट्. २।३००

उत्तरकामिकमहातन्त्र

लि०—

—न्यू कैट्. कैट्. २।३००

उत्तरकामिकातन्त्र

लि०—

—न्यू कैट्. कैट्. २।३००

उत्तरकारण

लि०—शैवागम।

—न्यू कैट्. कैट्. २।२००

उत्तरगन्धर्वतन्त्रताराकल्प

त्रैलोक्यविजययन्त्र या त्रैलोक्यविजयकवच मात्र।

लि०—

—न्यू कैट्. कैट्. २।३००

उत्तरचतुःशतीशास्त्र

उ०—ललितासहस्रनामटीका सौभाग्यभास्कर में।

उत्तरतन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० ५००। यह देवी-ईश्वर संवादरूप तन्त्र १६ पटलों में पूर्ण है। वक्षःस्थल पर बैठी हुई देवी ने शङ्करजी से पूछा—हे देव, साधकों की प्रयोगविधि कहने की कृपा कीजिए। मैंने यामल आदि सब तन्त्र सुने पर मुझे उत्तम प्रयोगविधि कहीं पर सुनने को नहीं मिली। इसपर शङ्करजी ने १६ पटलों द्वारा निम्न निर्दिष्ट विषयों का प्रतिपादन किया—साधकों की प्रयोगविधि आदि का निरूपण, शाक्तों की निन्दा आदि करने में दोष कथन, महाविद्या आदि के पूजन आदि का निरूपण, भगलिङ्ग-माहात्म्यका प्रतिपादन,

स्नान आदि कृत्यों का निरूपण, गृहस्थों के आचार आदि का निरूपण, कर्म-काल आदि का कथन, प्रश्नोत्तर पदों का निरूपण, भाव का निरूपण, पुरश्चरणादि का निरूपण, बलिदान आदि का निरूपण आदि। —नो० सं० १।३५

(२) श्लोक सं० २१०। इसमें १० ही पटल हैं। उनके विषय हैं—साधकों के कर्तव्य, उनकी विधि, दीक्षा के लिए गुरु-शिष्य आदि पात्र का निर्णय, कौल शक्ति कथन, कुलसाधकों के लक्षण, कलाप्रशंसा, शक्तिप्रशंसा, स्वयंभू कुसुम-माहात्म्य, आसन-विधि, बलिप्रशंसा आदि।

(३) अभिषेकविधि मात्र, पूर्ण। भगवान् ने कहा है—"गुप्तं च सर्वतन्त्रेषु तव स्नेहेन पार्वति। अभिषेकं प्रवक्ष्यामि सर्वसिद्धिप्रदायकम्।"

इत्युत्तरतन्त्रे श्रीराजराजेश्वरीसंवादे सर्वसिद्धिप्रदोऽभिषेकपटलः।

—ए० बं० ६१४७

(४) श्लोक सं० ३०, स्वप्नाध्यायमात्र, पूर्ण। कौन सुस्वप्न और कौन दुःस्वप्न है तथा उनका क्या फल होता है इत्यादि का विवेचन इस अध्याय में है। यह भी देवीश्वर संवादरूप ही है। —ए० बं० ५८९६

(५) अपूर्ण, केवल ४र्थ और ५ म पटल हैं। —बं० प० १३०५

(६) (क) श्लोक सं० २७६, पूर्ण,

(ख) श्लोक सं० ३००, अपूर्ण

(ग) २, ६, ७, २१, और २२ पटल अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४७१७, (ख) २५७५६, (ग) २६१३१

उ०—कालिकासपर्याविधि, प्राणतोषिणी, मन्त्रमहार्णव, कुलप्रदीप, तन्त्ररत्न, श्यामारहस्य, आगमतत्त्वविलास, सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी, सर्वोल्लास, तन्त्रसार, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, पुरश्चर्यार्णव, महाकालकवच आदि में। यह ६४ तन्त्रों में अन्यतम है।

उत्तरनिश्वास

लि०—निश्वासागम शैव उपागम। —न्यू कैट्. कैट्. २।३०५

उत्तरपद

लि०— प्राप्त ग्रन्थसूची से

उत्तरभैरवी

लि०— —प्राप्त ग्रन्थसूची से

उत्तरवरिवस्या

लि०––भूसुरानन्दनाथ कृत । दे० वरिवस्यारहस्य ।

––न्यू कैट्. कैट्. २।३०९

उत्तरवातुल

लि०––वातुलागमान्तर्गत शैव उपागम । दे० कामिकान्तर्गत ग्रथसूची ।

––न्यू कैट्. कैट्. २।३०९

उत्तरषट्क

लि०––विद्यानाथ कृत । ––न्यू कैट्. कैट्. २।३०९

उत्तरषोढान्यासादि

लि०––श्लोक सं० ४२० । पूर्वषोढान्यास तथा मातृकान्यास भी इसमें सन्निविष्ट हैं ।

––अ० वं० १३३५९ (क)

उत्तरसंहिता

उ०––भारद्वाजसंहिता में । ––न्यू कैट्. कैट्. ३।३०९

उत्तरातन्त्र

लि०––श्लोक सं० २१०, अपूर्ण । ––सं० वि० २४४४३

उ०––आगमसारसंग्रह, कालीतत्त्व, कालिकासपर्याविधि तथा शाक्तक्रम में ।

उत्तराथर्वण

लि०––प्रत्यङ्गिराकल्प मात्र । ––न्यू कैट्. कैट्. २।३१०

उत्पत्तितन्त्र

लि०––(१) श्लोक सं० ६४२ । इसकी पुष्पिका में लिखा है––"त्रिशतैकाशीति-(तमः ?)पटलः समाप्तः।" तदनुसार ३८१ पटल माने जायँ तो इसका कलेवर अति विशाल होना चाहिए। ऊपर इसकी जो श्लोक सं० दी गयी है वह उसके अनुरूप नहीं है। इससे ज्ञात होता है कि यह पूर्ण नहीं है ।

यह उमामहेश्वर संवादरूप है । श्री उमा के यह निवेदन करने पर कि शाम्भवीतन्त्र में उत्पत्ति के सम्वन्ध में जो आपने कहा, वह मैंने सुना । इस समय हे देवेश, कलिसंमत साधन कहने की कृपा कीजिए । उसपर भगवान् ने निम्ननिर्दिष्ट विषयों का प्रतिपादन किया––

दिव्य और वीर भाव की प्रशंसा, वलियोग्य पशुओं, मनुष्य, बकरा, भैंसा, भेड़, शूकर, खरगोश, शाही, गोह, गेंडा, कछुआ, बन्दर, गधा, घोड़ा, हाथी तथा विविध पक्षियों का निरूपण, असंस्कृत मद्यपान में दोष कथन, मातृयोनि के सिवा यवनानी आदि योनियों में गमन करने पर भी कौलिक को दोष नहीं यह कथन, भाव-लक्षण, कलियुग में सुरापान से भारतवर्ष में वर्ण-भ्रंश कथन, म्लेच्छोंके राज में कलिस्वभाव कथन, कलियुग में पशुभाव का विधान, मद्यपान आदि का निषेध, उसके अनुकल्प का निषेध कथन, करमाला की प्रशंसा, कामरूप में विष्णु की शवसाधना का वृत्तान्त, कालधर्मकथन, आत्मसमर्पण का प्रकार, वाणलिङ्गमें आवाहन आदि नहीं होते यह कथन,शिवनिर्माल्यके जलपान आदि की फल-श्रुति, प्रातःकृत्य का निरूपण, शिव-निन्दा आदि में दोष कथन, दुर्गापूजा का माहात्म्य, अर्घ्यदानविधि, गङ्गाजल में देवता आवाहन की आवश्यकता नहीं, ध्यानतत्त्व कथन, विष्णुतत्त्व कथन, दशावतारवर्णन, म्लेच्छराज का काल कथन, गौड देश गर्गपुर में कल्कि अवतार कथन, उनके विवाह आदि कथन,बाह्यशुद्धिनिरूपण, जगन्नाथ-प्रसाद का माहात्म्य, परब्रह्मस्वरूप-वर्णन, ब्रह्माण्डोत्पत्तिकथन, गङ्गामाहात्म्यादि कथन, ब्रह्मा आदि के जन्म, विवाह आदि का कथन, पाँच प्रकार की मुक्ति का निरूपण, गोलोक-वर्णन, शिवलोक, सत्यलोकादि का वर्णन, कालिका निर्वाणदायिनी हैं यह कथन, बाणलिङ्ग का प्रमाण आदि। —रा० ला० २९६

(२) —र० मं०

उ०—प्राणतोषिणीतन्त्र में।

उत्तुङ्गपद्धति

लि०—उत्तुङ्गशिवकृत। —कैट्. कैट्. २।१४

उत्सवपद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० ३००। —अ० ब० ६८२६ (ग)

(२) —कैट्. कैट्. ३।१५

उत्सवप्रकरण

लि०— —कैट्. कैट्. १।६४

उत्फुल्लिकामत

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) आगमों में अन्यतम है।

उत्सवविधि आदि

लि०—श्लोक सं० ३९०० । विविध आगमों से संगृहीत ।

—अ० ब० ७०२९

उद्दण्डमाहेश्वरतन्त्र

लि०—वटुकभैरवपुरश्चरण मात्र श्लोक सं० २४०, पूर्ण । —सं० वि० २३८३९

उद्धारकोश

लि०—(१) दक्षिणामूर्ति कृत । ७ कल्पों में पूर्ण । उक्त कल्पों के विषय हैं—दश विद्या मन्त्रोंद्धारकोश-गुणाख्यान, षट्देवीमन्त्रोद्धारकोश, सप्त विद्या और सप्त कुमारों के कोशों का आख्यान, नवग्रह मन्त्रोद्धार कोशाख्यान, सब वर्णो के कोशाख्यान, सर्वागम मन्त्र सागर में सप्तम कल्प ।

—ए० बं० ५९९०

(२) श्लोक सं० ५०० , ७ कल्पों में पूर्ण । इसमें विविध देवी-देवताओं की पूजा में उपयुक्त होनेवाले मन्त्र प्रतिपादित हैं । —ए० बं० ६२६४—६५

(३) श्लोक सं० ४९४ । इसमें देवी, गणेश तथा अन्यान्य शक्ति देवी-देवताओं के तान्त्रिक मन्त्रों का उद्धार, अर्थ और उपयोग प्रतिपादित हैं । साथ ही उनकी पूजाविधि भी वर्णित है । इसमें प्रमाण रूप से बहुत से महातन्त्र-वाक्य उद्धृत हैं । इस प्रति में ६ ही पटल हैं ।

—रा० ला० २३४३

(४) नामान्तर—कोशध्याननिर्णय । श्लोक सं० ५२६, गद्य पद्य रूप यह ७ पटलों में पूर्ण ग्रन्थ दक्षिणामूर्ति मुनि विरचित है । इसकी पुष्पिका में लिखा है १६ देवी, ७ कुमार और नौ ग्रहों के बीज-मन्त्र, मन्त्र ध्यान आदि का निर्णयरूप ७ वाँ पटल समाप्त । इसमें १० महाविद्याओं, उनकी सखियों और परिवार देवताओं के मन्त्रोद्धार, मन्त्र, ध्यान, मन्त्रार्थ, मन्त्रोपयोग आदि विषय वर्णित हैं । —रा० ला० २६६९

(५) यह ७ कल्पों में पूर्ण है । इसमें १६ देवी, ७ कुमार, ९ ग्रह, ७ देवियाँ आदि के मन्त्र, ध्यान आदि का निर्णय किया गया है । इसमें प्रमाण रूप से आगमामृतमञ्जरी, कुब्जिकासर्वस्व, भैरवतन्त्र, शारदापटल आदि से वाक्य उद्धृत किये गये हैं ।

—क० का० ५

(६)—(क) श्लोक सं० ४२०, (ख) श्लोक सं० ३३८, (ग) श्लोक सं० ४००, दक्षिणा-मूर्ति मुनि कृत । —र० मं. (क) ४८७१, (ख) १०३१, (ग) ४९३९

(७)—(क) श्लोक सं० ५००, (ख) श्लोक सं० ५००, (ग) श्लोक सं० २००, अपूर्ण।

—अ० व० (क) १३६३५, (ख) ११३४७, (ग) ११७२६

(८) इसमें शाक्त देवियों के वीज मन्त्र प्रतिपादित हैं। —वी० कै० १३६१

—सं. वि. २४००९

(९) श्लोक सं० ६३०, पूर्ण, दक्षिणामूर्ति कृत। —२४१६६,

(सं.वि. में इसके अतिरिक्त ४ प्रतियाँ और हैं, जिनके नं० २५४५६, २५६२०, तथा २५४६८ है)

(१०) सकलागमसारोक्त —रा० पु० ५७९३

(११) यह वृहत् और लघु भेद से दो प्रकार का है। —कैट्. कैट्. १।६६

उद्धारनाथवाक्य

उद्धारनाथ कृत। —न्यू कैट्. कैट्. २।३४०

उद्धारोर्ध्वतन्त्र

—ने० द० (ii)

उन्मत्तभैरवतन्त्र

उ०—फेत्कारिणीतन्त्र तथा आगमतत्त्वविलास में।

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) आगमों में अन्यतम है।

उन्मत्तभैरवपञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक सं० ४८०, पूर्ण। यह पारमेश्वरतन्त्रान्तर्गत वाराणसी-पटल मे गुरु-रुद्र संवादरूप है। इसमें पद्धति और पटल २ अंश नहीं हैं। (१) उन्मत्तभैरव द्वादश-नामस्तोत्र, (२) उन्मत्तभैरवहृदय, (३) उन्मत्तभैरवकवच, (४) उन्मत्तभैरव-स्तवराज, (५) उन्मत्तभैरवाष्टकस्तोत्र, (६) उन्मत्तभैरवसहस्रनामस्तोत्र, याज्ञवल्क्य कृत पञ्चाङ्ग पूर्ण साङ्गस्तोत्र, उन्मत्तभैरवमन्त्रोद्धार, उन्मत्त-भैरवकीलक, उन्मत्त-भैरव के सात्त्विक, राजस और तामस ध्यान। —ए० बं० ६४९२

उन्मत्ताख्यक्रमपद्धति

लि०—कमलाकान्त भट्टाचार्य कृत। श्लोक सं० ३००, पूर्ण।

—अ० व० १२७५१

उपचार

लि०—शैवागम से गृहीत। —न्यू कैट्. कैट्. २।३४५

उपचार उपनिषत्

—प्राप्त ग्रन्थसूची से

उपदेशदीक्षाविधि

नामान्तर—पूर्णाभिषेकपद्धति।

लि०—परमहंस परिव्राजकाचार्य चैतन्यगिरि अवधूत कृत यह ग्रन्थ तान्त्रिक दीक्षा-विधि का प्रतिपादक है। इसमें दीक्षा-माहात्म्य, वीजमन्त्रप्रदान, पूजाविधि, वास्तुपूजा-विधि, पात्रस्थापनविधि, क्रियामयी दीक्षा आदि विषय वर्णित हैं।

—इ० आ० २६१२

उपदेशसुधा

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

उपरिष्टातन्त्र

लि०—पञ्चरात्र। भगवदाराधनसंग्रह में उक्त।

—न्यू कैट्. कैट्. २।३७१

उपसंहरणमन्त्र

लि०—डामरतन्त्र से गृहीत। —न्यू कैट्. कैट्. २।३७३

उपहारप्रकाशिका

लि०—श्लोक सं० १३५०, पूर्ण। इसमें देवी-देवताओं की पूजा के सम्बन्ध में विशेष विवरण दिया गया है। इसपर दो टीकाएँ हैं—उपहारप्रकाशिका-प्रकाश और उपहार-प्रकाशिका–विमर्शिनी।

—ट्रि० कै० ९२३

उपाङ्गललितापूजन

लि०—(१) श्लो० सं० ३००, पूर्ण। आश्विन शुक्ल ५ मी को ललिता देवी की प्रसन्नता के लिए दाक्षिणात्यों द्वारा जो ललितादेवी का व्रत किया जाता है उसी की पूजाविधि इसमें वर्णितहै। उक्त व्रत विस्तार के साथ, शङ्करभट्ट के व्रतार्क तथा विश्वनाथ दैवज्ञ के व्रतराज में वर्णित है। व्रत की कथात जो स्कन्दपुराण में कही गयी

है, भी उपर्युक्त पुस्तक में दी गयी है। पूजा-विवरण, जो प्रस्तुत प्रति में दिया गया है, उपाङ्गललिताकल्प के आधार पर है। —ए० बं० ६३८१

(२) श्लोक सं० ३००। इस व्रत में प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर वनस्पति की प्रार्थना करे—हे वनस्पते, आप आयु, बल, यश, तेज, सन्तति, पशु, धन, ज्ञान, और मेधा का मुझ में आधान करें। जो यह व्रत करता है वह पुत्र, धन और विद्या से सम्पन्न, नीरोग सुखी और भोगवान् होता है। जो स्त्री या कन्या इस उत्तम व्रत का आचरण करती है उसे सदा सौभाग्य प्राप्त होता है। इस व्रत के आचरण से विजय, पुष्टि, आरोग्य और भी जो कुछ आकांक्षित हो महादेवी के अनुग्रह से सब प्राप्त होता है। इसमें व्रताङ्गपूजन, व्रत-कथा आदि विषय वर्णित हैं। —रा० ला० ७०९

(३) श्लोक सं० २००। —अ० ब० ११७४४, १२१८४

उपाङ्गललितास्तोत्र

लि०—गोपति कृत। श्लोक सं० ५, पूर्ण। —सं० वि० २३२४८

उपायविंशति

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

उमातन्त्र

उ०—श्यामारहस्य में। कालिकापुराण में भी इसका नामोल्लेख है।

उमातिलकतन्त्र

उ०—दामोदरकृत तन्त्रचिन्तामणि में।

उमामहेश्वरकल्प या उमामहेश्वरव्रतकल्प

लि०—ब्रह्मवैवर्त, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मोत्तर आदि पुराणों से गृहीत।

—न्यू कैट्. कैट्. २।३९४

उमामहेश्वरतन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

उमामहेश्वरपूजा

लि०—श्लोक सं० लगभग १५५। इसमें उमामहेश्वर की पूजा, होम आदि वर्णित हैं। पूजा इस प्रकार आरंभ की गयी है—

भगवान् उमेश के मस्तक पर पुष्प चढ़ा कर शक्ति-मन्त्र से भक्ति के साथ नमस्कार कर क्षणभर स्मितपूर्णमुख भगवान् का ध्यान कर तदुपरान्त हे भवानीश ! आपका स्वागत हो ऐसा हृदय से कह कर समाहित हो जाय। तदुपरान्त हे वत्स, मेरा स्वागत हुआ यों भगवान् के कथन की स्वयम् भावना कर नमोऽन्त उसी मन्त्र से भगवान् के चरणकमल युगल में पाद्य, स्वधान्त उसी मन्त्र से भगवान् के मुँह में आचमन, स्वाहान्त उसी मन्त्र से भगवान् के सिर पर अर्घ और वौषडन्त उसी मन्त्र से दूर्वा, पुष्प और अक्षत चढ़ावे आदि।

—ए० बं० ६४७६

उमामहेश्वरसंवाद

लि०—(१) यह २१ पटलों में पूर्ण है। —कैट्. कैट्. ३।१५

(२) आगम। नन्दिकेश्वरकृत। —न्यू कैट्. कैट्. २।३९५

उ०—वीरशैवचन्द्रिका में।

उमामहेश्वरसंहिता

लि०—आगम। —न्यू. कैट्. कैट्. २।३९५

उमायामल

लि०—परमशिवसहस्रनामस्तोत्र मात्र। यह यामलाष्टक में अन्यतम है। दे० यामलाष्टक। —न्यू कैट्. कैट्. २।३९५

उमासुवर्चलातन्त्र

लि०—निर्वाणपञ्जर मात्र। —न्यू कैट्. कैट्. २।३९६

उमोत्तर या उत्तरोत्तरतन्त्र

लि०— —न्यू कैट्. कैट्. २।३९७

उलूककल्प

लि०—(१) श्लोक सं० ७२, पूर्ण। भैरव द्वारा पार्वती के प्रति उक्त इस तन्त्र में उल्लू के विभिन्न अङ्गों के साथ विभिन्न वस्तुओं के संमिश्रण द्वारा निर्मित अञ्जन आदि का वशीकरण, मोहन, उच्चाटन, मारण आदि तान्त्रिक क्रियाओं में उपयोग वर्णित है।

—ए० बं० ६१५७

(२) श्लोक सं० ५२, अपूर्ण । —अ० ब० ३४२१

(३) अङ्कोलतैलविधि के साथ संश्लिष्ट। श्लोक सं० सम्मिलित ७८, पूर्ण।

—सं० वि० २५३५७

(४) —कैट्. कैट्. ३।१५

(५) अभिचार, वशीकरण आदि पर ।

—न्यू कैट्. कैट्. २।३९८

उलूकतन्त्र

लि०—गोविन्द कृत। अभिचार, वशीकरण आदि पर। नामान्तर—उलूककल्प।

—कैट्. कैट्. २।१३

उलूकपक्ष

लि०—कल्पसागर से गृहीत। —न्यू कैट्. कैट्. २।३९८

उल्कादिस्वरूप

लि०—अपूर्ण। इसमें उल्का और उसके स्वरूप का वर्णन करते हुए विविध शान्तियाँ, विविध अद्भुत, सूर्यमण्डल के चारों ओर घेरा लग जाना छायाद्भुत, सन्ध्याद्भुत, दिनमें तारों का दर्शन रूप अद्भुत, दृष्टि-अद्भूत, मेघाद्भुत, बिजलियाँ और दिशाओं का जलना दिखाई देना, चन्द्रोत्पात, इन्द्रधनुष्, बिजली का कड़कना, मूसलाधार वृष्टि होना, आकाश में उड़न तस्तरी, परियाँ दीख पड़ना आदि उत्पातों का निरूपण किया गया है।

—रा० ला० २२५

ऊर्ध्वाम्नायन्यास

लि०—श्लोक सं० १५०।

—अ० ब० ८४४३

ऊर्ध्वाम्नायपूजा

लि०—श्लोक सं० २४०।

—अ० ब० ६०४८

ऊर्ध्वाम्नायपीठपूजनविधान

लि०—

—कैट्. कैट्. १।७१

ऊर्ध्वाम्नायमन्त्रशास्त्र

लि०—

—कैट्. कैट्. १।७१

उ०—कुलार्णवतन्त्र, शक्तिरत्नाकर, शाक्तानन्दतरङ्गिणी तथा प्राणतोषिणी में।

ऊर्ध्वाम्नायतन्त्र

लि०--(१) श्लोक सं० ३२५, अपूर्ण। यह देवी-ईश्वर संवादरूप तन्त्र ग्रन्थ है। इस प्रति में ३ य पटल से आरंभ कर ६ ष्ठ पटल तक का ही अंश है। इसमें मानव-शरीर की प्रकृति, ब्राह्मण-स्वभाव तथा गुरु की महत्ता वर्णित है। --ए० वं० ५९६२

(२) पाँचवें पटल तक, अपूर्ण। --वं० प० ९२३

(३) श्लोक सं० २९५। --र० मं० ४८९४

(४) श्लोक सं० ४६० (लगभग), अपूर्ण, यह कुलार्णवरहस्यान्तर्गत है। --सं० वि० २४७१९

सं० वि० में दो अपूर्ण प्रतियाँ और हैं, जिनकी सं० २४७३३ और २४७७९ है।

(५) दे० काल्यूर्ध्वाम्नायतन्त्र। --कैट्. कैट्. २।१३, ३।१५

उ०--प्राणतोषिणी और सर्वोल्लास में।

ऊर्ध्वाम्नायसंहिता

लि०--(१) श्लोक सं० ३००। नारद-व्यास संवादरूप यह तन्त्र ग्रन्थ १२ अध्यायों में पूर्ण है। यह ग्रन्थ अत्यन्त अर्वाचीन मालूम पड़ता है। इसमें बंगाल के उन्नायक महा-वैष्णव गौराङ्ग चैतन्य का बुद्धदेव के स्थान पर अवतार के रूप में उल्लेख है और इसमें उनकी पूजा के मन्त्र प्रतिपादित है। --ए० वं० ५९५९

(२) श्लोक सं० २५२। यह विष्णुभक्ति तथा विष्णु के अवतारों का प्रतिपादक नारदप्रोक्त ग्रन्थ १२ अध्यायों में पूर्ण है। इसका आरंभ इस प्रकार होता है--एक समय सुखासीन देवर्षि नारदजी से लोकनमस्कृत व्यासजी ने पवित्र होकर पूछा--हे महामुनिजी, मुझसे सर्वोत्तम विष्णुभक्ति कहिए। इसके साथ ही साथ सब प्रकार की विष्णुभक्ति तथा अवतारों के गुण भी कहिए। प्रष्टव्य सब विषय कह कर अन्त में नारदजी ने कहा है--अठारहों पुराण तथा महाभारत को सुन कर जो फल होता है वह केवल ऊर्ध्वाम्नाय के श्रवण से हो जाता है। लक्ष्मीनारायण के मन्दिर में ऊर्ध्वाम्नाय की पुस्तक की स्थापना कर वैष्णव को भक्तिभाव से उसका पूजन करना चाहिए।

इसके विषय यों वर्णित हैं--गुरुभक्ति, अवतार वर्णन, गौर-मन्त्र का उद्धार, तुलसी-माहात्म्य वर्णन, गङ्गा-माहात्म्य, गुरु आदि की पूजा, नारायणस्तुति, गया-माहात्म्य,

कार्तिक मास का माहात्म्य, वैष्णवों के वर्गों का परिगणन, वैष्णव सन्तों की पूजा तथा अपराध कथन।

—रा० ला० २४३

(३) अपूर्ण। नारद प्रोक्त। —वं० प० ४५८

(४) —कैट्. कैट्. १।७१, ३।१६

ऊर्मिकौल

(सिद्धसन्तान)

उ०—तन्त्रालोक में।

ऋजुविमर्शिनी

महार्थमञ्जरीकार महेश्वरानन्द के परम गुरु कृत।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल तथा भास्कररायकृत सेतुबन्ध में।

ऋष्यशृङ्गसंहिता

नामान्तर—अनुत्तरब्रह्मतत्त्वरहस्य।

लि०—

कैट्. कैट्. १।७३

एकजटीतन्त्र

उ०—प्राणतोषिणी में।

एकवीराकल्प

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, तन्त्ररत्न, रहस्यार्णव तथा तारारहस्यवृत्ति में।

एकवीरातन्त्र

उ०—तारारहस्यवृत्ति में।

एकशक्तिव्याप्तिपटल

लि०—ज्ञानकाण्ड से गृहीत श्लोक सं० १२५।

—डे० का० ३५५ (१८७९।८० ई०)

एकाक्षरगणपतिकल्प

लि०—(१) श्लोक सं० ३००, पूर्ण। इसमें चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धि के लिए गणेश के मन्त्रों से होम और जल, दुग्ध, इक्षुरस और घी से चतुर्विध तर्पणों का प्रतिपादन है तथा यन्त्र लिखने की विधि भी वर्णित है।

—ए० बं० ६५०७

(२) पूर्ण। इस प्रति में इसका नाम 'एकाक्षरगणपतिपूजाकल्प' कहा गया है।
—सं० वि० २५०८

एकाक्षरगणपतिमन्त्रविधि

लि०—(१) श्लोक सं० १५। —अ० ब० १३८५९

(२) श्लोक सं० लगभग १८०, पूर्ण। इसमें इसका नाम 'एकाक्षरगणपतिमन्त्रविधान' लिखा है। —सं० वि० २३८६१

एकाक्षरगणपतिविधि

लि०—(१) श्लोक सं० २५। —अ० ब० १३८६१

(२) पुस्तक का नाम 'एकाक्षरगणेशविधान' दिया है।
—सं० वि० २५८०९

(३) पुस्तक का नाम 'एकाक्षरगणपतिविधान' लिखा है।
—कैट्. कैट्. १।७४

एकाक्षरगणेशपद्धति

लि०—श्लोक सं० १२५। —अ० ब० ३४२२

एकाक्षरमन्त्रराजपुरश्चरणपद्धति

लि०—श्लोक सं० ८९। —अ० ब० १३६४१

एकाक्षरमन्त्रविधि

लि०—शारदानन्द कृत। —कैट्. कैट्. १।७४

एकाक्षरीलक्ष्मीनित्यपूजाविधि

लि०—श्लोक सं० ५००। —अ० ब० ३५१९

एकादशन्यास

लि०—श्लोक सं० ७०। —अ० ब० १३६७८

कंकालभैरवतन्त्र

उ०—लक्ष्मीधर कृत सौन्दर्यलहरीटीका तथा गौरीकान्त कृत सौन्दर्यलहरी की टीका में। यह ६४ तन्त्रों में अन्यतम है।

कंकालमालिनीतन्त्र

लि०––(१) श्लोक सं० ६७६। यह शिव-पार्वती संवादरूप डेढ़ लक्ष श्लोकात्मक दक्षिणाम्नाय के अन्तर्गत ५०००० श्लोकों का मौलिक तन्त्र है। इसके ५ पटल उपलब्ध हैं। उनमें प्रतिपादित विषय हैं––अकारादि वर्णों की शिवशक्तिरूपता, योनिमुद्रा, गुरु-पूजा और गुरुकवच, महाकाली के मन्त्रों का प्रतिपादन तथा पुरश्चरणविधि।

––रा० ला० २४६

(२) श्लोक सं० ६२७। यह भैरव-भैरवी संवादरूप है। इसका प्रारंभ इस प्रकार कहा गया है––भैरवी ने कहा––हे महेश्वर, हे जगद्वन्द्य, आप वर्णों का कारण बतलाने की कृपा करें। भैरवी के इस निवेदन पर भैरव ने कहा––हे सुन्दरी, मैं तुमसे वर्णों का उत्तम रहस्य कहता हूँ। हे महादेवी, यह प्रकाशनीय नहीं है फिर भी तुम्हारे स्नेह से मैंने यह कहा। इसे जान कर योगी जन मेरे निर्गुणत्व को प्राप्त होते हैं इत्यादि। अन्त में लिखा है––हे भद्रे, स्त्री और शूद्रों के लिए पुरश्चरण कदापि विहित नहीं है। सदा जप और पूजा ही उनके लिए प्रशस्त हैं। यदि गुरु-भक्ति हो तो चन्द्र और सूर्य ग्रहण में शूद्रों को उत्तम सिद्धि प्राप्त होती है। तब वह गुरुभक्ति से सिद्धि को प्राप्त होता है। यह दक्षिणाम्नायान्तर्गत कंकालमालिनीतन्त्र ५ पटलों में उपलब्ध हैं। ५ पटलों के विषय यों दिये गये हैं––वर्णबीज संकेत, योनिबीज, मुद्रा, छह आधार और योनिकवच का निर्णय, गुरुपूजन, गुरुकवच और गुरुगीता का वर्णन, महाकाली के मन्त्रों का उद्धार, संक्षिप्त पूजापद्धति और पुरश्चरणविधि।

––ज० का० ९८९

उ०––प्राणतोषिणी तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

कंससंहिता

उ०––ताराभक्तिसुधार्णव में।

कक्षपुट

नामान्तर––नागार्जुनीय, सिद्धचामुण्डा, सिद्धनागार्जुनीय, कच्छपुट, कक्षपुटी, कक्ष-पुटमन्त्रशास्त्र, कक्षपुटतन्त्र आदि।

लि०––(१) इसमें वशीकरण, आकर्षण, स्तंभन, मोहन, उच्चाटन, मारण, विद्वेष करा देना, व्याधि पैदा कर देना, पशु, फसल और धन का नाश कर देना, टुटके, जादू-टोने, यक्षिणीमन्त्र का साधन, चेटक-साधन, दिव्य अञ्जन साधन, अदृश्य कर देना, खड़ाउओं को

चला देना, गुटिका-साधन, आकाश-गमन, मरे को जिला देना, गड़ा धन निकाल देना, सेना को स्तब्ध कर देना, बहते जल को रोक देना आदि तान्त्रिक विधियाँ शाम्भव, यामल, शक्ति, कौल, डामर आदि विविध तन्त्रों का अवलोकन कर आगमोक्त तथा अन्यान्य लोगों के मुख से सुनकर, दही से घी की तरह, सब सार निकाल कर साधकों के हित के लिए यह मन्त्र सिद्ध नागार्जुन द्वारा २० पटलों में लिखा गया। इसके पटलों के नाम मन्त्रसाधन, सर्ववश्य आदि दिये गये हैं। —इ० आ० २६१६

(२) श्लोक सं० १८००। मङ्गलाचरण श्लोक तथा नमूने के लिए एक मन्त्र देकर २१ वें पटल की पुष्पिका दी गयी है—"श्रीसिद्धनागार्जुनविरचिते कच्छपुटे सर्वसंग्रहो नाम एकविंशतितमः (२१ वाँ) पटलः। समाप्तोऽयं ग्रन्थः।" इसके अनुसार यह २१ पटलों का है। शीर्षक में ग्रन्थ का 'सिद्धनागार्जुनीयः' नाम दिया गया है।

—रा० ला० २५६

(३) श्लोक सं० २०००। २० पटलो में पूर्ण। आरंभ में मंगलाचरण श्लोक के सिवा इ० आ० २६१६ की तरह मूलभूत तन्त्रग्रन्थ और विषय श्लोकबद्ध कहे गये हैं। इसमें दो प्रतियाँ अपूर्ण और दी गयी हैं—(१) की श्लोक सं० १०५० तथा (२) की श्लोक सं० ७५ दी गयी है। —ए० बं० ६०७४

(४) श्लोक सं० २०००, पटल सं० २०, ग्रन्थ का नाम 'कक्षपुटमन्त्रशास्त्र' दिया है। मंगलाचरण भी उपर्युक्त पुस्तकों के मंगलाचरण से भिन्न है। २० पटलों के विषय यों दिये गये हैं : १—मन्त्रसाधना, २—वशीकरण, ३—राजवश्य, ४—स्त्रीवश्य, ५—पतिवश्य, ६—आकर्षणविधान, ७—स्तभन, ८—सेनास्तभन, ९—मोहन, १०—मारण, ११—उन्मत्तादिकरण, १२—इन्द्रजालविधान, १३—यक्षिणीसाधन, १४—सर्वाञ्जनादि-साधन, १५—ज्ञानविधान, १६—अदृश्यकरण, १७—पादुकागति, १८—कालज्ञान, १९—अति आहारविधि, २०—सर्वसंग्रह।

इस संग्रह में दो पुस्तकें और हैं, दोनों पूर्ण हैं। उनकी सं० हैं—१२१६३, १२१६४।
—तैं० म० ६६८३

(५) श्लोक सं० १८००, पूर्ण। ग्रन्थ का नाम कक्षपुट दिया है।
[अ.ब. में चार प्रतियाँ और है जिनमें एक पूर्ण और तीन अपूर्ण हैं। पूर्ण की सं० है—१०६७१]
—अ० ब० ११४७१

(६) श्लोक सं० १८००। इसका सिद्धचामुण्डा भी नामान्तर है। शेष पूर्ववत्।
—क० का० ७

(७) २० पटलों में पूर्ण। —वं० प० १४०५

(८) नामान्तर—रसरत्नाकर। —ज० का० ९९१

(९) (क) श्लोक सं० १८००, (ख) श्लोक सं० १७२२, पूर्ण।
—र० मं० (क) ४९३६, (ख) ४९१२

(१०) (क) पन्ने ८१, पूर्ण। (ख) कक्षपुटी के नाम से एक प्रति और है। कर्ता सिद्धनागर्जुन। पन्ने ४८। इसमें पटल सं० ४१ दी गयी है।
—डे० का० (क) ४३७, (ख) ७६४

(११) कक्षपुट या कक्ष्यपुट अथवा कक्षपुटी या कच्छपुट अथवा कक्षपुटतन्त्र इन्द्रजाल पर नागार्जुन द्वारा लिखित। —कैट्. कैट्. १।७७

(१२) पन्ने ५०, नाम—कक्षपुटी, सिद्धनागार्जुन कृत।
—रा० पु० ५७६७

(१३) पूर्ण। —सं० वि० २५८६१

[सं० वि० में कक्षपुट नाम की ४ अपूर्ण प्रतियाँ और हैं—नं० २३९१४, २३९१५, २५२११ और २६२९४ तथा कक्षपुटी नाम की एक अपूर्ण प्रति नं० २५५८९ की है।]

कक्षपुटीविद्या

लि०—श्लोक सं० ३२७, पूर्ण। यह मन्त्रसारसिद्धखण्ड से गृहीत पार्वतीपुत्र नित्यनाथ कृत है। —डे० का० २२४

कक्षपुटीविधान

लि०— —कैट्. कैट्. १।७७

कक्ष्यामालास्तोत्र

लि०—दिवाकर वत्सकृत। —कैट्. कैट्. १।७७

उ०—oxford (आक्सफोर्ड) २३९ (ए) के अनुसार अभिनवगुप्त ने इसका उल्लेख किया है।

कक्ष्यास्तोत्र

उ०—उत्पल कृत स्पन्दप्रदीपिका तथा प्रत्यभिज्ञाहृदय में।

संभवतः यह दिवाकरवत्सकृत कक्ष्यामालास्तोत्र से अभिन्न है जिसका उल्लेख अभिनवगुप्त ने किया है।

कटाहतन्त्र

उ०–योगरत्नावली में इसका विषतन्त्र के रूप में उल्लेख है––'कटाहं छागतुण्डं च सुग्रीवं कर्कटामुखम्। एतानि विषतन्त्राणि' इत्यादि। योगरत्नावलीकार श्रीकण्ठ शम्भु ने जिन तन्त्रों के आधार पर अपना ग्रन्थ रचा उनमें यह भी अन्यतम है।

कदम्बिकातन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह ६४ तन्त्रों के अन्तर्गत वागीशाष्टक वर्ग में अन्यतम है।

कनककल्प

लि०––श्लोक सं० २५। यह महादेवभाषित है। इसमें सबको मनोवाञ्छित फल देने वाली तान्त्रिक षट्कर्मों की विधि मनुष्यों के हित के लिए कही गयी है। वे षट्कर्म हैं––शान्तिक, पौष्टिक, मनुष्यों को वश में करना, मोहन, आकर्षण और स्तंभन करना। ये ही इसमें विशेष रूप से वर्णित हैं। कनक कल्पयोग, सर्वोच्चाटन मन्त्र तथा रूपाकरण-विधि भी कही गयी है। ––ए० बं० ६०६९

कबन्ध

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह ६४ तन्त्रों के अन्तर्गत शिखाष्टक वर्ग में अन्यतम है।

कपिञ्जलसंहिता

लि०––(१) (क) श्लोक सं० १५००।
(ख) श्लोक सं० १५००।
––अ० व० (क) ७९६१, (ख) ६६५४

(२) (क) श्लोक सं० १०००, इसमें २२ पटलों में मुख्यतया प्रायश्चित्त वर्णित है।
(ख) नूतन लिखित है। ––तै० म० (क) १७३३, (ख) १७३४

कपालीशतन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह ६४ तन्त्रों के अन्तर्गत भैरवाष्टक वर्ग में अन्यतम है।

कमलापद्धति

लि०––(१) प्रेमनिधिपन्त कृत, श्लोक सं० २००।
––अ० व० ५५४४ (क)

(२) श्लोक सं० लगभग २२५०, पूर्ण। —सं० वि० २६५०५

कमलार्चापारिजात

लि०—महेश्वरभट्ट कृत, श्लोक सं० ८० (केवल पुष्पाध्याय मात्र)। —अ० ब० १०४७७

करङ्किणीमततन्त्र में यक्षिणीकल्प

लि०—श्लोक सं० १००, पूर्ण।

१ विचित्रा, २ विभ्रमा, ३ हंसी, ४ भीषणा, ५ अञ्जनरञ्जिका, ६ विशाला, ७ मदना, ८ घण्टा, ९ कालकर्णा, १० महाभया, ११ माहेशी, १२ शंखिनी, १३ चान्द्री, १४ श्मशानी, १५ वटयक्षिणी, १६ मेखला, १७ विकला, १८ लक्ष्मी, १९ मालिनी, २० शतपत्रिका, २१ सुलोचना, २२ सुशोभाढ्या, २३ कपाली, २४ पिनाकिनी, २६ नटी, २७ कामेश्वरी, २८ कर्णरेखा, २९ मनोहरी, ३० प्रमोदा, ३१ खङ्गिनी, ३२ नखकेशिनी, ३३ भोगिनी, ३४ पद्मिनी, ३५ स्वर्णवती, ३६ रतिप्रिया ये वर और सिद्धि देने वाली ३६ यक्षिणियाँ करङ्किणीमततन्त्र में शम्भुदेव द्वारा कही गयी हैं। संक्षेपतः इनकी आराधना भी कही गयी है। कर्मान्त में भोजन करने पर पिशाचिनी संतुष्ट होती है तथा प्रतिदिन २७ स्वर्ण मुद्राएँ देती हैं। —ए० बं० ६०२८

कर्कचण्डेश्वरीतन्त्र

उ०—आक्सफोर्ड (oxford) ३२१ (ए) के अनुसार रसराजलक्ष्मी में। —कैट्. कैट्. १।८२

कर्कटामुखतन्त्र

उ०—योगरत्नावली का मूलाधार। —ए० बं० ६६०२

कर्णपिशाचीमन्त्र

लि०—श्लोक सं० ३०, अपूर्ण। —अ० ब० ८२९९

कर्पूरस्तव या कर्पूरस्तोत्र

नामान्तर—कर्पूरादिस्तोत्र या कर्पूरस्तवराज, कालिकास्वरूपाख्यस्तोत्र।

लि०—(१) श्लोक सं० ६४, पूर्ण।

—सं० वि० २०३३९

इसके अतिरिक्त सं० वि० में इसकी दर्जनों प्रतियाँ हैं कर्पूरस्तव, कर्पूरस्तोत्र, कर्पूर-स्तवराज आदि नामों से।

(२) (क) श्लोक सं० ६०, पूर्ण। यह बहुत प्रसिद्ध स्तोत्र है। बहुत-से स्तोत्र-संग्रहों में मुद्रित भी हो चुका है। इस प्रति के अन्त में कालीकवच भी, जो जगन्मङ्गल-कवच के नाम से प्रसिद्ध है, संन्निविष्ट है। (ख) नाम कर्पूरस्तोत्र, श्लोक सं० ६०, पूर्ण।
—ए० वं० (क) ६६२४, (ख) ६६२५

(३) कालिकार्णव से उद्धृत। यह श्यामास्तोत्र २२ श्लोकों में महाकाल द्वारा रचित है। —अ० व० ३४३३ (क)

इसपर टीकाएँ—

लि०—(१) पन्ने ६, पूर्ण। प्रतापसिंह की प्रेरणा से वेणुधर द्वारा निर्मित कर्पूरस्तव-दीपिका। —ए० वं० ६६२६

(२) श्लोक सं० २५०। भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित कर्पूर-स्तवदीपिका। —ए० वं० ६६२७

" —सं० वि० २०३४०, २३१०१

(३) श्लोक सं० ४२५, पूर्ण। दुर्गाराम तर्कवागीश कृत कर्पूरस्तव व्याख्या।
—ए० वं० ६६२८, २९,

" —सं० वि० २३८१०, १९५५७

(४) श्लोक सं० २२०, पूर्ण। कामदेव पण्डित वंशोत्पन्न कालीचरण विरचित महाकालप्रणीत कर्पूरस्तोत्रटीका। —ए० वं० ६६३०

(५) श्लोक सं० १२६, रा० ला० ४७६ ने इसे अनन्तराम कृत लिखा है किन्तु इसके अनन्तराम कृत होने में कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ। इसलिए इसे अज्ञातकर्तृक ही समझना चाहिए। इसकी रचना शकाब्द १७२६, आश्विन मास गुरुवार को हुई।
—ए० वं० ६६३१

(६) श्लोक सं० १००, पूर्ण। परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री शङ्कराचार्य कृत कर्पूरस्तोत्रटीका। —ए० वं० ६६३२

(७) श्लोक सं० २४०, पूर्ण। महाकालकृत कर्पूरस्वतवराज की स्फुटार्था व्याख्या ज्योतिर्विद् जयराम की प्रेरणा से श्रीकृष्ण पण्डित कृता तथा सं. वि. २३२८२ अपूर्ण, १८११२ और १९६४५ पूर्ण। —ए० वं० ६६३३

(८) श्लोक सं० २०१। कृष्णचन्द्र-पुत्र सुकृती नन्दराम कृत कर्पूरादिस्तव की टीका। इसका निर्माणकाल शकाब्द १७६६ ग्रन्थान्तिम श्लोक से प्रतीत होता है।

—नो० सं० १।३९

(९) श्लोक सं० ८००। कर्पूराख्य स्तोत्र की आनन्ददीपिनी टीका श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती विरचित। इसमें कर्पूराख्य स्तोत्र के २२ श्लोकों की सुन्दर व्याख्या की गयी है। इसमें कालिका का मन्त्रोद्धार भी है। —रा० ला० ३३०

(१०) श्लोक सं० ५६२, पूर्ण। महाकालकृत कर्पूरस्तवराज पर व्रजनाथपुत्र रंगनाथ कृत टीका दीपिका। —सं० वि० १९६४६, २१११९

(११) कुलमणि शुक्ल कृत, परमानन्द पाठक कृत, रङ्गनाथ कृत तथा अनन्तरामकृत कर्पूरस्तव व्याख्याएँ। —कैट्. कैट्. १।८२

(१२) श्लोक सं० ११२, लिपिकाल शकाब्द १७२३, स्तवप्रकाशाख्या व्याख्या, कर्ता का नाम अज्ञात। —सं० वि० २२११२

(१३) श्लोक सं० ३२५। शिवांशभूत भगवान् महाकाल कृत कर्पूरादिस्तव की कर्पूरादिप्रबोधिनी व्याख्या। त्रिभुवनविदित विद्यासंतति श्रीरामकिशोर शर्मा द्वारा रचित। —नो० सं० ३।४८

कर्मकाण्डक्रमावली

संभवतः काश्मीर में यह मुद्रित है।

कर्मक्रियाकाण्ड

लि०— (१) श्लोक सं० लगभग ७३२, पूर्ण। ईशान-प्रशिष्य, शि-वशिष्य सोमशम्भु कृत। इसका निर्माण-काल सं० ११३० वि० है। —र० मं० ४९९१

(२) पूर्ण, सोमशम्भु कृत। —डे० का० ४३८

(३) शैवग्रन्थ, शोभशंभु द्वारा सन् १०७३ ई० में रचित।

—कैट्. कैट्. १।८२

कर्मसारमहातन्त्र

लि०—श्लोक सं० ९५००, यह पद्यबद्ध ग्रन्थ २८ उल्लासों में विभक्त है। ग्रन्थकार श्रीकण्ठ-पुत्र मुक्तक, मुञ्जक या मुख्यक ने अपने गुरु श्रीकण्ठ के अनुग्रह से शिवात्मक तत्त्व का ज्ञान प्राप्त कर सब तन्त्रों के सारभूत सारसमुच्चय की रचना की। इसमें कहा गया है कि वेदान्त से शैव शास्त्र श्रेष्ठ है, शैव से दक्षिणाम्नाय उत्तम है तथा दक्षिणाम्नाय

से पश्चिमाम्नाय श्रेष्ठ है। उससे आगे फिर कुछ श्रेष्ठ नहीं है। यह शम्भुप्रोक्त ज्ञानार्णव अगाध तथा अपार है। श्रीकण्ठ गुरु के अनुग्रह से जैसा देखा परम्परा-प्राप्त सुगोप्य भी विषय अपने गोत्रजों के हितार्थ श्रीकण्ठ-पुत्र मुख्यक द्वारा इसमें वर्णित किया गया। प्रतीत होता है यह ग्रन्थकार नित्याह्निक के कर्ता से अभिन्न हैं।

——ने० द० २।२४८

कलशचन्द्रिका

लि०——श्लोक सं० ४२००। इसमें हरि, हर, दुर्गा, स्कन्द, गणेश, प्रजापति, काली आदि की कलशविधि, अङ्कुरारोपण तथा शुद्धि, विभिन्न हवन आदि के साथ, कही गयी है। ——ट्रि० कै० ९२६

कलशस्थापन

लि०——श्लोक सं० ८०, लिपिकाल संवत् १७४०।

——अ० व० ३८६९

कलशस्थापनादिविधि

लि०——श्लोक सं० ३००, अपूर्ण। ——अ० व० ९१३४

कलातन्त्र

उ०——आगमतत्त्वविलास में।

कलादीक्षा

लि०——पत्रे १३५। मनोदत्त कृत यह ग्रन्थ शिवस्वामी द्वारा परिवर्द्धित हुआ।

——डे० का० ४४२, (१८७५।७६ ई०)

कलादीक्षारहस्यचर्चा

लि०——श्लोक सं० ६८८९। यह गद्य और पद्यों में लिखित अज्ञात-कर्तृक ग्रन्थ तान्त्रिक मन्त्रों में दीक्षित करने की विधि का प्रतिपादक है। इसमें वर्णित विषय हैं——विशेष रूप से दीक्षा-विधि का निरूपण। दीक्षा सम्बन्धी प्रयोग तथा तान्त्रिक दीक्षा अवश्य लेनी चाहिए यह कथन, दीक्षा का समय निरूपण, विशेष करके समय की अशुद्धि का निरूपण, कुण्डनिर्माण की विधि, शाक्तों के अमृत आदि का निरूपण, परावस्था-निरूपण, तीन पात्रों का निरूपण, पाँच तत्त्वों का निरूपण, नीलकण्ठ आदि के विग्रहों की पूजा-विधि, षोडश उपचारों के मन्त्र आदि का निरूपण, होमविधि, पूर्णपात्र आदि की विधि, कलादीक्षाविधि, शान्त्यतीत कला की शुद्धिका निरूपण, आत्मविद्या तथा शिवतत्त्व के विभागादि का प्रतिपादन। ——रा० ला० २२८५

कलावाद

उ०--सौन्दर्यलहरी की लक्ष्मीधर कृत टीका में इसका ६४ तन्त्रों के अन्तर्गत रूप में उल्लेख है।

कलासार

उ०--सौन्दर्यलहरी की लक्ष्मीधर कृत टीका में।

कल्पचिन्तामणि

लि०--(१) श्लोक सं० लगभग ४००, पूर्ण। रुद्रयामलान्तर्गत।

--सं० वि० २४७८५

(२) --कैट्. कैट्. १।८४

कल्पतन्त्र

लि०--(१) --कैट्. कैट्. १।८४

(२) श्लोक सं० ८६, दत्तात्रेयतन्त्रान्तर्गत, अपूर्ण।

--सं० वि० २४५७३

कल्पद्रुमकलिका

लि०--लक्ष्मीवल्लभ विरचित। श्लोक सं० ५५००।

--डे० का० १८८०।८१

कल्पद्रुमतन्त्र

लि०--यह तान्त्रिक षट्कर्म आदि से सम्बद्ध है।

--बी० कै० १२७३

कल्पसूक्त

उ०--आगमतत्त्वविलास में।

कल्पसूत्र

लि०--(१) दुष्टक्षत्रियकुलकाल, रेणुकागर्भसंभूत, महादेव प्रधान शिष्य, नारायणावतार महामहोपाध्याय परशुराम विरचित। यह तान्त्रिक दीक्षा विधि का प्रतिपादक है। दीक्षा तीन प्रकार की बतलायी गयी है--शाक्तिकी, शांभवी और मान्त्री। शक्ति का शिष्य में प्रवेश कराने से दीक्षा शाक्तिकी कहलाती है, चरण विन्यास से शांभवी और मन्त्रोपदेश से मांत्री। उपदेष्टा सभी दीक्षाएँ दें या कोई एक दें। इसमें वर्णित विषय हैं--

यागविधि, होमविधि, सब मन्त्रों की सामान्य पद्धति, त्रिशद्वर्णा गायत्री, स्वस्तिदा गायत्री, ऐंद्री गायत्री, दूर दृष्टि सिद्धि प्रदायक चक्षुष्मती विद्या, महाव्याधिनाशिनी विद्या आदि। यह दश काण्ड वाली महोपनिषत् या महात्रैपुर सिद्धान्तमालासर्वस्व कही गयी है। इसका जो प्रतिदिन अनुशीलन करता है वह सब यज्ञों का यष्टा होता है।

—इ० आ० २५८६

(२) श्लोक सं० ५५०, १० खण्डों में पूर्ण। यह ग्रन्थ सूत्र रूप में है तथा मुख्यतया श्रीविद्या का प्रतिपादक है। —ए० वं० ६१६६–६९

(३) इसमें शक्ति के उपासकों की दीक्षा, अन्यान्य धार्मिक (तान्त्रिक) विधियाँ और विविध उत्सवों का वर्णन है। रा० ला० ने नं० १४६७ में विद्याकल्पसूत्र के नाम से इसी का निर्देश किया है। इसके १० खण्ड हैं। आठ खण्ड परिशिष्ट रूप में है। जो कोई १८ खण्ड वाली इस महोपनिषत् का, जो त्रैपुरसिद्धान्तसर्वस्व भी कहलाती है, अनुशीलन (पाठ) करता है वह सब यज्ञों का यष्टा होता है। जिस-जिस क्रतु (यज्ञ) का पाठ करता है उस उससे उसकी इष्टसिद्धि होती है।

—क० का० ८

(४) श्लोक सं० ५३०, पूर्ण। —सं० वि० २४४६८, २६००५

(५) परशुराम कृत। दे० विद्याकल्पसूत्र।

—कैट्. कैट्. १.८५

उ०—आगमतत्त्वविलास में।

प्रसिद्धि है कि इस ग्रन्थ के ५० खण्ड है। यह अभी दक्षिण देश में मिलता है। किन्तु प्रचलित १० खण्ड ही हैं।

कल्पसूत्र की टीकाएँ—

(१) सूत्रतत्त्वविमर्शिनी लक्ष्मणराणाडे कृत। रचना काल १८८८ ई०।

(२) कल्पसूत्रवृत्ति रामेश्वर कृत। रचना-काल शकाब्द १७५३। इन्होंने भास्कर राय को अपना परम गुरु कहा है।

काकचण्डेश्वर

—प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

काकचण्डेश्वरकल्प

लि०—श्लोक सं० ६४८, पूर्ण। —सं. वि. २५१९२

काकचण्डेश्वरीमत

नामान्तर—काकचण्डेश्वरीतन्त्र, महारसायनविधि, काकचण्डेश्वरी और काकचामुण्डा।

लि०—(१) श्लोक सं० ७००। यह ग्रन्थ श्लोकों में रचित है। कैलास-शिखर पर विविध योगिनियों और गणनायकों द्वारा सेवित पञ्चमुख त्रिनेत्र भैरवदेव को प्रसन्नवदन और सानन्द देख काकचण्डेश्वरी देवी (उमादेवी) ने निर्भय महाज्ञान का निर्देश करने के लिए उनसे सविनय निवेदन किया। अल्पमति मानवों द्वारा अति प्राचीन और विशाल वेदराशि का अवगाहन कर उससे सारभूत महाज्ञान प्राप्त करना कठिन जान कर करुणापूर्वक भगवान् भैरव ने नये ढंग से इसमें सर्वोपाधिविनिर्मुक्त महाज्ञान का मुक्ति के लिए निरूपण किया है। इसके अन्त में ओषधियों के बहुत-से नुस्खे दिये गये हैं जिनमें पारद का अंश और प्रभाव विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है। महारसायन का विधान भी इसमें है।
—ने० द० १।१५५

(२) इस प्रति की पुष्पिकाओं में १ से ४र्थ पटल तक के विषयों का उल्लेख नहीं है। केवल प्रथमः पटलः, चतुर्थः पटलः दिया है। तदुपरान्त त्रैलोक्य सुन्दरी गुटिका, जारणपटल, शालमलीकल्प, ब्रह्मदंडीकल्प, काकचण्डेश्वरीकल्प, हरीतकीकल्प, पोटलीपाद रसेन्द्र, जलूका पटल, तालकेश्वर ये विषय दिये गये हैं और अन्त में 'रसायनविधि समाप्त' कहा गया है। यह प्रति पूर्ण मालूम नहीं होती। —इ० आ० २५८७

(३) पन्ने ३५ (१–२७ और २९ से ३६) बीच में १ पन्ना (२८ वाँ) नहीं है। अपूर्ण। —वं० प० ५५७

(४) श्लोक सं० ६७०, पूर्ण। —सं० वि० २५५७७

(५) काकचण्डेश्वरी नाम से लिखित (दे०, महारसायनविधि)।
—कैट्. कैट्. १।८९, २।१७

काङ्क्षेश्वरीसपर्या

लि०—श्लोक सं० १२०। —अ० ब० १२२७८

कात्यायनीकल्प

लि०—पूर्ण। —वं० प० १३९९

कात्यायनीतन्त्र

लि०--(१) श्लोक सं० ५८८, इसकी पुष्पिका में 'कात्यायनीतन्त्रे अष्टसप्ततिः (७८) पटलः' लिखा है। इससे प्रतीत होता है कि शिव-गौरी संवादरूप यह ग्रन्थ ७८ पटलों में है। इसमें कात्यायनी की उत्पत्ति, पूजा, महादुर्गा, जगद्धात्री आदि की उत्पत्ति, पूजा आदि विस्तार से वर्णित है। --नो० सं० २।३१

(२) श्लोक सं० १०४, पटल ३। यह कात्यायनी की पूजा से सम्बद्ध मूल तन्त्रग्रन्थ है। कात्यायनी (दुर्गा) का आविर्भाव धर्म-मर्यादा की रक्षा के लिए हुआ था। आविर्भूत हुई कात्यायनी के समक्ष वायु और अग्नि में तृण तक को भी हिलाने और जलाने में सामर्थ्य का अभाव कथन, जगद्धात्री का स्वरूप निरूपण, उनके मन्त्र, ध्यान आदि का निरूपण, तिथि विशेष पर पूजा करने में विशेष फल कथन।

--रा० ला० २४८८

(३) २०,२१,२२ वाँ और २३ वाँ पटल मात्र। शाक्त सम्प्रदाय से सम्बद्ध मन्त्रों का प्रतिपादक यह शिव-पार्वती संवाद रूप है। इसमें २३ वें पटल का नाम मालामन्त्र-भाग कहा गया है। --म० द० ५५७३

(४) श्लोक सं० ३२८, अपूर्ण। --सं० वि० २६३३९

(५) इसका नामान्तर—देवीमाहात्म्यमन्त्रविभागक्रम है।

--कैट्. कैट्. १।९२

उ०--पुरश्चर्यार्णव में।

कात्यायनीतन्त्रव्याख्या

लि०--(१) श्लोक सं० ५५०। टीकाकार नीलकण्ठ, टीका का नाम मन्त्रव्याख्या-प्रकाशिका, पूर्ण। --सं० वि० २६१९२

(२) श्लोक सं० ३६०, अपूर्ण। व्याख्या का नाम मन्त्रव्याख्याप्रकाशिका।

--र० मं० ५२९५

(३) अपूर्ण। यह कात्यायनीतन्त्र पर व्याख्या है। व्याख्या का नाम नहीं दिया है।

(४) टीका का नाम मन्त्रव्याख्याप्रकाशिका। रंगभट्ट-पुत्र नीलकण्ठकृत (पटल २० से २३)। --कैट्. कैट्. २।१७

कादिमत या कादितन्त्र

नामान्तर--कादिमततन्त्र या षोडशनित्यातन्त्र।

लि०——(१) यह षोडश नित्यातन्त्रों अथवा तन्त्रोक्त सोलह शक्तियों के मन्त्र, मन्त्रोद्धार, पूजा, स्वरूप आदि का प्रतिपादक है। इसमें ३६ पटल हैं और प्रत्येक पटल में १०० श्लोक हैं। विषय——तन्त्रावतार प्रकाशन, नौ नाथों का वैभव, पूजा आदि, षोडशनित्या विद्या का स्वरूप, १. **ललिता नित्या** का सपर्याक्रम, ललितानित्यार्चन, षोडश नित्याओं की नैमित्तिक तथा काम्य पूजा, २. **कामेश्वरीनित्या**-विधान, ३. **भगमालिनी नित्या**विद्या विधान, ४. **नित्यक्लिन्ना नित्या** विद्या, ५. **भेरुण्डा नित्या** विद्या, ६. **वह्निवासिनी नित्या** विद्या, ७. **महावज्रेश्वरी नित्या** विद्या, ८. **शिवदूती नित्या** विद्या, ९. **त्वरिता नित्या** विद्या, १०. **कुलसुन्दरी नित्या** विद्या, ११. **नित्या नित्या** विद्या, १२. **नीलपताका नित्या** विद्या, १३. **विजया नित्या** विद्या, १४. **सर्वमङ्गला नित्या** विद्या, १५. **ज्वालामालिनी नित्या** विद्या तथा १६. **चित्रानित्या** विद्या; सब नित्याओं की बलि, देवता, कुरुकुल्ला विधान, षोडश नित्याओं की अङ्गभूत पाँचवीं वाराही की विद्या, षोडश नित्याओं के ध्यानों का विस्तार, षोडशनित्या मातृका कालव्याप्ति, षोडशनित्या व्याप्ति वैभव प्रकाशक मन्त्र की व्याप्ति का प्रकाशन, षोडशनित्या कालात्मक प्राणव्याप्ति, षोडश नित्याओं का लोककालतादात्म्य, षोडश नित्याओं के होमार्थ मण्डप, कुण्ड आदि का निर्माण, वास्तुदेवतापूजा, षोडशनित्याविद्याभक्तिनिष्ठा, अरिमर्दन विधान, सौम्यहोम विधान, ललिता विद्या का स्वरूप भेद विधान आदि। ——इ० आ० २५३८

(२) श्लोक सं० ३२१२। यह शिवपार्वती संवादरूप ग्रन्थ ३६ पटलों में पूर्ण है। इसमें कुछ अन्तर के साथ पूर्वोक्त ही विषय वर्णित हैं। यह प्रति पूर्ण नहीं है। षोडश निनित्याओं के नामों में त्वरिता के स्थान पर दुरिता, महावज्रेश्वरी के स्थान पर राजेश्वरी, चित्रा के स्थान पर छिन्ना नाम, नित्यक्लिन्ना के स्थान पर नित्यच्छिन्ना तथा शिवदूती के स्थान पर भवद्भूती नाम इसमें दिये गये हैं। कुरुकुल्ला और वाराही दो नाम और दिये हैं।

——रा० ला० ११०९

(३) कादिमत (षोडशनित्यातन्त्रीय)।

——ने० द० १।११५२ (ख)

(४) **लि०**——श्लोक सं० ३५, अपूर्ण (षोडशनित्यातन्त्रान्तर्गत)।

——अ० ब० १२६७५

(५) पटल ३० तक। इस संग्रह में २ प्रतियाँ और हैं। दोनों २३ पटल तक ही हैं। कहा जाता है कि यह ग्रन्थ ३६ पटलों में पूर्ण है और प्रत्येक पटल में १०० श्लोक हैं।

——तँ० म० १२०१८–१२०२०

(६) श्लोक सं० ३४३०, अपूर्ण। --ट्रि० कँ० ९२७

(७) (क) षोडशनित्यातन्त्रान्तर्गत श्लोक सं २५२०, पूर्ण।
(ख) अपूर्ण। --सं० वि० (क) २४५२४, (ख) २५२२५

(८) कादिमत या षोडशनित्यातन्त्र। --कैट्. कैट्. १।९२

उ०--शारदातिलक की राघवभट्टीयटीका, सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्द्धिनी, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, कुण्डमण्डपसिद्धि तथा देवप्रतिष्ठातत्त्व में।

इस ग्रन्थ की मनोरमा टीका की पूर्ति का काल सन् १६०२ ई० बतलाया गया है।

कादिमत पर तीन टीकाएँ--

मनोरमा (१)

लि०--(१) इसकी रचना सुभगानन्दनाथ, नामान्तर प्रपञ्चसार सिंहराज प्रकाश ने की थी। इनका वास्तविक नाम श्रीकण्ठेश था। ये काश्मीर के राजा के गुरु थे। इन्होंने यह टीका दक्षिण देश में लिखी थी जब कि ये रामेश्वर तीर्थ यात्रा के सिलसिले में दक्षिण गये थे और राजा नृसिंह राज के आश्रय में रहे थे। इन्होंने २२ पटल तक ही यह टीका लिखी थी। शेष १४ पटलों की टीका इनके शिष्य प्रकाशानन्द देशिक ने पूर्ण की। टीका की रचना समाप्ति का समय १६६० वि० लिखा है। --इ० आ० २५४०

(२) सुभगानन्दनाथ, नामान्तर प्रपञ्चसार सिंहराजप्रकाश, विरचित, पटल १ ले से २२ वें तक। --क० का० २४, २५

(३) २२ वें पटल तक पूर्ण। --म० द० ५६३५-३७

(४) श्लोक सं० ४१९२, पूर्ण। कादिमतमनोरमा षोडशनित्यातन्त्र की मनोरमा नाम की व्याख्या। --सं० वि० २४९२०

(५) मनोरमा सुभगानन्दनाथ कृत (पटल १ से २२ तक) उनके शिष्य प्रकाशानन्द कृत (पटल २३ से ३६ तक) इसकी पूर्ति हुई सन् १६०२ ई० में।
--कैट्. कैट्. १।९२, २।१७, ३।२०

विद्योपास्तिमहानिधि (२)

(६) यह शिवरामप्रकाश कृत तन्त्रराज की भिन्न टीका है। प्रतिष्ठानिधि, नाथपूजानिधि, विद्यानित्यक्रमनिधि, संक्षेपपूजानिधि, महाचक्रनिधि, नैमित्तिकनिधि, पूर्णाभिषेकनिधि प्रकीर्णकनिधि--ये इस विद्योपास्ति महानिधि में नौ उपनिधियाँ है। विद्योद्धार केवल नाथों से लभ्य है। इसलिए उसका यहाँ वर्णन नहीं किया गया। गुरु-शिष्य का स्वरूप,

गुरु-सेवा और आचार, राशि आदि का शोधन, सर्व प्रतिष्ठा का काल स्वरूप, वर्णों की यन्त्र प्रतिष्ठा, ओषधियाँ, चक्र, मातृकाचक्र का निर्माण, प्राण विद्या विधि, संपुट आदि का स्वरूप, मूर्तिस्थापन कर्म, दक्षिणा का निर्णय, दीक्षा, विद्या प्राप्तिविधि, मन्त्र के दोषों का परिहार, मन्त्रार्थों का निरूपण, चक्र और शिष्य प्रतिष्ठा के प्रयोग, विद्या प्राप्ति के प्रयोग आदि विषय वर्णित है। —म० द० ५६३८

सेतुबन्ध (३)

(७) यह भास्करराय कृत कादिमततन्त्र की व्याख्या है।

—कैट्. कैट्. १।९२, ३।२०

कादिसहस्रनामकला

लि०—(१) श्लोक सं० ५७। महाकालसंहिता में उक्त ककारादि वर्णक्रम वाले कालीसहस्राम स्तोत्र में आये शक्तिपात, सर्ववीरादिसिद्धि आदि गूढार्थ पदों का यह व्याख्यान रूप है। यह व्याख्यान रामानन्द तीर्थ स्वामी कृत है।

—रा० ला० १०३९

(२) महाकालसंहिता में उक्त काली-ककारादिसहस्रनाम की टीका रामानन्द तीर्थकृत। —कैट्. कैट्. १।९२

कापालिकमतव्यवस्था

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र वाराणसीगर्भसंभूत काशीनाथ कृत, श्लोक सं० १००। इसमें शावर मन्त्र से कापालिक सम्प्रदाय के आचार्यों की सूची तथा महाकापालिक मन्त्र का उद्धरण पहले किया गया है। तदुपरान्त कालीशाखा से विभिन्न प्रकार के शावर मन्त्र उनमें वर्णित विशेष पूजा विधि के साथ गिनाये गये हैं। तदुपरान्त इसमें शाबर-मन्त्र साधना प्रकार वर्णित है। अन्त में उन लोगों का वर्णन है जिनके लिए यह अवैदिक प्रकार की पूजा कही गयी है। यह क्रम वीर मार्ग में रत लोगों के लिए ही प्रशस्त है, श्रुति और स्मृति में ही निष्ठावान् वैदिक लोगों का यह संमत नहीं, यों व्यवस्था की गयी है।

—ए० बं० ६४४४

कामकला

नामान्तर—कामकलाविलास, कामकलाङ्गनाविलास।

लि०—(१) पुण्यानन्दनाथ कृत। यह आदिशक्ति की पूजा पर लिखा गया है। "उदितः पुण्यानन्दादिति कामकलाङ्गनाविलासोऽयम्।" इनके गुरु संभवतः श्रीनाथ

थे--"यदनुग्रहेण तीर्णस्तमै श्रीनाथनाविकाय नमः" ग्रन्थान्तिम श्लोक से ऐसा अनुमान होता है। पुण्यानन्दोदितकामकलाविलासः सम्पूर्णः। कामकलामूलं सम्पूर्णम्।

--म० द० ५५७५, ७६, ७७

म० द० में इसकी और भी कई प्रतियाँ हैं।

--सं. वि. २५५०७

(२) श्लोक सं० लगभग ६१५ पूर्ण।

--कैट्. कैट्. १।८२, २।१७, ३।२०

(३) श्लोक सं० ७, अपूर्ण। विशेष विवरण में नित्याषोडशिका-व्याख्या by भास्कर लिखा है।

--अ० ब० १५०४

(४) (क) कामकलाङ्गनाविलास

(ख) कामकलातन्त्र

(ग) कामकलाविलास त्रिपुरसुन्दरी की पूजा पर पुण्यानन्द कृत।

--कैट्. कैट्. १।९२, २।१८ ३।२०

(५) 'कामकलाङ्गनाविलास' पुण्यानन्द मुनीन्द्र कृत। --रा० पु० ५६५०

(६) श्लोक सं० ७५। पुण्यानन्दयोगेन्द्र विरचित।

--ट्रि० कै० ११२७ (ज)

कामकला विलास पर तीन टीकाएँ--

तात्पर्यचन्द्रिका (१)

लि०--श्लोक ९५०। सच्चिदानन्द शिवाभिनव नृसिंह भारती शिष्य शिवचिदानन्द कृत।

--अ० ब० १३१८१

कामकलाव्याख्या (२)

लि०--(१) नटनानन्द कृत। इस प्रति में ४८ श्लोक तक ही टीका है। पुण्यानन्दमुनीन्द्रात्कामकला नाम विश्रुता जाता। आख्यां कांचिदमुष्या नटनानन्दः करोति सव्याख्याम्॥

--म० द० ५५८०,८१

(२) टीकाकार का नाम ज्ञात नहीं हो सका।

--म० द० ५५७७-७९७८

(३) कामकलाव्याख्या 'चिद्वल्ली' श्लोक सं० ९००। ताडपत्र पर ग्रन्थाक्षर में लिखित। टीकाकार नटनानन्दनाथ।

--अ० ब० ६६१२, ५५४७, ५६७६

(४) श्लोक सं० १०२६, पूर्ण। —डे० का० २२५

(५) कामकलाव्याख्या नटनानन्दनाथकृत —कैट्-कैट् १।८२, २।१७, ३।२०

उ०—कामकलाव्याख्या श्रीकृष्णानन्द कृत नटनानन्दनाथ कृत कामकलाव्याख्या में इसका उल्लेख है। —कैट्. कैट्. ३।२०

कामकलाबिलासभाष्य (३)

लि०—श्लोक सं० ३०० । कमलाकर-पुत्र शङ्कर कृत। —अ० ब० १०२५५

अ० ब० में बिना नाम और कर्ता की और भी कई व्याख्याएँ है। नं० १०८२८, १०७६५ आदि।

कामकलाकालीस्तोत्र

लि०—(१) श्लोक सं० ८०, पूर्ण। यह आदिनाथ विरचित महाकालसंहिता के अन्तर्गत है। यह गद्यमय है। यह यद्यपि स्तोत्र कहा गया है पर इसकी शैली मालामन्त्र की सी है। महाकाल कहते हैं—"अथ वक्ष्ये महेशानि महापातकनाशनम्। गद्यं सहस्र-नाम्नस्तु संजीवनतया स्थितम्।" अन्त में कहा है "इतीदं गद्यमुदितं मन्त्ररूपं वरानने।" —ए० बं० ६६३४

(२) श्लोक सं० लगभग ६८, पूर्ण। नाम केवल 'कामकलास्तोत्र' लिखा है 'काली' पद नहीं है। —सं० वि० १८९४१

कामकलाध्यान

लि०—श्लोक सं० १५००। —अ० ब० १००६३

कामदतन्त्र

लि०—श्लोक सं० २१६, अपूर्ण। आरंभ के ५ पटल नहीं हैं। ६ठे से ९म तक केवल ४ ही पटल हैं। नवम के बाद के पटल भी कितने हैं यह ज्ञात नहीं। ६ठे पटल के आदि वाक्य से ज्ञात होता है कि यह शिव-पार्वती संवादरूप है। इसके विषय है—कलियुग में काली ही सिद्धिदात्री हैं। उनकी पूजा के लिए शिखाहीन जपा पुष्प आदि का विधान, उनकी पूजा में कमल तथा बिल्वपत्रों की प्रशस्तता, बिल्व पत्रों के बिना शिवा और शिव की पूजा की निष्फलता, कनेर, धत्तूर, कुन्द, मल्लिका, केतकी आदि पुष्पों द्वारा पूजा करने पर प्रत्येक का फल वर्णन। कलियुग में कार्य करने में असमर्थ कलुषितचित्त आलसी पुरुषों की तन्त्र-पूजा के अभाव में कैसे गति हो? इस प्रश्न पर केवल काली-नाम स्मरण से ही उनकी गति हो जाती है, यह बहुधा कथन। अत्यन्त पापी काञ्चनपुर निवासी बहुलोमा नामक ब्राह्मण

ने मृत्यु-काल में 'काली' ये अक्षर सुने उसका फल एवं कार्त्तिक में काली पूजा अवश्य कर्तव्य है, यह कथन। —रा० ला० १०६१

कामधेनुतन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० ९८०। यह शिव-पार्वती संवादरूप तन्त्र २४ पटलों में है। २२, २३ और २४ वें पटल के विषय क्रम से यों दिये गये हैं—चन्द्र या सूर्य पर्व में यदि पूर्ण आकाश मेघाच्छन्न रहे तो जप, होम आदि कैसे करना, पार्थिव लिंग पूजा और उसका फल तथा मालारहस्य। —ए० बं० ६०३२

(२) श्लोक सं० ७४२, २१ पटल। यह महादेव-पार्वती संवादरूप है। पार्वतीजी के यह निवेदन करने पर कि हे देवदेव, यदि आप की मेरे ऊपर कृपा हो तो पचास वर्णों का तात्त्विक रूप मुझसे कहने की कृपा करें। इसपर भगवान् ने कहा मैं यह गुप्त रहस्य कहता हूँ जिसके विज्ञान मात्र से मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है। इसके २१ पटलों के विषय यों दिये गये हैं—अक्षरों के तत्त्व, वर्ण आदि का निर्णय, मातृका-मन्त्र निर्णय, मातृका का तात्त्विक अर्थ, मन्त्र का जीवन्यास क्रम, मातृका-मूर्ति, न्यास, नाम आदि का कथन, बीज-ध्यान निर्णय, अन्य जीवन्यास, वर्णाधिदेवी के ध्यान आदि, मन्त्र, बीज, ध्यान–तत्त्वत्रयादि वर्णन, वकारककार ध्यान, तिलकविधि, हृत्तत्त्व आदि का निरूपण, संदीपिनी विद्या विधान, ककारोपासनादि क्रम, विद्यान्तर विधान निरूपण, निद्रा भङ्ग, विद्यादि वर्णन, मन्त्र-जप समर्पण निर्णय, कामिनी जप-गुण, कालगुण आदि का वर्णन। —ज० का० ९९२

(३) यह तन्त्र ग्रन्थ २४ पटलों में पूर्ण है। मन्त्र या बीज, जो वर्णमाला के ५० अक्षरों के अनुसार ५० हैं, इसमें प्रतिपादित है। यह शिव-पार्वती संवादरूप अतिरहस्य विषय है। इसके विज्ञानमात्र से मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है।

—क० का० ९

(४) श्लोक सं० ३००, केवल १५ पटल तक। अपूर्ण। एक प्रति और अपूर्ण है, जिसका नं० १०१४३ है।

—अ० ब० १०२५३

(५) श्लोक सं० ४३२, पूर्ण। ३ प्रतियाँ और हैं। सभी अपूर्ण नं० २४२०७, २५०११ और २५३३८। —सं. वि. २४९०६

(६) श्लोक सं० ८२५। यह देव-देवी संवादरूप आगम-सन्दर्भ ज्ञानदर्पण कामधेनुतन्त्र के अन्तर्गत गायत्रीब्राह्मणोल्लासतन्त्र मात्र है। इसमें ५ पटल कहे गये हैं। उनके विषय

हैं: १–ध्यान, जप आदि विविध गायत्र्युपयोगी विधान कथन, २–"भूः' आदि व्याहृतियों का अर्थ निरूपण, ३–गायत्री का जपनीय स्वरूपादि कथन, ४–गायत्री के आवाहन, यज्ञोपवीत निर्माण आदि कथन, सन्ध्योपासनादि की उक्ति। यह विषय वर्णन पूर्वोक्त कामधेनुतन्त्र में उक्त विषयों के वर्णन से मेल नहीं खाता। अतः यह ग्रन्थान्तर हो सकता है।

—रा० ला० ४८१

(७) २४ पटलों में। —कैट्. कैट्. १।९३, ३।२०

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, आगमतत्त्वविलास तथा शाक्तानन्दतरङ्गिणी में।

कामरत्न

लि०—(१) यह जादू-टोने, वशीकरण, मोहन आदि यक्षिणी-साधनान्त विविध विषयों का समुद्र अद्‌भुत ग्रन्थरत्न १६ उपदेशों में पूर्ण है। इसके निर्माता श्रीनाथ हैं। वश्य, आकर्षण आदि कर्म कब करने चाहिए इस विषय पर भी इसमें प्रकाश डाला गया है। जैसे वश्य, आकर्षण आदि वसन्त में, विद्वेषण ग्रीष्म में, स्तम्भन वर्षा में, मारण शिशिर में, शान्तिक शरद् में और पौष्टिक कर्म हेमन्त में करने चाहिए। जड़ी-बूटी उखाड़ने के मन्त्र, वार, तिथि, नक्षत्र आदि भी बतलाये गये हैं। इसके १६ उपदेशों में वर्णित विषय यों है : १–वशीकरण, २–आकर्षण, ३–युद्धजयादि, व्याघ्रनिवारण, ४–स्तंभन, ५–मोहन–केशादिरञ्जन, ६–बीजवर्द्धन, ७–गाढीकरण आदि लोमशातनान्त, ८–कलहादिकरण का उपदेश, ९–अरिष्टनाशन, गोमहिषी आदि का दुग्धवर्द्धन, १०,११–नाना कौतुक, १२–कामसिद्ध्यादि, अनावृष्टिकरण, १३–निधिदरशाने वाले अंजनादि, मृतसंजीवन, १४–विषनिवारण, १५–यक्षिणीसाधन तथा रसादिशोधन, मारण। अन्तिम पुष्पिका यों हैं—'श्रीनाथविरचिते कामरत्ने रसादिशोधन मारणं नाम षोडशोपदेशः।'

—इ० आ० २६३४

(२) (क) श्लोक सं० १२००। १५ उपदेशों में पूर्ण। नं. ६५४३ (ख) प्रति १६ उपदेशों में पूर्ण है। इसकी पृष्ठ सं० १२२ है। बीच में २ पन्ने गायब है, अपूर्ण। इनके अतिरिक्त (ग) चार प्रतियाँ हैं। सभी अपूर्ण हैं। इस ग्रन्थ में तान्त्रिक षट्कर्म तथा और भी कई जादू-टोने, यन्त्र-मंत्र, जड़ी-बूटी और कौतुकों का वर्णन है।

—ए० बं० (क) ६५४१, (ख) ६५४३, (ग) ६५४०,६५४२,६५४४,३५४५

(३) श्लोक सं० ८९२। गद्य और पद्य दोनों में रचित तान्त्रिक षट्कर्म तथा अन्यान्य कौतुकों का प्रतिपादक यह ग्रन्थ नाना तन्त्रों से संगृहीत है। इसमें वशीकरण से लेकर

यक्षिणीसाधन पर्यन्त प्रयोग हैं। इस प्रति में केवल १० ही उपदेश हैं । अपूर्ण । विषय— वशीकरण आदि कर्मों के लिए ऋतुनिर्णय, जड़ी-बूटी आदि उखाड़ने के लिए तिथि, नक्षत्र और अंगुलि का निर्णय, साधारण प्रयोग, वशीकरण में—सर्ववशीकरण, राज-वशीकरण इत्यादि सर्वजनाकर्षणादि आकर्षण प्रयोग, युद्धजयादि, व्याघ्रसिंह निवारण, शत्रुमुख-स्तंभन से लेकर शुक्रस्तंभन तक विविध स्तंभनों का प्रयोग, सर्वजन मोहनादि से लेकर केशरञ्जन पर्यन्त विविध मोहन प्रयोग, वाजीकरण, गाढीकरण, स्त्रीद्रावण आदि विविध प्रयोग, खण्डीकरण, साम्य, भगबन्धन, भगमोचन, नष्टपुष्पा-पुष्पकरण, गर्भस्रावण; बहुरक्तपात निवारण, सुखप्रसव, पुष्परक्षण, वन्ध्या गर्भ धारण, मृतवत्सा चिकित्सा, गर्भस्रावरक्षण आदि, सर्वारिष्ट विनाशपूर्वक रक्षादि के प्रयोग, इसके बाद खण्डित है। —रा० ला० ९९१

(४) श्लोक सं० १७००। इसमें बहुत-सी अमोघ ओषधियाँ प्रदर्शित हैं। इसके रचयिता का नाम निमिनाथ दिया गया है। (ख) कर्ता का नाम नित्यनाथ है। इस अपूर्ण प्रति में प्रारंभिक १५० श्लोक हैं। (ग) श्लोक सं० १७००। इसमें कर्ता का नाम श्रीनाथ दिया है। —अ० व० १५६०, (ख) १०४२, (ग) ८३१५

(५) पूर्ण। —बं० प० १४११

(६) श्लोक सं० १७००, पूर्ण। कर्ता श्रीनाथ। नामान्तर—पार्वतीनाथ भी दिया गया है। —र० मं० ४९२५

(७) रचयिता का नाम नागभट्ट लिखा है। संभवतः श्रीनाथभट्ट को श्री पृथक् कर नाथभट्ट ही थ को ग समझकर नागभट्ट लिखा गया है। —ज० का० ९९४

(८) श्लोक सं० ९१५, यह प्रति पूर्ण कही गयी है पर इसके भी पूर्ण होने में सन्देह है।

इसके अतिरिक्त कामरत्न नाम से ७ और कामरत्नतन्त्र नाम से ४ पुस्तकें और हैं जिनके नं० क्रमशः—२३८३५, २४६७५, २४९९३, २५२६८, २५४५८, २५८८४, २६०६६ ये कामरत्न की अपूर्ण प्रतियों के नंबर हैं। कामरत्न तन्त्र के नं० ये हैं—२३९५२, २४६७६, २४९, २५७४४। इनमें किसी में कर्त्ता का नाम श्रीनाथ लिखा है, तो किसी में नित्यनाथ। —सं० वि० २५५७६

(९) पूर्ण, शकाब्द १७३० में लिखित। —भ० रि० ७२

[भ. रि. में इसके अतिरिक्त नं० ७३ (पन्ने २२), नं० ७४ (पन्ने १८), नं० ७५ (पन्ने ६७) तथा नं० ७६ (पन्ने ९१) की ४ प्रतियाँ और हैं। इनमें अन्तिम के सिवा सभी अपूर्ण प्रतीत होती हैं।]

(१०) नित्यनाथ कृत, (उड्डीश के आठवें अध्याय पर आधारित)। दूसरी प्रति में श्रीनाथ भट्ट कृत लिखा है।

—कैट्. कैट्. १।९३, २।१८, ३।२०

उ०—शक्तिरत्नाकर, प्राणतोषिणी तथा मन्त्रमहार्णव में।

मु०—इसका एक संस्करण १८४२ शकाब्द में लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई में प्रकाशित हुआ है। उसमें कर्ता का नाम नित्यनाथ बतलाया गया है।

कामराज

लि०—श्लोक सं० १०, पूर्ण। नाम कामराजमहामन्त्र लिखा है।

—सं० वि० २५१७३

उ०—आगमतत्त्वविलास में।

कामराजकीलितोद्धारोपनिषत्

लि०—श्लोक सं० २०। यह अथर्वणशाखोक्त कहा गया है।

—ए० बं० ६१३६

कामरूतन्त्र

लि०—श्लोक सं० ४४२, अपूर्ण। इसमें तान्त्रिक जादुई, औषधियों के निर्माणार्थ विधियों और मन्त्रोच्चारण बतलाये गये हैं। यह महारहस्य शिव-काली संवादरूप है। इसमें मन्त्रावली, कामरत्नावली, विषसाधन आदि चार अध्याय हैं।

—ए० बं० ६१५८

कामरूपनिबन्ध

लि०—(१) इसका वास्तविक नाम, पुष्पिका में 'राजनिर्णय' दिया है।

—वं० प १४१७

(२) श्लोक सं० १०००। हर-पार्वती संवादरूप। इस ग्रन्थ में राजनिर्णय, वसिष्ठशाप, चक्रवर्तियों के नियम आदि का वर्णन है। यह खण्डित है और कामरूपीय-निबन्धतन्त्र के नाम से निर्दिष्ट है। —रा० ला० ३१३

उ०—रघुनन्दन तथा कमलाकर ने अपने ग्रन्थों में इसका उल्लेख किया है।

—कैट्. कैट्. १।९३

कामरूपयात्रापद्धति

लि०——श्लोक सं० १७८०। यह १० पटलों में पूर्ण है। कामरूप (कामाख्या) के यात्रियों की सुविधा के लिए यह कामरूपयात्रापद्धति हलिराम शर्मा ने रची। इस ग्रन्थ के विषय हैं : १– कामरूप शब्द की व्युत्पत्ति, कामाख्या की पाँच देवी-मूर्तियों की पूजा का माहात्म्य, यात्रियों के कर्तव्य, कामाख्या-पूजा का समय, मणिकूट तीर्थयात्रा का माहात्म्य; कामरूपक्षेत्र के माहात्म्य आदि का वर्णन, २ – अश्वक्रान्ततीर्थ आदि की यात्राविधि, ३ – मणिकर्णिकेश्वर आदि की यात्राविधि, पाण्डुनाथ पर्वत गमन आदि का वर्णन, ५ तथा ६– कामाख्या यात्रा, पूजन आदि वर्णन, ७– हयग्रीव विष्णु यात्रा, पूजादि की विधि, ८– दिक्पालादि यात्रा, ९ – संक्षेपतः यात्रा वर्णन, तथा १० – कामाख्या आदि पञ्च देवी-मूर्तियों की पूजा। ——रा० ला० ४०६

कामाख्यातन्त्र

लि०——(१) कामाख्या देवी की पूजा पर पार्वती-ईश्वर संवादरूप यह मूल तन्त्र ७ पटलों में पूर्ण है। भगवान् शिव देवीजी से कहते हैं कि तुम्हारे स्नेह से हमने यह ब्रह्मतन्त्र कहा। इसका कदापि प्रकाश न करना, यह सदा गोपनीय, सदा गोपनीय और सदा गोपनीय है। पशु के निकट तो यह विशेष रूप से गोपनीय है। शान्त शुद्ध कौलिक तथा कालीभक्त शैव को इसका उपदेश देना चाहिए। ——इ० आ० २५८४,८५

(२) श्लोक सं० ४५०। यह नौ पटलों में पूर्ण है।

——ए० बं० ६०२६,२७

(३) श्लोक सं० ४०१। पार्वती-ईश्वर संवादरूप यह मूल कौल तन्त्र ८ पटलों में पूर्ण है। इसमें योनिरूपा वरदायिनी कामाख्या महाविद्या की कौलाचार के अनुरूप पूजा वर्णित है। विषय है, १–कामाख्या महादेवी तथा उनके इस तन्त्र की उत्कृष्टता, २–कामाख्या-मन्त्रोद्धार, कामाख्या-पूजा प्रकार, योनिपूजा, वहीं पर देवी की स्थिति होने के कारण उसकी पूजा के बिना देवी की सिद्धि संभव नहीं। इसलिए उसकी पूजा अवश्य कर्तव्य है। सामान्य योनियों में परस्त्री-योनियों के प्रशस्त होने पर भी वेश्या-योनि की पूजा का फल-प्राशस्त्य, ३–वरमन्त्रोद्धार, उसके ध्यान आदि, जप प्रकार आदि, ४–सद्गुरु-लक्षण, ज्ञान की प्रशंसा, पशु गुरुलक्षण, उससे मन्त्रग्रहण की निन्दा, दिव्य, वीर और पशु भेदसे मनुष्यों की त्रिविधता, उनके लक्षण, ५–पञ्चतत्त्वों से पूजा की आवश्यकता में युक्तियाँ, उनके बिना पूजा की असिद्धि आदि, ६–मारण, उच्चाटन, शुक्र, शोणित और मूत्र की

शुद्धता में शिववाक्य, ब्रह्मज्ञान, ब्रह्मज्ञानियों की प्रशंसा, सवर, सदीक्ष, शुद्ध वेदपारग ब्राह्मण की प्रशंसा, ७–पूर्णाभिषेक, पूर्णाभिषेचन कर्म कराने में गुरु विशेष की अधिकारिता, कौलिक ब्राह्मण की प्रशंसा, ८–मुक्ति-निरूपण, मुक्तियों के स्वरूपों का निरूपण, मुक्ति के साधन, कुलज्ञान की विधि, कुलमन्त्र के लाभ में प्रशंसा, ९–कामाख्या देवी का स्वरूप, कामाख्या-तन्त्र के पठन, पाठन, श्रवण और श्रावण से अभिलषित सिद्धि कथन, कामाख्या-मन्त्र से अधिकृत देश के रोगादिनाशन, दस्यु आदि वाहरी भीतियों का नाशन, सात पुश्तों तक सम्पत्ति आदि प्राप्ति कथन द्वारा अत्यधिक प्रशंसा, अन्त में इस रहस्य तन्त्र के गोपन की विधि तथा अधिकारी के निरूपण के बहाने उपदेश्य और अनुपदेश्यों का कथन।

—रा० ला० १०६७

(४) (क) शिवप्रोक्त (पार्वती-ईश्वर संवादरूप) यह तन्त्र ९ पटलों में विभक्त है। विषय हैं—तन्त्र का उपोद्घात, कामाख्या-मन्त्र का माहात्म्य, उसका उद्धार तथा ध्यान, पूजादि का निर्णय। अन्य मन्त्रों का साधन, उनका ध्यान तथा लतासाधन-निरूपण। गुरुतत्त्व-वर्णन, दिव्य, वीर तथा पशु के लक्षण। पञ्चतत्त्वों से आराधनीय देवी की अन्यान्य साधनाओं का वर्णन, शत्रुनाशन, उच्चाटन आदि, शुक्रादि की शुद्धि का वर्णन, पूर्णाभिषेक, उसके मन्त्र, कौलाधिकार, गुरु आदि का निर्वाचन, मुक्तितत्त्व का निर्णय, कामाख्यातत्त्व और तन्त्र की प्रशंसा आदि। —ज० का० ९९५

(५) नवम पटलान्त, अपूर्ण। इस ग्रन्थ के ७ पटलों में गुणादि दीक्षा का विधान है। लिपिकाल शकाब्द १७३१ है। —वं० प० १२४६

(६) पूर्ण। —सं० वि० २४९२९

[सं. वि. में ३ पुस्तकें और हैं। उनके नं० २४६१५, २६३३६ तथा २६४३४ हैं इनमें अन्तिम पूर्ण है, आदि की दो अपूर्ण।]

(७) दे०, उत्तरकामाख्या। —कैट्. कैट्. १।९४

उ०—मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी तथा कालिकासपर्याविधि में।

कामाख्यागुह्य

लि०—तन्त्रों के कतिपय ताड़पत्रों में से एक पर लिखा है—'इति श्रीमद् मत्स्येन्द्रनाथावतारिते श्रीकामाख्यागुह्ये सिद्ध्यष्टमः।' इससे मत्स्येन्द्रनाथ कृत कामाख्यागुह्य नाम का तन्त्र ग्रन्थ था यह सिद्ध होता है। दूसरी किसी प्रति का पता नहीं चल सका।

—ने० द० २।३२

कामिकतन्त्र

लि०—कामिकतन्त्रे अङ्गलिङ्गप्रतिष्ठा।

—कैट्. कैट्. १।९४

उ०—तन्त्रकौमुदी तथा हेमाद्रिदानखण्ड में।

कामिकागम

नामान्तर—कामिक अथवा अकामज।

लि०—(१) श्लोक सं० १०००। क्रियापाद के ९ से ४० पटल हैं, ४१ वाँ पटल चालू है। —अ० व० ७९७३

(२) प्रस्तुत प्रति इस महान् ग्रन्थ का केवल एक अल्प अंशमात्र है। यह पूजा और उत्सवों पर है। इसकी श्लोक सं० लगभग ६००० है। इसकी पटल सं० ८५ से १७४ है। अन्त में सुप्रभेदतन्त्र के क्रियापाद का ५१ वाँ अध्याय है।

—तैं० म० ११,३८१

(३) कामिकतन्त्र, कामिकागम। —कैट्. कैट्. १।९४

उ०—तन्त्रालोक की टीका जयरथी, शतरत्नसंग्रह तथा तन्त्रकौमुदी में।

कामेशार्चनचन्द्रिका

लि०—(१) श्लोक सं० ६००, पूर्ण। यह भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ रचित ग्रन्थ तीन प्रकाशों में विभक्त है। इसमें कामेश्वर शिवजी की पूजापद्धति वर्णित है। इस पद्धति के समर्थन में वहुत-से आकरग्रन्थों के वचन प्रमाण रूप से इसमें उद्धृत किये गये हैं।

विषय—शिवजी की महत्ता तथा सर्वश्रेष्ठता, साधकों के प्रातः कृत्य तथा देवपूजन में योग्यता प्राप्त करने के लिए न्यास आदि तथा बाह्यपूजा, कलशस्थापन, विशेषार्घ्य, पूजा, पुरश्चरण आदि। —ए० बं० ६४५९

कामेश्वरतन्त्र

लि०—(१) कामेश्वरतन्त्रे यन्त्रसंस्कारपद्धतिः।

—कैट्. कैट्. २।१८

उ०—कामकलाविलास की टीका चिद्वल्ली में।

कामेश्वरपञ्चाङ्ग

लि०--(१) श्लोक सं० ३६८, पूर्ण। --डे० का० २२६

(२) (क) विश्वोद्धारतन्त्र से गृहीत।

(ख) विश्वसारतन्त्र से गृहीत।

--कैट. कैट्. १।९४, २।१८

काम्यदीपदानपद्धति

लि०--(१) श्लोक सं० ६७५। सदाशिवसंहिता, उड्डामर, यामल, मेरु आदि तन्त्रों में भगवान् महाविष्णु कातवीर्यार्जुन का साक्षात् या परम्परा द्वारा अनुष्ठेय काम्य दीपदान कर्म, ग्रन्थकार उमापति-पुत्र प्रेमनिधि पन्त द्वारा, इसमें प्रतिपादित है। यह ग्रन्थ अपूर्ण प्रतीत होता है। --ने० द० २।२६० (इ)

(२) (क) श्लोक सं० १६००। इस प्रति का लिपि-काल शकाब्द १७३६ है।

(ख) श्लोक सं० ८००। ग्रन्थकर्ता प्रेमनिधि।

--अ० ब० (क) ५६३५, (ख) ५६९५

उमापति-पुत्र गुणवती-गर्भ संभूत कूर्माचलीय वाराणसीवासी प्रेमनिधि पन्त ने अनेक ग्रन्थ रचे हैं। जिनमें से कतिपय नीचे दिये जाते हैं--१. अन्तर्यागरत्न, २. काम्यदीपदान-पद्धति, ३. घृतदानपद्धति, ४. तन्त्रराजटीका सुदर्शन, ५. दीपदानरत्न, ६. दीपप्रकाश और उसकी टीका, ७. प्रयोगरत्न, ८. प्रयोगरत्नक्रोड, प्रयोगरत्नसंस्कार, प्रयोग-रत्नाकर, बहिर्यागरत्न, भक्तव्रातसंतोषक, भक्तितरङ्गिणी, मल्लादर्श, मूलप्रकाश यह संभवतः दीपप्रकाश की टीका है, लवणदानरत्न, शक्तिसगमतन्त्रटीका, शब्दार्थ-चिन्तामणि, शारदातिलकटीका।

(३) प्रेमनिधि कृत। --कैट्. कैट्. १।९५

काम्ययन्त्रोद्धार

लि०--श्लोक सं० ५००। इसके निर्माता महामहोपाध्याय सत्पण्डित परिव्राजकाचार्य है। मातृकायन्त्र आदि सब यन्त्रों को लिखने की विधि इसमें वर्णित है। ग्रन्थकार ने नाना मूल आगमों से सारग्रहण कर इसका निर्माण किया। इस प्रति का लिपि-काल शकाब्द १२९७ दिया गया है। आचार्य इन यन्त्रों को केसर, गोरोचन, लाह, कस्तूरी,

गजमद और चन्दन से सुवर्ण की लेखनी द्वारा लिखे। मन्त्रसाधक यन्त्र को भूमिष्ठ, विषस्थ, दग्ध, निर्माल्यमिश्रित, लंघित और खण्डित कभी न करे।

—नो० सं० ३।५३

कारणागम

लि०—(क) श्लोक सं० ६००० । पटल १ से ८४ तक। यह प्रतिष्ठातन्त्र का क्रियापाद है। यह किरणागम के मतानुसार दश शिवागमों में अन्यतम है। मतान्तर में इसके स्थान पर १० शिवागमों में मुकुटागम माना जाता है। यह १८५ पन्ने की अपूर्ण तथा अत्यन्त जीर्ण शीर्ण प्रति है। (ख) प्रथम खण्ड मात्र है। (ग) केवल किरणा गमतन्त्रस्थ रामेश्वर-पूजा प्रतिपादित है। (घ) और (ङ) में शिवविवाह-प्रयोग है। (च) रत्नलिङ्ग-स्थापनविधि प्रतिपादित है। और (छ) उत्सवप्रकरण का वर्णन है।

—तं० म०(क) ११३८२, (ख) ३६२३, (ग) ३६२६, (घ) ३६३२, (ङ) ३६३३, (च) ३६४४, (छ) ३६४९

कार्तवीर्यकल्प या सहस्रार्जुनकल्प

अथवा

कार्तवीर्यार्जुनकल्प

लि०—(१) (क) श्लोक सं० १८९०। सुदर्शनसंहिता उत्तरखण्ड से गृहीत। अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० १५००, यह २६ पटल तक है। (ग) श्लोक सं० ५००, इसका लिपि-काल शकाब्द १७३६ है। (घ) श्लोक सं० ३००, प्रथम पटल की पुष्पिका में यह सहस्रार्जुनकल्प कहा गया है। (ङ) श्लोक सं० ४२०। (च) श्लोक सं० २५००। यह भी सहस्रार्जुनकल्प के नाम से अभिहित है। (छ) श्लोक सं० २००।

—अ० व० (क) ८०१० (क), (ख) ९५९६, (ग) ७०८०, (घ) ३४२९, (ङ) ५५४८, (च) ६५७५, (छ) १००६२

(२) श्लोक सं० १०५, पूर्ण। लिपि-काल १७९८ वि.। (ख) अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २५४९५, (ख) ३५७९०

(३) —कैट्. कैट्. १।९५

कार्तवीर्यदीपदान

लि०--(१) श्लोक सं० २८०। --अ० ब० ३४२५

(२) श्लोक सं० ३१। अपूर्ण। --सं० वि० २६६३३

कार्तवीर्यदीपदानपद्धति

लि०--(१) (क) श्लोक सं० २५०, कमलाकरभट्ट कृत।
(ख) श्लोक सं० २००।
--अ० ब० (क) १२०३६, (ख) ४९९८

(२) श्लोक स० लगभग १८७, पूर्ण। कमलाकरभट्ट कृत।
--सं० वि० २५२७५

(३) श्लोक सं० २५०। इसमें ग्रन्थकार का नाम लक्ष्मणदेशिक लिखा है। परन्तु प्रमाण कोई उद्धृत नहीं है। इसमें कार्तवीय भगवान् की प्रीति के लिए किये जाने वाले दीपदान का विवरण दिया गया है। और लिखा है--वसन्त, शिशिर, हेमन्त अथवा वर्षा और शरद में, वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन मासों में दीपदान करना चाहिए। --रा० ला० २३७

कार्तवीर्यदीपदानप्रयोग

लि०--(१) (क) श्लोक सं० ३५०। लिपिकाल संवत् १७७१। (ख) श्लोक सं० २०९। --अ० ब० (क) २०२०, (ख) ५७७०

(२) (क) श्लोक सं० २८५। इसके कर्ता का नाम कमलाकरभट्ट दिया हुआ है। विशेष विवरण में यह सुदर्शनसंहिता के अन्तर्गत कहा गया है। पूर्ण।
(ख) श्लोक सं० २००, पूर्ण।
--सं० वि० (क) २६६१७, (ख) २६६४७

कार्तवीर्यदीपदानविधि

लि०--(१) कार्तवीर्य भगवान् को प्रज्वलित दीप-प्रदान करने की विधि इसमें वर्णित है। यह दीपदान वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन मासों में किया जाता है। यह ग्रन्थ उमामहेश्वर संवादरूप है।
--बी० कै० १२७४

(२) (क) श्लोक सं० ३००। (ख) श्लोक सं० २३०।

—अ० व० (क) २२५९, (ख) १००६२

(३) (क) श्लोक सं० २८०, पूर्ण, उड्डामरतन्त्रान्तर्गत।

(ख) श्लोक सं० १३२, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० १५२ पूर्ण।

(घ) श्लोक सं० ५२६, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४२८६, (ख) २४३२२, (ग) २५३७९, (घ) २५४१३

कार्तवीर्यनित्यदीपदानविधि

लि०—पत्रे ५। —रा० पु० ६६६२

कार्तवीर्यपूजापद्धति

लि०—(१) अपूर्ण। इसमें कार्तवीर्य के विभिन्न मन्त्रों—मालामन्त्र, अस्त्रोपसंहरण-मन्त्र तथा महामन्त्र—से पूजाविधि निर्दिष्ट है। —ए० वं० ६५१३

(२) श्लोक सं० २०४, अपूर्ण। —सं. वि. २४३२१

(३) इसमें कार्तवीर्य-पूजा की विधि वर्णित है। नाम 'कार्तवीर्यपद्धति' है।

—बी० कै० १२७५

(४) (क) श्लोक सं० ९५०, पुरुषोत्तम कृत।

(ख) श्लोक स० २५०। इसका नाम भी कार्तवीर्यपद्धति है।

—अ० व० (क) ३४२७, (ख) ५७६७

कार्तवीर्यपूजाप्रयोग

लि०—श्लोक सं० ४६। लिपिकाल संवत् १८१९। पूर्ण।

—स० वि० २६६०५

कार्तवीर्यप्रयोग

लि०—(१) श्लोक सं० ३५०। —अ० ब० ४९९८

(२) (क) श्लोक सं० १७४५, पूर्ण। चन्द्रचूड कृत। (ख) श्लोक सं० २८७, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० १५०, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २३९५४, (ख) २४२३९, (ग) २४३६७

कार्तवीर्यमन्त्र

लि०—पूर्ण। इसमें भगवान् कार्तवीर्य के २० अक्षर के मन्त्र की जपविधि वर्णित है।
—ए० बं० ६५१४

कार्तवीर्यविधिरत्न

लि०—(१) श्लोक सं० १३८०, शिवानन्दभट्ट विरचित।
—अ० ब० १२८००

(२) श्लोक सं० ५०६। शिवानन्दकृत, अपूर्ण। —सं० वि० २५३८०

कार्तवीर्यार्जुनदीपचिन्तामणि

लि०—श्लोक सं० २२०। महेश्वरभट्ट कृत।
—अ० ब० ३४२४

कालचक्रतन्त्र

लि०—श्लोक सं० ३०००, आदिबुद्ध द्वारा उद्धृत यह तन्त्र ५ पटलों में पूर्ण है। इसके ५ पटलों के विषय यों वर्णित हैं—१. लोकधातुविन्यास, २. अध्यात्मनिर्णय, ३. अभिषेक, ४. साधन, ५. ज्ञान।
—ने० द० २।२९२ (क)

—श्रीकण्ठी के मतानुसार यह ६४ तन्त्रों में अन्यतम और चक्राष्टक वर्ग में है।

कालचण्डीश्वरतन्त्र

उ०—दत्तात्रेयतन्त्र में।

कालज्ञान या कालोत्तर

लि०—(१) यह १८ पटलों में पूर्ण है। अन्तिम पुष्पिका में 'इति कालोत्तरे अष्टादशः पटलः' लिखा है। दशम पटल की पुष्पिका में 'कालज्ञाने' इति के बाद 'दशमपटलः' लिखा है। यह अपूर्ण है। —ने० द० १।१६३४ (च)

(२) प्रारंभिक श्लोक सं० १७। अपूर्ण। महेश्वरभाषित। इसमें शिव-कार्तिकेय संवाद से सकल और निष्कल के स्वरूप का निर्देश करते हुए परमात्मा की सर्वव्यापकता—पुरुष के शरीर में बाह्याभ्यन्तर स्थिति बतायी गयी है। त्रिमात्र, द्विमात्र, एकमात्र, अर्धमात्रा परा सूक्ष्म है। उससे पर परात्पर है। ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, महेश्वर और पाँचवें शिव हैं।

ब्रह्मा हृदय में, विष्णु कण्ठ में, रुद्र तालु के मध्य में, महेश्वर ललाट में स्थित हैं तथा नादाग्र को शिव जानना चाहिए। नादान्त परापर है। पर से परतर नहीं है, यह शास्त्र का निश्चय है। कार्तिकेयजी ने भगवान् शिवजी से प्रश्न किया कि ऐसा जो परात्पर तत्त्व है उसके गमनागमन कैसे हो सकते हैं? आप मेरे सन्देह को निवृत्त करने की कृपा करें। महेश्वर ने उसी का इसमें समाधान किया है।

—ने० द० २।२६२ (ख)

कालतन्त्र

लि०—दक्षिणकालीकवच मात्र। —कैट्. कैट्. ११९७

कालपरा

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

कालभैरवतन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी में।

कालरात्रिकल्प

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ५५०। पार्वती-ईश्वर संवादरूप यह ग्रन्थ १३ पटलों में पूर्ण है। इसमें देवी कालरात्रि की पूजा का विवरण है एवं उक्त देवी के मन्त्रों द्वारा मारण, मोहन, स्तंभन आदि षट्कर्मों की सिद्धि कही गयी है। चार पुष्पिकाओं के अनुसार यह ग्रन्थ रुद्रयामलान्तर्गत और एक पुष्पिका के अनुसार आगमसार से सम्बद्ध कहा गया है। मन्त्रमहिमा, मन्त्रस्वरूप, मन्त्रोद्धार आदि विषय इसमें वर्णित हैं। (ख) १२ पटल तक का विषय वर्णित है।

—ए० बं० (क) ६०६३, (ख) ६०६४

(२) श्लोक सं० ३००। —अ० ब० १०६९५

(३) (क) श्लोक सं० ३०८, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० २००, अपूर्ण; (ग) श्लोक सं० लगभग ३६५, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० २५५, अपूर्ण। (ङ) श्लोक सं० १२६, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २५८५२, (ख) २४२११, (ग) २४२१२, (घ) २५४०५, (ङ) २५५९६

(४) षट्कर्म-प्रयोग विषय वर्णित है। —बी० कै० ५८६

(५) —कैट्. कैट्. १।९८

कालरात्रिचण्डिकाविधान

लि०— —कैट्. कैट्. १।९८

कालरात्रितन्त्र

लि०—श्लोक सं० २५०, अपूर्ण। —अ० ब० १०५१०

कालरात्रिपद्धति

लि०—अद्वयानन्दनाथ विरचित। —कैट्. कैट्. १।९८

कालरुद्रतन्त्र

लि०—श्लोक सं० ८८०। शिव-कार्त्तिकेय संवादरूप यह ग्रन्थ २१ पटलों में पूर्ण है। इसमें धूमावती, आर्द्रवती, काली, कालरात्रि, जो कालरुद्र की शक्तियाँ कही गयी हैं, के मन्त्रों से तान्त्रिक षट्कर्मों—मारण, मोहन आदि—की सिद्धि वर्णित है। यह कालिकागम से गृहीत तथा आथर्वणास्त्रविद्या के नाम से प्रत्येक पुष्पिका में अभिहित है। धूमावती आदि की विद्या, मन्त्रोद्धार, मन्त्रविधि, पूजा, जपपूर्वक साधन क्रिया इसमें साङ्गोपाङ्ग वर्णित है। —ए० बं० ६०९०

कालसंकर्षणतन्त्र

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

कालाग्नि

लि०—श्लोक सं० १००। —अ० ब० ९७१५ (ग)

कालाग्निभैरवतन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी में।

कालाग्निरुद्रतन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

कालाग्निरुद्रपटलोपनिषत्

लि०—पन्ने ७। —रा० पु० ५२२८

कालाग्निरुद्रोपनिषत्

लि०—(१) श्लोक सं० १००, पूर्ण। इसमें विभूति से किसी के शरीर को अङ्कित करने की विधि वर्णित है। यह नन्दिकेश्वर प्रोक्त है। —ए० बं० ६१६५

(२) नन्दिकेश्वरपुराणोक्त। —रा० पु० ६७५१

(३) नन्दिकेश्वरपुराण से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।९८, ३।२१

कालानलतन्त्र

लि०—श्लोक सं० १९००। यह नारद-नीललोहित (शिव) संवादरूप तन्त्र २५ पटलों में समाप्त है। अन्तिम पटल का विषय दिया है—सिद्धिलक्ष्मी का सहस्रनाम स्तोत्र। इसका लिपिकाल ने० सं० ८५७ दिया हुआ है। —ने० द० २।२३३

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

कालार्करुद्रपूजापद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० १००। इसमें कालार्क रुद्र की, जो शिवजी का एक रूप है, पूजाविधि प्रदर्शित है। —रा० ला० ३६२

(२) —कैट्. कैट्. १।९८

कालिकाकवच

लि०—(१) श्लोक सं० ३०, यह जगन्मङ्गल नाम का कवच भैरवतन्त्रान्तर्गत है।

(२) (क) रुद्रयामल से गृहीत।

(ख) स्कन्दपुराण से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।९८

(३) विरूपाक्षकृत (शिवकृत), नामान्तर—जगद्रक्षाख्यकवच।

(क) उत्तरतन्त्र से, कालिकाकल्प से, (ख) कालिकाकुलसार से, (ग) कालिकाकुलामृत से, (घ) आपदुद्धारण रुद्रयामल से तथा शाम्भवी-संहिता से गृहीत। —कैट्. कैट्. ३।२१

कालिकाकुल

उ०—क्षेमराजकृत स्वच्छन्दतन्त्र-टीका में।

कालिकाकुलसर्वस्व

उ०—तन्त्ररत्न, श्यामारहस्य, आगमतत्त्वविलास, सर्वोल्लासतन्त्र, कालिकासहस्र-नामस्तोत्र तथा असितादीपदान में।

कालिकाकुलसद्भाव

उ०——श्यामारहस्य तथा कौलिकार्चनदीपिका में।

कालिकाकुलसार

लि०——कालिकाकवच मात्र।

——कैट्. कैट्. ३।२१

कालिकाक्रम या कालीक्रम

उ०——योगराज कृत परमार्थसार तथा क्षेमराजकृत साम्बपञ्चाशिका-टीका में।

कालिकापञ्चाङ्ग

लि०——श्लोक सं० ९८५, पूर्ण। ——र० मं० ४८३८

कालिकापद्धति

लि०——(१) श्लोक सं० ८००, अपूर्ण। ——अ० ब० ९५४१

(२) (क) श्लोक सं० ९६, अपूर्ण, कालीतन्त्रान्तर्गत।

(ख) श्लोक सं० ६३, अपूर्ण।

——सं० वि० (क) २६६४४, (ख) २४४०९

कालिकापूजाप्रयोग

लि०——अन्त में खण्डित। ——ए० बं० ६३१४

कालिकामत

उ०——महार्थमञ्जरी-परिमल में।

कालिकामाहात्म्य

लि०——श्लोक सं० २३०। इसमें कालिका के नाम की महिमा प्रतिपादित है। जैसे——श्यामामोदतरंगिणी में कहा है——हे देवेशि, हे मातः, कालिका-नामोच्चारण का फल कहता हूँ——ककार वाञ्छित फल देता है——एवं उत्तम धनपुत्रादि देता है। चाहे बार-बार चाहे एक ही बार जिसने काली का स्मरण किया मुक्ति उसके हाथ में धरी हुई है, इसमें सन्देह नहीं। ——रा० ला० ३३५

कालिकारहस्य

लि०—पूर्णानन्द रचित। —कैट्. कैट्. १।९८

कालिकार्चादीपिका

लि०—दे०, दक्षिणकालिकानित्यपूजाविधि। —कैट्. कैट्. १।९९

कालिकार्चामुकुर

यह कामाख्या के परम उपासक कालीचरण कृत है।

लि०—श्लोक सं० १२५, पूर्ण, लिपिकाल १७८७ शकाब्द।

—सं० वि० २६४९१

कालिकार्चाविधि

उ०—कालिकार्चासपर्याविधि में।

कालिकार्णव

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

कालिकासपर्याविधि

लि०—दाऊजी ज्योतिषी (वाराणसी) के संग्रह में ३६९ पन्ने की पूर्ण प्रति है। इसके निर्माता हैं निगमागमविद्या विद्योतित काशीनाथ तर्कालङ्कार।

कालिकोद्भव

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा प्राणतोषिणी में।

कालिकोद्भाव

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में। —कैट्. कैट्. २।१९

कालिकोपनिषत्

लि०—(१) श्लोक सं० ५०। यह ग्रन्थ अथर्ववेद के सौभाग्यकाण्ड से सम्बद्ध बतलाया गया है। —ए० बं० ६१३४

(२) श्लोक सं० ६१। यह अथर्ववेद के सौभाग्यकाण्डान्तर्गत कहा गया है। इसमें कालिका के मन्त्र, ध्यान और माहात्म्य वर्णित हैं। —रा० ला० २०९४

कालिकोपनिषत्सार

उ०––कालिकासपर्याविधि में।

कालीकल्प

उ०––कौलिकार्चन-दीपिका, श्यामारहस्य, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्ति-सुधार्णव, सर्वोल्लास, कालिकासपर्याविधि आदि में।

कालीकल्पलता

लि०––(१) विमर्शानन्दनाथ विरचित। श्लोक सं० १०६२, पूर्ण।

––सं० वि० २४५८४

(२) (क) श्लोक सं० ७२०। (ख) श्लोक सं० ६००।

––अ० ब० (क) ५५३९, (ख) ५६१८

कालीकुल

उ०––कौलिकार्चनदीपिका में।

कालीकुलक्रम

लि०–– ––कैट्. कैट्. १।९९

कालीकुलक्रमार्चन

लि०––श्लोक सं० ७००, लिपि-काल १६१० ई०। इसके रचयिता हैं परमहंसपरिव्राजक विमलबोधपाद। इसमें कालीपूजा कुलक्रमानुसार वर्णित है। ग्रन्थारम्भमें ग्रन्थकार ने अपनेगुरुओं को नाम निर्देशपूर्वक नमस्कार किया है। वे हैं––'विश्वामित्र, वशिष्ठ, श्रीकण्ठ, कुण्डलीश्वर, श्रीक्रोध, मीनाङ्क और तालाङ्क।

इसमें वर्णित विषय हैं––अन्तर्यागविधि, आसनपूजाविधि, न्याससहित ध्यानविधि, नित्यार्चनविधि आदि। ––ने० द० ३।३१४

कालीकुलसर्वस्व

लि०––अपूर्ण। दक्षिणकालिकासहस्रनाम भी इसके अन्तर्गत रा० ला० ८६५ में कहा गया है––'शिवपरशुरामसंवादे कालीकुलसर्वस्व दक्षिणकालिकासहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्।' पर वर्तमान प्रति में वह उपलब्ध नहीं हुआ। यह निगमशैली का ग्रन्थ है।

––वं० प० १३९५

(२) असितादीपदान मात्र। —कैट्. कैट्. ३।२२

उ०—शक्तिरत्नाकर, शाक्तानन्दतरङ्गिणी तथा प्राणतोषिणी में।

कालीकुलावलि

लि०—यह काली की तान्त्रिक पूजा के सम्बन्ध में है। —बी० कै० १२७१

कालीकुलामृततन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० ११५०, १५ पटलों में पूर्ण। इस ग्रन्थ में मुख्यतया काली-पूजा का प्रतिपादन है, साधारण रूप से तारा की पूजा का भी प्रतिपादन है। इसमें सब मन्त्रों के उद्धार, ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति, कीलक, विनियोग, ध्यान, पूजा आदि, स्तोत्र और कवच का वर्णन है। इसका साधन-क्रम भी वर्णित है। इसका लिपि-काल १७२७ शकाब्द है। —ए० बं० ६०१६

(२) श्लोक सं० ९५२, पूर्ण। पटल १-११ कहे गये हैं। साथ में योनिकवच और सरस्वतीकवच भी संनिविष्ट हैं। —सं० वि० २६१४१

(३) १५ पटलों की पूर्ण प्रति दाऊजी दीक्षित ज्योतिषी, वाराणसी के संग्रह में है।

कालीकुलार्णवतन्त्र

लि०—श्लोक सं० ११७६। देवी-भैरव संवादरूप यह एक मौलिक तन्त्रग्रन्थ है। इसका आरंभ 'वीरनाथ उवाच' से है। वीर का अर्थ है जो वामाचार-पूजा से सिद्धि प्राप्त कर चुका हो। वीरनाथ उन वीरों के सर्वोच्च अधिपति हैं। यह ग्रन्थ गुह्यकाली, जो नेपाल की महादेवी हैं, के सम्बन्ध में है। उक्त देवी आश्रितों पर अनुग्रह करती है। यह ग्रन्थ अथर्वण-संहितान्तर्गत कहा गया है। यह महा गुह्य और प्रलयानल सदृश है, अतएव गोपनीय कहा गया है। —ने० द० १।३०

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव तथा कौलिकार्चनदीपिका में।

कालीक्रम

लि०—यह आद्या द्वारा भूमि पर अवतारित सात करोड़ श्लोकात्मक ज्ञानसद्भाव, जिसमें खेचरविद्या विचार-क्रम में हजारों मन्त्र हैं, के अन्तर्गत है। यह खेचर-विद्या से सम्बद्ध प्रतीत होता है। यह चार या अधिक पटलों में पूर्ण है। —ने० द० २१९

उ०—तन्त्रसार तथा पुरश्चर्यार्णव में।

कालीतत्त्व

नामान्तर--कालीतत्त्वरहस्य।

लि०--(१) श्लोक सं० ८४५, अपूर्ण। इसकी पूर्ण १ प्रति, जिसमें २१तत्त्व (अध्याय) हैं, वी० कैं० ५८६ में है। बहुत-से कैटलागों में इसका 'रहस्य' के नाम से उल्लेख है। दे०, कैट्. कैट्. १।९९। इस ग्रन्थ के रचयिता राघवभट्ट हैं। उन्होंने कुलनाथगणों के साथ सब तन्त्रों का विचार कर कालीतत्त्व की रचना की। इसमें वर्णित विषय यों है--१म में साधकों के प्रातः कृत्य, २य में स्नान, ३य में सन्ध्या, ४र्थ में तर्पण, ५म में पूजा, ६ष्ठ में द्रव्यशुद्धि, ७म में कुलसम्पत्ति, ८म में पुरश्चरण, ९म में नैमित्तिक कर्म, १०म में काम्यकर्म, ११ श में कौलाचार, १२ वें में स्थान, पुष्प आदि, १४ वें में प्रायश्चित्त, १५ वें में भाव, १६ वें में कुमारीपूजाविधि, १७ वें में माला, १८वें में स्तुति, १९ वें में शान्ति, २० वें में मन्त्र तथा २१ वें में रहस्य आदि। इस ग्रन्थ में प्रमाण रूप से अनेक तन्त्र उद्धृत हैं। --ए० बं० ६३०६,७

(२) इसका दूसरा नाम आचारप्रतिपादनतत्त्व है। इसके रचयिता राघवभट्ट वहुत बड़े तान्त्रिक, ग्रन्थलेखक और टीकाकार थे। शारदातिलक पर लिखी गयी पदार्थादर्श नाम की उनकी टीका स्मृति तथा तन्त्र निबन्धो में प्रायः उद्धृत है। दरबार लाइब्रेरी की इस प्रति में आचार और प्रायश्चित्त ही वर्णित है। ग्रन्थकार ने शारदातिलक पर लिखी अपनी टीका का सत्सम्प्रदायकृत व्याख्या के नाम से उल्लेख किया है।

--बी० कैं० पे. ६०९

शारदातिलक के बनारस के संस्करण (संवत् १९५८) से ज्ञात होता है कि राघवभट्ट के पिता नासिक से काशी आये थे। उक्त टीका की रचना १५५० वि० में हुई।

--ने० द० १।१५३९

(३) (क) श्लोक सं० २०००, (ख) श्लोक सं० ६००।

--अ० ब० (क) १०६७०, (ख) १०३५

(४) इसमें कालीजी की तान्त्रिक पूजा प्रतिपादित है। यह २१ पटलों में पूर्ण है। पूर्ण प्रति की पत्र सं० ९६ है। इसके रचयिता राघवभट्ट है। --बी० कैं० १२७२

कालीतत्त्वसुधा-सिन्धु

लि०--श्लोक सं० १३९७२, ३२ तरंगों में पूर्ण। रचयिता कालीप्रसाद काव्यचञ्चु। यह विशाल ग्रन्थ काली की पूजा पर विभिन्न तन्त्रों से संगृहीत है। इसका कालीतत्त्व-सुधार्णव भी नामान्तर है। इसकी समाप्ति १७७४ संवत् में हुई, यह--"वेदाब्धिसिन्धु-

चन्द्राङ्के माघे दिनचतुष्टये। समाप्तिमगमद् ग्रन्थः कालीतत्त्वसुधार्णवः॥" इस श्लोक से ज्ञात होता है। इसके रचयिता कालीजी के परम उपासक थे। इसके मुख्य-मुख्य विषय यों हैं—दीक्षा शब्द की व्युत्पत्ति, गुरु के विना पुस्तक से मन्त्र ग्रहण में दोष, दीक्षा न लेने में दोष, श्वशुर आदि से मन्त्र-ग्रहण में दोष, यदि सिद्ध मन्त्र हो तो दोष नहीं, सिद्धमन्त्र निरूपण, निषिद्ध गुरुओं से मन्त्र ग्रहण करने पर मन्त्रत्याग और प्रायश्चित्त करने का विधान, स्वप्न में पाये मन्त्र के संस्कार, निषिद्ध, और सिद्ध लक्षणों से युक्त गुरु का निरूपण, स्त्री और शूद्रों को प्रणव, स्वाहा आदि से युक्त मन्त्र देने के सम्बन्ध में विचार, कलियुग में आगम में उक्त दीक्षा की आवश्यकता, तन्त्रादि शास्त्रों में संदेह, निंदा आदि करने में दोष, मन्त्र और मन्त्रवक्ता की प्रशंसा, तन्त्र और आगम पदों की व्युत्पत्ति। ३२ अक्षरों के नाम और अर्थ कथन, दक्षिणापद की व्युत्पत्ति, काली के मन्त्र की प्रशंसा, दक्षिणकाली, सिद्धकाली आदि के मन्त्र, वीरभाव का लक्षण, पशु भाव का लक्षण, दिव्य आदि भावों का निरूपण, सात प्रकार के आचारों का निरूपण, कलियुग में पशुभाव की प्रशस्तता, प्रतिनिधि द्रव्यों का निरूपण, पशुभाव आदि में पूजाकाल की व्यवस्था, पूजा के अधिकारी का निरूपण, पुरोहित के प्रतिनिधि होने का निषेध, बलिदान की प्रशंसा, अवैध हिंसा में दोष, पूजा की आधारभूत प्रतिमा आदि, मन्त्र शब्द की व्युत्पत्ति, विशेष कुलदीक्षा, स्वकुलदीक्षा, मन्त्र के छह साधन प्रकार, मन्त्र के दस संस्कार, मातृका-मन्त्र, वर्णमाला की उत्पत्ति, वैदिक गायत्री के जप में माला का विधान, वीरों के पुरश्चरण की विधि, ग्रहण में पुरश्चरण की विधि, कुमारीपूजा में स्थान, क्रम, उपचार, दान आदि का निरूपण, विविध पुरश्चरण, मन्त्र का अमृतीकरण, मन्त्र की निद्रा का भंग करना, मन्त्र, सिद्धि के उपाय, योनिमण्डल-ध्यान, प्रफुल्लबीज-ध्यान, काली बीज-ध्यान, श्यामा के ३२ अक्षरों के मन्त्र का ध्यान, कुल-वृक्ष का निरूपण, कामकला निरूपण, लेलिहान मुद्रादि कथन, अठारह उपचार आदि और उनके मन्त्र, नवदीपविधि, प्रणामविधि, संहार-मुद्रा, प्रार्थना-मुद्रा, शिर के प्रदान की विधि, रुधिर दान की विधि, अपने गात्र के रुधिर प्रदान की विधि, संविदा साधन की परिपाटी, शक्ति न हो तो अर्चनपान में दोष, वर्जनीय शक्तियाँ, विजयापान में काल-नियम, वीरों के स्नान, सन्ध्योपासना, तर्पण आदि, द्रव्य-शोधन, शाप-विमोचन, हंस-मन्त्र, पान-पात्र का परिमाण, लतासाधन, शक्ति-शुद्धि, पञ्च तत्त्व, कुण्ड-गोलग्रहण आदि की विधि, दूतीयजन, कुलनायिकाएँ, चितासाधन, शवसाधन, शवसाधन में स्थान, आसन आदि के नियम आदि। —रा० ला० २९५६

कालीतत्त्वामृत

लि०——श्लोक सं० १६८०, यह चार लहरी (अध्याय) तक ही है। इसके रचयिता वलभद्र पण्डित हैं। प्रथम लहरी में पशु के सम्मुख इस तन्त्रशास्त्र की चर्चा का निषेध, प्रतिमा आदि में शिलाबुद्धि करने में दोष कथन, अदीक्षित का तन्त्रशास्त्र में अनधिकार कथन, विहित और अविहित गुरुओं का निरूपण, दिव्य, वीर, पशु आदि का भेद, कौलिकों का पशु से मन्त्र ग्रहण में प्रायश्चित्त, कलि में काली उपासना की कर्तव्यता, आगमोक्त दीक्षा ग्रहण करने के बाद पुराणविधि से कर्मानुष्ठान करने में फलाभाव, गुरु और शिष्य के लक्षण, मन्त्र के दस संस्कार, यन्त्र-संस्कार, माला-संस्कार, पुरश्चरण की आवश्यकता, पुरश्चरणक्रम, मन्त्र के सूतकादि दोषों का निरूपण, मन्त्र की शिखा, षडध्वा और षड्वर्णो की भावना, स्वतन्त्र तन्त्रादि मत साधन। सिद्धि का प्रकार, वास्तुयाग-विचार, कुण्ड के दोषादि का निरूपण आदि, सिद्धि का प्रकार आदि। ——रा०ला० २९६२

कालीतन्त्र

लि०——(१) श्लोक सं० ६००, ११ पटलों में पूर्ण। यह उमा-महेश्वर संवादरूप है।

——ए० बं० ५९३०–३३

(२) (क) श्लोक सं० ३००। १३ पटलों में? इस संग्रह में तीन प्रतियाँ और हैं। जिनमें २ (ख) और (ग) तीन सौ श्लोक वाली हैं एवं (घ) दो सौ श्लोक की हैं। २०० श्लोकों वाली की पटल सख्या १२ दी गयी है। ३०० श्लोक की एक की पटल सं० १२ और दूसरी की पटल सं० नहीं दी गयी है।

——अ० व० (क) ५६०४, (ख) १०७२७, (ग) ८२३३, (घ) १९४१४

(३) श्लोक सं० ४१५। इसमें शिवात्मिका मूल शक्ति काली की समन्त्र पूजा, प्रतिष्ठा, निष्क्रमण, अभिषेक, स्नान आदि विषय संक्षेपतः वर्णित हैं। संभवतः यह उमा-महेश्वर संवादरूप कालीतन्त्र से भिन्न है। इसमें केवल ४ पटल हैं।

——ट्रि० कै० ९७४ (घ)

(४) भण्डारकर रि. इंस्टीच्यूट में १ प्रति ११ पटलों में पूर्ण है।

(५) (क) श्लोक सं० ६७५, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३२४, अपूर्ण, (ग) श्लोक सं० ३१२ अपूर्ण, (घ) श्लोक स० ३००, अपूर्ण, (ङ) श्लोक स० १९२, अपूर्ण; (च) श्लोक सं० ३३०, अपूर्ण; (छ) प्रति १० पटलों की पूर्ण बतलायी गयी है।

——सं० वि० (क) २५४५९, (ख) २४.५२९, (ग) २४५३०, (घ) २४९००, (ङ) २५४३६, (च) २६४२३, (छ) २४९०८

उ०——तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, सर्वोल्लासतन्त्र, ललितार्चनचन्द्रिका, तारारहस्यवृत्ति, कालिकासपर्याविधि, श्यामा-रहस्य तथा कौलिकार्चनदीपिका में। ——ए० बं० ५९३१

कालीनारायणी

उ०——आगमतत्त्वविलास में।

कालीपद्धति

लि०——(१) श्लोक सं० १५०० । ——अ० ब० १०४४२

(२) (क) श्लोक सं० ४८७, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग ५३८, पूर्ण। उपर्युक्त कालीपद्धति से यह प्रति आकार में कुछ भिन्न मालूम पड़ती है।

——सं० वि० (क) २४०१२, (ख) २५२७०

(३) ——कैट्. कैट्. १।१००

कालीपुराण

लि०——श्लोक सं० ५४००। यह रुद्रयामलान्तर्गत महाकालसंहिता से गृहीत उमामहेश्वर संवादरूप है। यद्यपि पुष्पिका में यह ग्रन्थ रुद्रयामलान्तर्गत कहा गया है किन्तु यह कालिकापुराण के संस्करण से हूबहू मिलता है जो बंगवासी इलेक्ट्रिक मशीन प्रेस कलकत्ता से सन् १९०९ में प्रकाशित हुआ था। यह उसके ४र्थ अध्याय के १०वें श्लोक से आरंभ होकर ६० वें अध्याय के ८२वें श्लोक में समाप्त होता है। इसकी पुष्पिका में यों उल्लेख है——इति रुद्रयामले तन्त्रे महाकालसंहितायां श्रीकालीपुराणं समाप्तम्।

——ए० बं० ५८७४

कालीपूजा (१)

लि०——(१) श्लोक सं० २२०, राघवानन्दनाथ कृत। ——अ० ब० ५१४०

लि०——(२) श्लोक सं० ३००, स्वयंप्रकाशानन्द सरस्वती कृत।

——अ० ब० २४११ (क)

कालीपूजापद्धति

लि०——(१) रुद्रयामलान्तर्गत। इस ग्रन्थ में कालीपूजा वर्णित है।

——क० का० ७७

(२) (क) श्लोक सं० ३५, अपूर्ण।
(ख) श्लोक सं० ७९८, पूर्ण।

—सं. वि० (क) २५२७१, (ख) २५६२१

[सं० वि० के संग्रह में कालीपूजा-पद्धति तथा कालीपूजन-पद्धति के नाम से और भी पुस्तकें है पर सब अपूर्ण और भिन्न भिन्न प्रतीत होती हैं]

कालीपूजाविधि

लि०—इसमें काली के ध्यान, मन्त्र आदि के साथ पूजाविधि प्रतिपादित है।

—रा० ला० २३२

कालीभक्तिरसायन

लि०—श्लोक सं० ५५०। इसके रचयिता दक्षिणाचारप्रवर्तक काशीनाथभट्ट हैं। ये भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र, वाराणसी-गर्भसंभूत और वाराणसीनिवासी थे। यह ग्रन्थ ८ प्रकाशों में पूर्ण है। आचारनिर्णय, २२ अक्षरों के मन्त्र का उद्धार, प्रातः कृत्य आदि से लेकर तान्त्रिक सन्ध्याविधि पर्यन्त, द्वारपूजा से लेकर न्यासविधान तक का विषय, यन्त्रोद्धारविधि, देवता-पूजाविधि; आवरणपूजाविधि, विद्या-माहात्म्य तथा उपासक-धर्मविधि और पुरश्चरणविधि इसमें वर्णित है।

इसमें प्रमाण रूप से अनेक तन्त्र ग्रन्थों का उल्लेख है। —ए० बं० ६३०४

कालीमत्तमयूराष्टकस्तोत्र

उ०—इण्डिया आफिस कैटलाग तथा श्यामारहस्य में।

कालीयामल

उ०—कुलपूजनचन्द्रिका (चन्द्रशेखर शास्त्री कृत) में।

कालीविलासतन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० ११००। ३५ पटलों में पूर्ण।

—ए० बं० ५९२८

(२) श्लोक सं० ९२५। देवी-सद्योजात (शिव) संवादरूप यह तन्त्र शिवप्रोक्त है। इसमें ३० पटल हैं। उनके विषय हैं—शिवाशिवसंवाद रूप से प्रस्तावना, तन्त्रनाम निर्वचन, शूद्र के लिए प्रणव, स्वाहा आदि के उच्चारण का निषेध, शूद्र जाति के लिए प्रशस्त मन्त्र आदि का निरूपण, स्वाहा तथा प्रणव युक्त स्तोत्र पाठ आदि में शूद्र का भी अधिकार,

उसे वैश्यत्व-प्राप्ति हो जाती है यह कथन, कलियुग में पशुभाव की कर्तव्यता, दिव्य, वीर भाव आदि का निषेध, दीक्षाकाल कथन, दिव्यादि भावों के लक्षण, कलियुग में संविदापान का नियम, काँसे के वर्तन में रखा हुआ नारियल का जल मदिरातुल्य है, शिव और विष्णु में अभेद, कलियुग के योग्य वशीकरण, मोहन, विविध देव-देवियों के स्तोत्र, विविध देवी देवों के पूजा, मन्त्र, ध्यान आदि, जम्बूदीप में महिषमर्दिनी के अस्त्र आदि का निरूपण, अन्य द्वीपों के अस्त्रों का निरूपण, महिषमर्दिनी के गणों का निरूपण, कालिका कृष्णजी की माता हैं, कृष्णजी ने कालिका का स्तनपान किया, कृष्ण के समीप में कालिका के कामबीज आदि कथन, ध्यान कथन, मन्मथ साधन ? पञ्च बीजों का निर्णय, माया-बीज आदि का साधन, रमा-बीज आदि का निरूपण, कूर्च ध्यान आदि कथन, शिञ्जिनीके ध्यान आदि का कथन, काम बीज के लिखने का क्रम, स्त्री-बीज के लिखने का क्रम, अनुलोम विलोम से अकारादि से लेकर क्षकार तक जप-प्रकार कथन, कृष्ण के मुरलीधारण का विवरण, कलियुग में पुरश्चरण, होम आदि करने का निषेध, गुरुपूजा से ही सब सिद्धि होती है, यह कथन। —रा० ला० २९६३

(३) शिवपार्वती संवादरूप यह ग्रन्थ ३४ पटलों में पूर्ण है। इसमें शाक्तों की तान्त्रिक पूजा विधियाँ तथा उत्सव वर्णित हैं। —क० का० १२

(४) केवल १२ पटल तक, अपूर्ण। —व० पं० ४३५

उ०—प्राणतोषिणी तथा सर्वोल्लास में।

कालीशाबर

लि०—(१) श्लोक सं० ९३, तीन पटलों में पूर्ण। शिवपार्वती संवादरूप इस ग्रन्थ में शावरों के भेद बतलाये गये हैं—शावर, सिद्धशावर, कुमारीशावर, विजयाशावर, कालिकाशावर, कालशावर, दिव्यशावर, वीरशावर, श्रीनाथशावर, योगिनीशावर, तारिणीशावर, तथा शंभुशावर, यों सब मिला कर १२ शावर हैं। इसी प्रकार १२ अघोर और १० गारुड़ भेद भी हैं। इसके तीन पटलों में १म परिभाषा पटल, २य कालीसंक्षेप पटल, ३य कालीशावर पटल है। तीसरे पटल के बाद हिन्दी में एक विभाग और है जो 'शावर सकल साधन' के नाम से अभिहित है। —ए० बं० ६०९५

(२) श्लो० सं० १००। —अ० बं० १०८८८

कालीशाबरतन्त्र

लि०—श्लोक सं० ४५०, अपूर्ण। —अ० बं० १२७३२

कालीसपर्याक्रमकल्पवल्ली

लि०—श्रीनिवासभट्ट विरचित। —कैट्. कैट्. १।१००

कालीसर्वस्वसंपुट

लि०—श्लोक सं० ४२५६। न्यायवागीश भट्टाचार्य-पुत्र श्रीकृष्ण विद्यालङ्कार विरचित। इस विशाल गन्थ में विविध विषय वर्णित हैं जिनमें से कुछ मुख्यों का उल्लेख नीचे किया जाता है:—

जिन महातन्त्र ग्रन्थों के आधार पर इसकी रचना की गयी थी उनकी विस्तृत सूची ग्रन्थारम्भ में दी गयी है। दीक्षा-प्रसंग, काली के आठ भेद, काली शब्द की व्युत्पत्ति, साधकों के प्रातः कृत्य, विविध न्यास, महाकालपूजा, आवरणपूजा, काली के विविध स्तोत्र, माला-भेद, माला-शोधन और माला-संस्कारविधि, शरत्कालीन आदि विविध पुरश्चरण, कुमारी-पूजा, दूतीयाग, योनिपूजा, पञ्च मकारविधि, विजयाकल्प, मांस, मत्स्य, मुद्रा आदि की शोधन-विधि, वीरसाधनविधि, शवलक्षण आदि कथन, तीन प्रकारों से शवसाधनविधि, योगियों के नित्य कृत्य कथन, षट्कर्म कथन, उच्चाटनविधि, विद्वेषण, स्तंभन आदि की विधियाँ, अदर्शनक्रम कथन, आकर्षणविधि, वशीकरणविधि, गुरुचरण-चिन्तन प्रकार कथन आदि। —नो० सं० १।६०

कालीसारतन्त्र

उ०—शक्तिरत्नाकर में।

कालीसुधानिधि

लि०—श्लोक सं० १५४०, अपूर्ण। —सं० वि० २४५६६

कालीसोपानपद्धति

लि०—श्लोक सं० ३८०। —अ० ब० ५६४२

कालीस्तवराज

लि०—श्लोक सं० ३६। यह कालीहृदयान्तर्गत कालभैरव-परशुराम संवादरूप काली-स्तुति है। इस स्तव के स्मरण मात्र से कालिका प्रसन्न होती है और उनकी प्रसन्नता से साधक को सकल सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। —रा० ला० ४१६

कालीहृदय

लि०---श्लोक सं० ७५, पूर्ण। इसमें कालीजी का लम्बा मन्त्र है, जो हृदय कहलाता है। यह देवीयामल के अन्तर्गत है। ---ए० वं० ६६४७

उ०---तन्त्रसार (कृष्णानन्दकृत) में।

कालोत्तर या कालोत्तरतन्त्र

लि०---(१) यह शिव-कार्तिकेय संवादरूप महातन्त्र है। पुष्पिका में 'वृहत्कालोत्तरं नाम शिवशास्त्रम्' भी कहा गया है। कालोत्तर बहुत प्राचीन तन्त्रग्रन्थ है। १० म शताब्दी के अन्त तथा एकादश शती के प्रारंभ में देदीप्यमान वैदुष्य वाले अभिनव गुप्त ने अपने त्रिंशिका-तत्त्वविवरण में इसका उद्धरण दिया है। यह ४० पटलों में पूर्ण है। पटलों के नामों से, जो नीचे दिये जा रहे ह, ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण तान्त्रिक क्षेत्र में यह प्रकाश डालता है। कहीं पर इसके ३२ ही पटलों का उल्लेख है। १. प्रायश्चित्त पटल, २. अक्षसूत्रमाला पटल, ३. घण्टालक्षण पटल, ४. पुष्प पटल, ५. अष्टपुष्पिका पटल, ६. व्रत-यात्रा पटल ७. पाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी पटल, ८. ग्रह-व्रत पटल ९. व्रत पटल १०. तत्त्वों की उत्पत्ति का पटल, ११. साधन संवित् पटल, १२. नाडीचक्रों के नाम निर्देश का पटल, १३. प्रसाद, प्रणव आदि पटल, १४. प्रत्यक्ष पटल, १५. जप पटल, १६. लिङ्गोद्धार पटल, १७. इष्टि पटल, १८. अन्तर्याग पटल, १९. अन्त्येष्टि पटल, २०. श्राद्ध पटल, २१. लिङ्गवर्णन पटल, २२. लिङ्ग पटल, २३. प्रतिभा पटल, २४. मातृभैरववर्णन पटल, २५. पीठ पटल, २६. वास्तुयाग पटल, २७. प्रासाद-लक्षण पटल, २८. अधिवासन पटल, २९. स्थापन पटल, ३०. जीर्णोद्धार पटल, ३१. वृषभ पटल, ३२. उद्धातोद्देश पटल, ३३. विजय पटल, ३४. ब्रह्माण्ड-वर्णन पटल, ३५. तत्त्वयुक्ति-वर्णन पटल, ३६. मन्त्रार्थ पटल, ३७. क्षेत्र-ग्रहण पटल, ३८. शक्ति-वर्णन पटल, ३९. पूर्व सेवा पटल, ४०. अघोरादि शास्त्र व्युष्टि परिपालन पटल।

ने० द० में इसकी और भी प्रतियाँ है परन्तु वे सब इससे अधिक मात्रा में अपूर्ण प्रतीत होती है। पृ० ६ सं० ८९, पृ० ७३ सं० १५८३, पृ० ८ और ९६ सं० २२६८ तथा पृष्ठ ८० सं० १६३४। ---ने० द० १।२७३ (क)

(२) श्लोक सं० १८, मुद्रापटल मात्र। ---ए० वं० ५८९८

(३) श्लोक सं० १६०० ---अ० ब० ७९१

उ०——आगमतत्त्वविलास (रघुनाथ कृत), प्राणतोषिणी (प्राणतोषण कृत), ताराभक्तिसुधार्णव, तन्त्रालोकसटीक, शतरत्नसंग्रह, चतुर्वर्गचिन्तामणि हेमाद्रि, भोज के तत्त्वसंग्रह पर तत्त्वप्रकाशिकावृत्ति, साम्बपञ्चाशिका (क्षेमराज कृत), कमलाकर के द्वैतपरिशिष्ट तथा रघुनन्दन के स्मृतितत्त्व में।

काल्यादिमन्त्र

लि०——श्लोक सं० ५०। इसमें काली आदि १५ देवताओं के मन्त्र प्रतिपादित हैं।

—अ० व० ७१८४

काल्यूर्ध्वाम्नायतन्त्र

लि०——(१) श्लोक सं० ५४०, पूर्ण, पाँच पटलों में विभक्त। इस ग्रन्थ का प्रतिपादन क. का. २२ में भी किया गया है, पर वहाँ इसके पटलों की संख्या का उल्लेख नहीं है एवं बं. प. में यह ग्रन्थ ऊर्ध्वाम्नायतन्त्र कहा गया है। ——ए० बं० ५९६३

(२) श्लोक सं० ४८८। देवी-ईश्वर संवादरूप (देवी के प्रश्न करने पर शिव प्रोक्त) यह महातन्त्रों में अन्यतम है। इसकी साधारणतः ऊर्ध्वाम्नाय के नाम से प्रसिद्धि है। यह ५ पटलों में पूर्ण है——ऊर्ध्वाम्नाय की प्रस्तावना; देवता, गुरु और मन्त्रों में ऐक्य भावना आवश्यक है, शरीर का निरूपण, सारा विश्व पशुरूप है, यह कथन, निर्गुण और निर्विकार परमात्मा से जगत् की सृष्टि कैसे? इस प्रश्न का समाधान, प्रकृति से महत्तत्त्व आदि की उत्पत्ति, परा, पश्यन्ती वैखरी के भेद से त्रिविध शक्ति का निरूपण, कर्मेन्द्रियों के अधिष्ठाताओं का निरूपण, क्रियाशक्ति, ज्ञानशक्ति आदि का निरूपण, पञ्चीकरण की प्रक्रिया का कथन, शरीर प्रणवाकार है वह कथनं, स्थूल और सूक्ष्म आदि शरीरों की ब्रह्मा, विष्णु आदि रूपता, दक्षिण नेत्रगत काल की राम, कृष्ण, नारायण आदि रूपता, अजपा की द्विविधता कहते हुए उनके स्वरूप का कथन, पितासे हड्डी, मज्जा आदि की तथा माता से मांस, चर्म आदि की उत्पत्ति कथन, नाडी, सन्धि आदि की संख्या, शरीर के विशेष अवयवों में २७ नक्षत्रों की अवस्थिति का निर्देश, इसी तरह १५ तिथियों की अवस्थिति का निरूपण, शरीरस्थ राशिचक्र का निरूपण, षट्चक्र तथा देह में १४ लोकों की स्थिति आदि का निरूपण, जीव कहाँ रहता है, यह निरूपण करते हुए काली का नन्द-गृह में कृष्णरूप में तथा सुन्दरी का राधा के रूप में अवतार आदि तथा ऐश्वर्यादि कथन, पक्ष्मों का वृन्दावनत्व कथन, उसमें कृष्ण के अवस्थान आदि का निरूपण, तत्त्वज्ञान और तत्त्वज्ञान साधन-प्रक्रिया का निरूपण, छायासिद्धि का प्रकार तथा योगसाधन-प्रकार कथन, बीजोद्धार आदि कथन,

दैहिक स्थान के भेद से जल के गङ्गाजल, पर अमृत, देहरक्षक आदि नामभेद कथन, काली नाम का निर्वचन, योगियों की मानसी पूजा का प्रतिपादन, वीरों के अन्तर्याग की शैली, ज्ञानरूप चक्र के स्थान आदि का निरूपण, सगुण और निर्गुण भेद से विविध शांभव चक्रों का निरूपण। --रा० ला० १७४३

(३) महेश्वर भाषित (उमा-महेश्वर संवादरूप) यह तत्त्वज्ञान विषय पर मौलिक तन्त्रग्रन्थ ५ पटलों में पूर्ण है। यह मूल में भगवान् शिवजी द्वारा ऊर्ध्व मुखसे कहा गया था, अतएव ऊर्ध्वाम्नाय कहलाता है।

काश्यपीयसंहिता

लि०--श्लोक सं० ८०। इसमें रज्जुबन्ध और मृत्संस्कार नामके केवल दो ही पटल हैं। --अ० व० १०८८२ (घ)

किङ्किणीतन्त्र

उ०--मन्त्रमहार्णव में।

किरणतन्त्र

लि०--श्लोक सं० २७००। लिपि-काल १०वीं शताब्दी ई०, अपूर्ण। भगवान् त्रिपुरेश्वर-गरुड़ संवादरूप यह महातन्त्र ६४ या उससे अधिक पटलों में पूर्ण है। ६४ पटलों के विषय यों दरशाये गये हैं--पशु-विचार, आहार-विहार-विचार, शिव-विचार, शक्ति-विचार, दीक्षा-विचार, मन्त्र, शिव और शक्ति विचार, तत्त्व-विचार, शिवशक्ति-विचार, ज्ञानभेद-विचार, मन्त्रोद्धारविचार, लिङ्गार्चन-विचार, अग्निकार्यविधि, अग्निकुण्ड-विचार, गृहलक्षण, द्वारलक्षण, अष्टयाग, गणपतियाग, नवग्रहयाग, अंशभेद-विचार, पवित्रारोहणविधि, गुरुपरीक्षा, व्रतेश्वरयाग, शुद्धि और अशुद्धि विचार, पञ्चमहापातक-प्रायश्चित्तविधि, भोजन, आसनविधि, नित्यहानि पर प्रायश्चित्त, साधनविधान पटल, पञ्चब्रह्मोद्धार पटल, लिङ्गोद्धार पटल, मातृकायाग पटल आदि।

किरणागम

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह अष्टादश रुद्रागमों में अन्यतम है।

उ०--शतरत्नसंग्रह तथा तन्त्रालोक में।

किरणागमवृत्ति

अघोर शिवाचार्य विरचित।

कुक्कुटकल्प

लि०—श्लोक सं० २०० । इसमें वशीकरण, विद्वेषण, उच्चाटन, स्तंभन, मोहन, ताडन, ज्वरबन्धन, जलस्तंभन, सेनास्तंभन आदि विविध तान्त्रिक षट्कर्मों की सिद्धि के लिए मन्त्र-जप आदि उपाय प्रतिपादित हैं ।

—ट्रि० कैं० १०२५ (ख)

कुक्कुटतन्त्र

लि०—श्लोक सं० ४५० । —अ० ब० १३३०४

उ०—सर्वोल्लास में ।

कुक्कुटेश्वरतन्त्र

उ०—आगमतत्त्वविलास तथा तन्त्रसार में ।

कुण्डकल्पद्रुमटीका

लि०—अपूर्ण । यह माधव शुक्ल कृत कुण्डकल्पद्रुम पर टीका है । इसमें पदे-पदे तन्त्रग्रन्थों के नाम उद्धृत हैं । —ए० बं० ६५३८

कुण्डतन्त्रराज

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में ।

कुण्डलाभरण

गोरक्षनाथ या महेश्वरानन्द कृत ।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में ।

कुण्डलिनीहोमप्रकरण

लि०—इसमें शक्ति देवी की पूजा में विशेष होम का प्रतिपादन किया गया है । होम-क्रम यों लिखा है—अं अः—प्रकृति, अहंकार, बुद्धि, मन, श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, नासिका, हस्त, पाद, मलद्वार, मूत्रद्वार, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी रूप आत्मतत्त्व से आणवमल स्थूल देह को शोधित कर ऐं कः अखण्ड एकरस आनन्ददायक स्वच्छन्द स्फुरण मात्र कुलरूपी परसुधात्मा में हवन करे । फिर धर्म और अधर्मरूपी हवि से दीप्त आत्मा रूपी अग्नि में मनरूपी स्रुवा से इन्द्रियवृत्तियों का हवन करे इत्यादि । —म० द० ८५८३, ८४

कुब्जिकातन्त्र

लि०--(१) श्लोक सं० ७२०, पूर्ण। यह शिव-पार्वती संवाद रूप तन्त्र नौ पटलों में विभक्त है। श्रीपार्वतीजी के शङ्करजी से यह निवेदन करने पर कि हे देवेश, निरञ्जन पद किस उपाय से प्राप्त होता है? यदि आप की मुझ पर दया है तो सार से भी सारतर उपाय बतलाने की कृपा कीजिये। समयाचार, साधन और सब भूतों के चैतन्य शब्दब्रह्म को मैं साधकों के हित के लिए सुनना चाहती हूँ। इसपर शिवजी ने कहा--जो मन्त्रार्थ, मन्त्र-चैतन्य और योनिमुद्रा नहीं जानता वह अरबों कल्पों में भी सिद्धि-लाभ नहीं कर सकता। मैं महामन्त्र को मन्त्रार्थ के अनुसार कहता हूँ जिसके ज्ञात होने मात्र से साधक सकल-सिद्धीश्वर हो जाता है। इसके विषय यों प्रतिपादित हैं--१ म पटल में प्रस्तावना, २ य, ३ य और ४ र्थ में मन्त्रार्थों का विवरण, ५ म में मन्त्रचैतन्य, ६ ठे में योनिमुद्रा, ७ वें में दिव्य, वीर और पशु भावों का निर्देश, ८ वें में ऐन्द्रजालिक विधि तथा ९ म में मन्त्र-सिद्धि वर्णित है। यह रा० ला० ६९४ में वर्णित कुब्जिकातन्त्र से सर्वथा भिन्न है।

--ए० बं० ५८०६

(२) श्लोक सं० ४५३। पुष्पिका से ज्ञात होता है कि देवी-ईश्वर संवादरूप यह मौलिक तन्त्र १४ पटलों में पूर्ण है। इसमें १ म में स्त्री-दोपलक्षण, द्वितीय में रक्त-मातृका पूजा, ३ य में नाड़ी-शुद्धि, ४र्थ में षष्ठी देवी की पूजा, ५ म में डाङ्गुरकुमार पूजा, ६ ठे में जयकुमार पूजा, पुंवन्ध्यात्वशमन, स्नानविधि आदि विषय वर्णित हैं।

पुत्रोत्पत्ति में रक्तमातृका, षष्ठी देवी, डाङ्गुर कुमार और जयकुमार ये चार बाधक हैं। सन्तति के आकांक्षियों को इनकी सब प्रकार से सन्तुष्टि करनी चाहिए।

--रा० ला० ६९४

(३) इसमें १ से १३ पटल हैं। तीन पन्नों में विविध यन्त्र अंकित हैं।

--सं० वि० २५७६५

[सं० वि० में २४२१५ तथा २६४३५ नं० की दो प्रतियाँ पूर्ण हैं। १ से १३ पटलों में विभक्त ४ प्रतियाँ अपूर्ण भी है जिनकी सं०--२४३८३, २४७७४, २४९३७ और २५४६० है।]

(४) कुब्जिकातन्त्र में दुर्गाकवचमात्र, कुब्जिकातन्त्र में कौलिकों की अन्त्येष्टि-विधि मात्र। कुब्जिकातन्त्र में प्रत्यङ्गिरामालामन्त्र।

--कैट्. कैट्. १।११०, ३।२२ तथा ३।१९४

उ०––मन्त्रमहार्णव, सौन्दर्यलहरी की सौभाग्यबोधिनी टीका, सर्वोल्लास, महार्थ-मञ्जरी-परिमल, कालिकासपर्याविधि, तन्त्रसार, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, प्राणतोषणी आदि में।

कुब्जिकापूजन

लि०––(क) श्लोक सं० ७००। इसमें कुब्जिका देवी की संक्षिप्त पूजाविधि प्रतिपादित है। इसके अन्त में एक लम्बा उद्धरण कुब्जिकामत से गृहीत है। इसमें मुख्य-मुख्य विषय हैं––भूतशुद्धि, कलशपात्र-पूजन, गन्धिन्यास, षडङ्गन्यास, मालिनीन्यास, अघोरन्यास, षड्दूती, न्यास, अघोरास्त्रन्यास, एकाक्षरीषडङ्गन्यास, विद्यान्यास, घोरिकाष्टकन्यास, रुद्रखण्डन्यास, मातृखण्डन्यास, विजयपञ्चकन्यास, डादिसप्तकन्यास, गुरुपंक्तिपूजा, ब्रह्माण्यादिपूजन, भगवतीपूजन, वागेश्वरीपूजन, क्रमपूजन, कर्मध्यान, विमलपञ्चक, अष्टाविंशतिकर्म, अष्टाविंशतिकर्म-पूजाविधि तथा विखण्डापूजन।

(ख) इसमें विषय दिये गये हैं––वक्रन्यास, षडङ्गन्यास, गायत्री, मालिनीदण्डक-स्तोत्र, पञ्चवल्यर्चनविधि, कुम्भपूजा, पश्चिमदेवार्चन, अघोरपूजा, उग्रचण्डापूजा, कुमारीपूजा, चौसठ योगिनीबलि। इस पुस्तक के अन्त में पुष्पिका नहीं है।

—ए० बं० (क) ६४३६, (ख) ६४३७

कुब्जिकापूजापद्धति

लि०––श्लोक सं० २५००। यह कुब्जिका देवी की पूजा पद्धति है। इसमें शिव और शक्ति के बहुत-से स्तोत्र और कूटाक्षर मन्त्र प्रतिपादित हैं। जिनमें व्यञ्जन-राशि के बीच एक ही स्वरवर्ण रहता है। यह ग्रन्थ पूर्ण नहीं है। इसमें ६४ योगिनियों के नाम और क्रम दिये गये हैं––१. श्रीजयादेवी, २. विजया, ३. जयन्ती, ४. अपराजिता, ५. नन्दा, ६. भद्रा, ७. भीमा, ८. दिव्ययोगी, ९. महासिद्धयोगी, १०. गणेश्वरी, ११. शाकिनी, १२. कालरात्रि, १३. ऊर्ध्वकेशी, १४. निशाकरी, १५. गम्भीरा, १६. भूषणी, १७. स्थूलाङ्गी, १८. पवगी, १९. कल्लोला, २०. विमला, २१. महानन्दा, २२. ज्वाला-मुखी, २३. विद्या, २४. पक्षिणी, २५. (?), २६. विषभक्षणी, २७. महासिद्धिप्रदा, २८. तुष्टिदा, २९. इच्छासिद्धि, ३०. कुर्वाणिका, ३१. भासुरा, ३२. मीनाक्षी, ३३. दीर्घाङ्गा, ३४. कलहप्रिया, ३५. त्रिपुरान्तकी, ३६. राक्षसी, ३७. घोरा, ३८. रक्ताक्षी, ३९. विश्वरूपा, ४०. भयंकरी, ४१. फेत्कारी, ४२. रौद्री, ४३. वेताली, ४४. शुष्काङ्गा, ४५. नरभोजिनी, ४६. वीरभद्रा, ४७. महाकाली, ४८. कराली, ४९. विकृतानना,

५०. कोटराक्षी, ५१. भीमा, ५२. भीमभद्रा, ५३ सुभद्रा, ५४. वायुवेगा, ५५. हयानना, ५६. ब्रह्माणी, ५७. वैष्णवी, ५८. रौद्री, ५९. मातङ्गी, ६०. चर्चिकेश्वरी, ६१. ईश्वरी, ६२. वाराही, ६३. सुवड़ी तथा ६४. अम्बा। यह ग्रन्थ २४००० श्लोकात्मक कहा गया है। --नें० द० ३।३८३ (ख)

कुब्जिकापूजाप्रकार

लि०--अग्निपुराण से गृहीत। --कैट्. कैट्. १।११०

कुब्जिकामत

लि०--(१) श्लोक सं० २९६४। प्रसिद्धि है कि एक तन्त्र-सम्प्रदाय था जो कुब्जिकामत, कुलालिकाम्नाय, श्रीमत, कादिमत, विद्यापीठ, दिव्यौघसद्भाव आदि विविध नामों से अभिहित होता था। श्रीमतोत्तर, मन्थानभैरव, कुब्जिकामतोत्तर आदि उसी के परिशिष्ट हैं, जिनमें उसका सारांश प्रतिपादित है। कहते हैं कि मूल ग्रन्थ (कुलालिकाम्नाय) २४००० श्लोकों का ग्रंथ है, यह चार विभागों में विभक्त है, जिन्हें षट्क कहा जाता है। प्रत्येक षट्क में छह हजार श्लोक हैं। यह कुब्जिकामत कुलालिकाम्नाय के अन्तर्गत है। इसमें २५ पटल हैं। इसकी अन्तिम पुष्पिका में लिखा है--"कुलालिकाम्नाये श्रीमत्कुब्जिकामते समस्तस्थानाववोधश्चर्यानिर्देशो नाम पञ्चविंशति-(२५) तमः पटलः समाप्तः।" इसके २५ पटलों के विषय हैं--१. चन्द्रद्वीपावतार, २. कौमारी-अधिकार, ३. मन्थानभेदप्रचार रतिसंगम, ४. गह्वरमालिनी-उद्धार में मन्त्रनिर्णय, ५. बृहत्समयोद्धार, जपमुद्रानिर्णय, मन्त्रोद्धार में षडङ्ग विद्याधिकार, स्वच्छन्दशिखाधिकार, दक्षिण षट्क-परिज्ञान, देवीदूतीनिर्णय, योगिनीनिर्णय, महानन्दमञ्चक, पदद्वयहंसनिर्णय, चतुष्कपदभेद, चतुष्कनिर्णय, द्वीपाम्नाय, समस्तव्यस्तव्यापिनिर्णय, त्रिकाल उत्क्रान्ति सम्बन्ध, तद्ग्रहपूजाविधिपवित्रारोहण आदि।

--नें० द० १।२८५ (क)

[नें० द० में कुब्जिकामत की और भी प्रतियाँ निर्दिष्ट हैं। सभी प्रायः अपूर्ण हैं--पृष्ठ ८,११,३४,५४,५५,५७, ९८ और ९९। इनकी सं० है--२२६ (ङ), १०७८ (घ), १४७३ (क) और (द)।]

(२) श्लोक सं० ३५००। इसका प्रतिलिपि-काल १४८८ शकाब्द दिया गया है। इसमें इसके ५६ पटल कहे गये हैं। --नें० द० २।२७१

कुब्जिकामत (कादिभेद में)

लि०——(१) श्लोक सं० ३५००, लिपि-काल सन् ११९५ ई०। यह कुब्जिकामत का लघु संस्करण है। यह पश्चिमाम्नाय का ग्रन्थ है। कुछ लोगों का कहना है कि यह कौलिनी और श्रीकण्ठ संवादरूप है। तन्त्र तीन श्रेणियों में विभक्त हैं——कादि, खादि और हादि। कालीसम्बन्धी तन्त्र कादि, सुन्दरीसम्बन्धी हादि तथा अन्य देवियों से सम्बद्ध तन्त्र खादि श्रेणी में आते हैं। यह तन्त्र कादि श्रेणी से सम्बद्ध है। इसके अतिरिक्त तन्त्रों के और छह विभाग भेद हैं जो षडाम्नाय कहलाते हैं। जैसे उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, ऊर्ध्व और अधः। यह उन विभागों में पश्चिम विभाग या पश्चिमाम्नाय के अन्तर्गत है।

——ने० द० २।३७८

(२) श्लोक सं० १७००, अपूर्ण। यह कुलालिकाम्नाय के अन्तर्गत शाक्त तन्त्र है। इसमें ४२ पटल और ६००० श्लोक हैं। कुब्जिकामततन्त्र भी इसे कहते हैं।

——ए० बं० ५८०४, ५ तथा ६८२०

(३) ——कैट्. कैट्. ३।२४

कुब्जिकामतलघुटिप्पणी

लि०——इसकी पुष्पिकामात्र प्राप्त है। जिससे ज्ञात होता है कि इसके कम-से-कम २५ पटलों तक तो यह टिप्पणी लिखी गयी थी। इसके अतिरिक्त और विषय या ग्रन्थ-परिमाण प्राप्त नहीं हो सके।

पुष्पिका है——"इति श्रीकुब्जिकामते लघुटिप्पण्यां पञ्चविंशति-(तमः ?) पटलः समाप्तः।" इति श्रीआगमावतारः समाप्तः। ——ने० द० २। पेज ११६

कुब्जिकामतोत्तर

लि०——यह कुलावलिकाम्नाय (कुलालिकाम्नाय ?) के अन्तर्गत है। इसमें २३ पटल है। इसमें विषय——त्रिकाल संक्रान्ति सम्बन्ध, आनन्दचक्रद्वीपावतार, समस्त-व्यस्तव्याप्ति आदि वर्णित हैं।

——ने० द० १।१३५ (ख)

कुमारतन्त्र (१)

लि०——(१) अभिनव लिखित। यह महादेव-कौशिकमुनि संवादरूप है। भगवान् महादेव को प्रणाम कर परम भक्ति और स्तुतिपूर्वक कौशिक मुनि ने कहा भगवन्, मुझे

कुमारतन्त्र सुनने की अत्यन्त उत्कण्ठा है इसपर भगवान् शिव ने महामन्त्र ग्रन्थ कोटि विस्तृत करुणाख्यतन्त्र उनसे कहा। —तँ० म० ११९

(२) श्लोक सं० लगभग ५३। केवल मातृकापूजा नामक प्रकरण पूर्ण। यह तन्त्र रावणकृत कहा गया है। —सं० वि० २६४८४

(३) (क) श्लोक सं० २०००, ३१ पटल। (ख) श्लोक सं० १६००। पूजाविधि पर यह विविध आगमों से उद्धरण रूप है।

—अ० व० (क) ७९३३ (क), (ख) ७०१९

(४) श्लोक सं० ९२९। यह शिवप्रोक्त (शिव-पार्वती संवादरूप) कहा गया है। इसमें स्कन्द की आराधना, उनका परिवार, उनकी साधना, उसका क्रम, मण्डप, धारणामन्त्र, उसके अङ्गभूत मन्त्र, मन्त्रोद्धार-क्रम, मुद्रा, दीक्षा, अभिषेकविधि, प्रतिमा-लक्षण आदि विषय वर्णित हैं। —ट्रि० कै० ९२९ (क)

(५) —कैट्. कैट्. १।११०

(६) कुमारतन्त्र ८५ पटलों में हैं। —कैट्. कैट्. ३।२४

(७) कुमारतन्त्र या बालतन्त्र यह बालरोग पर रावण कृत है। इसके १२ अध्याय चक्रपाणिदत्त के चिकित्सासंग्रह में गद्य के रूप में दिये गये हैं (कलकत्ता संस्करण, सन् १८७२) पृ० ४६६। अन्य आयुर्वेद ग्रन्थों में भी इसका प्रायः उल्लेख आता है।

उ०—नीलकण्ठभट्ट के शान्तिमयूख में। —कैट्. कैट्. २।२२

कुमाररत्न

लि०—

—प्राप्त ग्रन्थसूची से।

कुमारसंहिता

लि०—(१) श्लोक सं० २५०। १० अध्यायों में पूर्ण। यह ब्रह्मा और शिव संवाद-रूप है। इसमें गणेश-पूजा का विवरण दिया गया है। ulwar २०२८ तथा extra ६१५ में यह ७ अध्याय का कहा गया है। कैट्-कैट् (३।२४) ने इसकी १० अध्याय की दूसरी प्रति का निर्देश किया है। इसके विषय हैं—विद्यागणेश-मन्त्रोद्धार, पुरश्चरण, पूजा, पञ्चमाचरण, वशीकरणादि प्रयोग, स्तंभन और उच्चाटन, होमविधि, संग्राम-विजय, वाञ्छाकल्पलता, मन्त्रविधान। यह शिवप्रोक्त है।

—ए० बं० ६०५६

(२) श्लोक सं० लगभग १८७, पूर्ण। —सं० वि० २४६८६

(३) —भं० रि० इ० में १ प्रति है।

(४) दे०, कौमारसंहिता। —कैट्. कैट्. १।११०, २।२२

कुमारिकापूजन

लि०—(१) श्लोक सं० लगभग २४, पूर्ण। —र० मं० ११७३

(२) —कैट्. कैट्. २।२२

(३) 'कुमारिकापूजाविधि' श्लोक सं० २२, पूर्ण। —सं० वि० २६५०९

कुमारीकल्प

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

कुमारीतन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० ३००, नौ पटलों में पूर्ण। यह तन्त्र दो भागों में विभक्त है—पूर्व भाग और उत्तर भाग। इस प्रति की अन्तिम पुष्पिका के अनुसार यह प्रथम भाग (पूर्व भाग) मात्र है। इसमें काली की पूजा (कालीकल्प) प्रतिपादित है।

—ए० बं० ६०१०–१३

(२) श्लोक सं० २५०। इसमें १० पटल हैं। परमरहस्य कालीतन्त्रका यह कालीकल्प है यानी पूर्व भाग मात्र है। —ने० द० २।२६४ (ख)

(३) श्लोक सं० ३००। अन्तिम पुष्पिका द्वारा यह परम रहस्य कुमारीतन्त्र का पूर्व भाग और ९ पटलों में पूर्ण कहा गया है। इसके विषय यों वर्णित हैं—विद्योद्देश, अन्तर्यागविधि, बहिर्यागविधि, नैवेद्य निश्चयादि कथन, पुरश्चरणविधि, कुलाचारविधि, पूजा के स्थान आदि का निरूपण, आचारविधि तथा कालीकल्प। इसका श्मशान में १०००० जप करने से शत्रुमारण होता है। यह कालीकल्प अतिगोपनीय कहा गया है। इसके गोपन से सर्वसिद्धियाँ प्राप्त होती हैं और प्रकाशन से अशुभ होता है। —नो० सं० ३।१६६

(४) श्लोक सं० १००, अपूर्ण। —अ० ब० १०६२७ (ख)

(५) (क) श्लोक सं० ३३१, पूर्ण, लिपि-काल शकाब्द १६५६।

(ख) श्लोक सं० ७२, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४७१८, (ख) २५४३७

(६) —कैट्. कैट्. १।१११, ३।२४

उ०—श्यामारहस्य, तारारहस्यवृत्ति, आगमतत्त्वविलास, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, कौलिकार्चनदीपिका, कालिकासपर्याविधि, सर्वोल्लासतन्त्र आदि में।

कुमारीतन्त्रकल्प

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा कालिकासपर्याविधि में।

कुमारीपूजा

लि०—(१) पुष्पिका में यह कुमारीपूजाविधिसंग्रह नाम से उल्लिखित है। यह संकर्षणयामल, विश्वभैरव, पटलपिङ्गल आदि से उद्धृत है।

—ए० बं० ५९९०

(२) श्लोक सं० ५५। इस तान्त्रिक संग्रह ग्रन्थ में विविध जाति, अवस्था की कुमारियों की पूजाविधि प्रतिपादित है। अवस्थाभेद से कुमारियों के नाम कहे गये हैं। जैसे—'एक वर्षा भवेत् सन्ध्या द्विवर्षा च सरस्वती' इत्यादि। उनकी पूजा का क्रम भी वर्णित है।

—रा० ला० ६३६

(३) पूर्ण। —बं० प० ५०८

(४) श्लोक सं० २५, पूर्ण। —स० वि० २४७५१

सं० वि० में कुमारीपूजनविधि, कुमारीपूजाविधि आदि नाम से अनेक पुस्तकें हैं जिनकी सं० २४९०१, २५०२७, २५७४३, २६२५५ तथा २६५७५ हैं।

कुमारीहृदय

लि०—यह शिव-नारद संवादरूप मौलिक तन्त्र है। नारदजी की प्रार्थना पर भगवान् शङ्कर द्वारा भगवती दुर्गाजी की प्रसन्नता के उपाय इसमें प्रतिपादित हैं। इसमें ५ पटल हैं एवं शक्ति कुमारी की पूजा विशेष रूप से वर्णित है।

—क० का० ७६ (४)

कुलकमल

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

कुलगह्वर

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

कुलतन्त्र

उ०—कुलप्रदीप तथा आनन्दलहरी की टीका तत्त्वबोधिनी में।

कुलकुलादिचक्र

लि०—(१) इसमें अकार से लेकर क्षकार तक के सब वर्ण और उनकी श्रेणियाँ विभिन्न कक्षाओं में देवताओं के अनुसार विभक्त हैं। जैसे—अ, आ, ए, क, च, ट, त, प, य और ष ये वर्ण मारुत हैं। इ. ई. ऐ. ख, छ, ठ, थ, फ, र और क्ष ये वर्ण आग्नेय हैं। उ, ऊ, ओ, ग, ज, ड, द, ब, न और ल ये वर्ण पार्थिव हैं आदि। यह अक्षरों के देवता, वर्ग आदि का निरूपक तन्त्रग्रन्थ है। —क० का० १३

(२) 'कुलाकुलादिचक्र' नाम दिया है। श्लोक सं० लगभग २१८, पूर्ण। यह तन्त्रसारोक्त कहा गया है। —सं० वि० २५३०५

कुलचूड़ामणितन्त्र

लि०—(१) अपूर्ण श्लोक सं० ४८०। यह सात पटलों में पूर्ण है। सं० ५८२९ में जो चूडामणितन्त्र है उसमें केवल मात्र योनिस्तव है। —ए० ब० ५८२७, २८

(२) श्लोक सं० ५०४। यह भैरव-भैरवी संवादरूप है। इसमें वर्णित विषय है—गुरु का निरूपण, स्थान आदि का निरूपण, कुलदेवता की पूजा, कुल अङ्गनाओंका निरूपण, यन्त्र आदि के लिखने का उपाय निरूपण, कुलाचार आदि, समयाचार के रहस्य आदि का निरूपण, मद्यपान आदि की विधि, वेताल आदि की सिद्धि का प्रकार, कुलाचारसंकेत निरूपण, प्रयोग आदि। —नो० सं० १।७०

(३) श्लोक सं० १५०। —अ० ब० १०६२७ (ग)

(४) श्लोक सं० ४६० और पटल ७। ७ पटलों के विषय यों वर्णित हैं—कुल तन्त्रों की प्रशंसा, कौलों के कर्तव्य कर्मों का निरूपण, कुलशक्ति पूजाविधि, कौलिकों के विशेष अनुष्ठान, महिषमर्दिनी के स्तव आदि। —रा० ला० २४५

(५) (क) श्लोक सं० ९१०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० २४०, अपूर्ण है।

—सं० वि० (क) २३८८०, (ख) २४८८९

उ०—कौलिकार्चनदीपिका, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, तारामभक्तिसुधार्णव, श्यामारहस्य, कुलप्रदीप, रहस्यार्णव, तारारहस्यवृत्ति तथा आगमतत्त्वविलास में।

कुलतत्त्वसार

उ०—सर्वोल्लासतन्त्र में।

कुलदीक्षा

लि०—(१) (क) मनोदत्त रचित, पूर्ण। (ख) पूर्ण।
—डे० का० (क) ४४०, (ख) ४४१ (१८७५-७६ ई०)

(२) मनोदत्त कृत, पूर्ण। शिवस्वामी द्वारा परिवर्द्धित।
—डे० का० ४४२ (१८७५, ७६ ई०)

कुलदीपिका

लि०—(१) श्लोक सं० ३६०, पूर्ण। कौलिकों के हित के लिए श्रीरामशङ्कराचार्य ने इसकी रचना की। इसमें मन्त्र पदका अर्थ, ब्रह्मनिरूपण, कुलाचारविधि, नित्यानुष्ठान, कुलपूजा, शिवावलि, संविदाशोधन, दीक्षा, होमविधि, प्रकारान्तर से शक्तिपूजा, योग, वलिदान-द्रव्य आदि विषय वर्णित हैं। —ए० व० ६४४२

(२) श्लोक सं० ९४०। कुलशास्त्र तथा तीनों सम्प्रदायों का अवलोकन कर कौलिकों के हितार्थ कुलदीपिका की रचना की गयी। इसमें दस महाविद्याओं के मन्त्र, अनुष्ठान आदि विषय वर्णित हैं। —नो० सं० ३।७

(३) दे० शूद्रकुलदीपिका, कौलाचारदीपिका। —कैट्. कैट्. १।११२

कुलदीपिनी

लि०—श्लोक सं० ३४६। —र० मं० ४४११

कुलद्रव्यशोधन

लि०—श्लोक सं० लगभग ८, अपूर्ण। —सं० वि० २४२६६

कुलपञ्चामृत

उ०—कुलप्रदीप में।

कुलपञ्चाशिका

उ०—क्षेमराज ने इसका उल्लेख किया है, हाल पे० १०८ के अनुसार।
—कैट्. कैट्. १।११२

कुलपूजनचन्द्रिका

लि०——इसके रचयिता चन्द्रशेखर शर्मा हैं। इसमें कौलि की कोंपूजाविधि आदि विषय वर्णित हैं।

कुलपूजापद्धति

लि०——(क) श्लोक सं० ११८, अपूर्ण।

(ख) श्लोक सं० १३३, अपूर्ण; (ग) श्लोक सं० २३८, अपूर्ण।

——सं० वि० (क) २५००४, (ख) २६२९८, (ग) २६४९२

कुलपूजाविधि

लि०——श्लोक सं० ८०, पूर्ण। इसमें किसी विशेष देवी का उल्लेख किये विना पूजा वर्णित है। इस पद्धति में साधारण पूजापद्धति की अपेक्षा बहुत थोड़ा अन्तर है।

——ए० बं० ६४५१

कुलप्रकाशतन्त्र

लि०——श्लोक सं० ३६, अपूर्ण। इसमें कौलों की श्राद्धविधि वर्णित है। साथ ही कौल-श्राद्धपद्धति का भी प्रतिपादन है।

उ०——तन्त्रसार में।

कुलप्रदीप

लि०——(१) महोपासक कौलिकों की प्रसन्नता के लिए शिवानन्दाचार्य ने विस्तृत कुलमार्ग का सारभूत यह निबन्ध रचा। जिस पर प्रभूत गुरु-कृपा हो, इष्ट देवता का महान् अनुग्रह हो उसी पुरुष को इस शास्त्र का ज्ञान होता है। इसके विषय हैं——कुल-धर्म प्रशंसा, कुल-पूजा का समय निरूपण, पूजा-द्रव्य, कलशस्थापन-प्रयोग, उसका २ रा, ३ रा और ४था प्रकार, कुण्ड, गोल आदि द्रव्यों के ग्रहण की विधि, प्रधान रूप से चक्रों का निरूपण आदि। यह ७ प्रकाशों में पूर्ण कहा गया है। ——इ० आ० २५६९

(२) अपूर्ण। इस ग्रन्थ के ७ और ८ प्रकाशों का उल्लेख क्रमशः म. द. ५५८५. तथा इ. आ. २५६९ में किया गया है। इसके रचयिता का नाम शिवानन्द गोस्वामी है। इस प्रति में ५वाँ, ६ ठा प्रकाश और ७ वें का कुछ अंश है। इसमें २ य, ३य, ४र्थ मकार और ५ म मकार का निरूपण, दूतीयाग, कुण्डगोलादि की ग्रहणविधि, कुलाचार निरूपण आदि विषय वर्णित हैं। ——ए० बं० ६४४३

(३) (क) श्लोक सं० ७००, (ख) श्लोक सं० १००० अपूर्ण।

—अ० ब० (क) १०६३५, (ख) ११३४५

(४) इसकी २ प्रतियाँ हैं। —भ. रि. ९७ और ९८

(५) यह ८ प्रकाशों में पूर्ण है। इसके निर्माता शिवानन्दाचार्य हैं। शक्ति के उपासकों में महोपासक कौलों का यह निबन्धग्रन्थ है। यह समस्त आगमों का सारभूत है।

—म० द० ५५८५

(६) शिवानन्दाचार्य कृत। —कैट्. कैट्. १।११२

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

कुलमत (तन्त्र)

लि०—श्लोक सं० ११२०। श्रीकविशेखर विरचित यह ग्रन्थ १६ पटलों में पूर्ण है। इसका निर्माण कौल विद्वानों की प्रसन्नता के लिए शकाब्द १६०२ में हुआ था। इसमें लिखा है—"शके युगखषड्विधौ।" इसमें—कौलाचार वर्णन, श्रीन्यास विवरण, श्रीपूजा, बालकसंस्कार, गुरु-शिष्य-लक्षण, दीक्षाविधि, षट्कर्मविधि, वीरसाधन, शवसाधन, योगिनीसाधन, आकर्षण आदि प्रयोग कथन, दीपनी-विधान आदि विषय वर्णित हैं।

—नो० सं० ४।५९

कुलमार्गतन्त्र

लि०—यह ६४ तन्त्रों में अन्यतम है। —कैट्. कैट्. १।११२

कुलमुक्तिकल्लोलिनी

लि०—(१) श्लोक सं० ९४५०, २२ पटलों में पूर्ण। इस ग्रन्थ में सामान्यतः तान्त्रिक पूजा का विवरण दिया गया है। कालीपूजा के प्रचुर उद्धरण दिये गये हैं। इसके निर्माता आद्यानन्द (नवमीसिंह) हैं। इसकी एक प्रति जिसकी प्रतिलिपि सं० १८७७ वि० में की गयी थी, इंडियन म्यूजियम में है (२६८९)। इसमें बहुत से तन्त्र-ग्रन्थ और ग्रन्थकारों का उल्लेख है। —ए० बं० ६३०८

(२) श्लोक सं० ३२०५। कुलदीक्षा, नित्यपुरश्चर्याविधि का प्रतिपादनपूर्वक षट्कर्म वशीकरण, उच्चाटन, स्तम्भन, मोहन, मारण आदि के साथ इसमें वर्णित हैं। यह सिद्धान्तानुसारी शाक्तों के दीक्षा आदि विविध कर्मों का प्रतिपादक तन्त्र हैं।

—रा० ला० २३४२

(३) श्लोक सं० ८८७६, पूर्ण। —सं० वि० २४८९६

कुलमूलावतार

उ०—पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, प्राणतोषिणी, महार्थमञ्जरी-परिमल, तथा नित्योत्सवनिबन्ध में।

कुलयुक्ति

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में। यह शैव तन्त्र है।

कुलरत्नमातृकासाहस्त्रिका

उ०—ज्ञानेश्वरकृत प्रपञ्चसारविवरण में (?)।

कुलरत्नमाला

उ०—तन्त्रालोक तथा योगराज कृत परमार्थसार की टीका में।

कुलरत्नमालिकासाहस्त्रिका

उ०—परमार्थसार की योगराज कृत टीका में।

कुलरत्नावली

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

कुलशासन

लि०—बम्बई रायल सोसाइटी में नं० ८७० एक प्रति है।

उ०—सच्चिदानन्दनाथ कृत ललितार्चनचन्द्रिका में।

कुलसंग्रह

उ०—शङ्कर कृत तारारहस्यवृत्ति में।

कुलसंहिता या नवरात्रादिकुलसंहिता

लि०—श्लोक सं० ७६८। यह शिव-पार्वती संवादरूप कहा गया है। इसकी प्रस्तावना में कहा गया है—कालीतन्त्र, यामल, भूतडामर, कुब्जिकातन्त्रराज, खेचरीसाधन, कालीमन्त्र, बीजमन्त्र आदि का परम प्रसन्नता और अतियत्न से विवेचन कर साधकों के हित के लिए इसका प्रतिपादन किया जाता है—मन्दर स्थित भगवान् महेश्वर से प्रेमविह्वल पार्वतीजी ने पूछा—जिस उपाय से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है, हे दयासागर, वह उपाय मुझे

बतलाइए। इसपर महेश्वर ने कहा––हे प्रिये, यह नवरात्र सुखप्रद, मोक्षप्रद और महैश्वर्यप्रदायक है। इसे तुम अत्यन्त गोपनीय रखना। इसमें प्रतिपादित विषय हैं–कौल-धर्म निरूपण, साधकों के लक्षण, साधिकाओं के लक्षण, कौल पूजा-क्रमविधि, उसका फल, पञ्चतत्त्व-निरूपण, मत्स्य आदि की शोधनविधि, बलिदानविधि, पात्रग्रहण आदि की विधि, जप और तर्पण की विधि, कलियुग में वीरभाव की प्रशस्तता, साधना-विधि, साधनादि के विभिन्न देशों का निरूपण, कौलों के कर्तव्याकर्तव्य का विधान, कौल गुरु के लक्षण आदि का कथन, कौलाचार में अधिकार का निरूपण, गुरु-प्रशंसा वर्णन, कौलरहस्य आदि। ––नो॰ सं॰ ११७३

कुलसर्वस्व

उ॰––आगमतत्त्वविलास तथा उग्रतारापञ्चाङ्ग की पुष्पिका में।

कुलसार

उ॰––आगमतत्त्वविलास तथा प्राणतोषिणी में।

कुलसारसंग्रह

लि॰––श्लोक सं॰ १०७, अपूर्ण। शिव-पार्वती संवादरूप यह मौलिक तन्त्रग्रन्थ सोमभुजङ्गवल्ली, जो अमृतमथन का एक अंश है, का एक भाग है। यह पूर्ण ग्रन्थ ३६ पटलों में विभक्त है। इसमें विश्वस्तंभन, आकर्षण, मारण आदि का भी वर्णन है, यह ग्रन्थ की प्रस्तावना से ज्ञात होता है। ––ने॰ द॰ १६६३

कुलसूत्रषोडशस्वरकला

लि॰––शितिकण्ठ विरचित। ––डे॰ का॰ ४४५ (१८७५-७६ ई॰)

कुलाकुलादिभेद

लि॰––श्लोक सं॰ २००। ––अ॰ ब॰ ५१४१

कुलागम

उ॰––प्राणतोषिणी, कौलिकार्चनदीपिका तथा सौभाग्यभास्कर (भास्करराय कृत) में।

कुलाचार

लि॰––श्लोक सं॰ ४००, अपूर्ण। ––अ॰ ब॰ १०१९१

कुलानन्दसंहिता

उ०——आगमतत्त्वविलास में।

कुलामृत

उ०——कुलप्रदीप, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

कुलामृतदीपिका

उ०——ताराभक्तिसुधार्णव में।

कुलाम्नाय

उ०——विज्ञानभैरवटीका (शिव उपाध्याय रचित) में।

कुलार्चनचक्र

लि०——एक प्रति है। ——र० मं०

उ०——कौलिकार्चनदीपिका, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, श्यामारहस्य, तारारहस्यवृत्ति, आगमतत्त्वविलास, आगमकल्पलता, रहस्यार्णव, ललितार्चनचन्द्रिका, सौभाग्यभास्कर और कुलप्रदीप में।

कुलार्चनदीपिका

लि०——महामहोपाध्याय जगदानन्द विरचित। ——रा० पु० ५६१७

कुलार्चनपद्धति

लि०——श्लोक सं० ४००। सहतामनलाल दीक्षित कृत।

——अ० ब० १२२९६

कुलार्णवतन्त्र

लि०——(१) श्लोक सं० २०००, १७ उल्लासों में पूर्ण। १७ उल्लासों में ये विषय वर्णित हैं——जीवस्थिति कथन, कुल-माहात्म्य, ऊर्ध्वाम्नाय-माहात्म्य, मन्त्रोद्धार, सोलह प्रकार के न्यास, कुल-द्रव्यों के निर्माण आदि की विधि, कुल-द्रव्य आदि के संस्कार, बटुक आदि की पूजाविधि, तीन तत्त्वों के उल्लास तथा पान के भेद, कुल-योगादि का वर्णन, विशेष दिन की पूजा, कुलाचारविधि, श्रीपादुका-भक्तिलक्षण, गुरु और शिष्य के लक्षण, गुरु-शिष्यादि-परीक्षा, पुरश्चरणविधि, काम्यकर्मविधि, गुरु नाम, वासना आदि कथन। शिव-

पार्वती संवादरूप यह कुलार्णव महारहस्य, सर्वागमों में उत्तमोत्तम तथा सवा लाख श्लोकात्मक कहा गया है। यह मुक्तिप्रद शास्त्र है। ——रा० ला० २९०, २५८

(२) यह शिवप्रोक्त मौलिक तन्त्रों में एक है। इसमें १७ उल्लास हैं। उनमें विषय पूर्ववत् वर्णित हैं। ——बी० कै० १२८५

(३) (क) उल्लास २८, अपूर्ण। (ख) अपूर्ण। (ग) अपूर्ण। (घ) अपूर्ण।
——वं० प० (क) ९२४, (ख) १९८, (ग) ८२३, (घ) ६०२

(४) श्लोक सं० २३००। १७ उल्लास या पटलों में। इसमें कहा गया है कि उड्डीयान महापीठ में स्त्री के बिना सिद्धि नहीं होती, स्त्री-विहीन साधना करने में वहाँ देवता विघ्न डालते हैं। देविदैकोठ पीठ में युक्ताहारविहारा सर्वलोकमनोहरा नारी की आवश्यकता होती है जिसके दर्शन मात्र से मन में क्षोभ उत्पन्न हो जाय। मन का यदि क्षोभ न हो तो वहाँ सिद्धि नहीं होती। ब्राह्मणी और यवनी के सिवा सजातीया सर्वदा ग्राह्य है। विदग्धा रजकी और नापिती ग्राह्य है। जो साधक ब्राह्मणी या यवनी का दैवयोग से यदि स्पर्श भी करे तो उसे करोड़-करोड़ कल्पों में भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती। वह दरिद्र और महारोगी होता है। त्रिपुरा उससे विमुख होकर हँसती हुई चली जाती है। हिंगुलापीठ में जो साधक मत्स्य-सेवन करता है उसे भी करोड़-करोड़ कल्पों में भी सिद्धि नहीं होती। देविदैकोठ और मुद्राख्य पीठों में निवास कर रहा साधक मद्य चढ़ा कर यदि जप करे तो उसे भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती। जालन्धर महापीठ में मद्य का त्याग कर देना चाहिए। वाराणसी में केवल मुद्रा से शिवभक्तिपरायण साधक को सिद्धि प्राप्त होती है, इसमें सन्देह नहीं। अन्तर्वेदी, प्रयाग, मिथिला, मगध और मेखला में मद्य से सिद्धि होती है। वहाँ मद्य के बिना देवता विघ्न उपस्थित करते हैं। अङ्ग, वङ्ग और कलिङ्ग में स्त्री से सिद्धि होती है। सिंहल में, द्रौपदीकृत स्त्रीराज्य में तथा राढ़ा में मत्स्य, मांस, मुद्रा और अङ्गना से सिद्धि होती है। गौड देश में पाँचों द्रव्यों से सिद्धि होती है। उसी प्रकार अन्य देशों में भी पाँच द्रव्यों से सिद्धि होती है। तन्त्रान्तर में कहा गया है कि दही के बराबर गुड़ और बैर की जड़ मिला कर तीन दिन रखा जाय तो मद्य हो जाता है। शक्ति कुल कही गयी है, उसमें जो पूजा आदि है वह कुलाचार है जो साधक को अभीष्टप्रद है।

——ए० बं० ५९०५

ए० बं० में इसकी ५९०४ से ५९१२ तक ९ प्रतियाँ और है। उनमें से एक का उपर्युक्त विवरण है। स० ५९०८ में इसके ३६ पटल कहे गये है। उसकी पुष्पिका यों है—

इति श्री कुलार्णवे देवीश्वरसंवादे परमार्थतत्त्वज्ञानतरङ्गिण्यां नाममाहात्म्यं नाम षट्त्रिंशत्पटलः।

(५) श्लोक सं० २५००। १७ उल्लासों में। १७ उल्लासों के विषय प्रायः पूर्ववत् ही वर्णित है। —ने० द० २।२५३ (ख)

(६) यह देवी-ईश्वर संवादरूप महारहस्य तन्त्रग्रन्थ सवालाख श्लोकों का ५ खण्डों में पूर्ण है। उसका यह ५ वाँ खण्ड है। उसके १७ उल्लास इस प्रति में वर्णित है।

—म० द० ५५८७

—म० द० में ५५८८ से ९५ तक ८ प्रतियाँ और हैं।

(७) श्लोक सं० २६०८। —अ० ब० १०६९८

—अ० ब० में ९ प्रतियाँ और हैं, जिनकी सं० ५७८४, १००२४, ६७४४, ७१४६, १०५८८, ११२३८, १७३, १२८१४, और १२८५६ है। इनमें अधिकांश २००० श्लोकात्मक हैं।

(८) उल्लास १६ हैं। देवीजी के प्रश्न पर भगवान् महादेवजी द्वारा प्रोक्त। इसमें कुलाचारानुसार अनुष्ठित पूजा के वैशिष्ट्य आदि का निरूपण है। ऊर्ध्वाम्नाय तथा अन्यान्य तन्त्रों की सम्मति भी इस विषय में प्रतिपादित है और मन्त्रोद्धार आदि विषय भी वर्णित है। शेष विषय रा० ला० २९० के तुल्य हैं।

(९) श्लोक सं० १९७०। ईश्वर-पार्वती संवादरूप यह ग्रन्थ कौल श्रेणी के शाक्तों का अत्यन्त मान्य है। —ट्रि० कै० ९३०

(१०) शिवभाषित। —रा० पु० ५७६२, ५६२३

(११) श्लोक सं० २७३। केवल १ ला और नवाँ (९वाँ) उल्लास मात्र। इस संग्रह में कुलार्णवतन्त्र के नाम से एक पूर्ण प्रति और है जिसकी —सं० ४४६ है।

—डे० का० २२७

(१२) श्लोक सं० लगभग २१०४, पूर्ण।

—सं० वि० २४७९५

—सं० वि० में कुलार्णव और कुलार्णवतन्त्र नाम से १४ प्रतियाँ और हैं जिनकी सं० कुलार्णव के नाम से—२३८७९, २४४९३, २५२१०, २५६२२, २५६२३, २५६२४, २६२९५ तथा कुलार्णवतन्त्र के नाम से—२४०८५ से ८८ तक, २५६०४, २६३८४, २६५०३ हैं।

(१३) श्लोक सं० २४२६, पूर्ण। —र० मं० ४९९५

(१४) पूर्ण। ईश्वर-प्रोक्त इस संग्रह में २ प्रतियाँ हैं। दोनों का नाम कुलार्णवतन्त्र है। —ज० का० ९९८, ९९९

(१५) उल्लास १७। यह ५ खण्डात्मक कुलार्णव का ५वाँ खण्ड है। पूर्ण ग्रन्थ की श्लोकसंख्या १२५०.०० सवा लाख बतलायी गयी है। यह महारहस्य सब आगमों में परम उत्तम और ५ खण्डात्मक है। यह पुष्पिका में स्पष्ट प्रतिपादित है।—इ० आ० २५६७

(१६) पन्ने २१४। इसमें इसका नाम कुलार्णवरहस्य दिया है, पर यह कुलार्णव-महारहस्य से अतिरिक्त नहीं है। इस संग्रह में २ प्रतियाँ और हैं, जिनकी सं० ९९ और १०१। —भ० रि० १०५

उ०—कौलिकार्चनदीपिका, ताराभक्तिसुधार्णव, तारारहस्यवृत्ति, तन्त्रसार, कालिकासपर्याविधि, सर्वोल्लास में।

कुलार्णवटीका

लि०—अपूर्ण। —ने० द० २।२९

कुलार्णवसार

लि०—श्लोक सं० १८८। —अ० ब० ५७९२

कुलार्णवसारोद्धार

लि०—श्लोक सं० ३००। —अ० ब० ३४३३

कुलालिकाम्नायतन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० ७५०। यह ग्रन्थ आदि और अन्त में खण्डित है। पुष्पिका में दक्षिणषट्क परिज्ञान नाम का १२ वाँ पटल समाप्त कहा गया है। इसमें कुल-विद्या (Kula doctrines) का प्रतिपादन है। —ट्रि० कै० १०१६ (ग)

(२) —कैट्. कैट्. १।११२

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

कुलावतार

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

कुलीनाचार

लि०—श्लोक सं० २३। —अ० ब० ५६४७

कुलेश्वर

उ०—परात्रिंशिका में।

कुलेश्वरीतन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरी की गौरीकान्तकृत टीका में।

कुलेश्वरीपूजाविधि

लि०—श्लोक सं० लगभग ६२, पूर्ण, कामाख्यातन्त्रान्तर्गत।

—सं० वि० २६४९९

कुलोड्डीश (महातन्त्र)

लि०—(१) श्लोक सं० ९२५। ४ पटलों में पूर्ण यह श्रीदेवी-ईश्वर संवादरूप है। श्रीदेवी द्वारा महाषोडशी के सम्बन्ध में प्रश्न करने पर ईश्वर द्वारा पञ्च शक्तियों का ज्ञेयत्व कथन। वे पाँच शक्तियाँ है—१. कामेश्वरी, २. वज्रेश्वरी, ३. भगमाला, ४. त्रिपुरसुन्दरी और ५. परब्रह्मस्वरूपिणी नित्या। —ए० बं० ५८४५

(२) श्लोक सं० १२३७। देवी-ईश्वर संवादरूप यह महातन्त्र ४ पटलों में पूर्ण है। इसमें विषय यों वर्णित हैं—१. पञ्चभूतों के अधिष्टातृ देवता, पाँच शक्तियों का निरूपण, ५म शक्ति के दीक्षाभेद से वैष्णव, शैवादि भेदों का वर्णन, ५म शक्ति की ब्रह्मरूपता, उसकी उपासना का प्रकार, पञ्च कूटों का निरूपण, स्वप्नावती विद्या कथन, उसकी साधना, गन्धर्वविद्या, ब्रह्म-विद्या के स्वरूपादि कथन, नटी, कापालिकी आदि आठ प्रकार की नायिकाओं का निरूपण, उनके आकर्षण आदि के साधन का प्रकार, समयाचार कथन, कुलाचार कथन, सुराशापविमोचन, २य और ३य में पञ्च पञ्चाक्षरी विद्या, पञ्चमी विद्या की गायत्री आदि, 'मुद्रा' पद की निरुक्ति, मुद्रालक्षण, भौतिक, मनोमय आदि विविध शरीर, षोडशमहाविद्याओं का निरूपण, पीठ निरूपण, ध्यानयोग, कर्मयोग। ४ र्थ में—मन्त्रग्राम आदि का साधन प्रकार, आकर्षण, वशीकरण आदि में ऋतु आदि का नियम, सब कर्मों में होम की आवश्यकता, होम-द्रव्यों का निरूपण, वशीकरण आदि में पुष्प विशेषों का नियम तथा गुरुतोषणविधि। —रा० ला० २९६१

(३) दे०, उड्डीशतन्त्र। —कैट्. कैट्. १।११२

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

कुलोत्तम

उ०—प्राणतोपिणी में।

कुल्लकाविधिपटल

लि०—श्लोक सं० २५। —अ० ब० ५६४३

कुल्लकाविवरण

लि०—(क) श्लोक सं० ३०। (ख) श्लोक सं० ३०।
—अ० ब० (क) ८४८०, (ख) ८३२०

कुल्लुकाविधि

लि०—श्लोक सं० १६८, पूर्ण। इसके साथ, निर्वाणविधि, सर्वानन्द कृत स्तववर तथा पु. ना. (पुण्यनाथ ?) कृत स्तवराज भी संलग्न हैं। —सं० वि० २४८६१

कृकलासदीपिका

लि०—श्लोक सं० २४२, ५ पटलों में पूर्ण। —सं० वि० २६४३७

उ०—प्राणतोपिणी में।

कृत्यचन्द्रिका

लि०—श्लोक सं० ९६। इसके रचयिता रामचन्द्र चक्रवर्ती हैं। इसमें सब कामनाओं की सिद्धि के लिए षडशीति संक्रान्ति (चैत्र की संक्रान्ति) से लेकर महाविषुव संक्रान्ति तक गणेश आदि की तथा कालार्क रुद्र की पूजापूर्वक शिवयात्रा वर्णित है। जिससे शिवजी प्रसन्न होते हैं। यह तन्त्र शिवोपासनापरक है। —रा० ला० ५२३

कृत्यरत्नार्णव

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

कृत्यार्णव

उ०—कालिकासपर्याविधि में।

कृत्यासूक्तटीका

लि०—श्लोक सं० ३८०। पिप्पलाद विरचित यह ग्रन्थ प्रत्यङ्गिरासूक्त-टीका के नाम से भी प्रसिद्ध है। —अ० ब० १३३८३ (ग)

कृत्योत्पादनमन्त्रप्रयोग

लि०—श्लोक सं० २०, पूर्ण। —सं० वि० २४३२८

कृष्णयामल

लि०—(१) श्लोक सं० १४६०। यह व्यास-नारद संवादरूप है। इसमें कृष्ण की महिमा का प्रतिपादन किया गया है। विषय यों वर्णित हैं—व्यासजी का नारदजी से प्रश्न, शम्भु का ब्रह्माजी से प्रश्न, कृष्ण-रहस्य के विषय में ब्रह्मा का विष्णु से प्रश्न, आराध्य ईश्वर कौन है इसके निर्णय में विष्णु का महाविष्णु से प्रश्न, वृन्दावन का आरोहण वर्णन, विद्याधर आदि का प्रत्यागमन, विद्याधरी को कृष्ण का शाप, विद्याधर के साथ नारदजी का निर्गमन, कृष्ण के किङ्कर की उत्पत्ति, मदालसा का उपाख्यान आदि, ऋतध्वज का पितृपुर में प्रवेश, कालयवन का भस्म होना आदि। —नो० सं० १।७८

(२) यह वैष्णव तन्त्र है। इसमें कृष्ण की महिमा, पूजाविधि आदि वर्णित हैं। —बी० कै० १२८४

(३) श्लोक सं० ११२। त्रिभङ्गचरित्र मात्र पूर्ण है। शेषदेव शतनामस्तोत्र तथा चैतन्यकल्प भी कृष्णयामल से गृहीत कहे गये हैं। ये एशियाटिक सोसाइटी आफ बङ्गाल के प्राचीन संग्रह में हैं। —ए बं० ५८९१

(४) (क) श्लोक सं० लगभग २०७०, अपूर्ण।
(ख) श्लोक सं० लगभग २७, अपूर्ण।
(ग) श्लोक सं० लगभग १४०८, अपूर्ण।
(घ) श्लोक सं० लगभग ३१२, अपूर्ण।
—सं० वि० (क) २६६७८, (ख) २४५३४, (ग) २४५३५, (घ) २४८७५

कृष्णषडक्षरमन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० २०। —अ० ब० १३८६६

(२) श्लोक सं० ४०, पूर्ण। इसके आरंभ में गुरुमन्त्रप्रयोग भी सन्निविष्ट है। —सं० वि० २५५०४

केदारकल्प

लि०—(१) (क) श्लोक सं० १६००, पूर्ण। स्कन्दपुराणान्तर्गत। (ख) श्लोक सं० ११००, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० १०००। अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० १०००, पटल २१, अपूर्ण। —अ० ब० (क) ११५१७, (ख) ५७८२, (ग) ९८८, (घ) २४

(२) श्लोक सं० लगभग १६००, पूर्ण। —र० मं० ३९५६

(३) श्लोक सं० लगभग १०४०, पूर्ण। लिपिकाल १८४५ वि०।
—सं० वि० २३९०४

कैवल्यकलिकातन्त्रटीका

लि०—श्लोक सं० ४६८, पूर्ण। रा० ला० ४२९ ने इसका षट्चक्रविवृतिटीका के रूप में वर्णन किया है। उसमें स्पष्टतः लिखा है कि यह कैवल्यकलिकातन्त्र के २य पटल की टीका है। इसके रचयिता वैदिक नारायण भट्टाचार्य के पौत्र, वामदेव भट्टाचार्य के पुत्र विश्वनाथ हैं। —ए० बं० ६३६८

कैवल्यतन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० १६८। ५ पटलों में पूर्ण। इसमें तन्त्रों में प्रसिद्ध पञ्च तत्त्व—मत्स्य, मांस, मद्य आदि—का उपयोग वर्णित है।
—ए० बं० ६००१

(२) श्लोक सं० २२४, पटल ५। प्रतिपाद्य विषय–मत्स्य आदि पञ्च मकारों की प्रशंसा, पञ्च मकारों की शोधनविधि, पञ्चतत्त्वशोधन और बाह्य होमविधि। यह शिव-पार्वती संवादरूप है। —रा० ला० २६५

(३) पत्रे ८, पटल ५, पूर्ण। —बं० प० १२७०

उ०—कौलिकार्चनदीपिका तथा प्राणतोषिणी में।

कोमलवल्लीस्तव

गोरक्षनाथ या महेश्वरानन्द विरचित।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

कौतुकचिन्तामणि

लि०—(१) श्लोक सं० १०२५, पूर्ण। इसमें पहले विषपरीक्षा प्रकार वर्णित है। तदुपरान्त कहा गया है कि स्वयं प्रयत्नवान् राजा को स्तंभन, वशीकरण, वाजीकरण, कृत्रिम वस्तु करण, जनोपकार, वृक्षदोहन आदि कौतुकों द्वारा काल-ज्ञान करना चाहिए। इसमें परसेनास्तंभन, अङ्गारभक्षण, गृहदाहस्तंभन, खड्गस्तंभन, अग्निस्तंभन तथा जलस्तंभन के भेद, वीर्यस्तंभन, स्त्रीवशीकरण, पतिवशीकरण, आकर्षण, विविध अञ्जन-

निर्माण, अदृश्यकरण, वृक्षदोहन, पाषाण-चर्वण, नाना रूप करण, मत्स्य सर्पकरण आदि विविध विषय वर्णित हैं। —ए० बं० ६५६४

(२) श्लोक सं० १६००, पूर्ण। श्रीमन्मलवान् द्वारा लिखित (संभवतः यह लिपि-कर्ता का नाम है)। —अ० ब० १३०४

(३) श्लोक सं० १६०० के लगभग। प्रतापरुद्रदेव कृत। —रा० पु० ४८८६

(४) श्लोक सं० ८४४। लिपि-काल संवत् १८८४, अपूर्ण।
—सं० वि० २४४८८

कौतुकरहस्य

लि०—यह पण्डित चूड़ामणि विरचित कौतुक-ग्रन्थ है। इसमें स्तंभन, वशीकरण, वाजीकरण, कई वस्तुएँ बना देना, लोगों को अदृश्य कर देना, वृक्षों पर फल, फूल दिखा देना, बाढ़ को रोक देना, जलती आग में कूदने पर भी न जलना आदि कई प्रकार के कौतुक वर्णित हैं। इसकी पुष्पिका में दो मन्त्र भी दिये गये हैं, किन्तु उनकी भाषा समझ में नहीं आती। —क० का० १७

कौतूहलचिन्तामणि

लि०—यह ग्रन्थ नागार्जुन कृत है। इसमें शत्रु के घर को गिरा देना, उच्चाटन कर देना, अपने वश में कर लेना, मार डालना, किसी दूसरे से वैर करा देना, वन्दी को वन्धन से छुड़ा देना आदि विविध कृत्यों के तन्त्र-मन्त्र और उपाय वर्णित हैं।
—बी० कै० १२७७

कौतूहलविद्या

लि०—श्लोक सं० १४९। यह इन्द्रजाल या जादुई पर पार्वतीपुत्र नित्यनाथ विरचित तन्त्रग्रन्थ है। व्याधि और दारिद्रय हरने वाला तथा जरा और मृत्यु से बचाने वाला यह सर्वोत्तम इन्द्रजाल है। इसमें कबूतर, बकरी, मोर आदि को उत्पन्न करने वाली विविध औषधियाँ बतायी गयी हैं एवं वशीकरण के मन्त्र आदि वर्णित हैं।
—रा० ला० ६१४

कौमारतन्त्र

लि०—श्लोक सं० लगभग २६, अपूर्ण। यह वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत है।
—सं० वि० २४६६३

कौमारबलि

लि०—श्लोक सं० १२० । इसमें स्कन्द (कार्तिकेय) की पूजा, वलिदानविधि आदि विषय वर्णित हैं । —ट्रि० कै० ९७३ (ग)

कौमारसंहिता

लि०—(१) श्लोक सं० २७२, पूर्ण । —र० मं० ४०७८

(२) श्लोक सं० लगभग २८६, पूर्ण । —सं० वि० २५५७५

कौमारसंहिता-टीका

लि०—श्लोक सं० लगभग ५०९, अपूर्ण । —सं० वि० २४८१२

कौमारीपूजा

लि०—इसमें सप्त मातरों में अन्यतम कौमारी देवी की पूजापद्धति निर्दिष्ट है। इसका लिपि-काल नेपाली सं० ४०० या १२८० ई० कहा गया है।

—ने० द० १।१३२० (छ)

कौलगजमर्दन

लि०—श्लोक सं० ६२४, पूर्ण । यह परमहंसपरिव्राजकाचार्य कलासाचलयतिवर्य-शिष्य श्रीकृष्णानन्दाचल विरचित है। यह संवत् १९१० तथा सन् १८५४ में निर्मित हुआ। इसमें तन्त्रमत का, विशेषतः कौल-क्रियाओं का, खण्डन सप्रमाण किया गया है। इसमें विविध तन्त्रों तथा पुराणों के वचन प्रमाण रूप से उद्धृत हैं।

—ए० बं० ६४४७

कौलतन्त्र

लि०—श्लोक सं० १०० । भैरवी-भैरव संवादरूप इस ग्रन्थ में कौल-सम्प्रदायानुसार तारा और काली की पूजा का प्रतिपादन है। इसमें चार पटल हैं। जिनमें ताराकल्पस्थ तारारहस्य, ताराचार तथा कालीकल्प विषय वर्णित है। —ए० बं० ५९३४

उ०—कौलिकार्चनदीपिका तथा कालीसपर्यापद्धति में ।

कौलमार्ग

उ०—पुरश्चर्यार्णव में ।

कौलरहस्य तथा रजस्वलास्तोत्र

(१) लि०—तरुणीवीरेन्द्र नरोत्तमारण्यमुनीन्द्र-शिष्य कृत।
—रा० पु० ६९३५

(२) तरुणी ऋषि कृत, लिपि-काल आरंभ की दो प्रतियों का क्रमशः सं० १७४२ तथा १७९० वि०। —भ० रि० ११० से ११४ तक

(३) श्लोक सं० ९६, पूर्ण। —सं० वि० २४९३५

कौलादर्श

लि०—(१) श्लोक सं० २००। विश्वानन्दनाथ रचित।
—अ० ब० १०३०४ (क)

(२) कौलामृत तथा कुलार्णव में कहे गये पदार्थों का संग्रह कर विश्वानन्दनाथ ने कौलों के हितार्थ इसका निर्माण किया। इसमें कौलों के आचार और समस्त धर्मों का वर्णन है। —म० द० ५५९६ से ५५९८ तक

कौलादर्शतन्त्र

लि०—(१) यह उमाशङ्कर-पुत्र अभयशङ्कर कृत है।
—भ० रि० ११५

(२) श्लोक सं० लगभग ३००, अपूर्ण। कर्ता का नाम निर्दिष्ट नहीं है।
—सं० वि० २५८१६

कौलाधिकार

लि०—श्लोक सं० १२०। —अ० ब० १०१८०

कौलावली

लि०—आरंभ से ९ वें उल्लास तक का अंश इस प्रति में है। यह ग्रन्थ विविधतन्त्र-संग्रह में (कलकत्ता १८८१-८६ में प्रकाशित) रसिकमोहन चटर्जी सम्पादित तथा Tantric Texts Series of Arthur Avalon. में प्रकाशित कौलावली का संक्षिप्त रूपान्तर है। यह प्रस्तावना भाग का त्याग कर Avalon के संस्करण, द्वितीय उल्लास के ५० वें श्लोक से आरम्भ होकर १५ वें उल्लास के ११८ वें श्लोक में समाप्त हो जाता है। इस प्रति का १ उल्लास मुद्रित पुस्तक के दो उल्लासों के समान है। यह कौलक्रियाओं का प्रतिपादक है। —ए० बं० ६४३८

उ०—संभवतः कौलावलीय नाम से पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव तथा काली-सपर्या-विधि में इसी का उल्लेख है।

कौलावलीतन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० ६००। ईश्वर-देवी संवादरूप यह ग्रन्थ ५ उल्लासों में पूर्ण और रुद्रयामल के उत्तरतन्त्र से गृहीत कहा गया है। एक पुष्पिका में 'इति उत्तरतन्त्रे षष्ठः पटलः' कहा गया है। अन्त में जो पुष्पिका दी गयी है उसमें 'इति कुलार्णवे सपादलक्षग्रन्थे ऊर्ध्वाम्नाये कुलद्रव्यादिलक्षणं नाम पञ्चमोल्लासः' कहा गया है। इसमें विभिन्न तन्त्रों के खण्ड उद्धृत हैं। देवी के यह निवेदन करने पर कि भगवन्, आपने उत्तम-उत्तम सब पुरश्चरण कहे अब मैं साधन सुनना चाहती हूँ। इसपर भगवान् शिव ने गुप्त साधन, तद्विषयक विविध प्रश्नोत्तर, कुलद्रव्य आदि के लक्षण आदि विषय कहे।

—ए० बं० ५८६५

कौलावलीय

(२) श्लोक सं० १८६०। जगदानन्द मिश्र ने कौलिकों की प्रसन्नता के लिए चैत्र कृष्ण संवत् १७०० में इसकी रचना की। इसकी सुगोप्यता पर ग्रन्थकार ने अधिक जोर दिया है। इसके विषय पूर्ववत् हैं। —रा० ला० २७०

(३) पूर्ण, जगदानन्द मिश्र कृत। —बं० प० ९७४

(४) श्लोक सं० १०००, अपूर्ण। (ख) अपूर्ण।

—अ० ब० (क) १०१८५, (ख) ९१३०

(५) श्लोक सं० १६२०, पूर्ण। लिपिकाल बंगला संवत्सर १२७७।

—सं० वि० २४८७४

—सं० वि० में सं० २३९५५, २४८७४, २४९३२, २५२१३ और २६४३८—ये प्रतियाँ और हैं।

(६) जगदानन्द शर्मा द्वारा विरचित। —कैट्. कैट्. १।१३१

कौलिकार्चनदीपिका

लि०—(१) श्लोक सं० १५००, जगदानन्द परमहंस विरचित यह ग्रन्थ कहीं कौलिकार्चनदीपिका, कहीं कुलदीपिका और कहीं अर्चनदीपिका के नाम से उल्लिखित है। यह शकाब्द १७०० में बनारस में लिखा गया था। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—

कुलधर्म की प्रशंसा, कौलज्ञान की प्रशंसा, कुलीनों की प्रशंसा, कुलीन का लक्षण, वंशवृक्ष, कुलीनों के पर्वकृत्य, उत्तम आदि भेद से तीन प्रकार, कुलीनों के त्याज्य और ग्राह्य विषय, कुलद्रव्य और उनके प्रतिनिधि, कलशलक्षण, कलशपात्र का वर्णन, उसका आधार, चषक-विधान, पूजा, मण्डल, सामान्य अर्घ आदि, कुलीनों के द्वारपाल, उनकी पूजा आदि, विजयाग्रहण, विजया स्वीकारविधि, पूजाप्रयोग आदि में जो-जो कर्तव्य हैं उनका कथन, घटस्थापन, सुधासंस्कार शुद्धयादिशोधन, श्रीपात्र-स्थापन, गुरु आदि के पात्रों का स्थापन, भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न व्यवस्था, तर्पणविधि, बिन्दुस्वीकार, द्रव्यशोधन, सब शक्तियों का और शिव का निरूपण, पानविधि, पात्रवन्दन, पञ्चम पात्र में पञ्चम की विधि, विविध स्तोत्र, आत्मसमर्पण, देवीविसर्जन, चषक का शीतलीकरण, निर्माल्य, यन्त्रलेप आदि धारण आदि। —ए० बं० ६४३९

क्रमकेलि

यह क्रमस्तोत्र की अभिनव गुप्त विरचित टीका है।

उ०—परात्रिंशिका तथा महार्थमञ्जरीपरिमल में।

क्रमचन्द्रिका

लि०—श्लोक सं० २२२०। रत्नगर्भ सार्वभौम विरचित इस ग्रन्थ में तन्त्रशास्त्र में प्रतिपादित अर्थ का व्याख्यान (तांत्रिक पूजाविधि का प्रतिपादन) है।

—रा० ला० ३३१

क्रम दीक्षा

लि०—(१) श्लोक सं० ७००। इसके रचयिता श्रीकालिकानन्द के शिष्य जगन्नाथ हैं। यह दीक्षा के विषय में प्रदत्त विवरणों से पूर्ण है। विशेष रूप से क्रमदीक्षा सम्बन्धी विवरण इसमें प्रचुरमात्रा में हैं। इसमें बहुत से तन्त्रों से वचन उद्धृत हैं। जैसे—बृहत्तन्त्रराज, शारदातिलक, सोमशंभु, तन्त्रसार, विष्णुयामल, प्रपञ्चसार, महानिर्वाणतन्त्र आदि। विविध देवियों के मन्त्र भी इसके उत्तरार्द्ध में वर्णित हैं।

—ए० बं० ६५२५

(२) (क) श्लोक सं० १९८, पूर्ण। रुद्रयामलान्तर्गत।

(ख) श्लोक सं० ?, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २५४३४, (ख) २४८३२

क्रमदीक्षापद्धति

लि०——श्लोक सं० लगभग ५२२, पूर्ण। लिपि-काल सं० १८८२ वि०।
——सं० वि० २५२७६

क्रमदीक्षाप्रकरण

लि०——श्लोक सं० २००। शक्तिसंगमतन्त्र से गृहीत। ——अ० ब० १०१८८

क्रमदीपिका (१)

लि०——(१) श्लोक सं० १०००। आठ पटलों में पूर्ण यह ग्रन्थ केशवाचार्य विरचित है। इसमें विष्णुदेव की तान्त्रिक पूजाविधि वर्णित है। इस पर भैरव कृत टिप्पणी और गोविन्द विद्याविनोद भट्टाचार्य कृत टीका है। ——ए० वं० ६४८७-६४९२

(२) श्लोक सं० १००८। यह आठ पटलों में पूर्ण है। विष्णुपूजा आदि विषय इसमें प्रतिपादित हैं। विषय यों वर्णित हैं——गोपाल-मन्त्र की सर्वफलदातृता, गोपाल-मन्त्र, आसनशुद्धि, भूतशुद्धि, केशवकीर्त्यादिन्यास प्रकार, गोपीजनवल्लभाय नमः, इस मन्त्र के फलादि का कथन, श्रीकृष्ण के ध्यान, मालादि का कथन, जप-प्रकार, शिष्यलक्षण, दीक्षाविधि, दीक्षित के कर्तव्य, मन्त्र-जप के स्थान आदि का निरूपण, श्रीकृष्ण के चतुर्वर्ग-साधन ध्यान का कथन, उच्चाटन आदि के मन्त्र, जयकामना के निमित्त मन्त्र, सिद्ध मन्त्र की वश्यादि विधि, स्त्री-वशीकरण, त्रैलोक्यमोहन मन्त्र कथन आदि।
——रा० ला० १५५१, १६४५

(३) ८ पटलों में पूर्ण। केशवाचार्य कृत। ——ज० का० १००३

(४) ८ पटलों में पूर्ण। केशवाचार्य कृत। इसमें वैष्णवों के गुप्त मन्त्रों का विवरण दिया गया है। ——बी० कै० १२८०

(५) श्लोक सं० ६९३। इस पर गोविन्द विद्याविनोद भट्टाचार्य कृत विवरण तथा नित्यप्रज्ञ या पुरुषोत्तम कृत भावदीपिका ये दो टीकाएँ हैं।
——अ० ब० ९४११, १०२४२, ९४१४ (ख)

(६) पन्ने ३३ (यह ८ पटलों में है), अपूर्ण, केशवाचार्य कृत।
——वं० प० १०९

(७) **लि०**——पटल ८। इसमें केशव, नारायण, गोपाल, गोविन्द आदि विभिन्न रूपों में भगवान् विष्णु की पूजा का विवरण है। ——क० का० १६

(८) श्लोक सं० १०००। इसमें नारदादि द्वारा उक्त भगवान् विष्णु की पूजाविधि कही गयी है। इसके रचयिता केशवाचार्य हैं। यह ८ पटलों में विभक्त है।

—ने० द० १।३८३ (क)

(९) श्लोक सं० २०००, ७ पटलों में समाप्त। इस पर भावदीपिका टीका भी है, जिसके रचयिता नित्यप्रज्ञ या पुरुषोत्तम हैं। —अ० ब० ९८११ (ख)

(१०) श्लोक सं० लगभग १६००, पूर्ण। —सं० वि० २५११०

इसके अतिरिक्त सं० वि० में और भी कई प्रतियां हैं जिनके नं० २४८८७, २४८८८, २५०९२ तथा २५६२५ हैं।

(११) केशवभट्ट कृत, ८ पटल पर्यन्त। गोविन्दविद्या विनोद भट्टाचार्य कृत टीका सहित। —रा० पु० २६२६

उ०—तन्त्रसार और पुरश्चर्यार्णव में

क्रमदीपिका (२)

लि०—श्लोक सं० ९००। अन्त में खण्डित (अपूर्ण)। वसिष्ठ विरचित। संभवतः यह पूर्वोक्त क्रमदीपिका से अन्य पुस्तक हैं, क्योंकि इसके कर्ता केशवाचार्य के बदले वसिष्ठ बतलाये गये हैं। —अ० ब० १३८६७

क्रमदीपिकाटीका (१)

लि०—(१) (क) श्लोक० सं० ४५००, पूर्ण, भैरव त्रिपाठी विरचित। (ख) श्लोक० सं० २७००, पूर्ण, गोविन्द विद्याविनोद भट्टाचार्य कृत। (ग) ३ पटलों तक विश्वेश्वर और तदनन्तर शेष अंश की टीका के कर्ता जनार्दन हैं। श्लोक सं० ३२५० के लगभग है।

—ए० बं० (क) ६४९०, (ख) ६४८१, (ग) ६४९२

क्रमदीपिका-टिप्पणी (२)

(३) यह क्रमदीपिका की तीसरी व्याख्या है। इसके निर्माता भैरव त्रिपाठी हैं।

—बी० कैं० १२८१

क्रमदीपिका-विवरण (३)

(२) इसके रचयिता गोविन्द विद्याविनोद भट्टाचार्य हैं। क्रमदीपिका पर यह दूसरी व्याख्या है। यह व्याख्या पूरे आठ पटलों पर है। —बी० कैं० १२८२

क्रमपूर्णदीक्षापद्धति

लि०—श्लोक सं० ५७० । यह शुकदेव उपाध्याय विरचित है। इसमें क्रमदीक्षा और तारा का पूर्णाभिषेक ये दोनों विषय सप्रमाण वर्णित हैं । यद्यपि यह पद्धति कही गयी है, तथापि इसमें प्रयोग और प्रमाण दोनों वर्णित हैं । संक्षेप से पूर्ण दीक्षा का ग्रहण-क्रम और संक्षेप से ही तारा की पूर्णाभिषेक-विधि ये दो विषय इसमें कहे गये हैं।

—ए० वं० ६५२६

क्रमरत्नमाला या क्रमरत्नमालिका

लि०—(१) श्लोक सं० २०००। यह नौ पटलों में पूर्ण है । इसमें गोपालविषयक ५९ मन्त्र वर्णित है तथा गोपाल-महामन्त्रों के जप का क्रम भी कहा गया है।

—तै० म० १२१५२

(२) श्लोक सं० २०००, अपूर्ण । —अ० व० ७९६२

क्रमवासना

इसके रचयिता महेश्वरानन्द के परम गुरु हैं।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

क्रमसंहिता

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

क्रमसद्भाव

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

क्रमसिद्धि

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

क्रमसूत्र

उ०—प्रत्यभिज्ञाहृदय तथा महार्थमञ्जरी-परिमल में।

क्रमस्तुति या क्रमस्तोत्र

उ०—क्रमकेलि, जो क्रमस्तुति की टीका है, तथा सौभाग्यवर्द्धिनी नामक सौन्दर्य-लहरी की टीका में।

क्रमोत्तम

लि०---(१) श्लोक सं० २४००, पूर्ण। यह निजात्मानन्दनाथ (मल्लिकार्जुन योगीन्द्र) कृत है। इसमें साधकों के प्रातःकाल के कर्तव्यों के विवरण के साथ न्यासादि का निर्देश तथा त्रिपुरादेवी की पूजाविधि विस्तार से वर्णित है। यह पुस्तक विभिन्न कैटलागों में भिन्न-भिन्न नामों से उल्लिखित है---गद्यवल्लरी (रा. ला. २२६१), श्रीविद्यापद्धति (बी. क. १३३५), क्रमोत्तमपद्धति (बी. कै. १२८३), महात्रिपुरसुन्दरीपादुकार्चनक्रमोत्तम (इ. आ. २६००) आदि। ग्रन्थकी प्रस्तावना से प्रतीत होता है कि ग्रन्थकार के गुरु श्रीनृसिंह तथा माधवेन्द्र सरस्वती थे। यह ग्रन्थ ३३ पटलों में पूर्ण है। इसके विषय हैं---अजपार्पण, स्नान, सन्ध्या, तर्पण आदि का निरूपण, संहार रूप चक्रन्यास का वर्णन, न्यास-विवरण, न्यासविधि तथा पूजापटल। इसकी पुष्पिकाओं में भी इसके विभिन्न नाम प्रतिपादित हैं---१. गद्यवल्लरी, २. श्रीविद्यापद्धति, ३. श्रीप्रासादपरापद्धति आदि। ---ए० बं० ६३५१

(२) क्रमोत्तमपद्धति। ---बी० कै० १२८३

क्रमोदय

उ०---योगिनीहृदयदीपिका तथा महार्थमञ्जरी-परिमल में।

क्रियाकाण्ड

लि०---श्रीशक्तिनाथ (श्रीकल्याणकर) ने शिष्यसंघ की ज्ञानसिद्धि के लिए क्रियाकल्पतरु के अन्तर्गत इस क्रियाकाण्ड का निर्माण किया। इसमें पीठयाग, सुभद्रयाग, कन्दरयाग, जयाख्ययाग, भीमाख्ययाग, कुहूयाग आदि वर्णित हैं। कल्पतरु भी सम्पूर्ण कुलशास्त्र का भाग है। इसमें वामाचार-पूजा वर्णित है। ग्रन्थकार निम्ननिर्दिष्ट अपने गुरुओं के आशीर्वाद तथा कृपा से ग्रन्थ का निर्माण करने में समर्थ हुए थे। उनके पारम्पर्यप्रकाशी महागुरु थे। श्रीकण्ठनाथ, गङ्गाधर मुनीन्द्र, महावल, महेशान, महावागीश्वरानन्द, देवराज तथा विचित्रानन्द ग्रन्थकार के मार्गप्रदर्शक थे। जो विषय-सामग्री इसमें वर्णित है वह कुलशास्त्र और आम्नाय से ली गयी है। ग्रन्थकार ने इसमें तान्त्रिक क्रिया के अनुसार बहुत-से योगों का वर्णन किया है। ---ने० द० १८३ (झ)

क्रियाकाण्डशेखर

उ०---पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में

क्रियाकारकमण्डन

उ०—शतरत्नसंग्रह में।

क्रियाकालगुणोत्तर

लि०—श्लोक सं० २१००। यह शिव-कार्तिकेय संवादरूप है। इसमें तीन कल्प हैं—क्रोधेश्वरकल्प, अघोरकल्प तथा ज्वरेश्वरकल्प। नागों की विभिन्न जातियों के लक्षण, गर्भोत्पत्ति, ग्रह, यक्ष, पिशाच तथा डाकिनी-शाकिनियों के लक्षण, विषैले सर्प, बिच्छू आदि विषैले जीव जन्तुओं के लक्षण इसमें प्रतिपादित हैं। इसका लिपिकाल सन् ११८४ ई० है। —ने० द० २।३९२

क्रियाक्रमद्योतिका

लि०—(१) (क) श्लोक सं० १५००, यह अघोर शिवाचार्य, नामान्तर परमेश्वर कृत है। यह निर्वाणदीक्षा से गृहीत है, जो संक्षिप्त दीक्षाविधि के अन्त में है। (ख) केवल पवित्रविधि पर्यन्त है, जो क्षतविक्षत और २०० श्लोकात्मक है।

—अ० व० (क) ७९७९, (ख) ७९३२

(२) श्लोक सं० ५००। यह अघोर शिवाचार्य कृत है। इसमें अभिषेक और दीक्षा-विधि प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० ९३१

(३) इसका कुछ अंश १९०४ और १९१२ में मद्रास में प्रकाशित हुआ था। पाशुपत शास्त्र का सारोद्धार इसमें है। —भ० रि० ११६

क्रियाक्रमद्योतिका-व्याख्या

लि०—श्लोक सं० ३०००। यह अघोर शिवाचार्य कृत क्रियाक्रमद्योतिका की व्याख्या है। —अ० ब० १०८७९

क्रियाक्रमोद्योत

लि०—(क) पन्ने १६२, पूर्ण। यह अघोर शिवाचार्य कृत है।

—तै० म० (क) ११३७७

क्रियालेशस्मृति

लि०—श्लोक सं० १०००। यह थोड़े में सब अनुष्ठानों को सूचित करने वाला सर्वोपकारक ग्रन्थ है। सब पर देवताओं का अनुग्रह हो ऐसी बुद्धि से श्रीनीलकण्ठ ने गुरु और

इष्टदेव के प्रसाद से इसकी रचना की। इसमें विष्णु, दुर्गा, शिव, स्कन्द, गणेश, शास्ता, हर, अच्युत आदि की पूजा सक्षेपतः वर्णित है। बीजांकुर, स्थान और विग्रह की शुद्धि, निष्क्रमण, स्नान, पूजा, बलि, उत्सव, तीर्थयात्रा इत्यादि विष्णु प्रभृति सात देवताओं के तत्-तत् शास्त्रोक्त कर्म संक्षेपतः इसमें लिखे गये हैं। —ट्रि० कै० ९३२

क्रियासंग्रह

लि०——(१) श्लोक सं० २५००। यह शङ्कर कृत है। —अ० ब० १३१२०

(२) श्लोक सं० ३५६८। इसके निर्माता कुञ्झिक्काड्र शङ्कर हैं। इसमें शैव विभाग के ९ पटल तक का ग्रन्थांश है। उपासक की देहशुद्धि का प्रतिपादन कर देवता-पूजन, हवन आदि विषय वर्णित हैं। —ट्रि० कै० ९३४

(३) श्लोक सं० १६००। इसमें तन्त्र और आगमों में उक्त दुर्गा देवी की स्थापना, पूजा आदि प्रतिपादित है। इसमें दुर्गा-विभाग के केवल ९ पटलों तक का ही ग्रन्थांश है। १० वें पटल का कुछ अंश क्षतविक्षत अवस्था में है। इसके कर्ता पूर्वोक्त ही हैं।

उ०——पुरश्चर्यार्णव में। —ट्रि० कै० ९३३

क्रियासार

लि०——(१) श्लोक सं० ३६००। यह ६९ पटलों का ग्रन्थ है। इसमें मातृका-स्थापन आदि विविध तान्त्रिक क्रियाएँ वर्णित है। —ट्रि० कै० ९३५

(२) श्लोक सं० ३६००। —अ० ब० ७९८४ (क)

उ०——पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, ललितार्चन-चन्द्रिका, तन्त्रसार, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, कुण्डमण्डपसिद्धि तथा तीर्थतत्त्व (रघुनन्दन कृत) में।

क्रियासार-व्याख्या

लि०——(क) श्लोक सं० ९५००। इसके रचयिता हैं——व्याघ्रग्रामवासी नारायण। यह ग्रन्थ १३ पटल तक है। इसमें ६ पटल शास्त्र-भाग के हैं। (ख) श्लोक सं० ५२००। इसमें शङ्कर और नारायण भाग का व्याख्यान ८ पटलों में पूर्ण हैं। क्रियासार-व्याख्या १० पटलों की है। (ग) श्लोक सं० ९००० है। यह ग्रन्थ छह पटलों में पूर्ण है। (घ) श्लोक सं० ३७००।

—ट्रि० कै० (क) ९३७, (ख) ९३६, (ग) ९३८, (घ) ९३९

क्रियासारसमुच्चय

उ०--तन्त्रसार में।

क्रूरकर्मार्णव

उ०--पुरश्चर्यार्णव में।

क्रोधभैरवतन्त्र

यह ६४ आगमों में अन्यतम भैरवाष्टक वर्ग के अन्तर्गत है।

क्षेत्रेशपूजनतन्त्र

लि०--वहुरूप गर्भस्तोत्र के साथ है। --डे० का० २५२

खचक्रतन्त्र

यह श्रीकण्ठ के मत से चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है। (तन्त्रालोक-टीका)।

खड्गमालातन्त्र

लि०--(१) (क) अपूर्ण। (ख) पूर्ण।

--सं० वि० (क) २४१७७, (ख) २५६०५

(२) --कैट्. कैट्. १।१३५, २।२७

खड्गमालाभेद

लि०--(क) अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ९००, पूर्ण।

--अ० ब० (क) ११७२२, (ख) ११७६५

खेचरीपटल

लि०--(१) इसमें पिशाची या भूतिनी को वश में लाने के लिए उनकी गुप्तपूजा का प्रतिपादन है। प्रतीत होता है कि यह किसी तन्त्र से अंशतः गृहीत है।

--बी० कै० १२७९

(२) --कैट्. कैट्. १।१३७

खेचरीपद्धति

लि०--श्लोक सं० २५०, अपूर्ण। --सं० वि० २५७७२

खेचरीविद्या

लि०——(१) महाकालयोगशास्त्रान्तर्गत उमा-महेश्वर संवादरूप यह ग्रन्थ चार पटलों में पूर्ण है। ——ए० बं० ६१२०

(२) क्रमशः (क) श्लोक सं० २००, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३००, पूर्ण। (ग) महाकालयोगशास्त्रान्तर्गत श्लोक सं० ३२०, अपूर्ण।

——सं० वि० (क) २४५८२, (ख) २५६२८, (ग) २६३१९

(३) ——कैट्. कैट्. १।१३७

गकारादिगणपतिसहस्रनामस्तोत्र

लि०——रुद्रयामलान्तर्गत यह स्तोत्र शिव-पार्वती संवादरूप है। इसमें गणपति के गकारादि सहस्र नाम कहे गये हैं। इसकी श्लोक सं० २५० है।

——रा० ला० ८८९

गङ्गापञ्चाङ्ग

लि०——श्लोक संख्या ६००, पूर्ण। ——अ० ब० १०६८६

गजेन्द्रमोक्षतन्त्र

लि०—— ——प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

गणपतिकल्प

लि०——(१) श्लोक सं० ६००, अपूर्ण। ——अ० ब० ६८६६

(२) श्लोक सं० १८८, अपूर्ण। ——सं० वि० २५३६५

(३) ——कैट्. कैट्. १।१४१

गणपतिकवच (वज्रपञ्जर)

लि०——(१) पूर्ण। ——र० मं० १०३५ (क)

(२) ——कैट्. कैट्. १।१४१

गणपतिक्रम

लि०—— ——प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

गणपतिजपप्रयोग

लि०——श्लोक सं० ५५, पूर्ण। ——र० मं० १०१६

गणपतिदीक्षाकल्पसूत्र

लि०—१३५ सूत्रों में पूर्ण। —अ० व० ११२४१

गणपतिनित्यार्चनपद्धति

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

गणपतिपञ्चाङ्ग

लि०—(१) कुलार्णव और रुद्रयामलान्तर्गत। —कैट्. कैट्. १।१४१
(२) (क) श्लोक सं० ३४०, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ६७०, पूर्ण।
—सं० वि० (क) २५२३२, (ख) २६४१८

गणपतिपद्धति

लि०—श्लोक सं० १००, पूर्ण। —अ० व० ८१६५

गणपतिपूजनविधि

लि०—श्लोक सं० २०५, अपूर्ण। इसमें उपासनाधिकार भी संनिविष्ट है।
—सं० वि० २६६३५

गणपतिपूजा

लि०—(१) (क) श्लोक सं० १४०। (ख) श्लोक सं० ४००। (ग) श्लोक सं० १२०। —अ० व० (क) ५०६४, (ख) ७१४४, (ग) ८९५८
(२) —कैट्. कैट्. १।१४२

गणपतिपूजाविधान

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक सं० ६०, पूर्ण। —सं० वि० २६६५७

गणपतिमन्त्रसंग्रहदीपिका

लि०— —प्राप्त ग्रन्थसूची से।

गणपतिमन्त्रसमुच्चय

लि०—पूर्णानन्द विरचित। श्लोक सं० ३००।
—अ० व० ५१४८

गणपतिरत्नप्रदीप

लि०––(१) ब्रह्मेश्वर विरचित। ––कैट्. कैट्. १।१४२
(२) ––भ० रि० १२४

गणपतिरहस्य

लि०–– ––कैट्. कैट्. १।१४२

गणपतिसहस्रनामार्थप्रकाश

लि०–– ––प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

गणपत्युपनिषत्

लि०––(१) ––रा० पु० ६७३२
(२) ––कैट्. कैट्. १।१४२

गणपत्येकाक्षरविधान

लि०––श्लोक सं० २००। ––अ० ब० १२१४३

गणेशकल्प

लि०––(१) इसमें गणेशपूजासम्बन्धी तान्त्रिक विधियाँ प्रतिपादित हैं। यह ग्रन्थ ६ पटलों में पूर्ण है। उनके विषय हैं––१. बीजकोष तथा चतुर्विध दीक्षाओं का वर्णन, २. गणपति के एकाक्षर आदि ३७ मन्त्रों का विधान, ३. उपासक के प्रातःकालीन कृत्य, मातृकान्यास, ४. पूजाविधि, पुरश्चरणविधि तथा शान्तिक, वश्य, स्तंभन आदि षट्-कर्मों का वर्णन। ––इ० आ० २६०९

(२) (क) श्लोक सं० २४००। (ख) श्लोक सं० १२००।
––अ० ब० (क) ३४३५, (ख) १०६७९

(३) ––कैट्. कैट्. १।१४४

गणेशपञ्चाङ्ग

लि०––(१) रुद्रयामलान्तर्गत। इसमें निम्ननिर्दिष्ट विषय वर्णित हैं––
१. गणपतिमन्त्रोद्धारविधि, २. महागणपतिपूजापद्धति, ३. महागणपतिपूजाकवच, ४. महागणपतिपूजासहस्रनामस्तव तथा ५. महागणपतिपूजास्तोत्र।
––ए० बं० ६५०८

(२) यह देवीरहस्यान्तर्गत भैरव-देवी संवादरूप है। इसमें निम्न लिखित विषय वर्णित हैं—१. पूजापटल, २. पूजापद्धति, ३. सहस्रनाम, ४. कवच तथा ५. स्तोत्र। पुष्पिका में देवीरहस्य के १३० पटल कहे गये हैं।

(३) इसकी श्लोक सं० ११०० है। इसमें गणेशजी के पटल, पूजापद्धति, कवच, सहस्रनाम, स्तव, स्तोत्र आदि वर्णित हैं। —अ० ब० १२७९९

(४) रुद्रयामलान्तर्गत, पूर्ण। —र० मं० ४८२७

(५) गणेशकवच मात्र। इसमें गणेशजी के नामों से शरीर के विभिन्न अंगों की रक्षाविधि वर्णित है। —बी० कै० १२६४

(६) (क) श्लोक सं० १७५, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० २८७। इसमें गुरु-प्रार्थना तथा शिवापराध-क्षमापन-स्तोत्र भी संमिलित है।

—सं० वि० (क) २४५९०, (ख) २६४८६

(७) रुद्रयामलान्तर्गत। —कैट्. कैट्. १।१४४

गणेशपद्धति

लि०—उमानन्दनाथ विरचित। (क) श्लोक सं० ५००। (ख) श्लोक सं० ३००। (ग) श्लोक सं० ३००। प्रकाशानन्दनाथ विरचित।

—अ० ब० (क) १३६४२, (ख) १७५, (ग) ५५३६

गणेशपूजा

लि०— —रा० पु० ७६९०

गणेशपूजापद्धति

लि०—(१) —कैट्. कैट्. १।१४४

(२) श्लोक० सं० ९२, पूर्ण। —सं० वि० २४३२७

गणेशपूजाविधि

लि०—श्लोक सं० १२०। —अ० ब० ३४३८

गणेशयामल

लि०— —कैट्. कैट्. १।१४४

यह अष्टयामलों में अन्यतम है। अष्टयामलों के नाम यामलाष्टक में देखें।

गणेशयोगमीमांसासूत्र

लि०—सूत्र संख्या ४०९। —अ० ब० ११२४० (ख)

गणेशविमर्शिनी

उ०—तन्त्रसार, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, मन्त्रमहार्णव तथा कुण्डमण्डपसिद्धि में।

गणेशसहस्रनाम

लि०—(१) गणेशपुराण से उद्धृत। (२) रुद्रयामल से गृहीत।
—कैट्. कैट्. १।१४४

गणेशसहस्रनामव्याख्या

लि०—गोपालभट्ट कृत। —कैट्. कैट्. १।१४४

गणेशहृदय

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

गणेशाचारचन्द्रिका

लि०—दामोदर विरचित। यह ७ पटलों में पूर्ण है। इसमें सन्ध्याविधि, जपविधि, बाह्यपूजा, ब्राह्मण-भोजनविधि, काम्यकर्मविधि, मन्त्रवैगुण्य होने पर प्रायश्चित्त, दक्षिणा, दान आदि की विधि आदि विषय वर्णित हैं। —नो० सं० ४।७३

गणेशार्चनचन्द्रिका

लि०—(१) श्लोक सं० ४५०। —अ० ब० १२२५४
(२) (क) मुकुन्दलाल विरचित। (ख) सदानन्द शुक्ल विरचित।
—कैट्. कैट्. १।१४५

गणेशार्चनदीपिका

लि०—(क) काशीनाथ विरचित। (ख) वृन्दावन विरचित।
—कैट्. कैट्. १।१४५

गणेशाष्टकपीठिका

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

गणेश्वरविमर्शिनी (गणेशविमर्शिनी)

उ०——तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, मन्त्रमहार्णव तथा शारदातिलक की टीका राघवभट्टी में।

गद्यवल्लरी

लि०——(१) निजात्मप्रकाशानन्दनाथ मल्लिकार्जुनयोगीन्द्र विरचित। श्लोक सं० २०१६। यह श्रीविद्या-पद्धतिरूप प्रथम खण्ड है। इसमें निम्नलिखित विषय वर्णित हैं——गुरु-परम्परा वर्णन के प्रसङ्ग में सम्प्रदाय-प्रवृत्ति वर्णन, प्रातःकृत्य, तान्त्रिक सन्ध्या, अर्द्धरात्रि में तुरीय सन्ध्या, तर्पण आदि की विधि, श्रीविद्यापूजाविधि, प्राणप्रतिष्ठाविधि, प्रपञ्चयागविधि, बालासम्पुटितादि मातृकान्यास आदि लक्ष्मीसंपुटित, कामसंपुटित, श्रीविद्यासम्पुटित आदि न्यास, श्रीकण्ठ, केशव आदि, काम, रति, प्रणव, उत्थानकला आदि के मातृकान्यास, मालिनी, कालसंकर्षिणी आदि के न्यास, परा, वैखरी, सूर्यकला, योगपीठ, ग्रह, नक्षत्रादि के न्यास, जपविधि, मण्डप-ध्यान आदि, स्तोत्र आदि तथा श्रीविद्या-माहात्म्य।

——रा० ला० २६१

(२) पूर्णानन्द कृत।

——कैट्. कैट्. १।१४९

गन्धर्वतन्त्र

लि०——(१) यह दत्तात्रेय प्रोक्त——दत्तात्रेय-विश्वामित्र संवादरूप——तन्त्र ४२ पटलों में पूर्ण है। उनमें प्रतिपादित विषय संक्षेपतः यों हैं——तन्त्र की प्रस्तावना, विविध विद्याभेदों का उद्धार, पञ्चमी विद्या की उद्धारविधि, राजराजेश्वरी कवच, यन्त्रोद्धार आदि, अंग और आवरण पूजा, कर्मयोगादि का क्रम, भूतशुद्धि, करशुद्धि, मातृकान्यास, षोढान्यासक्रम, नित्यन्यास आदि, अन्तर्यागविधि, मानसपूजा, ध्यानयोगक्रम, बहिर्यागक्रम, विशेषार्घ्यविधि, बहिर्होम प्रकार, पूजोपचार, प्रकटाप्रकट योगिनी पूजनक्रम, जपादिविधि, बटुक आदि के लिए बलि, शेषिका विद्या प्रयोगक्रम, पूजासम्पूरणादि उपायविधि, समयाचारविधि, कुमारी-पूजन-क्रम, कुमारी-पूजा का माहात्म्य, पुण्यपीठ कथन आदि, आपत्कालीन पूजा आदिकी विधि, गुरु, शिष्य और दीक्षाके लक्षण, दीक्षाविधि, पुरश्चरणविधि, विद्यासंकेत-निर्णय, त्रिकूट पृथक् साधनविधि, होमद्रव्य प्रयोग, मुद्राधारणविधि, चक्रराजप्रतिष्ठा, कुलाचार आदि।

——ज० का० १००६

(२) पटल सं० १ से १७ तक, श्लोक सं० १६५०, अपूर्ण।

——सं० वि० २६४५७

(३) तन्त्रगन्धर्व भी इसका नामान्तर है। तन्त्रगन्धर्वे त्रिपुरा-सुन्दरीत्रैलोक्य-मोहनकवच, गन्धर्वतन्त्रे महाकालीकवच। —कैट्. कैट्. १।१४९, ३।३२

उ०—तारारहस्यवृत्ति, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, महामोक्षतन्त्र, सर्वोल्लास, आगमतत्त्वविलास तथा रहस्यार्णव में।

गन्धर्वमालिका

उ०—जगन्नाथ ने आनन्दलहरी-टीका में इसका उल्लेख किया है।

गन्धर्वराजमन्त्रविधि

लि०—इसमें गन्धर्वराज विश्वावसु की पूजापद्धति वर्णित है एवं सुन्दर पुत्रियों की कामना पर जपपद्धति भी वर्णित है। —ए० बं० ६५२४

गन्धोत्तमानिर्णय

लि०—(१) गुरुसेवक विरचित। श्लोक सं० ४००।

—अ० ब० ३४३९

(२) गुरुसेवक (श्रीकाल) विरचित। रचनाकाल १७०९ वि०।

—रा० पु० ६२४७

(३) (क) श्लोक सं० ३६५, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३३६, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० ३८४। —सं० वि० (क) २५१०९, (ख) २५६२९, (ग) २५६३०

गमशासन

उ०—तन्त्रालोक में।

गरुडप्रकरण

लि०— —कैट्. कैट्. १।१५०

गरुडसंहिता

लि० —तै० म०

गर्गसंहिता

लि०—श्लोक सं० ३७०। —अ० ब० ६९९२

गर्गाचार्यसंहिता

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

गर्भकुलार्णव

लि०—पार्वती-परमेश्वर संवादरूप। ३४ पटलों में पूर्ण यह ग्रन्थ अति रहस्य कौलागम का सारभूत है। इसमें सौभाग्यदेवी की अर्चनाविधि विस्तारपूर्वक वर्णित है।

—म० द० ५५९९ से ५६०५ तक

गर्भकौलागम

लि०—यह शिव-पार्वती संवादरूप है। भगवती पार्वतीजी के शिवजी से यह पूछने पर कि भगवन्, ध्यान, जप, स्मरण और क्रिया के विना सिद्धिप्रद कोई उपाय बतलाने की कृपा करें। भगवान् शिवजी ने उत्तर दिया कि तुम्हारे वैभवपूर्ण दिव्य अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र में यह सामर्थ्य है कि उसके पाठमात्र से सब सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

—म० द० ५६०६ से ५६१० तक

गर्भपुष्टिव्रत

लि०—श्रीनारायण विरचित। श्रीरामडामर-मन्त्रानुसार। श्लोक सं० २५।

—अ० ब० ८८६८

गाणककल्पसूत्र

लि०—श्लोक सं० २५०। —अ० ब० ११३९७ (क)

गाणककल्पसूत्रकारिका

लि०—श्लोक सं० ९००। —अ० ब० ११३९७ (ख)

गायत्रीकल्प

लि०—(१) ब्रह्मा-नारद संवादरूप। इसमें नारदजी के प्रश्न पर ब्रह्मा ने गायत्री के ध्यान, वर्ण, रूप, देवता, छन्द, आवाहन, विसर्जन, माहात्म्य आदि का वर्णन किया है।

—रा० ला० ४४३

(२) चतुर्मुख (ब्रह्मा)-नारद संवादरूप। इसमें गायत्री की पूजा का विवरण दिया गया है।

—ए० बं० ६०६६

(३) वसिष्ठसंहिता के अन्तर्गत। श्लोक सं० १२००।

—अ० ब० १०२०६ (ख)

(४) विश्वामित्रकल्पान्तर्गत। श्लोक सं० १५००।

—अ० ब० १३७७९

(५) (क) श्लोक सं० २५००। (ख) श्लोक सं० ७००।
—अ० ब० (क) १०३०९, (ख) ५७३४

(६) विश्वामित्र कृत। —र० मं० २६७०

(७) अगस्त्यसंहितान्तर्गत, श्लोक सं० २२५, पूर्ण। —सं० वि० २५०९३

(८) (क) भृङ्गीशतन्त्रान्तर्गत। १ से ४ पटल तक, अपूर्ण। श्लोक सं० १४०।
(ख) श्लोक सं० १८, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० लगभग ७८, अपूर्ण।
—सं० वि० (क) २५७०५, (ख) २४०७७, (ग) २५७९५

(९) विश्वामित्र कृत। —कैट्. कैट्. १।१५२, २।३०.

उ०—सौभाग्यभास्कर, ललितासहस्रनाम की टीका तथा आचारार्क में।

गायत्रीकवच

लि०—(१) (क) नीलतन्त्र तथा आगमसन्दर्भ के अन्तर्गत। इसमें शरीर के विभिन्न अङ्गों के रक्षार्थ वैदिक गायत्री के विभिन्न वर्णों का उपयोग वर्णित है।
—ए० बं० ६७२१

(२) रुद्रयामलान्तर्गत शिव-पार्वती संवादरूप। —ए० बं० ६७२२

(३) नीलतन्त्रान्तर्गत। —नो० सं० ३।७४

(४) आगमसन्दर्भान्तर्गत देव-देवी संवादरूप। —नो० सं० ३।७५

(५) (क) वसिष्ठसंहिता से गृहीत। श्लोक सं० २०। (ख) श्लोक सं० ७५। (ग) श्लोक सं० २१।
—अ० ब० (क) १३४८० (छ), (ख) ७७०३, (ग) ७७२१

(६) ब्रह्मसंहिता में उक्त गायत्रीकवच, गायत्रीवर्णविन्यास आदि के साथ, वर्णित है। —सं० वि० २६५००

(७) रुद्रयामल, देवीपुराण, वसिष्ठसंहिता तथा विश्वामित्रसंहिता से गृहीत।
—कैट्. कैट्. १।१५२, २।३०, ३।३२

गायत्रीजपपद्धति

लि०—श्लोक सं० १०। —अ० ब० १३८६५

गायत्रीतन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० १९५। इसके १ से ९ तक ही पटल उपलब्ध हैं। इसमें गायत्री-माहात्म्य, गायत्री-ध्यान, न्यास, गायत्रीहीन ब्राह्मण की निन्दा, यज्ञोपवीत-लक्षण,

सन्ध्या-लक्षण, गायत्रीमन्त्र की प्रशंसा, तिथियों के ध्यान और मन्त्र, पक्षों के ध्यान और मन्त्र एवं गायत्रीकवच वर्णित हैं। —रा० ला० ५९८

(२) शिव प्रोक्त। —ज० का० १००१

(३) (क) श्लोक सं० १८८, पटल १ से ९ तक, पूर्ण।

(ख) श्लोक सं० ४५०। इसमें योनिकवच तथा योनिमुद्राप्रकरण भी संनिविष्ट हैं। पूर्ण। (ग) चतुर्थ पटल मात्र। (घ) अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २५९८६, (ख) २६४७२, (ग) २५०२४, (घ) २५५७३

उ०—प्राणतोषिणी तथा महामोक्षतन्त्र में।

गायत्रीदशविधान

लि०—श्लोक सं० १००। —अ० व० ११६४७ (ख)

गायत्रीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) इसमें निम्नलिखित पाँच विषय हैं—१. गायत्रीहृदय, २. रुद्रयामलतन्त्रोक्त गायत्रीरहस्यान्तर्गत गायत्रीनित्यपूजापद्धति, ३. रुद्रयामलतन्त्रोक्त गायत्रीरहस्यान्तर्गत गायत्रीसहस्रनाम, विश्वामित्रसंहितान्तर्गत गायत्रीकवच तथा विश्वामित्र कृत गायत्रीस्तवराज। —नो० सं० २१५१

(२) श्लोक सं० ८००, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३००, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ८००, अपूर्ण। —अ० व० (क) १२८१५, (ख) १२६८३ (ग) १२८०१

(३) पन्ने २०। —रा० पु० ६७७३

(४) श्लोक सं० ९६०, अपूर्ण। —सं० वि० २४८८४

(५) रुद्रयामल से तथा विश्वामित्रकल्प से गृहीत।

—कैट्. कैट्. २।३०। ३।३२

(६) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० ७७०, अपूर्ण। —र० मं० ४९९२

गायत्रीपञ्जर

लि०—(१) ब्रह्मतन्त्र से गृहीत, श्लोक संख्या १००।

—अ० व० १३४८० (ख)

(२) वसिष्ठसहितान्तर्गत, ब्रह्मा-नारद सवादरूप। श्लोक सं० २२०।

—रा० ला० ८८४

(३) ब्रह्मतन्त्र तथा वसिष्ठसंहिता से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।१५२

गायत्रीपटल

लि०--(१) श्लोक सं० १२८, अपूर्ण । --सं० वि० २४३३२

(२) स्वयंप्रकाशेन्द्र सरस्वती विरचित । --कैट्. कैट्. १।१५२

(३) रुद्रयामलान्तर्गत । --कैट्. कैट्. ३।३२

गायत्रीपद्धति

लि०--(१) रुद्रयामलोक्त । इसमें उपासकों के प्रातःकृत्यों के साथ गायत्री-पूजा का विवरण विस्तार से प्रतिपादित है । --ए० बं० ६४२३

(२) रुद्रयामलोक्त । --रा० पु० ६३४८

(३)--(क) विश्वामित्र विरचित । (ख) शारदा तिलक से गृहीत । (३) भुवनेश्वर विरचित । (घ) भूषणभट्ट विरचित । --कैट्. कैट्. १।१५२

(४)--(क) रुद्रयामलान्तर्गत । (ख) शङ्कराचार्य विरचित ।
--कैट्. कैट्. २।३०, ३।३२

गायत्री-पुरश्चरण

लि०--(१) (क) श्लोक सं० ५०० । (ख) श्लोक सं० २००० । (ग) गायत्री-पुरश्चरण आदि गोविन्द दशपुत्र कृत, श्लोक सं० ३६०० । (घ) श्लोक सं० ३०० । (ङ) श्लोक सं० १०० ।

--अ० ब० (क) १६७८, (ख) ११०१५, (ग) ३४४०, (घ) ४२, (ङ) ११५६

(२) (क) शङ्कर कृत । (ख) शिवराम कृत । --कैट्. कैट्. १।१५२

गायत्रीपुरश्चरणचन्द्रिका

लि०--(१) जयराम-पुत्र काशीनाथ कृत, श्लोक सं० ६६६ ।
--अ० ब० १३०४९

(२) काशीनाथ भट्ट कृत । --कैट्. कैट् २।३०

गायत्रीपुरश्चरणपद्धति

लि०--(१) गङ्गाधर कृत । विश्वामित्रकल्प और वसिष्ठकल्प का भली भाँति मनन कर, उनके सार रूप इस ग्रन्थकी ग्रन्थकार ने स्मृतिशास्त्र के अनुसार रचना की ।
--ए० बं० ६४२२

(२) (क) शङ्कर घारे कृत। श्लोक सं० २०००।

(ख) कर्ता का नाम अज्ञात। श्लोक सं० २०० है।

—अ० व० (क) ११२४६, (ख) २५९२

(३) (क) श्लोक सं० २५०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ५४, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २५११२, (ख) २४५५५

(४) —कैट्. कैट्. ३।३२

गायत्रीपुरश्चरणप्रयोग

लि०—(१) शारदातिलकोक्त, भट्ट शङ्कर-पुत्र भट्ट शा-(सा ?)म्ब कृत। शारदातिलक के २१ वें अध्याय के प्रारम्भिक २१ पद्यों के अनुसार संक्षिप्त गायत्रीपुरश्चरण-प्रयोग इसमें वर्णित है। —ए० बं० ६४२१

(२) नारायण भट्ट-पुत्र कृष्णभट्ट कृत, श्लोक स० २३०, पूर्ण।

—र० मं० ४४८५

(३) (क) नारायणभट्ट-पुत्र कृष्णभट्ट विरचित, रचनाकाल १७५७ ई०

(ख) साम्बभट्ट कृत। —कैट्. कैट्. २।३०, ३।३२

गायत्रीपुरश्चरणविधान

लि०—विश्वामित्रकल्प से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।१६२, २।३०

गायत्रीपुरश्चरणविधि

लि०—(१) शारदातिलकोक्त। शारदातिलक के २१ वें अध्याय के आधार पर रचित।

—ए० बं० ६४२५

(२) श्लोक सं० २००। इसमें गायत्री-मन्त्र के अक्षरों का अङ्ग-प्रत्यङ्ग में न्यास, गायत्री-मानसपूजा, गायत्री शाप विमोचन, गायत्री मन्त्र के ब्रह्मास्त्र और आग्नेयास्त्र बनाने की विधि, गायत्री-जपविधि, उत्तरन्यासविधि आदि विषय वर्णित हैं।

—रा० ला० ८९८

(३) (क) अनन्तदेव विरचित, (ख) गीर्वाणेन्द्र सरस्वती कृत।

—कैट्. कैट्. १।१५२

गायत्रीप्रकरण

लि०—भास्कर विरचित। —कैट्. कैट्. १।१५२

गायत्रीब्रह्मकल्प

लि०--(१) इसमें गायत्री पूजा, न्यास, ध्यान, पुरश्चरण आदि विस्तार से वर्णित हैं तथा पूजा-पद्धति और प्रयोग का भी साङ्गोपाङ्ग वर्णन है। यह ऋग्विधान के अन्तर्गत है। --ए० बं० ६४२६

(२) ऋग्विधानान्तर्गत ब्रह्म-नारद संवादरूप। नारदजी ने ब्रह्माजी से गायत्री के न्यास, ऋषि, देवता, छन्द, आवाहन, विसर्जन, हृदय, शिखा, गोत्र, विनियोग, कुक्षि, पाद, ध्यान, मुख, माहात्म्य आदि के विषय में प्रश्न किये। ब्रह्माजी ने उन सबका क्रमशः इसमें समाधान किया है। --रा० ला० ९००

(३) श्लोक सं० ३५०, पूर्ण। --र० मं० ४४८१

(४) --कैट्. कैट्. १।१५२, २।३०

गायत्रीब्राह्मणोल्लासतन्त्र

लि०--(१) ५ पटलों में गायत्री-सम्बन्धी विविध विषय इसमें वर्णित हैं। जैसे--गायत्री ध्यान, ऋषि आदि न्यास, मुद्रा, वर्णन्यास, अक्षरों के वर्ण, त्रिपदा गायत्री, प्रणव, मेरुसेतु, क्षत्रिय और वैश्य की द्विपदा गायत्री, गायत्री के वर्णों के देवता, गायत्री-संपुटित इष्ट मन्त्र, गायत्री और जीवात्मा का अभेद आदि। --ए० बं० ६०२९

(२) श्लोक सं० ८२५ तथा पटल सं० ५। कामधेनुतन्त्र के अन्तर्गत देव-देवी संवाद-रूप। इसमें वर्णित विषय हैं--१म पटल में ध्यान, जप आदि गायत्री-उपासकों के उपयोग की नाना विधियाँ हैं; २य में 'भूः' आदि सप्त व्याहृतियों का अर्थ-निरूपण है; ३य में गायत्री के जपयोग्य स्वरूप का वर्णन है; ४र्थ में गायत्री का आवाहन, यज्ञोपवीत निर्माण आदि एवं ५म में सन्ध्योपासना आदि का वर्णन है --रा० ला० ४८१

(३) कामधेनुतन्त्र से गृहीत। --कैट्. कैट्. १।१५२

गायत्रीमाला

लि०--(१) ब्राह्मण, विष्णु, रुद्र, महालक्ष्मी, नृसिंह, लक्ष्मण, कृष्ण, गोपाल, परशुराम, तुलसी, हनुमान्, गरुड़, अग्नि, पृथ्वी, जल, आकाश, सूर्य, चन्द्र, गुरु, परमहंस, पवन, हंस, गौरी और देवी के भेद से कुल २४ गायत्रियों का वर्णन। --ए० बं० ६२८१

(२) --कैट्. कैट्. १।१५२

गायत्रीरहस्य

लि०—(१) व्यास-परशुराम विरचित। १० अनुभवों (अध्यायों) में पूर्ण। उनमें प्राणायामाभ्यास का आनन्द, संकल्प, सन्ध्यार्थ के ध्यानानन्द का उदय, मार्जन, आचमन, अघमर्षण, अर्घ्यदान, तथा शुद्धि के विधारण का आनन्द, गायत्री-उपासना-जन्य आनन्द का उदय, २४ मुद्राओं के तत्त्व विचारानन्द का उदय आदि विषय वर्णित हैं।

—इ० आ० २६३६

(२) (क) विश्वामित्रकल्प से गृहीत। (ख) चार भागों में विभक्त, रुद्रयामलान्तर्गत। —कैट्. कैट्. १।१५२, ३।३३

गायत्रीविधान

लि०—(१) श्लोक सं० २५०। —अ० बं० ८८६४

(२) —कैट्. कैट्. १।१५२, २।३०

गायत्रीविधानभाष्य

लि०— —कैट्. कैट्. ३।३३

गायत्रीशापविमोचन

लि०—(१) श्लोक सं० ६०। —अ० ब० १२२४१

(२) श्लोक सं० २०८, पूर्ण। इसमें गायत्री-हृदय और गायत्रीकवच भी संमिलित हैं। —र० मं० १३५५

(३) —कैट्. कैट्. १।१५२, २।३०

(४) श्लोक सं० ७०, पूर्ण। —सं० वि० २४४३१

गायत्रीसहस्रनाम

लि०—(क) रुद्रयामल से गृहीत। (ख) रुद्रयामल के गायत्रीरहस्य से गृहीत।

—कैट्. कैट्. (क) २।३०, (ख) ३।३३

गायत्रीस्तवराजस्तोत्र

लि०—(१) विश्वामित्र विरचित। विश्वामित्रसंहिता के अन्तर्गत।

—ए० बं० ६७२४

(२) विश्वामित्रसंहितान्तर्गत विश्वामित्रसमुद्धृत। गायत्री की स्तुति। श्लोक सं० ६५। —रा० ला० ८८६

(३) विश्वामित्रसंहिता से उद्धृत। विश्वामित्र कृत।

—कैट्. कैट्. १।१५२, ३।३३

गायत्रीहृदय

लि०—(१) (क) ब्रह्म-वसिष्ठ संवादरूप। इसमें वैदिक गायत्रीमन्त्र का मूल वर्णित है। (ख) ब्रह्म-वैशम्पायन संवादरूप। (ग) ब्रह्मकल्पान्तर्गत एवं ब्रह्म-याज्ञवल्क्य संवादरूप। —ए० बं० (क) ६७१८, (ख) ६७१९, (ग) ६७२०

(२) नारदोपनिषत् संवादरूप। श्लोक सं० ४८। इसमें गायत्री की उत्पत्ति के साथ गायत्री का अर्थ प्रतिपादित है। —रा० ला० ४४२

(३) ब्रह्मा-वसिष्ठ संवादरूप। इसमें वसिष्ठजी के प्रश्न पर ब्रह्मा ने ब्रह्मज्ञान की उत्पत्ति की प्रकृति गायत्री का व्याख्यान किया है। जो मनुष्य गायत्रीहृदय का पाठ करता है वह इस लोक और परलोक में सुखी रहता है। जो ब्राह्मण नित्य गायत्री-हृदय का पाठ करता है, उसे गायत्री के ३ लाख ६० हज़ार जप करने का फल प्राप्त होता है। उसे सब तीर्थों में स्नान करने का, सब वेदों के ज्ञान तथा सब वेदों के अध्ययन का फल अनायास मिल जाता है। इसमें गायत्री की उत्पत्ति तथा गायत्री का अर्थ विशेष रूप से वर्णित है। —रा० ला० ४७५

(४) (क) श्लोक सं० १००। (ख) श्लोक सं० २१।

—अ० ब० (क) ८३०८, (ख) १३४८० (ग)

(५) श्लोक सं० ११७०, पूर्ण। —सं० वि० २४८२१

(६) (क) दे० नारदोपनिषद्। (ख) पद्मपुराण के पातालखण्ड से गृहीत। (ग) वसिष्ठसंहिता से गृहीत। (घ) विश्वामित्रकल्प से गृहीत।

—कैट्. कैट्. १।१५२, ३।३३

गायत्र्यक्षरकल्प

लि०—श्लोक सं० २८। —अ० ब० १०५६०

गायत्र्यक्षरतत्त्व

लि०— —कैट्. कैट्. १।१५२

गायत्र्यर्चनदीपिका

लि०—(१) मड़ोपनामक शिवरामभट्ट-पौत्र जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित। इसमें उपासकों के प्रातःकृत्यों के वर्णनपूर्वक गायत्री देवी की पूजा वर्णित है।

—ए० बं० ६४२०

(२) काशीनाथ विरचित, श्लोक सं० ३००, अपूर्ण ।

—सं० वि० २४८०९

गायत्र्यर्चनरत्नमाला

लि०—(१) इसमें प्रधान रूप से उपासकों के दैनिक कृत्यों के साथ गायत्री देवी की नित्यपूजा, नैमित्तिक पूजा तथा पुरश्चरण का वर्णन है ।

—ए० बं० ६४२४

(२) गायत्र्यर्चारत्नमाला। —कैट्. कैट्. १।१५२

गायत्र्यर्थरहस्य

लि०—ज्ञानदेव कृत । —कैट्. कैट्. १।१५३

गायत्र्यष्टोत्तरशतनाम

लि०—(१) (क) विश्वामित्रकल्प से गृहीत, श्लोक सं० २० । (ख) श्लोक सं० २० ।

—अ० व० (क) १४४८० (ख), (ख) १०२०६ (क)

(२)

—कैट्. कैट्. १।१५३

गायत्र्यष्टोत्तरशतदिव्यनामामृतस्तोत्र

लि०—विश्वामित्र-रामचन्द्र संवादरूप । श्लोक सं० ४२ । इसमें कहा गया है कि गायत्री के अष्टोत्तर शत (१०८) नामों के पाठ से रोगियों के रोग शान्त हो जाते हैं एवं सब ऐश्वर्यों की वृद्धि होती है। अधिक क्या कहें यह स्तोत्र सबका दर्शन देते वाला है ।

—रा० ला० ८८२

गारुडतन्त्र या गारुडीतन्त्र

उ०—मन्त्रमहार्णव तथा तन्त्रसार में ।

गारुडसंहिता

लि०—(१) मूर्तिलक्षण पर। इसमें मूर्ति के आकार प्रकार का प्रतिपादन है।

—तै० म० २५६

(२)

—कैट्. कैट्. १।१५३

गार्ग्यसंहिता

उ०—आगमकलपलता में ।

गुटिकाकल्प

लि०—— ——कैट्. कैट्. १।१५४

गुटिकाकवच

लि०——श्लोक संख्या १००। ——अ० ब० ३५२४

गुटिकादेवपूजन

लि०——गुटिका या गुटका का प्रयोग सदा छोटे आकार की पुस्तक या पाकेटबुक के लिए होता है। यहाँ पर संभवतः इसका प्रयोग इसी अर्थ में किया गया है। अन्य दो पदों (देव और पूजन) से ज्ञात होता है कि यह पुस्तक किन्ही विशेष देवी और देवताओं की पूजाविधि की प्रतिपादक है। ——वी० कै० १२६८

गुप्तगोपाललीलामृत

लि०—— ——प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

गुप्तदीक्षातन्त्र

उ०——शाक्तानन्दतरङ्गिणी में।

गुप्तसाधनतन्त्र

लि०——(१) १२ पटलों में पूर्ण। ——ए० बं० ५९१५

(२) उमा-महेश्वर संवादरूप। १२ पटलों में पूर्ण। श्लोक सं० ४८४। इसमें प्रतिपादित विषय हैं——कुलाचार और कौलों की साधना, पञ्चाङ्गोपासना, आत्मसिद्धि के उपाय, मासिक जप विवरण, दक्षिणा का प्रकार, मन्त्रोद्धार आदि।

——रा० ला० ७३८

(३) शिव-पार्वती संवादरूप, १२ पटलों में पूर्ण। इसमें कुलीन का लक्षण निम्नलिखित है——

कुलं शक्तिः समाख्याता अकुलः शिष्य उच्यते।
तस्यां लीनो भवेद् यस्तु कुलीनः स प्रकीर्तितः॥

——ने० द० २।२६२ (ग)

(४) पूर्ण। ——बं० प० ३४६

(५) शिवप्रोक्त। ——ज० का० १०१४

(६) (क) श्लोक सं० २७०। अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३१५ अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० २४८ अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० ४२५, पटल ७ वें से १२ तक है। आरंभ के छह पटल नहीं है। अपूर्ण। (ङ) केवल १ से ५ पटल तक। श्लोक सं० १२८, अपूर्ण। (च) केवल ४र्थ पटल मात्र।

—सं० वि० (क) २४८५८, (ख) २५१९७, (ग) २५१९८, (घ) २५४८७, (ङ) २५७५८, (च) २६५०२

(७) —कैट्. कैट्. १।१५५

उ०—श्यामापूजाव्यवस्था, महामोक्षतन्त्र, कालिकार्चामुकुर, सर्वोल्लास तथा कालिकासपर्याविधि में।

गुप्तसारतन्त्र

उ०—महामोक्षतन्त्र में।

गुप्तार्णवतन्त्र

(अपराधस्तोत्रमात्र)

लि०—(१) श्लोक सं० ४१, पूर्ण। —र० मं० ११६४

(२) गुप्तार्णवतन्त्रे अपराधस्तोत्रम्। —कैट्. कैट्. २।३१

उ०—तन्त्रसार में।

गुप्तासनतन्त्र

उ०—प्राणतोषिणी में।

गुरुकवच

लि०—(१) महागमसारान्तर्गत। श्लोक सं० ४५, पूर्ण। इस संग्रह में १८ प्रतियाँ और हैं। —सं० वि० २२५४३

(२) (क) विश्वसारोद्धार से गृहीत। श्लोक सं० ५०। (ख) विश्वसारोद्धार से गृहीत। श्लोक सं० २६, अपूर्ण। —अ० ब० (क) ११७६२, (ख) २०१० (ख)

(३) समयातन्त्रान्तर्गत, शिव-पार्वती संवादरूप। श्लोक सं० ३७। यह सर्वसिद्धिप्रद कवच है। श्री गुरु की कृपा से यदि सद्विद्या प्राप्त हो जाय तो जो इसका पाठ करे, या पाठ करावे, सुने या सुनावे वह सर्वसिद्धियों का अधीश्वर होकर देववत् भूमि में विचरता है। —रा० ला० ४०८०

(४) महागमसारान्तर्गत। —ए० बं० ६८०३

(५) (क) पूर्ण। (ख) त्रैलोक्य नाम का गुरुकवच, पूर्ण। (ग) ब्रह्मयामलान्तर्गत, अपूर्ण। —वं० प० (क) ५३२, (ख) ५३२ (क), (ग) ७९८ (ख)

(६) (क) श्लोक सं० ५८, पूर्ण। (ख) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० ९२, पूर्ण। (ग) इसकी पुष्पिका में 'विश्वसारोद्धारे गुरुकवचम्' लिखा है अतः यह विश्वसारोद्धारतन्त्रान्तर्गत है, यह निश्चय होता है। श्लोक सं० ८८, पूर्ण।

—र० मं० (क) ५०४०, (ख) ४५०३, (ग) ४८०६

(७) (क) रुद्रयामल से उद्धृत। (ख) ब्रह्मयामल से गृहीत। (ग) निगमसार से गृहीत, रुद्रयामल से गृहीत, समयातन्त्र से गृहीत।

—कैट्. कैट्. १।१५५, ३।३३, २।३१

गुरुकीलकपटल

लि०—गुप्तवतीरहस्यतन्त्रोक्त। —रा० पु० ५७१०

गुरुकुण्डली

लि०—(१) बृहस्पति प्रोक्त। 'ओं धुक् धुक् स्वाहा' मन्त्र द्वारा ७ बार अभिमन्त्रित की हुई खड़िया लेकर उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम ७।७ रेखाएँ खींचकर ४९ कोष्ठों का मण्डल भूमि पर लिखना चाहिए। उनमें शून्य सहित ४९ अङ्क लिखने चाहिए। तदनन्तर प्रश्नकर्त्ता के कुल के बालक के हाथ से उस खड़िया को अभिमन्त्रित कर अपने कार्य का शुभ या अशुभ फल मन में सोच कर उन कोष्ठों में से किसी एक कोष्ठ पर खड़िया गिरा कर शुभाशुभ फल कहना चाहिए। कोष्ठों पर अङ्कित अङ्कों की तालिका तथा फल पृथक् दिया हुआ है। उसी के अनुसार शुभाशुभ फल कहा जाता है। —रा० ला० ४०८२

(२) गुरुतन्त्र से गृहीत। —कैट्. कैट्. २।३१

गुरुगीता

लि०—(१) इसके आरंभ में गुरुपूजा वर्णित है। तदुपरान्त स्तोत्र का आरंभ होता है। यह स्कन्दपुराणान्तर्गत तथा रुद्रयामलान्तर्गत भी कहा गया है। किसी-किसी प्रति में गुरुमाहात्म्य भी वर्णित है। —ए० बं० ६७९० से ६७९३ तक

(२) गुरुयामलतन्त्रान्तर्गत। इसमें गुरुगीता के ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति, कीलक आदि का वर्णन कर गुरुराज की स्तुति तथा महिमा विशेष रूप से वर्णित है।

—रा० ला० ४४५

(३) ब्रह्मयामलान्तर्गत उमा-महेश्वर संवाद रूप। इसमें आत्मतत्त्वज्ञानी गुरुदेव की स्तुति प्रतिपादित है।

(४) अपूर्ण। —वं. प. १२०६

(५) व्यास कृत। स्कन्दपुराण के उत्तर खण्ड से गृहीत। इस पर सुदर्शन की टीका है। —कैट्. कैट्. १।१५६, ३।३३

उ०—प्राणतोषिणी में।

गुरुतन्त्र

लि०—(१) २६४ श्लोक का यह ग्रन्थ ५ पटलों में पूर्ण है। इसमें गुरु के ध्यान, पूजा, माहात्म्य आदि विषय वर्णित हैं। —रा० ला० २४७

(२) विवरण रा० ला० २४७ में देखें। —ए० बं० ५९१८

(३) श्लोक सं० १००, पटल ५। —अ० ब० १०२३१

(४) पूर्ण। —वं० प० ५०५

(५) (क) श्लोक सं० ९२, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० १९५, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० २६१, पूर्ण। (घ) श्लोक सं० १६२, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४५८६, (ख) २४७२१, (ग) २४७८३, (घ) २५७४०

उ०—प्राणतोषिणी, महामोक्षतन्त्र तथा कालिकासपर्याविधि में।

गुरुदीक्षातन्त्र

उ०—शाक्तानन्दतरङ्गिणी में।

गुरुपंक्तिपूजाविधि

लि०—गुरुपंक्तिपूजाविधि गुरुपङ्क्तिपञ्चाङ्ग के ५ अङ्गोंमें अन्यतम हो सकती है —ने० द० १३६१

गुरुपञ्चाङ्ग

लि०—(१) गुरुयामलान्तर्गत, हर-गौरी संवादरूप। इसमें (१) श्री गुरुपटल, (२) गुरु-नित्यपूजापद्धति, (३) गुरुकवच, (४) गुरुमन्त्रगर्भ सहस्रनाम तथा (५) गुरु-स्तोत्र वर्णित है।

(२) गुरुपञ्चाङ्ग—गुरुसहस्रनाम मात्र, श्लोक सं० २४५। पूर्ण।

—डे० का० २२८ (१८८३-८४ ई.)

(३)––(१) गुरुपटल, रुद्रयामल से गृहीत, (२) गुरुपूजापद्धति, (३) गुरुसहस्रनाम, निगमयोगसार से गृहीत, (४) गुरुस्तोत्र, निगमयोगसार से गृहीत तथा ब्रह्मयामल और रुद्रयामलान्तर्गत। ––कैट्. कैट्. १।१५६, २।३१, ३।३२ तथा ३।३४

(४)––(१) गुरुपटल, रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ६२, पूर्ण। (२) गुरुपूजापद्धति, श्लोक सं० १२२, पूर्ण। ––र० मं० ४७९५, ४७५०

(५)––(क) गुरुपटल, श्लोक सं० ४८। (ख) गुरुपूजाविधि। (ग) गुरुसहस्रनाम। (घ) गुरुस्तुति।

––सं० वि० (क) २५६७४, (ख) २६६९३, (ग) २४४५३, (घ) २२३८८

(६) (क) गुरुसहस्रनामस्तोत्र, संमोहनतन्त्रान्तर्गत, हर-पार्वती संवाद रूप। श्लोक सं० ११८। भगवन्, कलियुग में आर्त लोग किस उपाय से सद्गति को प्राप्त हों? पार्वतीजी के इस प्रश्न पर भगवान् शिवजी ने अति सुगोप्य सनातन ज्ञानरूप यह गुरुसहस्रनाम सुनाया। (ख) गुरुसहस्रनाम, निगमयोगसारान्तर्गत। इसे कुलभैरवी देवी ने शङ्करजी के पूछने पर उन्हें दिया। यह परम गोपनीय और ब्रह्मज्ञानप्रद है। इसकी श्लोक सं० १३३ है। (ग) पार्वती जी के प्रश्न करने पर शिवजी ने इस गुरुसहस्रनामस्तोत्र का उपदेश दिया। यह गुरुमाहात्म्य का द्योतक है। जिस घर में यह स्तोत्र रहता है वहाँ गुरु कृपा से शिष्य ब्रह्मसायुज्य को प्राप्त हो जाता है।

––रा० ला० (क) ४०७०, (ख) ४०८३, (ग) ४१००

(७) (क) गुरुसहस्रनामस्तोत्र––संमोहनतन्त्रान्तर्गत, शिव-पार्वती संवादरूप वि० विवरण रा० ला० ४०७७ आदि में दिया गया है। (ख) निगमयोगसारान्तर्गत गुरुसहस्रनामस्तोत्र महादेव-पार्वती संवादरूप है। (ग) गुरुस्तवराज यह वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत हरगौरी-संवादरूप है। इसमें ८ श्लोक है। यदि कोई पूर्व की ओर मुँह कर हाथ जोड़ कर इन ८ श्लोकों का पाठ करे तो पुरश्चरण के बिना भी उसे मन्त्रसिद्धि प्राप्त हो जाती है। ––ए० बं० (क) ६७९४, (ख) ६७९५, (ग) ६७९०

(८) गुरुस्तोत्रकवचसंग्रह। इसमें निम्ननिर्दिष्ट ४ स्तोत्र हैं––१ गुरुपरब्रह्मस्तोत्र, निगमयोगसारान्तर्गत।

(२) गुरुपरब्रह्मस्तोत्र कवच (निगमयोगसारान्तर्गत)।

(३) गुरुकवच, समयातन्त्रान्तर्गत।

(४) गुरुपङ्क्तिकवच, गुरुतन्त्रान्तर्गत।––ए० बं० ६८०४

(९) गुरुस्तोत्र, कुब्जिकातन्त्रान्तर्गत। पूर्ण।––बं० प० ७९८ (क)

गुरुपादपद्मप्राप्ति

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। इसमें गुरु द्वारा आत्मज्ञान का पथ प्रदर्शन और उनके चरणों से आशीर्वाद-प्राप्ति प्रतिपादित है। —बी० कै० १३१२

(२) गुरुपादपद्म-प्राप्ति (परमहंस की) रुद्रयामल से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।१५६

गुरुपारम्पर्य

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ४००। (ख) श्लोक सं० ८०, महाम्नायान्तर्गत। —अ० व० (क) ५६४८, (ख) ६०२६ (क)

(२) श्लोक सं० लगभग ४३०, पूर्ण। —सं० वि० २६२०३

गुरुपालीश्वरपूजाविधि

लि०—श्लोक सं० ७७५। समलाम्बा सहित श्री गुरुपालीश्वर नामक महाप्रभु की पूजाविधि इसमें वर्णित है। —ट्रि० कै० ९४१

गुरुप्रशंसा

लि०—इसमें गुरुमहिमा वर्णित है एवं साथ ही साथ गुरु के प्रति आदर और अनादर करने का शुभ और अशुभ फल भी वर्णित है। —ए० बं० ६७९७ (क)

गुरुमण्डलपूजनविधि

लि०—श्लोक सं० ७५, पूर्ण। —र०मं० ९२४

गुरुमण्डलादिपूजनविधि

लि०—(१) श्लोक सं० ४००, अपूर्ण। —र० मं० १०७१

(२) —कैट्. कैट्. २।३१

गुरुमन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० २५०। —अ० ब० ५६४४

(२) श्लोक सं० २७। —सं० वि० २५४१४

गुरुपूजाक्रम

लि०—कैलासनाथ कृत। —कैट्. कैट्. १।१५६

गुरुमहाविद्या

लि०—श्लोक सं० ४००। —अ० ब० १०७१९

गुरुरहस्याङ्गपूजाविधानस्तोत्र

लि०—(१) विश्वसारतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० १३६, पूर्ण।

—र० मं० ४७६१

गुर्वचनतन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

गुह्यकातन्त्र

लि०—महागुह्यतन्त्र की श्लोक सं० १२००० है। उसी का महागुह्यातिगुह्य अंश १३०० श्लोक का यह तन्त्र है। यह श्री गुह्यकाली से सम्बद्ध है।

—ने० द० २।३७७ (ख)

गुह्यकालीपूजा

लि०—इसमें गुह्यकाली की पूजा का विवरण दिया है एवं कलशस्थापन, शंखस्थापन, अर्घ्यस्थापन, तर्पण, अमृतेश्वरी-पूजन आदि विषय वर्णित हैं। —ए० बं० ६३१८

गुह्यकालीसहस्रनाम

लि०—श्लोक सं० २७०, पूर्ण। भैरव-भैरवी संवादरूप यह सहस्रनाम स्तोत्र बाला-गुह्यकालिकातन्त्ररहस्यान्तर्गत है। —ए० बं० ६६५०

गुह्यकाल्ययुताक्षरमालातन्त्र

लि०—(क) श्लोक सं० ३८०, पूर्ण। यह महाकालसंहितोक्त तथा महाकालोपासित है। (ख) श्लोक सं० २००, पूर्ण। महाकालसंहितोक्त। (क) में उक्त मन्त्र साकल्येन इसमें प्रतिपादित नहीं हैं।

—ए० बं० (क) ६३१६, (ख) ६३१७

गुह्यचक्रतन्त्र

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

गुह्यतन्त्र

उ०—आक्सफोर्ड १०९ (क) तथा एल्. डी. (ङ) में इसका उल्लेख है।

—कैट्. कैट्. १।१५७

गुह्ययोगिनीतन्त्र

उ०—अभिनवगुप्त द्वारा उल्लिखित। —इ० आ० पेज ८४०

गुह्यसिद्धितन्त्र (शास्त्र)

लि०—(१) यह वामाचार का ग्रन्थ है। इसका विषय अति रहस्य है।

—ने० द० १६४८ (ट)

(२) —कैट्. कैट्. ३।३४

गुह्यातन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी में।

गुह्यातिगुह्यतन्त्र

लि०—(१) इसमें विभिन्न शक्तियों की पूजा और माहात्म्य वर्णित है।

—ए० बं० ६००५

(२) विद्योत्पत्तिमात्र।

—रा० ला० ३३४, ४४८

गूढार्थादर्श

लि०—(१) यह जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ (शिवानन्दनाथ) विरचित ज्ञानार्णव-तन्त्र-टीका है। यह टीका २३ पटलों तक रची गयी है। इसमें ये विषय प्रतिपादित हैं—भगवन्, आप क्या जपते हैं? पार्वतीजी के इस प्रश्न का महादेवजी द्वारा उत्तर। त्रिपुरा मन्त्र की उपासना के प्रकार आदि। अन्तर्याग, मन्त्रपूजा प्रकार, बलिदान प्रकार, पञ्च-सिंहासन स्थित त्रिपुरा का विवरण, त्रिपुराभैरवी के बीज आदि, महाविद्या के बीज, त्रिपुरा के तीन भेद तथा उनके मन्त्र आदि का निर्देश, श्रीविद्या के १० भेद, षोडशी के चार भेद, आसनशुद्धि, अर्घस्थापन, नित्यपूजा प्रकार आदि। —रा० ला० ८२६

(२) भडोपनामक काशीनाथ विरचित। श्लोक संख्या ६८५, पूर्ण। मन्त्रसार-समुच्चय-टीका (?)। —सं० वि० २६४२६

गूढावतार

लि०—विश्वसारतन्त्रान्तर्गत, शिव-पार्वती संवादरूप। यह विश्वसारतन्त्र के उत्तर-खण्ड का ११वाँ पटल मात्र है। इसमें भगवान् विष्णु का महाप्रभु चैतन्यदेव के रूप में अवतरण तथा चैतन्य गायत्री वर्णित हैं। —ए० बं० ६०३८

गोपालकल्प

लि०— —कैट्. कैट्. १।१६१, २।३२

गोपालपञ्चाङ्ग

लि०—(१) इसमें निम्न लिखित ५ विषय हैं—

१. गोपाल पटल—अङ्गन्यास, ध्यान, बिन्दुबीज, अङ्गमन्त्रादि रूप। २. गोपालमन्त्रपद्धति। ३. गोपालसहस्रनाम, संमोहनतन्त्र में उक्त हर-पार्वती संवादरूप। ४. त्रैलोक्यमंगल गोपालकवच, सनत्कुमारसंहितान्तर्गत तथा ५. गोपालस्तवराज गौतमीतन्त्रोक्त। —नो० सं० २।५७

(२) (क) गौतमीतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ७७५, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ४७०। —र० मं० (क) ४७५९, (ख) ४८५९

(३) (क) श्लोक सं० ७८२, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ७६०, पूर्ण। —सं० वि० (क) २४६७४, (ख) २६३५०

(४) (क) निम्नलिखित गोपालपटलादि—५ ग्रन्थ पृथक् पृथक् दिये गये हैं गोपालपटल, गोपालपद्धति, गोपालकवच, गोपालपञ्जर, गोपालहृदय, गोपालसहस्रनाम, गोपालस्तवराज, 'जितं ते' स्तोत्र आदि। (ख) गोपालपद्धति। श्लोक सं० २१५, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २६४४५, (ख) २४३१०

(५) १ गोपालपटल, हरिव्यासदेव विरचित, २. गोपालपूजापद्धति गोपाल मिश्र कृत, ३. गोपाल जगन्मङ्गल कवच, ४. गोपालरहस्य सहस्रनाम-स्तोत्र सम्मोहनतन्त्रान्तर्गत तथा गोपालसहस्रनामस्तोत्र, ५. गोपालस्तव एवं गोपालस्तवराज रामानन्द द्वारा काशीखण्ड से उद्धृत। —कैट्. कैट्. १।१६१, १६२, १६३

(६) गोपालसहस्रनाम, संमोहनतन्त्रान्तर्गत (स्तोत्ररत्नाकर, मद्रास में मुद्रित गोपालसहस्रनाम से यह मिलता-जुलता है)। —ए० बं० ६७५९

(७) शिवकृत, गौरी-शङ्कर संवादरूप। इसकी श्लोक सं० २५७ है। इसके माहात्म्य के विषय में लिखा है—जो इस स्तोत्र का पाठ करता है उसके घर में श्रीगोपाल का सदा निवास रहता है। —रा० ला० २९२५

(८) संमोहनतन्त्रान्तर्गत। पूर्ण। —वं. प. ३१६

गोपालपद्धति

उ०——पुरश्चर्यार्णव में।

गोपालरहस्य

लि०——(१) मुकुन्दलाल कृत। ——कैट्. कैट्. १।१६२

(२) संमोहनतन्त्रान्तर्गत गोपालसहस्रनामस्तोत्र का ही नामान्तर गोपालरहस्य या गोपालरहस्यसहस्रनाम स्तोत्र है। ——कैट्. कैट्. २।३३

(३) गोपालपटल के अन्तर्गत दी गयी गोपालपद्धति आदि की तालिका में गोपालरहस्य भी एक पुस्तक है, उसका विवरण कुछ नहीं ज्ञात है। ——सं० वि० २६४४५

गोपालसंहिता

लि०——दे० गौरीकञ्चुलिका ——कैट्. कैट्. १।१६३

गोपालार्चनविधि

लि०——(१) पुरुषोत्तमदेव विरचित। ——कैट्. कैट्. १।१६३

(२) कर्ता का नाम नहीं दिया है। २ प्रतियाँ हैं।

——म० द० ३०६७, ३२९६

गोपीतन्त्र

उ०——महामोक्षतन्त्र में।

गोप्यगोपनलीलामृत

उ०——महामोक्षतन्त्र में।

गोमुखलक्षण

लि०——ललितागमान्तर्गत। गोमुख अर्थात् गोमुखी पाँच प्रकार की बतलायी गयी है——लाल, हरी, सफेद, नीली और चितकबरी। इससे सब मन्त्रों की सिद्धि की जाती है। वशीकरण मन्त्र सिद्ध करना हो तो लाल, आकर्षण-मन्त्र सिद्ध करना हो तो हरी, स्तंभन और उच्चाटन मन्त्र की सिद्धि करनी हो तो सफेद, मारण-मन्त्र की सिद्धि करनी हो तो नीली एवं मोहन मन्त्र की सिद्धि के लिए चितकबरी गोमुखी होनी चाहिए। वशीकरण में ९ अंगुल की, आकर्षण में २५ अंगुल की, स्तंभन और उच्चाटन में ३२ अंगुल की तथा शत्रुनाशार्थ १५ अंगुल की गोमुखी होनी चाहिए। ——म० द० ५७६२

गोरक्षशतक

लि०--(१) मीननाथ-शिष्य गोरखनाथ विरचित।

--ए० बं० ६६०९ से ६६१८ तक

(२) प्राणनिरोध से किये गये योग-साधन का फल इसमें वर्णित है। इसमें कहा गया है कि जिसका मन क्षण भर के लिए भी ब्रह्मविचार में स्थिर हो जाता है उसे सब तीर्थों में स्नान, ब्राह्मणों को पृथ्वीदान, सहस्रों यज्ञों के अनुष्ठान, देवपूजन, पितृतर्पण और पितरों के उद्धार का फल प्राप्त हो जाता है। इसकी श्लोक सं० ३२८ है।

—रा० ला० ४५१

(३) नामान्तर--ज्ञानशतक या ज्ञानप्रकाशशतक, गोरक्षनाथ कृत, इसपर मथुरानाथ शुक्ल कृत तथा शङ्कर कृत दो टीकाएँ हैं। —कैट्. कैट्. १।१६५

(४) गोरक्ष कृत। —म० द० २८३१ (घ)

गोरक्षशाबरतन्त्र

लि०-- —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से

गोरक्षसंहिता

लि०—(१) षट्चक्र का वर्णनमात्र, पूर्ण। —बं० प० ७२१

(२) श्लोक सं० २७१०, अपूर्ण। —सं० वि० २५५७२

(३) गोरक्ष कृत। गोरक्षसहितायां छिन्नमस्तानामशतक।

—कैट्. कैट्. १।१६५

गोविन्दकल्पलता

लि०--समीराचार्य विरचित। यह ग्रन्थ १३ संग्रहों में पूर्ण है। इसकी श्लोक सं० लगभग २५०० है। इसमें प्रतिपादित विषय हैं---दीक्षादि का निरूपण, मन्त्र के अधिकारी आदि का निरूपण, अकडमचक्र आदि का निरूपण, मन्त्रों के चैतन्य आदि का निरूपण, कृष्ण के मन्त्र, आकार आदि का निरूपण, आचारगत मासिकपूजा का निरूपण, मन्त्र, ऋषि, छन्द आदि का निरूपण, गोपालमन्त्रग्रहण की विधि आदि का निरूपण, यजनविधि-प्रयोग आदि का निरूपण, पुरश्चरणविधि तथा मन्त्र के प्रभेद आदि का निरूपण, कुण्ड के लक्षण आदि का वर्णन आदि। --नो० सं० १।१००

गोविन्दवृन्दावनतन्त्र

वृहद्गौतमीतन्त्रान्तर्गत यह २८ पटलों में है।

उ०——शाक्तानन्दतरंङ्गिणी में।

गौतमीतन्त्र, गौतमीयतन्त्र या गौतमीयमहातन्त्र

लि०——(१) इसमें ३३ पटल हैं। किसी-किसी प्रति में ३१ पटल भी हैं। यह महातन्त्र है। वैष्णव तन्त्र होने पर भी इसमें शाक्त आचार के अनुसार पूजा आदि का प्रतिपादन है। ——इ० आ० २५५४

(२) यह सुप्रसिद्ध वैष्णव तन्त्र है। प्रस्तुत प्रति में ३१ पटल है, किन्तु यह ३४ पटलों में वंगानुवाद के साथ कलकत्ता में १९२७ ई० में प्रकाशित हो गया है। ३२ पटलों वाला इसका एक संस्करण वंगलिपि में और प्रकाशित हो गया है। इसकी वैष्णव साहित्य परिषद् कलकत्ता में स्थित प्रति में ३२ पटल है। ——ए० वं० ६००४

(३) (क) श्लोक सं० १०००। (ख) श्लोक सं० ९००।

——अ० व० (क) ९४००, (ख) ११२९२

(४) पूर्ण। ——डे० का० (१८८२-८३)

(५) यह वैष्णवतन्त्र है। इसमें ३१ पटल है। यह वैष्णवों की सम्पूर्ण साधना और उपासनाओं की प्रक्रियाओं का प्रदर्शक है। विष्णु के विभिन्न स्वरूपों की पूजा-अर्चा इसमें प्रतिपादित है।

——बी० कै० १२६५

(६) इस संग्रह में इसकी ४ प्रतियाँ है——(क) यह ३२ पटलों में पूर्ण है। मुद्रित संस्करण से इसमें यत्र-तत्र भेद दृष्टिगोचर होता है। (ख) अपूर्ण। (ग) राधामोहन कृत तत्त्वदीपिका टीका के साथ, अपूर्ण। (घ) अपूर्ण।

——वं० प० (क) २९२, (ख) ६६७, (ग) ३२६, (घ) १०७

(७) नारद प्रोक्त। पत्र सं० ७५ है। ——ज० का० १०१६

(८) वैष्णव महातन्त्र ३२ पटलों में है। लिपिकाल १६९० वि०।

——भ० रि० १३९

उ०——तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमतत्त्वविलास, महामोक्षतन्त्र तथा सर्वोल्लासतन्त्र में।

गौरीकञ्चुलिका

लि०——(१) यह गोपालसंहिता का एक भाग मात्र है। इसमें मन्त्रोच्चारण के साथ-साथ विशेष ओषधि के उपयोग द्वारा रोगों की निवृत्ति वर्णित है। कञ्चुलिकातन्त्र के नाम से इसके कई संस्करण प्रकाशित भी हो चुके हैं। यह हर-गौरी संवादरूप है। गौरी-कञ्चुलिका, कञ्जलिका, कञ्चुली आदि इसके विभिन्न नाम हैं।

——ए० बं० ६१४९

(२) हर-गौरी संवादरूप। इसमें मन्त्रों के साथ ओषधियों का निरूपण, ओषधि के उपयोग का समय आदि विषय वर्णित हैं। ——नो० सं० १।१०६

(३) श्लोक संख्या ३३०। इसमें जड़ी बूटियों के खोदने और उखाड़ने की तिथि वार, नक्षत्र आदि का नियम, विशेष-विशेष नक्षत्रों में रोग होने पर उसके भोग काल, साध्य, असाध्य आदि का वर्णन एवं दाद, प्रमेह, गण्डमाला आदि रोगों की विशेष चिकित्सा वर्णित है। शरीर-जरा को हटाने के लिए शेमर, चित्रक, निर्गुण्डी आदि का कल्प कहा गया है।

——रा० ला० ४७६

(४) (क) श्लोक सं० ३००, अपूर्ण। (ख) गौरीकाञ्जलिका तन्त्र के नाम से है। इसकी श्लोक सं० ३६० है। इसके विवरण में उक्त 'ओषधिप्रकरणम्' लिखा है।

——सं० वि० (क) २४९००, (ख) २५९९६

गौरीकल्प

लि०—— ——कैट्, कैट्. १।१७१

गौरीडामर

लि०——पार्वती-ईश्वर संवादरूप। इसमें आकर्षण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, मारण आदि का विशेष रूप से वर्णन है। ——ए० बं० ५८५९

गौरीतन्त्र

लि०——भागवत-माहात्म्य तथा सारसंग्रह मात्र।

——कैट्. कैट्. १।१७२, २।३४

उ०——महामोक्षतन्त्र में।

गौरीयामल

उ०——ताराभक्तिसुधार्णव तथा पुरश्चर्यार्णव में।

ग्रहणपुरश्चरणप्रयोग

लि०—श्लोक सं० २०, पूर्ण। —सं० वि० २४७११

ग्रहणपुरश्चरणविधि

लि०— —कैट्. कैट्. ३।३७

ग्रहयन्त्र

लि०—भास्कर प्रोक्त, श्लोक सं० १०। —अ० व० ८११२ (ग)

ग्रहयामलतन्त्र

लि०—(१) हर-पार्वती संवादरूप। नवग्रह-पूजा पर यह तान्त्रिक ग्रन्थ १८ पटलों में पूर्ण है। इसके वर्ण्य विषय हैं—श्रीसवितृ विद्यादि तान्त्रिक तथा वैदिक सन्ध्याविधि, अभिषेकविधि, क्षेत्रादि षड्वर्गदृष्टिफल, राशियों के शील आदि, अष्टादश विध अशनादि, पथ्यापथ्य विवेक, प्राणायाम विवेक, दस महामुद्रादि विवेक, समाधिविधि, वास्तुग्रह, द्विजप्रकरण विवेक, ग्रहचरितादि निर्णय, जगद्दुर्लभ अक्षय कवच इत्यादि।

—इ० आ० २६३२

(२) इसमें वैदिकी सन्ध्या, अभिषेक आदि, जप-संख्या, ग्रहचरित आदि का वर्णन है। इसकी श्लोक संख्या लगभग ४०० है। यह प्रति ७ वें पटल से खण्डित है।

—रा० ला० ३९८

(३) —कैट्. कैट्. १।१७३, २।३४, ३।३७

उ०—प्राणतोषिणी में।

घटतन्त्र

लि०—वारम्भणि ऋषि कृत। —कैट्. कैट्. १।१७४

घण्टाकर्णकल्प

लि०—आपद् उद्धारण मन्त्र युक्त, अपूर्ण। पत्रे २०। —रा० पु० ५११८

घण्टाकर्णप्रकरण

लि०— —कैट्. कैट्. १।१७४

घेरण्डसंहिता

लि०—(१) —ए० बं० ६१२९

(२) —कैट्. कैट्. १।१७४

चक्रदीपिका

लि०—रामभद्र सार्वभौम विरचित। इसमें षट्चक्रों का विवरण दिया गया है।

—ए० बं० ६६२२

उ०—तन्त्रसार में।

चक्रनिरूपण (१)

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, उमा-महेश्वर संसादरूप। अध्याय १ से ६ तक। इसमें महाकुलाचार-क्रम से ५ चक्र, उनके आचार तथा विधि-विधान का वर्णन है। श्रीतन्त्र (रुद्रयामल) में ५ चक्र कहे गये हैं। ऐहिक सुखदायक और मोक्षप्रद उन चक्रों का विधि-विधान के साथ पूजन करना चाहिए। वे चक्र हैं—राजचक्र, महाचक्र, देवचक्र, वीरचक्र तथा पशुचक्र। सुरूपा और मनोहर चारों वर्णों की कुमारियों की पूजा करनी चाहिए। उनके अभाव में जिस किसी कुमारी की पूजा की जा सकती है। यवनी, योगिनी, रजकी, श्वपची और मल्लाह की लड़की—ये पाँच शक्तियाँ कही गयी हैं। यन्त्रराज की पूजा में तुलसीदल, बिल्वदल और धात्रीदल का उपयोग करने से अति शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।

—म० द० ५६११, ५६१२

चक्रनिरूपण (२)

नामान्तर—षट्चक्रक्रम तथा षट्चक्रप्रभेद।

लि०—पूर्णानन्द विरचित। इसमें तन्त्रों के अनुसार, षट्चक्रों के भेदक्रम से उद्भूत परमानन्द विस्तारपूर्वक वर्णित है। इस पर रामबल्लभ विरचित संजीविनी तथा रामनाथ सिद्धान्त विरचित दीपिका, ये दो टीकाएँ हैं।

—रा० ला० २२७, ४५२, २१३०

चक्रभेद

लि०—(१) (क) श्लोक सं० १०८, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ९५, रुद्रयामलान्तर्गत, पूर्ण।

—सं०. वि. (क) २४०८५, (ख) २६१५६

(२) —कैट्. कैट्. २।३५

(३) श्लोक सं० २५०। विशेष-विशेष मन्त्र और चक्र इस में प्रतिपादित हैं।

—ट्रि० कै० १०२६ (ग)

चक्रभेदनिर्णय

लि०—कुलार्णवतन्त्रान्तर्गत। —कैट्. कैट्. १।१७५

चक्रमेलनक्रमार्चन

लि०—श्लोकसंख्या ३००, पूर्ण। —सं० वि० २६१८३

चक्रराज

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

चक्रविचार

लि०—तन्त्रसारोक्त, श्लोक सं० १७५, पूर्ण।

—सं० वि० २५५७०

चक्रविद्या

लि०—शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें शक्ति देवी के प्रतिनिधिभूत चक्र की पूजा प्रतिपादित है। पूर्ण। —म० द० ५६१३

चक्रसंकेतचन्द्रिका

लि०—जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित। इसमें वामकेश्वरतन्त्र के भागरूप योगिनीतन्त्र के कतिपय पद्य हैं। उन पर काशीनाथ विरचित संक्षिप्त टीका है। यह टीका अमृतानन्दनाथ की टीका से मिलती-जुलती है। —ए० बं० ६१४४

चक्रोद्धारसार

लि०—जयदेव-पुत्र विनायक विरचित। श्लोक सं० २०००। आदि और अन्त में खण्डित, अपूर्ण।

—अ० ब० १२९८७

चण्डभास्करपताका

लि०—दामोदर शास्त्री विरचित। श्लोक सं० ३००। —अ० ब० ११५०४

चण्डभैरवतन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार चतुषष्टि (६४) भैरवागमों के अन्तर्गत। भैरवाष्टक में अन्यतम।

चण्डरोषणमहातन्त्र

लि०—कल्पवीराख्य नीलतन्त्रान्तर्गत, २५ पटलों में पूर्ण।

—ने० द० २ य भाग पृ० २४०, पंक्ति २०

चण्डिकाक्रम

लि०––श्लोक सं० २००। ––अ० ब० ११९८०

चण्डिकानवाक्षरीमन्त्रप्रकाशिका

लि०––विद्यारण्य विरचित। श्लोक सं० ३००। ––अ० ब० ६९३९ (क)

चण्डिकापूजा

लि०––(१) इसमें चण्डिका देवी की सर्वाङ्ग-पूजा और स्तोत्र वर्णित हैं। जो पुरुष पुष्पाञ्जलि, नमस्कार, जप और धर्म निवेदन द्वारा सदा चण्डिका देवी का ध्यान करता है, उसे ही सब सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। ––म० द० ५६१४

(२) चण्डिका की नित्य पूजा, चण्डिका-पूजाविधान तथा चण्डिका-पूजाविधि––ये उपर्युक्त ग्रन्थार्थ के ही प्रतिपादक हैं। ––कैट्. कैट्. १।१७६

चण्डिकार्चनक्रम

लि०––कृष्णनाथ विरचित। ––कैट्. कैट्. १।१७६

चण्डिकार्चनचन्द्रिका

लि०––वृन्दावनशुक्ल कृत। ––कैट्. कैट्. १।१७६

चण्डिकार्चनदीपिका

लि०––(१) जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथभट्ट विरचित। इसमें नवरात्रोत्सवके सम्बन्ध में प्रमाण और कर्तव्य का प्रतिपादन करते हुए नवरात्रोत्सव का विस्तार से वर्णन है। ––ए० बं० ६४०५

(२) पन्ने २०। ––रा० पु० ४७०२

चण्डिकाशतक

लि०––(१) नामान्तर––चण्डीशतक। बाणभट्ट विरचित। ––इ० आ० २६२५

(२) दे०, चण्डीशतक बाणभट्ट कृत। ––कैट्. कैट्. १।१७६, २।३६

चण्डिकास्तोत्र

लि०––(१) चतुर्भुजी टीका सहित। यह टीका पूरे १३ अध्यायों में है। इसकी श्लोक सं० लगभग १५०० है। ––डे० का० २२५ (१८८३-८४ ई०)

(२) मार्कण्डेयपुराण से गृहीत। दे०, देवीमाहात्म्य या चण्डीस्तोत्र।

—कैट्. कैट्. १।१७६

चण्डिकाहृदय

लि०—(१) श्लोक सं० २६, पूर्ण। —सं० वि० २५३१४

(२) (क) पूर्ण। (ख) अपूर्ण।

—म० द० (क) ६२७८, (ख) ३२३ (क)

चण्डीटीका

लि०—कामदेव कविवल्लभ विरचित। श्लोक सं० १०००। यह मार्कण्डेयपुराणान्तर्गत चण्डीस्तोत्र या दुर्गासप्तशती का व्याख्यान है। —रा० ला० ३५७

चण्डीनवार्णपटल

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। इसमें चण्डी के नवार्णमन्त्र सम्बन्धी विस्तृत विवरण है।

—ए० बं० ५८६९

चण्डीपद्धति

लि०—श्लोक सं० ८०। —अ० ब० ५६९६

चण्डीपाठ

लि०—श्लोक संख्या ३००। —अ० ब० ७७३

चण्डीपाठक्रम

लि०—(१) वाराहीतन्त्रान्तर्गत। इसमें क्रोडतन्त्रान्तर्गत शतावृत्ति चण्डीपाठ का फल, हरगौरीतन्त्रान्तर्गत काम्य पाठविधि तथा मरीचितन्त्रान्तर्गत चण्डीपाठक्रम भी संनिविष्ट हैं।

—सं० वि० २६५०७

(२) मरीचिकल्प से गृहीत। श्लोक सं० २००। —अ० ब० ३४४२

चण्डीपाठप्रयोगविधि

लि०—पन्ने २३।

—रा० पु० ५८८६

चण्डीपुराण

लि०—मार्कण्डेयमुनि विरचित। इसमें वर्णित विषय हैं—दक्ष को शाप, सती का देहत्याग, पीठों का, जहाँ सती के विभिन्न अङ्ग गिरे थे, माहात्म्य, मधुकैटभवध, दुन्दुभिवध,

घोरवध, नमुचि और चिक्षुर का वध, महिषासुरवध, सुन्दोपसुन्दवध, सनत्कुमारोपाख्यान तथा मुरवध। —रा० ला० ३७०

चण्डीपूजाविधान

लि०—(१) डमरुकाकल्प से गृहीत। श्लोक सं० १२००, अपूर्ण। —अ० ब० ३०४५

(२) इसमें दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की पूजा वर्णित है। —म० द० ५६१५

चण्डीपूजाविधि

लि०—(१) चण्डिकाकल्पोक्त। चण्डिका देवी के उपासकों के दैनिक कृत्यों के साथ देवी की पूजाप्रक्रिया इसमें प्रदर्शित है। —ए० बं० ६४१५

चण्डीप्रयोगविधि

लि०—(१) श्लोक संख्या ६००। —अ० ब० १७३१

(२) नागोजिभट्ट विरचित। —रा० पु० ५८१४

(३) नागोजिभट्ट विरचित सप्तशती-मन्त्रविभाग के साथ, कात्यायनीतन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० ४६२। —सं० वि० २६५६३

चण्डीरहस्य

लि०—अपूर्ण। —म० द० ३९७७ (ग)

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

चण्डीविधान

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ८००। (ख) श्लोक सं० ३००। श्रीनिवास कृत। —अ० ब० (क) ९०७, (ख) ५४३६

(२) इसमें चण्डी देवी की पूजा प्रतिपादित है तथा उसके अंगभूत होम, ब्राह्मण-भोजन आदि भी वर्णित हैं। —बी० कै० १२५२

(३) अपूर्ण। —म० द० २१९६ (क)

चण्डीविधानपद्धति

लि०—कमलाकरभट्ट कृत। पूर्ण। —डे० का० ३८६ (१८८२-८३ ई०)

चण्डीशतक

लि०—बाणभट्ट विरचित। दे०, चण्डिकाशतक।

चण्डीविवरण

लि०—तीर्थस्वामी विरचित। श्लोक सं० ८०। —अ० ब० १०२५८

चण्डीसपर्याकल्प

लि०—श्रीनिवासभट्ट विरचित। श्लोक सं० ११००। —अ० ब० ११४१८

चण्डीसपर्याक्रमकल्पवल्ली

लि०—(१) श्रीनिवास कृत। ५ स्तबकों में पूर्ण। प्रमाणनिरूपण, प्रातःस्नान आदि कर्म, नित्य पूजा-प्रयोग, विविध काम्य प्रयोग आदि विषय इसमें वर्णित हैं।

—ए० बं० ६४०४

(२) श्रीनिवासभट्ट विरचित। श्लोकसंख्या १५४६ और स्तवक सं० ५। इसमें नवाक्षर मन्त्र का निरूपण, देवीमाहात्म्य कथन, चण्डीपूजा में अभिषेक, तर्पण, अर्चन, आसन तथा विविध न्यास, पीठपूजा, चण्डीपूजाप्रयोग, मानसपूजाविधि, नैमित्तिकार्चन-विधि, दमनकपूजाविधि आदि विषय वर्णित हैं। —रा० ला० १८५५

(३) श्लोक सं० १२०० तथा स्तवक सं० ४। —अ० ब० ५५८६

(४) (क) श्रीनिवासाचार्य कृत। श्लोक सं० ५००। (ख) श्रीनिवासाचार्य कृत श्लोक सं० १४०, अपूर्ण। (ग) श्रीनिवासाचार्य कृत श्लोक सं० लगभग ५७०, अपूर्ण, लिपिकाल १६४८ शकाब्द। (घ) श्रीनिवासभट्ट कृत। यह ९ अध्यायों में पूर्ण है तथा इसका आकार वृहत् (३००० श्लोकों से भी ऊपर) प्रतीत होता है। फिर भी यह अपूर्ण कहा गया है। संभवतः यह पूर्वोक्त औरों (क), (ख) और (ग) से अतिरिक्त है।

—सं० वि० (क) २४८०५, (ख) २४८०६, (ग) २४८८३, (घ) २५६०९

चण्डीस्तोत्रक्रम

लि०—श्लोक सं० लगभग १८०। —डे० का० (१८८३-८४ई०)

चण्डीस्तोत्रप्रयोगविधि

लि०—नागोजिभट्ट कृत, श्लोक सं० लगभग ५६०।

—डे० का० २२७ (१८८३-८४ ई०)

चण्डीस्तोत्र (अञ्जलि) मूर्तिरहस्यटीका

लि०——श्रीजयसिंह मिश्र विरचित, श्लोक सं० ३४५।

——डे० का० २२८ (१८८३-८४ ई०)

चण्डीस्तोत्रव्याख्या

लि०——नागोजिभट्ट कृत। पत्रे ६१। ——रा० पु० ७५०६

चतुःशती (१)

लि०——(क) नारदीय। पार्वती-ईश्वर संवादरूप। इसमें ४०० श्लोकों द्वारा शक्ति के नित्या, महात्रिपुरसुन्दरी, कामेश्वरी, भगमालिनी, नित्यक्लिन्ना, भेरुण्डा इत्यादि १६ स्वरूपों का प्रतिपादन करते हुए उनके पूजनार्चन, बीजमन्त्र आदि का प्रतिपादन किया गया है। इसका दूसरा नाम नित्याषोडशिकार्णव भी है। छह पटलों में पूर्ण। (ख) इसमें अन्यान्य बहुत-से ग्रन्थों के साथ टीका भी है। अपूर्ण। (ग) एक से पाँच पटल तक, अपूर्ण। (घ) पूर्ण। ——म० द० (क) ५६१६, (ख) ५६१७, (ग) ५६१८, (घ) १५१७६

(२) पार्वती-ईश्वर संवादरूप चतुःशती ऋजुविमर्शिनी व्याख्यासहित, पूर्ण।

——म० द० ४४४३

उ०——आगमकल्पलता, योगिनीहृदयदीपिका तथा चिद्वल्ली में।

चतुःशतीटीका

लि०——(१) रत्नेश-शिष्य विद्यानन्द विरचित। ५ पटलों में पूर्ण। देवी त्रिपुर-सुन्दरी की पूजा का प्रतिपादक महान् तान्त्रिक ग्रन्थ बहुरूपाष्टक की अंशभूत चतुःशती पर यह व्याख्यान है। इसका नाम वामकेश्वर या अर्थरत्नावली है। ——क० का० २०

(२) (क) विद्यानन्दनाथ विरचित अर्थरत्नावली पाँच पटलों तक। (ख) विद्यानन्दनाथ विरचित अर्थरत्नावली पाँच पटलों तक। पूर्ण। (ग) विद्यानन्दनाथ विरचित अर्थरत्नावली अपूर्ण।

——म० द० (क) ५६१९, (ख) ५६२०, (ग) ५६२१,

(३) (क) शिवानन्द मुनि कृत ऋजुविमर्शिनी, पूर्ण।

(ख) शिवानन्द मुनि कृत ऋजुविमर्शिनी, पूर्ण।

——म० द० (क) ५६२२, (ख) ५६२३

चतुःषष्टिभैरवपूजा

लि०——पूर्ण। ——म० द० १४६६३

चतुःषष्टियोगिनीनाम

लि०—योगिनी के मन्त्र, यन्त्रादि सहित। श्लोक सं० ५१, पूर्ण।

—सं०. वि. २५६१०

चतुःषष्टियोगिनीपूजन

लि०—श्लोक सं० ६०। —अ० व० ८१७७

चतुःषष्टियोगिनीपूजा

लि०—पूर्ण। —म० द० १४६६२

चतुर्मतसारसंग्रह

लि०—अप्पय्यदीक्षित विरचित। श्लोक सं० ६००। एक-सी दो प्रतियाँ हैं।

—अ० व० ७१०९, ७०९९

चतुर्विंशतिगायत्री

लि०—श्लोक सं० १२०। —अ० व० ५३४१

चन्द्रज्ञान

लि०—चन्द्रहाससंहितान्तर्गत यह शिव-चन्द्र संवादरूप है। इसमें संसार की विविध वस्तुओं की वास्तविक प्रकृति के सम्बन्ध में विवेचन है। —ए० बं० ६०५७

चन्द्रज्ञानतन्त्र

उ०—खेमराज ने इसका उल्लेख किया है। दे०, Hall पेज १९७ तथा Oxford १०९ (क)

—कैट्. कैट्. १।१८०

चन्द्रज्ञानविद्या

उ०—सौन्दर्यलहरीटीका लक्ष्मीधरी, शिवसूत्रविमर्शिनी, सौभाग्यभास्कर, महार्थ-मञ्जरी-परिमल तथा वीरशैवागमचन्द्रिका में।

चन्द्रज्ञानागमसंग्रह

लि०—(१) (क) शिव-पार्वती संवादरूप यह १५ पटलों में पूर्ण है। उनमें प्रतिपादित विषय हैं—षडाम्नायों के लक्षण, पीठों के लक्षण, श्रीचक्र-लक्षण, चक्र के मध्य के देवताओं का प्रतिपादन, श्रीविद्या की उपासना की प्रशंसा, श्रीविद्यासन्ध्यानुष्ठान, श्री-

विद्यान्यास, श्रीविद्याजपकल्प, पूजा के स्थान तथा समय का निरूपण, चक्र की आराधना का फल, शक्तिपूजा का फल, रहस्य शाक्त आचार और दीक्षाविधि, मन्त्रार्थ प्रतिपादन आदि। (ख) पटल ३ से ७ तक तथा १२ से १५ तक। अपूर्ण।

—म० द० (क) ५६२४, (ख) ५६२५

(२) —कैट्. कैट्. ३।३९

चन्द्रज्ञानागमसंग्रहरहस्य

लि०—अपूर्ण। —म० द० ६२२ (ग)

चन्द्रपीठ

उ०—मन्त्रमहार्णव, पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

चन्द्रयामल

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

चन्द्रलेखा

श्रीकण्ठी के अनुसार चतुःषष्टि (६४) भैरवागमों के अन्तर्गत वागीशाष्टक में अन्यतम।

चन्द्रशेखरपद्धति

लि०—वाराहीतन्त्रान्तर्गत, पूर्ण। —बं० प० ११८३

चन्द्रहाससंहिता

लि०—शिव-चन्द्र संवादरूप। इसमें गूढ़ शारीर ज्ञान वर्णित है। केवल चन्द्रज्ञान मात्र, श्लोक०सं० २२५, पूर्ण। —ए० बं० ६०५७

चन्द्रा

श्रीकण्ठी के अनुसार चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत। मङ्गलाष्टक में अन्यतम।

चन्द्रांशु

श्रीकण्ठी के मतानुसार (१८) अष्टादश रुद्रागमों के अन्तर्गत।

चन्द्रिका

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

चन्द्रोन्मीलन

लि०—यह वहुत-से ग्रन्थों से संगृहीत है। इसमें रुद्रयामल, ब्रह्मयामल, विष्णुयामल, उमायामल और वृद्धयामल—इन पाँच यामलों के उद्धरण विशेष रूप से लिये गये हैं। इसमें वहुत विषय वर्णित हैं। यह ४९ पटलों में पूर्ण विशाल ग्रन्थ है।

—बी० कै० १२६३

चन्द्रोन्मीलनतन्त्र

लि०—श्रीमधुसूदन कृत। —कैट्. कैट्. १।१८२

चमत्कारचिन्तामणि

लि०— —कैट्. कैट्. १।१८३

चलनसूत्र

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

चामुण्डातन्त्र

उ०—कृष्णानन्द कृत तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, सौन्दर्यलहरीटीका लक्ष्मीधरी, चैतन्यगिरि कृत विष्णुपूजापद्धति तथा आगमतत्त्व-विलास में।

चामुण्डापटल

लि०—वाराहीतन्त्र से गृहीत, श्लोक सं० ६३। —अ० ब० ११७४७ (क)

चामुण्डापद्धति

लि०—ज्ञानार्णवतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ६००। —अ० ब० ९७६० (क)

चामुण्डाप्रयोग

लि०—(क) श्लोक सं० ३०, अपूर्ण। (ख) मातृकाभेदतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ४४, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २५७२०, (ख) २६४७८

चामुण्डायन्त्रपूजनविधि

लि०—श्लोक सं० ३५, अपूर्ण। —र० मं० ३४९६

चालिकातन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत।

चिच्चन्द्रिका

उ०——आगमकल्पलता तथा तन्त्रकौमुदी में।

चिच्छक्तिसंस्तुति

योगिनाथ विरचित।

उ०——स्पन्दप्रदीपिका में।

चिञ्चिणीमतसारसमुच्चय

लि०——यह १२ पटलों में पूर्ण मौलिक तन्त्र है। इसके १ म श्लोक से यह सूचित होता है कि चिञ्चिणीमत सिद्धनाथ ने, जो सकल योगियों में अन्यतम तथा नाथ उपाधि से विभूषित थे, स्थापित किया था। इसका सम्बन्ध वामाचार तथा पश्चिम क्रम से है। इसके प्रारम्भ श्लोक में उस समय प्रचलित धार्मिक कृत्यधाराओं की गणना की गयी है। यह ग्रन्थ तान्त्रिक क्रमविकास के आरंभिक काल से सम्बद्ध है। ——ने० द० १।७६९

चित्कलामहामन्त्र

लि०——श्लोक सं० २०। ——अ० ब० ५६८७

चित्रिकातन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत।

चिदमृततन्त्र

(चण्डीविधान मात्र)

लि०—— ——कैट्. कैट्. ३।४०

चिदम्बर

सर्वोल्लास के अनुसार चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत।

चिदम्बरकल्प

लि०——श्लोक सं० १३००। ——अ० ब० ९८१२

चिदम्बरतन्त्र

लि०——यह शैव तन्त्र है। इसकी श्लोक सं० १०००० है।

——अ० ब० १०६५९

चिदम्बरनटतन्त्र

लि०—चिदम्बरनटतन्त्रे दक्षिणामूर्तिसहस्रनाम । —कैट्. कैट्. २।३८
उ०—सौभाग्यकल्पद्रुम में ।

चिदम्बरनटनमन्त्रकल्प

लि०—अपूर्ण ।
—म० द० ७८३३

चिदम्बरपटल

लि०—श्लोक सं० १५००, अपूर्ण । यह शैव तन्त्र है । —अ० ब० १०७१३

चिदम्बररहस्य

लि०—(१) शैवतन्त्र । श्लोक सं० ७२०० । —अ० ब० ३४४४

(२) (क) यह ग्रन्थ ६४ पटलों में पूर्ण है । वर्तमान प्रस्तुत प्रति में १० वाँ और १२ वाँ पटल नहीं है । अपूर्ण, श्लोक, सं० लगभग १६१ । (ख), पूर्ण । पर इसका आकार (क) प्रति की अपेक्षा अत्यन्त लघु प्रतीत होता है । पटल संख्या भी इसमें नहीं दी गयी है । —सं० वि० (क) २४९४७, (ख) २५४६३

(३) कैट्. कैट्. १।१८८, ३।४०

(४) पूर्ण ।
—म० द० ७८३४

चिदानन्दकेलिविलास

लि०—यह गौड़पाद विरचित देवीमाहात्म्य-टीका है ।

—कैट्. कैट्. १।१८८

चिदानन्ददर्पण

लि०—सच्चिदानन्द अवधूत विरचित, पूर्ण । —म० द० २२२३

चिदानन्दमन्दाकिनी

लि०—कृष्णदेव गण विरचित, यह ग्रन्थ तान्त्रिक दर्शन का प्रतिपादक है । इसमें प्रतिपादित विषय हैं—महामोक्ष आदि का निरूपण, जपानुष्ठानादि का निरूपण, भावनिरूपण, शारीर योगसाधनादि का निरूपण आदि ।

—ए० बं० ६२२९

चिद्गगनचन्द्रिका

लि०––कालिदास विरचित, पूर्ण । ––म० द० ३०९७

उ०––योगिनीहृदयदीपिका, सौभाग्यभास्कर तथा महार्थमञ्जरी-परिमल में ।

चिद्वल्लीव्याख्या

लि०––नटनानन्दकृत, श्लोक सं० ३७५, पूर्ण । लिपिकाल संवत् १६७३ ई० । यह कामकलाविलास की व्याख्या है । ––सं० वि० २५४६४

चिद्विलास

लि०––पुण्यानन्द योगी विरचित । इसकी श्लोक संख्या ३७ है ।

––अ० ब० ९९८२

उ०––चिद्वल्ली में ।

चिद्विलासस्तव

लि०––अपूर्ण । ––सं० वि० २६००५

चिद्विलासस्तुति

लि०––अमृतानन्दनाथ कृत ––न्यू कैट्. कैट्. २६३

चिन्तामणिकल्प

लि०––(१) दामोदर पण्डित विरचित, श्लोक सं० ५००, अपूर्ण । यन्त्रसहित ।

––अ० ब० १०५०९

(२) श्लोक सं० लगभग ५८७, अपूर्ण । ––सं० वि० २५३८६

चिन्तामणितन्त्र

लि०––(१) हर-पार्वती संवादरूप । इसमें योनिबीज, रहस्य योनिमुद्रा, कुण्डलिनी ध्यानादि-कथन, योनिकवच, आधार चक्र के क्रम से कवच-पाठ का फल, योनिकवच धारण का फल, षट्चक्रों के क्रम से मन्त्रार्थकथन, षड्दल का वर्णन, मणिपूर का वर्णन, हृदय-कमल का वर्णन, आज्ञापुर का वर्णन, मन्त्र के चैतन्य होने का प्रकार, मुद्रामन्त्रार्थ-निरूपण, चैतन्य रहस्य इत्यादि विषय वर्णित हैं । ––नो० सं० १।११५

(२) श्लोक सं० २६४, पटल सं० ७। षट् चक्रों में स्थित योनिरूप के चिन्तन की विधि, त्रैलोक्यमंगल-कवच, योनिमुद्रानिरूपण, मन्त्रार्थनिरूपण, मुद्रा, मन्त्रार्थ, चैतन्य इत्यादि विषय इसमें वर्णित हैं। —रा० ला० २६६

(३) श्लोक सं० २५०, पटल ८। —अ० ब० ११६८७

(४) १० म पटल तक, पूर्ण। —बं० प० १४१३

(५) (क) श्लोक सं० २५० तथा पटल १ से ७ तक, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० २२४, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० १८२, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० ७२। इसमें मन्त्रार्थ, मन्त्रचैतन्य और योनिमुद्राविवरण हैं। (ङ) श्लोक सं० लगभग ११८ अपूर्ण, पटल १ से ३ तक।

—सं० वि० (क) २५७४२, (ख) २४७६४, (ग) २५४६५, (घ) २५७३०, (ङ) २६४८०

उ०—कालिकासपर्याविधि (काशीनाथ कृत) में।

चिन्तामणिमन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० १०। —अ० ब० ५७९७६

(२) पूर्ण, तीन प्रतियाँ। —म० द० ६२९९, ६३००, ६३०१

उ०—श्रीहर्ष के नैषधीयचरित के १ म सर्ग के १४५ वें श्लोक में।

चिन्त्यागम

दस शिवागमों के अन्तर्गत।

चिल्लाचक्रेश्वरीमत

उ०—जन्ममरणविचार तथा जयरथ कृत तन्त्रालोक-टीका में।

चीनतन्त्र

उ०—कौलिकार्चनदीपिका में।

चीनाचार

लि०—

—ने० द० २।२०७, पंक्ति

चीनाचारक्रम

लि०—शिव प्रोक्त। —ज० का० १०२१

चीनाचारतन्त्र

लि०—श्लोक सं० ४००, पूर्ण —प० वि० २३८५८
उ०—प्राणतोषिणी में।

चीनाचारसार

दे०, महाचीनक्रमाचार।

चेतसिंहकल्पद्रुम

लि०—भवानीशंकर कृत। —कैट्. कैट्. १।१९०

चैतन्यकल्प

लि०—(१) ब्रह्मयामलान्तर्गत, पार्वती-ईश्वर संवादरूप। श्लोक सं० १५७। छह पटलों में पूर्ण। गौराङ्गदेव का जन्म, गौराङ्गदेव का माहात्म्य, गौराङ्गदेव-मन्त्रोद्धार, यमुनास्तुति तथा गौराङ्ग-पूजा आदि विषय इसमें वर्णित हैं।
—रा० ला० ५९४

(२)—(क) रुद्रयामल का ५वाँ अध्याय मात्र, अपूर्ण।
(ख) रुद्रयामल का ५वाँ अध्याय मात्र, पूर्ण।
(ग) रुद्रयामल का ५वाँ अध्याय मात्र, पूर्ण।
—बं० प० (क) २९०, (ख) ५०२, (ग) ५७५

(३) ब्रह्मयामल से गृहीत —कैट्. कैट्. १।१९०

चैतन्यगिरिपद्धति

लि०—चैतन्यगिरि विरचित, श्लोक सं० ३००। —अ० ब० ९९४०

छत्रयोगोद्भूतदोषशान्तिविधि

लि०—दिल्लीश्वर शाह बहादुर की आज्ञा से वाचस्पति मिश्र ने इसकी रचना की। इसमें भृगुसिद्धान्ती में सूचित मार्ग के अनुसार छत्रयोगविधि वर्णित है। इसकी रचना शकाब्द १७७५ में हुई। —ने० द० १।११११

छलार्णसूत्र (सवृत्ति)

लि०—मूलकार भास्करराय तथा वृत्तिकार बुद्धिराज। श्लोक सं० २००।
—अ० ब० ६०१३

छागतुण्डतन्त्र

यह योगरत्नावली का आधार ग्रन्थ है। —ए० बं० ६६०२

छायापुरुषलक्षण

लि०—(क) शिवागमतन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० १८। (ख) श्लोक सं० लगभग २५, पूर्ण। फलश्रुतिसहित। —सं० वि० (क) २४१०५, (ख) २६४८१

छायापुरुषविधि

लि०— —कैट्. कैट्. १।१९३

छिन्नमस्ताकल्प

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। पटल १ से १८ तक। श्लोक सं० ५००।
—अ० ब० १६९२

(२) पूर्ण। —म० द० ७८३६

छिन्नमस्तापञ्चक

लि०—श्लोक सं० २२, पूर्ण। —सं० वि० २४४३४

छिन्नमस्तापञ्चाङ्ग (१)

लि०—फेत्कारीतन्त्रान्तर्गत, उमा-महेश्वर संवादरूप। इसमें—१. छिन्नमस्तापटल, २. छिन्नमस्ता-पूजापद्धति, ३. छिन्नमस्ता-कवच, ४. छिन्नमस्ता-सहस्रनाम तथा ५. छिन्न-मस्तास्तोत्र ये पाँच विषय वर्णित है। —ए० बं० ६३८७-८८

छिन्नमस्तापञ्चाङ्ग (२)

लि०—भैरवतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० लगभग ४००, पूर्ण।
—सं० वि० २४८८२

छिन्नमस्तापटल

लि०—इसमें छिन्नमस्ता देवी की पूजा आदि वर्णित है। —बी० कै० १२५५

छिन्नमस्तापद्धति

लि०—इसमें छिन्नमस्ता देवी (दश महाविद्याओं में अन्यतम) के मन्त्रोद्धार, पूजन, बलिदान आदि विषय प्रतिपादित हैं। —बी० कै० १२५४

छिन्नमस्तापारिजात

लि०—रामचन्द्र कृत। —कैट्. कैट्. १।१९३

छिन्नमस्तापूजाविधान

लि०—श्लोक सं० १४५। —सं० वि० २५८१५

छिन्नमस्तारहस्य

लि०—व्रजराज कृत। —कैट्. कैट्. १।१९३

छिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनाम

लि०—गोरक्षसंहितान्तर्गत। इसे शिवजी ने नारदजी से कहा था। इस स्तोत्र का नवमी या षष्ठी को जो पाठ करता है वह कुबेर की तरह धनसम्पन्न होता है, यों इस स्तोत्र का महत्त्व वर्णित है। —बी० कै० १२६६

छिन्नापारिजात

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

छिन्नारहस्य

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

जगच्चिन्तामणिनामक त्रिपुरसुन्दरी-कवच

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० ७०, पूर्ण। —र० मं० ९९१

जगत्क्षोभणमालामन्त्र

लि०—श्लोक सं० ७०, दो प्रतियाँ। —अ० ब० ५६१६, १७

जगत्क्षोभिणीमाला

लि०— —कैट्. कैट्. १।१९४

जगद्धात्रीदुर्गायन्त्र

लि०—इसमें एक यन्त्र दिया हुआ है, जो जगद्धात्री दुर्गायन्त्र कहलाता है। इसे किस प्रकार खींचना (बनाना) चाहिए, इस विषय का निर्देश करने हेतु थोड़े श्लोक भी इसमें दिये गये हैं। इस सम्बन्ध के कृष्णानन्द के तन्त्रसार में उक्त श्लोकों से ये मिलते-जुलते हैं। —ए० बं० ६५८७

जगद्धात्रीपूजापद्धति

लि०—(१) रचयिता—राजकृष्णशर्मा । अपूर्ण । —वं० प० १६५७

(२) श्लोक सं० २११, अपूर्ण । (ख) श्लोक सं० २०६, अपूर्ण ।

—सं० वि० (क) २४८७७, (ख) २६४७१

जगद्धात्रीपूजाविधि

लि०—निगमकल्पसारसारस्वतग्रन्थान्तर्गत दुर्गाकल्प में शिवभाषित, श्लोक सं० ४०। इसमें जगद्धात्री की पूजाविधि तथा पूजन का फल वर्णित है।—रा० ला० ५५८

जगद्धात्रीपूजाव्यवस्था

लि०—(१) श्लोक सं० ३५, पूर्ण । —सं० वि० २४७३१

(२) —कैट्. कैट्. ३।४२

जगन्मङ्गलकवच

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, (क) श्लोक सं० १६, अपूर्ण । (ख) श्लोक सं० ३६, पूर्ण । —अ० ब० (क) और (ख) ५१०१

(२) नारदपञ्चरात्रान्तर्गत, पूर्ण । —वं० प० ४३४ (ख)

जनमारशान्तिप्रयोग

लि०—(१) विधानमालान्तर्गत गर्गकारिका के अनुसार श्लोक सं० ३८। इसमें महामारी का भय निवारण करने के लिए गर्गप्रोक्त विधान से शान्तिप्रयोग प्रतिपादित है।

—रा० ला० ४०८८

(२) यह गर्ग प्रोक्त है। —कैट्. कैट्. १।१९७

जन्ममरणविचार

भट्ट रामदेव विरचित। इनके गुरु थे योगराज अथवा योगेश्वराचार्य जो अभिनवगुप्त के शिष्य थे।

जपक्रम

लि०—(क) श्लोक सं० ३२। (ख) श्लोक सं० लगभग २२, पूर्ण । (ग) श्लोक सं० लगभग ८०। (घ) श्लोक सं० लगभग २२, पूर्ण ।

—सं. वि. (क) २४५४७, (ख) २४७२०, (ग) २४७२८, (घ) २६१६०

[इन पुस्तकों में (ख) और (घ) एक वर्ग की तथा (क) और (ग) भिन्न वर्ग की प्रतीत होती हैं।]

जपपद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० ९६०।

—डे० का० २२९ (१८८३-८४ ई०)

(२) —कैट्. कैट्. १।१९८

जपप्रयोग

लि०—(१) (क) पूर्ण। (ख) अपूर्ण।

—बं० प० (क) १३१०, (ख) १३०८

(२) (क) श्लोक सं० ६१। (ख) यामलोक्त। श्लोक सं० ८८, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० लगभग ३५, अपूर्ण, तथा (घ) श्लोक सं० १६, पूर्ण (?)।

—सं. वि. (क) २४४३६, (ख) २४४३९, (ग) २४४४६, (घ) २४७२७

जपरहस्य

लि०—(१) शिव-पार्वती संवादरूप। श्लोक सं० ४०। जिसके बिना कोटि-कोटि-कल्पों तक भी जप (मन्त्र) सिद्धि नहीं हो सकती, उस जपक्रम का इसमें शिवजी द्वारा पार्वतीजी के प्रति वर्णन है। —रा० ला० ३८१

(२) —कैट्. कैट्. ३।४३

जपरहस्यविधि

लि०—श्लोक सं० २००। —अ० ब० १०१८९

जपलक्षण

लि०—तीन प्रतियाँ जिनमें (क) संज्ञक दो पूर्ण और (ख) संज्ञक एक अपूर्ण है।

—म० द० (क) ५४४३–४४, (ख) ५४४५

जपविधान

लि०—श्लोक सं० ४००। —अ० ब० ५५६३

जपविधि

लि०—(१) (क) श्लोक सं० १२, पूर्ण। (ख) पूर्ण, श्लोक सं० १००।

—सं. वि. (क) २६०९५, (ख) २६१३३

(२) शिवदीक्षित कृत। —कैट्. कैट्. १।१९८

जपार्चनपुरश्चरणविधि

लि०—रुद्रयामल-वटुककल्पान्तर्गत। श्लोक सं० ६३२, पूर्ण।

—सं० वि० २५८४८

जयदुर्गापूजापद्धति

लि०—(क) श्लोक सं० १४४, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १५५, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४७५३, (ख) २६१०१

जयदुर्गापूजाविधि

लि०—श्लोक सं० १०५, पूर्ण।

—सं० वि० २५७३५

जयद्रथयामल

लि०—(१) पार्वती-महेश्वर संवादरूप। ४ षट्कों में विभक्त। प्रत्येक षट्क में ६००० श्लोक हैं। इसकी कुल श्लोक संख्या २४००० है। अन्तिम (उत्तरषट्क) में वगला-मुखी की पूजा प्रतिपादित है।

(२) यह चिरकाल तक संदिग्ध था कि काली-पूजा भारत में ऊँची श्रेणियों में क्रमागत है या नहीं। यह ग्रन्थ कहता है कि परमेश्वरी की पूजा कुम्हार या तेली के घर में होनी चाहिये। हिन्दू समाज में दोनों जातियाँ निम्नकोटि की मानी गयी हैं। कहा जाता है कि यह पूर्ण ग्रन्थ २४००० श्लोकात्मक है। यह चार भागों में विभक्त है। प्रत्येक भाग में ६०००—६००० श्लोक हैं। वे प्रत्येक षट्क कहे जाते हैं। इसके पहले भाग का नाम काल-संकर्षिणी है, २ य का विद्याविद्येश्वरी चक्र, ३ य का नाम यक्षिणी चक्र आदि है।

—ने० द० १।२५८

(३) दुर्योधन की वहिन का पति सिन्धुदेश का राजा जयद्रथ भूतल के सकल भोगों को अनित्य समझ कर, विशाल समृद्ध राज्य का त्यागकर, हिमालय स्थित वदरिकाश्रम चला गया। जगन्माता पार्वती को उसने प्रसन्न किया। पार्वतीजीने उसका शिव जी से परिचय करा दिया। इन तीनों का संवाद रूप यह ग्रन्थ है। जयद्रथ ने मुक्ति के विषय में प्रथम प्रश्न पूछा। उसका भगवान् शिवजी ने सांख्य मत के अनुसार उत्तर दिया और कहा मुक्तिके लिए काल-संकर्षिणी अत्यन्त सरल उपाय है। अमुक-अमुक व्यक्ति इसका अवलम्बन

कर सफलमनोरथ हुए। उन व्यक्तियों के नाम भी इसमें वर्णित हैं। शेष विषय ने० द० १।२५८ के समान ही कहे गये हैं।

—ने० द० २।३५८ (क)

—कैट्. कैट्. १।२००, २।४३

(४) ४ षट्कों में।

उ०—मन्त्ररत्नावली में।

जयाक्षरसंहिता या जयाख्यसंहिता ज्ञानलक्षणी

लि०—(१) एकायनाचार्य नारायण गर्भ-शिष्य साधक चन्द्रदत्त विरचित। यह तन्त्र ग्रन्थ २७ पटलों में है। इसमें स्नानविधि, मानसयाग, मन्त्रसन्तर्पण, चार आश्रमों के कर्म, प्रेतशास्त्रविधि, अन्त्येष्टिविधि, प्रायश्चित्तविधि आदि विषय वर्णित हैं।

—ने० द० १।४९, १६३३ (क) तथा (ख)

—कैट्. कैट्. ३।४३

(२) साधक चन्द्रदत्त कृत।

जया (जयाख्यसंहिता)

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ४८००, पूर्ण। दो प्रतियाँ। (ख) श्लोक सं० २४००, पटल सं० २१, अपूर्ण।

—अ० ब० (क) ७४०८ तथा १३२२०, (ख) ११२९४

(२) आगम ग्रन्थ, नारदपञ्चरात्र से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।२०२, २।४३

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

जयोत्तरसंहिता

उ०—Katalog der Sanskrit-Handschriften der univesitats–Bibliothek in Leipzig von Theodor Aufrecht Leipzig 1901. 80. में इसका उल्लेख है। —कैट्. कैट्. ३।४३

जातवेदःकल्प

लि०—श्लोक सं० ८१, पूर्ण। —सं० वि० २५४४३

जातवेदोविधान

लि०—श्लोक सं० ५८, अपूर्ण। —सं० वि० २४३६५

जानकीत्रैलोक्यमोहन

लि०—रुद्रयामल से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।२०५

जानकीविरहसंभवमन्त्रराजस्तोत्र

लि०—श्रीमद्दासदासजन विरचित। इसमें २० श्लोक हैं जो श्रीजानकीजी के प्रति कहे गये हैं। इसमें ग्रन्थकार की स्वरचित टीका भी है। —ए० वं० ६७८४

जानकीसहस्रनामस्तोत्र

लि०—सिद्धेश्वरतन्त्र से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।२०६

जाबालिसूत्र

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

जालन्धरपीठदीपिका

लि०—प्रह्लादानन्द कृत, श्लोक सं० ६००, अपूर्ण। —अ० ब० ११५१३

जालन्धरपीठमाहात्म्य

लि०—श्रीनिवास-शिष्य कृत। —कैट्. कैट्. १।२०६

जीर्णोद्धारदशकव्याख्यासहित

लि०—(१) श्लोक सं० ११००, दो प्रतियाँ (क) और (ख) पूर्ण, शैव तन्त्र। —अ० ब० ६८३० (क), ६८३३

(२) वैष्णव तन्त्र, पूर्ण। —म० द० ५२४१

जीवचक्रनिरूपण

लि०—शाक्त ग्रन्थ, अपूर्ण। यह जीवचक्र की पूजा आदि विषय पर है। —म० द० ५६२६

जीवस्थितिकथन

लि०—श्लोक सं० ५०, पूर्ण। कुलार्णवरहस्यान्तर्गत। —सं० वि० २५७७७

ज्ञानकारिका

लि०—(१) महामच्छि(च्छी?)न्द्रनाथ अवतारित यह तन्त्रग्रन्थ ३ पटलों में पूर्ण है। —ने० द० १।१३४४ (ख)

(२) श्लोक सं० २२५। यह शैव तन्त्र है। —अ० ब० १३२८९

ज्ञानगर्भ

उ०—स्पन्ददीपिका, प्रत्यभिज्ञाहृदय तथा शिवसूत्रविमर्शिनी में।

ज्ञानगर्भस्तोत्र

उ०—स्पन्दविवृत्ति में।

ज्ञानचन्द्रोदय

लि०—गोवर्द्धन तान्त्रिक विरचित। श्लोक सं० १६००, अपूर्ण। यह शाक्त तन्त्र है।
—अ० ब० १९७४

ज्ञानतन्त्र

लि०—(१) महादेव-नारद संवादरूप। इसमें ९ परिच्छेद हैं। प्रतिपाद्य विषय—१म में गुरुपरीक्षा तथा अकालदीक्षा, २य में चराचर विषयों के ज्ञान का उपाय, ३ य में किसकी मुक्ति होती है और किसको नरक, यह प्रश्न और इसका उत्तर, ४ र्थ में पूजा, होम, वलिदान आदि का प्रतिपादन, ५ म में मन्त्रों की उत्पत्ति का निरूपण, ६ ठे में मन्त्र-शोधन की विधि, ७ म में मन्त्रशापोद्धार, पूजा प्रकार आदि, ८म में किस मन्त्र के प्रभाव से नागराज शेष पृथिवी धारण करते हैं? इस प्रश्न का उत्तर एवं ९ म में मन्त्रों का गन्धर्व-शापमोचन।
—रा० ला० ४४४

(२) श्लोक सं० ८३। ९ पटलों में पूर्ण। नो० सं० १।१२४ में यह शिव-नारद संवादरूप तथा १० परिच्छेदों में पूर्ण कहा गया है।

—ए० बं० ६०१८

(३) यह पार्वती-ईश्वर संवादरूप है। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—तत्त्वज्ञान का स्वरूप और उसकी प्राप्ति के उपाय, एकाक्षर आदि मन्त्रों का कथन, मन्त्रोद्धार साधन तथा महाविद्याओं के स्वरूप आदि, उनके अङ्गसंस्थानों का कथन, बाल मन्त्र का निरूपण, भैरव के अङ्गों का निर्णय, भुवनेश्वरी विद्या का निरूपण, उनके मन्त्रों के अङ्गों का निरूपण, त्रिवर्गसाधनी विद्या का निर्देश, त्रिपुराविद्या का प्रतिपादन, अन्नपूर्णा, माहात्रिपुरसुन्दरी तथा काली के मन्त्राङ्गों का निर्णय, गुरु-निरूपण, मन्त्रसिद्धि के उपाय आदि।

—नो० सं० १।१२३, १२४

(४) ७म पटल (परिच्छेद ?) तक, अपूर्ण।

—बं० प० १३९६

(५) (क) श्लोक सं० २०८, अपूर्ण, (ख) पटल (परिच्छेद ?) १ म से ७ म तक श्लोक सं० २१६, पूर्ण (?)। —सं. वि. (क) २४५५०, (ख) २५९९५

उ०—कौलिकार्चनदीपिका तथा कालिकासपर्याविधि (काशीनाथ कृत) में।

ज्ञानतिलक (१)

लि०—(१) कालज्ञानतिलक भी इसका नामान्तर मिलता है। शिव-कार्तिकेय संवादरूप यह ८ पटलों में पूर्ण है एवं परम ज्ञान का प्रतिपादन करता है। इसकी श्लोक सं० १९९ है। —ए० बं० ५९७५

(२) श्लोक सं० १९९। —अ० ब० ३५२५

उ०—शतरत्न में।

ज्ञानतिलक (२)

लि०—विष्णु-नारद संवादरूप, यह छोटा-सा तन्त्र ग्रन्थ गुरु-प्रशंसा का प्रतिपादक है। —ने० द० १।१३४०

ज्ञानतिलक (३)

लि०—यह सरस्वतीसूत्र की टीका है। —कैट्. कैट्. ३।४५

ज्ञानदीपक

लि०—यह विद्यानन्दनाथ (देव) विरचित ज्ञानदीप-विमर्शिनी का एक अंश है। इसमें त्रिपुरसुन्दरी की पूजाविधि वर्णित है।

यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है। —ने० द० २।३६० (ग)

उ०—सर्वोल्लासतन्त्र में।

ज्ञानदीपविमर्शिनी

लि०—परमहंस विद्यानन्दनाथ देव विरचित। विद्यानन्दनाथ छहों आम्नायों के महान् विद्वान् थे। उन्होंने वामकेश्वराम्नाय उड्डीशरूप महासागर से प्रपन्न जनता के दुःखान्धकार के विनाश में भानुरूप यह ज्ञानदीपविमर्शिनी रची। यह २५ पटलों में पूर्ण है। इसमें गुरुध्यान, मन्त्रध्यान, स्नानादि, द्वारपालार्चन, चक्रोद्धार, अर्कसाधन, याग, मन्त्रोद्धार, न्यास, अन्तर्न्यास, पीठार्चन आदि, सामान्यार्घपात्रविधि, ध्यानपद्धति, चक्रार्चन,

पूजा, जप, होम, स्तोत्र, उशनारोपण, काम्यसाधन, दीक्षा, पारम्पर्यचर्या आदि विषय वर्णित हैं। इस ग्रन्थ का मुख्य आधार वामकेश्वरतन्त्र है।

—ने० द० २।१६ पे०

उ०—योगिनीहृदयदीपिका में।

ज्ञानप्रदीप

लि०—(१) भातृकाभेदतन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० ४५, पूर्ण।

—सं० वि० २५७८४

—कैट्. कैट्. १।२०९

(२) छन्दोबद्ध, हरि-हर संवादरूप।

ज्ञानभैरवतन्त्र

लि०—(क) श्लोक सं० ४०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० २८, अपूर्ण। ६ष्ठ पटल मात्र।

—सं० वि० (क) २४७६३, (ख) २५७३९

ज्ञानभैरवीतन्त्र

लि०—देवी-ईश्वर संवाद रूप यह तन्त्र छह या अधिक पटलों में पूर्ण है।

—नो० सं० १।१२५

ज्ञानमार्जनीतन्त्र

लि०—उमा-महेश्वर संवादरूप। इसमें ब्रह्मज्ञान का उपाय, अठारह विद्याओं का वर्णन, शाङ्करी और विद्या की गुप्तता का प्रतिपादन, अध्यात्म विद्या का स्वरूप निर्देश, त्रिदण्डी आदि का सिद्धान्त कथन, शारीर तत्त्व-वर्णन, शरीर में चन्द्र, सूर्य आदि का क्रमशः स्थान निरूपण, आहार, निद्रा और सुषुप्ति के कारणों का निरूपण, शिव और शक्ति के स्वरूप का निर्देश, षट्चक्र-निरूपण, त्रिगुण, त्रिदेव आदि का तत्त्व कथन आदि विषय वर्णित हैं।

—नो० सं० १।१२६

ज्ञानमाला

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

ज्ञानरत्नावली

लि०—ज्ञानेश्वर विरचित। —कैट्. कैट्. ३।४५

ज्ञानसंकुली या ज्ञानसंकुलीतन्त्र

लि०—(१) शाम्भवीतन्त्रान्तर्गत । उमा-महेश्वर संवादरूप ।

—ए० बं० ६०३५

(२) यह उमा-महेश्वर संवदरूप है। इसमें शिवजी ने उमादेवी के प्रति वेदान्तसार-सर्वस्व का उपदेश दिया है। इसमें प्रणव की प्रशंसा, स्थूल देहादि के लक्षण आदि विषय प्रतिपादित हैं। —रा० ला० ५६४

(३) पत्र सं० १०, पूर्ण। —वं० प० ५४८

ज्ञानसंबोध

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

ज्ञानसार

लि०—(१) द्राविड़ टीका सहित। —म० द० ३१०९ (ज)

(२) —कैट्. कैट्. १।२१०

उ०—प्राणतोषिणी तथा कौलिकार्चनदीपिका में।

ज्ञानसारनिधि

लि०—

—प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

ज्ञानसारस्वत

लि०—

—प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

ज्ञानस्वरूप

लि०—यह प्रपञ्चसार का विवरण है। —कैट्. कैट्. १।२१०

ज्ञानानन्दतरङ्गिणी

लि०—शिरोमणि विरचित। इसकी श्लोक सं० २००० और परिच्छेद ८ हैं। उनमें ये विषय वर्णित हैं—१. गुरुशिष्यलक्षण, अकडमचक्र आदि, आसनों के भेद, मालासंस्कार आदि, २. पुरश्चरणविधि, योनिमुद्राविधान आदि, ३. महाविद्याओं का विवेचन, ४. भगवती-तत्त्व निर्णय तथा दुर्गोत्सव में प्रमाण, ५. सर्वतोभद्र, मण्डल, ६. दीक्षाविधि, ७. सामान्य पूजाविधि, गायत्री आदि की पूजाविधि, मन्त्रोद्धार आदि।

—रा० ला० २८६

ज्ञानामृतरसायन

लि०—(१) यह शाक्त तन्त्र है। —म० द० ५६२७

(२) गोरक्षनाथ कृत। इस पर सदानन्द कृत टीका है, पर ग्रन्थ का नाम 'ज्ञानामृत' मात्र है। —कैट्. कैट्. १।२११

उ०—विज्ञानभैरव की शिव उपाध्याय कृत टीका में।

ज्ञानामृतसारसंहिता

लि०—यह नारदपञ्चरात्र का एक भाग है। इसमें कृष्णस्तवराज, कृष्णस्तोत्र, कृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र, गोपालस्तोत्र, त्रैलोक्यमङ्गलकवच एवं राधाकवच ये विषय वर्णित है। —कैट्. कैट्. १।२११

ज्ञानार्णव (नित्यातन्त्र)

लि०—(१) देवी-ईश्वर संवादरूप यह एक नित्यातन्त्र है। इसमें २३ पटल हैं। उनमें प्रतिपादित विषय इस प्रकार हैं—पटल १ से ५ तक बाला के न्यास, ध्यान, पूजन, यजन आदि, ६ से ८ तक पूर्व, द्वितीय तथा पश्चिम सिंहासन का विधान, ९ म में पञ्चम सिंहासन का विधान, १० म से १४ वें तक त्रिपुरसुन्दरी के द्वादश भेद, षोडशी श्रीविद्या के न्यास, मुद्रा, पूजनप्रयोग आदि, १५ वें से २३ वें पटल तक रत्नपुष्पा बीज सन्धान, त्रिपुरा के जप, होम, द्वितीय यागज्ञान, द्वितीय यागदीक्षा तथा दमनरोपण। —इ० आ० २५५२

(२) इसमें २६ पटल हैं। विषय विवरण—वर्णमाला का निरूपण, बालान्यासविधि, त्रिपुरेश्वरी न्यास, त्रिपुरेश्वरक्रमविधि, त्रिपुरायजन, बलिविधि, पूर्वसिंहासन, पश्चिमसिंहासन, सर्वसिंहासन, त्रिपुरा के १२ भेद, षोडशाक्षरी विद्या, त्रिपुरामुद्रा निरूपण, श्रीविद्यायजनविधि, श्रीविद्याप्रयोगविधि, त्रिपुराजप तथा होमविधि आदि। —ए० बं० ५८०९

(३) नित्यातन्त्रान्तर्गत देवी-ईश्वर संवादरूप यह तन्त्र ग्रन्थ २२ पटलों में पूर्ण है। इसकी श्लोक सं० लगभग २००० है। विषय यों वर्णित हैं—अक्षमाला का निर्णय, देवी के विविध मन्त्रों का प्रतिपादन, त्रिपुरा बाला के मन्त्रों का निरूपण, बाला के न्यास आदि का निरूपण, त्रिपुरा की साधना-विधि, अन्तर्याग-विधि, चक्रोद्धारविधि, त्रिपुरा के ध्यान का वर्णन, मण्डल, पूजा आदि का निरूपण, मुद्रालक्षण, त्रिपुरेश्वरी की क्रमविधि,

कुमारी-क्रमविधि, यजन, बलिदान आदि की विधि, पञ्च सिंहासनविधि, महात्रिपुरसुन्दरी के १२ भेदों का विवरण, षोडशाक्षरी श्रीविद्या की विधि, चक्रादि प्रयोग, ५० पीठों का विवरण, रत्नपूजाविधि, त्रिपुरा बीज साधनविधि, त्रिपुरा-जप तथा होमविधि आदि।

(४) (क) पन्ने ११६। (ख) पन्ने ८६। —नो० सं० १।१२९

—रा० पु० (क) ५८२९, (ख) ६६५९

(५) उमा-महेश्वर संवादरूप यह मौलिक तन्त्र है। रा० ला० ८२६ में तथा इ० आ० २५५२ में इसका वर्णन है। यह २३ पटलों में है। अपूर्ण। इसमें क्रमशः बाला-देवी के ध्यान और पूजनविधि, त्रिपुरा बाला का यजन, पूर्व सिंहासन विधि आदि प्रमुख विषय प्रतिपादित हैं। —क० का० २३

(६) यह शिवप्रोक्त है। पत्र सं० १४१। —ज० का० १०२२

(७) उमा-महेश्वर संवादरूप, २० पटलों में। इसमें देवी की पूजा तथा तदुचित मांसादि उपहार आदि विषय वर्णित है। श्लोक सं० १०७८।

—तै० म० ६७२०

(८) नामान्तर—नित्यातन्त्र। (क) श्लोक सं० लगभग १५६०, पूर्ण। (ख) केवल ४ पटलों तक। —र० मं० (क) (ख)

(९) नामान्तर—नित्यातन्त्र। उमा-महेश्वर संवादरूप, पटल सं. २६। यह शाक्त यजन पूजन से सम्बद्ध आगमों में अन्यतम आगम है। इसके २६ पटलों में ये विषय प्रतिपादित हैं— वर्णमाला, बालान्यासविधि, बाला के यन्त्र का उद्धार, ध्यान आदि, त्रिपुरेश्वरी पीठपूजाविधि, त्रिपुरेश्वरी यजन, पूर्व सिंहासन विधि, रुद्रभैरवीयजन, पश्चिम सिंहासन यजन, पञ्च सिंहासन विद्याविधि, त्रिपुरपुन्दरी के १२ भेद, श्रीविद्याविवरण, श्रीविद्या-न्यास, मुद्रा, श्रीविद्यायजन, त्रिपुरपुसुन्दरी पूजाप्रयोग, सुवर्ण रत्न पुष्प पूजन, बीज-साधनविधि, होम कुण्डादिविधि, ज्ञानहोम विवरण, दूतीपूजा, ज्ञानदूतिकायजन, दीक्षा-विवरण, पवित्रारोपण, दमनारोपण तथा गुरुवन्दनस्तोत्र।

—म० द० ५६२७ से २६३१ तक

(१०) (क) श्लोक सं० २०००, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १५००। (ग) श्लोक सं० १६००, पटल २३। (घ) श्लोक सं० १०००, अपूर्ण। (ङ) श्लोक सं० १०००, ९ से २२ पटल तक, अपूर्ण। (च) श्लोक सं० १६, अपूर्ण।

—अ० ब० (क) ११४०१, (ख) ५५९८, (ग) ५५५८, (घ) १०६१८, (ङ) १०५९४, (च) १४४१

(११) ज्ञानार्णवतन्त्र, (क) श्लोक सं० २२६०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ६२५, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २५११५, ख) २४३५४

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, मन्त्ररत्नावली, शक्तिरत्नाकर, आगमकल्पलता, ललितार्चनदीपिका, सर्वोल्लासतन्त्र, तन्त्ररत्न तथा शाक्तानन्दतरङ्गिणी में।

सं० वि० में ज्ञानार्णव और ज्ञानार्णवतन्त्र को पृथक्-पृथक् माना गया है, जो विचारणीय है। सर्वोल्लास में यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत कहा गया है।

ज्ञानार्णवटीका (गूढार्थादर्श)

लि०—भड़ोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र वाराणसी-गर्भसंभूत काशीनाथभट्ट कृत।

—ए० बं० ५८१६

ज्ञानेन्दुकौमुदी

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

ज्ञानोत्तर

उ०—तन्त्रालोकटीका जयरथकृत तथा शतरत्नसमुच्चय में।

ज्ञानोदय

लि०—महेश्वर-विनायक संवादरूप यह तन्त्र ८ पटलो में पूर्ण है। (क) श्लोक सं० ५००। इसमें हरिहर-पूजाप्रकार प्रतिपादित है।

(ख) श्लोक सं० ५००, पूर्ण। विनायक के शङ्कर जी से यह प्रश्न करने पर कि चराचर सम्पूर्ण विश्व के एकमात्र अधिष्ठान आप ही हैं फिर पुराणवेत्ता लोग 'नारायण' 'नारायण' क्या चिल्लाते हैं? इस पर भगवान् महेश्वर ने नारायण के तत्त्व, माहात्म्य आदि का प्रतिपादन कर उनकी पूजा का प्रतिपादन किया है।

—ट्रि० कै० (क) ५८१ (घ), (ख) ९४३

ज्ञानोन्नयन

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

ज्येष्ठापूजाविलास

लि०—वीरेश्वर विरचित। —कैट्. कैट्. १।२११

ज्योतिष्कल्प

लि०—श्लोक सं० १११, पूर्ण। —सं. वि. २४६९४

ज्योतिष्मतीकल्प

लि०—(१) —म० द० ७८४०

(२) श्लोक सं० ४५, पूर्ण। —सं० वि० २४१२९

ज्योत्स्नापञ्चतन्त्र

उ०—आक्सफोर्ड १०९ (ख) के अनुसार गौरीकान्त ने इसका उल्लेख किया है। —कैट्. कैट्. १।२१४

ज्वरशान्ति (१)

लि०—गर्गसंहिता में उक्त, श्लोक सं० ३८, शरीर में उत्पन्न अथवा उत्पन्न होनेवाले आमज्वर, पित्तज्वर, श्लेष्मज्वर आदि सब ज्वरों की निवृत्तिपूर्वक शीघ्र आरोग्य लाभ के लिए ज्वर के अधिपति महारुद्र प्रीत्यर्थ गर्गसंहिता में उक्त नवग्रहयाग सहित ज्वर-शान्ति इसमें कही गयी है। —रा० ला० ४०८६

ज्वरशान्ति (२)

लि०—शान्तिसारान्तर्गत। श्लोक सं० २१। इसमें भी पूर्ववत् ज्वरशान्तिप्रयोग वर्णित है। —रा० ला० ४११५

ज्वालाकवच

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। —क० का० ७८

ज्वालातन्त्र

श्रीकण्ठी के अनुसार चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत।

ज्वालापटल

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। इसमें ज्वालामुखी देवी की पूजापद्धति प्रतिपादित है। —क० का० ८०

ज्वालापद्धति

लि०—इसमें ज्वालादेवी की पूजापद्धति प्रतिपादित है। —क० का० २१

ज्वालामुखीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) श्लोक सं० २३२, पूर्ण। यह रुद्रयामलान्तर्गत है।

—र० मं० ४८३५

(२) रुद्रयामल से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।२१४, २।४४

ज्वालावलीतन्त्र

लि०— —कैट्. कैट्. १।२१४

ज्वालासहस्रनाम

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें देवी ज्वालामुखी के १ हजार नाम वर्णित हैं। —क० का० ८१

झङ्कारकरवीरतन्त्र

लि०—यह महातन्त्र ८००० श्लोकों में पूर्ण है। इसमें चण्डकपालिनी-पूजा आदि वषय वर्णित हैं। —ने० द० १।१०९

लि०—झङ्कारकरवीर। —कैट्. कैट्. ३।४६

डाकिनीकल्प

लि०—श्लोक सं० २२५, पूर्ण। —र० मं० १२०२

डाकिनीतन्त्र

लि०—केवल १म से ५ वें पटल तक, अपूर्ण। —बं० प० ११५३

डामरतन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० १३०, अपूर्ण।

—सं० वि० २४३८५

(२) डामरतन्त्र में—कार्तवीर्यार्जुनकवच, कार्तवीर्यार्जुन-स्तोत्र तथा संक्षेप पूजा-विधि। —कैट्. कैट्. १।२१४

(३) दे०—उड्डामरतन्त्र, उड्डामरेश्वरतन्त्र, डामरतन्त्र में कार्तवीर्यार्जुन सहस्र-नाम तथा भगवद्वस्त्र पटल। —कैट्. कैट्. २।४४

उ०—रा० ला० १८५५ तथा निर्णयसिन्धु में।

श्रीकण्ठी के अनुसार चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत।

डामरतन्त्रसार

लि०—श्लोक सं० १००८, पूर्ण। —सं० वि० २३९८६

डामरप्रकरण

लि०— —कैट्. कैट्. १।२१४

डामरभैरवतन्त्र

उ०—फेत्कारिणीतन्त्र में।

डामरेश्चरतन्त्र

लि०—डामरेश्वरतन्त्र में चण्डीपाठ, दत्तात्रेयकवच। —कैट्. कैट्. १।२१४

तकारादिस्वरूप

लि०—यह श्रीबालाविलासतन्त्रान्तर्गत देवी-ईश्वर संवादरूप है। इसमें ३१२ श्लोकों द्वारा तकारादिपदों से तारा देवी की स्तुति, इस सहस्रनाम स्तोत्र का पुरश्चरण, फल आदि प्रतिपादित हैं। यह सब तन्त्रों में गोपित परम रहस्य, त्रैलोक्य सुख का कारण तथा सकलसिद्धियों का प्रापक है। जो मनुष्य शुचि या अशुचि किसी भी अवस्था में इसका पाठ करता या कराता है वह तारा का स्नेहभाजन होता है।

—रा० ला० ४६२

तत्त्वगर्भस्तोत्र (१)

उ०—स्पन्दप्रदीपिका, प्रत्यभिज्ञाहृदय तथा शिवसूत्रविमर्शिनी में।

तत्त्वगर्भस्तोत्र (२)

भट्टप्रद्युम्न कृत

उ०—उत्पलाचार्यकृत शिवदृष्टिटीका में।

तत्त्वचिन्तामणि

लि०—(१) पूर्णानन्दयति विरचित। यह तन्त्र सन् १५७७ में पूर्णानन्द यति द्वारा रचा गया। इसमें ६ प्रकाश हैं। ६ ठे प्रकाश, जिसका नाम योग विवरण या षट्चक्रनिरूपण है, के १८५६, १८६० तथा १८६९ में कलकत्ते से ३ संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

—इ० आ० २६१३

(२) परमहंस परिव्राजक ब्रह्मानन्द-शिष्य पूर्णानन्द परमहंस विरचित। इसकी शक संवत्सर १४९९ में रचना हुई। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—तत्त्वज्ञान-निरूपण, दीक्षा, दीक्षास्थान तथा दीक्षा के अङ्गों का निरूपण, मण्डप-निर्माण के नियमों का वर्णन, दीक्षादिन के पूर्व दिन के कर्तव्य कार्यों का निरूपण, षट्चक्रों के क्रम का निरूपण, कुण्ड-लक्षण, होमविधि आदि। —नो० सं० १।१३६

(३) श्रीमत्परमहंस परिव्राजक गुरुवर श्रीब्रह्मानन्द के मुखारबिन्द से निरन्तर निःसृत हो रही परम रहस्य निगम रूप मधु बिन्दुराशि से परमानन्दपूर्ण पूर्णानन्द परमहंस ने शक संवत्सर १४९९ में इसका निर्माण किया। इसमें दीक्षाविधिपूर्वक आत्मवस्तु का निर्णय किया गया है। यह १म प्रकाश मात्र है। —रा० ला० १०९९

(४) पूर्णानन्द परमहंस कृत। श्लोक सं० ३०, अपूर्ण।

—सं० वि० २४६६९

उ०—प्राणतोषिणी तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

तत्त्वतरङ्गिणी

लि०—श्लोक सं० २६२, अपूर्ण। —सं० वि० २४६७९

तत्त्वत्रयकथन

लि०—श्लोक सं० १५, पूर्ण। —सं० वि० २५५६०

तत्त्वन्यासमातृकान्यास

लि०—श्लोक सं० १००। —अ० ब० १३८९८

तत्त्वप्रकाश

लि०—(१) ज्ञानानन्द ब्रह्मचारी विरचित। १२ कल्पों में पूर्ण। इसका प्रथम कल्प जो कुलसंगीता नाम से भी प्रसिद्ध है, ५ विरामों में पूर्ण है। बहुत-से तन्त्रों का अवलोकन कर ग्रन्थकार ने शाक्तों के आनन्द के लिए इस ग्रन्थ का शकाब्द १७३० अथवा १८०८ ई० में निर्माण किया। ग्रन्थकार की प्रतिज्ञा है कि मैं आत्मतत्त्व के प्रबोध तथा भ्रम-विनाश के लिए इस ग्रन्थ के १ म कल्प में कुलसंगीता का प्रतिपादन करता हूँ।

—नो० सं० १।१३७

(२) —कैट्. कैट्. १।२१९

तत्त्वप्रदीपिका

लि०—यह राधामोहन कृत गौतमीयतन्त्र-टीका है। अपूर्ण। दूसरी प्रति भी अपूर्ण है।
—वं० प० १७७, ३३५

तत्त्वबोधतन्त्र

उ०—तन्त्रसार (कृष्णानन्दकृत) तथा कालिकासपर्याविधि (काशीनाथ कृत) में।

तत्त्वबोधिनी (१)

नामान्तर—श्रीतत्त्वबोधिनी

लि०—इसके निर्माता कृष्णानन्द जिज्ञासु हैं। वे कहते हैं—मैंने प्रतिदिन मुक्तिप्रद श्रीनाथ चरणारविन्द का ध्यान कर श्रीनाथमुखारविन्द से नाना तन्त्रों के मत जाने और उनमें से सार ग्रहण किया। उसीके फलस्वरूप इस तत्त्व बोधिनी की रचना की। इसमें १५ कल्प हैं। जिनके विषय यों हैं—१ म कल्प में गुरु-स्तोत्र, कवच आदि का प्रतिपादन है, २य में नित्य कर्मों का अनुष्ठान, पूजा आदि का प्रतिपादन हैं, ३ य में शिवपूजा-विधान, ४र्थ में पूजा के आधार आदि तथा न्यास विवरण, ५म में साधारण पूजा, ६ष्ठ में जपरहस्य, ७म में पञ्चाङ्ग, पुरश्चरण, ८ म में ग्रहण-पुरश्चरण आदि का विवरण, ९म और १० म में होम का विवरण, ११ श में कुमारीपूजा आदि, १२ श में षट्चक्रविधि, १३ श में शान्ति, वश्य आदि षट्कर्म, १४ श में शान्तिकल्प-विधान तथा १५ श में आथर्वणोक्त ज्वरशान्ति कही गयी है। —रा० ला० २८१

तत्त्वबोधिनी (२)

आनन्दलहरी-टीका, महादेव विद्यावागीश कृत। रचना काल १६०५ ई०।
—इ० आ०

[तत्त्वमञ्जरी

उ०—विज्ञानभैरव की शिव उपाध्याय कृत टीका में।

तत्त्वयुक्ति

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

तत्त्वयोगबिन्दु

लि०—रामचन्द्र विरचित। इसमें राजयोग के ये १५ भेद वर्णित हैं—क्रियायोग, ज्ञानयोग, चर्यायोग, हठयोग, कर्मयोग, लययोग, ध्यानयोग, मन्त्रयोग, लक्ष्ययोग, वासनायोग, शिवयोग, ब्रह्मयोग, अद्वैतयोग, राजयोग तथा सिद्धयोग। —ए० बं० ६६०५

तत्त्वरक्षाविधान

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

तत्त्वविचार

कल्लट विरचित

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

तत्त्वविमर्शिनी

लि०—(१) इस १५० श्लोक के ग्रन्थ में अन्त्येष्टिविधि निरूपित है। पूर्ण।
—ट्रि० कै० ११२७ (ट)

(२) यह उपमन्यु विरचित है एवं इस पर काशिका टीका (उपमन्यु कृत) है।
—कैट्. कैट्. १।२२०

उ०—योगिनीहृदय दीपिका में।

तत्त्वशंबरतन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरीटीका (लक्ष्मीधरी) में।

तत्त्वशुद्धि

लि०—(१) इसकी श्लोक संख्या १०० है। —अ० ब० ५६७७

(२) —कैट्. कैट्. १।२२०

(३) (क) श्लोक सं० २८, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३७, पूर्ण।
—सं० वि० (क) २४०७५, (ख) २५१७८

तत्त्वशोधनप्रकार

लि०—श्लोक सं० १८, पूर्ण। —सं० वि० २६४१४

तत्त्वसंग्रह

लि०—शैव तन्त्र। सद्योज्योति शिवाचार्य विरचित, श्लोक संख्या ३००। इसके ज्ञान, क्रिया और योग तीन पाद हैं। अपूर्ण। —अ० ब० ७९७२

उ०—शैव तन्त्रग्रन्थ, नरेश्वर परीक्षासंग्रह तथा सर्वदर्शनसंग्रह में उल्लिखित इस पर अघोर शिवाचार्य कृत लघुटीका है। —कैट्. कैट्. १।२२०

तत्त्वसंग्रह-टीका

वृहट्टीका अथवा शरन्निशा, नारायणकण्ठ कृत।

उ०–अघोर शिवाचार्य की वृत्ति में।

अघोर शिवाचार्य की वृत्ति में अघोर शिवाचार्य का जीवन काल ११३० से ११५८ ई० बतलाया गया है।

तत्त्वसद्भावतन्त्र

लि०—देवी-भैरव संवादरूप। यह तन्त्र दक्षिणाम्नाय से सम्बद्ध है अर्थात् इसका प्रतिपादन शिवजी ने अपने उस मुख से किया है जो दक्षिणाभिमुख था। यह भैरवस्तोत्र कहा गया है, क्योंकि इसके वक्ता भैरव हैं और उन्होंने अपना कथन तब आरंभ किया जब ब्रह्मा का मस्तक-स्थित सिर काट कर अपने मस्तक पर रख लिया था। इसकी श्लोक संख्या ७ करोड़ कही गयी है। इसमें ७ करोड़ श्लोक हैं या शब्द इसका निश्चय नहीं। महादेवजी ने वाम, दक्षिण आदि जो और यामल कहे हैं उनमें दूसरे-दूसरे विषय कहे हैं, पर इसमें केवल ज्ञान का प्रतिपादन किया है। —ने० द० २ पृ० ११३

तत्त्वसार

नामान्तर—योगसार

लि०—(१) शिव-कार्तिकेय संवादरूप। Eggeling पे. ८०० में भी एक तत्त्वसार वर्णित है परन्तु वह सूत-शौनक संवादरूप कहा गया है।

—ने० द० ११६३४ (क)

(२) आनन्दभैरव-आनन्दभैरवी संवादरूप। १० पटलों में पूर्ण। यह तत्त्वसार-योग का सार, सब शास्त्रों में परमोत्तम तथा सब तन्त्रों में प्रधान कहा गया है।

—नो० सं० ४।१०३

उ०—शाक्तानन्दतरङ्गिणी में।

तत्त्वसारसंहिता

उ०—हेमाद्रि-परिशेषखण्ड तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

तत्त्वसिद्धि

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

तत्त्वानन्दतरङ्गिणी

लि०—(१) पूर्णानन्द विरचित इस ग्रन्थ में ७ उल्लास हैं।

—ए० बं० ६२००

(२) (क) श्लोक संख्या ३५० तथा रचयिता पूर्णानन्द गिरि।
(ख) श्लोक सं० ६०० ,, ,,
(ग) श्लोक सं० ३५० ,, ,,
(घ) श्लोक सं० ६०० ,, ,,

—अ० व० (क) ३५२६, (ख) ३४४६, (ग) १२०६०, (घ) १०१८४

(३) इसके रचयिता म० म० ब्रह्मानन्द परमहंस परिव्राजक-शिष्य पूर्णानन्द परमहंस हैं। इसमें मन्त्र, बीज, पूजा, होम, पुरश्चरण, मन्त्रोद्धार, यन्त्रोद्धार, ध्यान, कवच, पूजा-स्थान आदि विषयों का निरूपण है। यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की आद्य साधन-पद्धति कही गयी है। —रा० ला० ३६८

(४) पूर्णानन्द कृत, श्लोक सं० ५२५, पूर्ण।

—डे० का० ३८७ (१८८२-८३ ई०)

(५) (क) पूर्णानन्द कृत। इसमें कई उल्लास हैं। ८ म उल्लास में पञ्चतत्त्व-शोधन का प्रतिपादन है। (ख) श्लोक सं० लगभग २५८, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० २५४, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २५७७५ (ख) २५९८७, (ग) २६६७२

(६) पूर्णानन्द परमहंस विरचित। —कैट्. कैट्. १।२२१

उ०—कालिकासपर्याविधि (काशीनाथ कृत) में।

तत्त्वामृततरङ्गिणी

लि०—श्रीनाथ-शिष्य कुलानन्दनाथ विरचित। ७ तरङ्गों में पूर्ण, श्लोक सं० लगभग ७०० । इसकी रचना १६६० शकाब्द में हुई। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—गुरुशिष्य-लक्षण, शिष्य-संबोधन, जीव-चित्त संवाद, छह आम्नायों का विवेचन, प्रकृति और पुरुष का विवेचन तथा अभेद निरूपण, आत्मविवेक आदि। —नो० सं० ४।१०४

तत्त्वार्थचिन्तामणि

लि०—यह वसुगुप्त कृत स्पन्दसूत्र की कल्लटकृत टीका है।

—कैट्. कैट्. १।२२१

उ०—स्पन्दप्रदीपिका, शिवसूत्रविमर्शिनी, प्रत्यभिज्ञाहृदय, तन्त्रालोक तथा तन्त्रालोक-टीका जयरथी में।

तत्त्वावबोध

लि०—ब्रह्मयामलान्तर्गत, श्लोक सं० १३०, पूर्ण।

—सं० वि० २४७५७

तत्त्वोत्पादनविधि

लि०—देवीपूजाविधि आदि के साथ संलग्न। —सं० वि० २६२५४

तन्त्र (?)

लि०—त्रिपुरसुन्दरी-मन्त्र-गर्भ सहस्रनाम (रुद्रयामल से गृहीत) तथा देवीरहस्य। इनकी सम्मिलित श्लोक सं० २००० है। —अ० ब० १२१८०

तन्त्रकल्पद्रुम

उ०—सदाशिव दीक्षित कृत कर्पूरस्तोत्र-टीका में।

तन्त्रकोष

लि०—(१) वीरभद्र विरचित। इसमें अकार आदि मातृका वर्णों का यथायोग्य अर्थ कहा गया है। जैसे—'अः श्रीकण्ठः केशवश्चापि निवृत्तिश्च स्वरादिकः।' इत्यादि।

—नो० सं० ३।१२१

(२) वीरभद्र विरचित। —भ० रि० १६५

तन्त्रकौमुदी (१)

लि०—(१) गोविन्द ठक्कुर-पुत्र देवनाथ ठक्कुर तर्कपञ्चानन कृत (ये कूचविहार के राजा मल्लदेव नरनारायण के सभापण्डित थे। द्रष्टव्य न्यायचर्चा) श्लोक सं० २४८५। इसमें वर्णित विषय हैं—तन्त्रशास्त्र का प्रामाण्यस्थापन, मन्त्रों का स्त्रीत्वादि निरूपण, दीक्षाकाल निरूपण, कलावती दीक्षादिविधि, दीक्षित के नियम आदि, दीक्षा में पूजाविधि, पुरश्चर्यादिविधि, आसन आदि का निरूपण, मुद्राओं के लक्षण, जपमाला, जपविधि, विविध मन्त्रों का निरूपण, कौलयोगविधि, दस मन्त्र-संस्कारों का निरूपण, कौलों की आह्निकविधि, भूतशुद्धि प्रकार, मातृकादिन्यासविधि, अन्तर्यागविधि, षट्कर्मविधि निरूपण आदि। —रा० ला० २०१०

(२) यह विविध तन्त्रों से संगृहीत है। देवियों के विभिन्न रूपों की पूजा आदि इसमें वर्णित हैं। इसकी पत्र संख्या २५० है एवं इसके निर्माता देवनाथ हैं।

[इसका रचना काल १६ वीं ई० शताब्दी है।] —बी० कै० १३४६

उ०—तन्त्रसार में।

तन्त्रकौमुदी (२)

लि०—(१) यह हर-गौरी संवादरूप है। इसकी श्लोक सं० ४४१२ है। इसमें वर्णित विषय हैं—ब्रह्म-निरूपण, कालिका ही ब्रह्म है, यह कथन, मतभेद से २७ प्रकार की महाविद्याओं का कथन, पूर्व, पश्चिम आदि भेद से छह आम्नायों का वर्णन, उनकी उत्पत्ति और विभाग का वर्णन, काली मूर्ति ग्रहण की कथा, उग्रतारा, नील सरस्वती आदि के रूप धारण का विवरण, विद्या-माहात्म्य, जगत्सृष्टि-प्रकरण, शिव-शक्त्यात्मक तीन गुणों से ब्रह्मा, वष्णु और रुद्र की उत्पत्ति, ५० वर्णरूपा देवी के शरीर से माधव, गोविन्द, कृष्ण आदि की उत्पत्ति, कीर्ति, कान्ति, लज्जा, लक्ष्मी आदि की उत्पत्ति, पृथिवी आदि की उत्पत्ति, धर्म और अधर्म की उत्पत्ति, स्थावर, जंगम आदि की सृष्टि आदि। —रा० ला० २११०

(२) पूर्ण। —बं० प० १३८१

तन्त्रगन्धर्व

लि०—दत्तात्रेय कृत। श्लोक सं० ४५७५, पटल ४२। इसमें वर्णित मुख्य मुख्य विषय ये हैं—महादेवजी का देवीजी से गौतमोक्त शास्त्र की अग्राह्यता कथन, शक्तिमन्त्र, पञ्चमी विद्या का माहात्म्य, त्रिपुराकवच, त्रिपुरसुन्दरी के मन्त्र आदि, त्रिपुरा देवी की पूजा, षोडश मातृकान्यास, करशुद्धि आदि, षोडशोपचार पूजा आदि, साङ्गबहिर्यागविधान, खेचरी आदि विविध मुद्राओं का वर्णन, पूजोपचार, मद्यविशेष आदि, प्रकटादि शक्ति विशेष की पूजा, जपविधान, बटुकादि विधान, शेषिका देवी की पूजाविधि, कुमारी पूजा और उसका फल, गुरु-शिष्यलक्षण, दीक्षाविधि, पुण्य क्षेत्रादि का निरूपण, पुरश्चरण-विधि, मुद्राधारणविधि, हंसमन्त्र-जप, होमविधि, पूजाधिष्ठान स्थान कथन, कुलाचारादि का वर्णन, रात्रि में शक्ति विशेष की पूजा, कुलपूजा आदि। —रा० ला० २४४

उ०—शाक्तानन्दतरङ्गिणी में।

तन्त्रचन्द्रिका (१)

लि०—रामचन्द्र चक्रवर्ती कृत, श्लोक सं० ४०६४, अपूर्ण।

—सं० वि० २६३४६

तन्त्रचन्द्रिका (२)

लि०—रामगति सेन कृत। —ए० बं० ६२७४

तन्त्रचिन्तामणि

लि०—(१) इसके निर्माता हैं नेपाल नरेश के अमात्य नवमीसिंह। इसमें ४० प्रकाश हैं। उनमें अनेक तन्त्र ग्रन्थों के नाम, उनकी उत्पत्ति, सत्ययुग आदि के भेद से पृथक्-पृथक् मार्ग, आगमों की श्रेष्ठता, सृष्टि की उत्पत्ति का क्रम, कालिका और कृष्ण, तारा और राम की एकरूपता, दश विद्याओं का निर्णय, शिव और शक्ति की उपासना, श्यामा की सर्वमूलता आदि विविध विषय वर्णित हैं। —ए० बं० ६२१७

(२) इस प्रति में केवल ३००० श्लोक हैं, अपूर्ण। —अ० व० १०२५२

(३) इसमें विविध प्रकार की तान्त्रिक देवियों की पूजा के लिए विभिन्न प्रकार के नियम-मार्गों का प्रतिपादन है। —बी० कै० १३४५

उ०—पुरश्चर्यार्णव और आगमतत्त्वविलास में। सर्वोल्लासतन्त्र के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों में अन्यतम है।

तन्त्रचूडामणि

लि०—(१) यह ग्रन्थ पूर्ण है। इसकी श्लोक सं० ८२ है। —सं० वि० २४६६७

(२) इसके रचयिता का नाम रामचन्द्र है। —कैट्. कैट्. ११२२२

(३) (क) श्लोक सं० ६६, पूर्ण। चन्द्रचूडामणि में महापीठ निरूपण मात्र है। इसमें ५१ पीठों का वर्णन है। (ख) श्लोक सं० ७०, पूर्ण। इन प्रतियों में लिपिकर्ता की भूल से तन्त्रचूडामणि के स्थान पर चन्द्रचूड़ामणि लिखा गया है। —ए० बं० (क) ५९५६, (ख) ५९५७

उ०—शाक्तक्रम, तन्त्रसार, कुलप्रदीप, ताराभक्तिसुधार्णव, तारारहस्यवृत्ति तथा आनन्दलहरी की तत्त्वबोधिनीटीका में। 'तन्त्रचूड़ामणौ पीठनिर्णयः' रा० ला० ४४० में भी इसका उल्लेख है।

तन्त्रचूडामणिसार

लि०—इसमें तान्त्रिक पूजा का विवरण तथा दिव्यौघ, सिद्धौघ और मानवौघ का संक्षिप्त वर्णन है। —ए० बं० ५९५८

तन्त्रजीव

उ०—कालिकासपर्याविधि में।

तन्त्रजीवन

लि०— —कैट्. कैट्. १।२२२

तन्त्रदर्पण (१)

लि०—(१) नित्यानन्द के शिष्य सच्चिदानन्दनाथ कृत। वास्तव में इसके रचयिता रघुनाथ हैं जिनके पिता का नाम है वालो पण्डित और पितामह का नाम है शेषरंग। प्रतीत होता है कि ये सच्चिदानन्द के शिष्य थे। —भ० रि० १६६

(२) उन्मन्यानन्दनाथ-शिष्य सच्चिदानन्दनाथ कृत।

—कैट्. कैट्. १।२२२

तन्त्रदर्पण (२)

लि०—रघुनाथ कृत। —कैट्. कैट्. ३।४८

तन्त्रदीप

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

तन्त्रदीपनी

लि०—परम निरञ्जन काशीनाथानन्दनाथ के शिष्य रामगोपाल शर्मा कृत। निर्माण काल संवत् १६२६ वि०। ११ उल्लासों में पूर्ण। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—तत्त्वज्ञान आदि का विवेचन, सामान्यपूजा, विष्णु, सूर्य आदि के मन्त्र, श्रीविद्या आदि के मन्त्र, पूजा आदि का प्रतिपादन, छिन्नाप्रकरण, तारिणी आदि का प्रकरण, मञ्जुघोषा आदि के मन्त्रों का निर्णय, स्तोत्र, कवच आदि का विचार, पूजा के उपचार आदि का निर्णय, विजयाकल्प आदि, कुण्डादि का निरूपण आदि। —नो० सं० २।७९

तन्त्रदीपिका (१)

लि०—(१) आगम वागीश के पौत्र, हरिनाथ के पुत्र श्रीगोपाल विज्ञ विरचित, श्लोक सं० ११७१५। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—दीक्षा की आवश्यकता, सद्गुरु-लक्षण, शिष्य-लक्षण, महाविद्या आदि का स्वरूप, सिद्धमन्त्र आदि के लक्षण, दीक्षा-काल, नक्षत्र-चक्र आदि, दीक्षा, महादीक्षा और उपदेश में भेद, सर्वसाधारण नित्य पूजाविधि, आह्निक

कृत्य, तन्त्रोक्त विधि से प्रातःकृत्य स्नान, तर्पण आदि का निरूपण, प्राणायाम, पूजा में विहित और अविहित पुष्प, पूजा का अधिकरण, नैमित्तिक, काम्य आदि पूजा विधियाँ, परमयोगियों की मोक्ष पूजाविधि, जपादिविधि, अन्तःपूजा (मानस पूजा) विधि, नौ प्रकार के कुण्डों का निरूपण, कुण्डों का विशेष फल कथन, काम्य होम के लिए कुण्ड, होम-विधि, जपमाला, चन्द्र और सूर्य ग्रहण के अवसर पर किये जाने वाले पुरश्चरण, मन्त्रों के विविध संस्कारों की विधि, सर्वतोभद्र मण्डल का निरूपण आदि। ––रा० ला० २२०२

(२) कृष्णानन्द आगम वागीश के पौत्र, हरिनाथ-पुत्र गोपाल पञ्चानन कृत।

––ए० बं० ६२३०

(३) इसमें प्रतिपादित विषय हैं––दीक्षा शब्द का अर्थ विवेचन, सब आश्रमों में दीक्षा की आवश्यकता, गुरुपद का अर्थ, गुरु के लक्षण, दोषयुक्त गुरु और तत्प्रदत्त मन्त्र की त्याज्यता कथन, शिष्य-लक्षण, निषिद्ध शिष्य लक्षण, महाविद्याओं का निर्देश, पिता आदि से मन्त्र-ग्रहण का निषेध, निर्बीज मन्त्र के लक्षण आदि, स्वप्नलब्ध मन्त्र की विशिष्टता आदि। यह विशाल ग्रन्थ लगभग २०००० श्लोकों का होगा।

––नो० सं० १।१३८

तन्त्रदीपिका (२)

लि०––मुकुन्द शर्मा विरचित। उत्तरतन्त्र के उत्तरकल्पान्तर्गत। देवी-ईश्वर संवाद-रूप। इस ग्रन्थ की श्लोक सं० ८७५ है। इसमें वर्णित विषय हैं––गुरु-लक्षण, मन्त्रत्यागनिन्दा, निन्द्य गुरु, शिष्य-लक्षण, दीक्षा-लक्षण, शूद्रदीक्षा का निषेध, दीक्षा की प्रशंसा, सिद्ध विद्या, कुलाकुल चक्र, राशिचक्र, नक्षत्रचक्र, अकथहचक्र, वैदिक मन्त्र का त्याग, अकडमचक्र, ऋणी धनी चक्र, दीक्षा-काल, माला-निर्णय, आसन-भेद, माला-संस्कार, पुरश्चरण, भक्ष्य-नियम, पुरश्चरण-प्रयोग, ग्रहण-पुरश्चरण, मन्त्र-संस्कार, अभिषेक-मन्त्र, संक्षेपदीक्षा, अन्य दीक्षाएँ, स्नानादि-विधि, सामान्य पूजा, पीठपूजा, भुवनेश्वरी-मन्त्र, अन्नपूर्णा-मन्त्र, श्यामा-मन्त्र, छाग आदि की बलि, प्राण-प्रतिष्ठा, दुर्गा और तारा के मन्त्र, तारा प्राणायाम, अनेक देवदेवियों के मन्त्र, कवच आदि।

––रा० ला० ११७१

तन्त्रदेवप्रकाश

उ०––मन्त्रमहार्णव में।

तन्त्रनिबन्ध

लि०—(१) विविध तन्त्र ग्रन्थों का संग्रह। इसमें गुरुमहिमा, विविध चक्र, दीक्षाकाल, मालानिर्णय, विविध आसन, देवता-गायत्री, मन्त्रसंस्कार, यन्त्रसंस्कार, मालासंस्कार आदि एवं विविध देवी-देवताओं के मन्त्र, ध्यान, स्तोत्र, कवच आदि विषय वर्णित हैं। —ए० बं० ६२६६,६७

(२) अपूर्ण। —बं० प० ८५२

तन्त्रप्रकाश

लि०—गोविन्द सार्वभौम विरचित। इसमें दीक्षा, पुरश्चरण आदि बहुत-सी तान्त्रिक विधियाँ वर्णित हैं। तारा, त्रिपुरा प्रभृति देवियों की पूजा का विवरण दिया गया है।

—ए० बं० ६२०७

उ०—रघुनन्दन कृत आह्निकतत्त्व तथा व्रतप्रकाश में।

तन्त्रप्रदीप (१)

लि०—जगन्नाथ चक्रवर्ती विरचित, नौ परिच्छेदों में पूर्ण। इसकी श्लोक सं० लगभग ४५०० बतलायी गयी है। इसमें वर्णित विषय हैं—मन्त्र और दीक्षा पदों की व्युत्पत्ति, गुरु, शिष्य आदि के लक्षण, दीक्षाकाल, दीक्षा-प्रयोग आदि का निर्देश, पुरश्चरण, ग्रहण के समय के पुरश्चरण आदि का निरूपण, राम, विष्णु, सूर्य आदि के मन्त्रों का निरूपण, उनके स्तोत्र, कवच आदि का निरूपण, यन्त्र-संस्कार निरूपण, नित्य होम आदि की विधि, कुण्डादि का निरूपण आदि। —नो० सं० १।१३९

लि०—तन्त्रप्रदीप पर तन्त्रदीपप्रभा नामक व्याख्यान, सनातन तर्काचार्य कृत।

—नो० सं० २।८०

उ०—तन्त्रसार में।

तन्त्रप्रदीप (२)

लि०—(१) यह धीरसिंह-पौत्र राघवेन्द्र-पुत्र गदाधर कृत शारदातिलक का व्याख्यान है। यह व्याख्यान शारदातिलक के २५ वें प्रकाश, भुवनप्रकाश, तक पूर्ण है। —रा० ला० २१७२

तन्त्रप्रमोद

लि०—रामभद्र-पुत्र श्रीरामेश्वर विरचित, यह २६८ श्लोकों का ग्रन्थ ७ पटलों में पूर्ण है। इसमें निम्न निर्दिष्ट विषय प्रतिपादित हैं—कुण्ड-निर्णय, स्रुवादि-निर्णय, अग्नि-

संस्कार, होमविधि, संक्षेप होमविधि, हवनीय वस्तुओं के परिमाण आदि, संक्षेप दीक्षा-विधि आदि ।
—रा० ला० २६०

तन्त्रभूषा

लि०—भडोपनामक जयराम-पुत्र श्रीकाशीनाथ विरचित । इसमें तन्त्रों की वेद-मूलकता प्रतिपादित है ।
—ए० वं० ६२२७

तन्त्रभेद

(कादिमत का)

उ०—सौन्दर्यलहरी-टीका लक्ष्मीधरी में ।

तन्त्रभैरवी

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) आगमों में अन्यतम है ।

तन्त्रमणि

लि०—काशीश्वर विरचित । इसमें ४ पटल हैं । उनमें वर्णित विषय नीचे निर्दिष्ट हैं—गुरु और शिष्य के लक्षण आदि, कुल-अकुल चक्रों का विचार, राशिचक्र आदि, दीक्षा के मास, तिथि आदि का निरूपण, माला-संस्कार आदि, पुरश्चरण आदि, दीक्षा-प्रयोग आदि, सकल मन्त्रों की गायत्री, सामान्य पूजापद्धति । सब मन्त्रों के बीज आदि । तारा-पूजा-प्रयोग आदि, यन्त्र आदि, मन्त्रसिद्धि के उपाय आदि, बलिदानविधि आदि आदि ।
—नो० सं० ३।१२२

तन्त्रमन्त्रप्रकाश

उ०—शाक्तानन्दतरङ्गिणी में ।

तन्त्रमहार्णव

लि०—इस ग्रन्थ में १७०० श्लोक तथा २९ पटल हैं । —अ० व० १०७६१

उ०—गोरक्षसिद्धान्त-संग्रह में ।

तन्त्रमाला

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में ।

तन्त्रमुक्तावली

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में ।

तन्त्ररत्न (१)

लि०—(१) इसका नामान्तर तन्त्ररत्नदीपिका भी है। नवद्वीपनिवासी कृष्ण-विद्यावागीश भट्टाचार्य की यह रचना ५ पटलों में पूर्ण है। अनेक प्रधान-प्रधान तन्त्रों का अवगाहन और विवेचन कर उनका सारभूत यह उत्तम ग्रन्थ रचा गया है।

—इ० आ० २५७३

(२) श्रीकृष्ण विद्यावागीश कृत। इसमें १८०० श्लोक और ५ पटल हैं। उनमें निम्न निर्दिष्ट विषय प्रतिपादित हैं—चक्रविचार, दीक्षाकाल नियम, सर्वतोभद्र, मण्डलादि, साङ्गोपाङ्ग पूजन आदि की विधि, मातृकान्यास आदि का निरूपण।

—रा० ला० २४०

(३) इसमें भी उपर्युक्त सब विषय अविकल रूपसे वर्णित हैं।

—बी० कै० १३४९

(४) इसमें प्रधान रूप से तारा और काली की पूजा का विवरण है। शेष विवरण रा० ला० २४० के तुल्य है। —ए० बं० ६२०३

तन्त्ररत्न (२)

लि०—(१) शिवराम कृत। इसमें गुरु और शिष्य के लक्षण, नक्षत्र-चक्र, अकथह-चक्र, अकडमचक्र, ऋणि-धनिचक्र, विद्यारम्भ में वार और तिथि का नियम, नक्षत्र, लग्न, पक्ष और मास का निर्णय, मन्त्र-नमस्कार, दीक्षा-प्रयोग, उपदेश, पञ्चायतनी दीक्षा, पुरश्चरण, कूर्मचक्र, ग्रहण के समयके पुरश्चरण का संकल्प, विष्णुगायत्री, गोपाल-गायत्री आदि विषय वर्णित हैं। —ए० बं० ६२१०

तन्त्ररत्न (३)

लि०—सहजानन्द-शिष्य (पुत्र ?) आनन्दनाथ विरचित, विविध तन्त्रों का यत्नपूर्वक अवलोकन कर ग्रन्थकार ने इसमें श्रीचक्रविधि लिखी है। संसारसागर को पार करने की नौका रूप उक्त श्रीचक्रविधि को प्राप्त कर कौलिकश्रेष्ठ संसारसागर के पार होते हैं। इसमें वर्णित विषय हैं—कौलिकोपनिषत्, कौलिकस्वरूप, आत्मरहस्य, कौलिक-प्रतिष्ठा, कौलिकों में शक्ति की प्रधानता, कौलिकेश्वरों तथा कौलिकेन्द्रों के लक्षण आदि एवं पञ्चमकारविधि, विविध शक्तियों का निरूपण आदि।

—नो० सं० ११४०

तन्त्ररत्न (४)

लि०——नरोत्तम शुक्ल कृत। ——कैट्. कैट्. १।२२२

तन्त्रराज (१)

लि०——यह काशीराम विद्यावाचस्पति भट्टाचार्य की कृति है। इसमें गुरु तथा शिष्य के लक्षण, दीक्षा-ग्रहण की तिथि आदि विषय प्रतिपादित हैं।——नो० सं० ३।१२३

तन्त्रराज (२)

(कादिमत)

लि०——(१) इसकी श्लोक सं० ४०४० है। इसमें निम्न लिखित विषय वर्णित हैं——विद्या-प्रकरण, दक्षिणाम्नाय, उत्तराम्नाय, भाषा की सृष्टि और स्थिति, स्वप्नावती-माहात्म्य आदि, मधुमती का सिद्धिप्रकार, ककारादि का फल, अनन्तसुन्दरी का माहात्म्य, पूजा प्रकार, तान्त्रिक स्नान आदि, वेदी-प्रकार, यन्त्रादि के निर्माण की विधि, श्रीचक्र के दर्शन आदि का माहात्म्य, व्यापकादि न्यास, कामकलाध्यान आदि, अमाय, अनहङ्कार आदि १० प्रकार के पुष्प, अहिंसा, इन्द्रियनिग्रह आदि ५ प्रकार के पुष्प, ६४ उपचार तथा १६ उपचारों का उल्लेख, पुष्प आदि का निरूपण, कहाँ मानसी पूजा करनी चाहिए, इस विषय का निरूपण, वस्त्र, धूप, दीप आदि के लक्षण, नैवेद्य में देय वस्तुएँ, नैवेद्य के लिए पात्र विशेष, पादुका आदि के दान के मन्त्र, पञ्चायतन-पूजन- प्रकरण, देवी के तर्पण में अंगुलियों का निरूपण, गुरुपङ्क्तिपूजा की आवश्यकता, षडङ्गपूजा-प्रकरण, योगिनी, डाकिनी, शाकिनी आदि की संख्या का कथन, पूजा में दिशा का निर्णय, अतिरहस्य योगिनी पूजा का प्रकरण, बलिदानविधि, आरार्तिकविधि, कायिक, वाचिक और मानसिक नमस्कार, पुरश्चरण-प्रकरण, पञ्चवागेश्वरी, पञ्चकामदुधेश्वरी आदि की पूजा-विधि, मुद्रा-प्रकरण आदि। ——रा० ला० ३३८२

(२) इसमें विविध तान्त्रिक विषय वर्णित हैं। पन्ने २२५।

——बी० कै० १३४७

(३) यह मौलिक तान्त्रिक ग्रन्थ है। इसको कादिमत भी कहते हैं। यह ३६ पटलों में पूर्ण है। इ० आ० २५३८ देखें। ——क० का० २६

(४) तन्त्रराज (कादिमत या षोडशनित्यातन्त्र) उमा-महेश्वर संवादरूप, पन्ने २००, पटल ३६। म० द० ५६३२

(५) श्लोक सं० १४१९, अपूर्ण। —र० मं० ४८९७

(६) श्लोक सं० ४०००, पत्रे ८०। —डे० का० ३६२

(७) (क) श्लोक सं० ३६००, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ४९०२, तन्त्रराज कादिमतीय संवत् १६३० की लिखी हुई प्रति, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० १२२८, अपूर्ण।
—सं० वि० (क) २४१७२, (ख) २५६७८, (ग) २६१५९

(८) ब्रह्मज्ञानमहातन्त्रराज से यह अभिन्न है। —कैट्. कैट्. १।२२२

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमकल्पलता, ललितार्चन-चन्द्रिका, कालिका-सपर्याविधि (काशीनाथ कृत) तथा तन्त्रसार में।

तन्त्रराज-टीकाएँ

(१) मनोरमा—सुभगानन्दनाथ कृत इनका वास्तविक नाम श्रीकण्ठेश था। ये काश्मीर महाराज के कर्मचारी थे। प्रपञ्चसारसिंह नाम से भी इनकी प्रसिद्धि थी। इसकी पूर्ति प्रकाशानन्द ने की। —ज० का०, इ० आ०

(२) सुदर्शना—प्रेमनिधि पन्त की ३य पत्नी प्रेममञ्जरी कृत।

(३) शिवराम कृत टीका।

तन्त्रराजोत्तर

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

तन्त्रलीलावती

लि०—कर्णसिंह विरचित। केवल ३ पटल तक। —रा० पु० ४८९७

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

तन्त्रलेश

लि०—(१) श्लोक सं० ११००, अपूर्ण। —सं० वि० २३८८२

(२) नित्यानन्द कृत। —कैट्. कैट्. १।२२२

तन्त्रवटधानिका

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

तन्त्रविद्याक्रम

लि०—श्लोक सं० २४०। —डे० का० २३० (१८८३-८४ ई०)

तन्त्रविधानमुक्तावली

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

तन्त्रशेखर

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा पुरश्चर्यार्णव में।

तन्त्रसंक्षेपचन्द्रिका

लि०—भवानीशङ्कर वन्द्योपाध्याय विरचित। ग्रन्थ की पुष्पिका में वन्द्यघटीय भवानीशङ्करदेव विरचिता लिखा है। इसमें वर्णित विषय हैं—शिष्यलक्षण, गुरुलक्षण, साधक के कर्तव्य, अकडमचक्र, राशिचक्र और कुलाकुलचक्रनिरूपण, दीक्षाकाल, माला-निर्णय, मन्त्र के १० संस्कार, तान्त्रिक सन्ध्या, दुर्गादि की गायत्री, पूजा, प्राणायाम आदि का निरूपण, पुरश्चरण निरूपण, अन्नपूर्णा आदि के मन्त्रों का निरूपण, श्यामा-पूजा प्रकरण, ऋष्यादि न्यासों का निरूपण, दुर्गाशतनामस्तोत्र, श्यामास्तोत्र, शिवस्तुति, कवच आदि, संक्षेप होम, कूर्मादिचक्रों का निरूपण, सर्वतोभद्र, मण्डल आदि का निरूपण, पञ्चायतनी दीक्षा का निरूपण तथा कुण्ड-विधान। —नो० सं० २।८१

तन्त्रसंग्रह

लि०—(१) इसमें तान्त्रिक दीक्षा, गुरु का सदाचार, दीक्षा का समय आदि विषय वर्णित हैं। —ए० बं० ६२६९

(२) —कैट्. कैट्. ३।४८

तन्त्रसद्भाव

उ०—शिवसूत्रविमर्शिनी तथा चिद्वल्ली में।

तन्त्रसमुच्चय

लि०—(१) (क) रविजन्मा विरचित। श्लोक सं० १५००। (ख) केवल पूजापटल मात्र, श्लोक सं० १००। (ग) केवल दो पटल, श्लोक सं० ५००।
—अ० ब० (क) ७८९०, (ख) ९८२३ (ख), (ग) ७८८७ (क)

(२) —कैट्. कैट्. १।२२२

उ०—अभिनवगुप्त ने इसका उल्लेख किया है। —कैट्. कैट्. २।४७

तन्त्रसार

लि०—(१) अभिनवगुप्त कृत, श्लोक सं० ७७२, पूर्ण।

—डे० का० २३० (१८८३-८४ ई०)

(२) अभिनव गुप्त कृत, (क) पत्रे ४६, पूर्ण। (ख) पत्रे ३७, पूर्ण।

—डे० का० (क) ४४७, (ख) ४४८ (१८७५-७६ ई०)

(३) अभिनवगुप्त कृत —कैट्. कैट्. १।२२२,२।४७

तन्त्रसार (१)

लि०—(१) महामहोपाध्याय श्रीकृष्णानन्द भट्टाचार्य विरचित यह ग्रन्थ तान्त्रिक वाङमय का सारभूत है। इसके परिच्छेदों के विषय में मतभेद है। कोई इसके ४ परिच्छेद कहते हैं और कोई ५ परिच्छेद मानते हैं। —इ० आ० २५७४

(२) कृष्णानन्द विरचित। इसमें योगिनी-साधन, कामेश्वरी-साधन, वगलामुखी, कर्णपिशाची-मन्त्र, मञ्जुघोषा-मन्त्र, मातंगी-मन्त्र, उच्छिष्ट चाण्डाली-मन्त्र, धूमावती-मन्त्र, भद्रकाली-मन्त्र, उच्छिष्ट गणेश-मन्त्र आदि विषय वर्णित हैं।

—ए० बं० ६१८९

(३) म० म० कृष्णानन्द भट्टाचार्य विरचित। यह तान्त्रिक वाङमय का सार है। इसमें मन्त्र, न्यास, शाक्त और वैष्णव दोनों के विविध देवी देवताओं की पूजाविधि प्रतिपादित है। —बी० कै० १३५०

(४) कृष्णानन्द कृत, (क) पत्रे ३६४, पूर्ण। (ख) अपूर्ण।

—ज० का० (क) १०२३, (ख) १०२४

(५) (क) कृष्णानन्द कृत, श्लोक सं० १००००। ४ (चार) प्रतियाँ पूर्ण हैं। ५ (पाँच) प्रतियाँ अपूर्ण है—(ख) श्लो० २१००, (ग) श्लो० ७०००, (घ) श्लो० १०००, (ङ) श्लो० ४००० तथा (च) श्लो० ३००।

—अ० ब० (क) १३६९४, ४९९५, ३४४९ और ३४५० (ख) १३६३७, (ग) ८१५९, (घ) ८०११, (ङ) १०१४४, (च) ३४४८

(६) आगमवागीश कृष्णानन्द विरचित यह २७२ पत्रों का बृहत् तान्त्रिक संग्रहग्रन्थ है। इसमें तन्त्रों के गुह्यतम तत्त्वों पर प्रकाश डाला गया है।

—क० का० २७, २८ और २९

(७) कृष्णानन्द भट्टाचार्य कृत, (क) पन्ने २६२, पूर्ण। (ख) शेष दो प्रतियाँ अपूर्ण हैं।
—वं० प० (क) ४४, (ख) ३१४,९०१

(८) कृष्णानन्द वागीश भट्टाचार्य कृत। ३ प्रतियाँ हैं, तीनों पूर्ण हैं।
—र० मं० ४९३२, ४९०१ और ४९०७

(९) कृष्णानन्द विरचित, अपूर्ण। श्लो० सं० ३६००। जिज्ञासुओं और साधकों के सौकर्य के लिए सम्पूर्ण तन्त्रार्थ इसमें संक्षेपतः संकलित है।
—तै० म० ६७१२

(१०) दीक्षाविधि, माला-शोधन, मन्त्र-शोधनविधि, श्लोक सं० २५५, अपूर्ण।
—र० मं० ५००९

(११) कृष्णानन्द वागीश भट्टाचार्य विरचित, श्लोक सं० ८७६२, पूर्ण।
—डे० का० ३८८ (१८८२-८३ ई०।

(१२) कृष्णानन्द वागीश भट्टाचार्य कृत, श्लोक सं० लगभग ९५६८ पूर्ण।
—सं० वि० २३८५४

[सं. वि. में ३६ प्रतियाँ और हैं उनमें कई पूर्ण और कई अपूर्ण हैं।]

(१३) (क) कृष्णानन्द कृत तथा अमृतानन्द द्वारा परिवर्द्धित, बृहत् तन्त्रसार कृष्णानन्द कृत तथा लघु तन्त्रसार; तन्त्रसार में सम्प्रोक्षणविधि। (ख) तन्त्रसार में दीक्षाविधि, माला-शोधन, मन्त्र-शोधनविधि आदि। (ग) तन्त्रसार में विष्णु-पूजा-प्रकरण। —कैट्. कैट्. (क) १।२२२-३, (ख) ३।४८, (ग) २।४७

उ०—शाक्तानन्दतरङ्गिणी में।

तन्त्रसार (२)

लि०—सुब्रह्मण्य विरचित, श्लोक सं० २५००। १५ पटलों में पूर्ण। इसमें ५ पटलों से विष्णु की, ४ पटलों से शिव की, ३ पटलों से स्कन्द की, २ पटलों से दुर्गा की और १ पटल से शास्ता की पूजा वर्णित है। —ट्रि० कै० १०२४ (ख)

तन्त्रसार (३)

लि०—सिद्धनाथ कृत, श्लोक सं० २८८, अपूर्ण, —सं० वि० २५४५२

तन्त्रसार (४)

लि०—(१) मुकुन्दलाल कृत, (२) रामभद्र कृत, (३) रामानन्द तीर्थ कृत।
—कैट्, कैट्. १।२२३

तन्त्रसारपरिशिष्ट

लि०––यतिवर विरचित। यदि गुरुकुल का व्यक्ति छोटी अवस्था का भी हो तो भी उसे गुरु बना लेना चाहिए। ज्ञानवृद्ध ब्राह्मण अपने से कनिष्ठ हो तो भी उसे गुरु बना लेना चाहिए। दीक्षा का समय, दीक्षा योग्य मन्त्र का विचार, मन्त्र के दस संस्कार, आगमतत्त्वविलास में उक्त दीक्षाविधि, मन्त्रचैतन्य कथन, मन्त्रेन्द्रिय ज्ञान कथन, सप्ताङ्ग पुरश्चरण का प्रतिपादन, ग्रहण-व्यवस्थादि, कलियुग में होम का निषेध, मिश्रित आचार, गुरु-ध्यान, गायत्री-ध्यान आदि, तान्त्रिक सन्ध्या की नित्यता, विशेष पूजा, अन्तर्यागमुद्रा, तान्त्रिक लिङ्गपूजा, काम्यपूजादि, दीपान्वित पूजा की व्यवस्था, रटन्ती-पूजा व्यवस्था, अजपामन्त्रप्रयोगादि, सीता, राधा आदि के मन्त्र, ताराष्टक का व्याख्यान, कवच आदि।

––नो० सं० ३।१२४

तन्त्रसारपूजापद्धति

लि०––इसमें तन्त्रसार के अनुसार मध्वाचार्य के हृत्कमलनिवासी लक्ष्मीनारायण देव की पूजापद्धति वर्णित है। ––ए० बं० ६४९५

तन्त्रसारसंग्रह

लि०––(१) श्लोक सं० ४४०, पूर्ण। ––सं. वि. २५४२३

(२) श्लोक सं० १५५४, आनन्दतीर्थ विरचित, पूर्ण।

––सं० वि० २५५१४

(३) आनन्दतीर्थ विरचित।

––कैट्. कैट्. १।२२३, २।४७,

(४) तन्त्रसारसंग्रह-टीका। ––ए० बं० ६१८५, ८६

तन्त्रसारस्वत

लि०–– ––प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

तन्त्रसिद्धान्तकौमुदी

लि०––भडोपनामक श्रीजयरामभट्ट-पुत्र वाराणसी-गर्भसंभव काशीनाथ विरचित। इस ग्रन्थ में तीन प्रकाश है। उनमें क्रमशः शाम्भव उपाय, शाक्त उपाय और आणव उपाय प्रदर्शित हैं। ––ए० बं० ६२२२

तन्त्रहृदय

लि०—(१) मडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित, श्लोक सं० १५०। यह दक्षिणाचारविषयक ग्रन्थ है। —अ० व० १०५९६

(२) अनन्त-शिष्य नागपुरवास्तव्य जयराम-पुत्र काशीनाथ भट्ट विरचित। इस पर ग्रन्थकार की स्वरचित टीका है। —रा० पु० ७७११

(३) काशीनाथ विरचित, श्लोक सं० २११, पूर्ण।

—सं० वि० २४७८८

उ०—कृष्णानन्द कृत तन्त्रसार में।

तन्त्राधिकार

लि०—(१) पञ्चरात्र तन्त्रों का प्रामाण्य सिद्ध करने के लिए यह ग्रन्थ निर्मित है। दो प्रतियाँ हैं। —तँ० म० ३५९–६०

तन्त्राधिकारिनिर्णय

लि०—(१) भट्टोजि कृत, श्लोक सं० ६२४, पूर्ण। दो प्रतियाँ हैं।

—र० मं० ४८६१, ४९६२

(२) (क) भट्टोजि कृत। (ख) यह ग्रन्थ पञ्चरात्र के अनुयायियों द्वारा उपयोग में लाये जाने वाले तान्त्रिक अधिकारों के अनुसन्धान पर लिखा गया है।

—कैट्. कैट्. (क) १।२२३, २।४७, (ख) ३।४८

तन्त्राभिधान

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

तन्त्रामृत

लि०—(१) (क) कुलमणि शुक्ल कृत।
(ख) रामभद्र कृत। —कैट्. कैट्. १।२४८
(२) रामभद्रकृत। – कैट् कैट्. ३।४८
उ०—आगमतत्त्वविलास में।

तन्त्रार्णव

उ०—तन्त्रसार में।

तन्त्रालोक (सटीक) (१)

लि०—(१) मूलकार—अभिनवगुप्त; टीकाकार—जयरथ। —रा० ला० १७५५

(२) पूर्ण। —डे० कां० ४४९ (१८७५-७६ ई०)

[डे. का. में ४ प्रतियाँ और है जिनमें २ पूर्ण और २ अपूर्ण हैं जिनकी सं या क्रमशः पूर्ण—४५० और ४५२ है, अपूर्ण ४५१ और ४५३।]

तन्त्रालोकटीका (२)

लि०—यह अभिनवगुप्त कृत तन्त्रालोक पर जयरथ कृत टीका है।

तन्त्रालोकविवेक

लि०—श्लोक सं० २५६२, अपूर्ण। —सं० वि० २६६९२

तन्त्रावलोक

उ०—योगिनीहृदय-दीपिका में।

तन्त्रोक्तचिकित्सा

लि०—शिव-पार्वती संवादरूप, श्लोक सं० ८८८। इसमें बहुत-से रोगों की ओषधियों के साथ जगद्वशीकरण, वीर्यकरण, स्थूलीकरण, सर्वविषहरण, स्त्रीवन्ध्यात्वहरण, आदि विषय भी प्रतिपादित है। —रा० ला० ६४४

तन्त्रोत्तरतन्त्र

उ०—वीरसिंह कृत वीरसिंहावलोक में।

तन्त्रोत्तरप्रदीप

यह वातुलतन्त्र का एक अंश है। द्रष्टव्य मायिदेव का अनुभवसूत्र।

तन्त्रोपतन्त्रनाम

लि०— —कैट्. कैट्. १।२२३

तपस्विराज

उ०—शिव उपाध्याय कृत विज्ञानभैरवटीका में।

तप्तमुद्राविद्रावण

लि०—उमामहेश्वराचार्य-पुत्र भास्कर दीक्षित विरचित, श्लोक सं० १६००, अपूर्ण।

—अ० ब० ६२८८

तरुणीविलास

लि०—श्लोक सं० ९४। —अ० ब० ३५२७

तान्त्रकुण्डसिद्धिप्रयोग

लि०—

—कैट्. कैट्. १।२२८

तान्त्रिककृत्यविशेषपद्धति

लि०—इसमें पशुदानविधि, शिवाबलि-प्रकार, कुमारीपूजा, पञ्चतत्त्वशोधन तथा पात्रवन्दन इत्यादि तान्त्रिक विधियों की पद्धति वर्णित है।

तान्त्रिकपूजापद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० २५०। इसमें वर्णित विषय हैं—तान्त्रिक सन्ध्याविधि, वैष्णवाचमनविधि, सामान्य अर्घ्यस्थापन, करन्यास और अङ्गन्यास, शरीर के भीतर स्थित चतुर्दलपद्म में व,श,ष,स आदि चारवर्णों का न्यास, सब अङ्ग-प्रत्यङ्गों में मातृकान्यास, छह अङ्गों में केशव आदि, कीर्ति आदि देवतायुगल का न्यास, फिर वहीं पर प्राणादि, सत्यादि तत्त्वों का न्यास, प्राणायाम, देवता पीठ न्यास, मानस पूजा, शंख स्थापनादि प्रकार, पीठपूजा, देवतापूजन आदि। —रा० ला० ९२४

(२) (क) श्लोक सं० २६७२, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ६४३, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४९७५, (ख) २५४९१

[सं० वि० में २ प्रतियाँ सं० २५४९० तथा २५६८६ की और हैं। ये अत्यन्त अपूर्ण हैं।]

तान्त्रिकप्रयोग

लि०—श्लोक सं० ८८, अपूर्ण। —सं० वि० २४१५०

तान्त्रिकप्रयोगसंग्रह

लि०—श्लोक सं० ९२५, पूर्ण। इसमें काम्य शिवलिङ्ग-पूजाविधि, काम्य-प्रयोग, स्तोत्र, कवच आदि विविध विषयों का संग्रह है। —सं० वि० २४५६०

तान्त्रिकप्रातःकृत्य

लि०—श्लोक सं० ४०, अपूर्ण। इसमें त्रिपुरसुन्दरीकल्पोक्त तान्त्रिक स्नानविधि और पूजा प्रतिपादित है।

—सं० वि० २५४१२

तान्त्रिकप्रायश्चित्तविधि

लि०—श्लोक सं० १३०, अपूर्ण। —सं० वि० २३९४०

तान्त्रिकभूतशुद्धि

लि०—श्लोक सं० १५०। —अ० ब० ११८१६

तान्त्रिकसन्ध्याविधि

लि०—(१) श्लो० सं० ५००, पूर्ण। —अ० ब० १०४२६

[अ० ब० में ३ प्रतियाँ सं० १३४९, ९५३० तथा ५६९२ और है। वे सब अपूर्ण प्रतीत होती हैं]

(२) वैदिक सन्ध्या करने के अनन्तर तान्त्रिक सन्ध्या का विधान तथा उसका प्रयोग इसमें निर्दिष्ट है। —म० द० ५६३९

(३) पूर्ण। —बं० प० ४२९

(४) श्लोक सं० लगभग ७३, अपूर्ण। —सं० वि० २६२१८

तान्त्रिकहवनपद्धति

लि०—प्रकाशानन्दनाथ कृत, (क) श्लोक सं० १५०,। (ख) श्लोक सं० २००।
—अ० ब० (क) ९९८०, (ख) ११२८० (ग)

तान्त्रिकहोमविधि

लि०—श्लोक सं० १००, इसका नामान्तर—शावाग्निहोमविधि भी है।
—अ० ब० ८८४२

तान्त्रिकाग्निमुखप्रयोग

लि०—श्लोक सं० १३४, पूर्ण। —सं० वि० २४७९०

तारकब्रह्मपटल-गुह्यनिरूपण

लि०— —कैट्. कैट्. २।४८

ताराकर्पूरस्तोत्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

ताराकल्प

लि०— —कैट्. कैट्. १।२२९

ताराकल्पलता

लि०—नारायणभट्ट विरचित। —कैट्. कैट्. १।२२९

उ०—कालिकासपर्याविधि (कालीनाथ कृत) में।

ताराकल्पलता पद्धति

लि०—विद्यानन्द (श्रीनिवास) शिष्य नित्यानन्द (नारायणभट्ट) विरचित, श्लोक सं० ६४०, अपूर्ण। —र० मं० ४८८१

ताराक्षोभ्यसंवाद

लि०—(१) श्लोक सं० ३००। यह तारा और अक्षोभ्य (शङ्कर) का संवाद रूप है। इसमें तारा देवी का माहात्म्य वर्णित है। —रा० ला० ३६१

(२) अक्षोभ्य-तारा संवाद रा० ला० ४०५ से यह अभिन्न है।

—कैट्. कैट्. १।२२९

तारातत्त्व

लि०—

—कैट्. कैट्. १।२२९

तारातन्त्र

लि०—(१) यह भैरव-भैरवी संवादरूप है। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—पञ्चाक्षर उग्रतारा महामन्त्र का माहात्म्य, बुद्ध रूपी जनार्दन द्वारा अनुष्ठित प्रातःकृत्यों का निरूपण, विविध पूजाओं में मानसिक और यान्त्रिक पूजाविधि, कुलाचार आदि का प्रतिपादन, पुरश्चरण निरूपण आदि। —नो० सं० १।१४६

(२) तारा की पूजा आदि पर रचित, भैरव-भैरवी संवाद रूप तथा छह पटलों में पूर्ण।

—क० का० ७६ (ङ)

(३) इसमें तारा देवी की पूजा विधि वर्णित है। —बी० कै० १३५५

(४) (क) छह पटलों में पूर्ण। अपूर्ण। (ख) इस संग्रह में एक अपूर्ण प्रति और है। —बं० प० (क) १३९८, (ख) ७४०

(५) श्लोक सं० १५०, पूर्ण। यह ग्रन्थ छह पटलों में राजशाही की वीरेन्द्र रिसर्च सोसाइटी में प्रकाशित हो चुका है (सन् १९१३ ई० में)।

—ए० बं० ५९२९

(६) (क) इस प्रति की श्लोक सं० १९६ कही गयी है फिर भी यह अपूर्ण कही गयी है। इसके अतिरिक्त १ प्रति और है (ख) उसकी श्लोक सं० १६८ है, और वह पूर्ण कही गयी है। —सं० वि० (क) २४४७०, (ख) २४७२९

(७) छह पटलों में पूर्ण। —कैट्. कैट्. ३।४९

उ०—कौलिकार्चनदीपिका, पुरश्चर्यार्णव, कालिका-सपर्याविधि, सर्वोल्लासतन्त्र तथा तन्त्रसार में। सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

तारापञ्चाङ्ग

लि०—(१) श्लोक सं० १३००, पूर्ण। इसमें १. तारासहस्रनाम, २. तकारादि तारासहस्रनाम, ३. मन्त्रसिद्धि का उपाय, ४. होम, ५. तारापटल, ६. तारास्तव, ७. ताराकवच, ८. स्तोत्र, भूतशुद्धि, भूशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृकान्यास, बहिर्मातृकान्यास—ये विषय वर्णित हैं। —ए० बं० ६३३१

(२) देवी-भैरव संवादरूप। इसमें १. तारापटल, २. तारापूजापद्धति, ३. तारासहस्रनाम (तारार्णवीय), ४. त्रैलोक्यमोहन नामक ताराकवच (भैरवीतन्त्रोक्त), ५. महोग्रतारास्तवराज (ताराकल्पीय) ये विषय वर्णित हैं। इनमें तारादेवी की महिमा तथा उनके सहस्रनाम, कवच, स्तवराज आदि की सर्वोत्कृष्टता, सर्वविध उत्कर्षप्रदता वर्णित है। —नो० सं० २।८२

(३) श्लोक सं० ३००, अपूर्ण। —अ० ब० १२८१६

(४) (क) श्लोक सं० लगभग ११००, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग ११०० पूर्ण, इसमें (क) की अपेक्षा आरंभ में पाठ भेद दिखायी देता है।
—र० मं० (क) ३४९३, (ख) ४८२९

(५) (क) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० २०८, पूर्ण (?)। (ख) श्लोक सं० ५१२, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २५४४०, (ख) २६४२२

(६) नरसिंह कृत (?)। —कैट्. कैट्. १।२२९

तारापटल

लि०—(१) श्लोक सं० ७२, अपूर्ण। —सं० वि० २४५६४

(२) —कैट्. कैट्. १।२२९

तारापद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० ६००, पूर्ण। इसमें संक्षेपतः तारा की पूजापद्धति वर्णित है। —ए० बं० ६३३३

(२) (क) श्लोक सं० ६००, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३००, अपूर्ण।
—अ० व० (क) ९००६, (ख) ९९६७

(३) नारायण कृत, देखें, उग्रतारापद्धति। —कैट्. कैट्. १।२२९

तारापूजनवल्लरी

लि०— —कैट्. कैट्. १।२२९

तारापूजापद्धति

लि०—(१) ताराभक्तिसुधार्णव से गृहीत। इसमें तारादेवी की पूजाविधि तथा प्रयोग वर्णित है। —नो० सं० १।१४७

(२) (क) श्लोक सं० २५६, प्रातः कृत्य से लेकर जपरहस्य तक। (ख) श्लोक सं० ८७०, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० लगभग ५४७, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० ३१४, अपूर्ण। (ङ) श्लोक सं० लगभग २४४, अपूर्ण।
—सं० वि० (क) २६४४३, (ख) २६५८१, (ग) २४७९९, (घ) २५१४५, (ङ) २६६२३

(३) —कैट्. कैट्. १।२२९ तथा २।४८

तारापूजाप्रयोग

लि०—अपूर्ण। इसमें तारा देवी की पूजापद्धति वर्णित है।
—ए० बं० ६३३४

तारापूजारसायन

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ कृत, श्लोक सं० २८०, पूर्ण। इसमें तारा पूजापद्धति तथा साधक के प्रातःकृत्य आदि वर्णित हैं। —ए० बं० ६३३०

ताराप्रकरण

उ०—रघुनन्दन कृत मलमासतत्त्व में।

ताराप्रदीप

लि०—(१) लक्ष्मणदेशिक विरचित, (क) श्लोक सं० १२६०,५ पटलों में पूर्ण। (ख) पाँचवाँ पटल मात्र है। इसकी पुष्पिका में रचयिता का नाम यादवाचार्य लिखा है।
—ए० बं० (क) ६३२२, (ख) ६३२३

(२) छः पटलों में पूर्ण। इसमें प्रतिपादित विषय यों हैं—तारा के मन्त्र आदि, पूजा-संकेत आदि, मारण, उच्चाटन आदि के मन्त्रों का संकेत, साधन-संकेत, नाना मन्त्रों का प्रतिपादन एवं अन्तर्याग, बहिर्याग आदि का निरूपण। —नो० सं० ३।१२८

(३) लक्ष्मणदेशिक कृत। अपूर्ण। —बं० प० १३९३

(४) लक्ष्मणदेशिक कृत। ५ पटलों में पूर्ण। उनमें प्रतिपादित विषय हैं—१म पटल में मन्त्रसाधना का विवरण, २ य में पूजासंकेत, ३ य में मन्त्रसंकेत, ४र्थ में साधन-सकेत एवं पञ्चम में नाना मन्त्र प्रतिपादित हैं। —रा० ला० २३६

(५) श्लोक सं० ९००, ५ पटलों में पूर्ण। विषय—१म पटल में गुरु, शिष्य आदि के लक्षण, २ य में पूजा, ज्ञान आदि का प्रतिपादन, ३ य में तारा महाविद्या की १३ अवान्तर महामूर्तियों का निरूपण, ४ र्थ में मारण, उच्चाटन आदि के विविध उपायों का वर्णन तथा ५म में मन्त्रसाधना के विविध प्रभेदों का वर्णन। —रा० ला० २८४

(६) ५ पटलों में शाक्तों के सिद्धान्त, आचार और नियम जो तारापूजन में आवश्यक ह उनका इसमें प्रतिपादन है। इसके कर्ता लक्ष्मणदेशिक हैं।

—बी० क० १३५२

ताराभक्तितरङ्गिणी (१)

लि०—(१) (क) विमलानन्दनाथ विरचित, श्लोक सं० २००० (अनुक्रमणिका सहित)। (ख) आद्यन्तहीन, अपूर्ण। —अ० ब० (क) ११११, (ख) १२६८६

(२) विमलानन्द कृत। श्लोक सं० लगभग २०००। —र० मं० ४९३०

(३) सप्तशतिका-विधान विमलानन्दनाथ कृत। —कैट्. कैट्. २।४८

ताराभक्तितरङ्गिणी (२)

लि०—(१) प्रकाशानन्दनाथ कृत। यह ४ तरङ्गों में है। इसमें कुल धर्मानुसार तारा देवी की पूजाविधि विवृत है। —बी० कै० १३५६

(२) प्राकाशानन्दनाथ विरचित। —कैट. कैट्. १।२२९

ताराभक्तितरङ्गिणी (३)

लि०——(१) नदिया के महाराज कृष्णचन्द्र की प्रेरणा से काशीनाथ द्वारा विरचित। इसकी श्लोक सं० ६४५ तथा तरंग सं० ६ है। इसके १म तरङ्ग में नदिया के महाराज कृष्णचन्द्र का वंशवर्णन किया गया है, २य से ५ म तक मोक्षोपायों का निरूपण है एवं छठे तरंग में कतिपय स्तुतियों द्वारा ताराभक्ति तथा तारा के शरणागतों की संसारनिवृत्ति वर्णित है। ——रा० ला० १६०७

(२) काशीनाथ द्वारा सन् १६८२ ई० में विरचित। ——कैट्. कैट्. १।२२९

ताराभक्तिसुधार्णव

लि०——(१) कीर्तिकर, तत्पुत्र हरिहर, तत्पुत्र रुचिकर, रुचिकर-प्रपौत्र, श्रीकृष्ण-पौत्र, गदाधर-पुत्र नरसिंह कृत। श्लोक सं० ११२०४, २२ तरंगों में पूर्ण। उनमें प्रतिपादित विषय हैं——शिवा और शिव के संवाद द्वारा मन्त्र-माहात्म्यवर्णन, मन्त्रोद्धार प्रकार आदि, गुरु और शिष्य के लक्षण, दीक्षाविधि, दीक्षा के लिए देश, काल आदि का निरूपण, वास्तुयागविधि, तारा, कलावती और वेधमयी दीक्षाएँ, पूर्णाभिषेक, समयाचार, यन्त्र आदि कथन, दिव्य और वीर, पशु भाव आदि का निरूपण, नित्यकर्मविधि, विविध न्यास, मन्त्रादि की शुद्धि, तारागुरु-निरूपण, तत्त्वशुद्धि, बटुक के लिए बलिदान आदि, आवाहन, ताराध्यान, उपचारविधि, पाँच प्रकार की महामुद्राएँ, विविध मुद्राएँ, आवरणपूजादि, बलिदान, नित्यहोम, पञ्चम यागविधि, पूजादिन के कृत्य, कुमारी-पूजा, विविध विद्याओं के ध्यान, न्यास, कवच आदि। ——रा० ला० ३३१२

(२) नृसिंह ठक्कुर कृत। इसमें तारा या तारिणी देवी का पूजन-क्रम निर्दिष्ट है। यह शाक्त तन्त्र है। इसमें ८ तरंग हैं। ——इ० आ० २५९६

(३) गदाधर-शिष्य नरसिंह ठक्कुर कृत। इसमें ८ तरंग हैं। दीक्षाविधि——विविध दीक्षाएँ, उनके उपयोगी काल——मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, लग्न आदि——का निर्णय आदि। ——ए० बं० ६२२६

(४) यह तन्त्रग्रन्थ रुद्रयामल, तत्त्वबोध, तन्त्रचूड़ामणि, मत्स्यसूक्त, तारार्णव आदि ग्रन्थों का अवलोकन कर म० म० नरसिंह ठक्कुर द्वारा संगृहीत है। इसमें ११ तरंग हैं। ——क० का० ३१, ३

(५) इसमें तारा की पूजा से संबन्ध रखने वाले विविध मन्त्र, मुद्रा, न्यास, ध्यान, स्तोत्र आदि विविध विषय वर्णित हैं। ——बी० कै० १३५१

(६) ठक्कुर श्रीनरसिंह कृत। (क) श्लोक सं० ७५००, तरंग ११। (ख) श्लोक सं० १५००, अपूर्ण; तरंग १२ से १५ तक। (ग) श्लोक सं० ३०००, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० ५००, १२ वाँ तरंग मात्र। (ङ) श्लोक सं० १५००, तरंग ७ से १० तक, अपूर्ण।

—अ० ब० (क) ८१२७, (ख) ९१४३, (ग) १०२००, (घ) १०७८२, (ङ) १०६१६

(७) नरसिंह ठक्कुर कृत (क) श्लोक सं० लगभग ५२८०, अपूर्ण। पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दो खण्डों में विभक्त इसमें तरङ्ग १ से १४ तक हैं। (ख) श्लोक सं० लगभग ६२५, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० २६५, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० ३७८, अपूर्ण, ११ वाँ तरंग मात्र।

—सं० वि० (क) २४९८६, (ख) २४१८५, (ग) २६२१३, (घ) २६२१४

(८) (क) गदाधर-पुत्र नरसिंह विरचित। २० तरङ्गों में पूर्ण। (ख) २० तरङ्गों में, नरसिंह ठक्कुर विरचित। 'ताराभक्तिसुधार्णवे पूजापद्धतिः'। (ग) नरसिंह ठक्कुर कृत। —कैट्. कैट्. (क) २।४८, (ख) ३।४९, (ग) १।२२९

तारारहस्य (१)

लि०—(१) तनुभवसुत (?) ब्रह्मानन्द परमहंस विरचित, रचना-काल शकाब्द १७३५। इसमें वर्णित विषय हैं—प्रातःकृत्य, मन्त्रोद्धार, शिवलिङ्गपूजा, पूजा, होम, जप, तत्त्वादि का रहस्य, पुरश्चरण आदि का निरूपण तथा एकजटा के स्तोत्र, कवच आदि। —नो० सं० १।१४८

(२) ब्रह्मानन्द गिरि तीर्थकृत। पूर्ण। —ज० का० १०२७

(३) ब्रह्मानन्द परमहंस कृत (क) श्लोक सं० लगभग २०००। (ख) श्लोक सं० लगभग ११८२, अपूर्ण। २य पटल से ८ म पटल तक, विषयसूचीयुत। (ग) श्लोक सं० लगभग ४८१, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० २०७३, पूर्ण, १४ पटलों में।

—सं० वि० (क) २६३९३, (ख) २५९६९, (ग) २६३१५, (घ) २६३९४

(४) ब्रह्मानन्द कृत। —कैट्. कैट्. ३।४९

तारारहस्य (२)

लि०—(१) श्रीकिशोरपुत्र श्रीराजेन्द्र शर्मा द्वारा विरचित। यह २२ परिच्छेदों में पूर्ण है, इसकी श्लोक सं० १३०० है। इसके प्रथम ३ परिच्छेदों में प्रातःकृत्य, गुरुस्तोत्र आदि का विवरण है; ४र्थ में स्नान आदि का विधान, ५म में स्थान-शुद्धि, ६ष्ठ में प्राणायाम

विधि, ७म में भूतशुद्धि, कालपुरुष आदि का निरूपण, ८म, ९ म और १० म में मानस पूजा का विवेचन, ११ श में मन्त्र आदि का विवेचन तथा १२ श में अर्घ्य-शोधन विशेष निरूपण, १३श में देवी पूजा का निरूपण, १४श में पूजा में पुष्प आदि का विचार, तारा स्तोत्र आदि विविध विषय वर्णित हैं। —नो० सं० २।८३

(२) २० परिच्छेदों में राजेन्द्र शर्मा विरचित।

—कैट्. कैट्. ३।४९

ताररहस्यवृत्तिका

लि०—(१) लम्बोदर-पौत्र कमलाकर-पुत्र गौडीय शङ्करागमाचार्य विरचित। १५ पटलों में पूर्ण। उनके विषय हैं—नित्य पूजा में प्रमाण, दीक्षाविधि, पुरश्चरण, नैमित्तिक कर्म का निर्णय, काम्यनिर्णय, रहस्यनिर्णय, कुमारीनिर्णय, पुरश्चरणरहस्य, देवी के मन्त्र और विद्या का निर्णय, देवी-स्तोत्र, देवी-माहात्म्य, सम्यग् भावों का निर्णय, नित्य पूजा-प्रयोग, होमविधि तथा मन्त्रों का वासना तत्त्व निर्णय आदि। —इ० आ० २६०३

(२) तारा देवी के पूजा-विवरण से पूर्ण। —ए० बं० ६३२०

(३) गौड़देशीय शङ्कराचार्य द्वारा विरचित, इसमें १५ पटल हैं।

—ने० द० १।१०७६ (झ)

(४) गौड़भूमिनिवासी म० म० श्रीशङ्कराचार्य विरचित। इसका नामान्तर 'वासनातत्त्ववोधिनी' है। इसमें तारा के पूजनादि विषय वर्णित हैं।

—रा० ला० ५१२

(५) यह शङ्कराचार्य विरचित ताररहस्य की टीका (?) है। इन शङ्कराचार्य की महामहोपाध्याय उपाधि भी लिखी है। यह पूरे १५ पटलों पर व्याख्या है। [वास्तव में ग्रन्थकार शङ्कर आगमाचार्य हैं।] —बी० कै० १३५३

(६) (क) पत्रे ७२, पूर्ण। (ख) पत्रे ५२, अपूर्ण। (ग) पत्रे ११७, पूर्ण।

—वं० प० (क) १०८, (ख) ७३२, (ग) १२६८

(७) (क) यह तान्त्रिकसंग्रह ग्रन्थ (ताररहस्यविवृत्ति) १५ पटलों में पूर्ण है लम्बोदर पौत्र, कमलाकर-पुत्र गौड़देशवासी शङ्कराचार्य कृत यह टीका ताररहस्य की व्याख्या है।

(ख) ताररहस्यतन्त्र की यह टीका १५ पटलों में पूर्ण है। नित्य पूजा, दीक्षाविधि, पुरश्चरण, काम्यनिर्णय, रहस्यनिर्णय, कुमारीपूजा, पुरश्चरणरहस्य, तन्त्रनिर्णय, स्तोत्र

आदि विषय इसमें वर्णित है एवं नीलतन्त्र, वीरतन्त्र, मत्स्यसूक्त, भैरवीतन्त्र, महाभैरवी-तन्त्र, विज्ञानेश्वरसंहिता, विशुद्धेश्वरतन्त्र आदि के वचन प्रमाणरूप से उद्धृत हैं।
—क० का० (क) ३३, (ख) ७६ (३)

(८) (क) श्लोक सं० २०० (पटल ३ से ८ तक), अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० २०००, पटल १ से १५ तक, अपूर्ण। शङ्कर कृत। —अ० व० (क) १७००, (ख) २९२

(९) कमलाकर-पुत्र शङ्कर विरचित (क) श्लोक सं० २५००, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १४५२, पटल सं० १ से ९ तक, अपूर्ण।
—र० मं० (क) ४९६५, (ख) ४९७३

(१०) शङ्कर आचार्य विरचित, पूर्ण।

[इसमें दी हुई पत्र सं० (१–८) गलत मालूम पड़ती है। उसके अनुसार ग्रन्थ का आकार बहुत लघु होता है परन्तु यह १५ पटलों में पूर्ण ग्रन्थ २५०० श्लोकात्मक है यह ऊपर दिखलाया गया है।] —सं० वि० २३९३९

(११) (क) तारारहस्यवृत्तिका १५ पटलों में पूर्ण; कमलाकर-पुत्र शङ्कर कृत। (ख) तारारहस्यवृत्तिका या वासनातत्त्वबोधिका (नी ?) बंगाल के शङ्कराचार्य द्वारा विरचित। (ग) तारारहस्यवृत्तिका—कमलाकर-पुत्र शङ्कराचार्य कृत।
—कैट्. कैट्. (क) २।४८, (ख) १।२२९, (ग) ३।४९

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

ताराचंन

लि०— —कैट्. कैट्. १।२२९

ताराचंनकल्पवल्ली

लि०—श्लोक सं० ९०, अपूर्ण। —सं० वि० २६२५९

ताराचंनचन्द्रिका

लि०—जगन्नाथ भट्टाचार्य विरचित। श्लोक सं० ४५०, पूर्ण। इसमें तारा देवी की पूजापद्धति के साथ-साथ उपासक (साधक) के प्रातःकालीन देवी-ध्यान आदि कृत्य वर्णित हैं। —ए० बं० ६३२६

ताराचंनतरङ्गिणी

लि०—रामकृती विरचित, श्लोक सं० ११००, अपूर्ण। इसमें चार तरंग हैं। उनमें तारा देवी की पूजा विस्तार से वर्णित है। —ए० बं० ६३२९

तारार्णव

उ०——तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव तथा तारारहस्यवृत्ति में।

ताराविलासोदय

लि०——(१) वासुदेव कविकङ्कण चक्रवर्ती कृत, श्लोक सं० ९००, १० उल्लासों में पूर्ण। इसमें तारा-पूजा विस्तार से प्रतिपादित है। ——ए० बं० ६३२७

(२) वासुदेव कविचक्रवर्ती कृत। श्लोक सं० ७९३, उल्लास १०। उनमें प्रतिपादित विषय हैं——तारादेवी के पूजन का फल, मन्त्र, वासना और काल का विचार, तारा-पूजन का क्रम, पुरश्चरणविचार, होमयज्ञविधि, तारा-मन्त्र के न्यास का प्रकार, तारास्तोत्रविवेक, तारामन्त्र-न्यास, ताराकवच, सिद्धविद्या, शिवाबलि आदि का विवरण, तारा के विषय की अथर्वश्रुति का विवरण आदि। ——रा० ला० १६०२

(३) १० उल्लासों में पूर्ण। चीनक्रममन्त्रवारिधि के आधार पर वासुदेव कविकङ्कण चक्रवर्ती-विरचित यह ग्रन्थ तारा की उपासना का प्रतिपादक है। ——क० का० ३०

ताराविशेषप्रकरण

लि०—— ——कट्. कैट्. १।२२९

ताराषट्पदी

उ०——आगमाचार्य शङ्कर विरचित तारारहस्यवृत्तिका में।

तारासहस्रनामव्याख्या——अभिधार्थचिन्तामणि

लि०——लक्ष्मीधर पुत्र विश्वेश्वर विरचित। ——कैट्. कैट्. २।४८

तारासहस्रनामस्तोत्र

लि०——बालाविलासतन्त्रान्तर्गत। इसमें तारा के तकारादि सहस्र नाम हैं। कुछ स्तकारादि भी दीख पड़ते हैं। दे० 'तकारादिस्वरूप'। ——ए० बं० ६६६३–६५

तारासूक्ति या तारासूक्त

लि०——(१) शक्तिसंगमतन्त्र से गृहीत। श्लोक सं० १०००, ६ठे से ११ वें पटल तक, अपूर्ण। ——अ० ब० ६८६८

(२) श्लोक सं० १७५०, पूर्ण। शक्तिसङ्गमतन्त्रान्तर्गत। ——सं० वि० २३९३६

(३) तारास्तुति रूप। ——बी० कै० १३५४

तारिणीकल्प

उ०—तन्त्रसार में।

तारिणीतन्त्र

उ०—शक्तिरत्नाकर, पुरश्चर्यार्णव, तन्त्रसार तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

तारिणीतारक ब्रह्मकूटाष्टोत्तरशतसहस्रनामस्तोत्रराज

लि०—नीलतन्त्र के उत्तर खण्ड के अन्तर्गत शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें तारा देवी के तकारादि अष्टोत्तर और सहस्र नाम वर्णित हैं। —नो० सं० ३।१२९

तारिणीनिर्णय

उ०—तन्त्रसार तथा पुरश्चर्यार्णव में।

तारिण्यष्टक

लि०—श्रीरामजय विरचित। इसमें स्तोत्र के बहाने तारिणी देवी का माहात्म्य वर्णित है। —नो० सं० १।१४९

तारैकजटार्चनपद्धति

लि०—श्लोक सं० २४०, पूर्ण। —सं० वि० २६५८०

तारोपनिषत्

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

तिमिरचन्द्रिका

लि०—(१) रामरत्न कृत। श्लोक सं० ६५०। इसमें तान्त्रिक पूजा का विवरण तथा तान्त्रिक साधक के दैनिक कृत्यों का विवरण दिया गया है। इसमें वर्णित विषय हैं—दीक्षादिनिर्णय, प्रातःकृत्यनिर्णय, दन्त-धावनादिनिर्णय, अन्तर्यागादिविधिनिर्णय, स्थान-शोधन आदि पूर्वक पूजा का निर्णय, निशापूजन आदि, शिवलिङ्गार्चन आदि।

—ए० बं० ६२०८

(२) १७ उल्लासों में श्लोक सं० लगभग १५०० कही गयी है। ऊपर कहे गये विषयों के अतिरिक्त यन्त्रादिनिर्णय, मालादिनिर्णय, नित्यजपादिनिर्णय, कुण्डादिनिर्णय तथा साधननिर्णय विषय इसमें अधिक वर्णित हैं। —नो० सं० ४।१११

(३) रामरत्न कृत। —कैट्. कैट्. ३।५०

तिरस्करिणीमन्त्र

लि०—श्लोक सं० १००। —अ० ब० १०८१७

तीक्ष्णकल्प

लि०—द्विजश्रेष्ठ चन्द्रप्रतापी राजा श्रीराधामोहन द्वारा स्वयं रचित या उनकी प्रेरणा से किसी अन्य विद्वान् के द्वारा रचित ग्रन्थ शकाव्द १७३२ में आविर्भूत हुआ। इसमें ५ पटल और लगभग ३००० श्लोक हैं। इसमें वर्णित विषय—प्रातः काल के जप, पूजा आदि की विधि, यन्त्र आदि का विवरण, आसन-शुद्धि, मातृकाध्यान आदि, ध्यान-विधि, न्यास आदि का विवरण, एकजटा की पूजा, पूजा के उपचार आदि, मन्त्राभिषेक, नित्या के साधक स्तव आदि, पुरश्चरण के स्थानों का निर्देश, माया के स्तोत्र आदि, मुद्रा आदि का निरूपण आदि। —नो० सं० ३।९०

तुरीयोपस्थानविधि

लि०—पन्ने ५। —रा० पु० ५७२२

तुलातन्त्र

उ०—चतुर्वर्गचिन्तामणि के दानखण्ड में।

तूर्णयाग

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

तृचकल्पपद्धति

लि०—वैद्यनाथ कृत। रोगों की समूल निवृत्ति पूर्वक शीघ्र आरोग्यलाभ के लिए तृचकल्प में उक्त रीति के अनुसार तृच का न्यासपूर्वक मण्डल लेखन, पीठपूजन, प्रधान-मूर्तिपूजा इत्यादि विषय इसमें वर्णित हैं। —नो० सं० १।११३

तृचभाष्य

लि०—भास्कर राय कृत। श्लोक सं० ४०, अपूर्ण।

—अ० ब० ६०१५

तृचभास्कर

लि०—(१) भास्करराय भारती कृत। यज्ञ कर्मों में उपयोग में आनेवाली मुद्राओं के लक्षण इसमें प्रतिपादित हैं। —ए० बं० ६५७५

(२) (क) भास्कर कृत। (ख) गम्भीरराज-पुत्र भास्कर राय कृत।

—कैट्. कैट्. (क) १।२३४, २।४९, (ख) ३।५०

तृचाकल्प या तृचकल्प

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ३५०। (ख) श्लोक सं० ५।

—अ० ब० (क) ७९८९, (ख) १३९१०

(२) (क) तृचकल्पे सूर्यनमस्कारपद्धतिः। (ख) तृचकल्पे सूर्यनमस्कारः। (ग) तृचकल्प या अर्घदानपद्धति।

—कैट्. कैट्. (क) १।२३४, (ख) २।४९, (ग) ३।५०

तोडलतन्त्र

लि०—(१) उमा-महेश्वर संवादरूप। श्लोक सं० ५०० और पटल (उल्लास?) ११। इसमें दस महाविद्याओं के पूजन, पुरश्चरण, होम आदि विषय प्रतिपादित हैं।

—रा० ला० ३८५

(२) इसमें १० उल्लास हैं। यह विविधतन्त्रसंग्रह और सुलभतन्त्रप्रकाश में प्रकाशित हो चुका है। रा० ला० ३८५ में इसके ११ उल्लासों का उल्लेख है।

—ए० बं० ५९३८

(३) यह दश महाविद्याओं की उपासना पर मौलिक तन्त्र ग्रन्थ है। यह १० उल्लासों में पूर्ण है। इसके एक अंश का 'बद्धयोनिमहामुद्रा' के नाम से रा० ला० ९९५ में उल्लेख है।

—क० का० ३४

(४) दशम उल्लास पर्यन्त, पूर्ण।

—बं० प० २२

(५) शिवप्रोक्त, पूर्ण।

—ज० का० १०२८

(६) (क) श्लोक सं० ४७५, उल्लास १–१० तक, पूर्ण। (ख) उल्लास १०, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २६३७९, (ख) २६४११

(सं० वि० में ४ प्रतियाँ और हैं—२४४५०, २४६१८, २४७४३ और २६४४०)। सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

उ०—प्राणतोषिणी, लक्ष्मीधरी—सौन्दर्यलहरी की टीका, शाक्तानन्दतरङ्गिणी में तथा रा० ला० ९९५ में (तोडलतन्त्रे बद्धयोनिमहामुद्रा)।

तोडलानन्द

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

तोलडोत्तर

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

तोषिणी

लि०—यह तान्त्रिक संग्रहग्रन्थ है। इसमें कुल्लुका, सेतु और महासेतु का वर्णन है। ये तन्त्र के पारिभाषिक शब्द हैं। —रा० ला० ६४०

त्रिकतन्त्रसार या त्रिकसार

उ०—त्रिकसार का प्रत्यभिज्ञाहृदय तथा स्पन्दप्रदीपिका में।

उ०—त्रिकतन्त्रसार का परात्रिंशिका में।

त्रिकहृदय

उ०—शिवसूत्रविमर्शिनी में।

त्रिकारिका

उ०—तन्त्रमहार्णव में।

त्रिकुण्डीश्वरतन्त्र

उ०—Oxford .१०९ (क) के अनुसार गौरीकान्त ने इसका उल्लेख किया है। —कैट्. कैट्. १।२३७

त्रिकूटापञ्चाङ्ग

लि०— —कैट्. कैट्. १।२३७

त्रिकूटारहस्य

(श्रीविद्यासाधन में वामाचार का वर्णन)

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक सं० १८० तथा पटल ११। इसमें सूर्य-ग्रहण, चन्द्रग्रहण, भूकम्प, नवरात्र, कन्या की संक्रान्ति आदि अवसरों पर श्रीविद्या की पूजा का वर्णन है। इन अवसरों पर की गयी श्रीविद्यापूजा का विशिष्ट फल प्रतिपादित है। —ए० बं० ५८८२

(२) त्रिकूटारहस्य की विषय-सूची—सूर्यग्रहण तथा चन्द्रग्रहण के अवसर पर की जाने वाली त्रिकूटा (श्रीविद्या) पूजाविधि, भूकम्प आदि अवसरों पर की जानेवाली त्रिकूटा-पूजा की विधि, वासन्त नवरात्र पर की जानेवाली त्रिकूटा-पूजाविधि, शारद नवरात्र में त्रिकूटा-पूजाविधि, कन्यासंक्रान्ति पर की जानेवाली पूजाविधि, स्तभंनादिविधि, दीपदानविधि, शक्तिपूजाविधि, श्रीविद्या के मन्त्रोद्धार आदि, त्रिकूटा का निरूपण, पुरश्चरणविधि, कुलाचारविधि, वामाचारविधि, कामेश्वर के मन्त्रोद्धार आदि, त्रिकूटोद्धारविधि, त्रिकूटा की नित्य पूजा, त्रिकूटा गायत्री, समयपूजा, पञ्चरत्नेश्वरी की पूजा, कवच, चिन्तामणिकवच, जगन्मङ्गलकवच आदि। —नो० सं० २।१५५

(३) (क) श्लोक सं० १०००, पटल ३२। (ख) श्लोक सं० १०००, पटल ३२। (ग) श्लोक सं० १०००, पटल ३२, पूर्ण।

—अ० ब० (क) ९१४४, (ख) ७३१३, (ग) ११७२४

(४) रुद्रयामलोक्त, (क) अपूर्ण। (ख) पूर्ण।

—रा० पु० (क) ५१३८, (ख) ६६२१

(५) शिव-पार्वती संवादरूप यह तन्त्रग्रन्थ ३२ पटलों में पूर्ण है। सब कामनाओं को पूर्ण करनेवाला तन्त्र-मन्त्रों का एकमात्र सागर यह ग्रन्थ श्रीविद्याका परम तत्त्व रूप है। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—श्रीमन्त्रोद्धार, त्रिकूटा के विषय में निर्णय, श्रीविद्या-पुरश्चरणविधि, कुलाचार, कामेश्वर के मन्त्रोद्धार का निर्णय, नित्य पूजाविधि, चन्द्र और सूर्य ग्रहण पर की जाने वाली पूजा की विधि आदि। —म० द० ५६४०, ४१

(६) त्रिकूटारहस्य तन्त्रराज, श्लोक सं० ७६०। —डे० का० २३१

(७) (क) श्लोक सं० ५४०, पूर्ण (?)। (ख) श्लोक सं०, ५७० पूर्वार्द्धमात्र, पूर्ण। इनके अतिरिक्त ५।६ प्रतियाँ और दी गयी हैं पर सबमें श्लोक सं० के अङ्कों की भूल प्रतीत होती है।

—सं० वि० (क) २३९३८, (ख) २३९६९

(८) त्रिकूटारहस्य तन्त्रराज, शिवा-शिव संवादरूप, श्लोक सं० ५८५, पटल ३२। इसमें वर्णित विषय हैं—शिवपार्वती संवादरूप से श्रीविद्या-मन्त्र की उद्धारविधि का प्रतिपादन, त्रिकूटा का निरूपण, पुरश्चरणविधि, कुलाचारविधि, नित्य कामेश्वर-मन्त्र के उद्धार की विधि, नित्य पूजाविधि, सूर्य-ग्रहण के अवसर की पूजा का प्रकार, चन्द्रग्रहण कालीन पूजाविधि का प्रकार, भूकम्प के समय की पूजाविधि, चैत्र के नवरात्र की पूजाविधि, शारदीय नवरात्र की पूजाविधि, नवरात्र में कुमारीपूजनविधि, कन्या-

में पूजा का विधान, स्तंभन आदि षट्कर्मों का प्रतिपादन, पमेंचरत्नेश्वरी विद्याविधि, दीपदानविधि, शक्तिपूजाविधि, चिन्तामणि कवच, वज्रपञ्जर कवच, जगन्मङ्गल कवच, जगन्मोहन कवच, जगदीश कवच, काम्य कवच, त्रिविक्रम, त्रैलोक्यभूषण, विरूपाक्ष कवच आदि कवचों का प्रतिपादन। —रा० ला० २२६६

(९) रुद्रयामल से गृहीत, इस पर काशीनाथभट्ट और मुकुन्दलाल विरचित टीकाएँ हैं। —कैट्. कैट्. १।२३७

(१०) —भ० रि० १८९

त्रिकूटार्चनपद्धति

लि०—इसका दूसरा नाम त्रिपुरार्चनपद्धति भी है। श्लोक सं० ६२०। —र० मं० ४७४१

त्रिदशडामर

लि०—देवी-भैरव संवादरूप, इसमें २४००० श्लोक और ८२ पटल हैं। देवताओं की सिद्धि के लिए तथा साधु जनों के हितार्थ दुष्ट जीवों के विनाशक डामर का निर्माण हुआ। —ए० बं० ५८६१

त्रिपुरतापिन्युपनिषत्

लि०—श्लोक सं० १५०, अपूर्ण। यह प्रायः अड्यार से प्रकाशित शाक्त उपनिषदों में त्रिपुरतापिनी उपनिषद् के अनुसार ही है। इसमें परिच्छेद-सूचक पुष्पिका नहीं है। —ए० बं० ६१६४

त्रिपुरभैरवीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) विश्वसारतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ३८० पूर्ण। —र० मं० ४८२६

(२) विश्वसारतन्त्रान्तर्गत। —कैट्. कैट्. २।५०

त्रिपुरभैरवीपूजन, (१) त्रिपुरभैरवीपूजापद्धति (२)

लि०—(१) श्लोक सं० ३५, पूर्ण। (२) चन्द्रशेखर कृत, श्लोक सं० १२५, अपूर्ण। —सं० वि० (१) २५४५३, (२) २६६१९

त्रिपुरसुन्दरीक्रमपद्धति

लि०—श्लोक सं० ८००, अपूर्ण। —अ० ब० ९९४९

त्रिपुरसुन्दरीतत्त्वविद्यामन्त्रगर्भसहस्रनाम

लि०—(१) रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० २९२; आरंभ में खण्डित, अपूर्ण । —र० मं० ९७०

(२) विश्वसारतन्त्रान्तर्गत । —कैट्. कैट्. २।५०

त्रिपुरसुन्दरीतन्त्र

लि०—(१) शिव-पार्वती संवादरूप यह तन्त्र १०१ कल्पों में पूर्ण है। पार्वतीजी के यह पूछने पर कि भगवन्, आप किस अभीष्टप्रद मन्त्र का जप करते हैं। मनोकामना पूर्ण करने वाले किस देवता की नित्य आराधना करते हैं। मानवों को शीघ्र अभीष्ट प्रदान करनेवाली, सब पापों को मिटाने वाली, महाज्ञानप्रद तथा अज्ञानविनाशिनी कौन देवी है? यह सब मुझसे कहने की कृपा करें। महादेवजी ने बतलाया एक ही परम शिव, जो निर्गुण, निष्कल, नित्य, शुद्ध, बुद्ध हैं और जगत्स्वामी हैं उनकी शक्ति उनसे अभिन्न श्रीत्रिपुरा हैं। वह सर्वार्थसिद्धिप्रदा हैं। —म० द० ५६४२ से ४७ तक

(२) —कैट् कैट्. १।२३७

त्रिपुरसुन्दरीत्रैलोक्यमोहनकवच

लि०—यह तन्त्र गन्धर्वतन्त्रान्तर्गत उमा-महेश्वर संवादरूप है। राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी का त्रैलोक्य को मोहित करने वाला यह कवच गन्धर्वतन्त्र का एक अंश है। —बी० कै० १३५८

त्रिपुरसुन्दरीदीपदानविधि

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, उमा-महेश्वर संवादरूप। इसमें त्रिपुरसुन्दरी देवी के निमित्त प्रज्वलित दीपदान की विधि वर्णित है। श्री श्रीत्रिपुरसुन्दरी देवी के लिए दीपदान कर ऋषियों ने त्रैलोक्य को वश में किया था। —बी० कै० १३१६

त्रिपुरसुन्दरीन्यास

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ४००। (ख) श्लोक सं० ४००।

—अ० ब० (क) ११७८९ (क), (ख) ११७८९ (ख)

(२) श्लोक सं० ३६, अपूर्ण। —सं० वि० २६६६१

त्रिपुरसुन्दरीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लो० सं० ३५०। —अ० ब० ९७५८

(२) रुद्रयामलान्तर्गत , षोडशीपञ्चाङ्ग भी इसका नामान्तर है। श्लोक सं० २०४०, पूर्ण। —र० मं० ४८१४

(३) श्लोक सं० ५७५, अपूर्ण। —सं० वि० २४१२१

(४) —कैट्. कैट्. १।२३७

त्रिपुरसुन्दरीपटल (पञ्चाङ्ग के अन्तर्गत)

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० २५०, पूर्ण। इसमें श्रीविद्या की पूजा-विधि प्रतिपादित है। —ए० बं० ५८८१

(२) श्लोक सं० लगभग १०, अपूर्ण। —सं० वि० २५६८८

त्रिपुरसुन्दरीपद्धति

लि०—(१) शिवरामभट्ट विरचित।

(२) (क) श्लोक सं० १०००, अपूर्ण। विद्यानन्द विरचित।

(ख) श्लोक सं० ७२५। १८ पद्धतियाँ पूरी हैं १९ वीं चालू है। आत्मानन्द विरचित। (ग) श्लोक सं० ६००, अपूर्ण।

—अ० ब० (क) १९६१, (ख) ५३४०२, (ग) ५७१५

(३) श्लोक सं० २९०, पूर्ण। यह ऊपर निर्दिष्ट त्रिपुरसुन्दरीपद्धति से भिन्न प्रतीत होती है। —र० मं० ४८७५

(४) महीधर विरचित, अपूर्ण।

[सं० वि० में ३ प्रतियाँ और हैं सबकी सब अपूर्ण]। —सं० वि० २४३७४

(५) त्रिपुरापद्धति भी इसका नामान्तर है। —कैट्. कैट्. १।२३७, ३।५१

त्रिपुरसुन्दरीपूजन

लि०—श्रीकर विरचित। —कैट्. कैट्. १।२३७

त्रिपुरसुन्दरीपूजा

लि०—(१) श्लोक सं० ७८, अपूर्ण। —सं० वि० २५८२५

(२) —कैट्. कैट्. २।५०

(३) —भ० रि० १९०

त्रिपुरसुन्दरीपूजाक्रम

लि०— —कैट्. कैट्. १।२३७

त्रिपुरसुन्दरीपूजापद्धति

लि०—(क) शङ्करानन्दनाथ विरचित, श्लोक सं० ४८०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३६८। यह पूजापद्धति मन्त्रमहोदधि में उक्त पूजापद्धति के तुल्य है। पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४००४, (ख) २४३३१

[सं० वि० में और भी कई पूर्ण तथा अपूर्ण प्रतियाँ हैं]।

त्रिपुरसुन्दरीपूजार्चनक्रमपद्धति

लि०—पूजानन्द विरचित। श्लोक सं० ६००। —अ० ब० २२५५

त्रिपुरसुन्दरीपूजाविधान

लि०—श्रीदत्त विरचित, श्लोक सं० ३३। —अ० ब० १२२२४

त्रिपुरसुन्दरीपूजाविधि

लि०—(१) भास्करराय कृत, श्लोक सं० ६००, अपूर्ण।

—अ० ब० २४७६

(२) —कैट्. कैट्. १।२३७, २।५०, ३।५७

(३) —भ० रि० १९२

त्रिपुरसुन्दरीमन्त्रनामसहस्र

लि०—शिव-कार्तिकेय संवादरूप, वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत। पूर्णानन्द परमहंस संगृहीत। इसमें त्रिपुरसुन्दरी का सहस्रनामस्तोत्र वर्णित है। —रा० ला० ७४५

त्रिपुरसुन्दरीमन्दिर

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

त्रिपुरसुन्दरीमहामन्त्र

लि०—श्लोक सं० १५। —अ० ब० ११८०९

त्रिपुरसुन्दरीमालामन्त्रपञ्चदशक

लि०—श्लोक सं० ८००। —अ० ब० ६४६९

त्रिपुरसुन्दरीयजनपद्धति

लि०—श्लोक सं० ६०० । —अ० ब० ८४९९

त्रिपुरसुन्दरीयागविधि

लि०— —म० रि० १९३

त्रिपुरसुन्दरीवरिवस्याविधि

लि०—भासुरानन्दनाथ विरचित । श्लोक सं० ३५०, अपूर्ण ।
—अ० ब० ५६१०

त्रिपुरसुन्दरीसंकोचार्चारत्नावली

लि०—कृष्णभट्ट कृत, श्लोक सं० २०० । —अ० ब० १०६३२

त्रिपुरसुन्दरीसपर्या

लि०—श्लोक सं० ७३०, अपूर्ण । —सं० वि० २४९८०

त्रिपुरसुन्दरीसर्वस्व

लि०—श्लोक सं० १३०, अपूर्ण । —सं० वि० २४५८८

त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्र

लि०—(१) इसमें तीन स्तोत्र और एक कवच है। स्तोत्र रुद्रयामलान्तर्गत शिवकृत हैं, कवच रुद्रयामलान्तर्गत उमा महेश्वर संवादरूप है। कवच का नाम त्रैलोक्यमोहन है। वह महा पातकों का विनाशक है। उसके पाठ से शस्त्राघात का भय नहीं रहता और चिरायुष्य प्राप्त होता है । —क० का० ३५

(२) यह महादेव-कार्तिकेय संवादरूप है। इसमें पराशक्ति महात्रिपुरसुन्दरी के गुप्ततम सहस्र नाम वर्णित हैं । —इ० आ० २६०१

(३) त्रिपुरसुन्दरीसहस्रनामस्तोत्र। यह वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत महादेव-कार्तिकेय संवादरूप है । —ने० द० २।२५३ (ग)

त्रिपुरसुन्दरीहृदय

लि०—वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० २१० । —अ० ब० १७८

त्रिपुरसुन्दर्यर्चनपद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० २८०, अपूर्ण । —सं० वि० २५५५२

(२) भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित। इसमें दक्षिणामूर्तिसंहिता में उक्त महात्रिपुरसुन्दरी-पूजाक्रम प्रतिपादित है। —ए० बं० ६३५५

त्रिपुराकल्प

लि०—(१) आदिनाथ आनन्दभैरव कृत। यह शाक्त आगम १६ पटलों में पूर्ण है। उनमें वर्णित विषय हैं—मन्त्रोद्धार, अनुष्ठानविधि, चक्रपूजा, न्यासविधि, चक्र-न्यासविधि, ध्यान तथा आत्मपूजाविधि, पूजामण्डप में दीक्षा, चक्रपूजा का क्रम, षोडशार-पूजा, नैवेद्यविधि, पूजाप्रयोग, पूजाद्रव्यनिरूपण, मुद्रानिरूपण, जपयज्ञविधि आदि।

—म० द० ५६४८–५०

(२) —कैट्. कैट्. ३।५१

त्रिपुराकवच

लि०—(१) सर्वार्थसाधनकवच भी इसका नामान्तर है। जिसका तात्पर्य है—पाठमात्र से सब पुरुषार्थों को प्राप्त करानेवाला—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त करानेवाला। —ने० द० १।१३७६ (घ)

(२) दे०, त्रिपुरसुन्दरी। —कैट्. कैट्. १।२३७

त्रिपुराजपहोमविधि

लि०—(१) वामकेश्वरतन्त्र से गृहीत।

—ने० द० १।१६४८ (ङ)

(२) इसमें त्रिपुरा देवी की प्रसन्नता के लिए मन्त्र-जप तथा अग्नि में च रुहवन आदि की विधि प्रतिपादित है। यह वामकेश्वरतन्त्र का एक भाग है।

—बी० कै० १३६६

त्रिपुरान्तकशिवपूजा

लि०—(१) लिङ्गार्चनतन्त्रान्तर्गत। इसमें त्रिपुरान्तक शिव की पूजाविधि वर्णित है।

—नो० सं० १।१५६

त्रिपुरापञ्चाङ्ग

लि०— —कैट्. कैट्. १।२३७

(१) त्रिपुराकल्प —म० द० ५६४८ से ५० तक

" कैट्. कैट्. ३।५१

(२) त्रिपुरापद्धति —रा० ला० १६१७

,, —अ० ब० ३४५२

,, —सं० वि० २४३०६

स्मार्ताराम कृत, आठ मयूखों में पूर्ण, नामान्तर–सुभगाचरित कहा जाता है।

—कैट्. कैट्. १।२३७, ३।५१

(३) त्रिपुराकवच —ने० द० १।१३७६ (घ)

,, —कैट्. कैट्. १।२३७

(४) त्रिपुरासहस्रनाम —ए० बं० ६६६७

,, —कैट्. कैट्. १।२३८

(५) त्रिपुरास्तव —ने० द० १।१३७६ (न)

त्रिपुरास्तवराज —कैट्. कैट्. १।२३८

त्रिपुरापटल

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, पूर्ण, श्लोक सं० ७७।

—सं० वि० २५१३७

(२) —कैट्. कैट्. १।२३७

त्रिपुरापद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० ४००। —अ० ब० ३४५२

(२) पार्वती-शङ्कर संवादरूप, श्लोक सं० ५१९। इसमें त्रिपुरसुन्दरी के मन्त्रोद्धार का प्रकार निर्देशपूर्वक ध्यान, स्तोत्र, कवच तथा पुरश्चरण की प्रणाली बतलाते हुए उनका प्रयोग प्रतिपादित है। —रा० ला० १६१७

(३) स्मार्ताराम कृत, श्लोक सं० ९४०।

—डे० का० ३५६ (१८७९–८० ई०)

(४) (क) श्लोक सं० १५१ पूर्ण (?)। (ख) श्लोक सं० १२४८, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० २३५, अपूर्ण। ये तीन के तीन पृथक्-पृथक् ग्रन्थ प्रतीत होते हैं।

—सं० वि० (क) २६५३४, (ख) २४३०६, (ग) २६५३६

(५) स्मार्ताराम कृत, आठवें मयूख में समाप्त, सुभगाचरित्र नाम से प्रख्यात।

—कैट्. कैट्. १।२३७, ३।५१

(६) दो प्रतियाँ हैं। —भ० रि० १८४, १८५

त्रिपुरापुरश्चरणप्रकार

लि०—भीमानन्दनाथ कृत, श्लोक सं० ३८८, पूर्ण।

—सं० वि० २३९४८

त्रिपुरापूजनक्रम

लि०—इसमें त्रिपुरसुन्दरी की पूजाविधि वर्णित है।

—बी० कै० १३५९

त्रिपुरापूजा

(मुद्रासंग्रहसहित)।

लि०—विमलानन्द भारती विरचित, श्लोक सं० १४०, पूर्ण।

—सं० वि० २५२८१

त्रिपुरापूजापद्धति

लि०—इसमें त्रिपुरा देवी की पूजा विस्तार से प्रतिपादित है। बहुत-से स्तोत्र विभिन्न तन्त्रग्रन्थों से इसमें उद्धृत हैं। सौभाग्य कवच वामकेश्वरतन्त्र से, अन्नपूर्णेश्वरीपञ्चाशिका-कल्पवल्ली रुद्रयामल से तथा राजराजेश्वरीध्यान रुद्रयामल से।

—ए० बं० ६३७२

त्रिपुराबालापटल

लि०—विश्वसारोद्धारान्तर्गत, श्लोक सं० ९७, पूर्ण। —सं० वि० २५८२६

त्रिपुराबालापद्धति

लि०—श्लोक सं० ५००। —अ० व० ९९८३

त्रिपुराभैरवी

उ०—आगमतत्त्वविलास में।

त्रिपुरामहिमा

लि०—भास्करराय कृत टीकायुक्त। —कैट्. कैट्. १।२३७

त्रिपुरामाहात्म्य

लि०—श्लोक सं० ३८६८, पूर्ण, विवरण मे ज्ञानखण्ड लिखा है। (यह त्रिपुरारहस्य का माहात्म्य-खण्ड और ज्ञान-खण्ड तो नहीं है?) —सं० वि० २४९६०

त्रिपुरारहस्य (ज्ञानखण्ड)

लि०—पत्रे १०६। —रा० पु० ५६५९

त्रिपुरारहस्य (माहात्म्य-खण्ड)

लि०—श्लोक सं० ५२००, पत्रे २१०। —अ० ब० ५५८२

त्रिपुरारहस्य (इतिहास-खण्ड) अप्राप्य है।

त्रिपुराराधनविधिकल्प

लि०— —भ० रि० १९६

त्रिपुरार्चनदीपिका

लि०—सर्वानन्द कृत। —कैट्. कैट्. १।२३८

त्रिपुरार्चनपद्धति (१)

लि०—कैवल्यानन्द कृत, श्लोक सं० १४६२, पूर्ण।

—सं० वि० २३९८१

त्रिपुरार्चनपद्धति (२)

लि०—इसे त्रिकूटार्चनपद्धति भी कहते हैं। इसके रचयिता शिवराम हैं।

—कैट्. कैट्. २।५०

त्रिपुरार्चनमञ्जरी

लि०—केशवानन्द विरचित, श्लोक सं० ३७०, —अ० ब० ६०६

त्रिपुरार्चनरहस्य

लि०—(१) ज्ञानार्णवान्तर्गत दक्षिणामूर्तिसंहिता के अनुसार ब्रह्मानन्द विरचित। श्लोक सं० १०५०। इसमें विषय यों वर्णित हैं—प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में देशिक का कर्तव्य निरूपण, गुरु-पूजाविधि, अजपाजप की विधि, स्नानविधि, तर्पणविधि, त्रिपुरायजनविधि, त्रिपुरापूजा की पद्धति, उसमें गणेश-न्यास, योगिनीन्यास आदि विविध न्यासों का निरूपण, चक्रसिंहासन के ऊपर स्थित सुन्दरी की पूजा का प्रयोजन आदि कथन, कुलदीपविधि, शान्त्यष्टक वर्णन आदि। —रा० ला० २४८७

(२) दे०, महात्रिपुरार्चनरहस्य। —कैट्. कैट्. २।५०

[हठयोगप्रदीपिका के टीकाकार ब्रह्मानन्द ये ही हैं।]

त्रिपुरार्चनविधि

लि०— —कैट्. कैट्. १।२३८

त्रिपुरार्चारहस्य

लि०—विमलानन्दनाथ कृत, श्लोक सं० ८००। —अ० ब० १०५५३

त्रिपुरार्णव

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्धिनी, सौभाग्यभास्कर, ललितार्चनचन्द्रिका, चैतन्य-गिरि कृत विष्णुपूजापद्धति, तन्त्रसार, आगमकल्पलता, ताराभक्तिसुधार्णव तथा पुरश्चर्यार्णव में।

त्रिपुरार्णवचन्द्रिका

लि०—रामलिङ्ग कृत। —कैट्. कैट्. १।२३८

त्रिपुरावरिवस्याविधि

लि०—कैवल्याश्रम विरचित। —कैट्. कैट्. १।२३८

त्रिपुराषोडशीतन्त्र

लि०—श्लोक सं० २५००। —अ० ब० १२१७४

त्रिपुरासमुच्चय

उ०—सुन्दरदेव ने इसका उल्लेख किया है। दे०, त्रिपुरासारसमुच्चय। इस पर गोविन्दशर्मा विरचित टीका भी है। —कैट्. कैट्. १।२३८

त्रिपुरासर्वस्व

लि०—(क) श्लोक सं० लगभग ५००, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० २१०, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २४५८५, (ख) २४५८७

त्रिपुरासहस्रनामस्तोत्र

लि०—महातन्त्रमानसोल्लासान्तर्गत हर-कार्तिकेय संवादरूप। श्लोक सं० २००, पूर्ण। —ए० बं० ६६६७

त्रिपुरासारतन्त्र

लि०—(१) नामान्तर–श्रीसारतन्त्र। शिव-पार्वती संवादरूप यह तन्त्र १० पटलों में पूर्ण है। दस महाविद्याओं का प्रतिपादन, महामन्त्र विवरण, मन्त्रों के अर्थ आदि कथन,

पूजा की विधि आदि, गुरु द्वारा प्रदत्त मन्त्र के गोपन की विधि, योग के उदय का प्रतिपादन, पूजाक्रम आदि, षट्कर्मों (मारण, मोहन आदि) के साधन का प्रकार, अन्तर्याग आदि का कथन इत्यादि विषय इसमें वर्णित हैं। —नो० सं० २।९२

यह सर्वोल्लास में चतुःषष्टिः (६४) तन्त्रों में अन्यतम कहा गया है।

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, प्राणतोषिणी, सर्वोल्लास, ललितार्चनचन्द्रिका और कालिकासपर्याविधि (काशीनाथकृत) में।

त्रिपुरासारसमुच्चय

लि०—(१) नागभट्ट कृत। इन्हें भट्ट नाग भी कहा गया है। श्लोक सं० ९००, अपूर्ण। इस पर गोविन्द शर्मा कृत टीका है। इस प्रति में ३ से ६ तक ४ ही पटल हैं। —ए० बं० ६३३५

(२) नागभट्ट कृत। इसमें ग्रन्थकार ने गुरु-परम्परा से उपदिष्ट कुलनायिका त्रिपुरा का आराधनक्रम बतलाया है। विषय—त्रिपुरा की उत्पत्ति, न्यास आदि का निरूपण, नाड़ी आदि का निरूपण, नाड़ी आदि की स्थिति का निरूपण, त्रिपुरा के यन्त्र आदि का निरूपण आदि। —नो० सं० १।१५७

(३) नागभट्ट कृत। श्लोक सं० ५७ (३य पटल के आरंभ तक ही)। —अ० ब० १३४०२ (ग)

(४) नागभट्ट कृत। —रा० पु० ५६

(५) आचार्य नागभट्ट कृत। इसमें त्रिपुरसुन्दरी की पूजाविधि प्रतिपादित है। —बी० कै० १३६०

(६) नागभट्ट विरचित। १० पटलों में पूर्ण। श्री त्रिपुरादेवी की दैनिक पूजा पर यह रचा गया है। —म० द० ५६५१-५२

(७) सटीक, नागभट्ट कृत। —जं० का० १०३०

(८) सटीक, श्लोक सं० ६०। —डे० का० ३५७ (१८७९-८० ई०)

(९) (क) भट्टनाग कृत, श्लोक सं० ४६०, अपूर्ण। (ख) नागभट्ट कृत श्लोक सं० ७४८, पूर्ण। —सं० वि० (क) २४१४५, (ख) २४१८७

(१०) नागभट्ट कृत, गोविन्द कृत पदार्थादर्श टीका युक्त। —कैट्. कैट्. १।२३८, ३।५१

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव, पुरश्चर्यार्णव, ललितार्चनचन्द्रिका तथा तन्त्रसार में। रघुनन्दन ने भी तीर्थतत्त्व में इसका उल्लेख किया है।

त्रिपुरासारसमुच्चय की टीकाएँ :—

लि०—(१) गोविन्दाचार्य कृत। श्लोक सं० ११३५। इस टीका का नाम पदार्थादर्श है। यह पूरे १० पटलों में है। —रा० ला० ४८२

(२) सम्प्रदायदीपिका टीका पूरे १० पटलों में है।

—म० द० ५६५३–५४

(३) सम्प्रदायदीपिका, श्लोक सं० १०८०। अङ्गन्यास, करन्यास, आवाहनी मुद्रा से आवाहन, स्थापनी मुद्रा से स्थापना, संनिधिकरणी मुद्रा से संनिधान करने के अनन्तर अर्घ्य आदि १६ उपचारों से मूलमन्त्र द्वारा पूजा, आरार्ति, प्रणाम, परिवार-देवताओं की पूजा आदि प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० १०४३ (ख)

(४) (क) गोविन्द शर्मा कृत सम्प्रदायप्रदीपिका नामक टीका से युक्त त्रिपुरासार-समुच्चय (नागभट्ट कृत) श्लोक सं० १६१५ पूर्ण। (ख) दीपिका नाम की टीका (गोविन्द शर्मा कृत) सहित त्रिपुरासारसमुच्चय श्लोक सं० लगभग १०००, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४०५०, (ख) २५८७२

(५) गोविन्द शर्मा कृत पदार्थादर्श टीका।

—कैट्. कैट्. १।२३८, ३।५१

(६) त्रिपुरासारसमुच्चय टिप्पण। अमृतानन्दनाथ कृत।

—न्यू कैट्. कैट्.

त्रिपुरासिद्धान्त

लि०—(१) श्रीविद्यान्तर्गत उमा-महेश्वर संवादरूप। त्रिपुरा देवी के सम्बन्ध में स्वीकृत कतिपय सिद्धान्तों पर यह पुस्तक है। केवल १ म अध्याय मात्र।

—म० द० ५६५५

(२) त्रिपुरासिद्धान्त में सुवर्णाकर्षणभैरवस्तोत्र। —कैट्. कैट्. १।२३८

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

त्रिपुरास्तव

लि०—रुद्रयामल से गृहीत। —ने० द० १।१३७६ (न)

त्रिपुरास्तवराज

लि०— —कैट्. कैट्. १।२३८

त्रिपुरास्नानादिनित्यकर्मविधि

लि०— —ने० द० १।१५८४ (च)

त्रिपुराहृदय

लि०—(१) श्लोक सं० २२१। —अ० ब० १०७४१

(२) बिन्दुयामल से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।२३८

(३) रुद्रयामल से गृहीत। —कैट्. कैट्. २।५१

त्रिपुरेश्वरीयजनबलिदानविधि

लि०—नित्यातन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० लगभग १६०, अपूर्ण। इसका लिपिकाल संवत् १७०४ वि० है। —सं० वि० २४५७२

त्रिभङ्गचरित्र

लि०—कृष्णयामलान्तर्गत बलराम-कृष्ण संवादरूप। इसमें त्रिभङ्गरूप कृष्ण का वर्णन है। इसकी श्लोक संख्या ११२ है। पूर्ण। —ए० बं० ५८९१

त्रिविक्रम

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

त्रिविधान

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

त्रिशक्तिपद्धति

लि०— —कैट्. कैट्. १।२३९

त्रिशक्तिपूजाविधि

लि०—त्रिकूटारहस्यान्तर्गत। श्लोक सं० ५९५, पूर्ण।

—सं० वि० २५३४२

त्रिशक्तिरत्न तथा त्रिशक्तितन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमतत्त्वविलास तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

त्रिशक्तिरत्नाकर

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से

त्रिशक्तिलक्ष्मीमन्त्रानुष्ठानपद्धति

लि०—श्लोक सं० १४८, पूर्ण। —सं० वि० २६६००

त्रिशती

लि०—(१) इसमें ललिता देवी के ३०० नाम हैं। उनपर श्री शङ्कराचार्य की त्रिशती-नामार्थप्रकाशिका व्याख्या है। यह ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

—ए० बं० ६६६८

(२) ब्रह्माण्डपुराण के उत्तर खण्डान्तर्गत ललितोपाख्यान से गृहीत देवीस्तोत्र। इस-पर वज्रराज की टीका है। —कैट्. कैट्. १।२३९

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

त्रिशतीकालोत्तर

उ०—शैवपरिभाषा (शिवाग्रयोगीन्द्रज्ञान शिवाचार्य कृत) में।

त्रिशतीनामार्थप्रकाशिका

लि०—(१) शङ्कराचार्य कृत। —रा० पु० ५८०६

(२) ब्रह्माण्डपुराण के उत्तरखण्डान्तर्गत ललितोपाख्यान से गृहीत देवीस्तोत्र त्रिशती पर शङ्कराचार्य विरचित यह टीका है। —कैट्. कैट्. १।२३९-४०

त्रिशतीस्तोत्रटीका

लि०—श्लोक सं० ६७०, अपूर्ण। श्रीशङ्कराचार्य कृत। —ए० बं० ६६६९

त्रिशरीरभैरव

उ०—क्षेमराज ने इसका उल्लेख किया है। —कैट्. कैट्. १।२४०

त्रिशिखाविमर्शिनी

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

त्रिशिखाशास्त्र

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

त्रिशिरोभैरव

उ०—शिवसूत्रविमर्शिनी, तन्त्रालोक, तन्त्रालोक-टीका जयरथी तथा महार्थमञ्जरी-परिमल में।

त्रिशिरोमत

उ०—प्रत्यभिज्ञाहृदय तथा तन्त्रालोक में।

त्रिष्टुब्विनियोगक्रम

लि०—(क) श्लोक सं० ४००। सकल सुख प्रदान में कामधेनु रूप, शत्रुओं तथा पापों को निश्शेष करने में प्रलयानल तुल्य सकलनिगमसारविद्या रूप त्रिष्टुप् का गुप्ततम विनियोगक्रम इसमें प्रतिपादित है।

(ख) श्लोक सं० १०४६, शेष पूर्ववत्।

—ट्रि० कै० (क) ९८४, (ख) १००४ (ख)

त्रैपुरपद्धति

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

त्रैपुरसूत्र

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

त्रैलोक्यमङ्गलकवच

लि०—(१) नारदपञ्चरात्रान्तर्गत, पूर्ण। —बं० प० ४६८

(२) सनत्कुमारतन्त्रान्तर्गत (क) श्लोक सं० ५६, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० वही, पूर्ण।

—र० मं० (क) ११३८, (ख) १००५

(३) (क) नारदपञ्चरात्र के ज्ञानामृतसार से गृहीत।

(ख) सनत्कुमारसंहिता से गृहीत।

—कैट्. कैट्. १।२४०

(४) सनत्कुमारतन्त्र से गृहीत तथा बृहद्गौतमीय तन्त्र से गृहीत।

—कैट्. कैट्. २।५१, ३।५२

त्रैलोक्यमोहन (१)

उ०—आगमतत्त्वविलास में।

त्रैलोक्यमोहनकवच (२)

(१) लि०—(क) श्लोक सं० १४० (५ अन्य स्तोत्रों के साथ)।
(ख) श्लोक सं० ७०। (ग) श्लोक सं० ७०। (घ) श्लोक सं० ५०।
(ङ) श्लोक सं० ७०० तकारादितारासहस्रनाम के साथ।
—अ० ब० (क) ३५३०, (ख) ३५२९, (ग) ३५२८, (घ) १०३४३
(ङ) ११२८४
—बं० प० ५३२ (क)
(२) गुरुकवच, पूर्ण।
(३) रुद्रयामलान्तर्गत उमा-महेश्वर संवादरूप। —ए० बं० ५८१५
(४) रुद्रयामलान्तर्गत (क) श्लोक सं० लगभग ५१। (ख) श्लोक सं० ६०, पूर्ण।
—र० मं०

त्रैलोक्यमोहनकवच-व्याख्या

लि०—(१) श्लोक सं० १२०।
—डे० का २३२ (१८८३-८४ ई०)
—ए० बं० ६७२
(२)

त्रैलोक्यमोहनकालिकाकवच

लि०—रुद्रयामल से गृहीत। —कैट्. कैट्. ३।५२

त्रैलोक्यमोहनतन्त्र

लि०—(क) श्लोक सं० ११५, पूर्ण। (ख) अपूर्ण।
—सं० वि० (क) २४०५६, (ख) २४६०९

त्रैलोक्यविजयकथा

लि०— —कैट्. कैट्. १।२४०

त्रैलोक्यविजयकवच

लि०—(१) (क) सेवकराम कृत, श्लोक सं० ४०।
(ख) रुद्रयामल से गृहीत श्लोक सं० ३०
—अ० ब० (क) ३५३१, (ख) ५०२९६
—कैट्. कैट्. १।२४०, ३।५२
(२)

त्रैलोक्यविजयनामकनृसिंहकवच

लि०— —कैट्. कैट्. १।२४०

त्रैलोक्यसार

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा आगमतत्त्वविलास में। हेमाद्रि ने दानखण्ड में, रघुनन्दन ने तिथितत्त्व में तथा नीलकण्ठ ने दानमयूख में इसका उल्लेख किया है।

त्र्यम्बकतन्त्र

लि०—त्र्यम्बकतन्त्र में महामृत्युञ्जयकल्प। कैट्. कैट्. २।५०.

त्र्यबम्बकतन्त्र तथा त्रोतलोत्तर

लि०—(१) आक्सफोर्ड १०९ (क) के अनुसार गौरी कान्त द्वारा उल्लिखित।
—कैट्. कैट्. २।२४१

त्र्यम्बकमन्त्र

लि०—श्लोक सं० ५०। —अ० व० ३४५३

त्वरितरुद्रविधान

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० १३२, पूर्ण।
—सं० वि० २३८५०.

त्वरितरुद्रविधि

लि०—(१) गङ्गासुत प्रोक्त। इसमें त्वरित रुद्र की पूजा का विस्तार से विवरण दिया गया है। पूजा के प्रमाण और प्रयोगविधि दोनों प्रदर्शित हैं।
—ए० बं० ६४६४

(२) पूजाविधि, होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन इत्यादि विषय इसमें प्रतिपादित हैं। यह उत्तम पुरश्चरण है। —नो० मं० ३।१३७-३८

त्वरिताज्ञान

यह ग्रन्थ त्वरिता की पूजा पर रचित है।

उ०—देवनाथ ने तन्त्रकौमुदी में इसका उल्लेख किया है।
—कैट्. कैट्. १।२४१

त्वरितास्तोत्र

लि०—त्वरिता काली का एक रूप भेद है। तन्त्रसार में जिनकी पूजा दक्षिणाचार में दी गयी है। यह स्तोत्र उनसे सम्बन्ध रखता है। ने० द० १।२२६ (क)

दक्षिणकालिकाकल्प

लि०—दे०, काल्यष्टक, —कैट्. कैट्. १।२४२

दक्षिणकालिकाकवच

(१) **लि०**—(क) (१) कालतन्त्र से गृहीत।
(२) भैरवतन्त्र से गृहीत।
(ख) (३) वीरभद्रतन्त्र से गृहीत।
—कैट्. कैट्. (क) १।२४१, (ख) ३।५२

दक्षिणकालिकादीपदानविधि

लि०—ब्रह्मयामल से गृहीत। श्लोक सं० ३२, पूर्ण। शिवाबलि भी इसमें संनिविष्ट है।
—सं० वि० २५३९९

दक्षिणकालिकादीपपटल

लि०—अगस्त्यसंहिता से गृहीत। —कैट्. कैट्. ३।५२

दक्षिणकालिकानित्यपूजालघुपद्धति

लि०—(१) रामभट्ट कृत, श्लोक सं० ५०० । —अ० ब० ३५३२

(२) श्रीमद्देशिकमण्डलमुकुटमाणिक्यकान्तिमञ्जरीकान्तिविराजितचरणकमल रामभट्ट विरचित। इसमें दक्षिण कालिका की दैनिक पूजाविधि संक्षेपतः प्रतिपादित है एवं पञ्चमकारों के सेवन में ब्राह्मण की स्वच्छन्दता में संकोच किया गया है।
—बी० कै० १२५६

दक्षिणकालिकानित्यपूजाविधि

लि०—(१) यह भी दक्षिणकालिका की दैनिक पूजाविधि का प्रतिपादक निबंध है। —बी० कै० १२५७

(२) कालिकार्चादीपिका भी इसका नामान्तर है।
—कैट्. कैट्. १।२४२

दक्षिणकालिकापञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामल से गृहीत। श्लोक सं० १५००।

—अ० ब० १३७८२

(२) श्लोक सं० ७५। —डे० का० ३५८ (१८७९-८० ई०)।

दक्षिणकालिकापद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक सं० १०००। (ख) श्लोक सं० २८०, दाशरथि कृत।

—अ० ब०, (क) ९४९१, (ख) ८०४

(२) इसमें दक्षिणकालिका की पूजापद्धति वर्णित है। उसके अनुसार यथाविधि देवी की पूजा कर, साधकों को प्रसाद बाँट कर तथा स्वयं भी ग्रहण कर अपने को देवी रूप समझता हुआ वैष्णवाचारपरायण होकर यथासुख विहार करे, यों संक्षेप में ग्रन्थ-प्रतिपाद्य विषय हैं। —बी० कै० १२५८

(३) (क) श्लोक सं० १९२, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० २६२, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० १२६, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० २२८, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २५४८६, (ख) २५८२४, (ग) २६२६१, (घ) २६२६२

दक्षिणकालिकापूजनपद्धति

लि०—रामभट्ट विरचित, श्लोक सं० ३४५, पूर्ण।

—सं० वि० २६५४८

दक्षिणकालिकापूजनप्रयोग

लि०— —कैट्. कैट्. १।२४२

दक्षिणकालिकापूजापद्धति

लि०—(१) अपूर्ण। —ए० बं० ६३१५

(२) श्लोक सं० ९००। —अ० ब० ८०४०

(३) यह दक्षिण कालिका की पूजापद्धति का प्रतिपादक निबन्ध ग्रन्थ है। इसमें दक्षिण कालिका पूजा का निरूपण कर अन्तमें निर्वाण मन्त्र दिया गया है। जिसका मणिपूर में ध्यानपूर्वक जप करने का निर्देश है। —बी० कै० १२५९

(४) अपूर्ण। —बं० प० ५०७

(५) (क) श्लोक सं० ७८४, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० १५० पूर्ण (?)। (ख) श्लोक सं० २१४ अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० ४७२ पूर्ण।

—सं० वि० (क) २३८८४, (ख) २४४५५, (ग) २४५५१, (घ) २४८०४

[सं. वि. में ६ प्रतियाँ और हैं जिनकी संख्या—२४८६०, २४९८८, २५६३२, २५७८३ २६२५० तथा २६३०६ है।]

दक्षिणकालिकापूजाविधि

लि०—श्लोक सं० ३६, अपूर्ण। —सं० वि० २४८३८

दक्षिणकालिकार्चनपद्धति

लि०—(१) त्रैलोक्यनाथ कृत। कालिका के उपासकों की दैनिक चर्या के साथ कालीपूजा का विशेष विवरण इसमें दिया गया है। —ए० बं० ६३१०

(२) श्लोक सं० ८३६, पूर्ण। —सं० वि० २६४१९

(३) —कैट्. कैट्. ३।५२

दक्षिणकालिकाविधि

लि०—श्लोक सं० २९०, अपूर्ण। —सं० वि० २४५७६

दक्षिणकालिकासंक्षेपपूजाप्रयोग

लि०—हरकुमार ठाकुर विरचित, श्लोक सं० ४६८। इसमें आसन-शुद्धि आदि के साथ पुरश्चरण आदि की विधि वर्णित है। —रा० ला० २५५

दक्षिणकालिकासपर्याकल्पलता

लि०—(१) सुन्दराचार्य विरचित। इसका निर्माण काल तथा निर्माण स्थान यों कहा गया है—गगनगज-महेन्द्रैर्गण्यमाने शकाब्दे अर्थात् शकाब्द १४८० में वाराणसी में इसकी रचना हुई। इसमें दक्षिणकालिका की साङ्गोपाङ्ग पूजा प्रतिपादित है।

—बी० कै० १२६०

(२) सुन्दराचार्य कृत, श्लोक सं० ७५, अपूर्ण। निर्माणकाल शकाब्द १४८०

—सं० वि० २६६७०

(३) सुन्दराचार्य ने इसकी रचना १५५९ ई० में की। —कैट्. कैट्. १।२४२

दक्षिणकालिकासहस्रनामस्तोत्र

लि०—(१) कालीकुलसर्वस्वान्तर्गत शिव-परशुराम संवादरूप। श्लोक सं० ३६७। इसमें दक्षिणकालिका के सहस्र नाम वर्णित हैं। सद्गुरुभक्तिपूर्वक महाकाली के चरणों पर दत्तचित्त होकर जो इसका पाठ करता है मुक्ति, मुक्ति और भक्ति सदा उसके करस्थ रहती हैं। —रा० ला० ६८५

(२) कालीकुलसर्वस्वान्तर्गत। —कैट्. कैट्. १।२४२

दक्षिणकालिकास्तव

लि०—एकवीरकल्पान्तर्गत। जो इस स्तव का पाठ करता है उसके घर में लक्ष्मी खेलती है और वह सर्वत्र विजयी होता है। इस स्तोत्र का नाम सर्ववाञ्छाप्रद है।

—नो० सं० १।१५८

दक्षिणकालिकास्तोत्र

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत चन्द्रचूडोक्तसंहिता से गृहीत। यह राजराजेश्वरी अनिरुद्ध सरस्वती दक्षिणकालिका देवी का संसारतारक स्तोत्र है। —ए० बं० ६६३७

दक्षिणकालिकास्वरूपाख्यस्तोत्रराजपश्वाचारटीका

लि०—(१) सदम्वष्ट कृत। —नो० सं० १।१५९

दक्षिणकालिकास्वरूपस्तोत्र

(२) दक्षिणकालिका स्वरूप स्तोत्र, वीरतन्त्र के श्यामाकल्पान्तर्गत। दो प्रतियाँ हैं। दोनों पूर्ण हैं। —बं० प० (क) १०६८, २१०

(३) पश्वाचार विहित टीका। —कैट्. कैट्. ३।५२

दक्षिणकालीककारादिसहस्रनाम

नामान्तर—सुन्दरीशक्तिदान। आदिनाथ कृत।

लि०—(क) यह महाकालसंहिता का अंश है।

(ख) लिपिकाल १७७० वि०। —भ० रि० (क) २००, (ख) २०१

दक्षिणकालीकल्प

लि०—श्लोक सं० ७००। —अ० ब० ९०६

दक्षिणकालीकवच

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। —कैट्. कैट्. ३।५२

दक्षिणकालीतन्त्र

लि०—दे०, Katalog der Sanskrit Handscrift University Bibliothek in Leipzig. १२९५, १।

—कैट्. कैट्. ३।५२

दक्षिणकालीदीपदानविधि

लि०—श्लोक सं० ७५। —अ० ब० ५०५८

दक्षिणकालीनित्यपूजनपद्धति

लि०— —कैट्. कैट्. १।२४२

दक्षिणकालीपटल

लि०—(१) श्लोक सं० १८४, पूर्ण। —सं० वि० २५२२१
(२) —कैट्. कैट्. १।२४२

दक्षिणकालीपद्धति

लि०— —कैट्. कैट्. १।२४२

दक्षिणकालीपूजा

लि०—श्लोक सं० ७५०। —अ० ब० ५३४७

दक्षिणकालीपूजापद्धति या श्यामारत्न

लि०—(१) यादवेन्द्र कृत। —कैट्. कैट्. १।२४२
(२) श्लोक सं० ४२१, अपूर्ण। —सं० वि० २४३१९

दक्षिणकालीपूजाविधि

लि०—श्लोक सं० १५५, अपूर्ण। —सं० वि० २६२४८

दक्षिणकालीविधि

लि०—यह काली की विविध पुरश्चरण-क्रियाओं का प्रतिपादक संग्रह है।

—ए० बं० ६३

दक्षिणकालीसहस्रनाम

लि०—— ——कैट्. कैट्. १।२४२

दक्षिणाकल्प

लि०——हरगोविन्द तन्त्रवागीश कृत। इसमें १००० श्लोक तथा कुछ अधिक १३ परिच्छेद मिलते हैं। इनमें मुख्यतः पुरुष और प्रकृति-भेद तथा शाक्तों की प्रशंसा, दक्षिण-काली का मन्त्रोद्धार, प्रातःकृत्य——स्नान, तिलक, सन्ध्याविधि आदि, पूजा-स्थान का निर्णय, दिशानियम, शिवपूजादि विधान, गुरुपूजा, स्तोत्र आदि, दक्षिणकालिका-पूजा, मन्त्र आदि का प्रतिपादन, ये विषय वर्णित हैं। ——रा० ला० २९१

दक्षिणाचारचन्द्रिका

लि०——भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित, श्लोक सं० १०००।
——अ० ब० १०६७३

दक्षिणाचारतन्त्र

लि०——(१) श्लोक सं० १३००, अपूर्ण। ——सं० वि० २३९१३
(२) ——कैट्. कैट्. १।२४२
(३) श्लोक सं० १२००। ——अ० ब० ९६५९
उ०——पुरश्चर्यार्णव में।

दक्षिणाचारतन्त्रटीका

लि०——(१) नाम——गूढार्थादर्श, भडोपनामक काशीनाथभट्ट विरचित। इसमें २६ पटल हैं। ——ए० बं० ६१४०

(२) २६ पटलों में पूर्ण, काशीनाथभट्ट अनन्त के शिष्य थे, परवर्ती काल में इनका नाम शिवानन्द था। ——भ० रि० २०७

दक्षिणाचारदीपिका

लि०——भडोपनामक काशीनाथभट्ट विरचित। श्लोक सं० ५००।
——अ० ब० ८३१२
(२) काशीनाथ विरचित। ——कैट्. कैट्. १।२४२

दक्षिणाचारविधि

लि०—कालीरहस्यान्तर्गत, इसमें वाम और दक्षिण मार्ग से देवी कालीजी की पूजाविधि वर्णित है।
—क० का ७६ (२)

दक्षिणाचैतन्य

लि०—
—प्राप्त ग्रन्थ-सूची से

दक्षिणचैतन्यगूढार्थादर्श

लि०—काशीनाथभट्ट कृत।
—प्राप्त ग्रन्थ-सूची से

दक्षिणामूर्तिकल्प

लि०—(क) वामदेवसंहितान्तर्गत, श्लोक सं० लगभग ३०५, अपूर्ण। (ख) नारदीय, श्लोक सं० लगभग १९०, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० १३८, अपूर्ण।
—सं० वि० (क) २५४१०, (ख) २५८०२, (ग) २५८१२

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ललितार्चनचन्द्रिका में।

दक्षिणामूर्तिकवच

लि०—
—कैट्. कैट्. २।५१

दक्षिणामूर्तिकाण्ड

लि०—शतकाण्डात्मक मार्कण्डेयपुराण के २६ वें काण्ड के अन्तर्गत, १ से ४ परिच्छेद, श्लोक सं० लगभग ९३, अपूर्ण।
—सं० वि० २५०५३

दक्षिणामूर्तिकौस्तुभ

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथभट्ट विरचित। इसमें दक्षिणामूर्ति शिव की पूजा का विवरण दिया गया है। प्रारंभ में उपासक के प्रातः कृत्यों का निरूपण है। इसकी श्लोक सं० ९१ है।
—ए० बं० ६४५२

दक्षिणामूर्तिचन्द्रिका

लि०—(१) काशीनाथभट्ट कृत। इसकी श्लोक सं० २००० तथा पटल सं० १५ है। अनुक्रमणी तथा यन्त्र सहित।
—अ० ब० १०६६०

(२) काशीनाथ कृत, श्लोक सं० ११५५, अपूर्ण। —सं० वि० २४९७४

दक्षिणामूर्तितन्त्र

उ०—देवनाथ द्वारा रा० ला० २०१० (तन्त्रकौमुदी) में तथा प्राणतोषिणी और आगमकल्पलता में।

दक्षिणामूर्तिदीपिका

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथभट्ट विरचित। इसमें दक्षिणामूर्ति शिव की नित्य और नैमित्तिक पूजाओं की प्रक्रिया वर्णित है। उक्त पूजा के पूर्व पूजक के कर्तव्य प्रातःकृत्यों का प्रतिपादन है। —ए० बं० ६४५३

दक्षिणामूर्तिपञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक सं० ८००। अपूर्ण। —अ० ब० १०८३२

दक्षिणामूर्तिपटल

लि०—(१) श्लोक सं० ८५, पूर्ण। —सं० वि० २३९८९
(२) —कैट्. कैट्. १।२४२, ३।५२

दक्षिणामूर्तिपद्धति

लि०—(१) श्लोक, सं० ११५, पूर्ण। —सं० वि० २५५३१
(२) —कैट्. कैट्. १।२४२

दक्षिणामूर्तिपूजा

लि०—श्लोक सं० १०८, पूर्ण। —सं० वि० २५२९७

दक्षिणामूर्तिपूजापद्धति

लि०—सुन्दराचार्य विरचित, श्लोक सं० ५२५, अपूर्ण। —सं० वि० २६२८४

दक्षिणामूर्तिमन्त्रमाला

लि०—श्लोक सं० ७०। —अ० ब० २६८७

दक्षिणामूर्तिमन्त्रविधान

लि०—श्लोक सं० १९६, अपूर्ण। —सं० वि० २५८३०

दक्षिणामूर्तिमन्त्रार्णव

लि०—शङ्कराचार्यकृत। —कैट्. कैट्. १।२४२

दक्षिणामूर्तिमन्त्रोद्धार

लि०—मार्कण्डेय कृत शतकाण्डात्मक मार्कण्डेयपुराणान्तर्गत २य परिस्पन्द में उक्त। श्लोक सं० ७८ पूर्ण। —सं० वि० २५८७

दक्षिणामूर्तिशेखर

लि०—श्लोक सं० ३६८, पूर्ण। —सं० वि० २५५३२

दक्षिणामूर्तिसंहिता

लि०—(१) शिव-पार्वती संवादरूप। ६४ पटलों में पूर्ण। इसके कतिपय मुख्य-मुख्य विषयों का विवरण यों दिया गया है—एकाक्षरलक्ष्मी-पूजाविधि, महालक्ष्मी-पूजा, त्रिशक्तिमहालक्ष्मीयजनविधि, अपने में स्थित अक्षर परम ज्योति विद्या की आराधना, प्रणव विद्या के पर-निष्कल भेदों की आराधना, अजपानामविधान, मातृका-पूजासाधन-विधि, त्रिपुरेश्वरी-समाराधनविधि, कामेश्वरी-पूजाविधि आदि।

—इ० आ० २५८३

(२) इसमें शक्ति के विभिन्न स्वरूपों की पूजा-विधि वर्णित है। विशेष विवरण के लिए इ० आ० २५८३, बं० प० १३७८ और क० का० ३७ देखें। इसके पटलों की सं० किसी-किसी प्रति में ६६ दी गयी है। उनका अन्तिम अंश प्रस्तुत प्रति के अन्तिम अंश से मिलता है। —ए० बं० ६०५४

(३) ५ प्रतियाँ हैं। जिनमें (क) संज्ञक ४ की श्लोक सं० १५०० और (ख) १ की श्लोक सं० ११५० दी गयी है। —अ० ब० (क) ५६२३ आदि, (ख) ३४५१

(४) यह मौलिक तान्त्रिक ग्रन्थ है। इसमें विविध देवियों की पूजा, उपासना आदि वर्णित है। यह ६६ पटलों में पूर्ण है। प्रारंभिक तीन पटलों में लक्ष्मी की पूजा, उसके विविध रूपों में वर्णित है। ४र्थ में साम्राज्यलक्ष्मी की पूजा आदि, ५म और ६ष्ठ पटलों में ब्रह्मविद्या की पूजा, ७ वें में अजपा, ८ वें मातृकापूजा वर्णित है। ९ वें पटल में पूर्वाम्नाय का विवरण, १०वें में ललितादेवी की पूजा तथा ११ वें में कामेश्वरी की पूजा आदि वर्णित है। —क० का० ३७

(५) ३६ पटल पर्यन्त। —बं० प० १३७८

(६) श्लोक सं० १५०, पूर्ण। —र० मं० ४८५४

(७) श्लोक सं० ६८४, २५ पटल तक। —डे० का० ३८९

(८) श्लोक सं० लगभग २१२७, पूर्ण। —सं० वि० २३८५१

(९) —कैट्. कैट्. १।२४२

(१०) —भ. रि. २०४

उ०—सौभाग्यभास्कर, सुन्दरीमहोदय, आगमतत्त्वविलास, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, ललितार्चनचन्द्रिका में। रघुनन्दन ने भी दीक्षातत्त्व में इसका उल्लेख किया है।

दक्षिणामूर्तिसहस्रनाम

लि०— —कैट्. कैट्. १।२४२, ३।५२

दक्षिणामूर्तिस्तव-व्याख्याएँ :—

लि०—(१) (क) प्रबन्धमानसोल्लास सुरेश्वराचार्य कृत, श्लोक सं० ४००, १० उल्लासों में पूर्ण।

(ख) मानसोल्लासवृत्तान्तविलास, रामतीर्थ कृत, श्लोक सं० १०५०।

(ग) तत्त्वसुधा, स्वयंप्रकाशयति विरचित, श्लोक सं० ४००, पूर्ण।

—ट्रि० कै० (क) ११०१ (क), (ख) ११०१ (ख), (ग) ११०२ (क)

(२) (क) दक्षिणामूर्तिस्तोत्रार्थप्रतिपादक, प्रकाशात्मा विरचित।

(ख) वेदान्तरत्नमाला

(ग) पूर्णानन्दतीर्थ विरचित

(घ) नारायणतीर्थ विरचित —कैट्. कैट्. १।२४२

दक्षिणामूर्तिस्तोत्र

लि०—(१) श्लोक सं० ४८, इसमें केवल मूल स्तुति ही है। इसकी व्याख्याएँ अन्यत्र दी गयी हैं। इसके रचयिता श्रीशङ्कराचार्य हैं।

—ट्रि० कै० ११०२ (ग)

(२) (क) शङ्कराचार्य विरचित। (ख) ब्रह्माण्डपुराण से गृहीत। (ग) धुरन्धर कृत। (घ) नवनाथयोगी कृत। —कैट्. कैट्. १।२४२

दक्षिणावर्तशंखकल्प

लि०—दक्षिणावर्त शंख एक प्रकार की निधि है। इसके घर में आने पर धनधान्य की समृद्धि हो जाती है, सम्पत्तियों का अम्बार लग जाता है, ऐसी लोक-प्रसिद्धि है। उक्त शंखके सम्बन्ध में कतिपय विधियाँ इसमें वर्णित हैं। —बी० कै० १२६१

दण्डिनीरहस्य

लि०—सदाशिव द्विवेदी विरचित। —कैट्. कैट्. १।२४३

दत्तात्रेयकल्प

लि०—(१) (क) श्लोक सं० २००। इसमें नृसिंहमालामन्त्र, ज्वरमन्त्र, शूलिनी-मन्त्र, सुदर्शनमन्त्र आदि हैं। (ख) श्लोक सं० ६००।

—अ० ब० (क) १३३३६, (ख) १८२५

(२) —कैट्. कैट्. ३।५३

दत्तात्रेयकवच

लि०—(१) सर्वज्ञ कृत। यह योगिराजवज्र कवच भी कहलाता है। श्लोक सं० ४०।

—अ० ब० ५६८६

(२) डामरेश्वरतन्त्र से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।२४४

(३) —म० द०

दत्तात्रेयचन्द्रिका

लि०— —कैट्. कैट्. १।२४४

दत्तात्रेयतन्त्र

लि०—(१) यह ईश्वर-दत्त संवादरूप है। इसमें जादूगरी तथा मारण, मोहन आदि तान्त्रिक क्रियाएँ प्रतिपादित हैं। डामर, ऊर्ध्वसामादितन्त्र, काकचण्डीश्वर, राधा-तन्त्र, उच्छिष्टतन्त्र, धारातन्त्र तथा अमृतेश्वरतन्त्र के वचन इसमें उद्धृत किये गये हैं। यह २२ पटलों में पूर्ण है। मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, वशीकरण, आकर्षण, इन्द्रजाल-कौतुकदर्शन, यक्षिणीसाधन, रसायन, कालज्ञान, निधिदर्शन वन्ध्यापुत्रोत्पादन आदि विषय इसमें प्रतिपादित हैं। —ने० द० २।२४६ (क)

(२) ईश्वर-दत्तात्रेय संवादरूप इस तन्त्र में ६४४ श्लोक तथा २२ पटल हैं। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—मारण के उपाय, मोहन के उपाय, स्तम्भन के उपाय, आसन-स्तंभन, बुद्धि-स्तंभन, सेना-स्तंभन, मेघ-स्तंभन, गर्भ-स्तंभन, उच्चाटनोपाय, वशीकरण के उपाय, स्त्रीवशीकरण, पतिवशीकरण, राजवशीकरण, आकर्षणोपाय, इन्द्रजालकौतुकदर्शन के उपाय, यक्षादि-मन्त्रों के साधन, रसायनविधि, कालज्ञान के उपाय, प्रचुर आहार करने

के उपाय, केश गिरा देने की विधि, निधि दर्शन का उपाय, गर्भाधानविधि, मृतवत्सा, काकवत्सा आदि के दोषों की शान्ति के उपाय, वाजीकरण के उपाय आदि।

—रा० ला० १८५०

(३) शिव-दत्तात्रेय संवादरूप। दत्तात्रेय के प्रश्न करने पर भगवान् शिव द्वारा प्रोक्त यह तन्त्र २० पटलों में है। मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, विद्वेषण, आकर्षण, वन्ध्या के पुत्र जनन, मृतवत्सा के दीर्घायु पुत्रोत्पादन, विविध इन्द्रजाल दशन के उपाय, अग्नि, व्याघ्र, सर्प आदि के भयनिवारण के विविध उपाय तथा उनकी प्रयोग-विधि इसमें निर्दिष्ट है।

—क० का० ३६

(४) विवरण रा० ला० १८५० में देखें। इसके ३० पटल वाले तथा २६ पटल-वाले एकाधिक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इसकी हस्तलिखित प्रतियों में भी कोई-कोई २२ पटलों की और कोई २५ पटलों की मिलती है।

—ए० बं० ६०७९

(५) १८ पटल पूरे, १९ वें पटल का कुछ अंश इसमें है। अपूर्ण।

—बं० प० ४९६

(६) (क) श्लोक सं० ६५०, पटल १७, अपूर्ण।
(ख) श्लोक सं० २५०, अपूर्ण।

—अ० व० (क) ३४५५, (ख) १०७२०

(७) (क) श्लोक सं० ६००, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ६२४, पूर्ण। (ग) श्लोक संख्या ४४८, २० पटल तक पूर्ण। (घ) श्लोक सं० ६२८, पूर्ण।

[इनके अतिरिक्त सं० वि० में २ दर्जन पूर्ण और अपूर्ण प्रतियाँ और हैं।]

—सं० वि० (क) २३८५३, (ख) २३९२५, (ग) २४२७३, (घ) २४६५५

(८) ईश्वर कृत। —जं० का० १०३२

(९) श्लोक सं० ४६०, पूर्ण। —र० मं० ४९१३

(१०) दत्तात्रेयतन्त्रे अनाहारपटल इत्यादि। —कैट्. कैट्. १।२४४

(११) छह प्रतियाँ है। —भ० रि० २०८ से २१३ तक

दत्तात्रेयपटल

लि०—(१) श्लोक सं० ४५०। —अ० ब० ३४५६

(२) —कैट्. कैट्. १।२४४

दत्तात्रेयपद्धति या दत्तार्चनकौमुदी

लि०—(१) चैतन्यगिरि कृत। —कैट्. कैट्. १।२४४, २।५२

दत्तात्रेयपूजन

लि०—सन्तोषानन्द कृत। —कैट्. कैट्. १।२४४

दत्तात्रेयपूजापद्धति

लि०—श्लोक सं० ४०२, अपूर्ण। —सं० वि० २६६६९

दत्तात्रेयमहापूजावर्णना

लि०— —कैट्. कैट्. १।२४४

दत्तात्रेयमालामन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० २०। —अ० ब० १२१६८

(२) —कैट्. कैट्. १।२४४

(३) मूर्ख, —म० द० ६३७६

दत्तात्रेयवज्रकवच

लि०—श्लोक सं० ९०। —अ० ब० ७०७६ (क)

दत्तात्रेयशतनाम

लि०— —कैट्. कैट्. १।२४४

दत्तात्रेयषट्पञ्चाशतीस्तोत्र

लि०— —कैट्. कैट्. १।२४४

दत्तात्रेयसंग्रह

लि०—श्लोक सं० ३८०, पूर्ण। —सं० वि० २४३७०

दत्तात्रेयसंहिता

लि०—(१) श्लोक सं० २२५। इसमें यम, नियम आदि विविध-योगाङ्गनिरूपण-पूर्वक बहुत-से योगोपाय प्रतिपादित हैं। —रा० ला० २५१

(२) सांकृति-दत्तात्रेय संवादरूप। विवरण देखो ऊपर रा० ला० २५१ में। यह ग्रन्थ योग का प्रतिपादक है। —ए० बं० ६१०२

(३) —कैट्. कैट्. १।२४४

उ०—प्राणतोषिणी, सौभाग्यभास्कर तथा स्मृत्यर्थसंग्रह में।

दत्तात्रेयसहस्रनाम

लि०—(१) भाष्य टीका देवजी भट्ट कृत। —कैट्. कैट्. १।२४४, २।५२

लि०—(२) (क) शङ्कराचार्य कृत। —कैट्. कैट्. ३।५३
(ख) ब्रह्माण्डपुराण से गृहीत

दत्तात्रेयसिद्धिसोपान

(१) लि०—गोरक्षसिद्धिहरणशावरान्तर्गत। श्लोक सं० २००, अपूर्ण। —अ० ब० १२६२१

दत्तात्रेयहृदय

लि०—(१) —कैट्. कैट्. १।२४४
(२) रुद्रयामल से गृहीत —कैट्. कैट्. ३।५३

दत्तात्रेयहृदयस्तोत्र

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत शिव-पार्वती संवादरूप यह ४२ श्लोकों का भगवान् दत्तात्रेय हृदय नामक स्तोत्र है। —नो० सं० २।९६

दत्तार्चनकौमुदी

लि०—दे०, दत्तात्रेयपद्धति। —कैट्. कैट्. १।२४४

दत्तार्चनचन्द्रिका

लि०—(१) कृष्णानन्दसरस्वती-शिष्य रामानन्द विरचित। यह तीन परिच्छेदों में पूर्ण है। इसमें त्रिपुरा जापद्धति वर्णित है। —ए० बं० ६३५३
(२) नाम—दत्तार्चनाविधिचन्द्रिका, रामानन्द यति विरचित। —कैट्. कैट्. ३।५३

दशमहाविद्या

लि०—इसमें महाविद्याओं के दशावतार निरूपित हैं। श्लोक सं० १३, पूर्ण। —सं० वि० २५०६४

दशमहाविद्याकुलार्चाविधि

लि०—श्लोक सं० ३०, अपूर्ण। —सं० वि० २४७८०

दशमहाविद्याप्रयोगविधि

लि०—श्लोक सं० ३२५, अपूर्ण। —सं० वि० २३९६६

दशविधभूतावेशप्रकार

लि०—श्लोक सं० ६७, अपूर्ण। —सं० वि० २६२६४

दशविधमहाविजय

लि०— —कैट्. कैट्. १।२४८

दाक्षिण्यतन्त्र

लि०— —कैट्. कैट्. १।२४८

दानभागवत

लि०—कुबेरानन्द कर्णि कृत। श्लोक सं० १६००, अपूर्ण।

—अ० व० ३६७३

दारुणसप्तक

लि०—उमा-महेश्वर संवादरूप आकाशतन्त्रोक्त। इसमें परम गुप्त रिपुनाशन मन्त्र की रविवार से लेकर मङ्गलवार तक जप करने की विधि वर्णित है।

—नो० सं० ३।१४१

दाशरथीयतन्त्र

लि०—(१) यह वैष्णव तन्त्र है। इसके मूल प्रवक्ता दशरथ-पुत्र राम हैं। यह रामोपासना पर है। इसके दो भाग हैं—पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध। पूर्वार्द्ध में ५९ अध्याय हैं और उत्तरार्द्ध में ४५ अध्याय हैं। उत्तरार्द्ध का नामान्तर है सौभाग्यविद्योदय। पूर्वार्द्ध में कहा गया है कि दाशरथीयतन्त्र अनुत्तरब्रह्मतत्त्वरहस्य नामक श्रुतिसंग्रह के अन्तर्गत है। इसमें अष्टाक्षर मन्त्र का माहात्म्य वर्णित है। सिद्धाश्रम में इसका प्रवचन विभाण्डक-सुत ऋष्यश्रृङ्ग ने उद्दालक आदि ऋषियों के प्रति किया था। उत्तरार्द्ध में श्रीविद्या, लक्ष्मी, महालक्ष्मी, त्रिशक्ति और साम्राज्यशक्ति—इनमें से श्रीविद्या का माहात्म्य वर्णित है। इसके अनन्तर पाशुपती, वैष्णवी तथा त्रैपुरी दीक्षाओं का वर्णन है एवं दक्षिणामूर्ति द्वारा उपदिष्ट लाधनाविज्ञान का भी वर्णन है। २८ वें अध्याय से ४५ वें अध्याय तक राजराजेश्वरी विद्या का माहात्म्य वर्णित है। —इ० आ० २५५८

(२) यह वैदिक सिद्धान्तों पर आधृत तान्त्रिक ग्रन्थ है। इसका नामान्तर वेदार्थ-संग्रह है। मूलतः इसके वक्ता श्रीरामचन्द्र हैं। उन्होंने अयोध्या में अपने दर्शनों के लिए आये हुए ऋषियों तथा लोकपाल आदि के लिए इसका उपदेश किया। तदुपरान्त ऋष्य-शृङ्ग ऋषि ने सिद्धाश्रम में ऋषियों की परिषत् में इसका प्रवचन किया। इसके दो भाग हैं— पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध यानी १म और २य। १म भाग में ६० पटल और २य में ४५ हैं। शेष विवरण के लिए इ० आ० २५५८ देखें। —क० का० ३८

(३) श्लोक सं० ९६७२, एक पन्ना कम है, अपूर्ण। शकाब्द १६७६ में लिखित, यह गौतमीयतन्त्र भाग १ से अभिन्न है। —र० मं० ४८८६

(४) नामान्तर—वेदार्थसारसंग्रह। श्लोक सं० ४८९०, अपूर्ण। —सं० वि० २३८४९

(५) —कैट्. कैट्. १।२५२, २।५२

दिक्पालपूजाबलिदानविधि

लि०—श्लोक सं० १००। —अ० ब० ९०१

दिव्यतन्त्र

उ०—देवनाथ द्वारा रा० ला० २०१० (तन्त्रकौमुदी) में इसका उल्लेख किया गया है। —कैट्. कैट्. १।२५४

दिव्यशाबरतन्त्र

लि०—इस प्रति में १४ चौदह पीठ (अध्याय) हैं। यह ग्रन्थ शाबरतन्त्र के नाम से अरुणोदय और इन्द्रजाल-संग्रह में मुद्रित हो चुका है। —ए० बं० ६०९१

दिव्यसाम्राज्यदीक्षामन्त्र

लि०—श्लोक सं० ७०। —अ० ब० ५६२१

दिव्यसारस्वततन्त्र

लि०—गुह्यतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ८०। इसकी अन्तिम पुष्पिका में २४ वें पटल की समाप्ति दीखती है। इससे ज्ञात होता है कि इसकी पटल संख्या २४ से कम नहीं है। —ट्रि० कै० ९६८ (क)

उ०—आगमकल्पलता में।

दीक्षा-काल

लि०—(१) श्लोक सं० ५०। —अ० ब० ११३
(२) श्लोक सं० ७५, अपूर्ण। —सं० वि० २४८६०

दीक्षाकालविचार

लि०—श्लोक सं० ३७, अपूर्ण। —सं० वि० २३९६७

दीक्षाक्रम

लि०—(१) कालीसोपानोल्लासान्तर्गत। श्लोक सं० ३००।
—अ० ब० ५७१०

(२) शक्ति की उपासना में अधिकार प्राप्ति के लिए साधक को दी जानेवाली दीक्षा की विधि इसमें वर्णित है। ग्रन्थारंभ से यह उमा-महेश्वर संवादरूप प्रतीत होता है।
—म० द० ५६५६

(३) —कैट्. कैट्. १।२५४

दीक्षाक्रमरत्न

लि०— —कैट्. कैट्. १।२५४

दीक्षाग्रहणकालादिवर्णन

लि०—श्लोक सं० १२६, पूर्ण। —सं० वि० २५५४२

दीक्षाङ्गभूतसिद्धादिशोधनप्रकार

लि०—श्लोक सं० २३७, अपूर्ण। —सं० वि० २५३३७

दीक्षातत्त्व

लि०—श्लोक सं० ३००, पूर्ण। —सं० वि० २५२१२

दीक्षातत्त्वप्रकाशिका

लि०—श्लोक सं० ३८०, पूर्ण। —सं० वि० २५४६२

दीक्षादर्श

लि०—वामदेव-पुत्र देवज्ञान कृत। —कैट्. कैट्. ३।५५
उ०—तन्त्रदीपिका में।

दीक्षादशरूपकारिका

लि०— —कैट्. कैट्. १।२५४

दीक्षादानविधि

लि०—श्लोक सं० ३९, अपूर्ण। —सं० वि० २६५०६

दीक्षानिर्णय

लि०— —कैट्. कैट्. ३।५५

दीक्षापत्र

लि०—पूर्ण। —डे० का० ४५४ (१८७५-७६ ई०)

दीक्षापद्धति

लि०—(१) त्रिपुरसुन्दरी की तान्त्रिक उपासना में अधिकार-प्राप्ति के लिए साधक को दी जानेवाली दीक्षा के नियम, विधि आदि का इसमें प्रतिपादन है।
—बी० कै० १२६३

(२) श्रीहंसानन्दनाथ योगी विरचित, श्लोक सं० २२५, पूर्ण। इसमें ३ परिच्छेद हैं। पञ्चक्रमसूत्र में सिद्धान्त, दीक्षाक्रम, साधक तथा आचार्य के लक्षण, सिद्धाख्या दीक्षा, आचार आदि विषय इसमें वर्णित हैं। —ट्रि० कै० ११२७ (ज)

(३) (क) श्लोक सं० ५६, पूर्ण। (ख) वागीश्वर भट्टाचार्य कृत, श्लोक सं० ४४५ अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ३१५, पूर्ण।
—सं० वि० (क) २४५६७, (ख) २५१४९, (ग) २५२८२

(४) —कैट्. कैट्. १।२५४

(५) दे०, संक्षेपदीक्षा। —कैट्. कैट्. २।५४

दीक्षाप्रकाश

लि०—(१) जीवनाथ विरचित, श्लोक सं० १८९८, पूर्ण।
—सं० वि० २५६९३

(२) लिपिकाल १६७७ शकाब्द या १७५५ ई०। —ए बं० ६३११

दीक्षाप्रकाशटीका

लि०— —ए० बं० ६५११

दीक्षाप्रयोग

लि०—(१) इसमें शक्ति के उपासकों की दीक्षा-पद्धति वर्णित है।
—ए० बं० ६५२८

(२) (क) श्लोक सं० ९०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३६, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० ४४ पूर्ण। (घ) श्लोक सं० ७१ पूर्ण।
—सं० वि० (क) २४४५६, (ख) २४६७३, (ग) २४७३२, (घ) २४७४९
—कैट्. कैट्. २।५४

(३)

दीक्षाभेद

लि०—कुलार्णव से गृहीत, श्लोक सं० १००। —अ० ब० १०८२५

दीक्षामार्तण्ड

लि०—श्लोक सं० १२ (२य मयूख मात्र)। —अ० ब० १०७७२

दीक्षामासादिविचार

लि०— —कैट्. कैट्. १।२५४

दीक्षारत्न

लि०—शिवप्रसाद कृत। —कैट्. कैट्. १।२५४

दीक्षाविधान

लि०—(१) सपादलक्ष (१२५०००) श्लोकात्मक परमानन्दतन्त्रान्तर्गत उमा-महेश्वर संवादरूप, पूर्ण। इसमें शक्ति की उपासना में अधिकार सिद्धि के लिए साधक की दीक्षाविधि वर्णित है। यह दीक्षा आम्नायदीक्षा के नाम से उल्लिखित है।

(२) श्लोक सं० ८८, अपूर्ण। —सं० वि० २५३५२

(३) दयाशङ्कर कृत। —कैट्. कैट्. १।२५४

दीक्षाविधि

लि०—(१) इसमें क्रियादीक्षा, वर्णदीक्षा, कलावती दीक्षा, स्पर्शदीक्षा, दृग्दीक्षा, वेधदीक्षा, शाक्तदीक्षा, यामलदीक्षा, पञ्चपञ्चिका दीक्षा, चरणदीक्षा, मेध्यदीक्षा, कौशिकी-दीक्षा आदि दीक्षाएँ तथा पूर्णाभिषेक वर्णित है। —ए० बं० ६५२७

(२) इसमें तन्त्रों में प्रचलित दीक्षाओं की विधि प्रतिपादित है।

—ने० द० १।७३६ (घ)

(३) श्लोक सं० १००, अपूर्ण। इसमें विविध दीक्षा की विधियाँ प्रतिपादित हैं। दीक्षा के तीन प्रकार, दीक्षा की मुक्तिहेतुता आदि विषय वर्णित हैं।

—ट्रि० कै० १०७५ (ग)

(४) (क) श्लोक संख्या ८०, पूर्ण। मन्त्रों के दशविध संस्कार। भी इसमें वर्णित हैं। (ख) श्लोक सं० ५४, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० ३०४, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४६४५, (ख) २५५१७, (ग) २५६८०

(५) —कैट्. कैट्. १।२५४

(६) अघोरशिवाचार्य कृत। —कैट्. कैट्. ३।५५

दीक्षाविनोद

लि०—रामेश्वर शुक्ल विरचित। —कैट्. कैट्. १।२५४

दीक्षाविवेक

लि०—रामेश्वर विरचित। —कैट्. कैट्. १।२५४

दीक्षाशेखर

उ०—तन्त्रदीपिका में।

दीक्षासंस्कार

लि०— —कैट्. कैट्. १।२५४

दीक्षासेतु

लि०—रामशङ्कर कृत। —कैट्. कैट्. १।२५४

दीक्षाहोम

लि०—पिङ्गलातन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० ३४, पूर्ण।

—सं० वि० २४८४८

दीक्षोत्तर

शैवतन्त्र।

उ०—रामकण्ठकृत नरेश्वरपरीक्षा की टीका में।

दीपकर्मरहस्य

लि०—उड्डामरतन्त्र में कार्तवीर्यार्जुनविद्या के अन्तर्गत, श्लोक सं० २५२, अपूर्ण।
—सं० वि० २५८५८

दीपदानरत्न

लि०—प्रेमनिधि पन्त विरचित। —कैट्. कैट्. १।२५५

दीपदानविधि

लि०—(१) भैरवीतन्त्रान्तर्गत। इसमें बटुक भैरव के लिए दीपदानविधि वर्णित है। —ए० बं० ६४८१

(२) (क) रामचन्द्र विरचित, श्लोक सं० १११, पूर्ण। इसमें बटुक भैरव के निमित्त दीपदानविधि वर्णित है। (ख) भैरवतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ६७, पूर्ण। इस दीपदानविधि के पूर्व भैरवपद भी जोड़ा गया है। अर्थात् ग्रन्थनाम भैरवदीपदानविधि कहा गया है। —सं० वि० (क) २५३५८, (ख) २५३९६

(३) मेरुतन्त्र से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।२५५, २।५५

दीपदीपिका

लि०—श्लोक सं० १००० तथा पटल सं० ८१ —अ० ब० ११२४६

दीपप्रकाश

(१) लि०—नन्द-पुत्र दीनानाथ के प्रेम से (प्रेमनिधि पन्त द्वारा) शकाब्द १६४८ में विरचित। इसमें कार्तवीर्य के लिए दीप अर्पण करने की विधि प्रतिपादित है। साथ ही बटुक-भैरव को दीप अर्पण की विधि भी दी गयी है। —ए० बं० ६५११

(२) श्री प्रेमनिधि शर्मा कृत, श्लोक सं० १०३६, इसमें तन्त्रोक्त नियमानुसार राज-राजेश्वरी के उद्देश्य से दीपदानविधि वर्णित है।

(३) दीपप्रकाश-टीका शब्दप्रकाश, प्रेमनिधि पन्त कृत, सहित। श्लोक सं० २८३२, पूर्ण। —सं० वि० २३९२८

(४) प्रेमनिधि पन्त विरचित, स्वरचित टीका शब्द-प्रकाश युक्त। जिसकी रचना १७५५ ई० में हुई थी। —कैट्. कैट्. १।२५५

दीपोत्सवयन्त्रग्रन्थ

लि०—श्लोक सं० २९३, अपूर्ण। ग्रन्थ के आरंभ में ग्रन्थ का नाम अन्य हाथ से लिखा हुआ है और संदिग्ध भी प्रतीत होता है। —र० मं० ४९६७ (क)

दीप्तशास्त्र

लि०—१४ पटलों में। —कैट्. कैट्. ३।५५

दीप्तागम

दश शिवागमों में अन्यतम।

दीर्घायुःसाधनप्रकार

लि०—तोडलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ४०, पूर्ण।

—सं० वि० २५८०५

दुर्गाकवच

लि०—(१) (क) जगद्धात्रीदुर्गापूजापद्धति से संश्लिष्ट दोनों की संमिलित श्लोक सं० ११८, अपूर्ण।

(ख) दुर्गानित्यपूजाविधि के साथ संमिलित। संयुक्त श्लोक सं० लगभग ६३०, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २५७८२, (ख) २५८३२

(२) (क) कुब्जिकातन्त्र से गृहीत; (ख) ब्रह्मयामल से गृहीत।

—कैट्. कैट्. (क) १।२५६, (ख) २।५५

दुर्गाक्रियाभेदविधान

लि०—(१) महाशैवतन्त्र से गृहीत, श्लोक सं० ९२४, १३ उपदेशों में।

—अ० ब० ६७३५

[इसके साथ (क) दुर्गा विश्वबालविधान। महा भैरव तन्त्रसे गृहीत, २१ उपदेशों में, तथा (ख) स्नानविधि। शैवशूलिनीकल्प से गृहीत। ये दो पुस्तकें और हैं।]

(२) १ से ९ उपदेश पर्यन्त, अपूर्ण (दुर्गाक्रियाभेदविधान)।

—सं० वि० २५५७९

दुर्गादकारादिसहस्रनामस्तोत्र

लि०—कुलार्णवतन्त्रान्तर्गत। —कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्गादादिनामस्तोत्र

लि०—(१) कुलार्णवतन्त्रान्तर्गत, यह स्तोत्र प्रकाशित हो चुका है।
—ए० बं० ६७०५

(२) शिव-पार्वती संवादरूप। यदि साधक देवता, गुरु और मन्त्र को अभिन्न मान कर इस स्तोत्र का पाठ करे तो उसे सर्वत्र सुखप्राप्ति होती है। इसमें दुर्गा देवी की दकारादि नामपदों से स्तुति की गयी है। —रा० ला० ४६१

(३) —कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्गादीपदान

लि०— —सं० वि० २५८३२

दुर्गादीपप्रयोग

लि०—श्लोक सं० १०७, पूर्ण। इसके साथ कार्तवीर्यार्जुनदीपदानविधि भी संमिलित है। —सं० वि० २६२६६

दुर्गानामफल

लि०—इसमें 'दुर्गा' नाम के उच्चारण और जप का माहात्म्य वर्णित है। दुर्गा-नाम के उच्चारण और जप से महा दरिद्र भी धनी होकर अन्त में शिवलोक में सत्कार पाता है।
—रा० ला० ९९३

दुर्गानाममाहात्म्य

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, पूर्ण। —बं० प० ३८३ (ख)

(२) मायातन्त्रान्तर्गत। —कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्गानित्यपूजाविधि

लि०—श्लोक सं० ३३०, अपूर्ण। —सं० वि० २५८३२

दुर्गापञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत देवीरहस्य में उक्त देवी-भैरव संवादरूप। (१) दुर्गापूजाविधि, (२) दुर्गापूजापद्धति, (३) दुर्गासहस्रनाम, (४) दुर्गाकवच,

(५) दुर्गास्तोत्र इसके ५ पटलों में ये ५ विषय वर्णित हैं। यह दुर्गासर्वस्व परम रहस्य है। —नो० सं० २।१०२

(२) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० ३००। —अ० व० ११२९५

(३) श्लोक सं० ४५२, पूर्ण। —र० मं० ४९२३

(४) श्लोक सं० १८०, अपूर्ण

(इसके अतिरिक्त सं० वि० में २ अपूर्ण प्रतियाँ २५१९५ तथा २५२२२ और हैं।) —सं० वि० २५८३१

(५) —कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्गापटल

लि०—(१) श्लोक सं० २९, पूर्ण। —सं० वि० २४७०३

(२) —कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्गापटलानुक्रम

लि०—श्लोक सं० ११६, अपूर्ण। —सं० वि० २६१७६

दुर्गापद्धति

लि०— —कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्गापुरश्चरणपद्धति

लि०— —कैट्. कैट्. २।५५

दुर्गापूजनपटल

लि०—रुद्रयामल उत्तरखण्ड के षष्ठाध्याय पर्यन्त, श्लोक सं० २७०, पूर्ण। —सं० वि० २४११५

दुर्गापूजापद्धति

लि०— —कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्गापूजाप्रयोग

लि०—भैरवतन्त्रान्तर्गत, पूर्ण। —सं० वि० २४५६२

दुर्गापूजाविधि

लि०—(१) इसमें क्रमानुसार जयदुर्गा पूजानुष्ठान का विवरण प्रतिपादित है। —रा० ला० २३१

(२) श्लोक सं० ६४, पूर्ण। —सं० वि० २५७६०

(३) —कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्गाप्रदीप

लि०—रङ्गनाथ-पुत्र नीलकण्ठ विरचित। श्लोक सं० ३०००।

—अ० ब० १०६७४

दुर्गाभक्तितरङ्गिणी या दुर्गास्तव (दुर्गोत्सव?) पद्धति

लि०—(१) इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि विद्यापति हैं। उन्होंने मिथिलाधिपति भैरव-सिंह (वीरसिंह के भाई) की संरक्षकता में यह ग्रन्थ रचा। इसमें दो तरङ्ग हैं। पहले में ३२ श्लोकों द्वारा सामान्य रूप से देवी-पूजाविधि वर्णित है तथा पूजा की निर्दिष्ट तिथियाँ बतलायी गई हैं एवं २रे में दुर्गोत्सव का प्रतिपादन है। इस पुस्तक में सामग्री प्रायः देवी-पुराण, कालिकापुराण, भविष्यपुराण आदि पुराणों से संगृहीत है। गौड़निबन्ध, शारदा-तिलक, शिल्पशास्त्र, शिवरहस्य आदि से भी उद्धरण लिये गये हैं।

—इ० आ० २५६४

(२) (क) नामतः वीरसिंह (नरसिंह देव) मिथिलाधिपति द्वारा वास्तव में विद्यापति द्वारा रचित। प्रस्तावना में यह ग्रन्थ दुर्गोत्सवपद्धति कहा गया है।

(ख) नामतः धीरमती, मिथिला के नरेश नारायण की पत्नी दर्प द्वारा वास्तव में विद्यापति द्वारा रचित। —कैट्. कैट्. (क), १।२५६, (ख) २।५५

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा शक्तिरत्नाकर में।

दुर्गाभक्तिप्रकाश

उ०—रघुनन्दन द्वारा निजनिर्मित तीर्थतत्त्व में।

दुर्गाभक्तिलहरी

लि०—(१) रघूत्तम तीर्थ कृत। इसमें दुर्गाभक्ति, माहात्म्य आदि वर्णित हैं।

—रा० ला० २३४

(२) रघूत्तम कृत। श्लोक सं० १७६९। इसमें प्रतिपादित विषय—पर ब्रह्म का भक्तों के ऊपर अनुग्रह करने के लिए दुर्गा आदि के रूप में शरीर कल्पन, ज्ञानियों को भी दुर्गा का ही सेवन और भजन करना चाहिये, देवीकीर्तन-माहात्म्य आदि, देवी के १४ नामों

का निर्देश, देवी की माया संज्ञा का निरूपण, महामाया शब्द का अर्थ, दुर्गा के दर्शनों का फल वर्णन, दुर्गा को किये गये प्रणाम का फल, दुर्गा के स्मरण आदि का तथा दुर्गा के भक्त का माहात्म्य, नव अङ्गवाली भक्ति का लक्षण, शारदीय पूजा न करने में दोष, दुर्गापूजन का फल, विशेष प्रतिमा में पूजा का फल विशेष, देवी के कामाख्या आदि विविध रूपों का निरूपण, लक्ष्मी, गङ्गा, गौरी आदि में भेद मानने में दोष, शक्ति और शक्तिमान् में अभेद कथन, दुर्गा का नित्यत्ववर्णनपूर्वक औपाधिक जन्मादि ग्रहण कथन आदि।

—रा० ला० २४८२

(३) —कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्गामन्त्रविभागकारिका

लि०—श्लोक सं० २१५, पूर्ण। —सं० वि० २४०५२

दुर्गारहस्य

लि०—(१) इसमें १० पटल हैं, जिनमें मन्त्रविद्या-प्रकाश, पुरश्चर्याविधि, चक्र-पूजाविधि आदि विषय प्रतिपादित हैं। —ए० बं० ५९९० (३)

(२) अनेक पुस्तकों के साथ संमिलित। —सं० वि० २५८३२

(३) (क) मार्कण्डेयपुराण से गृहीत

(ख) देवीरहस्य से गृहीत

—कैट्. कैट्. (क) २।५५, (ख) ३।५५

दुर्गाराधनचन्द्रिका

लि०—(क) श्लोक सं० ७८४, पूर्ण। (ख) अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४८३४, (ख) २४८३०

दुर्गार्चनकल्पतरु

लि०—(१) कृष्णानन्द-पुत्र दैवज्ञशिरोमणि लक्ष्मीपति विरचित, यह १० कुसुमों (परिच्छेदों) में पूर्ण है। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—व्यवस्था कुसुम, पूजा, पाठ आदि का निर्णय, प्रतिपदा के कृत्य, द्वितीया से लेकर पञ्चमी पर्यन्त कृत्य, बिल्व का अभिमन्त्रण, पत्रीप्रवेश कृत्य (?), अष्टमी कृत्य, बलिदान, कुमारीपूजन, कुमारी-लक्षण, नवमीकृत्य, दशमीकृत्य आदि। —ने० द० १।११०

(२) —कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्गार्चनमाहात्म्य

लि०—— —कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्गार्चनामृतरहस्य

लि०——मथुरानाथ शुक्ल विरचित। —कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्गावज्रपञ्जर

लि०——काशीखण्ड (स्कन्द पुराणान्तर्गत) के ७२ वें अध्याय से गृहीत, श्लोक सं० ४६।
—अ० ब० ७३१४

दुर्गावतीप्रकाश या समयालोक

लि०——पद्मनाभ कृत। —कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्गाशतनामस्तोत्र

लि०——(१) विश्वसारतन्त्रान्तर्गत। पूर्ण —बं० प० ९७२
(२) दुर्गाशतनाम, दुर्गानित्यपूजाविधि, कवच, रहस्य आदि अनेक पुस्तकों के साथ।
—सं० वि० २५८३२

दुर्गासहस्रनामस्तोत्र

लि०——(१) कुलार्णवतन्त्रान्तर्गत। पूर्ण। —बं० प० १२०३
(२) कुलार्णव से गृहीत तथा मार्कण्डेयपुराण से गृहीत।
—कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्गोत्सव

लि०——उमानन्दनाथ विरचित (क) श्लोक सं० ७००। (ख) श्लोक सं० ७००।
—अ० ब० (क) ६२३६, (ख) ५५७८

उ०——अल्लादनाथ ने इसका उल्लेख किया है।
—कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्गोत्सवकौमुदी

लि०——शम्भुनाथ विरचित। —कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्गोत्सवचन्द्रिका

लि०—(क) रामचन्द्र क्षितिपति विरचित।
(ख) रामचन्द्र गजपति (उड़ीशा के राजा) कृत।
—कैट्. कैट्. (क) १।२५६, (ख) ३।५५

दुर्गोत्सवतत्त्व या दुर्गातत्त्व

लि०—रघुनन्दन कृत। —कैट्. कैट्. १।२५६

दुर्लभतन्त्र

(दुर्गानामपुरश्चरणविधि)

लि०— पूर्ण। —वं० प० २३१

दुर्वासोमततन्त्र

उ०—Oxford १०९ (क) के अनुसार इसका उल्लेख है।
—कैट्. कैट्. १।२५६

दूतीयजनमन्त्र

लि०— —कैट्. कैट्. ३।५५

दूतीयाग

लि०—दक्षिणामूर्तिसंहिता से गृहीत। श्लोक सं० ८।
—अ० ब० ८४९८ (ग)

दूतीयागविधि

लि०—(क) श्लोक सं० २०० (पञ्चम भाग)
(ख) ,, ६०
—अ० ब० (क) ११००८, (ख) १७९

देवतापूजनक्रम

लि०—अनन्तराम कृत, मन्त्रमहोदधि के अनुसार। श्लोक सं० ४००।
—अ० ब० ११२३२

देवतार्चनपद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक सं० २५०। (ख) श्लोक सं० २५०।
—अ० ब० (क) ८६६५, (ख) १२१६६

(२) देवतार्चनापद्धति। —कैट्. कैट्. १।२५८

देवदर्शिसंहिता

लि०—चिदानन्दनाथ कृत। सर्वसम्मोहिनीतन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० ८०, अपूर्ण।
—सं० वि० २५३६१

देवदूतीपूजाविधि या नवदुर्गापूजाविधि

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक सं० २९६
—सं० वि० २४३९०

देवपञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक सं० ३४, अपूर्ण। —सं० वि० २५१३८

देवीपात्रदानविधि

लि०—श्लोक सं० ५४, पूर्ण। —सं० वि० २६३६८

देवामृतपञ्चरात्र

लि०—ब्रह्मा-सनत्कुमार संवादरूप। ११ पटलों में पूर्ण।
—ने० द० १।१०७८ (ग)

देवालयप्रतिष्ठा

लि०—(१) पत्रे १६०, अपूर्ण। —तै० म० ११३८७

(२) —कैट्. कैट्. १।२६०

देविकाक्रम

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

देविकासाधन

लि०—इसमें गृहस्थों द्वारा देविका देवी के साधन की विधि वर्णित है।
ने० द० १।१३५ (क)

देवी अर्गल, कीलक तथा सप्तशतिकास्तोत्र

लि०—(१) श्लोक सं० ११२

(२) देवी अर्गल, कीलक, हृदय, ध्यान तथा कवच।

—अ० व० (१) १३४५० (ख), (२) ७१३३ (क)

देवीकल्प

उ०—अहल्याकामधेनु में।

देवीकल्पलता

लि०— —कैट्. कैट्. १।२६०

देवीकवच

लि०—(१) श्लोक सं० ७५ हरिहर ब्रह्म विरचित। इसमें जयादि देवियों का अङ्ग-प्रत्यङ्ग में विन्यास बताया गया है। —रा० ला० ४५९

(२) —ए० बं० ६४१२

(३) —ने० द० १।१४७३ (ग)

(४) (क) श्लोक सं० ५०। (ख) श्लोक सं० १५०। (ग) श्लोक सं० १८।

(घ) इसमें दशा पटल व्रत, गरुड पञ्चाक्षरी मन्त्र तथा गणनाथ कवच भी संमिलित हैं।

—अ० व० (क) ५४०९, (ख) ३४५१, (ग) ७२५५, (घ) १३४३२।

देवीकवचस्तोत्रटीका

लि०—नारायणभट्ट कृत, श्लोक सं० १६०, पूर्ण।

—र० मं० ४९५७ (क)

देवीकवचार्गलकीलकस्तोत्र

लि०—श्लोक सं० ११४, पूर्ण। —र० मं० ४७६२

देवीकालोत्तर

लि०— —कैट्. कैट्. १।२६०

उ०—शैव परिभाषा (शिवाग्रयोगीन्द्रज्ञान शिवाचार्य कृत) में।

देवीचक्रपद्धति

लि०— —कैट्. कैट्. ३।५६

देवीचरित्र

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। यह नवरात्रोत्सव पर दुर्गापूजा का प्रतिपादक ग्रन्थ है। इसमें १३ अध्याय हैं। उमापूजाविधि, देवीप्रभाव, देवीरहस्य आदि विषय इसमें वर्णित हैं। —ए० बं० ५८७९

(२) श्लोक सं० १०००, रुद्रयामलान्तर्गत।

देवीतन्त्र

उ०—Oxford १०९ (क) के अनुसार इसका उल्लेख है। दे०, देवीमततन्त्र। —कैट्. कैट्. १।२६०

देवीदीक्षाविधान

लि०—ऊर्ध्वाम्नायमिश्र अनुत्तरपरमरहस्य के अन्तर्गत ईश्वर-स्कन्द संवादरूप। ७ उल्लासों में पूर्ण। इसमें बहिर्मातृका, अन्तर्मातृका, भूशुद्धि, प्रोक्षण आदि का प्रतिपादन करते हुए अजपामन्त्र से शुद्धात्मा शिष्य को ग्रहण कर श्रेष्ठ देशिक (गुरु) दीक्षा प्रदान करे यह प्रतिपादित है। —म० द० ५६५८

देवीनामविलास

लि०—श्रीकृष्णकौल-पुत्र साहिबकौल विरचित। इस ग्रन्थ की रचना सन् १६६७ ई० में हुई। इसमें भवानी के सहस्रनामों में से प्रत्येक नाम का अर्थ एक श्लोक द्वारा उत्तम रीति से वर्णित है। —ए० बं० ६७०३

देवीनित्यपूजाविधि

लि०— —कैट्. कैट्. १।२६०

देवीनित्यविधि

लि०—श्लोक सं० ७५०, अपूर्ण। —अ० ब० ५५७६

देवीपद्धति

लि०—श्लोक सं० ५००। —अ० ब० ५५७३

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

देवीपरपूजाविधि

लि०—— —कैट्. कैट्. १।२६०

देवीपरिचर्या

उ०—अहल्याकामधेनु में।

देवीपूजनभास्कर (१)

लि०—(१) सिद्धान्त विरचित, श्लोक सं० २००।

—अ० ब० १०२३७

(२) —रा० ला० २५७५, २३९१

देवीपूजनभास्कर (२)

लि०—शम्भुनाथ कृत। —कैट्. कैट्. १।२६१

देवीपूजा

लि०—(१) इसमें देवी की पूजा के सम्बन्ध में विशेषतः देवी को विभिन्न वस्तुएँ भेट करने के अवसर पर बोले जाने वाले श्लोकों का संग्रह है।

—ए० बं० ६३९९

(२) गुरुपूजाविधि के साथ संश्लिष्ट, संमिलित श्लोक सं० लगभग ७२, पूर्ण।

—सं० वि० २६६९३

देवीपूजापद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ११५०। (ख) श्लोक सं० ६००।

—अ० ब० (क) २३०४, (ख) ८०४१

(२) श्लोक सं० ४००, पूर्ण, (ऊपर अङ्कित पुस्तक से यह भिन्न प्रतीत होती है)।

—र० मं० ४५१०

(३) श्लोक सं० ४७६, पूर्ण। —सं० वि० २५६८२

(४) चैतन्यगिरि कृत। —कैट्. कैट्. ३।५६

देवीपूजाप्रकरण

लि०—निगमों से उद्धृत। श्लोक सं० ३९५, पूर्ण।

—डे० का० ७६५ (१८८२–८३ ई०)

देवीपूजाविधान

लि०—पूर्ण, इसमें देवी की पूजाविधि वर्णित है। —म० द० ५६५९–६१

देवीपूजाविधि

लि०—(१) श्लोक सं० ४३०, पूर्ण। —सं० वि० २६२५४

(२) —कैट्. कैट्. १।२६१

देवीभक्तिरसोल्लास

लि०—जगन्नारायण विरचित, श्लोक सं० २२२, यह ग्रन्थ दो भागों में विभक्त है। १म में स्तोत्र कीर्तन द्वारा नैष्कर्म्यसिद्धि का निरूपण है एवं २य भाग में विद्या स्वरूपादि कथन। —रा० ला० २१६८

देवीमततन्त्र

उ०—Oxford. १०९ (क) में उल्लिखित। दे०, देवीतन्त्र। —कैट्. कैट्. १।२६१

देवीमहिम्नःस्तोत्र

लि०—(१) दुर्वासा कृत। इसमें त्रिपुरा देवी की महिमा वर्णित है। —ए० बं० ६६७६

(२) इस पर नित्यानन्द विरचित व्याख्या है। —ए० बं० ६६७७

(३) दुर्वासा कृत। —कैट्. कैट्. १।२६१

देवीमाहात्म्य

लि०—महर्षि व्यास विरचित, पूर्ण। —जं० का० १०३७

देवीमाहात्म्यपाठविधि

लि०— —कैट्. कैट्. १।२६१

देवीमाहात्म्यमन्त्रविभागक्रम या कल्याणीतन्त्र

लि०— —कैट्. कैट्. १।२६२

देवीमाहात्म्यरहस्यविधि

लि०—इसमें रहस्यसहित देवीमाहात्म्य या सप्तशती (चण्डी) पाठ की विधि लोगों पर अनुग्रह करने की कामना से मार्कण्डेय प्रोक्त रीति से वर्णित है। —म० द० ५६६२

देवीमहोत्सव

लि०—तिमलभट्ट गोदातीरवासी के अनुज ब्रह्मेश्वर कृत।

—अ० ब० १०५२३

देवीमानसपूजन (१)

लि०— —कैट्. कैट्. १।२६१

देवीमानसपूजा (२)

लि०—श्लोक सं० ६७, अपूर्ण। —अ० ब० २३०४ (क)

देवीमानसपूजाविधि

लि०— —कैट्. कैट्. १।२६१

देवीयामलतन्त्र

उ०—तारारहस्यवृत्ति, तन्त्रालोक, ताराभक्तिसुधार्णव तथा कुलप्रदीप में। क्षेमराज ने भी इसका उल्लेख किया है दे०, Hall पे. १९७।

देवीरहस्य या परादेवीरहस्य

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। इसमें ६० पटल हैं एवं पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध के भेद से दो भाग हैं। प्रत्येक पटल का विवरण पृथक् दिया गया है।

—इ० आ० २५४६

(२) तन्त्रोक्त विशेष प्रक्रियाएँ, जो देवीपूजा करते समय पहले की जाती हैं, इसमें वर्णित है। —बी० कै० १२६२

(३) रुद्रयामलान्तर्गत, ६० पटलों में। यह कौल सम्प्रदाय से सम्बद्ध है। पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध भेद से इसके दो भाग हैं। पहले भाग में २५ पटलों से शाक्त मत के मुख्य मुख्य तत्त्वों पर प्रकाश डाला गया है। २य भाग में ३५ पटलों द्वारा विभिन्न देवियों की पूजाविधियाँ प्रतिपादित हैं। —ए० बं० २८८०

(४) श्लोक सं० २०००, रुद्रयामल के अन्तर्गत, —अ० ब० ८३००

(५) भैरव प्रोक्त, पन्ने २१७, अपूर्ण। —जं० का० १०४३

(६) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० लगभग ३४२५ (?) अपूर्ण।

—र० मं० ५२९०

(७) (क) श्लोक सं० १४८४, पूर्ण। (ख) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० २७३०, पूर्ण। —सं० वि० (क) २३८४६, (ख) २३९२३

(८) इस संग्रह में ३ प्रतियाँ हैं। —म० रि० २१८,२१९ और २२०

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

देवीरहस्य या वैकृतिकरहस्य

लि०—यह १२० श्लोकों में पूर्ण है। इसमें चण्डिका की पूजाविधि, ध्यान आदि निरूपित हैं। —नो० सं० २।१०६

देवीरहस्यतन्त्र

लि०—(१) यह रुद्रयामलान्तर्गत देवीरहस्य से भिन्न है, यह सूर्योपासनापरक है। —ए० बं० ६००१

(२) श्लोक सं० ४००, २६ से ३० पटल तक, ये ५ पटल गणपतिपरक हैं। —अ० ब० १३६८०

(३) (क) रुद्रयामल से गृहीत, श्लोक सं० १०००।
(ख) श्लोक सं० १५००।
—अ० ब० (क) ८९९६, (ख) १०६६४

(४) देवी-महादेव संवादरूप, श्लोक सं० ६२१, २५ पटलों में पूर्ण। यह सूर्यपञ्चाङ्ग तथा सूर्यकवच गुह्यातिगुह्य तथा शिवरूप कहा गया है। इसमें प्रतिपादित विषय—सूर्य के पञ्चाङ्ग मन्त्रों के उद्धार आदि, सूर्य की नित्य पूजा का रहस्य, सूर्यपूजापद्धति का सविस्तर प्रतिपादन, वज्रपञ्जर नामक सूर्यकवच कथन, सूर्यसहस्रनामवर्णन, तथा सूर्य के परमार्थ स्तोत्रों का प्रतिपादन आदि। —रा० ला० ४१६०

देवीविषयोपन्यास

लि०—इसमें देवी की उपासना से सम्बद्ध विविध विषयों का निरूपण किया गया है। —म० द० ५६६३

देवीसप्तपारायणक्रम

लि०—देवी-ईश्वर संवादरूप, इसमें देवी के सप्तपारायण स्तोत्र का प्रतिपादन है अथवा देवी के स्तोत्र-पारायण के सात प्रकार प्रदर्शित हैं।

—म० द० ५६६४

देवीसूक्त

लि०—(१) रुद्रयामल से गृहीत, श्लोक सं० ८०।
(२) कामतन्त्र से गृहीत, श्लोक सं० ६०।
—अ० व० (क) ३४५८, (ख) ५७०३

देवीसूक्तवर्णन

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ११०, पूर्ण।
—र० मं० ५०२८ (ख)

देवीस्तोत्र

लि०— —डे० का० ४५५ (१८७५–७६ ई०)

देव्यागमतन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव तथा रामार्चनचन्द्रिका में।

देव्या मत

लि०—दे०, देवीमततन्त्र। —कैट्. कैट्. १।२६१
उ०—शतरत्नसंग्रह में।

दौर्गानुष्ठानकलापसंग्रह

लि०—श्लोक सं० ५५००। इसमें बीजाङ्कुरारोपण से लेकर तीर्थस्नानान्त दुर्गोपासनासम्बन्धी संपूर्ण क्रियाकलाप वर्णित है। —ट्रि० कै० ९६९

द्रव्यशोधन

लि०—(क) श्लोक सं० ५०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३०, पूर्ण (?)।
—सं० वि० (क) २५६३६, (ख) २५८३३

द्रव्यशोधनप्रकार

लि०—श्लोक सं० ८०, पूर्ण। —सं० वि० २६५२४

द्रव्यशोधनविधि

लि०—श्लोक सं० ९०, अपूर्ण। —सं० वि० २५३७७

द्वयसम्पत्ति

वामननाथ विरचित।

उ०—शिव उपाध्याय कृत विज्ञानभैरव-टीका में।

द्वात्रिंशद्दीक्षाप्रयोग

लि०—इसमें शाक्त संप्रदाय में प्रचलित दीक्षा-सम्बन्धी विविध प्रकार की ३२ विधियों का निरूपण है। —म० द० ५६६५

द्वादशमहागणपतिविद्या

लि०—कुलडामरान्तर्गत, श्लोक सं० ११२, पूर्ण। —सं॰ वि. २५३४०

द्वादशरश्मिपूजा

लि०—श्लोक सं० १५००, अपूर्ण। —सं० वि० २६५३३

द्वारादिपूजा

लि०—श्लोक सं० २५०। —अ० ब० ११२०७

द्वाविंशतिपात्रविधि

लि०—इसमें कौलों की २२ पात्रविधियाँ वर्णित है। —सं० वि० २४२६७

धनदाप्रयोग

लि०—(१) श्लोक सं० ४२, अपूर्ण। —सं० वि० २४४८४

(२) —कैट्. कैट्. ३।५८

धनदामन्त्र

लि०—(१) पूर्ण। —बं० प० ७००

(२) (क) श्लोक सं० लगभग ६५, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३५, अपूर्ण।
—सं० वि० (क) २४१९९, (ख) २५८३४

धनदायक्षिणीप्रयोग

लि०—इसमें धनदा यक्षिणी की पूजाप्रक्रिया वर्णित है। यह पूजाप्रक्रिया अंशतः कृष्णानन्द के तन्त्रसार में वर्णित पूजाप्रक्रिया से मिलती-जुलती है।

—ए० बं० ६४०२

धर्मप्रशंसा

लि०—श्लोक सं० ५१। —अ० व० १९९

धर्मवितान

लि०—मिश्र मूलचन्द्र-पौत्र, भवानीदास-पुत्र हरिलाल विरचित। विक्रम संवत् १७७९ में अथवा १७२२ ई० में रचा गया। —ए० बं० ६२२८

धर्मशिवपद्धति

उ०—खेमराजकृत स्वच्छन्दतन्त्र-टीका उद्योत में।

धर्माचार्यस्तुति

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्द्धिनी में।

धातुसमीक्षा

लि०—शैवतन्त्र। दे०, षड्धातुसमीक्षा। —कैट्. कैट्. ३।५९

उ०—उत्पलाचार्य कृत स्पन्दप्रदीपिका में।

धूमावतीदीपदानपूजा

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें धूमावती देवी के निमित्त प्रज्वलित दीपदान पूजाविधि प्रतिपादित है। यह अत्यन्त गोपनीय है।

—बी० कै० १३११

धूमावतीपञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक सं० ३२५, पूर्ण। —सं० वि० २४८८५

धूमावतीपटल

लि०— —कैट्. कैट्. १।२७२

धूमावतीपूजापद्धति

लि०— —कैट्. कैट्. १।२७२

धूमावतीपूजाप्रयोग

लि०—धूमावती मन्त्रोद्धार भी इसमें सम्मिलित है। (क) श्लोक सं० ३८, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १२५, पूर्ण। —सं० वि० (क) २५९९३, (ख) २६४३१

ध्यानमाला

लि०— —कैट्. कैट्. ३।५९

ध्यानशतक

लि०—शेष विरचित। —कैट्. कैट्. १।२७३

ध्यानसाधन

लि०—कालीकुलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० २५, पूर्ण।
—सं० वि० २५७५६

ध्वजदण्डस्थापनविधि

लि०—कामिकान्तर्गत, श्लोक सं० ६०। —अ० व० ६८३२ (ख)

ध्वजप्रतिष्ठादि

लि०—श्लोक सं० १७३०, पूर्ण। इसमें ध्वजप्रतिष्ठाविधि प्रतिपादित है।
—ट्रि० कै० ९७०

ध्वनि

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

ध्वान्तदीपिका

लि०—सोमनाथभट्ट कृत। —कैट्. कैट्. १।२७४
दे०, अज्ञानध्वान्तदीपिका। —कैट्. कैट्. २।५९

नकुलीकल्प

लि०—(१) श्लोक सं० ७५, पूर्ण। —सं० वि० २५५४६
(२) —कैट्. कैट्. ३।५९

नकुलीन्यास

लि०—श्लोक सं० ५६, पूर्ण। इसमें महासमष्टिन्यास भी संमिलित है।
—सं० वि० २५३११

नकुलीवागीश्वरीप्रयोग

लि०—श्लोक सं० ९५, पूर्ण। —सं० वि० २५८३६

नकुलीवागीश्वरीविधान

लि०—(१) (क) श्लोक सं० १४४, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३१ अपूर्ण।
—सं० वि० (क) २५८३६, (ख) २५८३८

(२) —कैट्. कैट्. १।२७३

नकुलीश्वरीपद्धति

लि०—श्लोक सं० १५०। —अ० ब० ८३५९

नकुलेश्वरीमन्त्रविधान

लि०—त्र्यम्बक विरचित, श्लोक सं० ६२, अपूर्ण। इसमें नकुलेश्वरी वागीश्वरी (दुर्गा) का मन्त्र और उसके पुरश्चरण का विधान कहा गया है।
—रा० ला० ९०६

नक्षत्रचक्र

लि०— —कैट्. कैट्. ३।५९

नखप्रकाश या नखप्रताप

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

नन्दिकेश्वरसंहिता

उ०—तन्त्रसार, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमतत्त्वविलास तथा विष्णुपूजापद्धति (चैतन्यगिरि कृत) में।

नन्दिशिखा

उ०—तन्त्रालोक तथा साम्बपञ्चाशिका-टीका (क्षेमराज कृत) में।

नन्द्यावर्तमहातन्त्र

लि०—(क) श्लोक सं० १००, केवल ८८ वाँ पटल। (ख) श्लोक सं० ४००, अपूर्ण।
—अ० ब० (क) ११११९ (ग), (ख) ३४९५

नयसंगीति

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

नरसिंहपञ्चाङ्ग

लि०---(१) रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ४६८, पूर्ण।

---र० मं० ४८१७

नरसिंहपरिचर्या

लि०--- ---कैट्. कैट्. २।६०

नरसिंहपूजापद्धति

लि०---श्लोक सं० ११४, अपूर्ण। ---सं० वि० २६६६२

नरेश्वरपरीक्षा

उ०---सर्वदर्शनसंग्रह के शैवदर्शन में।

नरेश्वरपरीक्षा-प्रकाश

लि० (१)---रामकण्ठ कृत, श्लोक सं० २५००। ---अ० ब० १८२९

(२) सर्वदर्शनसंग्रहान्तर्गत शैवदर्शन में उल्लिखित नरेश्वरपरीक्षा पर नरेश्वर-परीक्षाप्रकाश नाम की टीका रामकण्ठ विरचित है। ---कैट्. कैट्. १।२७९

नरेश्वरविवेक

परमेष्ठी विरचित।

उ०---Oxford . २३९ के अनुसार वितस्तापुरी ने इसका उल्लेख किया है।

---कैट्. कैट्. १।२७९

नलिनीविजय

उ०---मन्त्रमहार्णव में।

नवग्रहचिन्तामणि

लि०---श्लोक सं० ६४०। ---अ० ब० १३३९०

नवग्रहमन्त्र

लि०---(१) श्लोक सं० १००। ---अ० ब० १३४६१

(२) (क) श्लोक सं० १०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १८, पूर्ण।

---सं० वि० (क) २३८८५, (ख) २५१८४

(३) ---कैट्. कैट्. १।२८०

नवग्रहयन्त्र तथा नवग्रहकारिका

लि०—(१) वृहस्पति विरचित। (क) श्लोक सं० ३०। (ख) श्लोक सं० १५। (ग) श्लोक सं० ६०।

—अ० व० (क) ८११२ (ख), (ख) ८११२ (ग), (ग) ८११२ (घ)।

(२) श्लोक सं० १९, पूर्ण। —सं० वि० २४११४

नवग्रहसिद्धयन्त्रपूजाविस्तार

लि०—रुद्रयामलोक्त कृष्ण-युधिष्ठिर संवादरूप। इसमें नवग्रह-यन्त्र के निर्माण और पूजन की विधि वर्णित है। —ए० बं० ५८८९।

नवचक्रशेखर

उ०—प्राणतोषिणी में।

नवचक्रेश्वर

उ०—तन्त्रसार में।

नवचण्डीमहोत्सव

लि०— —कैट्. कैट्. १।२८१

नवदुर्गाकल्प

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

नवदुर्गापूजन तथा नवदुर्गापूजा

लि०— कैट्. कैट्. ३।६०

नवदुर्गापूजारहस्य

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, पार्वती-महादेव संवादरूप। ११ पटलों में। प्रारंभिक २ पटल प्रस्तावना के रूप में हैं, शेष ९ पटलों में दुर्गा के शैलपुत्री आदि नौ रूपों की पूजा का विवरण दिया हुआ है। —ए० बं० ५८८५

नवदुर्गापूजाविधि

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। नामान्तर—देवदूतीपूजाविधि। श्लोक सं० २९५, पूर्ण।

—सं० वि० २४३९०

नवरत्नमाला

लि०—शिवधर्मशास्त्र से गृहीत, श्लोक सं० ९००। —अ० ब० ५५६०

नवरत्नमाला-टीका

लि०--(१) गंभीरराय-पुत्र भास्करराय विरचित टीका। नाम--मञ्जूषा।
--कैट्. कैट्. २।६१

(२) नवरत्नमालामञ्जूषा, गंभीरराय-पुत्र भास्करराय नामान्तर भासुरानन्द विरचित, श्लोक सं० २७५, पूर्ण। --सं० वि० २४९४६

नवरत्नेश्वरतन्त्र

लि०--(१) शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें कालिका के पूजन, ध्यान, जप आदि की विधि वर्णित है। --रा० ला० २१६

उ०--मन्त्रमहार्णव, तन्त्रसार, शक्तिरत्नाकर, शाक्तानन्दतरंगिणी, प्राणतोषिणी तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

नवरात्रकल्प

लि०--शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें शारद नवरात्र के पुरश्चरण आदि का निरूपण है। --म० द० ५६६६

नवरात्रकृत्य

लि०--रुद्रयामल के उत्तरखण्डान्तर्गत, अध्याय ७ से ११ तक, श्लोक सं० ३५७, पूर्ण।
--सं० वि० २४१२६

नवरात्रनिर्णय

लि०--(१) श्लोक सं० ४८। --अ० ब० १०३१

(२) गोपालव्यास विरचित। --कैट्. कैट्. १।२८१

नवरात्रपूजापद्धति

लि०-- --कैट्. कैट्. ३।६०

नवरात्रपूजाविधान

लि०--(१) शारद नवरात्र में भगवती शक्ति की पूजा, पुरश्चर्या आदि का प्रतिपादक तन्त्रग्रन्थ। --म० द० ५६६७

(२) --कैट्. कैट्. १।२८१

नवरात्रप्रदीप

लि०—(१) विनायकपण्डित विरचित, श्लोक सं० १०००।

—अ० ब० ८३१८

(२) नन्दपण्डित विरचित। —कैट्. कैट्. १।२८१

नवरात्रविधि

लि०—(१) —कैट्. कैट्. २।६१

(२) हरिदीक्षित-पुत्र कृत, श्लोक सं० १५०। —अ० ब० १०५४

नवरात्रहवनविधि

लि०— —कैट्. कैट्. १।२८१

नवरात्रिपूजाविधि

लि०—श्लोक सं० १३०। —अ० ब० ३४६०

नववर्षमहोत्सव

लि०—(१) श्लोक सं० १४४, पूर्ण। —डे० का० २३१

(२) —कैट्. कैट्. १।२८१

नवशतीशास्त्र

उ०—योगिनीहृदयदीपिका में।

नवाक्षरीकल्प

लि०— —कैट्. कैट्. १।२८१

नवार्णचण्डीपञ्चाङ्ग

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ८९२, पूर्ण।

—र० मं० ४८१८

नवार्णचन्द्रिका

लि०—परमानन्दनाथ विरचित। ५ प्रकाशों में पूर्ण। इसमें चण्डिका के उपासक के अवश्य करणीय दैनिक कर्तव्यों का निर्देश करते हुए चण्डिका की पूजा प्रतिपादित है।

—ए० बं० ६४०३

नवार्णन्यासविधि

लि०— —रा० पु० ५१२६

नवार्णपूजापद्धति

लि०—सर्वानन्दनाथ कृत, श्लोक सं० २८८, अपूर्ण।

—र० मं० ४८७९

नागानन्द

उ०—चिद्वल्ली में।

नागायन

उ०—उत्पलाचार्य कृत स्पन्दप्रदीपिका में।

नागार्जुनतन्त्र

लि०—ध्रुवपाल कृत। दे०, नागार्जुनीययोगशतक ध्रुवपाल विरचित।

—कैट्. कैट्. १।२८३

उ०—प्राणतोषिणी में।

नागार्जुनीय

लि०—श्लोक सं० ४००। इसमें १९६ प्रयोग हैं। अपूर्ण।

—अ० ब० ८३१३

नागार्जुनीययोगशतक

लि०—ध्रुवपाल विरचित। दे०, नागार्जुनतन्त्र। —कैट्. कैट्. ३।६१

नागार्जुनीविद्या

लि०— —कैट्. कैट्. ३।६१

नाट्यावर्त

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

नाथनारायण

लि०—श्लोक सं० ४००। —अ० ब० ३४६१

नादकारिका

लि०—(१) नारायण के पुत्र और अघोरशिवाचार्य के गुरु रामकण्ठ विरचित तथा श्री अघोरशिवाचार्य कृत टीका सहित। —रा० ला० १४३४

(२) रामकण्ठ विरचित अघोर शिवाचार्य कृत टीका सहित।

—कैट्. कैट्. १।२८५

नादचक्रतन्त्र

श्रीकण्ठी के अनुसार अष्टादश (१८) रुद्रागमों में अन्यतम।

नाभिविद्या

लि०—(१) (क) श्लोक सं० १७३, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ७५, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४२३३, (ख) २६१८७

(२) इसमें त्रिपुर-सुन्दरी के मन्त्र, जिन्हें नाभिविद्या कहते हैं, के जप की पद्धति वर्णित है। —ए० वं० ६३७८

नामकल्पद्रुम

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

नायिकासाधन

लि०—(१) श्लोक सं० १५७, अपूर्ण। —सं० वि० २५२०५

(२) —कैट्. कैट्. १।२८७

इसमें अष्टनायिका-साधन वर्णित है। अष्ट नायिकाएँ हैं—१. सुन्दरी, २. मनोहरी, ३. कनकवती, ४. कामेश्वरी, ५. रतिकरी, ६. पद्मिनी, ७. नटी और ८. अनुरागिणी।

अवान्तर शक्तियों के नाम हैं—१. विचित्रा, २. विभ्रमा, ३. विशाला, ४. सुलोचना, ५. मदनविद्या, ६. मानिनी, ७. हंसिनी, ८. शतपत्रिका, ९. मेखला, १०. विकला, ११. लक्ष्मी, १२. महाभया विद्या, १३. महेन्द्रिका, १४. श्मशानी विद्या, १५. वटयक्षिणी, १६. कपालिनी, १७. चन्द्रिका, १८. घटना विद्या, १९. भीषणा, २०. रंजिका तथा २१. विलासिनी।

नारदतन्त्र

उ०—सौभाग्यभास्कर, प्राणतोषिणी, बृहन्नारदीयतन्त्र, शक्तिरत्नाकर तथा शाक्तानन्दतरङ्गिणी में।

नारदपञ्चरात्र

इसमें छः संहिताएँ हैं—लक्ष्मी, ज्ञानामृतसार, परमागमचूड़ामणि, पौष्कर, पाद्म और बृहद्ब्रह्म। अनुमान होता है कि सात्वत और परमसंहिता भी इसके अन्तर्गत हैं।

लि०—(१) (क) श्लोक सं० १२०००। (ख) श्लोक सं० २०००, १७ पटल पर्यन्त।
—अ० ब० (क) ७५१, (ख) ८१५१

(२) ७ प्रतियाँ हैं, जिनमें (क) तीन पूर्ण हैं और (ख) चार अपूर्ण।
—वं० प० (क) ८९८, ९२०, २२६, (ख) ४३४(क), ५१५, ६९५, १६२१

(३) (क) श्लोक सं० ९९०१, पूर्ण। (ख) इसके अतिरिक्त ३ प्रतियाँ और हैं।
—सं० वि० (क) २३८३६, (ख) २५२३५, २५२६०, २६३५१

(४) नारदपञ्चरात्र में पौष्करसंहिता। यह नारदपञ्चरात्रान्तर्गत पौष्कर-संहिता नाम का तान्त्रिक ग्रन्थ है। पौष्कर को भगवान् ने इसका उपदेश दिया था, अतः इसका पौष्करसंहिता नाम पड़ा। इसमें ४३ अध्याय कहे गये हैं। जो पुष्पिका इसमें दी गयी है उसमें ३७ वें अध्याय तक का उल्लेख है। इसका आद्यन्त भाग नहीं है।
—क० का० ३९

उ०—सौभाग्यभास्कर, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी तथा ताराभक्ति-सुधार्णव में।

नारदसंग्रह

उ०—स्पन्दप्रदीपिता में।

नारसिंह आगम

श्रीकण्ठी के अनुसार अष्टादश (१८) रुद्रागमों के अन्तर्गत।

नारसिंहकल्प

लि०—ब्रह्म-नारद संवादरूप। इसमें ८ पटल हैं, नृसिंह भगवान् की पूजा प्रतिपादित है।

नारसिंहतन्त्र

उ०—फेत्कारिणीतन्त्र में।

नारायणतन्त्र

लि०—श्लोक सं० १४०, पूर्ण। —सं० वि० २६६८१

नारायणकल्प

उ०—तन्त्रसार में।

नारायणपञ्चाङ्ग

लि०—विश्वसारतन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० ३९२, पूर्ण। —र० मं० ४८२५

नारायणपदभूषण

लि०—श्लोक सं० ४००। —अ० ब० ७९३७ (ग)

नारायणपदभूषणमाला (१)

लि०—वेङ्कटेश्वरसूरि-पुत्र शेषाद्रिशास्त्री कृत। श्लोक सं० १००।

नारायणपदभूषणमाला (व्याख्या सहित) (२)

लि०—व्याख्या-नाम—तत्त्वबाधाविधूनना, व्याख्याकार शेषाद्रिशास्त्री स्वयम्, श्लोक सं० २०००।

नारायणपदभूषणतत्त्वमाला (३)

लि०—तत्त्वबाधा विधूनना नामक टीकायुक्त। श्लोक सं० २०००।

—अ० ब० (१) १०७४४ (क), (२) १९७४४ (ख), (३) ७१०७

नारायणस्थान

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

नारायणार्चारत्नमाला

लि०—(१) भगवद्गोस्वामी कृत। इसमें तान्त्रिक रीति से नारायण-पूजापद्धति प्रतिपादित है। —क० का० ४०, ४१

(२) —कैट्. कैट्. ३।६३

नारायणी

उ०—आगमकल्पलता में।

नारायणीतन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमकल्पलता तथा सर्वोल्लास में।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

नारायणीयतन्त्र

उ०—तन्त्रसार, आगमतत्त्वविलास तथा प्राणतोषिणी में।

निगमकल्पद्रुम

लि०—(१) देवी-ईश्वर संवादरूप यह कौल सम्प्रदाय का ग्रन्थ १० पटलों में पूर्ण है। —ए० बं० ६०५२, ५३

(२) श्लोक सं० ६००, शिव-पार्वती संवादरूप, १० पटलों में पूर्ण। उक्त पटलों में निम्न निर्दिष्ट विषय प्रतिपादित हैं—पञ्च मकारोंकी प्रशंसा, पञ्च मकारों की शुद्धि का कारण, परम साधन का निर्देश, स्त्री-माहात्म्य, उसके अङ्ग विशेषों के प्रभेद, उसके पूजनादि कथन, उसके साधन विशेषों का प्रतिपादन, स्वयं कुसुम का अभिधान, पञ्चतत्त्व आदि का शोधन, मांस विशेषादि कथन आदि। —रा० ला० २९३

(३) यह तान्त्रिक निबन्ध कौलाचार पर पार्वती जी ने शिवजी से, उनके प्रार्थना करने पर, कहा। यह १३ पटलों में पूर्ण है। —क० का० ४२

(४) श्लोक सं० २००, अपूर्ण। दो प्रतियाँ हैं। दोनों अपूर्ण हैं।

—अ० ब० १०२६१, १०११०

(५) (क) १९ पटल पर्यन्त पूर्ण। (ख) १० पटल पर्यन्त अपूर्ण। (ग) ७ म पटल पर्यन्त, अपूर्ण। —बं० प. (क) १४१०, (ख) १४१०, (ग) ८५१

(६) (क) श्लोक सं० २६६, पूर्ण (?)। (ख) श्लोक सं० २५२, दशम पटल तक पूर्ण। (ग) श्लोक सं० २८८। १ से १० पटल तक, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४८३३, (ख) २५२६१, (ग) २६४३०

(७) —कैट्. कैट्. १।२९५

उ०—सर्वोल्लास, तन्त्रसार तथा प्राणतोषिणी में।

निगमकल्पलता

लि०—(१) श्लोक सं० ५००, पटल २२, अपूर्ण।

—अ० ब० १०२२०

(२) श्लोक सं० ७२०, पटल १ से ३७ तक, अपूर्ण।

—सं० वि० २६३८६

उ०—सर्वोल्लास तथा प्राणतोषिणी में।

निगमकल्पसार

उ०—रा० ला० ५५८ में इसका उल्लेख है। —कैट्. कैट्. १।२९५

निगमकल्पानन्द

उ०—सर्वोल्लास में।

निगमतत्त्व

उ०—सर्वोल्लास में।

निगमतत्त्वसार

लि०—(१) (क) श्लोक सं० १२५, केवल ३ य पटल तक इसमें मन्त्र, स्तोत्र आदि के साधन द्वारा सिद्धि-प्राप्ति कही गयी है।

(ख) आनन्दभैरवी और आनन्दभैरव संवादरूप यह ग्रन्थ ११ पटलों में पूर्ण है। इसकी श्लोक सं० ४३७ है। उक्त ११ पटलों में निम्ननिर्दिष्ट विषय वर्णित हैं—तत्त्वसार और ज्ञानसार का निर्देश, मन्त्र आदि की साधना, स्तव और कवच का साधन, चण्डीपाठ का क्रम, प्राण, अपान आदि ५ वायुओं में से किन्ही में मन का संयोग होने पर मन का क्रिया-भेद हो जाता है, पञ्च तत्त्वों के शोधन का प्रकार, संविदा शोधनविधि आदि।

—रा० ला० (क) ४०७, (ख) ४१८४

(२) श्लोक सं० २००। —अ० ब० १०१८६

(३) ११ पटलों में पूर्ण। इसमें स्तोत्र, मन्त्र, चण्डीपाठविधि, पञ्च तत्त्वोंकी शुद्धि आदि विषय वर्णित हैं। —ए० बं० ६०४९, ५०

(४) आनन्दभैरव-आनन्दभैरवी संवादरूप। इसमें योगसार और तत्त्वसार का निरूपण, पञ्च तत्त्वों का माहात्म्य वर्णन, पञ्चतत्त्व आदि की शुद्धिविधि, योगविधि, मन्त्रादिसाधनविधि, स्तोत्रादि साधनविधि, कवचविधि, चण्डीपाठक्रम, मद्य, मांस आदि के शोधन की विधि, संविदा कल्प कथन, अशक्तों के लिए पञ्चतत्त्व विशेष की विधि, आदि विषय वर्णित हैं। —नो० सं० २०३

(५) श्लोक सं० ११०, शय्याशोधनपुरश्चरण आदि से तत्त्व शोधन पर्यन्त, पूर्ण।

—सं० वि० २४४३५

उ०—सर्वोल्लास में।

निगमलता (तन्त्र)

लि०—(१) इसकी कोई प्रति २४ पटलों में पूर्ण है तो कोई २७ पटलों में पूर्ण है और किसी की पूर्ति ४४ पटलों में हुई है। इसमें बहुत-सी देव-देवियाँ वर्णित हैं—विरोचन,

शंख, मामक, असित, पद्मान्तक, नरकान्तक, मणिधारिवज्रिणी, महाप्रतिसरा तथा अक्षोभ्य; ये कहीं पर ऋषिरूप में वर्णित है। यह तन्त्र कौल पूजा का प्रतिपादक है।

—ए० बं० ६०४७, ४८

(२) पार्वती-ईश्वर संवादरूप यह तन्त्र २४ पटलों में पूर्ण है। इसमें पञ्च मकारोंमें से प्रधानतः पञ्चम मकार की ही विस्तारपूर्वक प्रयोगविधि प्रतिपादित है।

लतासाधनविधि, दिव्य, वीर आदि के लक्षण, पञ्च मकारों के साधन से ही मोक्ष प्राप्ति, भैरवीचक्र में वर्णादि भेद नहीं रहता, पञ्चम मकारकी शोधनविधि, पुनः पुनः पान की विधि, योनि-पूजाविधि, ध्यान आदि, कालिका-पूजाविधि, आदि विषय इसमें वर्णित हैं।

—नो० सं० १।२०४

(३) पार्वती-ईश्वर संवादरूप, श्लोक सं० ७८४, पटल संख्या २५। इसमें कुलाचार के अनुसार स्त्रीसाधनव्यवस्था और उसके उपयोगी मन्त्र वर्णित हैं। अपूर्ण।

—रा० ला० ६९९

(४) पटल सं० ४४, अपूर्ण। —बं० प० १३१२

(५) केवल १८ वाँ पटल, अपूर्ण। —सं० वि० २६३००

निगमसार

उ०—प्राणतोषिणी में।

निगमसारनिर्णय

लि०—रमारमणदेव विरचित। यह कालीपूजा पर तान्त्रिक संग्रह ग्रन्थ है। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—कालिका-मन्त्रविधान, कालिका के ध्यान, पूजन तथा सुविभूति कथन आदि।

—ने० द० २।३३३

निगमानन्द

उ०—सर्वोल्लास में।

निगमामृतकल्प

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत श्लोक सं० ८१, १म पटल पूर्ण।

—सं० वि० २५०२५

नितान्ततन्त्र

लि०––प्रथम पटल मात्र, पूर्ण। रा. ला. ३८७ में संक्षेप पुरश्चरण विधि के नाम से यह निर्दिष्ट है––"नितान्ततन्त्रे संक्षेपपुरश्चरणविधिः" यह ग्रन्थ का नाम नहीं है प्रत्युत प्रथम पटल का विषय है। ––बं. प. १३९२

नित्यक्रम

लि०––श्लोक सं० ४००। ––अ० ब० ११७८२

नित्यक्रिया

लि०––पन्ने ११८, अपूर्ण। ––डे० का० ४५६ (१८७५-७६ ई०)

नित्यदीपविधि

लि०––(१) रुद्रयामल से गृहीत। श्लोक सं० ४६०। ––अ० ब० ३४५९

(२) श्लोक सं० १०४, पूर्ण। यह कार्तवीर्यार्जुनदीपदानविधि है। इसमें दत्तात्रेयतन्त्रान्तर्गत कार्तवीर्यनित्यपूजाविधि भी सम्मिलित है।

––सं० वि० २५३६९

नित्यदीपविधिक्रम

लि०––हरिहराचार्य विरचित। श्लोक सं० १५०।

––अ० ब० ८०१० (ख)

नित्यनैमित्तिकतान्त्रिकहोम

लि०––हरिहराचार्याभिषिक्त नागरान्वयावतीर्ण श्रीचतुर्भुजाचार्य विरचित। इसमें नित्य तथा नैमित्तिक तान्त्रिक होमपद्धति वर्णित है। ––ए० बं० ६५३६

नित्यनैमित्तिकविधि

दे०, शक्तिसूत्र। ––ने० द० १।६१९ (घ)

नित्यपूजन

लि०––श्लोक सं० ५०। अन्त में पुरुष-परम्परापूजन भी इसमें सन्निविष्ट है।

––अ० ब० ३५३३

नित्यपूजापद्धति (शिव की)

लि०––श्लोक सं० ३८२, पूर्ण। ––सं० वि० २३८७०

नित्यप्रयोगरत्नाकर

लि०--(१) प्रेमनिधि पन्त कृत, श्लोक सं० ४००। --अ० ब० ६०३८

(२) प्रेमनिधि पन्त कृत। --कैट्. कैट्. १।२९५

नित्यातन्त्र

लि०--(१) नित्या (तन्त्रसार में उक्त) काली का एक भेद है। इस तन्त्र में उनकी पूजा वर्णित है। --ने० द० १।२२६ (ग)

(२) (क) श्लोक सं० १४६५, पूर्ण। लिपिकाल संवत् १७३० वि०।

(ख) श्लोक सं० ५५२ ज्ञानार्णवान्तर्गत, पूर्ण।

--सं० वि० (क) २३९४९, (ख) २४१८४

(३) दे०, षोडशनित्यातन्त्र। --कैट्. कैट्. १।२९६

उ०--सर्वोल्लासतन्त्र में। सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

नित्यानुष्ठान

लि०--सौभाग्यकल्पद्रुम से गृहीत। श्लोक सं० २००। --अ० ब० ११७१७

नित्यानुष्ठानपूजापद्धति

लि०-- --कैट्. कैट्. १।२९६

नित्यापारायण

लि०--बुद्धिराज कृत। --रा० पु० ५७९४ (२)

नित्यार्चनविधि

लि०--(१) श्लोक संख्या १५०। --अ० ब० १२५५८

(२) श्रीकृष्णभट्ट कृत, श्लोक संख्या २२३, पूर्ण, मन्त्ररत्नाकरान्तर्गत।

--सं० वि० २६६३२

नित्याषोडशिकाम्बुधि

लि०--यह तन्त्रराज का ही नामान्तर है। दे०, तन्त्रराज या कादिमत।

--क० का० ४३

नित्याषोडशिकार्णव

लि०--(१) वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत। इस पर भास्करराय कृत सेतुबन्ध नाम की टीका है। --ए० बं० ६१४२

(२) (क) श्लोक सं० ३१००, भास्करराय कृत सेतुबन्ध टीकासहित।
(ख) श्लोक सं० ३१००, भास्करराय कृत सेतुबध टीकासहित।
(ग) श्लोक सं० ३१००, भास्करराय कृत सेतुबन्ध टीकासहित।
(घ) श्लोक सं० १०००, योगिनीहृदयदीपिका टीकासहित, अमृतानन्दनाथ कृत।

——अ० व० (क) ५५६६, (ख) १२४५२, (ग) ५५६४, (घ) १००५६

(३) वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत, ५ पटलों में समाप्त। ——क० का० ४

उ०——तन्त्रराजटीका मनोरमा में।

नित्याषोडशिकार्णवव्याख्यान या व्याख्या

लि०——(१) व्याख्यान का नाम——सेतुवन्ध, रचयिता भास्करराय (भासुरानन्द) यह टीका ५ विश्रामों में पूर्ण है। ——क० का० ४४

(२) व्याख्या नाम अज्ञात, व्याख्याकार शिवानन्द, श्लोक सं० ३००, पूर्ण।

——सं० वि० २४८१७

नित्यासंहिता

उ०——ललितार्चनचन्द्रिका में।

नित्याहृदय

नामान्तर——योगिनीहृदय। यह नित्याषोडशिकार्णव का उत्तरार्द्ध है। द्रष्टव्य सेतुबन्ध पृ० ६।

नित्याह्निकतिलक

लि०——(१) श्रीकण्ठ-पुत्र मुञ्जक विरचित। इसमें कुब्जिका देवी की पूजा का विवरण है। इसका रचना-काल सन् ११९७ लिखा गया है। ——ए० बं० ६४३४

(२) श्रीकण्ठ-पुत्र मुञ्जक कृत। कुब्जिका काली का एक भेद है। इसमें कुब्जिका के उपासकों के दैनिक कृत्य बतलाये गये हैं। यह पश्चिमाम्नाय का ग्रन्थ है। इसमें मुख्यतः ये विषय वर्णित हैं——

उत्तरीय सहित यज्ञोपवीत लक्षण, पञ्चप्रणवोद्धार, चार प्रकार के न्यास, कूटावर्णध्यान, समयामन्त्रोद्धार, सन्ध्यावन्दनविधि, शान्तिबलि, मन्त्रपीठार्चन, शक्तिध्यान, पिण्डोद्धार, महाबलि आदि।

——ने० द० १।१३२० (क) तथा २।३७७ (क)

नित्योत्सवतन्त्र

लि०—(१) यह विद्याकल्पसूत्र के नाम से रा० ला० १४६७ में वर्णित है।
—ए० बं० ६१७०

(२) (क) सोमानन्दनाथ कृत, श्लोक सं० २१६, अपूर्ण।
(ख) उमानन्दनाथ विरचित, श्लोक सं०, लगभग ८४०, पूर्ण।
(ग) उमानन्दनाथ विरचित, श्लोक सं० लगभग ८४०, पूर्ण।
—सं० वि० (क) २४११९, (ख) २४६९७, (ग) २५१२०

(३) —कैट्. कैट्. १।२९६

नित्योत्सवनिबन्ध

लि०—(१) भास्करराय-शिष्य उमानन्दनाथ विरचित, यह ग्रन्थ परशुराम कल्पसूत्र, वैशम्पायनसंहिता, सारसंग्रह, भैरवतन्त्र आदि से संगृहीत है। इसमें दीक्षा, पूजा आदि का प्रतिपादन है। प्रस्तुत प्रति में केवल दीक्षासमारम्भनिरूपण नाम का पहला उल्लास मात्र है। अपूर्ण। —क० का० ५६

(२) नत्वा श्रीभासुरानन्दनाथपादाम्बुजद्वयम्।
युनक्त्युमानन्दनाथो यौवनोल्लासमद्भुतम्॥

प्रस्तुत प्रति में यौवनोल्लास नाम का केवल ३ य उल्लास है। इसमें आह्निकप्रकरण, सपर्याप्रकरण, होम, जप, मुद्रा, न्यास नैमित्तिक अर्चन नाम के ७ प्रकरण हैं।
—म० द० ५६६८

(३) लि०—(क) भास्करराय-शिष्य उमानन्दनाथ विरचित श्लोक सं०
२५०० । (ख) ,, ,, ,, ,,
,, । (ग) ,, ,, ,, ,,
,, । (घ) ,, ,, ,, ,,
,, । (ङ) ,, ,, ,, ,,

ये (५) प्रतियाँ संभवतः पूर्ण हैं।
—अ० ब० (क) १८३, (ख) ४६३७, (ग) ५५७२, (घ) ११४१०,
(ङ) १३१०६

(अ० ब० में इनके अतिरिक्त ५ प्रतियाँ और हैं वे अपूर्ण हैं। ११४१० नं० की प्रति में कर्त्ता का नाम जगन्नाथ पण्डित कहा गया है।)

—कैट्. कैट्. ३।६३

(४)

[इसका रचना-काल कलिगताब्द ४८४६ या ४८७६ अथवा १७४५ ई०।]

निधिदर्शन

लि०—(१) नैमिषनिवासी भालववाजपेयी श्रीराम विरचित, इसमें कई ऐन्द्रजालिक विधियाँ गुप्त निधियों तथा अन्य आकाङ्क्षित विषयों की प्राप्ति के लिए वर्णित हैं।

—ए० बं० ६५५२

(२) निधिदर्शन आदि विविध योगसंग्रह, श्लोक सं० ५५१, अपूर्ण।

—सं० वि० २६३५२

निधिप्रदीप

लि०—(१) श्रीकण्ठाचार्य पण्डित कृत, श्लोक सं० ४७४, पाँच परिच्छेदों में।

—अ० ब० ११०३४

(२) (क) श्लोक सं० लगभग १५०, पूर्ण।

(ख) श्रीकण्ठ पण्डित विरचित सिंहशाबरमहारत्नसारोद्धार के अन्तर्गत, श्लोक सं० ४०५, पूर्ण। —सं० वि० (क) २४१५४, (ख) २५८४१

निबन्धमहातन्त्र

लि०—(१) यह ग्रन्थदो भागों में रचा गया है। पहले भाग में ८७ पटल हैं। यह भाग दो कल्पों में विभक्त है १ से ८२ पटल तक सारस्वत कल्प तथा ८३ से ८७ पटल तक श्यामा कल्प। दूसरे भाग में ३३ पटल हैं। यह भाग ५ कल्पों में विभक्त है। १म से ९ पटल तक महेश कल्प, १० से १८ पटल तक गणेश कल्प, १९ से २५ तक वैष्णव कल्प, २६ वें पटल में सौर कल्प एवं २७ वें से ३३ वें पटल तक शाक्त कल्प। —ए० बं० ५९९२

(२) देवी-ईश्वर संवादरूप यह महातन्त्र चतुःषष्टि (६४) महातन्त्रों में अन्यतम है। इसकी श्लोक सं० ७८३८ है। इसमें चार कल्प है—शिवकल्प, गणेशकल्प, सरस्वतीकल्प तथा शक्तिकल्प। इसमें विविध विषय प्रतिपादित हैं उनमें से कतिपय मुख्य-मुख्य उद्धृत किये जाते हैं—नीलस्वस्वती ही ब्रह्मज्योतिस्वरूप है; शक्ति, नारायण और ब्रह्म शब्द समानार्थक हैं, मनुष्य-जन्म की दुर्लभता, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के अर्जन के साधन शरीर के रक्षण की विशेषरूप से आवश्यकता, ब्रह्म से लेकर स्तम्ब पर्यन्त चराचर जगत् की ५० वर्णात्मकता, नीलसरस्वती ध्वनि, नाद, वर्ण और मन्त्रात्मक ही है, यह कथन,

मन्त्र से ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि की उत्पत्ति है; नीलसरस्वती का वेदरूपत्व आदि वर्णन-पूर्वक परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी रूप वाङमयीत्व कथन; गणेश, सूर्य, शिव, विष्णु और शक्ति रूप होने से पञ्च तत्त्वों में भेद कथन, श्वेतवर्णा सरस्वती को, नील रूप प्राप्ति का वृत्तान्त, बलि के योग्य पशु, बलिदानविधि, देवीपूजा में अधिकार, मांसादि भक्षण-विवेक, तारा की पूजाविधि, योनिभुद्रा आदि विविध मुद्राओं के लक्षण,दीक्षा-विचार, महाचीनविधि, वीरसाधन, विविध साधनाएँ, उग्र काली आदि की पूजा-विधि,कुमारी-पूजा, पुष्पविवेचन, चीनक्रम का कथन, श्यामा-स्तोत्र आदि। —रा० ला० ४२६५

(३) ४ कल्प और ३३ पटलों में (इसमें केवल २ य भाग का ही निरूपण है)।

—कैट्. कैट्. २।६४

निरुत्तरतन्त्र

लि०—(१) शिव-पार्वती संवादरूप, श्लोक सं० २००० तथा पटल १५। इसमें प्रतिपादित विषय है—संक्षेपतः दक्षिण कालिकाका माहात्म्य वर्णन, दक्षिण कालिका की पूजाविधि और मन्त्र, उनका कवच, पुरश्चरणविधि, रजनी देवी की पूजाविधि आदि, दक्षिण कालिका की अभिषेकविधि, पुनः उनके अभिषेक का निरूपण, मन्त्रसिद्धि का प्रकार, शक्ति के विविध भेद, योगियों के विशेष विशेष साधनों का विधान, अन्य साधनों का निर्देश, सिद्धविद्या की साधना के उपयोगी शक्तिविशेषों का प्रतिपादन, कौलसाधना के अनुकूल वेश्याशक्ति-भेदों का प्रतिपादन, मद्य, मांस, मीन, मुद्रा, मैथुन पञ्च मकारों की शुद्धि आदि।

—रा० ला० २८५

(२) यह ग्रन्थ १५ पटलों में तन्त्रसंग्रह तथा सुलभतन्त्रप्रकाश में प्रकाशित हो चुका है।

—ए० बं० ५९३५

(३) देवी-ईश्वर संवादरूप। विषय सूची—कालीकुल, श्रीकुल और पञ्च आम्नायों का निरूपण, कालीपूजा में गुरुमन्त्र आदि का निरूपण, कलानिरूपण, दक्षिण कालिका के मन्त्र, ध्यान, पूजा आदि, महाकाल के ध्यान आदि, काली-स्तव और कवच, अजपानिरूपण, पुरश्चरणविधि, दिव्य, धीर और पशु भाव के भेद से पुरश्चरणों में भेद, निर्गुण तथा सगुण भाव का चिन्तन, रात्रि-पूजाविधि, महानिशा आदि का निरूपण, वीराभिषेकविधि, अभिषेक के मन्त्र, सिद्ध मन्त्रों के लक्षण, गोप्य कर्म, राजचक्र और देवचक्र में विशेषता, साधिका के लक्षण, तर्पण में मुद्राविधि आदि।

—नो० सं० १।२०६

(४) १५ पटल पर्यन्त, आरम्भ और मध्य में कुछ खण्डित। शेष चार प्रतियाँ अपूर्ण हैं।

—वं० प० ६०१

(५) शिवप्रोक्त, अपूर्ण । —जं० का० १०४६

(६) (क) श्लोक सं० ६२४, पटल १ से १३ तक, पूर्ण। (ख) पटल १ से १५ तक अपूर्ण।

[सं. वि० में ५ प्रतियाँ अपूर्ण और हैं—जिनकी संख्या है—२४६७०, २५५४५, २५७४५, २६१४४ तथा २६४२७।]

—सं० वि० (क) २६४३२, (ख) २६४७३

उ०—पुरश्चर्यार्णव, कालिकासपर्याविधि, प्राणतोषिणी, मन्त्रमहार्णव, सर्वोल्लास तथा शक्तिरत्नाकर में।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

निरुत्तरभट्टारक

लि०—देवी-भैरव संवादरूप। यह मुख्यतः योगसंबन्धी ग्रन्थ है। —ए० बं० ५९३७

निर्णयामृत

लि०—(१) सिद्धलक्ष्मण-पुत्र अल्लादनाथ विरचित।

(२) रामचन्द्र विरचित। दे०, नो० सं० भाग ११ की भूमिका पे० ४।

—कैट्. कैट्. ३।६४

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

निर्वाणगुह्यकालीसहस्रनाम

लि—बालागुह्यकालिकातन्त्ररहस्यप्रकरणान्तर्गत ।

—ए० बं० ६६५०

निर्वाणतन्त्र

लि०—(१) चण्डी-शङ्कर संवादरूप। श्लोक सं० ५२४, पटल सं० १८। इसमें वर्णित विषय हैं—महादेवजी का देवीं पार्वतीजी से जगत् की उत्पत्ति का प्रकार कथन, संक्षेप में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का वर्णन, ब्रह्मा, विष्णु आदि की उत्पत्ति, क्रम से सावित्री और लक्ष्मी के साथ उनका विवाह, भुवनसुन्दरी के साथ सदाशिव का विवाह वर्णन, जीव अनादि पुरुष के अंश हैं, यह कथन, चौरासी लाख जन्मों के उपरान्त मानव-जन्म लाभ का निरूपण, गायत्री के जप का माहात्म्य, गायत्रीपुरश्चरणविधि, संन्यासी आदि के लक्षण, गोलोक-

वर्णन, राधा का स्वरूप वर्णन, साकार द्विभुज महाविष्णु की मुरलीधरता, विविध लोकों का वर्णन, पञ्च तत्त्वों का कथन, पुरश्चरणविधि, मन्त्रप्रकरण, अष्टादश उपचारों का निर्देश, समयाचारवर्णन आदि। —रा० ला० ३१८१

(२) यह ग्रन्थ तन्त्रसंग्रह तथा सुलभतन्त्रप्रकाश में (१४ पटलों में) प्रकाशित हो चुका है। —ए० बं० ५९१९

(३) चण्डिका-शङ्कर संवादरूप। विषयसूची—ब्रह्मनिरूपण, ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का वर्णन, मनुष्यों के जन्म, मृत्यु आदि का निरूपण, गायत्रीमन्त्र और गायत्री-माहात्म्य, षडङ्गन्यास के मन्त्रों का निरूपण, बृहद् ब्रह्माण्ड का लक्षण, योगाचार का निरूपण, सत्य आदि लोकों का निरूपण, विष्णुस्तव आदि। —नो० सं० १।२०८

(४) (क) १४ पटल पर्यन्त, पूर्ण। (ख) १४ पटल पर्यन्त, आरंभ में खण्डित, अपूर्ण, (ग) चौदह (१४) पटल पर्यन्त, पूर्ण।

—बं० प० (क) ३५८, (ख) १३७, (ग) १६१४

(५) शिव प्रोक्त, अपूर्ण। —जं० का० १०४७

(६) केवल १३ वाँ और १४ वाँ पटल पूर्ण। —र० मं० ४८६३

(७) (क) श्लोक सं० ५४६ पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ६३०, पटल १से १४ तक। इसमें संमोहनतन्त्र में उक्त दश महाविद्याओं के दस अवतारों का प्रमाण भी संमिलित है।

—सं० वि० (क) २४८६२, (ख) २६४५२

[सं० वि० में कई प्रतियाँ अपूर्ण और भी हैं।]

(८) —कैट्. कैट्. १।२९८

उ०—प्राणतोषिणी, सर्वोल्लास तथा शक्तिरत्नाकर में।

निर्वाणयोगपट

लि०—श्लोक सं० लगभग १८, पूर्ण। —सं० वि० २४२०१

निर्वाणयोगोत्तर

उ०—योगराज कृत परमार्थसार की टीका में।

निर्वाणविधि

लि०—पूर्ण। —सं० वि० २४८६१

निशाकुल

लि०—महार्थमञ्जरी-परिमल तथा तन्त्रालोक में।

निशाचर

उ०—तन्त्रालोक में ।

निशाचरपूजा

लि०—श्लोक सं० ५०। इसमें निशाचर पूजन निरूपित है अर्थात् यह देवी की रात्रि-पूजापद्धति है। —रा० ला० ३६३

निशाचरपूजापद्धति

लि०— —कैट्. कैट्. १।२९९

निशाटन

उ०—योगराज कृत परमार्थसार टीका तथा तन्त्रालोक में।

निशीचार

उ०—तन्त्रालोक में।

निःश्वासकारिका

उ०—शतरत्नसंग्रह में।

निःश्वासतत्त्वसंहिता

लि०—मतङ्ग-ऋचीक संवादरूप। इसका १ म अर्द्ध भाग श्रौतसूत्र और २य अर्द्ध भाग गुह्यसूत्र कहलाता है। आरंभ में ४ लौकिक धर्म पटल हैं। मूल सूत्र में ८ पटल, उत्तर सूत्र में ५ पटल, नय सूत्र में ४ पटल तथा गुह्यसूत्र में १८ पटल है एवं श्लोक संख्या ४५०० है। उद्धरार्द्ध गुह्यसूत्र में उक्त १८ पटलों के अन्तर्गत सद्योजातकल्प, अघोरकल्प तथा तत्पुरुषकल्प भी प्रतिपादित है। —ने. द. १।२७७

निःश्वासतन्त्र

लि०— —ने० द० १।२७९

यह अष्टादश (१८) रुद्र आगमों के अन्तर्गत है।

निःश्वासाख्यमहातन्त्र

लि०— —कैट्. कैट्. ३।६४

निःश्वासोत्तर

उ०—शतरत्नसंग्रह में।

निष्कलक्रमचर्या

लि०—शिवानन्द-पौत्र, चिदानन्द-पुत्र श्रीकण्ठानन्द मुनि विरचित, श्लोक सं० २००। इसमें शैवमतानुसार पूजाविधि प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० ११२७ (च)

नीलकण्ठकल्प

लि०—श्लोक सं० ३५०। —अ० ब० ९८२० (क)

नीलकण्ठस्तोत्र

लि०—(१) —रा० ला० २७५५

(२) —कैट्. कैट्. १।३०१

नीलकण्ठस्तोत्र

लि०—(१) डामरेश्वरतन्त्रान्तर्गत' यह मालामन्त्र की श्रेणी का स्तोत्र है। —ए० बं० ६७४२

लि०—(२) —कैट्. कैट्. २।६५

नीलकण्ठस्तोत्रमन्त्र

(२) लि०—श्लोक सं० ६५५, पूर्ण। —सं० वि० २४३९७

नीलतन्त्र (१)

लि०—(१) भैरव-पार्वती संवादरूप। श्लोक सं० ७१५ तथा पटल सं० १५। यह ब्रह्मनीलतन्त्र से मिलता-जुलता है। —ए० बं० ५९५०

(२) (क) श्लोक सं० २००, पटल १० वें से १५ वें तक, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ६६०, इसमें पटलों की संख्या नहीं दी गयी है।

—अ० ब० (क) १०१०७, (ख) ३४६४

(३) इसमें दक्षिण कालिका के पुरश्चरण, नैमित्तिक पूजन, कुलपूजा आदि की विधि वर्णित है। अपूर्ण। —रा० ला० २१५

(४) पटल सं० १म से १२ श तक। —बं० प० ६५०

(५) (क) श्लोक सं० लगभग ४९०, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ७१०, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० लगभग २६०, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४४५१, (ख) २४६१९, (ग) २४६४८

(६) —कैट्. कैट्. १।३०२

उ०—पुरश्चर्यार्णव, आगमकल्पलता, तन्त्ररत्न, ताराभक्तिसुधार्णव, तन्त्रसार, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, तारारहस्यवृत्ति, आगमतत्त्वविलास तथा प्राणतोषिणी में।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

नीलतन्त्र (२)

लि०—(१) शिव-पार्वती संवादरूप, श्लोक सं० ७०० तथा पटल सं० १७। यह विविधतन्त्रसंग्रह तथा सुलभतन्त्रप्रकाश में प्रकाशित हो चुका है। मुद्रित पुस्तक में इसकी पटल सं० १२ है परन्तु हस्तलिखित में कहीं १५ तथा कहीं १७ है। दोनों का नाम एक होने पर भी विषय भिन्न-भिन्न प्रतीत होता है।

—ए० बं० ५९४९

(२) देवी-ईश्वर संवादरूप, श्लोक सं० ५९५ तथा पटल सं० १७। प्रतिपाद्य विषय हैं—नीलतन्त्र-माहात्म्य, इस तन्त्र के अनुयायियों के शय्यात्याग के अनन्तर कर्तव्य, देवी-स्मरण आदि, तान्त्रिक स्नान, मन्त्र-जप आदि की विधि, पूजा-स्थान का निर्णय, नीलदेवी की पूजाविधि, तन्त्र यन्त्र लिखन, भूतशुद्धि, यन्त्र-शक्ति देवता के ध्यानादि, मत्स्य, मांस आदि नैवेद्यदान आदि। —रा० ला० ४६३

नीलसरस्वतीतन्त्र

उ०—मन्त्रमहार्णव तथा तन्त्रसार में।

नीलसरस्वतीप्रयोगविधि

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० ९०, अपूर्ण।

—सं० वि० २५४८०

नृत्येश्वरतन्त्र

लि०—इसमें परशुराम, रामभद्र, सुग्रीव, भीम, हनुमान् आदि सब युद्धवीरों का आवाहन और पूजन-विधि वर्णित है। ८ भैरव तथा ८ महाकाली के नामों के साथ उनके ध्यान और पूजन वर्णित हैं। —ने० द० १।१३२२

नृसिंहकल्प

लि०— —कैट्. कैट्. १।३०४, २।६६

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में। रघुनन्दन ने भी तत्त्वसंग्रह में इसका उल्लेख किया है।

नृसिंहकवच

लि०--(१) प्रह्लाद विरचित, ब्रह्माण्डपुराणान्तर्गत यह कवच सर्वरक्षाकर तथा सब उपद्रवों का शमन करनेवाला कहा गया है। --ए० बं० ६७६२

(२) (क) श्लोक सं० १७, नृसिंहपुराण से गृहीत।
(ख) श्लोक सं० २७ ब्रह्मसंहिता से गृहीत।

--अ० ब० (क) ४४२६, (ख) ४४२८

(३) श्लोक सं० ३५, पूर्ण। --सं० वि० २४५५६

(४) (क) नारदपञ्चरात्र से गृहीत, ब्रह्मसंहिता से गृहीत, ब्रह्माण्डपुराण से गृहीत। (ख) प्रह्लादसंहिता से गृहीत। (ग) नृसिंहपुराण से गृहीत, पद्मपुराण से गृहीत।

--कैट्. कैट्. (क) १।३०४, (ख) २।६६, (ग) ३।६५

नृसिंहचरणार्चनपद्धति

उ०--पुरश्चर्यार्णव में।

नृसिंहतन्त्र

लि०-- --बि० रि०

नृसिंहपञ्जर

लि०--आथर्वणरहस्य से गृहीत। --कैट्. कैट्. १।३०४

नृसिंहपटल

लि०--महीधर कृत। --कैट्. कैट्. १।३०४

नृसिंहपद्धति

लि०--(१) श्लोक सं० २८७, अपूर्ण। लिपिकाल शकाब्द १५७८।

--सं० वि० २५६४०

(२) --कैट्. कैट्. १।३०४

नृसिंहपरिचर्या

लि०--(१) श्लोक सं० १२६, ५ पटलों में पूर्ण। इसमें नृसिंह-परिचर्या में पवित्रारोपणविधि, उसका प्रयोग तथा नृसिंह-पूजा प्रतिपादित है।

--रा० ला० ४२३२

(२) कृष्णदेव विरचित, वैष्णवानुष्ठान-पद्धति से गृहीत।
—कैट्. कैट्. १।३०४, ३।६५

उ०—निर्णयसिन्धु तथा आचारार्क में।

नृसिंहपरिचर्याप्रतिष्ठाकल्प

लि०— —कैट्. कैट्. १।३०४

नृसिंहपूजापद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० २३५, अपूर्ण। —र० मं० ३७४३
(२) श्लोक सं० ३०६, अपूर्ण। —सं० वि० २४३४४
(३) वृन्दावन विरचित। —कैट्. कैट्. १।३०५

नृसिंहमन्त्रपद्धति

लि०— —कैट्. कैट्. १।३०५

नृसिंहमन्त्रराजपुरश्चरणविधि

लि०— —कैट्. कैट्. १।३०५

नृसिंहमालामन्त्र

लि०—(१) पन्ने १९। —रा० पु० ५५१६
(२) मार्कण्डेयपुराण से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।३०५

नृसिंहयोगपारिजात

लि०— —कैट्. कैट्. २।६६

नृसिंहरत्नमाला

लि०—श्लोक सं० २११५, अपूर्ण। —सं० वि० २५२४०

नृसिंहवज्रपञ्जर

लि०— —कैट्. कैट्. १।३०५

नृसिंहसुन्दरीकवच

लि०—सम्मोहनतन्त्रान्तर्गत उमा-महेश्वर संवादरूप यह कवच सर्वसिद्धिप्रद कहा गया है। —ने० द० १।४८

नृसिंहसुन्दरीविद्याविवरण

लि०—श्लोक सं० २८, पूर्ण। —सं० वि० २५५१९

नृसिंहाराधन

लि०— —कैट्. कैट्. १।३०५

नृसिंहाराधनरत्नमाला

लि०—(१) रामचन्द्र-पुत्र मेङ्गानाथ विरचित। इसमें ९ पटलों में वैष्णव पूजाविधि वर्णित है। भूतशुद्धि, प्राण-प्रतिष्ठा, कलादि मातृकान्यास आदि विषय भी प्रतिपादित हैं। —इ० आ० २६१०

(२) श्लोक सं० ९४०, १म से ६ ष्ठ पटल पर्यन्त, अपूर्ण।

—सं० वि० २५६३८

नृसिंहार्चनपद्धति

लि०—ब्रह्माण्डानन्दनाथ कृत। —कैट्. कैट्. २।६६

नेत्रज्ञानार्णव

लि०—उमा-महेश्वर संवादरूप। इसमें ५९ पटल है।

—ए० बं० ५८१८

नेत्रतन्त्र

उ०—क्षेमराज कृत विज्ञानभैरवतन्त्र में।

नेत्रोद्योततन्त्र

लि०—(१) राजानक क्षेमराज विरचित, श्लोक सं० ३२२, पूर्ण।

—डे० का० २३२ (१८८३-८४ ई०)

(२) राजानक क्षेमराज कृत। —कैट्. कैट्. १।३०६

नैःश्वास

उ०—क्षेमराज ने इसका उल्लेख किया है, Hall पे. १९८। —कैट्. कैट्. १।३०६

नौका

लि०—मन्त्रमहोदधि की टीका। दे०, मन्त्रमहोदधि।

—ए० बं० ६२६१

न्यास

लि०—(१) श्लोक सं० ५०। —अ० ब० ८४२८
(२) श्लोक सं० १०, पूर्ण। —सं० वि० २४१०६

न्यासकरण

लि०—श्लोक सं० २५०। —अ० ब० ११७१५

न्यासजाल

लि०—इसमें मूलमन्त्र से करन्यास तथा छह अङ्गन्यास कर 'शिवोऽहम्' ऐसी भावना करते हुए क्षोभण आदि नौ मुद्राएँ तथा पाशादि चार मुद्राएँ बाँध कर सर्वावयवरूप से काम-कलारूप अपना ध्यान कर, शक्त्युत्थापन मुद्रा बाँध कर प्रातःस्मरण में उक्त प्रकार से कुण्डलिनी को जगाकर छह चक्रों के भेदनक्रम से ध्यान करते हुए अन्तर्याग कर सर्वाभरण-संयुक्त शक्ति का ध्यान करना चाहिए, यह प्रतिपादित है।

—म० द० ५६६९

न्यासपद्धति

लि०—श्लोक सं० ६०७, अपूर्ण। —सं० वि० २४३४७

न्यासपूजापद्धति

लि०—श्लोक सं० ५२६, अपूर्ण। —सं० वि० २५४७६

न्याससंग्रह

लि०—श्लोक सं० १३००, अपूर्ण। —अ० ब० ६१०

न्यासादिविधि

लि०—श्लोक सं० १६, अपूर्ण। —सं० वि० २५५०९

पक्षिराजकवच

लि०— —कैट्. कैट्. ३।६७

पक्षिराजविधान

लि०—आकाशभैरवान्तर्गत, श्लोक सं० ४८०।

—अ० ब० ९१३

पञ्चकल्पतरु

लि०—रामानन्द तर्कपञ्चानन-पुत्र श्रीराघवदेव विरचित। श्लोक सं० ८८३२ तथा सन्तानक, कल्पवृक्ष, हरिचन्दन, पारिजात और मन्दारक नाम के पाँच कल्पों में पूर्ण। इसमें प्रतिपादित मुख्य-मुख्य विषय हैं—विविध चक्रों, महाविद्याओं, सिद्धविद्याओं, विविध आसनों, न्यासों तथा १६ (षोडश), ३८ (अष्टात्रिंशत्) और ६४ (चतुःषष्टि) उपचारों का वर्णन; दीक्षा, मन्त्र, मन्त्रसंस्कार, दीक्षापद्धति, अध्वा का शोधन, कलावती आदि दीक्षाओं का निरूपण, देय मन्त्र, अदेय मन्त्र, पिता आदि से मन्त्र-ग्रहण में दोष, अङ्कुरार्पणविधि, अग्निसंस्कार आदि का निर्देश, कृष्ण के मन्त्र, पूजा आदि का विधान, मृत्युञ्जय आदि विविध मन्त्रों का विधान, शिवप्रकरण, गणेशप्रकरण आदि।

—रा० ला० ३३११

पञ्चचक्रतदाचारविधिनिरूपण

लि०—भगपूजाविधि से संलग्न, पूर्ण। —सं० वि० २६३५४

पञ्चचक्रपूजन

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत शिव-पार्वती संवादरूप इस ग्रन्थ में राजचक्र, महाचक्र, देवचक्र, वीरचक्र और पशुचक्र इन पाँच चक्रों के पूजन की विधि प्रतिपादित है।

—क० का० ५२

(२) रुद्रयामल से गृहीत। —कैट्. कैट्. ३।६७

पञ्चचक्रपूजाक्रमलता

उ०—कालिकासपर्याविधि (काशीनाथ कृत) में।

पञ्चतत्त्वलयप्रकार

लि०—'योगज्ञान' से संलग्न। —सं० वि० २६२५३

पञ्चतत्त्वशोधन

लि०—'शाक्ताभिषेक' से संलग्न। —सं० वि० २५७६४

पञ्चतत्त्वशोधनप्रमाण

लि०—श्लोक सं० १७४, पूर्ण। —सं० वि० २६४५२

पञ्चतत्त्वशोधनविधि

लि०—श्लोक सं० ६१, अपूर्ण। —सं० वि० २४७६२

पञ्चत्रिंशत्पीठिका

लि०—महागणपतिकल्प से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।३१४

पञ्चदशमालामन्त्र

लि०—श्लोक सं० १२००, (खण्डित)। —अ० ब० ३४६९

पञ्चदशमालामन्त्रविधि

लि०— —कैट्. कैट्. १।३१४

पञ्चदशयन्त्रमाहात्म्य

लि०—शिवकाण्डान्तर्गत, श्लोक सं० १३०, पूर्ण। —र० मं० ४७६३

पञ्चदशयन्त्रविधान

लि०—(क) श्लोक सं० ७२, पूर्ण, रुद्रयामलान्तर्गत। (ख) श्लो० सं० लगभग ५४, पूर्ण। —सं० वि० (क) २६२२४, (ख) २६२२५

पञ्चदशाक्षरीविद्या-पारायणप्रकार

लि०—इसमें त्रिपुरसुन्दरी के सहस्रनामस्तोत्र के पारायण की विधि वर्णित है। —बी० कै० १३००

पञ्चदशाक्षरीविद्याविधि

लि०—श्लोक सं० ६५, पूर्ण। —सं० वि० २६५५३

पञ्चदशाक्षर्यादिविद्या

लि०—(क) श्लोक सं० ३५, पूर्ण। लिपिकाल १७३३ वि०। (ख) श्लोक सं० १४, अपूर्ण। (ग) अपूर्ण। —सं० वि० (क) २४२३०, (ख) २४२३१, (ग) २४२२९

पञ्चदशाख्ययन्त्रविधान

लि०—श्लोक सं० ९२, पूर्ण। —सं० वि० २६३५५

पञ्चदशाङ्कयन्त्रभेद

लि०—श्लोक सं० ३०, अपूर्ण। —सं० वि० २५८४२

पञ्चदशाङ्कयन्त्रविधान

लि०—श्लोक सं० ८०, पूर्ण। यह शिवताण्डव के अन्तर्गत है। —सं० वि० २४२१९

पञ्चदशाङ्कयन्त्रविधि

लि०--(क) श्लोक सं० ४२०, पूर्ण। (ख) शिवताण्डवतन्त्रान्तर्गत, पूर्ण, श्लोक सं० ७२।
--सं० वि० (क) २४२२०, (ख)२४२१८

पञ्चदशीतन्त्र

उ०--प्राणतोषिणी में।

पञ्चदशीयन्त्र

लि०--(१) श्लोक सं० ५०। --अ० ब० ११७६४
(२) श्लोक सं० ८८, पूर्ण। --सं० वि० २४१३८

पञ्चदशीयन्त्रकल्प

लि०--श्लोक सं० ४९०, पूर्ण। --सं० वि० २४२२६

पञ्चदशीयन्त्रविचार

लि०-- --र० मं० ३२९० (क)

पञ्चदशी यन्त्रविधान

लि०--(१) श्लोक सं० ४४, अपूर्ण। --सं० वि० २५४५१
(२) --कैट्. कैट्. १।३१४

पञ्चदशीयन्त्रविधि

लि०--(१) श्लोक सं० २४, पूर्ण। --र० मं० ३२९० (ख)
(२) श्लोक सं० ७५, अपूर्ण। --सं० वि० २४५७१

पञ्चदशीविद्यायन्त्रकारिका

लि०--श्लोक सं० २१, अपूर्ण। --सं० वि० २५६९८

पञ्चदशीविद्याविधि

लि०--श्लोक संख्या ८५, पूर्ण। --सं० वि० २६६४९

पञ्चदशीविधान

लि०--(१) गौरी-शङ्कर संवादरूप, इसमें पञ्चदशी यन्त्र की निर्माणविधि बतलायी गयी है। --ए० बं० ६१३९
(२) पत्रे २। --रा० पु० ५१२३ (५)

पञ्चदश्यङ्कविधि

लि०—शिवताण्डवतन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० ५६, अपूर्ण।

—सं० वि० २४३६२

पञ्चपात्रशोधन

लि०—श्लोक सं० १०४, अपूर्ण। इसमें कौलों के २२ पात्रों की विधि भी वर्णित है। इसका नाम कहीं पञ्चपात्र-शोधन लिखा है और कहीं पञ्चतत्त्व-शोधन।

—सं० वि० २४२६७

पञ्चप्रकारार्चा

लि०—गौतमीतन्त्र के अन्तर्गत। श्लोक सं० १५, पूर्ण।

—सं० वि० २६४७४

पञ्चमकारनिरूपण

लि०—श्लोक सं० ६०। —अ० ब० १०६३४

पञ्चमकारविवरण

लि०—मधुसूदनानन्द सरस्वती विरचित, श्लोक सं० ३००।

—अ० ब० १०९४९

पञ्चमकारसाधन

लि०—समयाचारतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक संख्या ६०, अपूर्ण।

—सं० वि० २४५३८

पञ्चमकारादिद्रव्यशोधन

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

पञ्चमकारस्तुति

लि०—श्लोक सं० ८०। —अ० ब० ६०१२

पञ्चमीक्रमकल्पलता

लि०—श्रीनिवास विरचित। —कैट्. कैट्. १।३१५

पञ्चमीवरिवस्यारहस्य

(३) रुद्रयामल से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।३१५

पञ्चमीसाधन

लि०——ब्रह्माण्डयामल के अन्तर्गत हर-गौरी संवादरूप इस तन्त्रग्रन्थ में उन शुभ और नित्य तान्त्रिक विधियों का प्रतिपादन किया गया है जिनसे साधक को सुख और दुःख दोनों की निवृत्ति होकर मुक्ति प्राप्त होती है। पञ्चमी विद्या पञ्चकूटरूपा है। वे पञ्च हैं——मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा आदि। —बी० कै० १३०१

पञ्चमीसुधोदय

लि०——मथुरानाथ शुक्ल कृत। —कैट्. कैट्. १।३१५

पञ्चमीस्तवराज

लि०——(१) श्लोक सं० १८०। —अ० ब० ५१४३

(२) रुद्रयामल के अन्तर्गत, श्लोक सं० लगभग २००, पूर्ण।

—र० मं० ४४७८

(३) रुद्रयामल से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।३१५

दे०, बालापञ्चमीस्तवराज। —कैट्. कैट्. ३।६७

पञ्चमुखीवीरहनूमत्कवच

लि०——श्लोक सं० १००। —अ० ब० ६८१० (क)

पञ्चमुखीहनूमत्कवच

लि०——(१) रुद्रयामल से गृहीत। श्लोक सं० ६०। —अ० ब० ९००१

(२) श्लोक सं० ६७, पूर्ण —र० मं० ५०३५

(३) —कैट्. कैट्. २।६९, ३।६७

(४) श्लोक सं० लगभग १२०, पूर्ण। इसमें हनूमन्मन्त्र भी संमिलित हैं।

—सं० वि० २५६९९

पञ्चमुद्राप्रकरण

लि०——

—कैट्. कैट्. ३।६७

पञ्चमुद्राशोधनपद्धति

लि०——चैतन्यगिरि विरचित। श्लोक सं० ५१०, पूर्ण। इसमें लिङ्गपुराणोक्त सरस्वतीस्तोत्र भी संमिलित है। —सं० वि० २५५५६

पञ्चयामल

उ०—कुलप्रदीप में।

पञ्चरत्नमाला

लि०—रामहोशिङ्ग, (?) विरचित। श्लोक सं० १८०००।

—अ० व० २२५६

पञ्चरात्र

दे०, कपिलपञ्चरात्र, नारदपञ्चरात्र, हयग्रीवपञ्चरात्र तथा पाञ्चरात्र।

उ०—चतुर्वर्गचिन्तामणि, स्पन्दप्रदीपिका, मन्त्रकौमुदी तथा मन्त्ररत्नावली में। सर्वदर्शनसंग्रह, दानमयूख, स्मृत्यर्थसंग्रह आदि में भी इसका उल्लेख है।

पञ्चरुद्रप्रकारकथन

लि०—नन्दिकेश्वर-शतानन्द संवादरूप। इसमें पञ्चरुद्र का निरूपण, प्रकार कथन, उसके अधिकारी, कलशरुद्र-प्रकरण, मण्डपनिर्माण, तोरण और द्वारों का निर्माण, जप-प्रकरण, वेदीनिर्माण, ध्वजारोपण, कुण्डनिर्माण, सर्वतोभद्र-निर्माण, न्यास आदि विषय वर्णित हैं।

पञ्चरात्रोपनिषद् या पञ्चरात्रश्रुति

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

पञ्चवक्त्रपूजा या पञ्चवक्त्रपूजन

लि०—(१) (क) श्लोक सं० १२०। (ख) श्लोक सं० ३०।

—अ० व० (क) ३४७०, (ख) २३८९

(२) नामान्तर—महारुद्रपूजा। —कैट्. कैट्. २।६९

पञ्चविंशतियन्त्र

लि०—पूर्ण। —सं० वि० २४२६१

पञ्चसूत्रनिर्णय

लि०—गौतमीतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० १०, अपूर्ण।

—सं० वि० २५१७२

पञ्चस्तवी

लि०—(१) पूर्ण। —डे० का० ४५७ (१८७५-७६ई.)

(२) इसमें ५ अध्यायों में दुर्गास्तुति की गयी है। ये अध्याय हैं—लघुस्तव, सरसास्तव, घटस्तव, अम्बास्तव तथा सकलजननीस्तव। —कैट्. कैट्. १।३१७

पञ्चाक्षरकल्प

लि०—— —कैट्. कैट्. १।३१७

पञ्चाक्षरीमुक्तावली

लि०——(१) विद्याकर-शिष्य सिद्धेश्वर पण्डित विरचित। यह ग्रन्थ ५ श्रेणियों (अध्यायों) में वर्णित है। नित्य जप, नैमित्तिक जप, नित्य होमविधि, नैमित्तिक होम-विधि, लघुदीक्षाविधि, देश, काल, जपस्थान, जपनियम, पुरश्चरणनियम इत्यादि बहुत-से विषय इसमें वर्णित हैं। —ए० बं० ६४६२

(२) सिद्धेश्वर कृत, श्लोक सं० ७६५, पूर्ण। —र० मं० ४८६९

पञ्चाक्षरीयन्त्रोपदेश

लि०——रुद्रयामल से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।३१७

पञ्चाक्षरीविधान

लि०—— —कैट्. कैट्. १।३१७

पञ्चाक्षरीविधि या पद्धति

लि०——श्लोक सं० २५०। —अ० ब० २००९

पञ्चाक्षरीषट्प्रयोग

लि०——चिदम्बरकल्प से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।३१७

पञ्चामृत

उ०——सौन्दर्यलहरी-टीका लक्ष्मीधरी तथा अहल्याकामधेनु में।

पञ्चामृततन्त्र

उ०——तन्त्रालोक तथा सौन्दर्यलहरी-टीका लक्ष्मीधरी में।

पञ्चामृतमन्त्रविधि

लि०——श्लोक सं० ९१, पूर्ण। —सं० वि० २६३५६

पञ्चामृतीकरण

लि०—— —कैट्. कैट्. २।७०

पञ्चाम्नायमन्त्र

लि०—श्लोक सं० ८०, अपूर्ण। —सं० वि० २५४८८

पञ्चायतन

लि०—श्लोक सं० ३६, अपूर्ण। —सं० वि० २४३६३

पञ्चाशत्सहस्रीमहाकालसंहिता

लि०—(१) शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें कामकला काली की पूजा प्रतिपादित है। —तै० म० ६७१९

(२) दे०, महाकालसंहिता। —कैट्. कैट्. १।३१७

पञ्चाशद्वर्णस्वरूप

लि०—श्लोक सं० ६३, अपूर्ण। —सं० वि० २४३०९

पञ्चाशन्नाथमण्डल

लि०—दीक्षाविधि के साथ संलग्न, संमिलित श्लोक सं० ३०, अपूर्ण। —सं० वि० २४४६५

पतिवशीकरणविधि

लि०—श्लोक सं० १६, पूर्ण। —सं० वि० २६४५३

पदनिर्णय

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

पदार्थादर्श

लि०—(१) यह लक्ष्मणदेशिक विरचित शारदातिलक की श्रीराघवभट्ट कृत व्याख्या है। —रा० ला० १७३३

(२) शारदातिलक-टीका राघवभट्ट कृत। —कैट्. कैट्. १।३२१

पद्धतिरत्नमाला

लि०—(१) जालन्धरस्थ राघवानन्द कृत, (क) श्लोक सं० ५२५६, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १३६०, अपूर्ण। —र० मं० (क) ५२९३, (ख) ४९४७

(२) राघवानन्द विरचित यह ग्रन्थ ५ रत्नों में पूर्ण है। —कैट्. कैट्. २।७०

पद्धतिविवरण

लि०—मुरारि विरचित, (क) श्लोक सं० ३२५०, इसमें १२ आह्निक है और विविध देवदेवियों की पूजा-विधि वर्णित है। (ख) श्लोक सं० २५२०, पूजा के मन्त्रों के प्रतीकों के साथ पूजाविधि वर्णित है। इसमें ११ आह्निक हैं।

—ट्रि० कै० (क) ९७८, (ख) ९७९

पद्मकल्प

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

पद्मपुष्पाञ्जलिस्तोत्र

लि०—श्लोक सं० २००, श्रीशङ्कराचार्य विरचित। इसमें पद्मपुष्पाञ्जलि द्वारा भगवती की स्तुति प्रतिपादित है। —रा० ला० ३७३

पद्मिनीमन्त्रसिद्धि

लि०—श्लोक सं० १८, अपूर्ण। —सं० वि० २४३८२

पद्मवाहिनी

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्द्धिनी, ताराभक्तिसुधार्णव तथा पुरश्चर्यार्णव में।

परतन्त्र

उ०—तन्त्रालोक में।

परतन्त्रहंसोपनिषद्

लि०—दे०, परमहंसोपनिषद्। —कैट्. कैट्. १।३२४

परदेवीसूक्त

लि०—उड्डामरतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक सं० ६६, पूर्ण।

—र० मं० ९७१

परमरहस्य

लि०—(१) श्लोक सं० ५०, अपूर्ण। —अ० ब० ९९८९
(२) —कैट्. कैट्. २।७२

परमशिवगृहिणीपूजनादिमार्ग

लि०—श्लोक सं० २०००। १६ विश्रामों में।

परमशिवसहस्रनाम

लि०—उमायामल के अन्तर्गत हर-गौरी संवादरूप। यह भगवान् शिव के गुप्ततम पवित्र शुभ सहस्र नामों का संग्रह है —ए० बं० ६७४४

परमहंसपञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामल के अन्तर्गत। इसमें (१) परमहंसपटल (चैतन्यानन्द विरचित), (२) परमहंसपद्धति (रुद्रयामलान्तर्गत), (३) परमहंससहस्रनाम (प्रजापति-भैरव संवादरूप), तथा (४) परमहंसस्तोत्र वर्णित है।

—ए० बं० ६५१६

(२) इसमें परम हंस-कवच (रुद्रयामलान्तर्गत हर-गौरी संवाद-रूप) शरीर के विभिन्न अङ्गों की रक्षा के लिए वर्णित है। —ए० बं० ६८०५

(३) शिव-पार्वती संवादरूप रुद्रयामलीय निम्नाङ्कित ५ विषय वर्णित हैं—(१) परमहंसपटल (२) परमहंसपद्धति, (३) परमहंससहस्रनाम, (४) परमहंस-कवच तथा (५) परमहंसस्तोत्र। —नो० सं० २।१२५

(४) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० ५७८ पूर्ण। —र० मं० ४८१५

(५) —कैट्. कैट्. १।३२५

(६) परमहंसकवच। यह परमहंस के नामों का श्लोकात्मक संग्रह है जिससे शरीर के विभिन्न अवयवों की रक्षा तथा रोगनिवृत्ति की जाती है।

—बी० कै० १३०२

(७) परमहंस कवच, रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० ४८, पूर्ण।

—र० मं० १०८१

(८) परमहंसपटल, रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ६४, पूर्ण।

—सं० वि० २३८८६

परमहंसपद्धति

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें परमहंस (परब्रह्म परमात्मा) की पूजाप्रक्रिया वर्णित है। आरंभ में उपासक के प्रातःकालीन कर्तव्यों का निर्देश किया गया है। —ए० बं० ६५१५

(२) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० १९२, पूर्ण। —र० मं० १०६५

परमहंसमन्त्रविधि

लि०—डामरखण्ड से गृहीत। —कैट्. कैट्. ३।७०

परमहंसविधि

लि०—इसमें गुरुस्तोत्र है। जो गुरुस्तोत्र गुरुपञ्चाङ्ग में है उसमें और इसमें कोई भेद नहीं है। परमहंसजपविधि तथा परमहंससहस्रनामस्तोत्र, जो परमहंसपञ्चाङ्ग में है, इसमें कहे गये हैं। —ए० बं० ६५१७

परमागमचूडामणि

लि०—(१) नामान्तर—परमागमचूडामणिसंहिता। यह नारदपञ्चरात्र के अन्तर्गत है। इसमें ९५ पटल है। प्रत्येक पटल का विवरण इ० आ० में दिया गया है। नारदपञ्चरात्र में निम्न लिखित ६ संहिताएँ हैं—(१) लक्ष्मीसंहिता, ज्ञानामृतसारसंहिता, (३) परमागमचूड़ामणि (संहिता), (४) पौष्करसंहिता, (५) पाद्मसंहिता तथा (६) बृहद्ब्रह्मसंहिता इनके अतिरिक्त, (७) सात्वतसंहिता तथा परमसंहिता का भी उल्लेख मिला है। —इ० आ० २५३०

(२) नारदपञ्चरात्र का एक भाग। —कैट्. कैट्. १।३२५, २।७२

(३) —भ० रि० २५२

परमानन्दतन्त्र

लि०—(१) देवी-भैरव संवादरूप। इसमें २५ उल्लासों द्वारा तन्त्रों का अवतरण, तन्त्रभेदों का निर्णय, श्रीविद्या का स्वरूप निर्देश, बाला का मन्त्रोद्धार कथन, बाला-सन्ध्यान्त विधि-कथन, द्वार पूजासे लेकर न्यास पर्यन्त विधि वर्णन आदि विविध विषय प्रतिपादित हैं। —ए० बं० ५९९८

(२) यह भी उपर्युक्त पुस्तक से प्रायः मिलता है। —ए० बं० ६८१६

(३) (क) श्लोक सं० १०००, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३०००, पूर्ण।
—अ० ब० (क) १०७७६, (ख) ११७४५

(४) उमा-महेश्वर संवादरूप यह सब आगमों में श्रेष्ठ तथा सवा लाख श्लोकात्मक है। इसका मन्त्रखण्ड १८ उद्रेकों में पूर्ण है। इसमें विविध प्रकार की दीक्षाएँ, पूर्ण-अभिषेक आदि विधियाँ प्रतिपादित हैं। —म० द० ५६७०–७३

(५) (क) श्लोक सं० ११६४८, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ५२०, अपूर्ण। (ग) सर्वतन्त्रसारान्तर्गत। श्लोक सं० ३७६३, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४०३५, (ख) २५१०२, (ग) २६३१८

(६) इस पर शिवजी की व्याख्या है।

—कैट्. कैट्. १।३२५, ३।७०

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

परमानन्दतन्त्रटीका

लि०—(१) टीका का नाम सौभाग्यानन्दसन्दोह, टीकाकार महेश्वरानन्दनाथ, श्लोक सं० १२०००। —अ० ब० १०६५१

(२) श्लोक सं० १८२१६, पूर्ण। —सं० वि० २३९२०

(३) शिवजी कृत टीका। —कैट्. कैट्. १।३२५

परमार्थसंग्रह

लि०—अभिनव गुप्त विरचित। दे०, परमार्थसार।

—कैट्. कैट्. १।३२६

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

परमार्थसार

लि०—(१) अभिनव गुप्त विचिपत। —इ० आ० २२३५

(२) इसका आधारकारिका नाम भी है। यह अभिनव गुप्त विरचित शैवतन्त्र है। इस पर अभिनव गुप्त तथा वितस्तापुरी निर्मित दो टीकाएँ हैं। वितस्तापुरी निर्मित टीका का नाम 'पूर्णाद्वयमयी' है। टीकाकार का असली नाम योग या योगराज है। ये वितस्तापुरी के निवासी थे, अतः विस्तापुरी कहे गये। —कैट्. कैट्. १।३२६ तथा २।७५

उ०—मञ्जूषा तथा महार्थमञ्जरी-परिमल में।

परमार्थसारसंग्रह

लि०—(१) अभिनव गुप्त विरचित, श्लोक संख्या १०४।

—अ० ब० १८२४ (ग)

(२) इस पर योगराज की पूर्णाद्वयमयी व्याख्या है। —कैट्. कैट्. ३।७०

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

परमार्थसारसंग्रहविवृति

लि०—मूलकार—अभिनव गुप्त तथा विवृत्तिकार क्षेमराज। पूर्ण।

—डे० का० ४५९ (१८७५।७६ ई०)

परमेशतन्त्र

उ०—शक्तिरत्नाकर में।

परमेशस्तोत्रावली

लि०—यह उत्पलदेव विरचित शैवतन्त्र है। इस पर क्षेमराज कृत व्याख्या है—अद्वयस्तुतिसूक्ति नाम की।

—कैट्. कैट्. १।३२६

उ०—रत्नकण्ठ द्वारा स्तुतिकुसुमाञ्जलि में।

परमेशस्तोत्रावलि वृत्ति

लि०—मूलकार उत्पलदेव तथा वृत्तिकार क्षेमराज। पूर्ण

—डे० का० ४५८ (१८७५।७६ ई०)

परमेश्वरसंहिता

लि०—

—कैट्. कैट्. १।३२६

परमेश्वरीमततन्त्र

लि०—

—नें० द० १।१६४७ (घ)

परशुरामकल्पसूत्र

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ६००। (ख) श्लोक सं० ६००। (ग) श्लोक सं० २५० (११ वें से १८ वें खण्ड तक)। (घ) श्लोक सं० ६००। (ङ) श्लोक सं० १५० अपूर्ण। (च) श्लोक सं० २५० (खण्ड ११ से १८ तक)। (छ) श्लोक सं० ४००, अपूर्ण। (ज) श्लोक सं० ६००। (झ) श्लोक सं० ६००।

—अ० व० (क) १३१००५, (ख) ९१६१, (ग) ९७०१, (घ) ४६३७, (ङ) ६१८८, (च) ६८३६, (छ) ७६२४, (ज) १०६८५, (झ) १०६९०

(२) पन्ने ४८।

—रा० पु० २। ७७०८

(३) शाक्त तन्त्रों के कतिपय मूल सिद्धान्त इसमें वर्णित हैं।

—म० द० ५६७४, ७५

(४) परशुरामसूत्र भी इसका नामान्तर है। —कैट्. कैट्. १।३२७, २।७२

परशुरामकल्पसूत्रवृत्ति

लि०—(१) वृत्ति का नाम सौभाग्योदय और वृत्तिकार का नाम रामेश्वर है। श्लोक सं० ५००० । —अ० ब० १३१०७

(२) (क) रामेश्वर कवि विरचित, श्लोक सं० ५९६५, पूर्ण । (ख) श्लोक सं० १३१२, अपूर्ण । (ग) श्लोक सं० ३४८२, अपूर्ण । (घ) श्लोक सं० २७६८, अपूर्ण । —सं० वि० (क) २३९२७, (ख) २४९५७, (ग) २४९५८, (घ) २६१८६

पराक्रम

उ०—प्राणतोषिणी में ।

पराख्यतन्त्र

इसकी श्लोक सं० २००० है ।

उ०—शतरत्नसमुच्चय में ।

परातन्त्र

लि०—(१) नामान्तर-करवीरयाग। यह ईश्वर-देवी संवादरूप है।

—इ० आ० २५९०

(२) यह पार्वती-ईश्वर संवादरूप है। इसमें ४ पटल हैं। पूर्वाम्नाय, दक्षिणाम्नाय, उत्तराम्नाय, ऊर्ध्वाम्नाय आदि छह आम्नाय वर्णित हैं।

—ए० बं० ५९५३

(३) —कैट्. कैट्. २।७२

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा शतरत्नसमुच्चय में ।

परात्रिंशिका

लि०—(१) अभिनव गुप्त विरचित, पूर्ण ।

—डे० का० ४६० (१८७५।७६ ई०)

(२) शैव ग्रन्थ, सोमेश्वर विरचित अभिनव गुप्त कृत व्याख्यासहित ।

—इ० आ० १४१२

(३) शैवतन्त्र, सोमेश्वर विरचित अभिनव कृत व्याख्या सहित ।

—कैट्. कैट्. १।३२७

परादेवीरहस्य (तन्त्र)

लि०—(१) रुद्रयामल के अन्तर्गत, श्लोक सं० २५५, पूर्ण। —सं० वि० २५४३३
(२) —कैट्. कैट्. १।३२७

परानन्दतन्त्र

लि०—(१) इस तन्त्र का परिमाण, पुष्पिका के अनुसार, सवालाख है। परन्तु यह ग्रन्थ सुलभ नहीं है। प्रस्तुत प्रति उसके २य पाद का एक अंशमात्र है। इसमें ३२ दीक्षाएँ वर्णित हैं। —क० का० ८८

(२) द्वितीय पाद में द्वात्रिंशत् (३२) दीक्षाम्नाय-क्रम। —कैट्. कैट्. ३।७०

परानन्दमत

लि०—इस ग्रन्थ में तन्त्र के परानन्द-सम्प्रदाय के दृष्टिकोण का प्रदर्शन किया गया है। —ए० बं० ५९८२

परानिष्कला

लि०— —कैट्. कैट्. ३।७०

परापञ्चाशिका

उ०—योगिनीहृदयदीपिका में।

परापद्धति

लि०—नामान्तर—परापूजापद्धति। श्लोक सं० २३५, अपूर्ण। —सं० वि० २५२५२

परापूजाप्रयोग

लि०—इस ग्रन्थ में संकल्प,न्यास और जप के अनन्तर परापूजा कर मांसयुक्त शक्तिपात्री का अर्पण इत्यादि सविधि वर्णित है। —म० द० ५६७६

पराप्रवेशिका

लि०—(१) (क) पत्रे ४, पूर्ण। (ख) पत्रे २।
—डे० का० (१) ४६१, (२) ४६२, (१८७५।७६ ई०)

(२) (क) श्लोक सं० २२३। भुवनमालिनीतन्त्र के अन्तर्गत, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ४८, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २५२००, (ख) २५२०२

उ०—रत्नकण्ठ द्वारा स्तुतिसुमाञ्जलि में।

पराप्रसादपद्धति

लि०—नामान्तर–क्रमोत्तम। निजात्मप्रकाशानन्द कृत, श्लोक सं० ५००।
—अ० व० १०६६७

पराप्रसादमन्त्रजपविधि

लि०—श्लोक सं० २५।।, पूर्ण। —सं० वि० २६६१३

पराप्रसादमहामन्त्र

लि०— कैट्. कैट्. ३।७०

परामत

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

परासूक्त

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

परास्तोत्र

गोरक्ष अथवा महेश्वरानन्द कृत।
उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

परिभाषामण्डल

लि०—नामान्तर—ललितासहस्रनाम। रचयिता नृसिंहयज्वा। श्लोक सं० ३००।
—अ० व० १०३४५

परोक्षदीक्षाप्रकाशन

लि०—श्लोक सं० १९०, पूर्ण। —सं० वि० २४९४५

पर्यन्तपञ्चाशिका

लि०—अभिनवगुप्ताचार्य कृत। इसमें मन्त्र और मुद्राओं का रहस्य प्रतिपादित है।
—ट्रि० कै० १२२७ (ख)

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

पवनविजय या स्वरोदय

लि०—(१) इसमें नाड़ी और तत्त्वों का विवरण है।
—ए० बं० ६१०४, ६१०५

(२) नामान्तर—स्वरोदय। (क) श्लोक सं० ४१०, पूर्ण। इसमें ९ प्रकरण हैं। (ख) श्लोक सं० ५२५, पूर्ण। —र० मं० (क) १०८९, (ख) ४८८९

(३) ईश्वर-पार्वती संवादरूप। श्लोक सं० ४९४। पार्वतीजी ने शिवजी से सर्वसिद्धिकर ज्ञान कहने की कृपा कीजिये यों प्रार्थना की। इस पर शिवजी ने स्वरोदय शास्त्र का आदेश दिया। इसमें दाहिनी और बायीं नासिका के छिद्र से निकली श्वास वायु से युद्ध, वशीकरण, रोग आदि कतिपय कार्यों में शुभाशुभ फल का ज्ञान होता है, यह प्रतिपादित है। —रा० ला० ४८४, ४८५

पल्लवदीपिका

लि०—(१) श्रीकृष्ण विद्यावागीश भट्टाचार्य विरचित। श्लोक सं० १९६। इसमें मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, स्तंभन आदि की विधि वर्णित है। —रा० ला० ६९२

(२) श्लोक सं० १५५, अपूर्ण। —सं० वि० २४६१०

पशुसंकुल

उ०—प्राणतोषिणी में।

पश्चिम (तन्त्र)

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

पात्रग्रहणमन्त्र

लि०—श्लोक सं० ३२, पूर्ण। —सं० वि० २६६२६

पात्रपूजा

लि०—देवी शक्ति की पूजा में उपयुक्त होनेवाले पात्र विशेष की पूजाविधि इसमें वर्णित है। —म० द० ५६७७

पात्रवन्दन

लि०—(१) पन्ने २, पूर्ण। —डे० का० (१८७५।७६ ई०)

(२) देवीरहस्यान्तर्गत, (क) श्लोक सं० ४२, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ४०, पूर्ण। —सं० वि० (क) २४४७२, (ख) २६१८९

पात्रवन्दननवस्तोत्र

लि०—रुद्रयामल के अन्तर्गत। —ने० द० २।पे०२०७

पात्रवन्दना

लि०—शाक्ताभिषेकविधि के अन्तर्गत पञ्चतत्त्वशोधन, पूर्णाभिषेक, संस्कार तथा शान्तिस्तोत्र के साथ। —सं० वि० २५७६४

पात्रवन्दनादि

लि०—पूजापद्धति के अन्तर्गत। —सं० वि० २६४९८

पात्रवन्दनाविधि

लि०—श्लोक सं० ६२, पूर्ण। —सं० वि० २५३६०

पात्रशुद्धि

लि०—हरिहर विरचित। —कैट्. कैट्. १।३३३

पात्रस्तवविधि

लि०—रुद्रयामल के अन्तर्गत, श्लोक सं० २२०, पूर्ण।
—सं० वि० २४०३३

पात्रविवरण

लि०—इसमें शक्ति की पूजा में उपयुक्त श्रीपात्र, शक्तिपात्र, भोगपात्र आदि पात्रों का विवरण दिया गया है। —म० द० ५६७८

पात्रस्थापनविधि

लि०—पन्ने ६। —रा० पु० २।५७५७

पात्रासादनविधि

लि०—श्लोक सं० ४१, पूर्ण। —सं० वि० २५७१६

पादसूत्र

लि०—रहस्याम्नाय के अन्तर्गत। श्लोक स० ५९, पूर्ण।
—सं० वि० २५५४४

पादुकापञ्चकटीका

कालीचरणविरचित।

पादुकोदय

गोरक्ष या महेश्वरानन्दकृत।

उ०—महार्थमञ्जरीपरिमल में।

पाद्मतन्त्र या पाद्मसंहिता

लि०—(१) नारदपञ्चरात्रान्तर्गत। इसमें चार पाद हैं—(१) ज्ञानपाद, (२) योगपाद, (३) क्रियापाद और (४) चर्यापाद। प्रत्येक पाद के अध्याय और विषयों का विवरण (इ० आ० में) दिया है। यह नारदपञ्चरात्रान्तर्गत संहिताओं में ५ वीं संहिता है।

—इ० आ० २५३२

(२) नामान्तर-पञ्चरात्रोपनिषद् भी है। श्लोक सं० ९००० । यह कण्व तथा कण्वाश्रमवासी ऋषियों का संवाद रूप है। यह कण्व को संवर्त से प्राप्त हुआ था। इसके ज्ञान, योग, क्रिया और चर्या ये चार पाद हैं। ज्ञानपाद १२ अध्यायों में, योगपाद ५ अध्यायों में क्रियापाद ३२ अध्यायों में एवं चर्यापाद ३३ अध्यायों में पूर्ण है।

—तैं० म० २९६

(३) नारदपञ्चरात्रान्तर्गत। —कैट्. कैट्. ३।७१

पारमेश्वरतन्त्र

श्रीकण्ठी के अनुसार यह अष्टादश (१८) रुद्रागमों में अन्यतम है।

लि०—(१) यह शिवाद्वैतसिद्धान्त वीरशैवसम्प्रदाय का ग्रन्थ है। इसमें २३ पटल हैं। यह पार्वती-परमेश्वर संवादरूप है। लिङ्गधारण, शिवाग्निजनन, दीक्षाविधान, पञ्चाक्षरविधान, लिङ्ग-लक्षण, वीरशैव का वैशिष्ट्य आदि विषय इसमें वर्णित हैं।

—ए० बं० ५८०८

(२) उमा-महेश्वर संवादरूप। पार्वतीजी ने पूछा—भगवन्, मेरु कैसे उत्पन्न हुआ ? उसका उद्धार कैसे हुआ ? उसका कितना बड़ा विस्तार है जिसमें चराचर जगत् उत्पन्न हुआ ? छह प्रकार के कुलाम्नाय, सोलह न्यासों से युक्त महामुद्रा विद्या तथा अनेक प्रकार के विस्मयों से युक्त जगत् मेरु के मध्य में कैसे व्यवस्थित है ? वागीश्वरी, महामाया, चामुण्डा, कुलनायिका, मृत्युञ्जया महाकाली, त्रोतुला, त्रिपुरभैरवी आदि देवियाँ मेरु से कैसे उत्पन्न हुईं ? इत्यादि प्रश्नों का इसमें उत्तर दिया गया है। ऊपर वर्णित ए० बं० ५८०८ में २३ पटल तक का भाग है, इसमें २४ से लेकर ३९ पटल तक का अंश है। प्रो० बेंडल (पे. ३७) में इसके ४१ वें और ४२ पटल का पता चलता है। इस प्रकार यह ४२ पटल या उससे अधिक पटलों में पूर्ण है। —न० द० २। पे. ४६-४८, ३।३६४ (छ)

उ०—प्राणतोषिणी तथा वीरशैवानन्दचन्द्रिका में।

पारमेश्वर संहिता

लि०—(१) श्लोक सं० लगभग ८०००। इसमें ज्ञानकाण्ड और क्रियाकाण्ड—दो काण्ड हैं। १ म ज्ञानकाण्ड १ अध्याय में पूर्ण है और २ रा क्रियाकाण्ड २५ अध्यायों में पूर्ण है। इसका रचनाकाल लगभग १८१० कहा गया है।

—तै० म० २५७

(२) —कैट्. कैट्. १।३३४ २।७४

उ०—प्राणतोषिणी तथा वीरशैवानन्दचन्द्रिका में।

पारमेश्वरीय

लि०— —कैट्. कैट्. १।३३४

पारमेश्वरीमततन्त्र

लि०—(१) —ने० द० (पे. ८५) १।१६४७ (घ)

(२) यह ९ करोड़ श्लोकात्मक तन्त्र कई पटलों में पूर्ण है। इसका १७ वाँ पटल अघोरा-निर्णयपरक है। —ने० द० २ पे० ११५

पारानन्दसूत्र

लि०—(क) श्लोक सं० २०००। (ख) श्लोक सं० २०००।

—अ० ब० (क) १००९३, (ख) ११७९६

पारायणक्रम

लि०— —कैट्. कैट्. १।३३५

पारायणविधि

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ३००। (ख) श्लोक सं० ३००। (ग) सौभाग्यतन्त्र से गृहीत। श्लोक सं० ४५०, पटल ३ से १२ तक।

—अ० ब० (क) ५६७२, (ख) ११०२५, (ग) १३४५४

(२) सौभाग्यतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक सं० ३१५ पूर्ण (?)

—सं० वि० २४९१५

(३) सौभाग्यतन्त्र से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।३३५

पार्थिवचिन्तामणि

लि०—श्लोक सं० २८४, अपूर्ण। —सं० वि० २४६१३

पार्थिवपूजनविधि

लि०— —कैट्. कैट्. १।३३५, २।७४

पार्थिवपूजा

लि०—रुद्रयामल के अन्तर्गत। श्लोक सं० ९३, पूर्ण। लिपिकाल सं० १८१२।

—सं० वि० २४३३३

पार्थिवपूजाविधि

लि०—(१) सौभाग्यतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक सं० २८०, पूर्ण।

—र० मं० १०२९

(२) सौभाग्यतन्त्र से गृहीत। —कैट्. कैट्. २।७४

पार्थिवलिङ्गपूजनविधि

लि०—(१) शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें पार्थिव (मृण्मय) शिवलिङ्गपूजनविधि प्रतिपादित है। यह ग्रन्थ किसी अज्ञात तन्त्र से संगृहीत है। इसकी श्लोक सं० ३४० है।

—रा० ला० ९१६

(२) —कट, कैट्. १।३३५

पार्थिवलिङ्गपूजाराधन

लि०— —कैट्. कैट्. १।३३५

पार्थिवलिङ्गपूजाविधि

लि०—इसमें पार्थिवशिवलिङ्गपूजाविधि वर्णित है। यह ग्रन्थ रुद्रयामल तथा अन्यान्य तन्त्रग्रन्थों से संगृहीत है। पूर्वोक्त पार्थिवलिङ्गपूजनविधि से यह भिन्न प्रतीत होता है। —क० का० ४७

पार्थिवशिवकवच

लि०—(१) पत्रे २, पूर्ण। —बं० प० १२५५

(२) महादेव-पार्वती सवाद-रूप, उन्मत्तभैरवीतन्त्रोक्त। इसमें सर्वकामार्थसिद्धिप्रद पार्थिवशिवकवच के माहात्म्य आदि का वर्णन किया गया है।

पार्थिवशिवपूजाविधि

लि०—पूर्ण। —बं० प० ४५९

पार्थिवार्चनचूड़ामणि

लि०—भूपालेन्द्र नवमीसिंह विरचित। ग्रन्थकार ने गुरुओं का मत जानकर वैदिक, तान्त्रिक, कौलिक तथा वामक शिवपूजाविधि के विवेचनार्थ इस ग्रन्थ का निर्माण किया। सन् १७१५ में इस ग्रन्थ की रचना हुई। —ने० द० २।३१९ (च)

पार्थिवेश्वरचिन्तामणि

लि०— —कैट्. कैट्. १।३३६

पार्थिवेश्वरपूजनविधि

लि०— —कैट्. कैट्. १।३३६

पार्थिवेश्वरपूजाविधि

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० ७२, अपूर्ण।

—सं० वि० २४७७३

(२) रुद्रयामल से गृहीत, नामान्तर—पार्थिवलिङ्गपूजाविधि।

—कैट्. कैट्. २।७५

पार्वतीहरसंवाद

उ०—आगमकल्पलता में।

पाशुपततन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० १०००। —अ० ब० ६७७५

(२) नन्दिकेश्वर प्रोक्त, नन्दिकेश्वर-दधीचि संवादरूप, श्लोक सं० १७००। इसमें शिव, स्कन्द, देवी और अन्यान्य देवताओं की पृथक्-पृथक् पटलों द्वारा पूजाविधि प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० ९८३

पिङ्गलतन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों में अन्यतम।

पिङ्गलातन्त्र

उ०—तन्त्रसार में।

पिङ्गलामत

लि०—पिङ्गला-भैरव संवाद रूप यह ब्रह्मयामल का एक अंश है। इसमें आगम, शास्त्र, ज्ञान और तन्त्र का लक्षण प्रतिपादित है। यह ग्रन्थ पश्चिमाम्नाय से सम्बद्ध है। इसमें आठ प्रकरण हैं—१. प्रश्नप्रकरण, २. सामान्यलिङ्गप्रकरण, ३. साधनलिङ्गाधार-प्रकरण, ४. प्रतिमाधिकारप्रकरण, ५. पीठाधिकारप्रकरण, ६. वाराधिकारप्रकरण, वास्त्वधिकारप्रकरण आदि। —ने० द० २।३७६ (ख)

उ०—आगमतत्त्वविलास, आगमकल्पलता, हेमाद्रि, प्राणतोषिणी, ताराभक्ति-सुधार्णव, पुरश्चर्यार्णव तथा सौभाग्यभास्कर में। रघुनन्दन तथा विट्ठल दीक्षित ने भी इसका उल्लेख किया है।

पिङ्गलामृत

उ०—तन्त्रसार में।

पिचुभैरवीतन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों में अन्यतम है।

—(तन्त्रालोकटीका)

पिच्छिलातन्त्र

लि०—(१) यह पूर्व और उत्तर—दो खण्डों में विभक्त है। उनमें क्रमशः २१ और २४ पटल पाये जाते हैं। इस तन्त्र में मुख्यतया कालीपूजाविधि वर्णित है। साथ ही साथ आनुषङ्गिक रूप से यन्त्र, मन्त्र आदि का भी प्रतिपादन किया गया है।

—ए० बं० ५९९१

(२) श्लोक सं० १८६ (?), पटल १४। उनके प्रतिपाद्य विषय गुरुभक्ति का निरूपण, काली-माहात्म्य कथन, दुर्गा के मन्त्र की महिमा, कृष्णमन्त्र आदि की विधि, वन्ध्यात्व निवर्तक यन्त्र आदि का निरूपण, वशीकरण, उच्चाटन आदि की विधियाँ, चोर को पकड़ने की विधि, विष दूर करने की विधि, दिव्य, वीर और पशुभाव का निरूपण, अभीष्ट सिद्धि के लिए काली-मन्त्रजप की विधि, नित्य पूजाविधि, दुर्गामन्त्रनिरूपण आदि। —रा० ला० २१८८

(३) (क) श्लोक सं० २०, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० २१२, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४३८६, (ख) २६०२८

उ०—सर्वोल्लास, प्राणतोषिणी, तन्त्रसार तथा आगमतत्त्वविलास में।

पीठनिरूपण

लि०—शिव-पार्वती संवाद रूप। 'सती' नाम से प्रसिद्ध भगवती द्वारा दक्षयज्ञ में अपना शरीर त्याग करने पर भगवान् महादेवजी ने उस देह के टुकड़े-टुकड़े कर उन्हें विभिन्न प्रदेशों में फेंक दिया। वे ही प्रदेश पीठ नाम से विख्यात हैं। उन्हीं का विवरण इस पुस्तक में किया गया है। कहाँ-कहाँ कौन पीठ किस नाम से प्रख्यात है इसका निरूपण इसमें है।

—रा० ला० ९९९

पीठचिन्तामणि

लि०—रामकृष्ण विरचित। —कैट्. कैट्. १।३३८

पीठनिर्णय या महापीठनिरूपण

लि०—(१) तन्त्रचूड़ामणि से गृहीत। —ए० बं० ६१४१

(२) पार्वती-शिव संवादरूप, तन्त्रचूड़ामणि के अन्तर्गत। ५१ विद्याओं की उत्पत्ति इसमें वर्णित है। सती के शरीर के अवयव गिरने से उत्पन्न हुए पीठ-स्थानों में स्थित शक्ति, भैरव आदि का प्रतिपादन है। इसकी श्लोक सं० ८० है। भगवान् शिवजी के प्रश्न पर सर्वज्ञानमयी माता पार्वतीजी ने यह उनके प्रति कहा। —रा० ला० ४४६

(३) पन्ने ४, पूर्ण। —बं० प० ४०२

(४) तन्त्रचूड़ामणि के अन्तर्गत श्लोक सं० ७०, पूर्ण।

—सं० वि० २५०२०

पीठपूजाविधि

लि०—दक्ष-यज्ञ में सतीजी के देहत्याग के बाद जहाँ-जहाँ उनके शरीर के अवयव गिरे उन पीठों पर होनेवाली तान्त्रिक क्रियाएँ इसमें वर्णित हैं।

—ने० द० १।४९१

पीठमाला

लि०—श्लोक सं० ४५, अपूर्ण। —सं० वि० २६४६८

पीठशक्तिनिर्णय

लि०— —कैट्. कैट्. १।३३८

पीठाधिदेवता-नाम

लि०—श्लोक सं० ६४, पूर्ण। —सं० वि० २४०१३

पीताम्बरापद्धति

लि०––(१) इसमें पीताम्बरा देवी के मन्त्र, जप, ध्यान, पूजा, मुद्रा, होम आदि का प्रतिपादन है। ––बी० कै० १३०३

(२) श्लोक सं० १५५, अपूर्ण। ––सं० वि० २३८८७

पीताम्बरापूजापद्धति

लि०––(१) श्लोक सं० ११९६, पूर्ण। ––सं० वि० २५२७९

(२) ––कैट्. कैट्. २।७५

पीतासपर्याविधि

लि०––इसमें वगलामुखी की पूजा विस्तार से प्रतिपादित है।

––ए० बं० ६३९६

पीयूषरत्नमहोदधि

लि०––अकुलेन्द्रनाथ विरचित। ––ए० बं० ६६१९

पुत्रेष्टिप्रयोग

लि०––नीलतन्त्र से गृहीत, श्लोक सं० २७, पूर्ण। ––सं० वि० २५२४६

पुरश्चरण

लि०––(१) (क) गोपीनाथ पाठक विरचित श्लोक सं० ४००।

(ख) श्लोक सं० ८०। ––अ० ब० (क) १२५, (ख)५०८०

(२) गोपीनाथ पाठक विरचित, श्लोक सं० ३९६, पूर्ण।

––सं० वि० २५७०३

पुरश्चरणकारिका

लि०––श्लोक सं० ६०, पूर्ण। ––सं० वि० २६१७५

पुरश्चरणकौमुदी

लि०––(१) माधवाचार्य-पुत्र मुकुन्द पण्डित विरचित, श्लोक सं० १३०५, अपूर्ण।

––र० मं० ४८७८

(२) विद्यानन्दनाथ विरचित, श्लोक सं० ५३७, पूर्ण।

––सं० वि० २५२८४

(३) मुकुन्द विरचित। ––कैट्. कैट्. १।३३८, २।७५

पुरश्चरणकौस्तुभ

लि०—अहोबल विरचित। इसमें पापनिवृत्ति करने वाले व्रतादि का प्रतिपादन तथा उनकी विधियों का वर्णन है। —वी० कै० १३०७

पुरश्चरणचन्द्रिका

लि०—(१) विबुधेन्द्राश्रम-शिष्य देवेन्द्राश्रम विरचित (क) श्लोक सं० १२००, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० १३००। (ग) श्लोक सं० १३००।

—अ० ब० (क) ५८५६, (ख) ९६४०, (ग) १०६८८

(२) देवेन्द्राश्रम कृत। —रा० पु० ५६६१

(३) मान्त्रिकचक्रवर्त्ती देवेन्द्राश्रम कृत, श्लोक सं० १४६६। विषय—भक्ति निरूपण, गुरुभक्ति-प्रशंसा, कौलिकाचारनिरूपण, आसन, माला, मुद्रा तथा कौलारोपादि-विधि, गुरुवन्दन आदि, भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, प्राणायाम, पीठन्यास आदि की विधि, अन्तर्याग, आत्मपूजन, शंखस्थापन, बाह्यपूजन आदि की विधियाँ। मन्त्रार्थसिद्धि के उपाय, कुण्ड तथा होम की विधि आदि। —रा० ला० २३९९

(४) परमहंस परिव्राजकाचार्य विबुधेन्द्राश्रम-शिष्य देवेन्द्राश्रमकृत।

—ने० द० १।१३६१

(५) इसमें पुरश्चरण तथा उससे सम्बद्ध विषय वर्णित हैं।

—ने० द० २।३१९ (ई०)

(६) यह कौल ग्रन्थ है। इसमें कुण्डमण्डप रचना, पूजा, जप, होम, तर्पण, अभिषेक, ब्राह्मणभोजन आदि की विधि वर्णित है। —ए० बं० ६५३१

(७) पुरश्चरण के स्वरूप आदि का निरूपण, पुरश्चरणविधि, नैमित्तिक पुरश्चरण-निरूपण, ग्रहण के अवसर के पुरश्चरण आदि का निरूपण, मन्त्र-प्रबोधज्ञान आदि का कथन इत्यादि विषय इसमें वर्णित हैं। —नो० सं० ३।१२६

(८) (क) देवेन्द्राश्रम कृत, श्लोक सं० ८२५, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ८९५, होम, तर्पण, अभिषेक, ब्राह्मण-भोजनविधि पर्यन्त पूर्ण। (ग) श्लोक सं० ९३१ देवेन्द्राश्रम कृत, पूर्ण। (घ) गोपीनाथ पाठक कृत, श्लोक सं० ३५०, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २३९०६, (ख) २४१४३, (ग) २६२८०, (घ) २६३६२

(९) (१) देवेन्द्राश्रम कृत

(२) माधव पाठक कृत (?)

(९) विबुधेन्द्राश्रम (शिष्य ?) —कैट्. कैट्. १।३४०

(१०) देवेन्द्राश्रम विरचित। —कैट्. कैट्. ३।७२

उ०—प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमकल्पलता तथा तन्त्रसार में। रघुनन्दन ने भी आह्निकतत्त्व में इसका उल्लेख किया है।

पुरश्चरणदीपिका

लि०—(१) चन्द्रशेखर विरचित। —ए० बं० ६५३२

(२) चन्द्रशेखर विरचित। ५ प्रकाशों में पूर्ण एवं शकाब्द १५१२ में रचित (वर्षे द्वादशसंयुक्ते पञ्चदशशते गते)। सब तन्त्रों के मत जान कर तथा सद्गुरुओं की शुभ संमति लेकर यह सब मन्त्रों की पुरश्चरणदीपिका रची गयी। यह कलिकाल का अज्ञानतिमिर हरने वाली है। —नो० सं० २।१२७

(३)–(क) चन्द्रशेखर विरचित।

(ख) काशीनाथ विरचित।

(ग) रामचन्द्र विरचित। —कैट्. कैट्. १।३४०

पुरश्चरणपद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० १००, (खण्डित)। —अ० ब० १२८६८

(२) श्लोक सं० २६०, अपूर्ण। —सं० वि० २६५३५

(३) —कैट्. कैट्. १।३४०

पुरश्चरणपद्धतिमाला

उ०—पद्मनाभ ने इसका उल्लेख किया है। —कैट्. कैट्. १।३४०

पुरश्चरणप्रपञ्च

लि०—(१) सहजानन्दनाथ विरचित, श्लोक सं० २५०। —अ० ब० ११०३९

(२) सहजानन्द कृत, श्लोक सं० ४००, पूर्ण। —सं० वि० २६२०७

(३) सहजानन्दनाथ कृत। —कैट्. कैट्. १।३४०

पुरश्चरणप्रयोग

लि०—(१) श्रीनिवास विरचित, श्लोक सं० ३००। —अ० ब० ११४०३

(२) (क) श्लोक सं० ८६, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ६४। (ग) श्लोक सं० ५४, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २४७१०, (ख) २६४६९, (ग) २६६५२

(३) —कैट्. कैट्. ३।७२

पुरश्चरणप्रयोगादर्श

लि०—सर्वानन्दिक साधु साग्निक ज्ञानानन्द भट्टाचार्यात्मज वासुदेव सार्वभौम विरचित। अपूर्ण।

—वं० प० १३०९

पुरश्चरणबोधिनी

लि०—इसमें विविध पुरश्चरणों का विस्तार से वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ के रचयिता टैगोर परिवार के थे, जो महाराज सर यतीन्द्रमोहन टैगोर के पिता सर महाराज प्रद्योत कुमार टैगोर के पितामह थे। यह शकाब्द १७३५ में रची गयी। बंगला लिपि में में यह मुद्रित भी हो चुकी है। —ए० बं० ६५३४

पुरश्चरणरसोल्लास

लि०—(१) पार्वती-महादेव संवादरूप यह पुरश्चरण विषयक ग्रन्थ १० पटलों में है।

—क० का० ४९

(२) (क) ९ पटल पूर्ण। १० म पटल का कुछ भाग अपूर्ण।

(ख) ९ पटल पूर्ण १०म पटल का कुछ भाग, अपूर्ण।

—वं० प० (क) १३१४, (ख) १३३०

(३) श्लोक सं० ५२५, १म से ९ म तक ९ पटल पूर्ण। —सं० वि० २६४७६

(४) पार्वती-महेश्वर संवादरूप, इसमें १० पटल हैं तथा दीक्षा, दश महाविद्याओं की उपासना आदि का प्रतिपादन है। —ए० बं० ५९७८

(५) देव-देवी संवाद रूप, श्लोक ४८८ और पटल १०। भगवन्, पुरश्चरण कर्म का रहस्य मुझे बतलाइए यों देवी की प्रार्थना पर भगवान् शिवजी ने इसका प्रतिपादन किया। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—पुरश्चरण-स्वरूप, दीक्षा-प्रशंसा, श्मशान में मन्त्रसाधनविधि, श्रीपञ्चमी को दीक्षाग्रहण में दोष, काली आदि १० महाविद्याओं का माहात्म्य, सुषुम्ना में स्थित रहस्य विशेष, दैवी दीक्षा आदि का निरूपण, सहस्रारपद्म का स्वरूप, स्थान आदि का निर्देश, मन्त्रदीक्षा के उपयुक्त तिथि आदि का निरूपण आदि।

—रा० ला० ४५७

(६) १० पटलों में। —कैट्. कैट्. १।३४०, ३।७२

उ०—प्राणतोषिणी तथा कालिकासपर्याविधि में।

इसका नाम पुरश्चर्यारसोल्लास भी है।

पुरश्चरणरहस्य

लि०—कालीतन्त्र के अन्तर्गत श्लोक सं० ४३, पूर्ण। —सं० वि० २४२४९

पुरश्चरणलहरीतन्त्र

लि०—नारद-सुभगा संवाद रूप यह ग्रन्थ ५ पटलों में पूर्ण है। उपासक के प्रातः काल के कृत्य आदि का प्रतिपादन, रुद्राक्ष धारण-फल आदि का निरूपण, वर्ण-पूजनविधि, जप-विधि आदि, पुरश्चरण के अन्त में कर्तव्य कर्म आदि विषय इसमें प्रतिपादित हैं।

—नो० सं० २।१२८

पुरश्चरणविधि (१)

लि०—(१) शैव माधव-पुत्र शैव गोपीनाथ विरचित। इसमें पुरश्चरण, तत्सम्बन्धी दीक्षा, गुरु और शिष्य की परीक्षा, मन्त्र-संस्कार आदि विषय वर्णित हैं। श्लोक सं० ४००, पूर्ण। —ए० बं० ६५३०

(२) (क) श्लोक सं० ४००। (ख) श्लोक सं० ४००।

—अ० ब० (क) ३४७२, (ख) ८३६६

(३) श्लोक सं० लगभग ४००, पूर्ण। —र० मं० ११७४

(४) माधव-पुत्र गोपीनाथ विरचित। कैट्. कैट्. २।७६, ३।७२

पुरश्चरणविधि (२)

लि०—(१) श्लोक सं० ४०, पूर्ण। इसमें पुरश्चरणविधि का संक्षेप में प्रतिपादन है।

—ए० बं० ६५३५

(२) श्लोक सं० ५०। —अ० ब० ३४६६

(३) (क) गौतमीयतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० १६५, पूर्ण। (ख) शैवार्चनदीपिका के अन्तर्गत नारायण विरचित, श्लोक सं० ३४३, पूर्ण। (ग) सुन्दराचार्य कृत श्लोक सं० ८८, पूर्ण। (घ) कुमारीकल्पादितन्त्रान्तर्गत, ग्रहणकालिक पुरश्चरणविधि श्लोक सं० २०, पूर्ण। (ङ) श्लोक सं० ६५, पूर्ण। (च) श्लोक सं० ११०, पूर्ण। (शीतलाकवच, शत्रुनिग्रहप्रयोग ये दो भी इसमें संमिलित है, अतः श्लोक सं० भी संमिलित हीहै)। (छ)

श्लोक सं० ३९५, पूर्ण। (ज) श्लोक सं० ८३, अपूर्ण। (झ) श्लोक सं० १५० (विपरीत प्रत्यङ्गिरा प्रयोग भी इसमें संमिलित है अतः यह श्लोक संख्या भी संमिलित ही है)। (ञ) श्लोक सं० २२६, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २५२४३, (ख) २४०३२, (ग) २५७०२, (घ) २५८१८, (ङ) २६१७९, (च) २६४६१, (छ) २६४५७, (ज) २५६५४, (झ) २६३२९, (ञ) २६४१७

(४) **लि०**—श्लोक सं० १९२, पूर्ण। —र० मं० १०४५

पुरश्चरणविधि (३)

लि०—(१) स्वतन्त्रतन्त्र के अन्तर्गत हर-गौरी संवादरूप। श्लोक सं० ६०। भगवन्, देवाधिदेव, सिद्धिप्रद सब मन्त्र जिससे सिद्ध होते हैं वह सिद्धि का हेतु उपाय मुझसे कहने की कृपा कीजिए, पार्वती की इस प्रार्थना पर भगवान् महेश्वर ने उत्तर दिया कि कामना विशेष पर अमुक-अमुक दिशाओं की ओर मुँह कर एकाग्रचित्त होकर मन्त्र-जप करना चाहिए एवं साथ ही यह भी बतलाया कि विशेष विशेष-नक्षत्रों में किये गये मन्त्र-जप की संख्याओं का विशेष फल होता है जिससे शीघ्र मन्त्र-सिद्धि होती है। —रा० ला० ४५०

(२) स्वतन्त्रतन्त्र से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।३४०

पुरश्चरणविवेक

लि०—(१) उत्तरतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक सं० ६३, पूर्ण।

—ए० बं० ५९८७

(२) उत्तरतन्त्र के अन्तर्गत परमरहस्य उमा-महेश्वर संवादरूप यह तन्त्रपुरश्चरण सुलभ के उपायों का प्रतिपादक है। —रा० ला० ४६०

पुरश्चरणादिप्रयोग

लि०—इसमें पुरश्चरण के स्थान, आहार आदि के नियम, जप-संख्यानियम आदि का निर्णय किया गया है। —म० द० ५७७२

पुरश्चर्याकौमुदी

लि०—माधवाचार्य विरचित। —कैट्. कैट्. २।७६

पुरश्चर्यारसाम्बुनिधि

लि०—मन्त्रशास्त्रप्रवीण शैलजा मन्त्री द्वारा रचित, श्लोक सं० ८७९; पुरश्चरण-विधि, इन्द्रादि के आवाहन की विधि, क्षेत्रपाल आदि के लिए बलिदानविधि, पापनिवृत्ति

के लिए सावित्री जप की विधि, संकल्प, जप आदि का क्रम, कुल्लुका, सेतु आदि का निरूपण, जिह्वाशुद्धि की विधि, श्यामा, तारा, त्रिपुरसुन्दरी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, वगला, मातङ्गी आदि की जपसंख्या का निरूपण, होम, तर्पण, ब्राह्मण-भोजन आदि की विधि, मन्त्र के स्वप्न, जागरण आदि का निरूपण, बलिदानविधि, रहस्यपुरश्चरण-विधि, तारिणीस्तोत्र, चौरमन्त्र आदि का निर्देश, कामिनीतत्त्व, मन्त्रसिद्धि के लक्षण तथा उसके उपाय आदि विषय इसमें वर्णित हैं। —रा० ला० २९०४

पुरश्चर्यार्णव

लि०—(१) नेपाल के महाराजाधिराज प्रतापसिंहशाह विरचित। ग्रन्थरचना-काल सं० १८३१ वि०। विविध आगम, उपनिषत्, स्मृतियाँ, पुराण, ज्यौतिषशास्त्र, शालिहोत्र तथा नाना प्रकार की पद्धतियों का भली भाँति अवलोकन कर ग्रन्थकार ने इसका निर्माण किया, यह १२ तरंगों में पूर्ण है। इसमें छह आम्नायों के देवता, आम्नायों के आचार का निर्णय, दीक्षा के देश और काल, वास्तुयाग, कुण्डमण्डपादि निर्णय पूर्वक अङ्कुरार्पण, दीक्षा-विधि में गुरुपूजनपूर्वक देवतापूजन, क्रियावत् दीक्षाविधि, क्रियादीक्षा-प्रयोगपूर्वक दीक्षा के भेदों का निर्णय, सामान्य पुरश्चरणविधि, मन्त्रसिद्धि के लक्षण, उपाय आदि विषय वर्णित हैं। —ने० द० १।३७६

(२) प्रतापनारसिंहशाह कृत, श्लोक सं० २००००।

—अ० ब० १०६३८

(३) प्रतापशाहदेव कृत। (क) प्रथम तरङ्गमात्र। (ख) २य से ९म तरंग पर्यन्त। (ग) १० म से १२ तरङ्ग पर्यन्त। रचनाकाल सं० १८३१ वि०।

—रा० पु० (क) ५६५४, (ख) ५६५५, (ग) ५६५६

पुरश्चर्याविधि

लि०—(१) नितान्ततन्त्रान्तर्गत पार्वती-महेश्वर संवादरूप। श्लोक सं० ८४, अपूर्ण। यह संक्षिप्त पुरश्चर्याविधि परमोक्षप्रदायिनी है। इसके आचरण से साधक के अशेष पापों का विनाश, मन्त्रसिद्धि, कामनासिद्धि तथा ज्ञानसिद्धि होती है, इसमें सन्देह नहीं।

—ए० बं० ६०३६

(२) श्लोक सं० २१८, पूर्ण। —सं० वि० २५०९४

पुरसुन्दरीमन्त्रादि

लि०—श्लोक सं० ४५०, अपूर्ण। —अ० ब० १०२०४

पुरस्क्रियाचर्या

उ०—रघुनन्दन द्वारा तिथितत्त्व में।

पुरुषवश्याधिकार

लि०—श्लोक सं० १५, अपूर्ण। —सं० वि० २५१८९

पुलिन्दिनीप्रयोग

लि०—शिवसारोद्धार के अन्तर्गत, श्लोक सं० १६, पूर्ण।

—सं० वि० २५८४५

पुष्पचिन्तामणि

लि०—यह तान्त्रिक निवन्ध ४ प्रकाशों में पूर्ण है। विविध देवी-देवताओं में से किसके पूजन के लिए कौन पुष्प या पत्र विहित हैं और कौन प्रतिषिद्ध हैं यह विषय इसमें विस्तार के साथ वर्णित है।

इसमें प्रतिपादित मुख्य-मुख्य विषय—सामान्यतः पुष्पों का विवरण, शिवपूजन में पुष्पनिर्णय, विभिन्न पुष्पों से पूजा करने का भिन्न-भिन्न फल, शिवपूजा में विहित पत्र-पुष्प और निषिद्ध पत्र-पुष्प, नवग्रहों की पूजा में विहित और निषिद्ध पत्र-पुष्प, विष्णु-पूजा में विहित और निषिद्ध पत्रपुष्प, दुर्गापूजा में विहित और निषिद्ध पत्र और पुष्प। भिन्न-भिन्न पुष्पों को चढ़ाने का फल, विशेष पुष्पों की मालाओं का फल, प्रतिमा के पुष्पार्चन का फल, देवी के लिए विहित और निषिद्ध पुष्प। दक्षिण काली तथा नील सरस्वती के लिए विहित और निषिद्ध पत्र-पुष्प आदि।

—ने० द० १।९६६

पुष्पपत्रार्चनविधि

लि०—बृहत्तन्त्र-कौमुदी से गृहीत, श्लोक सं० ६७। —अ० ब० ४०२७

पुष्पनामप्रश्नविधि

लि०—अक्षर चूड़ामणि के अन्तर्गत। श्लोक सं० ३२, पूर्ण। इसमें भैरवतन्त्रान्तर्गत विपरीत प्रत्यङ्गिरा महामन्त्र भी संनिविष्ट है। —सं० वि० २६६५३

पुष्पमाला

लि०—(१) रुद्रधर विरचित। इसमें देवपूजार्थ कौन पुष्प विहित (उपयुक्त) और कौन निषिद्ध है यह प्रतिपादित है। रा० ला० १९९८

(२) —कैट्. कैट्. १।३४३

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

पुष्पमाहात्म्य

लि०—रहस्यकल्लोलिनी के अन्तर्गत। इसमें यह वर्णित है कि विशेष-विशेष पुष्प विशेष-विशेष देवियों को प्रिय हैं। उनके द्वारा उनका अर्चन करने से मुक्ति, महाकीर्ति, वल आदि नाना प्रकार के अभीष्ट पदार्थ प्राप्त होते हैं। —इ० आ० २६१४

(२) पश्चिमाम्नाय, उत्तराम्नाय, सिद्धिलक्ष्मी, दक्षिणाम्नाय, नीलसरस्वती तथा ऊर्ध्वाम्नाय की देवियों को कौन पुष्प चढ़ाना, कौंन शुभफलप्रद और कौन अशुभफलदायक हैं यह वर्णन इसमें किय गया है एवं किस महीने में महादेव जी को कौन पुष्प चढ़ाना चाहिए यह भी इसमें प्रतिपादित है। —ने० द० २।३२८ (च)

पुष्परत्नाकरतन्त्र

लि०—भूपालेन्द्र नवमीसिंह विरचित यह ग्रन्थ ८ पटलों में पूर्ण है। विहित पुष्पों का विवरण, निषिद्ध पुष्पों का विवरण, गणेश और शिवपूजा में ग्राह्य पुष्पों का विवरण, विष्णुपूजा में ग्राह्य पुष्पों का विवरण, विशेष-विशेष पुष्पों द्वारा पूजन करने का फल, सूर्य आदि नवग्रह और पितरों के उपयुक्त पुष्पों का विवरण, भवानी, दुर्गा, गायत्री तथा सरस्वती के पूजायोग्य पुष्पों का विवरण, दक्षिणाम्नाय और क्षिणाम्नाय में उपयुक्त पुष्पों का विवरण, उत्तराम्नाय, ऊर्ध्वानाम्नाय और अधआम्नाय में उपयोगी पुष्पों का विवरण इत्यादि विषय इसमें वर्णित हैं। —ने० द० २।२४३ (क)

पुष्पसारसुधानिधि

उ०—अहल्याकामधेनु में।

पुष्पाञ्जलिविधान

लि०—श्लोक सं० ५०, पूर्ण। इसमें विविध देवी-देवताओं को पुष्पाञ्जलि चढ़ाने के मन्त्र हैं। कुछ मन्त्रों के ऋषि, छन्द, देवता आदि भी प्रतिपादित हैं।

—ट्रि० कै० ९८४ (क)

पुष्पाध्याय

लि०—श्लोक सं० १२०। —अ० ब० ४४४१

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

पुष्पिणीस्तोत्र

लि०—कालिकाप्रस्थान्तर्गत, श्लोक सं० २५, पूर्ण। इसमें रजस्वला के दर्शन, संभाषण, स्मरण और संसर्ग की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की गयी है।

—ए० बं० ६७३३

पुस्तकेन्द्र

उ०—नरपति ने इसका उल्लेख किया है। —कैट्. कैट्. १।३४३

पूजनप्रयोगसंग्रह

लि०—(१) इसमें उपासक के प्रातःकृत्यादि दैनिक कृत्यों के साथ देवी-पूजा प्रयोग संगृहीत है। —ए० बं० ६३११

(२) श्लोक सं० ५६०, अपूर्ण। —र० मं० ४८८०

(३) श्लोक सं० ३९५, पूर्ण, शिव रचित। लिपिकाल १७५१ वि०।

—सं० वि० २५२८३

पूजाकाण्ड

लि०— —कैट्. कैट्. १।३४३

पूजादिविधि

लि०—श्लोक सं० २३००। —अ० बं० ९९१२

पूजादीपिका

लि०—गोस्वामी सर्वेश्वरदेव रचित, श्लोक सं० ७३८, अपूर्ण।

—सं० वि० २५१०१

पूजान्यासविधि

लि०— —कैट्. कैट्. १।३४३

पूजापद्धति

लि०—(१) इसमें आरंभ में उपासक के करणीय प्रातःकाल आदि के दैनिक कृत्य प्रतिपादित हैं। तदनन्तर भगवान् कृष्ण की तान्त्रिक पूजा का विवरण दिया गया है।

—ए० बं० ६४९६

(२) (क) नवानन्दनाथ विरचित। श्लोक सं० ४५०।

(ख) श्लोक सं० ४००, अपूर्ण।

—अ० ब० (क) १०७००, (ख) १२८२६

(३) (क) श्लोक सं० ५०, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० १८०, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० ४६४, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० ६३, पूर्ण। (ङ) श्लोक सं० ५१०, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४०७१, (ख) २५८००, (ग) २५९६८, (घ) २६४०७, (ङ) २६५८७

(४) दे०, तान्त्रिकपूजापद्धति। —कैट्. कैट्. १।३४३

पूजापुष्करिणी

लि०—चन्द्रशेखर शर्मा विरचित यह ग्रन्थ ७ वीचियों (अध्यायों) में पूर्ण है। इसमें तान्त्रिक उपासक की दैनिक चर्या वर्णित है।

पूजाप्रदीप (१)

लि०—ठक्कुर देवनाथ—पिता गोविन्द ठक्कुर कृत।

—कैट्. कैट्. १।३४३, २।७६

उ०—शाक्तानन्दतरंगिणी, रघुनन्दन कृत एकादशीतत्त्व तथा आगमतत्त्वविलास में।

पूजाप्रदीप (२)

उ०—आगमकल्पलता तथा शारदातिलकटीका राघवभट्टी में।

पूजाप्रयोग

लि०—पूर्ण। —सं० वि० २६३२८

पूजाप्रयोगसंग्रह

लि०—श्लोक सं० ३९०, अपूर्ण, लिपि-काल सं० १७५२ वि०।

—सं० वि० २३९९२

पूजारत्न

लि०—(१) सत्यानन्द कृत (क) पत्रे २१२। (ख) पत्रे ६, प्रथम मयूख मात्र।

—रा० पु० (क) ५६३८, (ख) ५७९५(१)

(२) बुद्धिराज सम्राट् कृत, इसमें त्रिपुरसुन्दरी की पूजा प्रतिपादित है।

—कैट् कैट्. १।३४३

उ०—सामराज दीक्षित कृत। काव्यमाला नवम गुच्छक पृ० १४० में इसका उल्लेख है। —कैट्. कैट्. २।७६

पूजारत्नाकर

लि०—(१) मिथिला नरेश के सान्धि-विग्रहिक (सन्धि और विग्रह के) मन्त्री चण्डेश्वर ठक्कुर विरचित, श्लोक सं० २७३२। इसमें वर्णित विषय—साधारणतः देवपूजा-विधि, पूजा के देश आदि का विचार, मण्डल, बलिदान आदि की विधि, पुष्प चुनने की विधि, वेदी और मण्डप का निर्माण, नैवेद्य का निर्माण, सूर्यपूजा अवश्य करणीय है, सूर्यपूजा का फल, पूजाधिकारी के नियम आदि, सूर्यमन्दिर का परिष्कार करने का फल, ब्रह्मस्नान, पञ्चगव्य बनाने की विधि, स्नान कराने और पूजा करने का फल, सूर्य के लिए अर्घ्यदान की विधि, पञ्चोपचार पूजाविधि, चन्दन, पुष्प आदि का विचार, धूप, दीप, नैवेद्य, वस्त्र, अलङ्कार आदि का निवेदन, सूर्य की नित्य पूजा, विभिन्न सूर्यमूर्तियों में सूर्य की पूजाविधि, सूर्यरथयात्रा, सौर धर्म कथन, शिवपूजा विधि विविध मूर्तियों पर, रुद्राक्षधारण, पञ्चोपचार शिवपूजा, घृताभिषेक महास्नानादि की विधि, पुष्पादि का विचार, शिवपूजा के वार, विष्णुपूजा, दुर्गा-पूजा, कुमारी-पूजा आदि-आदि। —रा० ला० २३८८

(२) चण्डेश्वर विरचित। —कैट्. कैट्. पे. ३४३

पूजारहस्य

उ०—महार्थमञ्जरी परिमल में।

पूजाविधान

लि०—श्लोक सं० ३२, अपूर्ण। —सं० वि० २६६४१

पूजाविधि या सपर्याविधि

लि०—(१) रामचन्द्र विरचित, श्लोक सं० ३००।

—अ० ब० ८०५३

(२) श्लोक सं० १५१, पूर्ण। —सं० वि० २४८९९

(३) कालीपूजा से सम्बन्ध रखनेवाली विधियाँ इसमें वर्णित हैं। इसका नामान्तर 'तिरस्करिणीविधि' दिया हुआ है। —ए० बं० ६३१७

(४) —ने० द० १।११७६ (ग)

(५) श्लोक सं० ४४०। —डे० का० २३४ (१८८३-८४ ई०)

पूतनाविधान

लि०—(१) कमलाकर के शान्तिरत्न में जो विषय वर्णित है प्रायः वही इसमें प्रतिपादित है। इसमें पूतना, जो बालकों में बहुत उत्पात करती है, के झाड़-फूंक का वर्णन है।

—ए० बं० ६५६३

(२) —कैट्. कैट्. १।३४३, २।७६

पूर्णदीक्षाक्रम

लि०—श्लोक सं० १००। —अ० ब० ८३७८

पूर्णदीक्षापद्धति

लि०—परानन्दतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ४००, अपूर्ण।

—अ० ब० १०६६९

पूर्णपद्धति

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

पूर्णयाग

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा आगमकल्पलता में।

पूर्णानन्दचक्रनिरूपणटीका

लि०—चन्द्रद्वीपान्तर्गत वत्सपुर ग्रामवासी रामवल्लभ शर्मा विरचित, श्लोक सं० ७५०। यह पूर्णानन्द विरचित मूलाधार प्रभृति छह चक्रों का निरूपण करनेवाले चक्र-निरूपण या अन्य नाम के ग्रन्थ की व्याख्या है। ग्रन्थकार ने लिखा है—

पूर्णानन्दोदितानन्दनिर्वाहाङ्कुरकारिकाम् ।
विशदां कुरुते तूर्णं द्विजः श्रीरामवल्लभः ॥ —रा० ला० ४५२

पूर्णाभिषेक

लि०—(१) परानन्दतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक सं० २५०, अपूर्ण।

—अ० ब० ८२९६

(२) —कैट्. कैट्. १।३४३

पूर्णाभिषेकदीपिका

लि०—अर्धकालीय वंशीय रामनाथ-पुत्र आनन्दनाथ विरचित, लगभग २००० श्लोकात्मक। कलिकाल में आगमोक्तपूजा का विधान, चार आश्रमों के कुलाचार का पूर्णा-

भिषेक, विभिन्न प्रकार के अभिषेक, केवल अभिषेक, चक्रानुष्ठानाभिषेक, गुरुनिर्णय, कुल-धर्म-प्रशंसा, कौलिक-लक्षण, कौलिक ज्ञान की प्रशंसा, कौलपूजा का फल, गृहस्थ कौल का लक्षण, वीर का लक्षण, दिव्य वीर पूजा का कालनिर्णय, योगानुष्ठान, कामकलानिर्णय, तत्त्व-ज्ञान निर्णय, कौलों के कम्बल आदि आसनों का वर्णन, कौलयोगिरहस्य, माला-निर्णय, कलि में पश्वाचार का अभाव, दिव्य और वीरों के पुरश्चरण का विधान आदि विषय इसमें वर्णित हैं। —नो० सं० ३।१६०

पूर्णाभिषेकपटल

लि०—उत्तरतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० १५९।

—अ० ब० १६९३

पूर्णाभिषेकपद्धति

लि०—श्लोक सं० १५०। —अ० ब० ५७०४

(२) (क) अनन्तभट्ट विरचित तथा मुरारिभट्ट विरचित दोनों पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ७७७।।, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० २२४, पूर्ण। (घ) श्लोक सं० १४०, पूर्ण। कामाख्यातन्त्रान्तर्गत ७ म पटलस्थ शावताभिषेक पद्धति भी इसमें संमिलित है। (ङ) श्लोक सं० ६५, अपूर्ण। (च) श्लोक सं० २३०, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४८१४, (ख) २४८८०, (ग) २४८८१, (घ) २५७३१, (ङ) २६११९, (च) २६६२७

(३) नामान्तर—उपदेश दीक्षा विधि, चैतन्यगिरि अवधूत विरचित। यह शिष्य की तान्त्रिक दीक्षा पर लिखा गया है। —कैट्. कैट्. २।७७

(४) आनन्दनाथ विरचित। —कैट्. कैट्. ३।७३

(५) —कैट्. कैट्. १।३४३

पूर्णाभिषेकप्रयोग

लि०—श्लोक सं० ४४, अपूर्ण। —सं० वि० २६०९३

पूर्णाभिषेकविधि

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ८४, अपूर्ण। (ख) श्लोक संख्या २००।

—अ० ब० (क) १३४५९, (ख) १३६५५

(२) श्लोक सं० ३०२, अपूर्ण। —र० मं० १०६०

(३) (क) श्लोक सं० २४०, पूर्ण। (ख) तन्त्रराज में उक्त, श्लोक सं० २५४, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४२८१, (ख) २५४३१

(४)

—कैट्. कैट्. २।७७

पूर्णाभिषेकषडाम्नायमन्त्रादि

लि०—स्फुट पन्ने। इनमें नृसिंहसुन्दरीमहामन्त्र, दशमहाविद्या, दशावतारों के दश-श्लोक, शिववलिविधि, नाभि-विद्योद्धार तथा तन्त्रोक्त हवनपद्धति लिखी है।

—रा० पु० ५१९५

पूर्णाभिषेकसंस्कारविधि

लि०—पूर्ण।

—सं० वि० २५७६४

पूर्णाभिषेकामृततन्त्र

लि०—दशमहाविद्याओं की उत्पत्ति नाम का ११वाँ पटल, पूर्ण।

—वं० प० १४१६

पूर्वतन्त्र

उ०—इसका उल्लेख किया गया है। —Oxford (आक्सफोर्ड) १०९

पूर्वपञ्जिका

अभिनवगुप्त विरचित

उ०—इसका इ० आ० (पे० ८४०) में उल्लेख किया गया है।

—कैट्. कैट्. २।७७

पूर्वपाक्षिकी

उ०—मालिनीविजय में।

पूर्वशास्त्र

मालिनीविजय का नामान्तर। मालिनीविजय त्रिकशास्त्र का प्रधान ग्रन्थ है।
उ०—इसका क्षेमराज ने उल्लेख किया है। —कैट्. कैट्. १।३४५

पूर्वाम्नाय

लि०—श्लोक सं० ३०, अपूर्ण। —सं० वि० २४३५४

पूर्वाम्नायतन्त्र

लि०—श्रीरत्नदेव कृत यह छोटा-सा तान्त्रिक संग्रहग्रन्थ है। इसके नाम से प्रकट होता है कि यह संग्रह पूर्वाम्नाय ग्रन्थों से संगृहीत किया गया है। इसमें २८ तान्त्रिक क्रियाओं की प्रयोगविधि वर्णित है।

प्रतिपाद्य विषय—पाँच प्रणव न्यास, दक्षकरन्यास, अष्टाङ्गन्यास, शब्दराशिन्यास, त्रिविद्याङ्गन्यास, षडङ्गन्यास, द्वादश अङ्गन्यास, जलस्मरण, भूतशुद्धि, गुरुमण्डलपूजा, ध्यान, पाँच पीठ, पाँच अवधूत आदि, तीन भोगविद्याएँ, गायत्री, रत्नदेवार्चन, ध्यान, तीन गुहाएँ आदि। —ने० द० १।१०९

पूर्वाम्नायषडाम्नाय-विचार

लि०—श्लोक सं० १७६, अपूर्ण। —सं० वि० २५३५५

पूर्वाम्नायादि

लि०—श्लोक सं० ३५०। —अ० ब० ८४९४

पैङ्गलतन्त्र

उ०—सौभाग्यभास्कर तथा आगमतत्त्वविलास में।

पौष्करसंहिता

लि०—(१) नारदपञ्चरात्रान्तर्गत, इसमें ४३ अध्याय हैं। यह नारदपञ्चरात्रान्तर्गत संहिताओं में ४र्थ संहिता है। विशेषविवरण द्रष्टव्य— —इ० आ० २५३१

(२) नारदपञ्चरात्र का एक भाग।

—कैट्. कैट्. १।३४६, २।७४

पौष्करा

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

पौष्करागम या पौष्करतन्त्र अथवा पौष्कर

लि०—(१) यह शैवतन्त्र चार पादों में विभक्त है—१. ज्ञानपाद, २. योगपाद, ३. क्रियापाद और ४. चर्यापाद। ज्ञानपाद में ८ पटल हैं। निम्नलिखित विषय उनमें वर्णित हैं—प्रतिपदार्थनिर्णय, बिन्दुपटल, मायापटल, पशुपदार्थ, कालादिपञ्चक, पुंस्तत्त्व, प्रमाणाधिकार तथा तन्त्रोत्पत्ति। योगपाद और क्रियापाद का ही दूसरा नाम सर्वज्ञानोत्तर है एवं चर्यापाद का नाम मतंगपारमेश्वरतन्त्र है। —इ० आ० २६०६

(२) पौष्कर (ज्ञानपाद) श्लोक सं० १०० । २ य और ३ य पटल मात्र ।

—अ० ब० ६८२७ (ग)

(३) पौष्कर—शैवागम से गृहीत इस पर उमापति शैवाचार्य की टीका है ।

—कैट्. कैट्. १।३४६

उ०—स्पन्दप्रदीपिका, तारारहस्यवृत्ति, शारदातिलक-टीका राघवभट्टी, शतरत्न-समुच्चय, तन्त्रालोक तथा नरेश्वरपरीक्षा में ।

प्रकटयोगिनी

उ०—पुरश्चर्यार्णव में ।

प्रकाशोदय

लि०—शिवानन्द विरचित । यह तन्त्रों में उपदिष्ट मुख्य-मुख्य सिद्धान्तों का संग्रह-ग्रन्थ है ।

—बी० कै० १३०५

प्रकीर्णांशतन्त्र

लि०—ईश्वरप्रोक्त, पत्रे २४, —जं० का० १०५१

प्रचण्डचण्डिकासहस्रनामस्तोत्र

लि०—विश्वसारतन्त्रान्तर्गत हर-गौरी संवाद रूप । इसमें प्रचण्डचण्डिका (दुर्गाभेद) का सहस्रनामस्तव है ।

—बी० कै० १३०४

प्रचण्डभैरव

उ०—जन्ममरणविचार में ।

प्रज्ञालहरीस्तोत्र

लि०—श्लोक सं० २२०, इसमें देवी की स्तुति प्रतिपादित है ।

—ट्रि० कै० ११०५

प्रणवकल्प

लि०—(१) श्लोक सं० २७०, पूर्ण, स्कन्दपुराणान्तर्गत । इसमें प्रणवस्तवराज, प्रणवकवच, प्रणवपञ्जर, प्रणवहृदय, प्रणवानुस्मृति, ओङ्काराक्षरमालिकामन्त्र, प्रणव-मालामन्त्र, प्रणवगीता, प्रणव के अष्टोत्तरशत नाम, प्रणव के षोड़श नाम तथा यतियों का मानसिक स्नान आदि विषय वर्णित हैं । यह ग्रन्थ प्रणव या ॐ की उपासना-विधि से सम्बन्ध रखता है ।

—ए० बं० ६५१९

(२) स्कन्दपुराणान्तर्गत सूत-शौनक संवाद रूप यह ग्रन्थ प्रणव की महिमा का विस्तार से प्रतिपादन करता है। यह ५ अध्यायों में पूर्ण है। इस ग्रन्थ की श्लोक सं० ६४२ कही गयी है। —रा० ला० २२९०

(३) सव्याख्य, व्याख्या का नाम प्रकाश, श्लोक सं० २००० ।

—अ० ब० ६६९० (क)

(४) (क) वैष्णवसंहिता (स्कन्दपुराण) के अन्तर्गत, श्लोक सं० ४६०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ९८, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ३९४। इसमें अङ्कस्तुति, प्रणवस्तवराज-कवच-पञ्जर-हृदय-अनुस्मृति, ओंकाराक्षरमातृकामन्त्र, प्रणवगीता, अष्टोत्तरशतनाम, षोडशनाम इत्यादि विषय वर्णित हैं ए० बं० ६५१९ की तरह। (घ) श्लोक सं० ८७॥, अपूर्ण। इसमें अङ्गस्तुति, प्रणवस्तवराज, प्रणवकवच, प्रणवपञ्जर तथा प्रणवहृदय है। (ङ) श्लोक सं० ३२०, पूर्ण। इसमें प्रणव माला मन्त्र आदि ९ विषय है।

—सं. वि. (क) २३०३१, (ख) २४३७०, (ग) २४७८७, (घ) २५००९, (ङ) २५२४२

(५) (क) वैष्णवसंहिता (स्कन्दपुराण) से गृहीत। गङ्गाधर सरस्वती कृत प्रकाश टीका सहित। —कैट्. कैट्. १।३४८

(ख) (।) वैष्णवसंहिता (स्कन्दपुराण) से गृहीत।

(।।) शौनक कृत, हेमाद्रि कृत टीका सहित —कैट्. कैट्. २।७७

प्रणवकल्पप्रकाश

लि०—(क) गङ्गाधरेन्द्र सरस्वती भिक्षु विरचित। श्लोक सं० १०९७, अपूर्ण। इसमें प्रणवहृदय सटीक, प्रणव के अष्टोत्तरशत नाम, प्रणव के षोडश नाम, प्रणवपञ्जर, प्रणव-मालामन्त्र, प्रणवगायत्री सटीक, प्रणवस्तवराज सटीक, प्रणवाक्षरमालामन्त्र, प्रणवानुस्मृति तथा प्रणवसहस्रनाम ये विषय प्रतिपादित हैं। (ख) श्लोक सं० २७७, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २६६८२, (ख) २६६८३

प्रणवजपविधि

लि०—श्लोक सं० ५२, अपूर्ण। —सं० वि० २४५३७

प्रणववर्णन

लि०—श्लोक सं० १९, अपूर्ण। —सं० वि० २५९७८

प्रणववासनाप्रकार

लि०—श्लोक सं० ७५, अपूर्ण। —सं० वि० २४२७८

प्रणवविचार

लि०—श्लोक सं० ५६, पूर्ण। —सं० वि० २४४७३

प्रणवविधान

लि०—श्लोक सं० ९४, पूर्ण। —सं० वि० २४२३६

प्रणवविधि

लि०—(क) श्लोक सं० १६, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३०, अपूर्ण।
—सं० वि० (क) २४३८१, (ख) २६६७७

प्रतितन्त्रदर्पण

लि०— —कैट्. कैट्. १।३४९

प्रतिष्ठाकौमुदी

लि०—(१) श्लोक सं० १५००, अपूर्ण। —अ०ब० १०९५६ (ख)
(२) शङ्कर विरचित। —कैट्. कैट्. १।३५०

प्रतिष्ठाकौस्तुभ

लि०—(१) शेष शर्मा द्वारा विरचित, श्लोक सं० ४००।
—अ० ब० ८७५७
(२) —कैट्. कैट्. १।३५०

प्रतिष्ठातन्त्र (१)

लि०—(१) निःश्वासमहातन्त्र के अन्तर्गत, उमा-महेश्वर संवाद रूप, ७० पटलों में पूर्ण। इसमें प्रतिपादित विषय है—१. प्रश्न-पटल, २. स्थापक तथा स्थपति के लक्षण, ३. लिङ्गयोनि-पटल, ४. रत्नज लिङ्ग का लक्षण, ५. पार्थिव लिङ्ग का लक्षण, ६. वनप्रवेश-पटल, ७. वृक्षलक्षण-पटल, ८. पाषाणलक्षण-पटल, ९. वनाधिवास-पटल, १०. वृक्ष-ग्रहण-पटल इत्यादि ७० पटलों के विषय पृथक्-पृथक् प्रतिपादित हैं। लिंगादि-निर्माण, विविध देव-प्रतिमा लक्षण, हिताहित लक्षण, जीर्णोद्धार-प्रतिष्ठा, प्रासाद तथा मन्दिर-निर्माण आदि विषय विस्तारपूर्वक इसमें वर्णित हैं। —ने० द० १।८४, २।१२

(२) (क) श्लोक सं० ४५० (केवल ९ पटल)। (ख) श्लोक सं० २१००, (दोलारोपण पर्यन्त)। (ग) श्लोक सं० २०००, अपूर्ण।

—अ० व० (क) १०२८३, (ख) ६७४३, (क), (ग) ६८३२ (क)

(४) दे०, मयमत। —कैट्. कैट्. १।३५०

प्रतिष्ठातन्त्र (२)

लि०—(१) सुप्रभेदान्तर्गत, महेश्वर-महागणपति संवाद रूप। श्लोक सं० १३२०। इसमें मुख्य रूप से विमान, स्थापनविधि प्रतिपादित है। रसदीक्षाविधान, अष्टमीभजन-विधि, क्षेत्रपालार्चनविधि, योग पादादि नाड़ीचक्र आदि और भी विविध विषय इसमें प्रतिपादित हैं। —ट्रि० कै० ९८६

(२) आदिपुराण के अन्तर्गत देवोद्भव, श्लोक सं० १३७००, पूर्ण। इसमें शिवभाग, विष्णुभाग, शिवविष्णुभाग, ब्रह्मभाग, विघ्नभाग, शास्तृभाग, स्कन्दभाग, रविभाग, कन्य-काभाग, मातृभाग, शेषभाग, पूजाभाग यों १२भाग हैं तथा प्रत्येक भाग में १२ आश्वास हैं। कुल १४४ आश्वास हैं। तन्त्रों की उत्पत्ति, तन्त्र-लक्षण, तन्त्रों की संख्या, तन्त्रों की शिष्य-संख्या, उनके नाम आदि बहुत-से अन्य विषय भी उपर्युक्त विषयों के साथ इसमें वर्णित हैं। —ट्रि० कै० ९८७

प्रतिष्ठातिलक

लि०—(१) श्लोक सं० ५००। —अ० ब० ११०९२

(२) ब्रह्मसूरि विरचित। —कैट्. कैट्. २।७८

प्रतिष्ठापद्धति या आचार्यचन्द्रिका

लि०—(१) त्रिविक्रम सूरि विरचित, (क) श्लोक सं० २०००। (ख) श्लोक सं० २०००। (ग) श्लोक सं० १८५०, अपूर्ण।

—अ० व० (क) २२७३, (ख) ११०८४, (ग) १०२८३ (ख)

(२) श्लोक सं० ६००, विविध आगमों के आधार पर निर्मित।

—अ० ब० ६८३८

(३) (क) (१) त्रिविक्रमभट्ट विरचित।

(२) शङ्करभट्ट विरचित। —कैट्. कैट्. २।७८

(ख) (१) अनन्तभट्ट या बापूभट्ट विरचित।

(२) त्रिविक्रमभट्ट विरचित।

(३) नीलकण्ठभट्ट विरचित।

(४) महेश्वरभट्ट विरचित।

(५) राधाकृष्ण विरचित। —कैट्.कैट्. १।३५०

(ग) त्रिविक्रमभट्ट विरचित। —कैट्. कैट्. ३।७४

प्रतिष्ठाप्रयोग

लि०—कमलाकर कृत, श्लोक सं० १८०। —अ० ब० ५०३५

प्रतिष्ठालक्षणसारसमुच्चय

लि०—ईशानशिव-शिष्य वैरोचनि विरचित। श्लोक सं० ३५००, ३२ पटलों में पूर्ण। —ने० द० २।३५१

प्रतिष्ठाविधि

लि०—श्लोक सं० २२००। —अ० ब० १०३३०

प्रतिष्ठाविधिदर्पण

लि०—नरसिंह यज्वा द्वारा विरचित, श्लोक सं० १६००। —अ० ब० ९८४८ (क)

प्रतिष्ठासारसंग्रह

लि०—(१) राघ संगृहीत। इसमें देवता-प्रतिष्ठाविधि प्रतिपादित है। अन्तिम पुष्पिका वाक्य से प्रतीत होता है कि कुमारी-पूजाविधि भी इसमें वर्णित है। —ने० द० (पे. ७८) १।१६३३ (ठ)

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव, पुरश्चर्यार्णव, आगमकल्पलता तथा ललितार्चनचन्द्रिका में।

हेमाद्रि, देवनाथ, विट्ठल दीक्षित तथा नीलकण्ठ ने भी इसका उल्लेख किया है।

प्रतृचप्रयोग

लि०—श्लोक सं० १२०, पूर्ण। —सं० वि० २५६४१

प्रत्यक्षफलप्रयोग

लि०—शाबरतन्त्रीय, श्लोक सं० २१, अपूर्ण। —सं० वि० २४७८१

प्रत्यङ्गिरा

लि०— —कैट्. कैट्. १।३५१

प्रत्यङ्गिराकल्प

लि०—(१) (क) श्लोक सं० २००, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ६००। (ग) श्लोक सं० १०००। (घ) श्लोक सं० २५०। (ङ) श्लोक सं० १२५ (इसमें केवल मन्त्र और स्तोत्र हैं)। (च) श्लोक सं० २५०।

—अ० ब० (क) ६०४९, (ख) १०६८७, (ग) १०७३३, (घ) १०९४१, (ङ) ५६७८, (च) ५६

(२) (क) श्लोक सं० ४०, पूर्ण, पिप्पलादशाखीय। (ख) श्लोक सं० ११०, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २४६८८, (ख) २५०७६

(३) —कैट्.कैट्. १।३५१

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

प्रत्यङ्गिरातत्त्व

लि०—कृष्णनाथ कृत। —कैट्. कैट्. १।३५१

प्रत्यङ्गिरापञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत उमा-महेश्वर संवाद रूप। इसमें १ प्रत्यङ्गिरा-पूजा-पद्धति, २. सर्वार्थसाधनकवच, ३. प्रत्यङ्गिरासहस्रनाम तथा ४. प्रत्यङ्गिरास्तोत्र वर्णित हैं। —ए० बं० ६४३०

(२) जगन्मङ्गल नामक सर्वरक्षाकर प्रत्यङ्गिराकवच। —ए० बं० ६७१५

(३) प्रत्यङ्गिराकवचादि, श्लोक सं० १००। —अ० ब० १०१५१

(४) प्रत्यङ्गिरापञ्चाङ्ग, (क) श्लोक सं० ५८६, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ६६, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ७५६, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २३८८८, (ख) २४०१५, (ग) २४५१२

(५) रुद्रयामलान्तर्गत। —कैट्. कैट्. १।३५१

प्रत्यङ्गिरापटल

लि०—(क) रुद्रयामल के अन्तर्गत, श्लोक सं० १०१, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३८।

—सं० वि० (क) २४६४४, (ख) २४६५३

प्रत्यङ्गिरापद्धति

लि०—(क) श्लोक सं० ३६०। (ख) श्लोक सं० १०००, अपूर्ण।
—अ० ब० (क) ५७३५, (ख) ५५६२

प्रत्यङ्गिरापूजामन्त्रोद्धारकवच

लि०—पूर्ण। —बं० प० २२५

प्रत्यङ्गिराप्रयोग

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ६०, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ४८, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ४४, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० ७०, पूर्ण। (ङ) चण्डोग्रशूलपाणि विरचित, श्लोक सं० ७०, पूर्ण। (च) श्लोक सं० १५४, पूर्ण। (छ) श्लोक सं० १४०, पूर्ण। कुब्जिकातन्त्र के अन्तर्गत।

—सं० वि० (क) २४०९९, (ख) २४१००, (ग) २४४४५, (घ) २४६२९, (ङ) २५३०६, (च) २५३०९, (छ) २५३१५

(२) —कैट्. कैट्. १।३५१

प्रत्यङ्गिरामन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० १५, अपूर्ण। —र० मं० १११०

(२) (क) श्लोक सं० ५१, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ७५ (प्रतङ्गिरास्तोत्र के साथ), अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० १३॥, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४४७७, (ख) २५७००, (ग) २६१९८

(३) —कैट्. कैट्. १।३५१

प्रत्यङ्गिरामन्त्र और पूजा

लि०—श्लोक सं० ७०। इसमें कृष्णमन्त्र, इन्द्राक्षीमन्त्र, विद्याषोडशाक्षरीमालामन्त्र, पञ्चमुखहनुमत्कवच तथा श्रीरुद्रचक्र का प्रतिपादन है। —अ० ब० १३३८२ (क)

प्रत्यङ्गिरामन्त्रप्रयोग

लि०—(१) पैप्पलादशाखीय, श्लोक सं० ४५०। —अ० ब० ५६५२

(२) पिप्पलादशाखोक्त, श्लोक सं० ६८, पूर्ण। —सं० वि० २६३६१

प्रत्यङ्गिरामन्त्रविधान

लि०—श्लोक सं० ९०, अपूर्ण। —सं० वि० २४४७६

प्रत्यङ्गिरामन्त्रोद्धार

लि०—(१) पूर्ण। —बं० प० १५९९

(२) श्लोक सं० १२१, पूर्ण, कुब्जिकातन्त्रान्तर्गत।

—सं० वि० २४७४२

प्रत्यङ्गिरायन्त्रकल्प

लि०—लोक सं० ३००। —अ० ब० ५६४९

प्रत्यङ्गिरायन्त्रविधान

लि०— —कैट्. कैट्. २।७८

प्रत्यङ्गिरायन्त्रोद्धार

लि०—श्लोक सं० १५०। —अ० ब० ११६४७ (क)

प्रत्यङ्गिराविधान

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ४००। (ख) श्लोक सं० २५०।

—अ० ब० (क) ५६७०, (ख) ५६०८

(२) (क) श्लोक सं० ५५, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० १२०, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २५०८२, (ख) २५२८०

प्रत्यङ्गिराविधि

लि०—श्लोक सं० ४०७, अपूर्ण। —सं० वि० २५३५९

प्रत्यङ्गिराशास्त्र

लि०— —ने० द० २ पे० २४४

प्रत्यङ्गिरासिद्धिमन्त्रोद्धार

लि०—(१) श्लोक सं० १०१।

—डे० का० २३५ (१८८३–८४ ई०)

(२) (क) चण्डोग्रशूलपाणि विरचित, श्लोक सं० १११, पूर्ण।

(ख) श्लोक सं० ७५, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४५५८, (ख) २४७३०

प्रत्यङ्गिरासूक्त

लि०—कृष्णनाथ विरचित व्याख्या सहित। —कैट्. कैट्. १।३५१, २।७८

प्रत्यङ्गिरासूक्तमन्त्र

लि०—पन्ने १९। —रा० पु० ७६४४

प्रत्यङ्गिरासूक्तमन्त्रजप

लि०—श्लोक सं० ३०। —अ० ब० ११७१८

प्रत्यङ्गिरासूक्तमन्त्रप्रयोग

लि०—पिप्पलादशाखीय, श्लोक सं० ९०, पूर्ण। —सं० वि० २५८४६

प्रत्यङ्गिरास्तोत्र

लि०—(१) महातन्त्रराजान्तर्गत यह स्तोत्र मालामन्त्र की शैली का है। पहले इसमें प्रस्तावना है तथा अन्त में फलश्रुति। —ए० बं० ६७१२–१४

(२) शत्रुनाशन, रोगनिवृत्ति, मारण आदि कई विषयों के लिए इसका उपयोग विधिभेद से वर्णित है। —नो० सं० ४।१८८

(३) विश्वसारोद्धारान्तर्गत, चण्डोग्रशूलपाणि विरचित, श्लोक सं० ९५, क्षत-विक्षत।

(४) (क) श्लोक सं० १०८, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० २३८, पूर्ण। यह (क) से भिन्न है। —र० मं० (क) ५०३८, (ख) १०५२

(५) प्रत्यङ्गिरामन्त्र के साथ संमिलित, अपूर्ण। —सं० वि० २५७००

(६) —कैट्. कैट्. १।३५१, २।७४

प्रत्यभिज्ञा

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

प्रत्यभिज्ञासूत्र

लि०—दे०, ईश्वरप्रत्यभिज्ञासूत्र। —कैट्. कैट्. १।३५१

प्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी (बृहती वृत्ति)

लि०—(क) आचार्य उत्पल–अभिनव गुप्त कृत, पूर्ण।

(ख) ,, ,, (लघुवृत्ति) ,,

(ग) ,, अपूर्ण

—डे० का० (क) ४६४, (ख) ४६५, (ग) ४६६ (१८७५।७६ ई०)

प्रत्यभिज्ञाहृदय

लि०—क्षेमराज विरचित, पूर्ण।

—डे० का० ४६७, (१८७५-७६ ई०)

प्रथमतन्त्र

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा पुरश्चर्यार्णव में।

प्रदोषपूजा

लि०—श्लोक सं० २००। —अ० ब० १३६४४

प्रदोषपूजाविधि

लि०— —कैट्. कैट्. १।३५१

प्रद्योत

लि०—प्रयोगमञ्जरी की व्याख्या त्रिविक्रम विरचित, (क) श्लोक सं० ४१०० पटल २१ वें तक, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३७००। ग्रन्थकार ने लिखा है—

त्रिविक्रमोऽहं मञ्जर्या व्याख्यां कुर्वे यथाश्रुतम्।
तिरोहितार्थवाक्यानां पदानां वा यथामति॥

इसमें रणचर्या, ज्ञानक्रिया, योगानुष्ठान, फलसिद्धि के उपाय, प्रतिष्ठा विधि आदि विषय प्रतिपादित हैं। —ट्रि० कै० ९९४

प्रपञ्चसार (सटीक)

लि०—(१) श्रीशङ्कराचार्य विरचित। तान्त्रिक अर्चना-पूजा के विषय पर, ३६ पटलों में पूर्ण।

—इ० आ० २५६१

(२) इस पर प्रपञ्चसारविवरण तथा प्रपञ्चसारसम्बन्धदीपिका—नामक दो टीकाएँ हैं। १म के कर्ता ज्ञानस्वरूप और २य के कर्त्ता उम्बबोध (उत्तमबोध?) हैं।

—ए० बं० ६१७२ से ६१७६ तक

(३) (क) श्लोक सं० २००० (मध्य और अन्त में खण्डित)। (ख) श्लोक सं० २००० (२४ वें पटल तक)। (ग) श्लोक सं० ३००० (पहला और २रा पृष्ठ नहीं है)। (घ) श्लोक सं० २५०० (३२ वें पटल तक)।

—अ० ब० (क) १०६५२, (ख) ५१४५, (ग) ८०१७, (घ) ११३०८७

(४) इसमें ३३ पटल हैं। —ने० द० १६३३ (ढ)

(५) यह ३६ पटलों में पूर्ण है। इसमें मूलक्रिया आदि की प्रकृति का निरूपण शिर, पाद आदि छह अङ्गों से पूर्ण जीव की बाह्य और आभ्यन्तर वृत्तियों का निरूपण, वर्णो के बीजस्वरूप का निरूपण, दीक्षाविधि, दीक्षा-ग्रहण के नियम, अक्षर-देवताओं के नाम निर्देशपूर्वक प्रवर आदि का कथन, प्राणाग्निहोत्रविधान इत्यादि विविध विषयों का वर्णन है। —नो० सं० २।१२९-३०

(६) शङ्कराचार्य विरचित, श्लोक सं० ३५३७, पूर्ण। —र० मं० ४९३१

(७) शङ्कराचार्य विरचित, पटल सं० ३३ तथा श्लोक सं० १५००। इस पर प्रपञ्चसार संग्रह नाम की टीका है। उसकी श्लोक सं० १६००० है—तं० म० १२००८

(८) (क) शङ्कराचार्य विरचित, श्लोक सं० ३३०८, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १०७९, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० २९१६, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २३९८०, (ख) २४२५५, (ग) २६६९५

(९) यह बृहत् और लघु भेद से दो प्रकार का है। इस पर ३ टीकाएँ है—(१) गीर्वाणयोगीन्द्र कृत, (२) ज्ञानस्वरूप कृत, (३) कर्ता का नाम अज्ञात। इसका देवनाथ ने रा० ला० २०१० (तन्त्रकौमुदी) में उल्लेख किया है। —कैट्. कैट्. १।३५२

उ०—सौभाग्यभास्कर, तन्त्रसार, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमकल्पलता, ललितार्चनचन्द्रिका, आह्निकतत्त्व, आगमतत्त्वविलास तथा दान यूखम में।

प्रपञ्चसार की टीकाएं

लि०—(१) प्रपञ्चसारसम्बन्धदीपिका उत्तमप्रकाश-शिष्य उत्तमबोध कृत।

—नो० सं० ४।१६४

(२) प्रपञ्चसार-व्याख्या—विज्ञानोद्योतिनी, श्लोक सं० ६८००। यह शङ्कराचार्य विरचित सर्वागमसारभूत प्रपञ्चसार की व्याख्या ३० पटलों तक है।

—ट्रि० कै० ९८० (ख)

(३) प्रपञ्चसारविवरण, विज्ञानेश्वर विरचित।

—ट्रि० कै० ९८० (ग)

(४) (क) प्रपञ्चसारविवरण, पद्मपादाचार्य विरचित, श्लोक सं० २९००।

(ख) ,, ,, ,, ,,

(ग) ,, ज्ञानस्वरूप कृत श्लोक सं. २४००।

(घ) प्रपञ्चसारविवरण, नारायण कृत। श्लोक सं० ४४००।
(ङ) ,, देवदेव कृत। ,, ७०००।
(केवल २५ वें पटल तक)।

—अ० व० (क) १२५०१, (ख) ३२७७, (ग) ३२७६, (घ) ३३०६, (ङ) १०८३९

(५) प्रपञ्चसार-व्याख्या तत्त्वप्रदीपिका, नागस्वामी कृत, श्लोक सं० १४००।

—ट्रि० कैं० १०७२७

(६) (क) प्रपञ्चसारदीपिका, एकादश पटलमात्र पर, अपूर्ण, श्लोक सं० ४५।
(ख) प्रपञ्चसारटीका, सरस्वतीतीर्थ कृत, श्लोक सं० २८९४, अपूर्ण।
(ग) प्रपञ्चसारटीका, जगद्गुरु (?) कृत

—सं० वि० (क) २४३२४, (ख) २५८४७, (ग) २६१९७

(७) प्रपञ्चसारविवरण, पद्मपादाचार्य विरचित, श्लोक सं० २७७२, अपूर्ण।

—सं० वि० २५२६२

(८) प्रपञ्चसारसंवन्धदीपिका, श्लोक सं० ५२१७ (२ रे से ३२ वें पटल तक) अपूर्ण। —सं० वि० २५६४३

(९) प्रपञ्चसारविवरण, ज्ञानस्वरूप विरचित प्रपञ्चसार टीका १ म से १६ वें पटल तक। लिपिकाल १७८५ वि०। —इ० आ० २५६२

(१०) प्रपञ्चसारविवरण, प्रपञ्चसार की व्याख्या। प्रेमानन्दभट्टाचार्य शिरोमणि विरचित।

उ०—केशवकृत क्रमदीपिका पर गोविन्दभट्टाचार्य कृत व्याख्या में।

प्रपञ्चसारसंग्रह

लि०—(१) विश्वेश्वर सरस्वती-शिष्य गीर्वाणेन्द्र सरस्वती विरचित। (क) श्लोक सं० १३२००। (ख) श्लोक सं० १००००, अपूर्ण।

—अ० ब० (क) ७७९६, (ख) ११४८८

(२) गीर्वाणेन्द्र कृत। यह तन्त्रग्रन्थ पूजा आदि धार्मिक कृत्यों का प्रतिपादक है।

—क० का० ५०

(३) विश्वेश्वर सरस्वती-शिष्य गीर्वाणेन्द्र सरस्वती कृत, श्लोक सं० १५२९५, केवल २ पन्ने कम हैं, शेष पूर्ण। (विश्वेश्वर सरस्वती के गुरु अमरेन्द्र सरस्वती थे।)

—र० मं० ४९३४

(४) (क) श्लोक सं० १४३६४, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ५७८, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ४५४५, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २३८३८, (ख) २४३०७, (ग) २४९४९

प्रबोधपञ्चदशिका

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

प्रबोधमिहिरोदय

लि०—विन्ध्यपुरवासी सर्वविद्यामहामहोपाध्याय श्रीमत्तर्कवागीश भट्टाचार्य के अनुकम्पापात्र कायस्थमित्र रामेश्वरतत्त्वानन्द द्वारा प्रकटित। इसकी रचना शकाब्द १५९७ में हुई। यह ८ अवकाशों में पूर्ण है। विविध तन्त्रों, स्मृतियों और पुराणों से यह संगृहीत है। इसके ८ अवकाशों के विषय यों निर्दिष्ट हैं—१म—भ्रम ज्ञान का कारण, २ य—कर्त्ता, कारण और कार्य का विवेचन, ३य—परम ब्रह्म का निर्णय, ४ र्थ—ब्रह्माण्ड के जन्म, स्थिति और संहार का निर्णय, ५ म—जीव की स्थिति, ६ष्ठ—ब्रह्मविद्याविनिर्णय, ७म—अर्चनविधान, तथा ८म—आचार का प्रतिपादन। अज्ञानतिमिर-ध्वंस द्वारा ये मुक्ति के मार्ग हैं, इसलिए यह ग्रन्थ सब शास्त्रों का सिद्धान्त तथा ज्ञान का कारण कहा गया है। इसमें रुद्रयामल, तत्त्वयामल, विष्णुपुराण, गीता, कुलार्णवतन्त्र आदि से प्रमाण उद्धृत हैं।

—क० का० ४९

प्रभाकौल

उ०—महार्थमञ्जरीपरिमल में।

प्रयोगक्रमदीपिका

प्रपञ्चसार पर पद्मपादाचार्य की टीका के ऊपर टीका।

प्रयोगपारिजात

उ०—प्राणतोषिणी में।

प्रयोगमञ्जरी

लि०—(१) श्लोक सं० ४२०। —अ० ब० ७९८४ (ख)

(२) (क) शिवपुर सद्ग्रामवासी काश्यपगोत्र अष्टमूर्ति-पुत्र श्रीरवि विरचित। (ख) श्लोक सं० १९५०। इसमें जीर्ण मन्दिरों के जीर्णोद्धार की विधि, शिव तथा अन्यान्य देवदेवी-मूर्तियों की पुनःप्रतिष्ठाविधि प्रतिपादित है। यह २१ पटलों में पूर्ण है।

(ख) श्लोक सं० ४२५, अपूर्ण। इसमें ७ पटल पूरे तथा ८ वाँ अपूर्ण है। यह श्रीरवि विरचित प्रतीत नहीं होता। विषय—मूर्ति-निर्माण आदि, प्रतिष्ठा आदि ही प्रतीत होते हैं। —ट्रि० कै० (क) ९९१, (ख) ९९२

प्रयोगरत्नाकर (१)

लि०—(१) इसका नामान्तर है भक्तव्रातसंतोषक। उमापति-पुत्र प्रेमनिधिपन्त विरचित। इसमें ९ रत्न (अध्याय) हैं—नित्यप्रातःक्रियारत्न, नित्यतन्त्रस्नानरत्न, नित्यसन्ध्यारत्न, नित्यपूर्णतर्पणरत्न, संस्थावेदिरत्न, नित्यपूर्णभूतशुद्ध्यादिरत्न, नित्यपूर्णमातृकान्यासरत्न नित्यपूर्णमन्त्रविन्यासरत्न तथा नित्यान्तर्यागरत्न। —इ० आ० २५९५

(२) इस ग्रन्थ में ३ प्रवाह (भाग) हैं—नित्य प्रवाह, नैमित्तिक प्रवाह और उत्तर (काम्य) प्रवाह। नित्य में २१ रत्न (अध्याय) हैं, नैमित्तिक प्रवाह में ४ रत्न हैं एवं उत्तर प्रवाह में २४ रत्न है। इसके कर्ता हैं उमापति-पुत्र गुणवतीगर्भज प्रेमनिधि, इनका जन्मस्थान कूर्माचल है, पन्तकुल में जन्म हुआ था एवं वाराणसी में निवास था।

—ए० बं० ६५१०

(३) नामान्तर—भक्तव्रात संतोषक। प्रेमनिधि पन्त विरचित।

—कैट्. कैट्. १।३५६, २।७९, ३।७६

प्रयोगरत्नाकर (२)

लि०—(१) गौतमगोत्र कविता-स्वयंवरपति श्रीकण्ठकाव्य-पुत्र श्रीवासुदेव विरचित, श्लोक सं० ३४५०। इसमें ग्रंथकार ने संमोहनादि तन्त्रों का अवलोकन कर तथा स्वयं भी अनुभव कर वशीकरण आदि १० तान्त्रिक कर्मों का प्रतिपादन किया है।

—ट्रि० कै० ८९५

(२) श्लोक सं० २०४२, अपूर्ण। (इसके कर्ता का नामनिर्देश न होने से यह किसकी कृति है यह संदिग्ध ही है)। —सं० वि० २४१८९

प्रयोगसरणि

लि०—(१) नागेश विरचित, श्लोक सं० २००। —अ० ब० २२५८

(२) नागेश विरचित। —कैट् कैट्. १।३५६

प्रयोगसाधन

लि०—श्लोक सं० ११२, अपूर्ण। —सं० वि० २५७०१

उ०—आगमतत्त्वविलास, आगमकल्पलता, ताराभक्तिसुधार्णव, पुरश्चर्यार्णव, ललितार्चनचन्द्रिका तथा शारदातिलक-टीका राघवभट्टी में।

प्रयोगसार

लि०—(१) गोविन्द विरचित। यह पूर्व और उत्तर दो भागों में विभक्त है। दोनों में २७-२७ पटल हैं।

(क) श्लोक सं० ३७५०। यह २७ पटलों में पूर्ण है। स्वप्नविचार, वशीकरण आदि तान्त्रिक कर्म तथा शकुनविचार प्रभृति विषय इसमें वर्णित हैं।

(ख) श्लोक सं० ४०००। इसमें वशीकरण आदि के विविध उपाय प्रदर्शित हैं।

(ग) श्लोक सं० ३५००, शेष पूर्ववत्।

(घ) श्लोक सं० १४००, इसमें पहले वन्ध्यादोष आदि की निवृत्ति के उपाय वर्णित हैं।

(ङ) श्लोक सं० १३००, इसमें स्त्रियों के वन्ध्यात्व दोष के कारण तथा उनकी निवृत्ति के उपाय, विषनिवृत्ति आदि विषय वर्णित है। इसमें १२ हीं पटल हैं।

(च) श्लोक सं० ४३००। इसकी अन्तिम पुष्पिका में 'प्रयोगसारे' अष्टाचत्वारिंशत्पटलः' लिखा है। इससे प्रतीत होता है इनमें कुछ पूर्व भाग और कुछ उत्तर भाग के पटल हैं। इसमें भी तान्त्रिक षट् कर्मों के उपायादि प्रतिपादित हैं।

—ट्रि०कै० (क) ९९६ से (च) १००१ तक

(२)

—कैट्. कैट्. ३७६

प्रशस्तिभूतिपादकृतग्रन्थ

उ०—तन्त्रालोक-टीका जयरथी में।

प्रश्नतन्त्र

लि०—केरलसिद्धान्त के अन्तर्गत, श्लोक सं० ३६०, अपूर्ण।

—सं० वि० २५३४६

प्रश्नविधान

लि०—पुरश्चर्यार्णव में सप्तशती के श्लोकों का प्रश्न विधान। श्लोक सं० २०, पूर्ण।

—सं० वि० २४४८३

प्रश्नेश्वरतन्त्र

लि०—श्लोक सं० ३९२, पूर्ण, केरलसिद्धान्त के अन्तर्गत।

—सं० वि० २५०९०

प्रस्तारसहस्राक्षरी

लि०—श्लोक सं० ६० । —अ० व० ११७६८

प्रस्तावसंग्रह

लि०—श्लोक सं० ३७८, पूर्ण । इसमें आरंभ में उड्डीश का प्रथम उपदेश है।
—सं० वि० २४४७८

प्राणतोषिणी

लि०—(१) प्राणकृष्ण विश्वास जमींदार खडडह कलकत्ता की सहायता से रामतोषण शर्मा ने इसका निर्माण किया। इसमें सब तन्त्रों का सार प्रतिपादित है। सहयोगी तथा निर्माता—दोनों के नामों के आद्यन्त अक्षरों से इसका नामकरण हुआ।
—रा० ला० ९२५

(२) रामतोषण विद्यालङ्कार कृत, पूर्ण । —व० पं० १३७३

(३) (क) रामतोषण भट्टाचार्य विरचित, श्लोक सं० १८६०, अपूर्ण ।

(ख) प्राणतोषिणीतन्त्र, श्लोक सं० १७१, अपूर्ण ।
—सं० वि० (क) २४९७७, (ख) २६४९४

(४) यह तान्त्रिक विधियों पर विस्तृत संग्रहग्रन्थ है। रामतोषण शर्मा ने १८२१ ई० में इसका निर्माण किया। —कैट्. कैट्. १।३६१

प्राणप्रतिष्ठा

लि०—(१) पूर्ण । भूतशुद्धि से संश्लिष्ट । —सं० वि० २३८९४

(२) —कैट्. कैट्. १।३६१

प्राणप्रतिष्ठापद्धति

लि०— —कैट्. कैट्. १।३६१

प्राणप्रतिष्ठामन्त्र

लि०—(१) (क) पाण्डुरंगदीक्षित विरचित, श्लोक सं० २६, पूर्ण ।

(ख) श्लोक सं० २३, पूर्ण । (ग) गोपालपटल से संश्लिष्ट गोपालपद्धति आदि के साथ। —सं० वि० (क) २५३९५, (ख) २६२०१, (ग) २६४४५

(२) —कैट्. कैट्. १।३६१, २।८१

प्राणाग्निहोत्र

लि०—(१) ईश्वर-कार्तिकेय संवाद रूप। यह योगपरक तन्त्रग्रन्थ है।
—ए० बं० ५९९० (प)

(२)
—कैट्. कैट्. २।८१

प्राणेश्वरीकल्प

लि०—(१) प्राणेश्वरी देवी (दुर्गा देवी) की पूजाविधि इसमें वर्णित है।
—बी० कै० १३०६

प्रायश्चित्त

लि०—यह पारानन्दतन्त्र का २३ वां अध्याय है, श्लोक सं० ३०० ।
—अ० ब० ५७०९

प्रायश्चित्तविधि

लि०—श्लोक सं० ८००, कामिकतन्त्र, क्रियाक्रमद्योतिका तथा दीक्षाशास्त्र से संगृहीत ।
—अ० ब० ७०३३ (ख)

प्रायश्चित्तविधिपटलादि

लि०—श्लोक सं० २००० । यह ग्रन्थ प्रतिष्ठा और उत्सवविधि पर है।
—अ० ब० ६८३४

प्रायश्चित्तसमुच्चय

लि०—ईश्वरशिव-शिष्य श्रीहृदयशिव कृत । इसमें साधकों की पाप-विशुद्धि के लिए आगम में उपदिष्ट प्रायश्चित्त संक्षेप रूप से वर्णित हैं। —ने० द० १।१२९७

प्रासाददीपिकामन्त्रटिप्पन

लि०—यह तान्त्रिक संग्रहग्रन्थ है । इसमें मन्दिरप्रतिष्ठा आदि विविध विषय वर्णित है। यह २८ आह्निकों में पूर्ण है। इसमें प्रतिपादित विषय ये हैं—

स्नानादि कृत्य, सूर्यपूजा, भूतशुद्धि अन्तर्याग, लिङ्गशुद्धि, त्वरितापूजा,परिवारपूजा, पूजाविधि, भोजनविधि नित्यविधि, पबित्रकाधिवासन, पवित्रकविधि, दमनकविधि, समयदीक्षा, विशेषदीक्षा, निर्वाणदीक्षाधिवासन, निर्वाणदीक्षा, निर्वाणदीक्षा के भेद, आचार्य का अभिषेक, दीक्षोद्धार, अन्त्येष्टि, श्राद्धविधि, शिवाष्टक, प्रतिष्ठाधिवासन, प्रतिष्ठाविधि, प्रासादप्रतिष्ठा, विष्णुप्रतिष्ठा तथा गृहप्रतिष्ठा । —ने० द० १।१४५६

प्रासादपरापद्धति

लि०—श्लोक सं० २०००। —अ० ब० १०७११

प्रेतकारिणीतन्त्र

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

प्रेमप्रबन्ध

लि०—प्रेमराज विरचित। श्लोक सं० १५००। अपूर्ण। —अ० ब० ९९७०।

प्रोद्गीथागम

यह अष्टाविंशति (२८) रुद्रागमों में अन्यतम है।

लि०—(१) फेत्कारीय या फेरवीय भी इसके नामान्तर हैं। इसमें मारण, मोहन, उच्चाटन आदि षट् कर्मों का प्रतिपादन है। तन्त्रसंग्रह और सुलभतन्त्रप्रकाश में (२० पटलों में) इसका प्रकाशन हो चुका है। —ए० बं० ५९८१,

(२) शङ्कर-पार्वती संवादरूप। दक्षिण कालिका का दक्षिणत्व और शिवारूढ़त्व का निरूपण, विविध मन्त्रों का निरूपण, उग्रतारा, त्रिपुरा आदि की उत्पत्ति, दशमहाविद्याओं की उत्पत्ति, कालिका का महाविद्यात्व, पूजाविधि आदि, भुवनेश्वरी आदि महाविद्याओं का निरूपण, गुरुक्रमनिरूपण, प्रचण्डचण्डिका के बीजमन्त्र, पूजन आदि का निरूपण, षोडशाक्षर आदि मन्त्रों का निरूपण इत्यादि विषय इसमें वर्णित हैं। —नो० सं० १।२४४

(३) २२ पटलों तक, अपूर्ण। मुद्रित पुस्तकों में २० ही पटल हैं। —बं० प० ८३९

(४) ईश्वर प्रोक्त, पत्र ३४। —जं० का० १०५४

(५) (क) श्लोक सं० ९७२, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ११५३ अपूर्ण (?)। (ग) भैरव प्रोक्त, श्लोक सं० १२०० अपूर्ण (?)। (घ) अपूर्ण। —सं० वि० (क) २४८२३, (ख) २५९७३, (ग) २५१००, (घ) २६३९२

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव, पुरश्चर्यार्णव, प्राणतोषिणी, मन्त्रमहार्णव, ललितार्चनचन्द्रिका, श्यामारहस्य, तारारहस्यवृत्ति, आगमतत्त्वविलास, सर्वोल्लास तथा तन्त्रसार में।

फेत्कारीतन्त्र

लि०--श्लोक सं० २००। --अ० ब० १०६२७ (ग)

उ०--श्यामारहस्य तथा कालिकासपर्याविधि में।

फेत्कारीय

उ०--ताराभक्तिसुधार्णव तथा तन्त्रसार में।

फेरवीय

उ०--ताराभक्तिसुधार्णव, पुरश्चर्यार्णव तथा ताराहस्यवृत्ति में।

बकारादिबालात्रिपुरसुन्दरीरहस्य

लि०--(१) रुद्रयामलान्तर्गत। पूर्ण। --र० मं० ११३३

(२) रुद्रयामल से गृहीत। --कैट्. कट्. २।८२

बटुकदीपदान

लि०--श्लोक सं० ३६, अपूर्ण। --सं० वि० २६६८०

बटुकदीपदानप्रकार

लि०--रुद्रयामलान्तर्गत, पूर्ण, श्लोक सं० १७६।

--सं० वि० २४००८

बटुकदीपदानप्रयोग

लि०--बटुक-पूजापद्धति के साथ। अपूर्ण। दोनों की संमिलित श्लोक सं० ४५।

--सं० वि० २५८४९

बटुकदीपदानविधि

लि०--(क) श्लोक सं० ९६, पूर्ण। (ख) अपूर्ण। (ग) रुद्रयामलीय, श्लोक सं० ७०, पूर्ण। --सं० वि० (क) २५४१७, (ख) २५५२, (ग) २६६५०

बटुकदीपविधि

लि०--श्लोक सं० २४, अपूर्ण। --सं० वि० २४८७०

बटुकनाथपद्धति

लि०--पूर्ण। --बं० प० १३८५

बटुकन्यास

लि०--श्लोक सं० १४, अपूर्ण। --सं० वि० २५९१०

बटुकपञ्चाङ्ग

लि०— —कैट्. कैट्. १।३६६

बटुकपञ्जर

लि०— —कैट्. कैट्. १।३६६

बटुकपञ्चाङ्गप्रयोगपद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० १२४८, पूर्ण ।

—डे० का० ३९० (१८८२-३ ई०)

(२) —कैट. कैट्. १।३६६

बटुकपटल

लि०—श्लोक सं० ६४, पूर्ण । —सं० वि० २४६९६

बटुकपूजनपद्धति

लि०—(क) रामभट्ट विरचित, श्लोक सं० १४६, अपूर्ण ।

(ख) श्लोक सं० ६०, अपूर्ण । (ग) श्लोक सं० २८, अपूर्ण ।

—सं० वि० (क) २५९०५, (ख) २५९११, (ग) २६०७१

बटुकपूजनयन्त्रोद्धार

लि०—(क) पूर्ण । (ख) श्लोक सं० ३९, अपूर्ण ।

—सं० वि० (क) २६०५७, (ख) २६०६१

बटुकपूजादेवता

(वीरसाधन देवता सहित)

लि०—श्लोक सं० ६६, पूर्ण । —सं० वि० २५९०६

बटुकपूजापद्धति

लि०—(१) (क) इसमें बटुकदीपदानप्रयोग भी संमिलित है । श्लोक सं० ६८, अपूर्ण । (ख) बालम्भट्ट कृत, श्लोक सं० २०५, अपूर्ण । (ग) श्लोक सं० ३१५, अपूर्ण । (घ) श्लोक सं० ५६, अपूर्ण;

—सं० वि० (क) २५८४९, (ख) २५९०७, (ग) २५९०८, (घ) २५९१२

(२) —कैट्. कैट्. १।३६६, २।८२

बटुकभास्कर

लि०--(१) (क) रमानाथ विरचित श्लोक सं० ६००० ।
(ख) श्लोक सं० २१००, अपूर्ण ।
--अ० ब० (क) ९४९९, (ख) ३४९४

(२) रमानाथ विरचित, श्लोक सं० ७३९४, पूर्ण ।
--सं० वि० २४९६१

बटुकभैरवकल्प

लि०---इसमें क्षेत्रपालकल्प भी संमिलित है। श्लोक सं० १७०, पूर्ण ।
--सं० वि० २५९१३

बटुकभैरवतन्त्र

लि०--(१) श्लोक सं० १२५५, अपूर्ण । --सं० वि० २४५८०
(२) --कैट्. कैट्. १।३६६
उ०---सौन्दर्यलहरी-टीका लक्ष्मीधरी में ।

बटुकभैरवतरङ्ग

लि०---इसमें बटुकभैरव-पूजन का विस्तार से प्रतिपादन है।
--ए० बं० ६४७८

बटुकभैरवदीपदान

लि०-(१) इसमें बटुकभैरव के लिए प्रज्वलित दीपदानप्रयोग वर्णित है।
--बी० कै० १३६८
(२) भैरवीतन्त्र से गृहीत । --कैट्. कैट्. १।३६६, २।८२

बटुकभैरवदीपदानविधि

लि०---श्लोक सं० ५६, पूर्ण । --सं० वि० २५९१५

बटुकभैरवदीपविधि

लि०---श्लोक सं० २४२, अपूर्ण । --सं० वि० २५९१४

बटुकभैरवपञ्चाङ्ग

लि०--(१) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० ३६२, पूर्ण ।
--र०मं० ४८५०

(२) (क) श्लोक सं० १२८, पूर्ण (?)। (ख) श्लोक सं० २३४, पूर्ण।
—सं० वि० (क) २३९३५, (ख) २४१८८

(३) —कैट्. कैट्. १।३६६

बटुकभैरवपद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ३००। (ख) श्लोक सं० ५४०। (ग) श्लोक सं० ५५०। —अ० ब० (क) ९१४५, (ख) ५५९७, (ग) ९९०

(२) मन्त्रचिन्तामणि प्रोक्त, पत्रे २३। —रा० पु० ५००४

बटुकभैरवपुरश्चरणविधि

लि०—उड्डण्डमाहेश्वरतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० २३६, पूर्ण।
—सं० वि० २३८३९

बटुकभैरवपूजन

लि०—श्लोक सं० १८, अपूर्ण। —सं० वि० २५०५८

बटुकभैरवपूजनविधि

लि०—श्लोक सं० १८०, पूर्ण। —सं० वि० २६६६५

बटुकभैरवपूजापद्धति

लि०—(१) विश्वसारोद्धारतन्त्र में उक्त, पत्रे २७।
—रा० पु० ४१३५

(२) (क) श्लोक सं० १३२, पूर्ण। (ख) इसमें दत्तात्रेयतन्त्र भी संमिलित है दोनों की श्लोक सं० १२५४, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ६४५, पूर्ण।
—सं० वि० (क) २४४९६, (ख) २५२५०, (ग) २५९१८

(३) वामदेवसंहिता से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।३६६

बटुकभैरवपूजाप्रयोग

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० २१२, पूर्ण।
—सं० वि० २५०७७

बटुकभैरवपूजाविधि

लि०— —कैट्. कैट्. ३।७८

बटुकभैरवबकारादिसहस्रनाम

लि०—विश्वसारोद्धार में रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत देवी-हर संवादरूप। इसमें बटुक भैरव के बकारादि सहस्रनाम वर्णित हैं। —ए० बं० ६७५०

बटुकभैरवमन्त्रपुरश्चरणसंख्याविचार

लि०—श्लोक सं० २०८, अपूर्ण। —सं० वि० २५९८२

बटुकभैरवमन्त्रप्रयोग

लि०—श्लोक सं० ६२, पूर्ण। —सं० वि० २६२७२

बटुकभैरवविधान

लि०—(१) मन्त्रचिन्तामणि में उक्त, श्लोक सं० ३७०, पूर्ण।
—सं० वि० २६१५१

(२) शिवागमसार से गृहीत। —कैट्. कैट्. २।८२

बटुकभैरवसहस्रनाम

लि०—(१) भैरवतन्त्र से गृहीत।
(२) रुद्रयामल से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।३६६, २।७८

बटुकभैरवापदुद्धरणपटल

लि०— —कैट्. कैट्. १।३६६

बटुकमालामन्त्र

लि०—इसमें बटुकभैरव-मालामन्त्र वर्णित है। —ए० बं० ६४७९

बटुकस्तवपुरश्चरणप्रयोग

लि०—श्लोक सं० ५७, अपूर्ण। —सं० वि० २६०७०

बटुकादिबलिदानविधि

लि०—ज्ञानार्णव से गृहीत, श्लोक सं० ५१, पूर्ण।
—सं० वि० २६४५९

बटुकार्चन

लि०—इसमें बटुक भैरव के पुरश्चरण, पूजा और दीपदान का वर्णन किया गया है।
—ए० बं० ६४८०

बटुकार्चनचन्द्रिका

लि० (१)—श्लोक सं० ६०० । —अ० ब० १०९६१

(२) श्रीनिवास विरचित । —कैट्. कैट्. १।३६६

बटुकार्चनदीपिका

लि०—(१) काशीनाथ विरचित, श्लोक सं० ६९६, अपूर्ण ।
—सं० वि० २४००७

(२) काशीनाथभट्ट विरचित । —कैट्. कैट्. १।३६६

बटुकार्चनपद्धति

लि०—(१) इसका दूसरा नाम भैरवार्चनचन्द्रिका भी है। बालभट्ट विरचित, श्लोक सं० १५०० । —अ० ब० १०६५३

(२) (क) बालभट्ट विरचित, श्लोक सं० १८, अपूर्ण । (ख) श्लोक सं० ३५, अपूर्ण । —सं० वि० (क) २६०५४, (ख) २६०५५

बटुकार्चनसंग्रह

लि०—भट्ट दिवाकर-पौत्र, रामभट्ट-पुत्र बालम्भट्ट (भट्ट ?) कृत यह ग्रन्थ ८ अर्चनों (अध्यायों) में पूर्ण है। इसमें बटुकभैरव की पूजा का विस्तार से वर्णन किया गया है तथा तान्त्रिक संक्षिप्ततर नित्य होम, भस्मसाधन, स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम के समग्र आवर्तन पर विचार, दिशा-नियम, शान्ति आदि काम्य कर्मों में पूजाविधान आदि विषय भी वर्णित हैं। —ए० बं० ६४६६

बटुकोपासनविधि

लि०—श्लोक सं० १७०, अपूर्ण । —सं० वि० २६२८६

बद्धयोनिमहामुद्राकथन

लि०—(१) तोडलतन्त्र के अन्तर्गत यह शिव-पार्वती संवादरूप है। यह तोडल तन्त्र का ३ रा और ४ था पटल ही है। इनमें से पहले में तारा की पूजा में उपयोगिनी बद्ध-योनि नाम की मुद्रा का उपदेश, मन्त्र आदि तथा उनके जप आदि का प्रकार वर्णित है एवं दूसरे में तारापूजनपद्धति वर्णित है। इसकी श्लोक सं० १५० है।
—रा० ला० ९९५

बलिकल्प

लि०—श्लोक सं० ४२५, अपूर्ण। इसमें देवी चण्डिका के लिए बलिप्रदान-विधि प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० १०१७ (ग)

बलिदान

लि०—श्लोक सं० ८०। —अ० ब० ४५९२

बलिदानमन्त्र

लि०—इसमें बटुक, क्षेत्रपाल, योगिनी तथा गणपति के लिए बलि प्रदान के मन्त्र वर्णित हैं। —ए० बं० ६२८२

बलिदानविधि

लि०—श्लोक सं० ४८, पूर्ण। —सं० वि० २६३०५

बलिविधान

लि०—राघवभट्ट विरचित (कालीतत्त्वान्तर्गत), श्लोक सं० ३२८, अपूर्ण।
—सं० वि० २४३५३

बलिविधि

लि०—यह बटुकन्यास के साथ है। दोनों की संमिलित श्लोक सं० १४ दी गयी हैं। दोनों अपूर्ण हैं। —सं० वि० २५९१०

बसवराजीय

लि०—वीरमाहेश्वरसारोद्धार से गृहीत, श्लोक सं० १७००, अपूर्ण।
—अ०ब० ७११६

बहिर्मातृकातन्त्र

लि०— —कैट्. कैट्. ३।७८

बहुदैवत्य (तन्त्र)

लि०—आरवाटकुलवासी यज्ञ-पुत्र नारायण विरचित। श्लोक सं० ४९४०। यह २४ पटलों में पूर्ण है। ईश्वरादि देवताओं की पूजाविधि इसमें वर्णित है।
—ट्रि० कै० १००५

उ०—सर्वदर्शनसंग्रह के शैवदर्शन में।

बालबोधतन्त्र

लि०—काशीनाथ विरचित, श्लोक सं० ६००। —अ० ब० ११२४३ (ख)

बालभैरवसहस्रनाम

लि०—रुद्रयामल से गृहीत। —कैट्. कैट्. ३।७८

बालभैरवीदीपदान

लि०—भैरवीतन्त्र के अन्तर्गत। इसमें बालभैरवी, जो दुर्गा का एक रूप है, के लिए प्रज्वलित दीपप्रदान की विधि प्रतिपादित है। —बी० कै० १२४९

बालरक्षणविधान

लि०—कपिलसंहिता से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।३७२

बालभैरवीसहस्रनाम

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, हर-गौरी संवादरूप। इसमें सहस्र नामों द्वारा बालभैरवी की स्तुति की गयी है। —नो० सं० १।२४६

बालरत्नावली

लि०—ज्ञानशिव विरचित। —कैट्. कैट्. ३।७९

बालाकल्प

लि०—दामोदर त्रिपाठी विरचित। —कैट्. कैट्. १।३७२

बालाकल्पलता

लि०—श्लोक सं० ५८, अपूर्ण। —सं० वि० २४१२४

बालाकवच

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० १६। —अ० ब० ११४२०

(२) सिद्धयामलतन्त्र से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।३७२, ३।७९

बालाखड्गमाला

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, गौरी-ईश्वर संवाद रूप। श्लोक सं० ६५। इसमें बाला त्रिपुरसुन्दरी का परमात्मा द्वारा प्रकीर्तित परम गुह्य मालामन्त्र (स्तुति रूप) प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० ११०६ (ख)

बालाजप

लि०---(१) इसमें त्रिपुरसुन्दरी देवी के विविध मन्त्र और बीजमन्त्रों के जप की विधि प्रतिपादित है। पन्ने ४। --क० का० ९०

बालातन्त्र

उ०---पुरश्चर्यार्णव तथा आगमतत्त्वविलास में।

बालात्रिपुरसुन्दरीकवच

लि०---(१) सिद्धयामल से गृहीत, श्लोक सं० २०।

--अ० ब० ६०२६ (ख)

(२) --कैट्. कैट्. ३।७९

बालात्रिपुरसुन्दरीजपहोमादि

लि०---श्लोक सं० ३०। --अ० ब० १३९१३

बालात्रिपुरसुन्दरीपद्धति

लि०---(१) मन्त्रमहोदधि से गृहीत। इसमें त्रिपुर-सुन्दरी के उपासकों की आह्निक क्रियावली तथा तान्त्रिक विधियों का वर्णन है।

--इ० आ० २६०२

(२) --कैट्. कैट्. ३।७९

बालात्रिपुरसुन्दरीनित्यपुरश्चरण (पूर्वखण्ड)

लि०---श्लोक सं० ६०। --अ० ब० ८८६९

बालात्रिपुरसुन्दरीनित्यपूजापद्धति

लि०---रुद्रयामल से गृहीत, श्लोक सं० ६००। --अ० ब० ८०५४

बालात्रिपुरसुन्दरीपञ्चाङ्ग

लि०---(१) श्लोक सं० ३००। --अ० ब० १०७३७

(२) श्लोक सं० ४०५, अपूर्ण। --सं० वि० २६२७१

(३) (बालासहस्रनाम मात्र) यह रुद्रयामल के अन्तर्गत उमा-महेश्वर संवादरूप है। इसमें बाला त्रिपुरसुन्दरी देवी के हजार नाम वर्णित हैं।

--क० का० ९२

(४) (क) (बालात्रिपुरसुन्दरीहृदय) यह ज्ञानार्णवतन्त्र के अन्तर्गत है। इसकी श्लोक सं० ३५ है। बालात्रिपुर-सुन्दरी की पूजा इसमें प्रतिपादित है।

(ख) (बालात्रिपुरसुन्दरीकवच) यह विश्वसारतन्त्रान्तर्गत देवी-ईश्वर संवाद-रूप है। श्लोक सं० २०। इसमें बाला सुन्दरी की स्तुति के साथ उपासक (साधक) द्वारा स्वशरीर के विविध अवयवों की रक्षा की जाती है।

—ट्रि० कै० (क) ११०६ (ग), (ख) ११०६ (घ)

(५) (क) (बालास्तवराज) श्लोक सं० १०। इसमें त्रिपुरसुन्दरी देवी की स्तुति प्रतिपादित है। (ख) (बालात्रिपुरसुन्दरीस्तवराज) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक ३०। (ग) (बालास्तोत्र) श्लोक सं० ३०, रुद्रयामलान्तर्गत। (घ) (बालाष्टोत्तरशत नाम) श्लोक सं० ३६।

—ट्रि० कै० (क) ११०६ (ङ), (ख) ११०६ (च), (ग) ११०६ (क)

बालात्रिपुरसुन्दरीपद्धति

उ०—मन्त्रमहोदधि में।

बालात्रिपुरसुन्दरीपूजनप्रयोग

लि०— —कैट्. कैट्. १।३७२

बालात्रिपुरसुन्दरीपूजाक्रम

लि०—इसमें बाला त्रिपुरसुन्दरी की पूजा का विवरण वर्णित है।

—म० द० ५६७९

बालात्रिपुरसुन्दरीपूजापद्धति

लि०—(क) श्लोक सं० ६८, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ९३, पूर्ण। इसमें भूतशुद्धि भी वर्णित है। —सं० वि० (क) २४१७८, (ख) २६०७८

बालात्रिपुरसुन्दरीपूजाविधि

लि०—इसमें बाला त्रिपुरसुन्दरी की पूजाविधि साङ्गोपाङ्ग वर्णित है।

—म० द० ५६८०

बालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्र

लि०—श्लोक सं० २५, अपूर्ण। —सं० वि० २६६८५

बालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रजपविधि

लि०—श्लोक सं० २६, पूर्ण। —सं० वि० २६४१५

बालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रविधि

लि०---श्लोक सं० २०। ---अ० व० १३९१४

बालात्रिपुरसुन्दरीसंक्षिप्तपूजा

लि०---श्लोक सं० ४००। ---अ० व० १६८०

बालात्रिपुरापञ्चाङ्ग

लि०---श्लोक सं० ११५४, पूर्ण। ---र० मं० ११४९

बालात्रिपुरापटल

लि०---(१) रुद्रयामल से गृहीत, श्लोक सं० १५०। ---अ० व० १६९४
(२) (क) ज्ञानार्णव से गृहीत, श्लोक सं० ६०, पूर्ण।
(ख) श्लोक सं० ८४, पूर्ण।
---सं० वि० (क) २४४१९, (ख) २४६२१

बालात्रिपुरापद्धति

लि०---(१) ज्ञानार्णव से गृहीत। श्लोक सं० २००।
---अ० व० १३६४०
(२) (क) श्लोक सं० ९८, अपूण। (ख) श्लोक सं० २१७, अपूर्ण।
---सं० वि० (क) २५७०९, (ख) २६०५६

बालात्रिपुरापूजनपद्धति

लि०---श्लोक सं० १०००। ---अ० व० १०४२२

बालात्रिपुरापूजा

लि०---ज्ञानार्णव से गृहीत, श्लोक सं० ६००। ---अ० व० ५३३९

बालात्रिपुरापूजापद्धति

लि०--- ---कैट्. कैट्. ३।७९

बालात्रिपुरापूजाप्रकार

लि०---शिवभट्ट-सुत विरचित। श्लोक सं० २००, पूर्ण। ---सं. वि. ५२३०२

बालात्रिपुराराधनविधि

लि०---श्लोक सं० २८०। ---अ० व० ६५९

बालात्रिपुरार्चनपद्धति

लि०—श्लोक सं० २०० । —अ० ब० ९२७०

बालात्रिपुरासंक्षेपार्चनपद्धति

लि०—श्लोक सं० २२० । —अ० व० ९१४

बालात्रिपुरासपर्यापद्धति

लि०—श्लोक सं० ९०० । —अ० व० ५३०८

बालादित्य

लि०—त्रिपुरापूजा की पद्धति के निर्देशक इस ग्रन्थ में ९ मयूख हैं। अन्तिम (९ म) मयूख में स्तोत्र प्रतिपादित है । —ए० बं० ६३६९

बालादेवीपूजाप्रयोग

लि०—यह तन्त्रनिबन्ध भी बाला त्रिपुरसुन्दरी की पूजा के सम्बन्ध में प्रकाश डालता है । —क० का० ९१

बालापञ्चाङ्ग

लि०—(१) श्लोक सं० ६०० । —अ० ब० ३४७३

(२) रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ८५२, पूर्ण । —र० मं० ४८१९

(३) (बालाकवच मात्र) इसमें बाला त्रिपुरसुन्दरी की स्तुति के साथ साधक के शरीर के विविध अङ्गों की रक्षा का विधान है । —क० का० ८७

(४) (बालासहस्रनाम मात्र) श्लोक सं० २३० । इसमें बाला त्रिपुरसुन्दरी की दिव्य सहस्र नामों द्वारा स्तुति की गयी है । —ट्रि० कै० ११०६ (क)

बालापटल

लि०—(१) श्लोक सं० ७५, पूर्ण । —सं० वि० २४८३५

(२) —कैट्. कैट्. ३।७९

बालापद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक सं० २०० । (ख) श्लोक सं० ४३० । (ग) श्लोक सं० ४३० । (घ) श्लोक सं० ४३० । (ङ) श्लोक सं० ९०, रुद्रयामल से गृहीत । (च) श्रीनिवास विरचित, श्लोक सं० ४५० । यह श्रीनिवास विरचित शिवार्चनचन्द्रिका का

२२ वाँ पटल है। (छ) चैतन्यगिरि कृत, श्लोक सं० ९६०। (ज) चैतन्यगिरि विरचित, श्लोक सं० ९६०। (झ) दक्षिणामूर्तिसंहिता से गृहीत, श्लोक सं० १५०।

—अ० व० (क) ९०४, (ख) ९८०, (ग) २०८, (घ) ५७३३, (ङ) ५३३८, (च) ५७५८, (छ) ६७०, (ज) ८०५१, (झ) ८०५२

(२) —भ. रि. २८९

(३) इसमें बाला देवी की साङ्गोपाङ्ग सपर्या वर्णित है। सहस्रदल-कणिका में बाला की सब उपचारों द्वारा मानसिक पूजा कर तत्-तत् मन्त्रों से कुलदीपग्रहण आदि का प्रतिपादन किया गया है। —म० द० ५६८१ से५६८३ तक

(४) दामोदर त्रिपाठी द्वारा विरचित, श्लोक सं० ३११, पूर्ण।

—सं० वि० २४०१७

(५) चैतन्यगिरि अवधूत कृत। —कैट्. कैट्. २।८४

उ०—पुरश्चर्यार्णव में चैतन्यगिरि अवधूत का उल्लेख है।

बालापद्धतिकवचादि

लि०—श्लोक सं० २५५, पूर्ण। —र० मं० १०७५

बालापरमेश्वरीमालामन्त्र

लि०—

—कैट्. कैट्. ३।७९

बालापूजनपद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक सं० २५०। (ख) ईश्वरानन्द-शिष्य अमृतानन्द विरचित, श्लोक सं० २५०। —अ० ब० (क) ८०८, (ख) १३४३६

बालापूजनविधि

लि०— श्लोक सं० २०२, अपूर्ण। —सं० वि० २४१५९

बालापूजा

लि०—श्लोक सं० ३०। —अ० ब० ३४७४

बालापूजापद्धति (१)

लि०—(१) इसमें उपासक द्वारपूजा आदि पूर्वाङ्ग का अनुष्ठान कर श्रीपात्र को उठा कर श्रीदेवी को अर्पण कर स्वयं ग्रहण करे, कौलपात्र दें एवं शान्तिपाठस्तव करें। तदुपरान्त नीराजन करें, यों पूजाविधि वर्णित है। —म० द० ५६८४

बालापूजापद्धति (२)

(२) (क) विद्याराय कमलाकर विरचित, श्लोक सं० १३० ।
(ख) श्लोक सं० १५० । (ग) श्लोक सं० ७००, रुद्रयामाल से गृहीत।
—अ० ब० (क) ७२, (ख) ६७८, (ग) १६८३

बालापूजाविधान

लि०—महात्रिपुरासिद्धान्त के अन्तर्गत उमा-महेश्वर संवाद रूप इस ग्रन्थ में, दस दिक्पाल तथा द्वारपालों की पूजा कर एकाग्रचित्त से भूतशुद्धि करना, यन्त्र लिखना, यन्त्र के मध्य में विन्दु लिखना, त्रिकोण तथा षट्कोण लिखना बतलाया गया है। दक्षिण ओर परोत्तम पूजा-द्रव्य की स्थापना कर उसके दक्षिण ओर कलश स्थापन का विधान किया गया है। इस तरह सांगोपाङ्ग पूजा कर उपासक के सकल मनोरथ सिद्ध होते हैं, यह कहा गया है। —म० द० ५६८५-८६

बालामन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० ४०। इस ग्रन्थ के अन्त में त्रिपुरा-गायत्री भी संनिविष्ट है।
—अ० ब० ३४७५

(२) (क) श्लोक सं० १९, पूर्ण। (ख) विमलानन्दतरंगिणीतन्त्रातर्गत, श्लोक सं० ७८, पूर्ण। —सं० वि० (क) २४५९७, (ख) २४५९८

बालार्चनचन्द्रिका (१)

लि०—श्लोक सं० ४७०, पूर्ण। —सं० वि० २६५३९

बालार्चनचन्द्रिका (२)

लि०—लालचन्द्र विरचित, श्लोक सं० ९२६, पूर्ण।
—सं० वि० २४०१८

बालार्चनदीपिका

लि०—लालचन्द्र कृत, श्लोक सं० ९६६, पूर्ण। —सं० वि० २४०१८

बालार्चनपद्धति

लि०—यह बाला त्रिपुरसुन्दरी की पूजनपद्धति है। —ए० बं० ६३७०
उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

बालार्चाकल्पवल्लरी

लि०—दामोदर त्रिपाठी विरचित, श्लोक सं० १५८, अपूर्ण। —सं० वि० २४८३६

बालार्चाक्रमदीपिका

लि०—(१) श्लोक सं० ७००। —अ० ब० ३५३४

(२) श्लोक सं० ३८५, अपूर्ण। —सं० वि० २५२६९

(३) इसमें बाला त्रिपुरसुन्दरी की पूजा का क्रम भली भाँति विस्तार के साथ प्रतिपादित है। —क० का० ८९

बालार्चापद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० १७८, पूर्ण। —सं० वि० २५३०१

(२) नीकण्ठ विरचित। —कैट्. कैट्. १।३७२

बालाविलासतन्त्र

लि०—(१) इस तन्त्र में कालमुखी-विश्वकील रामकवच, तकारादि स्वरूप सहस्रनाम आदि अन्यान्य स्तोत्र और कवच प्रतिपादित ह। —बं० प० ११९२

(२) कालमुखी-विश्वकीलकवच मात्र। —कैट्. कैट्. १।३७२

उ०—कालिकासपर्याविधि में।

बालाशापविमोचनमन्त्र

लि०—श्लोक सं० १०, पूर्ण। —सं० वि० २४१२६

बालाहृदयमन्त्रप्रयोग

लि०—श्लोक सं० २०, अपूर्ण। —सं० वि० २६२७४

बालिकार्चनदीपिका

लि०—शिवरामाचार्य विरचित। —कैट्. कट्. १।३७३

बाह्यमातृकान्यास तथा महाषोढान्यास

लि०—ऊर्ध्वाम्नायान्तर्गत यह विरूपाक्ष परमहंस परिव्राजक द्वारा सिद्ध किया हुआ है। इसमें अकार आदि ५० वर्णों से शरीर स्थित मुख आदि स्थानों में न्यास का विधान है। श्लोक सं० १५०। —रा० ला० ३५७

बाह्यान्तःपूजाविचार

लि०——श्लोक सं० ३०, पूर्ण। ——सं० वि० २६१०९

बिन्दुचक्र

श्रीकण्ठी के अनुसार चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों में अन्यतम।

बिन्दुबीजादिविमर्श

लि०——श्लोक सं० १८०, अपूर्ण। ——सं० वि० २६६९४

बिन्दुयामल

लि०——त्रिपुराहृदय मात्र। ——कैट्. कैट्. १।३७३

बिन्दुसारतन्त्र

योगरत्नावली का मूलग्रन्थ। ——ए० बं० ६६०२

बिन्ध्यवासिनीपूजाप्रयोग

लि०——यह ग्रन्थ विन्ध्यवासिनी देवी की पूजा-प्रक्रिया का निर्देशक है। देवी की पूजा के नियमों का प्रतिपादन करते हुए भगवती के शूलिनी नाम का भी इसमें संक्षेपतः कृष्णानन्द के तन्त्रसार के अनुसार निर्देश किया गया है। ——ए० बं० ६३९८

बिम्बप्रतिबिम्बवाद

लि०——अभिनवगुप्त विरचित, पूर्ण। ——डे० का० ४६९ (१८७५-७६ ई०)

बिम्बागम

लि०—— ——प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

बिल्वफलहवनप्रयोग

लि०——श्लोक सं० १२५। ——अ० ब० ११७५५

बिल्वमूलसाधन

लि०——पूर्ण। ——सं० वि० २४८५५

बीजकोष (१)

लि०——(१) दक्षिणामूर्ति प्रोक्त। ऋषिवृन्द के प्रश्न पर दक्षिणामूर्ति ने इस बीजकोष का प्रतिपादन किया है। इसमें अकार से लेकार तथा क्षकार पर्यन्त मातृकावर्णों में मन्त्रबीजत्व का निरूपण है। ——रा० ला० २५७२

(२) इस ग्रन्थ में तन्त्रों में प्रयुक्त होने वाले विविध बीजों के नाम और रूप दिये गये हैं।

—ए० बं० ६२९६–६२९८

(३) दक्षिणामूर्ति विरचित, श्लोक सं० १८८, पूर्ण।

(४) दक्षिणामूर्ति प्रोक्त। दक्षिणामूर्ति कृत बीजकोषोद्धारटीकासहित।

—कैट्. कैट्. १।३७४

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

बीजकोष (२)

लि०—(१) भूतभैरवतन्त्र से गृहीत। —ए० बं० ६१४५

(२) क्रोधीशभैरव विरचित यह ग्रन्थ भैरवतन्त्र के अन्तर्गत है। इसमें ॐ श्रीं इत्यादि २४ बीजमन्त्रों का उद्धार प्रतिपादित है। —रा० ला० ४७९

बीजचिन्तामणि

लि०—हर-गौरी संवादरूप। श्लोक सं० २८० और पटल सं० ९। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—वर्णों की प्रशंसा, वर्णतत्त्व, बीजमन्त्र, मन्त्रों के उद्धार, वासना, मन्त्रचैतन्य निरूपण, ध्यान विशेष आदि। —रा० ला० २६४

उ०—मन्त्रमहार्णव तथा प्राणतोषिणी में।

बीजनिघण्टु

लि०—इसका दूसरा नाम मन्त्रनिघण्टु है।

—कैट्. कैट्. १।३७४, २।८४, ३।८०

बीजमुक्तावली

उ०—शक्तिरत्नाकर में इसका उल्लेख है। —कैट्. कैट्. १।३७४

बीजवर्णसंकेत

लि०—(१) इसमें विभिन्न बीज-मन्त्रों के नाम और स्वरूप का वर्णन है एवं बीज-मन्त्रों, जो तन्त्रों में प्रयुक्त होते हैं, की सूची (तालिका) भी दी गयी है।

—ए० बं० ६२९६–६२९८

(२) श्लोक सं० ६३, अपूर्ण। —सं० वि० २५५६७

बीजवर्णाभिधानटीका

लि०—गौरमोहनभट्ट विरचित। —नो० सं० ३।२७८

बीजव्याकरणमहातन्त्र (सटीक)

लि०—यह शिव-पार्वती संवादरूप है। इसमें छह अध्याय हैं। चक्र-विचार, मास आदि का निर्णय, दीक्षाविधि, पुरश्चरण, जपमाला-संस्कार, कालीपूजा, नित्यहोमविधि, कालीकवच, दक्षिणकालीकवच, कुमारीपूजा, कालिकासहस्रनाम, तारामन्त्रप्रकरण, तारावासना, ताराष्टक, नीलसरस्वतीकवच, कुलसर्वस्वनामस्तोत्र आदि अनेक विषय वर्णित हैं।

इस पर उपलब्ध टीकाएँ—

(१) महातन्त्रभावार्थदीपिका खिरिदेशनिवासी रामानन्ददेव शर्मा वाचस्पति भट्टाचार्य (चैतन्यसिंह, मल्लमहीन्द्रपुत्र के समकालीन) द्वारा विरचित।

(२) शैवव्याकरणीयसंग्रहभावार्थटीका-टिप्पणी रामतनुशर्मा (रामानन्द वाचस्पति भट्टाचार्य शिष्य) विरचित। —इ० आ० २५७१

(३) इस पर रामानन्ददेव शर्मा की टीका है। उस पर उनके शिष्य रामतनु की व्याख्या है। —कैट्. कैट्. २।८४

बीजसंकेत

लि०— —कैट्. कैट्. ३।८०

बीजागमसारसंग्रह

लि०—विनायकरहस्यान्तर्गत, श्लोक सं० २०००, अपूर्ण। —अ० ब० ११३९६

बीजाभिधान

लि०—(क) श्लोक सं० ७६, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ५१, पूर्ण। वर्णोच्चारणविधि भी इसमें सम्मिलित है। —सं० वि० (क) २६१३५, (ख) २६४५४

बीजार्णवतन्त्र

उ०— शाक्तानन्दतरङ्गिणी में। —कैट्. कैट्. १।३७४

बीजोपबीजकूटोपकूट

लि०—श्लोक सं० २७६, पूर्ण। —सं० वि० २६१५७

बृहत्तन्त्र

लि०— —कैट्. कैट्. ३।८०

बृहत्तन्त्रकौमुदी

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

बृहत्-श्रीक्रमसंहिता

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव तथा तन्त्रसार में।

बृहत्सिद्धान्तसार

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

बृहत्सुधातन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

बृहत्स्तवराज

उ०—तन्त्रसार में।

बृहदुत्तरतन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

बृहद्गौतमीय

लि०—(१) शौनकादि-नारद संवादरूप। ३६ पटलों में समाप्त। इसमें वैष्णवों की प्रशंसा, अवतार होने में कारण आदि, कृष्ण-मन्त्र की प्रशंसा, बीज आदि के स्मरण का प्रकरण, दशाक्षर मन्त्र का ज्ञान, फल आदि, चिन्तन-स्थान का निरूपण, वृन्दावन के ध्यान आदि, आचमन, आसन, भूतशुद्धि, मातृकान्यास आदि, सृष्टिन्यास आदि, गुरुमाहात्म्य, दीक्षा का क्रम, गृहस्थ आदि की दीक्षाविधि, कृष्ण-मन्त्र के जप की विधि आदि बहुत विषय वर्णित हैं। —नो० सं० १।२४८

(२) २५वें पटल तक पूर्ण। —बं० प० १३८२

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा प्राणतोषिणी में।

बृहद्ज्ञानार्णव

उ०—तारारहस्यवृत्ति में।

बृहद्भूतडामरतन्त्र

लि०—(१) उन्मत्तभैरवी-उन्मत्तभैरव संवादरूप। २५ पटलों में। इन्द्रजालादिसंग्रह रसिकमोहन चटर्जी सम्पादित कलकत्ता सन् १८७९में मुद्रित प्रति में १५ ही पटल हैं।

कालात्मक सिद्धचक्रभेद, सुन्दरीमन्त्र, सुन्दरीध्यान, भूतिनीसाधन, कालरात्रिसाधन, महाभूतचेटिकासाधन, कात्यायनीसिद्धिसाधन आदि कई विषय इसमें प्रतिपादित हैं।
—ए० बं० ५८६०

(२) (क) इसमें २२ पटल पूरे हैं तथा २३ वें पटल का कुछ अंश है, अपूर्ण।
(ख) २५ वें पटल पर्यन्त, पूर्ण। —बं० प० (क) १८६, (ख) १३९४

बृहद्मत्स्यसूक्त

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा मन्त्रमहार्णव में।

बृहद्योनितन्त्र

लि०—(१) पार्वती-ईश्वर संवादरूप। इसमें बृहद्योनितन्त्र का माहात्म्य, प्रकृति की योनिरूपता, सर्वदेवमयता तथा सर्वतीर्थमयता का प्रतिपादन, उसमें सब शक्तियों की स्थिति, उसके पूजन से लक्षपीठ-पूजा की फल-प्राप्ति कथन, उसकी पूजा के काल आदि का निरूपण, उसके नाम-कीर्तन का फल कथन, महादेव की लिङ्गरूपता कथन, आश्विन शुक्ल नवमी को तत्-तत् नामों से युक्त गीत गाने पर विशेष फल-प्राप्ति कथन, पञ्चतत्त्वों से योनि की पूजाविधि, योनिमुद्रा आदि तथा षट्चक्रों में उसके चिन्तन का फल, योनिकवच, मन्त्र, ध्यान आदि का प्रतिपादन, कुलज्ञान से मोक्ष-प्राप्ति कथन इत्यादि विषय वर्णित हैं।
—नो० सं० १।२४९

(२) (क) श्लोक सं० ५००। (ख) श्लोक सं० ३००। (ग) श्लोक सं० २००।
—अ० ब० (क) १०१७९, (ख) १०१९०, (ग) १०२४६

(३) १०म पटल पर्यन्त पूर्ण। —बं० प० १३८९

उ०—सर्वोल्लास में।

बृहद्योनिरहस्य

उ०—प्राणतोषिणी में।

बृहद्रुद्रयामल

लि०—(१) श्रीकृष्ण-नारद संवादरूप। ४ खण्डों में है। इसके २ य खण्ड में ३० अध्याय और ४र्थ खण्ड में ५ अध्याय हैं। —ए० बं० ५८६६, ५८६७

(२) पञ्चाननदेव की उत्पत्ति किससे होती है, नारदजी के इस प्रश्न पर भगवान् द्वारा पञ्चानन के जन्म आदि तथा भूमिप्रवेश आदि का निरूपण, ब्राह्मण पर दण्ड आदि का

निरूपण, ब्राह्मण के शोक को दूर करना, पूजा-प्रकाश आदि का निरूपण, मालिकोपाख्यान, मृतपुत्रदान आदि, द्विजागमन आदि, वर-प्रार्थना आदि, नरध्वज की पुत्रोत्पत्ति, नरध्वज को परम आनन्द, यात्रा के आरंभ का निरूपण, दूतवध, वीरसेनवध आदि का निरूपण आदि बहुत विषय हैं। —नो० सं० १।२५०

बृहन्निधिदर्शन

लि०—इस ग्रन्थ की विषय-सूची देखने से प्रतीत होता है कि यह पूर्ववर्णित निधिदर्शन के तुल्य ही है। निधि-कर्म में उत्तम सहायकों तथा निन्द्य सहायकों का वर्णन, निधि-स्थानों का वर्णन आदि विषय इसमें वर्णित हैं। —ए० बं० ६५६५

बृहन्निर्वाणतन्त्र

लि०—(१) चण्डिका-शङ्कर संवादरूप यह तन्त्र १४ पटलों में पूर्ण है। उनमें प्रतिपादित विषय हैं—ब्रह्माण्ड-वर्णन, सृष्टिनिरूपण, प्रकृति की प्रशंसा, गोलोकादि का कथन, ज्ञान-पद्मकथन, उक्त पद्म के ऊपरी भाग का विवरण, तत्त्व-ज्ञान कथन, वैष्णव तत्त्व कथन, दशाक्षर मन्त्र का माहात्म्य, अवधूत-लक्षण कथन आदि।

—रा० ला० २७४

बृहन्नीलतन्त्र

लि०—(१) यह शिव-पार्वती संवादरूप महातन्त्र चतुःषष्टि (६४) महातन्त्रों में अन्यतम तथा २३ पटलों में पूर्ण है। श्लोक सं० ३२२५। इसमें प्रतिपादित प्रमुख विषय हैं—नील सरस्वती बीज आदि, स्नान, तिलक आदि का प्रकार, एक लिङ्ग स्थान का लक्षण, साधन योग्य स्थान, नील सरस्वती पूजाविधि, पुष्प, त्रिविध गुरु, बलिदान-मन्त्र, सन्ध्या का प्रकार, अष्टाङ्गप्राणायाम-लक्षण, दीक्षाविधि, दीक्षाकाल, स्थान, नक्षत्र आदि का निरूपण, पुरश्चरणविधि, काम्यपूजाविधि, द्विजों के लिए सुरापान में प्रायश्चित्त, पीठपूजाविधि, कौलिकार्चन-माहात्म्य, शक्तिपूजाप्रकार, कालिका, रटन्ती, अन्नपूर्णा आदि की पूजाविधि, षट्कर्मनिरूपण, ज्योती-रूप दर्शन के उपाय, निग्रह के उपाय, वशीकरण, शान्तिस्तोत्र आदि। —रा० ला० १६५५

(२) श्लोक सं० २०००। —अ० ब० १०१६०

(३) महाकाल भैरव प्रोक्त। —जं० का० १०५८

(४) श्लोक सं० ३२१४, पूर्ण। —सं० वि० २४९७६

उ०—प्राणतोषिणी में।

बोधपञ्चाशिका

लि०—अभिनव गुप्त कृत। पूर्ण।

—डे० का० ४७० (१८७५–७६ ई०)

बोध-विलास

लि०—हर्षदत्तसूनु कृत। पूर्ण। —डे० का० ४७२ (१८७५–७६ ई०)

ब्रह्मज्ञानतन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० १२०। —अ० ब० १०२६९

(२) यह उमा-महेश्वर संवादरूप है। पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पाँच तत्त्व किससे उत्पन्न होते हैं फिर सृष्टि कहाँ लीन हो जाती है? पार्वतीजी के इत्यादि प्रश्नों का उत्तर देते हुए भगवान् शङ्कर ने इसमें शारीरिक पदार्थों में चन्द्र, सूर्य आदि बाह्य पदार्थों की भावना आदि से ज्ञानोत्पादन का प्रकार बतलाया है। श्लोक सं० १२०। —रा० ला० ४११

उ०—प्राणतोषिणी में।

ब्रह्मज्ञाननिरूपण

लि०—श्लोक सं० १५६, अपूर्ण। —सं० वि० २६६९१

ब्रह्मज्ञानमहातन्त्रराज

लि०—(१) यह शिव-पार्वती संवादरूप है। —ए० बं० ५९८८

(२) पार्वतीजी के इस प्रश्न पर कि किससे सृष्टि होती है; किससे उसका विनाश होता है और सृष्टि-संहार से वर्जित ब्रह्मज्ञान कैसे होता है? भगवान् का तान्त्रिक क्रम से ब्रह्मज्ञान कथन। —रा० ला० ४०८

(३) पाँचवें पटल तक। अपूर्ण। —बं० प० १६२५

(४) —कैट्. कैट्. १।३८०

उ०—प्राणतोषिणी में।

ब्रह्मज्ञानशास्त्र

लि०—नन्दीश्वर भाषित। इसमें अनाहत नाद १० प्रकार का बतलाया गया है। —ए० बं० ६१२७

ब्रह्मतान्त्रिक

लि०—श्लोक सं० ६०६। इसमें गायत्री तथा अन्यान्य मन्त्रों के ऋषि, छन्द, देवता, वीज, शक्ति, तत्त्व, वर्ण, स्वर, मुद्रा, फल, कीलक आदि दिये गये हैं।

—ट्रि० कै० १००७

ब्रह्मनारदसंवाद

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

ब्रह्मनिरूपण

लि०—(१) चण्डिकाशंकर संवादरूप। यह विभिन्न तन्त्रों के खण्डों (भागों) से निर्मित है। सृष्टि, चक्र, नाड़ी और शक्ति की पूजा का प्रतिपादन करता है।

—ए० वं० ६२७६

(२) अपूर्ण। —र० मं० ९८९

ब्रह्मयामल

लि०—(१) किंवदन्ती है कि पूर्ण ब्रह्मयामल १२५००० श्लोकात्मक है और वह तन्त्र के पूर्वाम्नाय, दक्षिणाम्नाय, पश्चिमाम्नाय, उत्तराम्नाय, ऊर्ध्वाम्नाय आदि छहों आम्नायों से सम्बद्ध है। यह केवल १२००० श्लोकात्मक उसका एक अंश मात्र है और संभवतः केवल पश्चिमाम्नाय से ही सम्बद्ध है। यह १०१ पटलों में पूर्ण है। पुष्पिका में लिखा है—'महाभैरवतन्त्रे विद्यापीठे ब्रह्मयामले नवाक्षरविधाने पिचुमते द्वादशसाहस्त्रिके एकोत्तरशततमः पटलः।' श्लोक सं० ३५०, अपूर्ण।

—ने० द० २।३७०

(२) शिव और ब्रह्मा संवादरूप। १२५००० श्लोकात्मक विद्यापीठ पर अवतारित ब्रह्मयामल के ४ अध्याय भर इसमें हैं। —ट्रि० कै० ११०३ (ख)

उ०—तारारहस्यवृत्ति में।

ब्रह्मयामलतन्त्र या यामलतन्त्र

लि०—(१) स्वरोदय स्वरशास्त्रविषयक ग्रन्थ है। मात्रास्वरचक्र, वर्णस्वरचक्र, जीवस्वरचक्र, राशिस्वरचक्र, भेदनस्वरचक्र, ऋतुस्वरचक्र, पक्षस्वरचक्र, तिथिस्वरचक्र आदि ५७ स्वरचक्रों का इसमें वर्णन है। —ए० वं० ५८९२

(२) ब्रह्मयामलतन्त्रे आचारसारप्रकरण, ब्रह्मयामलतन्त्रे ऊर्ध्वजननशांति, ०गुह्य कवच, ०चैतन्यकल्प, ०जानकीत्रलोक्यमोहनकवच, ०त्रैलोक्यमंगल सूर्यकवच, ०नारायण-

प्रश्नावली, ०रकारादि सहस्रनाम, ०रामकवच, ०रामत्रैलोक्यमोहन कवच, ०राम-सहस्रनाम, ०सर्वतोभद्र चक्र, ०सूर्यकवच। —कैट्. कट्. १।३८२

(३) ब्रह्मयामलतन्त्रे गायत्रीकवच, ०त्रैलोक्यनाथमोहन कवच, ०दुर्गाकवच। —कैट्. कैट्. २।८६

श्रीकण्ठी के अनुसार यहचतुःषष्टि (६४) तन्त्रों में अन्यतम है।

ब्रह्मशम्भुपद्धति

(ब्रह्मशम्भु विरचित) —कैट्. कैट्. ३।८२

उ०—वेदज्ञान द्वारा आत्मार्थपूजापद्धति में इसका उल्लेख किया गया है।

ब्रह्मशापविमोचनमन्त्र

लि०—श्लोक सं० १५, पूर्ण। ब्रह्मास्त्रविद्या भी इसमें संमिलित है। —सं० वि० २४२७९

ब्रह्मसंहिता

लि०—(१) यह कपिञ्जल-मार्कण्डेय संवादरूप, मारर्कण्डेय-नारद संवादरूप और ब्रह्म-नारद संवादरूप है। यह वैष्णव तन्त्र है। अन्य वैष्णव तन्त्रों के समान यह भी दक्षिण भारत में ही प्रसिद्ध है। इसका दूसरा नाम वैष्णवरहस्य है। इसमें बहुतसे व्रत प्रतिपादित हैं, जो अब भारतवर्ष में धारावाहिक रूप से प्रचलित हैं। अन्त में इसमें मन्दिर और मूर्ति-निर्माण के विषय में भी कहा गया है।

इसके विषय हैं—शारीरिकव्रतकल्पना, नव व्यूहावतार, पुण्यविधिनिर्णय, चातुर्मास्य व्रतविधान, पवित्रारोहण, जयन्त्यष्टमीव्रत, युगावतारव्रत, मासोपवास, भीष्मपंचक-कल्पव्रत, यमपुरीमार्ग, यमदूत, नरकयातना आदि। —ने० द० १।३८० (ख)

(२) यह कृष्णपूजा पर रचा गया है। कहा जाता है कि इसमें १०० अध्याय हैं। इसमें बहुत-से उपनिषदों के उद्धरण उद्धृत हैं। इस पर रूपगोस्वामी की दिग्दर्शिनी टीका है। ब्रह्मसंहिता में गोपालकवचपञ्जर तथा नृसिंहकवच। —कैट्. कैट्. ३।८२

उ०—पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, तन्त्रसार तथा आगमतत्त्वविलास में।

ब्रह्मसन्धान

लि०—शिव-स्कन्द संवादरूप। २८ पटलों में पूर्ण। उत्क्रान्ति-निर्णय, त्रिस्थानों में स्थित ब्रह्म का निर्णय, प्राणनिर्णय, दो अयनों का निर्णय, ग्रहणनिर्णय, निष्प्रपञ्च समरस, भूतों की उत्पत्ति पर विचार आदि विविध विषय इसमें वर्णित हैं। —ए० बं० ५९९०

ब्रह्मसिद्धान्त या ब्रह्मसिद्धान्तपद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० ५००। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—अनाम और अव्यक्त तत्त्व का निरूपण, उसके गुण, ब्रह्माण्डपिण्ड और उसके गुण, ब्रह्माण्डपिण्ड से शिव की उत्पत्ति, शिव से भैरव, भैरव से श्रीकण्ठ आदि की उत्पत्ति, उनसे पञ्च तत्त्व रूप प्रकृतिपिण्ड की उत्पत्ति, क्षुधा, तृषा आदि का कथन, अन्तःकरण और उसके गुणों का कथन, सत्त्व, रज और तम, महाकाल जीवात्मक पञ्चकुलेश और उसके गुणों का कीर्तन, जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति आदि अवस्थाओं का निरूपण, इच्छा, क्रिया आदि पाँच गुणों में प्रत्येक के पाँच पाँच गुणों का निरूपण, कर्म, काम, चन्द्र, सूर्य, अग्नि—इन पाँचों का, इनके गुणों और कलाओं का कथन।
—रा० ला० ७७०

(२) —कैट्. कैट्. १।३८३, २।८६

ब्रह्माण्डकल्प

लि०—इसमें रासायनिक विधि से चाँदी बनाना, पारे की विविध औषधियाँ बनाना एवं अन्यान्य ऐन्द्रजालिक कारनामे प्रतिपादित हैं।

शनि या भौम-वार को नरमुण्ड (मनुष्य की खोपड़ी) लावे। उसका जतन से कपड़छान चूर्ण कर मिट्टी के चिकने बर्तन में रखे इत्यादि बहुत-सी विधियाँ कही गयी हैं।
—बी० कै० १२५१

ब्रह्माण्डज्ञानतन्त्र

लि०—पार्वती-ईश्वर संवादरूप। श्लोक सं० २४०। पाँच पटलों में पूर्ण है। इसमें ब्रह्मतत्त्व का निरूपण है। —रा० ला० २४८

ब्रह्माण्डज्ञानमहाराजतन्त्र

लि०— —कैट्. कैट्. १।३८७

ब्रह्माण्डतन्त्र

लि०— —कैट्. कैट्. १।३८७

ब्रह्माण्डनिर्णय

लि०—ब्रह्मयामल में उक्त, ईश्वर-पार्वती संवादरूप। इसमें संक्षेपतः सृष्टि-प्रकरण पर प्रकाश डाला गया है। —नो० सं० ४।१८३

ब्रह्माण्डयामल

लि०—पञ्चमी-साधन मात्र। —कैट्. कैट्. १।३८८

ब्रह्मास्त्रकल्प

लि०— —कैट्. कैट्. १।३८९

ब्रह्मास्त्रकवच

लि०— —कैट्. कैट्. १।३८९

ब्रह्मास्त्रकार्यसाधन

लि०— —कैट्. कैट्. १।३८९

ब्रह्मास्त्रपद्धति

लि०—कृष्णचन्द्र विरचित। —कैट्. कैट्. १।३८९

ब्रह्मास्त्रपूजन

लि०—मयूर पण्डित विरचित, श्लोक सं० ४८९, पूर्ण।

—सं० वि० २४००२

ब्रह्मास्त्रविद्या

लि०—(१) यह मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, उन्मादन आदि के सम्बन्ध में वगलामुखी देवी की पूजा-प्रक्रिया का प्रतिपादक है।

—ए० बं० ६३९३

(२) दक्षिणामूर्तिसंहिता के अन्तर्गत, श्लोक सं० १४०, पूर्ण।

—सं० वि० २५९७३

ब्रह्मास्त्रविद्यानित्यपूजा

लि०—शिवानन्द यति के शिष्य द्वारा विरचित, इसमें वगलामुखी देवी के उपासकों द्वारा पालनीय (करणीय) प्रातःकृत्यों का प्रतिपादनपूर्वक वगलामुखी की पूजा-प्रक्रिया वर्णित है। —ए० बं० ६३९४

ब्रह्मास्त्रविद्यापूजापद्धति

लि०—

—कैट्. कैट्. १।३८९

ब्रह्मास्त्रविधानपद्धति

लि०—

—कैट्. कैट्. १।३८९

ब्रह्मास्त्रसहस्रनाम

लि०—श्लोक सं० १८१। —अ० ब० १२६१७

ब्रह्मास्त्रसूत्र (दीपिका)

लि०—शाङ्खायन विरचित, सूत्र सं० १४५। —अ० ब० १२३७९

ब्राह्मणचिन्तामणितन्त्र

लि०—(१) पटल सं० १४, पूर्ण। —वं० प० २९९

(२) श्लोक सं० १८३, पूर्ण, (पटल १ से ३ तक)।

—सं० वि० २५२५७

ब्राह्मीकला

यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों में अन्यतम है।

ब्राह्मीतन्त्र

उ०—यह उल्लिखित है। —कैट्. कैट्. १।३८९

भक्तव्रातसंतोषक

लि०—इसका दूसरा नाम प्रयोगरत्नाकर है। इसके रचयिता प्रेमनिधि पन्त हैं।

—कैट्. कैट्. २।७९

भक्तिकुलसर्वस्व

लि०—शिव-पार्वती संवादरूप। पार्वतीजी के यह प्रश्न करने पर कि जिस साधन से साधकों को उत्तम गति प्राप्त होती है? भगवन्, वह साधन मुझे बताने की कृपा कीजिए। भगवान् शिवजी ने उत्तर में कहा—पूजा, ध्यान, जप, बलि, न्यास, धूपदीप, भूतशुद्धि, पुष्प, चन्दन, हवन आदि के बिना जिस साधन से देवी प्रसन्न होती है और साधकों का कल्याण होता है, वह तारा-सहस्रनाम है। उसी सहस्रनाम का इसमें प्रतिपादन किया गया है।

—नो० सं० ४।१८७

भक्तितन्त्र

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

भक्तिमञ्जरी

उ०—आगमतत्त्वविलास में।

भक्त्यानन्दैकाक्षरपद्धति

—अ० व० ८०५०

लि०—श्लोक सं० ३००, (२ प्रकरण मात्र)।

भगपूजाविधि

—सं० वि० २६३५४

लि०—श्लोक सं० ८८, अपूर्ण।

भगमालिनीसंहिता

लि०—यह नित्याषोडशिकार्णव का एक भाग है। द्वात्रिंशत्कोटिविस्तीर्णे नित्याषोडशिकार्णवे तन्त्रे भगमालिनीसंहितायांशतसाहस्रिकायाम्। —इ० आ० २५४१

भगवतीपूजाविधि

लि०—इसमें दुर्गादेवी की पूजाविधि प्रतिपादित है। —क० का० ५३

भगवत्युत्तरतन्त्र

—प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

लि०—

भगवत्स्तुति

लि०—रामकृष्णानन्दतीर्थ-शिष्य सत्यज्ञानानन्द तीर्थयति कृत।

—इ० आ० २६२७

भगवद्धस्त्रमन्त्रपटल

—र० मं० १०५३

लि०—डामरतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ३०, पूर्ण।

भगवन्नामामृतरसोदय

लि०—(१) विश्वाधिकेन्द्र-शिष्य बोधेन्द्र सरस्वती कृत, श्लोक सं० ३००।

—अ० ब० ६६८०

(२) —कैट्. कैट्. १।३९४

भद्रकालीचिन्तामणि

लि०—(१) श्लोक सं० १४६४, अपूर्ण। —र० मं० ४८४५

(२) श्लोक सं० ८१०। —डे० का० २३७

(३) —भ. रि. २८५

भद्रकालीपञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक सं० ३७४, पूर्ण। —र० मं० ४८४४

भद्रकालीप्रयोग

लि०—वीरतन्त्र के १४ वें पटल के अन्तर्गत, पूर्ण। यह ललितारहस्य के साथ संमिलित है। —सं० वि० २५७५१

भद्रकालीसहस्रनाम

लि०— —भ० रि० २०७

भद्रतन्त्र

लि०—देवी-शिव संवादरूप। इसमें वशीकरण, मोहन, मारण, उच्चाटन आदि के साधनार्थ मन्त्र और विधियाँ निर्दिष्ट हैं। —ए० बं० ६०८९

भद्रदीपक्रिया

लि०—श्लोक सं० १५५०। सात्त्वत आदि विविध तन्त्रों में वर्णित दीपाराधन क्रिया का इसमें उल्लेख है। —ट्रि० कै० १००९ (क)

भद्रदीपदीपिका

लि०—नारायण कृत। श्रीकण्ठ प्रस्तुत ग्रन्थकार के प्रेरक थे। ग्रन्थकार ने अपने पिता की आज्ञा से कोलभूपाल द्वारा अनुष्ठित यज्ञ में भाग लिया था। यह भद्रदीपक्रिया नारायण से पृथ्वी और नारद को प्राप्त हुई। उन्होंने इसका अपने भक्तों में प्रचार किया। इससे मनुष्यों के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारों पुरुषार्थ शीघ्र सिद्ध हो जाते हैं।

—ट्रि० कै० १०१०

भर्गशिखा

उ०—तन्त्रालोक, शिवसूत्रविमर्शिनी तथा साम्बपञ्चाशिका में।

भवानीकवच

लि०—(१) श्लोक सं० १५, रुद्रयामल से गृहीत, इसकी तीन प्रतियाँ हैं।

—अ० ब० ३४७७, ८७९१ और १३८६८

(२) रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक सं० २८, पूर्ण।

—र० मं० १०९४ (क)

(३) —कैट्. कट्. १।३९९, ३।८५

भवानीपञ्चाङ्ग

लि०——रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० ६३०, पूर्ण।

——र० मं० ४८१९

भवानीपूजापद्धति

लि०——(१) रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० २२०, अपूर्ण।

——र० मं० ४८६६

(२) ——कैट्. कैट्. १।३९९

भवानीप्रयोग

लि०——श्लोक सं० लगभग ७०, पूर्ण। भवानीयन्त्र भी इसके साथ संलग्न है।

——सं० वि० २६५५४

भवानीसहस्रनामपटल

लि०——रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० ७८, अपूर्ण। ——सं० वि० २६६७५

भवानीसहस्रनामबीजाक्षरी

लि०——श्लोक सं० ३३६। ——डे० का० २३६

भवानीस्तवराज

लि०——(१) रुद्रयामलान्तर्गत। ——ए० बं० ६७०२

(२) ——कैट्. कैट्. १।३९९

भवानीस्तवशतक

लि०——श्लोक सं० १५०। सौ श्लोकों वाले इस भवानी-स्तव से सौ कमलों द्वारा देवीपूजा करने पर प्रचुर पुण्यलाभ होता है। ——रा० ला० ३७८

भवानीसहस्रनामस्तोत्र

लि०——(१) रुद्रयामलान्तर्गत। यह स्तोत्ररत्नाकर २य भाग में प्रकाशित हो चुका है। ——ए० बं० ६७००

(२) पूर्ण। ——वं० प० १६००

(३) (क) श्लोक सं० २२४, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १९०, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० २५९ पूर्ण।

——र० मं० (क) ५०३४ (ज), (ख) ४७६७ (ख), (ग) १०४४

(४) रुद्रयामल से गृहीत, श्लोक सं० २०३, अपूर्ण। --डे० का० ७६६

(५) रुद्रयामल से गृहीत। दे०, सकारादिसहस्रनाम।
--कैट्. कैट्. १।३९९, २।९०, ३।८६

भागेशमत

उ०--जन्ममरणविचार में।

भारद्वाजसंहिता या भरद्वाजसंहिता

लि०--(१) इसमें चार अध्याय है। उनके अतिरिक्त इसमें एक परिशिष्ट है। उसमें भी चार अध्याय हैं। --इ० आ० २५३५

(२) ४००० श्लोकात्मक यह संहिता चार अध्यायों में पूर्ण है। इसमें न्यासोपदेश विस्तार से वर्णित है। —नो० सं० ४।१९७

(३) इसमें वर्णित विषय हैं--आत्मसमर्पण ही भगवान् को प्रसन्न करने का उत्तम उपाय है, यह कथन, सब वर्णों के अधिकार, शरणागति का स्वरूप, दीक्षादि-विधि, प्रपन्न पुरुष की वृत्ति का निरूपण आदि। —रा० ला० २८१९

(४) इसमें कुल ८ अध्याय हैं। चार अध्यायों में न्यासोपदेश है और चार अध्यायों में परिशिष्ट। श्लोक सं० ६८०। --ट्रि० कै० १०११

(५) पञ्चरात्र, इसमें कार्तिक-माहात्म्य है। --तै० म० १९४४

(६) चार अध्यायों में। --कैट्. कैट्. २।९०

भावचिन्तामणि (१)

लि०--(१) इसमें ६ पटल हैं तथा बालकों की जन्मकुण्डली के अच्छे-बुरे फल उनमें वर्णित हैं। यह किसी बड़े ग्रन्थ का एक अंशमात्र प्रतीत होता है जो संभवतः सन्तान-कल्पदीपिका के नाम से प्रसिद्ध है। --ए० बं० ६०३७

(२) श्लोक सं० १३३। यह केवल षष्ठ (छठा) पटल मात्र है। इसका नामान्तर--सन्तानदीपिका भी है। यह ग्रन्थ छह पटलों में पूर्ण है। इसमें वर्णित विषय है--पुत्र की उत्पत्ति में प्रतिवन्धक शाप के मोचन का प्रतिपादन तथा पुत्रोत्पादक ग्रहयोग का वर्णन।
--रा० ला० १५२०

(३) भावचिन्तामणि या सन्तानदीपिका। —कैट्. कैट्. १।४०७

भावचूड़ामणि (२)

लि०—(१) रामकण्ठ-शिष्य विद्यानाथ कृत। इसमें दिव्य, वीर और पशुभाव के संकेत और उनके भेद वर्णित हैं। दिव्य, वीर और पशुक्रम से ब्रह्म की प्राप्ति कराने वाले भावों के लक्षण भी कहे गये हैं। —नो० सं० ४।२००

(२) विद्याकण्ठ (?) कृत। श्लोक सं० लगभग ३४००, पूर्ण। —र० मं० ५२२१

(३) इसमें दिव्य, वीर और पशु नाम से प्रसिद्ध पूजा-भेदों का वर्णन है (केवल १२ वाँ पटल उपलब्ध है)। —ए० बं० ६२७२

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमकल्पलता, तारारहस्यवृत्ति, सर्वोल्लास, आगमतत्त्वविलास, कुलप्रदीप, ताराभक्तिसुधार्णव, तन्त्रसार तथा रहस्यार्णव में।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों में अन्यतम है।

भावचूड़ामणिसंग्रह

लि०—विद्याकण्ठ कृत। —कैट्. कैट्. २।९३

भावदीपिका

लि०—पुष्कर-पौत्र तथा जनार्दन-पुत्र अच्युत धीर विरचित। सकल साधनाओं में भाव की आवश्यकता है। भाव को जाने बिना किसका किस कर्म में अधिकार है यह जानना संभव नहीं है। ऐसी स्थिति में सब लोग भ्रष्ट से होकर जाति, धन आदि सभी का वेदविरुद्ध रूप में उपयोग करते हैं। इसलिए बड़ी सावधानी के साथ भाव का इसमें निरूपण किया गया है। दिव्य, वीर और पशु के क्रम से भाव तीन प्रकार के होते हैं। उन भावों को क्रम से उत्तम, मध्यम और अधम जाति के अन्तर्गत माना गया है। इसमें भाव के निर्णय से ही साधक सिद्धिलाभ करता है, यह विचार करते हुए ब्रह्मज्ञान से ही अभीष्ट सिद्धि हो सकती है यह निरूपित है। —नो० सं० ४।२०१

भावनाप्रयोग

लि०—भास्करराय कृत, श्लोक सं० ३४०, पूर्ण। —सं० वि० २५०६९

भावनिरूपण

लि०—इसमें भावचूडामणि, निरुत्तरतन्त्र तथा कुब्जिकातन्त्र के उद्धरण हैं। रामगति सेन की तन्त्रचन्द्रिका, जो तन्त्रसंग्रहग्रन्थ है, का संभवतः यह एक भाग है। —ए० बं० ६२७४

भावनिर्णय

लि०—शङ्कराचार्यकृत, श्लोक सं० २००, पूर्ण। —सं० वि० २५१५०

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा भक्तिसुधातरङ्गिणी में।

भावनिर्णयोपाख्यान

लि०—श्लोक सं० २००। —अ० ब० १०१५६

भावनोपनिषत्प्रयोगविधि

लि०—(१) भास्करराय विरचित प्रयोगविधि नामक टीका सहित भावनोपनिषत्। यह प्रकाशित हो चुका है। अन्य विवरण उसमें देखें। जप-प्रयोग इसमें अलग से संलग्न है। उसमें लिखा है—पात्रासादन तथा कुलदीपनिवेदनान्त पूजा कर जप करना चाहिए। —ए० बं० ६१३३

(२) भास्करराय कृत। —कैट्. कैट्. ३।८८

भावप्रकाशपरिशिष्ट

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

भावसार

लि०—इसमें अध्यायों के बदले अभिप्राय हैं। केवल १म अभिप्राय ही उपलब्ध है। विषय है—परा विद्या की साधनविधि। —नो० सं० ४।२०२

भावार्थदीपिका (१)

लि०—यह ब्रह्मानन्द कृत आनन्दलहरी-टीका है।

—कैट्. कैट्. १।४०९

भावार्थदीपिका (२)

श्रीरामानन्द वाचस्पति भट्टाचार्य कृत बीजव्याकरणमहातन्त्र की टीका।

—इ० आ० २५७१

भुवनमालिनीकल्प

लि०— —कैट्. कैट्. १।४१३

भुवनाधिपतिमन्त्रकल्प

ल०—श्लोक सं० १९००, अपूर्ण। —अ० ब० ६८०५

भुवनेशीकल्पलता

लि०—राघवभट्ट-पौत्र, महादेवभट्ट-पुत्र वैद्यनाथभट्ट विरचित। इसमें भुवनेश्वरी के उपासक द्वारा पालनीय दैनिक कृत्यों का तथा भुवनेश्वरी की पूजा का विवरण दिया गया है।

दमन-पूजा, पवित्रार्चा, शारदी पूजा, कुमारियों की पूजा, होम-द्रव्य और उनका परिमाण, माला-संस्कार, मन्त्रों के १० संस्कार आदि विषय इसमें निरूपित हैं। —ए० बं० ६३८३

भुवनेशीजपविधि

लि०—श्लोक सं० ४८, पूर्ण। —सं० वि० २५५०३

भुवनेशीतन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

भुवनेशीपद्धति

लि०—महादेव विरचित। इसमें भुवनेश्वरी की पूजापद्धति प्रतिपादित है।
—ए० बं० ६३८५

भुवनेशीपारिजात

लि०—श्लोक सं० ३३०, अपूर्ण। —सं० वि० २५७०९

उ०—शारदातिलक-टीका राघवभट्टी तथा रघुनन्दन कृत मलमासतत्त्व में।

भुवनेशीप्रकाश

लि०—काशीनाथरथ-पुत्र श्रीवासुदेवरथ विरचित। इसमें भुवनेश्वरी देवी की पूजा का विवरण प्रतिपादित है। —ए० बं० ६३८२

भुवनेश्वरीकल्प

लि०—(१) श्लोक सं० ३००। —अ० ब० १७२६ (ख)

(२) रुद्रयामल से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।४१४

भुवनेश्वरी-कवचादि

लि०—(१) श्लोक सं० २००। —अ० ब० १०६१२ (क)

(२) (क) आगमसार से गृहीत। (ख) रुद्रयामल से गृहीत भुवनेश्वरी कवच मात्र। —कैट्. कैट्. १।४१४

भुवनेश्वरीक्रमचन्द्रिका

लि०—अनन्तदेव विरचित। श्लोक सं० ६७२, पूर्ण। ३ य पटल पर्यन्त।
—सं० वि० २५७०७

भुवनेश्वरीनित्यपूजापद्धति

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। —सं० वि० २६३७३

भुवनेश्वरीतन्त्र

लि०— —ने० द० २।३१५ (ख)

उ०—तन्त्रकौमुदी तथा आगमतत्त्वविलास में।

भुवनेश्वरीदण्डक

लि०—सिद्धानन्द कृत। —कैट्. कैट्. १।४१४

भुवनेश्वरीदीपदान

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें भुवनेश्वरी देवी के निमित्त प्रज्वलित दीपप्रदानविधि प्रतिपादित है। —बी० कै० १३१०

भुवनेश्वरीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) इसमें १. भवनेश्वरीपटल, जो रुद्रयामलान्तर्गत दशमहाविद्यारहस्य में उमा-महेश्वर संवादरूप से वर्णित है, २. भुवनेश्वरीपूजापद्धति, ३. भुवनेश्वरीसहस्रनाम, ४. भुवनेश्वरीस्तोत्र, ५. भुवनेश्वरीकवच आदि वर्णित हैं। —ए० बं० ६३८४

(२) श्लोक सं० ६००। —अ० ब० ९५९६

(३) रुद्रयामलान्तर्गत, (क) श्लोक सं० ७६८, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ४४०।
—र० मं० (क) ४८१३, (ख) ३८८७

(४) रुद्रयामलान्तर्गत। —रा० पु० ७०५६

(५) (क) श्लोक सं० ३३८, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३००, अपूर्ण। इसमें स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम, मन्त्रोद्धार, पूजा आदि विषय वर्णित हैं।
—सं० वि० (क) २४३३७, (ख) २५०७१

सिद्धेश्वरीपटल

लि०--(१) (क) श्लोक सं० १५३, पूर्ण। हरिहरात्मक स्तव तथा वज्रसूची उपनिषद् भी इसमें संमिलित हैं। (ख) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० १००, भुवनेश्वरी-नित्य-पूजापद्धति सहित, पूर्ण। --सं० वि० (क) २४१३३, (ख) २६३७३

(२) --कैट्. कैट्. १।४१४

भुवनेश्वरीपद्धति

लि०--(१) (क) श्लोक सं० ७७, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १५०, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० ९६, पूर्ण। सभी प्रतियाँ एक दूसरी से पृथक् प्रतीत होती हैं।
--सं० वि० (क) २४०३१, (ख) २४२००, (ग) २५२०५

(२) परमानन्द नाथ कृत। --कैट्. कैट्. १।४१४, २।९५

(३) (क) श्लोक सं० ९६०। (ख) श्लोक सं० ७००। (ग) श्लोक सं० १४०।
--अ० ब० (क) ८३६, (ख) १२०४८, (ग) ५६८८

(४) रुद्रयामलान्तर्गत। --रा० पु० ७०५६

भुवनेश्वरीपूजा

लि०--(१) इस ग्रन्थ में भवनेश्वरी-पूजा, ग्रहण के समय किया जाने वाला पुरश्चरण तथा विविध देवताओं के बीजमन्त्र प्रतिपादित हैं। --क० का० ७१

(२) (क) श्लोक सं० ७५, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ५०, अपूर्ण।
--सं० वि० (क) २४९९४, (ख) २४९९५

भुवनेश्वरीपूजापद्धति

लि०--(१) (क) श्लोक सं० ३५०। (ख) श्लोक सं० ७००। (ग) श्लोक सं० १३००, अपूर्ण। --अ० ब० (क) १०८३४, (ख) १०५६४, (ग) ३४८०

(२) श्लोक सं० ८५, अपूर्ण। --सं० वि० २६३६६

(३) शारदातिलक से गृहीत। --कैट्. कैट्. ३।८९

भुवनेश्वरीप्रयोग

लि०--श्लोक सं० १४४, अपूर्ण। --सं० वि० २६०१६

भुवनेश्वरीमन्त्रपद्धति

लि०--वासुदेव विरचित, श्लोक सं० ७६५, अपूर्ण।
--सं० वि० २५२११

भुवनेश्वरीमन्त्रविधि

लि०—श्लोक सं० ५३, अपूर्ण। —सं० वि० २४२१४

भुवनेश्वरीरहस्य (१)

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, पार्वती-शिव संवादरूप। इसमें २६ पटल हैं। उनमें विस्तारपूर्वक भुवनेश्वरी की पूजा तथा मन्त्रों का प्रतिपादन है।

—ए० बं० ५८८३

(२) (क) श्लोक सं० २५००, रुद्रयामल से गृहीत। (ख) श्लोक सं० २५००, रुद्रयामल से गृहीत। —अ० ब० (क) १०६९०, (ख) ९९५०

(३) रुद्रयामलान्तर्गत (क) श्लोक सं० ३४१७, पूर्ण। (ख) ७ म पटल से २४ वें पटल पर्यन्त, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २४२०१, (ख) २५६४५

(४) रुद्रयामल से गृहीत, २६ पटलों में।

—कैट्. कैट्. १।४१४

(५) भुवनेश्वरीरहस्य या भुवनेश्वरीसर्वस्व रुद्रयामल का अंश।

—इ० आ० २६०५

भुवनेश्वरीरहस्य (२)

लि०—कृष्णचन्द्र कृत। —कैट्. कैट्. १।४१४

भुवनेश्वरीवरिवस्यारहस्य

लि०—मथुरानाथ शुक्ल विरचित। —कैट्. कैट्. १।४१४

भुवनेश्वरीशान्तिप्रयोग

लि०— —कैट्. कैट्. १।४१४

भुवनेश्वरीसपर्या

लि०—उमानन्द विरचित, श्लोक सं० ४३०।

—अ० ब० ६५५

भुवनेश्वरीसहस्रनामस्तोत्र

लि०—मेरुविहारतन्त्रान्तर्गत, शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें भुवनेश्वरी देवी के सहस्र नाम वर्णित हैं। —रा० ला० ७४३

भुवनेश्वरीस्तव-टीका

लि०——उपेन्द्रभट्ट-वंशोद्भव श्रीगौरमोहन विद्यालङ्कार भट्टाचार्य विरचित। इसमें भुवनेश्वरीस्तव का व्याख्यान है। ——नो० सं० ३।२०६

भुवनेश्वरीस्तोत्र

लि०——(१) पृथ्वीधराचार्य विरचित, श्लोक सं० १३०, पूर्ण।

——र० मं० ४४९२

(२) शम्भुनाथ-शिष्य पृथ्वीधराचार्य कृत, सटीक। टीकाकार——श्रीदत्त-पौत्र दामोदरदत्त-पुत्र पद्मनाभदत्त। टीका नाम——सिद्धान्तसरस्वती टीका।

——डे० का० ३५९ (१८७९।८० ई०)

(३) पृथ्वीधराचार्य कृत, पद्मनाभ कृत टीका युक्त। श्लोक सं० लगभग १५४० षट्पञ्चाशिका (पृथुयश कृत) आदि ४ अन्य ग्रन्थों सहित।

——डे० का० २३८ (१८८३-८४ ई०)

(४) भुवनेश्वरीस्तोत्र या सिद्धसारस्वतस्तोत्र, पृथ्वीधराचार्य कृत। इस पर पद्मनाभ कृत टीका है। ——कैट्. कैट्. १।४१४

भुवनेश्वरीस्तोत्र और कवच

लि०——यह स्तोत्र शारदातिलक से और कवच रुद्रयामल से उद्धृत है।

——ए० बं० ६७०४

भुवनेश्वर्यर्चनपद्धति

लि०——(१) पृथ्वीधराचार्य कृत, श्लोक सं० १७८, पूर्ण।

——सं० वि० २५४३५

(२) ——कैट्. कैट्. १।४१४

भूतक्षोभ

उ०——तन्त्रालोक में।

भूतडामरतन्त्र

लि०——(१) यह चतुःषष्टि (६४) मूल तन्त्रोंमें अन्यतम है। इसको तान्त्रिक निबन्धकारों ने अपने निबन्धों में बहुधा उद्धृत किया है; किन्तु इसकी पूर्ण हस्तलिखित प्रति अतिदुर्लभ है। प्रस्तुत प्रति में केवल १४ पटल बतलाये गये हैं। यह सर्वथा

अपूर्ण है। श्लोक सं० ५१२। इसमें प्रतिपादित विषय है—भूतडामर का विवरण, मारण मन्त्रों का प्रतिपादन, सुन्दरीसाधन, पिशाचीसाधन, कात्यायनीमन्त्र-साधन, सिद्धिसाधन, अप्सरसी-साधन, यक्षिणी-साधन, अष्टनागिनी-साधन, किन्नरी-साधन, परिषन्मण्डल की क्रोधविधि, अपराजिता आदि का ससिद्धिसाधन आदि। —रा० ला० १५९८

(२) यह ६४ मौलिक महातन्त्रों में अन्यतम है। तान्त्रिक ग्रन्थों के रचयिताओं ने प्रचुर मात्रा में इसके उद्धरण लिये हैं। इसकी पूर्ण प्रति अत्यन्त दुर्लभ है, इसलिए इसका परिमाण (श्लोक और पटलसंख्या आदि) अज्ञात है। —क० का० ५१

(३) इसके १५ पटलों के विषय यों प्रदर्शित हैं। भूतडामर के सम्बन्ध में परिचय, दीक्षाविधि, सुन्दरी की तान्त्रिक पूजा, पिशाची की रहस्य पूजा (उसे अपने वश में करने के लिए), कात्यायनी की रहस्य पूजा, केङ्करी की रहस्य पूजा, चेटिका की रहस्य पूजा, भूतिनी की रहस्य पूजा, अप्सराओं की रहस्य पूजा, यक्षिणी की रहस्य पूजा, आठ नागिनियों की रहस्य पूजा, किन्नरियों की तान्त्रिक पूजा, अपराजिता की पूजा आदि।

—बी० कै० १२५९

(४) यह उन्मत्तभैरव-उन्मत्तभैरवी संवादरूप है। —ए० बं० ५८४९

(५) (क) श्लोक सं० १०००, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० १०५०।

—अ० ब० (क) ९१६८, (ख) १३६९६

(६) इसमें इन्द्रजाल, विविध देवदेवी-साधना आदि तान्त्रिक विधियाँ वर्णित हैं। यह महातन्त्र है। इसके १५ पटलों में वर्णित विषय हैं—सुन्दरी-साधन, पिशाचिनी तथा चेटिका के मन्त्र का साधन, कात्यायनी-साधन, देवता-साधन, भूतिनी-साधन, स्वर्णवती-साधन, अप्सरा-साधन, यक्षिणी-साधन, नागिनी-साधन, किन्नरी-साधन आदि।

—ने० द० २।२४६ (ख)

(७) (क) १५ पटलों तक पूर्ण। (ख) अपूर्ण।

—बं० प० (क) ७८४१, (ख) १३०२

(८) श्लोक सं० ७००, पटल १ से १५ तक, पूर्ण। —सं० वि० २६४५६

(९) नाम—भूतडामरमहातन्त्रराज। उन्मत्तभैरवी-उन्मत्तभैरव संवादरूप यह महातन्त्र १५ पटलों में पूर्ण है। —इ० आ० २५५१

(१०) इसके अन्त में यक्षडामर भी है। —भ० रि० २९५

उ०—मन्त्रमहार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, आगमतत्त्वविलास, तथा प्राणतोषिणी में।

भूतभूतिनीसाधनविधि

लि०--भूतडामरतन्त्र में उक्त। पत्रे ७४। —रा० पु० ५४२९

भूतभैरव या भूततन्त्र

लि०--(१) परमहंस पारिव्राजक क्रोधीशभैरव कृत । इसमें भूतडामर तथा-यक्षडामर में अवर्णित बीजों का विधान है एवं अकार से लेकर क्षकार पर्यन्त वर्णों (मातृकाक्षरों) की संज्ञा भी निर्दिष्ट है। —ए० बं० ५८५७

(२) —कैट्. कैट्. १।४१४, २।९५, ३।८९

उ०--(भूतभैरवतन्त्र का) तन्त्रसार तथा आगमतत्त्वविलास में।

भूतलक्षण

लि०-- —कैट्. कैट्. १।४१४

भूतलिपि-उद्धारक्रम

उ०--योगिनीहृदयदीपिका में।

भूतलिपिमातृकापूजाविधि

लि०--श्लोक सं० ३०। —अ० ब० ११८२४ (घ)

भूतविवेक

लि०-- —कैट्. कैट्. १।४१४

भूतशुद्धि

लि०--(१) दो प्रतियाँ हैं--(क) पत्रे ११ और (ख) पत्रे ७।
—रा० पु० (क) ६४१६, (ख) ७००३

(२) भूतशुद्धि क्या है और किस प्रकार की जाती है? आत्मरक्षा किस प्रकार करनी चाहिए एवं मातृकान्यास कब करना चाहिए? ये सब विषय इसमें वर्णित हैं।
—म० द० ५६८७ से ९० तक

(३) श्लोक सं० १२०, पूर्ण (प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका और बहिर्मातृका सहित)
—सं० वि० २५८६०

[सं० वि० में इसकी पूर्ण तथा अपूर्ण १॥ दर्जन प्रतियाँ और हैं।]

भूतशुद्धितन्त्र

लि०––(१) १ म से १३ वें पटल तक पूर्ण। ––वं० प० १३०३

(२) श्लोक सं० लगभग १२५, पटल १म से ४ र्थ तक पूर्ण।

––सं० वि० २५७५४

(३) (क) हर-पार्वती संवादरूप। श्लोक सं० ७६०, इसमें १७ पटल हैं और तत्त्वत्रय का वर्णन है। (ख) १६ पटल पूर्ण १७ वाँ अपूर्ण।

––ए० बं० (क) ५९८३, (ख) ५९८४

उ०––पुरश्चर्यार्णव, कौलिकार्चनदीपिका, कालिकासपर्याविधि तथा शाक्तानन्द-तरङ्गिणी में।

(संभवतः भूतशुद्धितन्त्र दो होंगे। एक में पटल सं० १७ कही गयी है और दूसरे में १३।) ––सं०

भूतशुद्धि आदि

लि०––(१) (क) श्लोक सं० ८०। (ख) श्लोक सं० १५०, अपूर्ण। इसका [(ख) का] नाम भूतशुद्ध्यादि लिखा है।

––अ० ब० (क) ३४७८, (ख) ११७४३

(२) आदि पद से प्राणप्रतिष्ठा और मातृकान्यास गृहीत होते हैं।

––रा० पु० ४१८१

(३) श्लोक सं० ३३, पूर्ण। आदि पद से केवल प्राणप्रतिष्ठा गृहीत है।

––सं० वि० २३८९४

भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठा

लि०––(१) इसमें दो तान्त्रिक क्रियाओं––भूतशुद्धि और प्राणप्रतिष्ठा की पद्धति वर्णित है। ––ए० बं० ६५६७

(२) (क) भूतशुद्धि-प्राणप्रतिष्ठा, (ख) भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठाविधि, (ग) भूतशुद्धि-प्राणप्रतिष्ठा-मातृकान्यास, (घ) भूतशुद्धि-मातृकान्यासादि, (ङ) भूतशुद्ध्या-दयः, (च) भूतशुद्ध्यादि, (छ) भूतशुद्ध्यादिप्रयोग, (ज) भूतशुद्ध्यादिविधि–– ये ८ पुस्तकें प्रायः एक ही प्रकार के विषय की हैं। क्रमशः उनकी सं० नीचे दी जाती है।

––सं० वि० (क) २३८९४, (ख) २६२७९, (ग) २५३५०, (घ) २६५५८, (ङ) २६०८३, (च) २६६१४, (छ) २६१६२, (ज) २५६८३

भूतितन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

भूतिरुद्राक्षमाहात्म्य

लि०—(१) परमहंस परिव्राजक अभिनवनारायण सरस्वती-शिष्य परमशिवेन्द्र सरस्वती विरचित। इसमें शिवजी की प्रीति के लिए विभूति के उपयोग तथा रुद्राक्ष-धारण की अत्यन्त आवश्यकता वर्णित है। —ए० वं० ६५५३

भूतोच्चाटनविधि

लि०—श्लोक सं० १३, अपूर्ण। —सं० वि० २५६१४

भूतोड्डामर

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से

भूतशुद्धि या भूशुद्धि

लि०—श्लोक सं० १२५। —अ० ब० १३९११

भूपसमुच्चयतन्त्र

लि०— कैट्. कैट्. १।४१५

भूलक्षणपटल

लि०— —कैट्. कैट्. १।४१५

भृगुपटल

लि०— —कैट्. कैट्. १।४१५

भृगुसंहिता

लि०— —कैट्. कैट्. १।४१५

भृङ्गीशसंहिता

लि०—दे०, अमरनाथपटल। —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से

भेदवादनवारण

नामान्तर—भेदवाद विदारिणी

लि०—अभिनव गुप्त कृत, पूर्ण। —डे० का ४७१ (१८७५-७६ ई०)

उ०— ग्रन्थकार ने ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी में इसका उल्लेख किया है।

भेदिका

(भावार्थदीपिका-टीका)

रामतनु शर्मा द्वारा, जो मूलग्रन्थकार के शिष्य थे, विरचित। —इ० आ० २५७२

भैरवडामर

उ०—सच्चिदानन्द सरस्वती कृत ज्ञानप्रदीप में।

भैरवतन्त्र

लि०—(१) ईश्वर-पार्वती संवादरूप। इसमें वह्निसाधन, सूर्यसाधन, धूमसाधन, शीतसाधन, मेरुसाधन आदि मन्त्रसिद्धि के उपाय वर्णित हैं। हारकतन्त्र इसी तन्त्र का एक भाग प्रतीत होता है। —ए० बं० ६०४१

(२) (१) भैरवतन्त्र में (क) आनन्दकाण्ड।
,, (ख) दक्षिणकालीकवच।
,, (ग) बीजकोष।
,, (घ) श्यामाकवच।
,, (ङ) बटुकभैरवसहस्रनाम।
,, (च) सरस्वतीसहस्रनाम।

—कैट्. कैट्. १।४१७, ३।९७

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, श्यामारहस्य तथा आगमतत्त्वविलास में।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों में अन्यतम है।

भैरवतन्त्रमन्त्रसंकेतसंग्रह

लि०— भ० रि०

भैरवदीपदान

लि०—(१) श्लोक सं० १००। —अ० ब० ३४५७
(२) —कैट्. कैट्. १।४१७

भैरवदीपदानविधि (१)

लि०—(१) उमा-महेश्वर संवादरूप। श्लोक सं० २२। इसमें बटुकभैरव-दीपदानविधि और उसका फल वर्णित है। —रा० ला० ४० ४४

(२) भैरवीतन्त्रान्तर्गत। विवरण ऊपर दिया है--रा. ला. ४०४४ में। इसमें बटुकभैरव के प्रति दीपदानविधि वर्णित है। --ए० बं० ६०४२

(३) भैरवतन्त्रीय, श्लोक सं० ६७, पूर्ण। --सं० वि० २५३१६

भैरवदीपदानविधि (२)

लि०--रामचन्द्र कृत। --कैट्. कैट्. ३।९०

भैरवदीपविधि

लि०--श्लोक सं० ६७, पूर्ण। लिपिकाल सं० १७९० वि०। --सं० वि० २६५९६

भैरवनाथतन्त्र

उ०--Oxford (आक्सफोर्ड) १०८ (ख) के अनुसार इसका उल्लेख है। --कैट्. कैट्. १।४१७

भैरवपद्धति

लि०--(१) मुख्य मुख्य तन्त्रों से संगृहीत। इसमें भैरव की पूजा के लिए निम्न निर्दिष्ट रीति से निर्देश है--साधक रविवार को ब्राह्ममहूर्त में दक्षिणाङ्ग से उठकर इष्टदेव भैरव का स्मरण करते हुए बाँयें पैर को भूमि पर रख, आवश्यक कृत्य कर, हाथ पैर धोकर और रात्रि के वस्त्र बदल कर, भैरव-स्वरूप का ध्यान कर मन्त्र का एक लक्ष जप कर उसका दशांश होम नमक मिली सरसों से करे। --बी० कै० १२४८

(२) (क) श्लोक सं० ६८, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ७७, प्रयोगसारान्तर्गत, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ५२६, अपूर्ण (?)।

--सं० वि० (क) २३८९६, (ख) २६०२२, (ग) २६०७४

(३) (क) श्लोक सं० २५०, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ९०। (ग) श्लोक सं० ६००, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० ४००, अपूर्ण।

--अ० ब० (क) २०१, (ख) ३४८१, (ग) ३४७९, (घ) १११३

(४) (क) मन्त्रचिन्तामणि से गृहीत तथा (ख) रुद्रयामल से गृहीत। --कैट्. कैट्. १।४१७

भैरवपुरश्चरणविधि

लि०--शिवागमसार में उक्त। --रा० पु० ५००५

भैरवपूजन

लि०––श्लोक सं० ६० । ––अ० व० ८४७८

भैरवपूजापद्धति

लि०––(१) रामचन्द्र विरचित । इसमें पूजक (साधक) द्वारा अवश्य करणीय प्रातःकृत्यों से लेकर साङ्गोपाङ्ग वटुकभैरवपूजापद्धति प्रतिपादित है। ज्ञात होता है, यह कृष्णभट्ट कृत भैरवपूजापद्धति के आधार पर लिखी गयी है ।

––ए० बं० ६४६७

(२) श्लोक सं० ३६०, पूर्ण। ––सं० वि० २३८९५

भैरवप्रयोग

लि०–– ––कैट्. कैट्. १।४१७

भैरवनामावली

लि०–– ––कैट्. कैट्. १।४१७

भैरवयामल

लि०––(१) भैरवस्तवमात्र, पूर्ण ।

––डे० का० ४७५ (१८७५-७६ ई०)

(२) भैरवयामलान्तर्गत––भैरवस्तव तथा सुवर्णाकर्षणभैरवस्तोत्र ।

––कैट्. कैट्. १।४१७

(३) ––कैट्. कैट्. २।९५

(४) भैरवयामल में दक्षिणकालिकास्तव । ––कैट्. कैट्. ३।९०

उ०––चिद्वल्ली तथा सौन्दर्यलहरी की टीका अरुणामोदिनी में ।

भैरवसंहिता

उ०––देवनाथ द्वारा तन्त्रकौमुदी में ।

भैरवसपर्याविधि

लि०––मथुरानाथ शुक्ल कृत । ––कैट्. कैट्. १।४१७

भैरवसहस्रनाम

लि०––रुद्रयामलान्तर्गत । ––कैट्. कैट्. १।४१७

भैरवस्तव

लि०—(१) अभिनवगुप्त कृत, पूर्ण ।

—डे० का० ४७६ (१८७५-७६ ई०)

(२) (क) अभिनवगुप्त कृत, (ख) भैरवयामलतन्त्र से गृहीत ।

—कैट्. कैट्. १।४१७

भैरवस्तवपाठविधि,
भैरवस्तवपुरश्चरण-श्लोकसंख्यानिर्णय,
भैरवस्तवपुरश्चरणविधानानुक्रमणी,
भैरवस्तवराजपठनविधि,
भैरवस्तवराजानुष्ठानविधि ।

लि०—ये प्रायः एक ही प्रकार के विषयों की कई पुस्तकें हैं। इनके नं० हैं—

—सं० वि० २६०७३, २६०७५, २६०५१, २६०५७, २६०५०

भैरवस्तवराज

लि०—विश्वसारोद्धारान्तर्गत, पार्वती-परमेश्वर संवादरूप । इसमें बटुकभैरव का अष्टोत्तरशतनामस्तव कहा गया है । —नो० सं० ३।२०८

भैरवस्तवादिप्रकरण

लि०—श्लोक सं० १४६, पूर्ण ।

—डे० का० २२४ (१८८३-८४ ई०)

भैरवानुकरणस्तोत्र

क्षेमराज कृत ।

उ०— ग्रन्थकार द्वारा स्वरचित साम्बपञ्चाशिका की टीका में ।

भैरवाराधन

लि०—पूर्ण । —डे० का० ४७७ (१८७५-७६ ई०)

भैरवार्चन

लि०—(१) —ने० द० १।१६४८ (ठ)

(२) —कैट्. कैट्. १।४१७

भैरवार्चापारिजात

लि०——बघेलवंशीय श्रीजैत्रसिंह कृत। यह १४ स्तबकों में पूर्ण है। इसमें भैरव-पूजा साङ्गोपाङ्ग वर्णित है।

(२) श्रीजैत्रसिंहदेव कृत, श्लोक सं० ३६५७, एक पन्ने के सिवा पूर्ण ।

——र. मं. ४९७१

(३) (क) श्रीजैत्रसिंह कृत

(ख) श्रीनिवासाचार्य कृत। ——कैट्. कैट्. १।४१७

भैरवीकवच

लि०——रुद्रयामल से गृहीत। श्लोक सं० ३०।

——अ० ब० ८०७१ (ग)

भैरवाष्टक

(१) भैरवाष्टक के नाम——बटुकभैरव, सिद्धभैरव, कंकालभैरव, कालभैरव, कालाग्निभैरव, योगिनीभैरव, महाभैरव और शक्तिभैरव। इनके मत के प्राधान्यानुसार ये आठ तन्त्र हैं। लक्ष्मीधरी (सौन्दर्यलहरी की टीका) के अनुसार।

(२) किसी मत से असिताङ्ग, रुरु, चण्ड, क्रोध, उन्मत्त, कपाली, भीषण और संहार ये आठ भैरवों के नाम हैं। उनके अनुसार आठ तन्त्र हैं। द्रष्टव्य, सेतुबन्ध।

(३) किसी-किसी के मत में (भास्करराय के मत में) अष्ट भैरवों का एक ही तन्त्र है। वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत भैरवाष्ट का यह अर्थ है।

(४) ब्रह्मयामल के अनुसार दक्षिणाम्नाय के अन्तर्गत विद्यापीठ से संसृष्ट ८ भैरव हैं। उनके नाम——स्वच्छन्द, क्रोध, उन्मत्त, उग्र, कपाली, झंकार, शेखर और विजय हैं। द्रष्टव्य, P. C. Bagchi कृत Studies in Tantras Part I.

भैरवीतन्त्र

लि०——अपूर्ण । ——ब्रं० प० ८९५

उ०——प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमतत्त्वविलास, आगमकल्पलता, रहस्यार्णव, ललितार्चनचन्द्रिका, तन्त्ररत्न, श्यामा-रहस्य तथा सर्वोल्लास में।

श्रीकण्ठी तथा सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों में अन्यतम है।

भैरवीपटल

शारदातिलककार विरचित।

उ०--शारदातिलक-टीका राघवभट्टी में।

भैरवीयतन्त्र

उ०--तन्त्रसार में।

भैरवीरहस्य

लि०--मुकुन्दलाल विरचित। --कैट्. कैट्. १।४१७

भैरवीरहस्यविधि

लि०--हरिराम कृत। --कैट्. कैट्. १।४१७

भैरवाष्टक

लि०--(१) काशीनाथ कृत। श्लोक सं० ६८, पूर्ण।

--र० मं० १०४९ (ख)

(२) श्लोक सं० १२२, अपूर्ण, तन्त्रोत्तम के साथ। कर्ता का नाम नहीं दिया गया है। --सं० वि० २५३८१

भैरवाष्टोत्तरशतनामपुरश्चरणविधि

लि०--विश्वसारोद्धार के अन्तर्गत। श्लोक सं० २८, पूर्ण।

--सं० वि० २५९०४

भैरवीशिखा

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

भोगमोक्षप्रदीपिका

उत्पलाचार्य कृत।

उ०--इसका ग्रन्थकार ने स्वरचित स्पन्दप्रदीपिका में उल्लेख किया है।

मकुटतन्त्र

लि०--श्लोक सं० २८०, २य पटल। --अ० ब० ६८२७ (ग)

मकुटागम

लि०--(१) इसके कुछ ही खण्ड हैं। पन्ने ८८। --तं० म० ११४२८

(२) --कैट्. कैट्. १।४१९, २।९६

मङ्गलचण्डीपूजापद्धति

लि०—श्लोक सं० ७०, पूर्ण। —सं० वि० २५००३

मङ्गलविधि

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। इसमें मङ्गल ग्रह की तान्त्रिक पूजा वर्णित है।

—ए० बं० ५८९१

मङ्गलव्रतपूजाविधि

लि०— —रा० पु० ६७२३

मङ्गला

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

मङ्गलाशास्त्र

उ०—Oxford (आक्सफोर्ड) २३९ (क) के अनुसार वितस्तापुरी ने इसका उल्लेख किया है। —कैट्. कैट्. १।४२०

मङ्गलापूजाविधि

लि०—(क) श्लोक सं० १८०५। (ख) श्लोक सं० २२५।

—अ० ब० (क) १३९१८, (ख) १३९२५

मण्डलदेवता

लि०— —कैट्. कैट्. १।४२०, २।९६

मण्डलदेवताविधि

लि०—श्लोक सं० ५६। —अ० ब० ११९३६

मत

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

मतङ्गपारमेश्वर (महातन्त्र)

लि०—(१) क्रियापाद में ११ पटल हैं। इसका उपदेश मतङ्ग मुनि के लिए भगवान् हर ने किया। इसके उक्त पटलों के विषय हैं—१, दयोद्घाटन, (२ से ४ तक के पटलों के विषय नहीं दिये हैं।) ५. शक्तिपटल, ६. पुंप्रधानेश्वर-साधन प्रकरण, ७. विद्यापटल, ८. मायातत्त्व, ९. कलातत्त्व, १०. विद्यातत्त्व और ११. रागपटल।

—इ० आ० २६०६

(२) यह तान्त्रिक रीति-रिवाजों पर पूर्ण प्रकाश डालता है। यह महातन्त्र की शैली का ग्रन्थ है। —तैं० म० २३

उ०—–स्पन्दप्रदीपिका में।

मतङ्गपारमेश्वरतन्त्र

लि०—–(१) मतङ्ग-परमेश्वर संवादरूप यह मौलिक तन्त्र (शैवागम) विद्यापाद, क्रियापाद, योगपाद और चर्यापाद—–चार पादों में पूर्ण है। विद्यापाद में २५, क्रियापाद में १५, योगपाद में ७ तथा चर्यापाद में ९ पटल हैं। विवरण दे०, इ० आ० पे. ९०५ में। इस पर एक टीका देखी गयी है। क० का० तथा तैं० म० के अनुसार इस में १२००० से अधिक श्लोक हैं, फिर भी यह पूर्ण नहीं है।

(२) यह विद्यापाद, क्रियापाद, उपायपाद और सिद्धिपाद–इन चार पादों में विभक्त है। विद्यापाद पर नारायण-पुत्र रामकण्ठ कृत टीका है।

मतङ्गवृत्ति (१)

लि०—–(१) नारायणकण्ठ-शिष्य (पुत्र ?) रामकण्ठभट्ट कृत, श्लोक सं० ८४८७, पूर्ण।

—डे० का० २३५ (१८८३–८४ ई०)

—–कैट्. कैट्. १।४२१

(२) रामकण्ठभट्ट कृत।

उ०—–रत्नत्रयपरीक्षावृत्ति में।

मतङ्गवृत्ति (२)

अघोर शिवाचार्य-गुरु सर्वात्मवृत्ति कृत।

मतङ्गशास्त्र

लि०—– —–प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

मतसार

लि०—–(१) इसमें बाला कुब्जिका देवी की पूजाविधि प्रतिपादित है। यह १० पटलों में पूर्ण है। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—कुब्जिकास्तोत्र, भैरवस्तोत्र, अभिषेक, शब्दराशि-फल, दण्ड, काष्ठ आदि पञ्च अभिषेक, प्रस्तार दीक्षाविधि, पञ्च प्रणवोद्धार ध्यान, पशुपरीक्षा आदि। —–ने० द० १।१५१२

(२) सवा लाख से भी अधिक श्लोकों की महासंहिता के अन्तर्गत १२ हजार श्लोकों का यह मतसार तन्त्र है। इसका २य नाम विद्यापीठ है। इसमें २३ या अधिक पटल हैं। ऊपर जितना विवरण दिया गया है वह इसके अंशमात्र का प्रतीत होता है। यह तन्त्र पश्चिमाम्नाय से संबन्ध रखता है। इसके विषय हैं—आज्ञाप्रसाद, ब्रह्मविष्णु दीक्षा, इन्द्रानुग्रह, न्यासक्रम, शब्दराशि, मालिनी-उद्धार, विद्याप्रकाशोद्धार, शङ्करविन्यास, युगनाथ नामोद्धार आदि। —ने. द. २।३७९, ३।२७५

मतोत्तरतन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी में।

मतोत्सव

लि०—रुद्रयामल के अन्तर्गत, उमा-महेश्वर संवादरूप। श्लोक सं० ११००, ३० अध्यायों में पूर्ण। इसमें मारण, मोहन, उच्चाटन, स्तम्भन, वशीकरण और उनके उपयोगी यन्त्र वर्णित हैं। उनकी विधि प्रायः हिन्दी में लिखी गयी है।

—ए० बं० ५८६८

मत्स्यतन्त्र

उ०—रघुनन्दन द्वारा प्रायश्चित्ततत्त्व में इसका उल्लेख किया गया है। दे०, मत्स्य-सूक्त। —कैट्. कैट्. १।४२२

मत्स्यसूक्त (तन्त्र)

लि०—(१) पराशर-विरूपाक्ष संवादरूप। इसमें १० पटल हैं। तारा, महोग्रतारा कल्परहस्य, पूजाविधि आदि विषय इसमें वर्णित हैं। —ए० बं० ५९१७

(२) श्लोक सं० १००, केवल ४ पटल। अ० ब० १०६२७ (ख)

(३) —कैट्. कैट्. १।४२२, २।९७, ३।९१

उ०—तन्त्रसार, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, तारारहस्यवृत्ति तथा आगमतत्त्वविलास में। रघुनन्दन और कमलाकर ने भी अपने ग्रन्थों में इसका उल्लेख किया है।

मत्स्यसूक्तमहातन्त्र

लि०—(१) इस प्रति में ३५ से लेकर ६० पटल हैं। —ए० बं० ५९९७

(२) ३५ वें पटल से ६० वें पटल तक ही प्राप्त, आगे और पीछे खण्डित है, इसकी श्लोक सं० ३९६० है। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—अशौच-व्यवस्था, प्रायश्चित्त, भद्रकाली आदि का पूजन आदि। —रा० ला० ६०८

(३) श्लोक सं० ३००० । —अ० व० १०१०९

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, प्राणतोषिणी, आगमकल्पलता तथा तारारहस्यवृत्ति में ।

मत्स्यसूक्तविधान

लि०—विनियोगदीपिका से गृहीत, श्लोक सं० १०० । —अ० व० ३४८२

मत्स्योत्तरतन्त्र

लि०— यह यौगिक क्रियाओं का प्रतिपादक तन्त्रग्रन्थ है ।

—ए० वं० ५९९०

मद्गीत

श्रीकण्ठी के अनुसार यह अष्टादश (१८) रुद्रागमों के अन्तर्गत है ।

मधुपर्कादि

खि०—श्लोक संख्या १०० । —अ० व० ७४५६

मनुसंहिता

उ०—आगमतत्त्वविलास में ।

मधुवाहिनी

कल्लट कृत, शैवागम ग्रन्थ ।

मनोनुशासन

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल और सेतुबन्ध में

मनोरमा (१)

लि०—(१) कादिमत-टीका सुभगानन्दनाथ तथा प्रकाशानन्दनाथ विरचित। दे०, कादिमत ।

(२) कादिमत-टीका सुभगानन्दनाथ उर्फ प्रपञ्चसारसिंहराज प्रकाश विरचित।

(क) श्लोक सं० ११२९३, अपूर्ण ।

(ख) श्लोक सं० १६३०, अष्टम (८ म) पटल तक ।

(ग) श्लोक सं० ४९५८, अपूर्ण ।

—र० मं० (क) ४८८८, (ख) ४८९३, (ग) ४८९०

(३) कादिमत-टीका सुभगानन्दनाथ कृत, तन्त्रराज की टीका पटल १ से २२ तक सुभगानन्दनाथ कृत, पटल २३ से ३६ तक उनके शिष्य प्रकाशानन्द कृत।

—कैट्. कैट्. १।४२९

मनोरमा (२)

लि०—आनन्द-लहरी व्याख्या (मनोरमा) श्लोक सं० ११०। सच्चिदानन्द-शिष्य सहजानन्दनाथ विरचित ।

मन्त्रकमलाकर

लि०—(१) रामकृष्णभट्ट-पुत्र कमलाकरभट्ट कृत। इसमें दीक्षाविधि, महागणपति-पद्धति, गणेशमन्त्र, रामपूजाविधि, राममन्त्रोद्धार, कार्तवीर्य-दीपदानप्रयोग, कार्तवीर्यार्जुन-पद्धति, बन्ध्यात्व की निवृत्ति, वन्दिमोक्षप्रयोग, सर्प-विष को उतारना, कार्तवीर्य-सहस्रनामस्तोत्र, मन्त्रौषध-प्रकरण आदि विविध विषय वर्णित हैं।

—ए० बं० ६२३८

(२) कमलाकरभट्ट कृत, श्लोक सं० ४५०५, पूर्ण। —सं० वि० २४८८५

(३) कमलाकर कृत। —कैट्. कैट्. १।४२९

मन्त्रकल्पलता

लि०—यह ८ तरङ्गों में है। इसमें महाविद्या आदि देवियों तथा देवों के मन्त्र और मन्त्रों के ऋषि, छन्द, देवता आदि वर्णित हैं। —बी० कै० १२९१

मन्त्रकारिका

लि०—श्लोक सं० ७७, अपूर्ण। —सं० वि० २४३०४

मन्त्रकाशीखण्ड

लि०—इसपर नीलकण्ठ चतुर्धर की व्याख्या है। दे०, मन्त्रभागवत।

—कैट्. कैट्. १।४२९,

मन्त्रकोश (१)

लि०—(१) आशादित्य त्रिपाठी विरचित। (क) श्लोक संख्या ५०००, खण्डित। (ख) श्लोक ५०००, खण्डित। (ग) श्लोक सं० १५०० (११ वें परिच्छेद से १५ वें तक)।

—अ० ब० (क) २२४९, (ख) १०६७८, (ग) २२१०८

(२) मन्त्रकोश अथवा मन्त्ररत्नावली आशादित्य त्रिपाठी कृत, श्लोक सं० ४४००, अपूर्ण। लिपिकाल संवत् १६३० वि०। —डे० का० ३५७ (१८८०-८१ ई०)

(३) अथवा मन्त्ररत्नावलीकोश–आशादित्य कृत,। —कैट्. कैट्. १।४२९

(४) (क) श्लोक सं० ३१२४, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १६५, पूर्ण। (ग) संग्रहकर्ता आदित्य (आशादित्य ?) त्रिपाठी। श्लोक सं० २९७६, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २३९११, (ख) २३९६२, (ग) २४९६८

(५) आशादित्य त्रिपाठी कृत। —कैट्. कैट्. २।९८

(६) दे०, वीरभद्रतन्त्र, आशादित्य कृत। —कैट्. कैट्. ३।९२

मन्त्रकोश (२)

लि०—(१) म० म० जगन्नाथ भट्टाचार्य विरचित, श्लोक सं० २७९। इसमें वर्णों की उत्पत्ति के प्रकार का वर्णन करते हुए तन्त्रोक्त संकेत से उनके पर्याय प्रतिपादित हैं।

—रा० ला० २३७८

(२) जगन्नाथ चक्रवर्ती विरचित। —बं० प० १५४८ (ख)

(३) जगन्नाथ भट्टाचार्य कृत। —कैट्. कैट्. १।४२९

मन्त्रकोश (३)

लि०—दक्षिणामूर्ति कृत। —कैट्. कैट्. १।४२९

मन्त्रकोश (४)

लि०—विनायक कृत। —कैट्. कैट्. १।४२९

मन्त्रकोश (५)

लि०—वामकेश्वर तन्त्र से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।४२९

मन्त्रकोशकल्प

लि०—श्लोक सं० १५००। —अ० ब० २२४८

मन्त्रकौमुदी

देवनाथ ठक्कुर तर्कपञ्चानन कृत।

लि०—(१) (क) श्लोक सं० १००, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ४८, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २५००२, (ख) २५०१४

(२) श्रीदेवनाथ कृत। —कैट्. कैट्. १।४२९
इसका समाप्ति-काल लक्ष्मण सं० ४०० है।

मन्त्रक्रमावली

लि०—(क) श्लोक सं० ३००। (ख) श्लोक संख्या ३५०।
—अ० व० (क) ८३६७, (ख) ८३०२

मन्त्रखण्ड

लि०—
—कैट्. कैट्. १।४२९

मन्त्रगणपतितत्त्वरत्न

लि०—
—कैट्. कैट्. १।४२९

मन्त्रगणेशचन्द्रिका

लि०—इसमें महागणपति, लक्ष्मीविनायक, वक्रतुण्ड, विद्यागणपति, शक्तिगणेश, हेरम्बगणपति, हरिद्रागणेश आदि विभिन्न गणेशों की पूजापद्धति वर्णित है।
—ए० बं० ६५०६

मन्त्रगीर्वाण

लि०—(क) यह मन्त्रविषयक किसी विशाल ग्रन्थ का एक अंश प्रतीत होता है। इसके आरंभ में लिखा है—अथ सुदर्शनविधिः। यह अपूर्ण है। (ख) अत्यन्त जीर्ण, बीच-बीच में कीड़ों से कटा है।
—तै० म० (क) १२०२१, (ख) १२०२२

मन्त्रचक्र

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

मन्त्रचन्द्रिका (१)

लि०—(१) जगन्निवास-पुत्र जनार्दन गोस्वामी विरचित। इसमें १२ प्रकाश हैं एवं पञ्च देवों की पूजा तथा मन्त्रों का प्रतिपादन है। —ए० बं० ६२३२

(२) जगन्निवास-पुत्र जनार्दन गोस्वामी विरचित। श्लोक सं० २५१३, अपूर्ण।
—र० मं० ४८५३

(३) श्लोक सं० १८६९, पूर्ण। —डे० का० ७३० (१८८३-८४ ई०)

(४) जगन्निवास-पुत्र जनार्दनभट्ट कृत, (क) श्लोक सं० १२००, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० १५००, खण्डित। (ग) श्लोक सं० १५००।

—अ० व० (क) ८३०७, (ख) ९६६०, (ग) ९६७७

मन्त्रचन्द्रिका (२)

लि०—(क) श्लोक सं० २१०, पुरश्चरणविधि भी साथ में संलग्न है, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ६२, पूर्ण। —सं० वि० (क) २३९६०, (ख) २६९६१

मन्त्रचन्द्रिका (३)

लि०—(१) भडोपनामक शिवरामभट्ट-पौत्र जयरामभट्ट-पुत्र वाराणसीगर्भसंभूत काशीनाथ विरचित। यह ग्रन्थ साधारण तान्त्रिक विधियों से पूर्ण है। विविध देवियों के मन्त्र तथा पूजा का इसमें प्रतिपादन किया गया है। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—दीक्षा-विधान, सामान्य पूजाविधि, गणेश-मन्त्रविधान, कृष्ण-मन्त्रविधान, राम-मन्त्र आदि वैष्णव मन्त्रों की विधि, लक्ष्मी-मन्त्र आदि, वागीश्वरी-मन्त्रविधि, महाविद्या-मन्त्रविधि, शैव सुब्रह्मण्यादि मन्त्रोंका विधान आदि। —ए० बं० ६२४०

(२) काशीनाथ विरचित (क) श्लोक सं० १५००, पुरश्चरण और मन्त्रसहित। (ख) श्लोक सं० १५००। —अ० व० (क) ८३१६, (ख) १०६८१

(३) इसमें ९ प्रकाश हैं। ९ प्रकाशों के विषय इस प्रकार वर्णित हैं—१. गणेश, वक्रतुण्ड, वीरगणेश, लक्ष्मीगणेश, शक्तिगणेश, हरिद्रागणेश के मन्त्र आदि का निरूपण, २. वाग्वादिनी, हंसवागीश्वरी, बाला, भैरवी, कामेश्वरी, राजमातङ्गी के मन्त्र आदि का प्रतिपादन, ३. भुवनेश्वरी, दुर्गा, जयदुर्गा, लक्ष्मी, अन्नपूर्णा के मन्त्र आदि, ४. अश्वारूढा, गौरी, ज्येष्ठलक्ष्मी, वह्निवासिनी, शिवदूती, त्रिकण्टकी, वगलामुखी के मन्त्र आदि, ५. उग्रतारा, दक्षिणकालिका, धूमावती, भद्रकाली, महाकाली, उच्छिष्टचाण्डालिनी, धनदयक्षिणी के मन्त्र आदि, ६. वराह, सुदर्शन, पुरुषोत्तम के मन्त्र कथन, ७. हृषीकेश, श्रीधर, नृसिंह, राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान् आदि के मन्त्र आदि, ८. गोपाल, कामदेव, कार्तवीर्यार्जुन, सूर्य, चन्द्र आदि के मन्त्र, ९. शिव, दक्षिणामूर्ति, मृत्युञ्जय, अघोर, नीलकण्ठ, क्षेत्रपाल, वटुक आदि के मन्त्र। —रा० ला० ९११ तथा १६०९

मन्त्रचिन्तामणि (१)

लि०—(१) इसमें वटुकभैरव-मन्त्रविधान वर्णित है। श्लोक सं० ९३२। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—बटुक भैरव मन्त्र के ऋषि, देवता, छन्द आदि का वर्णन, पुरश्चरण,

पुरश्चरण-प्रयोग, मन्त्र-सन्ध्या आदि, गायत्री आदि, बहिर्मातृका आदि का निरूपण, सिंह बीजन्यास आदि कथन, विशेष अर्घ्य स्थापन आदि की विधि, प्रमथ आदि आवरण देवों की पूजा, रुद्राक्षमालाभिमन्त्रणविधि, बलिदान-विधि, सात्त्विक और राजस भेद से बलि के दो प्रकार, लक्षण आदि कथन, दीपदानविधि, आकर्षण, विद्वेषण आदि कर्मों में दीप के लिए घृत, तेल आदि के भेद का कथन, धारण मन्त्र के लक्षण, सात्त्विक ध्यान कथन अनन्तर राजस-ध्यान कथन, वन्ध्या की चिकित्सा, प्रज्ञाप्राप्ति के निमित्त ओषधि, आपदुद्धरण आदि । —रा० ला० १६१९

(२) (क) श्लोक सं० ९०० । (ख) श्लोक सं० २००, केवल देवताप्रतिष्ठा-विधि मात्र । —अ० ब० (क) ६०२, (ख) ४९९९

(३) श्लोक सं० २७५, अपूर्ण । —सं० वि० २४३०५

(४) इसमें बटुक भैरव की पूजा वर्णित है । —कैट्. कैट्. १।४२९

मन्त्रचिन्तामणि (२)

लि०—(१) शिवराम शुक्ल कृत, श्लोक सं० १८९, पूर्ण ।
—सं० वि० २३८४२

(२) (क) आदिनाथ कृत ।
(ख) नित्यनाथ कृत ।
(ग) नृसिंहाचार्य कृत ।
(घ) शिवराम कृत । —कैट्. कैट्. १।४२९

(३) इसमें श्रीराम-पूजा आदि वर्णित है । —कैट्. कैट्. २।९८

मन्त्रचूडामणि

लि०—(१) —कैट्. कैट्. १।४२९

(२) चूडामणितन्त्र में गोपालसुन्दरीविद्या । —कैट्. कैट्. ३।९२

उ०—पुरश्चर्यार्णव, तन्त्रसार, ताराभक्तिसुधार्णव तथा तारारहस्यवृत्ति में ।

मन्त्रजपविधान

लि०—श्लोक सं० ४५ । —अ० ब० ३४८३

मन्त्रजपविधि

लि०— —कैट्. कैट्. २।९८, ३।९२

मन्त्रतन्त्रनेत्र

उ०—कुण्डकौमुदी में।

मन्त्रतन्त्रप्रकाश

उ०—पुरश्चर्यार्णव, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, शारदातिलक-टीका राघव-भट्टी, मन्त्रदर्पण, ललितार्चनचन्द्रिका, कालिकासपर्याविधि, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, एकादशीतत्त्व, हेमाद्रि—चतुर्वर्गचिन्तामणि के परिशेषखण्ड तथा नारायणोपनिषद् में।

मन्त्रतन्त्रमेरुरत्नावली

लि०— —कैट्. कैट्. १।४३०

मन्त्रदर्पण

लि०—(क) श्लोक सं० १०२३८, पूर्ण। (ख) वागीश्वर शर्मा विरचित, श्लोक सं० १२४, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २४४१७, (ख) २५७७३

उ०—तन्त्रकौमुदी तथा आगमतत्त्वविलास में।

मन्त्रदीक्षाविचार

लि०—श्लोक सं० ३०१, अपूर्ण। —सं० वि० २४०६७

मन्त्रदीपिका

लि०—(१) (क) श्रीकृष्ण शर्मा द्वारा विरचित, श्लोक सं० १३६२, पूर्ण, (ख) श्लोक सं० ४००, दशम प्रकाश मात्र, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० ४२०, अपूर्ण।
—सं० वि० (क) २५५१८, (ख) २६१४६, (ग) २६२०२

(२) दे०, मन्त्रार्थदीपिका। —कैट्. कट्. १।४३०

मन्त्रार्थदीपिका

लि०—५ प्रकाशों में, यशोधर कृत। —कैट्. कैट्. ३।९२

मन्त्रदेवप्रकाशिका

लि०—(१) परमाराध्य-पौत्र लक्ष्मीधर सूरि-पुत्र श्रीविष्णुदेव विरचित। इसमें दीक्षा, होम तथा अन्यान्य तान्त्रिक विधियाँ, विविध देवियों की पूजा और मन्त्र वर्णित हैं। यह ३२ पटलों में पूर्ण है। —ए० बं० ६२३४

(२) (क) श्लोक सं० ३०००, खण्डित। (ख) श्लोक सं० ११०० (२२ पटल पूरे, २३ वाँ शुरू)। —अ० ब० (क) १०४७४, (ख) ६८८५

(३) यह ३२ पटलों में पूर्ण है तथा इसकी श्लोक सं० ४११६ है। विषय हैं—मन्त्रस्वरूप निरूपण, मन्त्र शब्द से ब्रह्मविद्या का प्रतिपादन किया गया है, यह कथन, देवता स्वरूप, सगुण ब्रह्म का स्वरूप, ब्रह्मविद्या के अंगभूत साकारपरक मन्त्रों का विरोध-परिहार, विविध मन्त्र, न्यास आदि। —रा० ला० २८१५

(४) (क) श्लोक सं० २२८, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० २७०, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० २६९७, पूर्ण (?), (घ) श्लोक सं० ३२७६, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २३९०५, (ख) २३९०९, (ग) २४२९३, (घ) २४८२४

(५) विष्णुदेवकृत, श्लोक सं० ३५४०, अपूर्ण।

—तै० म० ६७०१

(६) मन्त्रदेवप्रकाशिका या मन्त्रदेवताप्रकाशिका। यह बृहत् और लघुभेद से दो प्रकार की है। —कैट्. कैट्. १।४३०

उ०—पुरश्चर्यार्णव, तन्त्रसार, सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्द्धिनी, ताराभक्ति-सुधार्णव तथा शाक्तानन्दतरङ्गिणी में।

मन्त्रनेत्र

उ०—आगमकल्पलता तथा तन्त्रकौमुदी में।

मन्त्रपद्धति (१)

लि०—(१) इसमें भूतशुद्धि, विविध प्रकार के न्यास, पुरश्चरण, दीक्षा और विभिन्न वैष्णवी देवियों की पूजा का प्रतिपादन किया गया है। इसमें ७ कल्प हैं।

—ए० बं० ६२७९

(२) श्रीदत्त कृत, श्लोक सं० २००, अपूर्ण।

—अ० ब० ११६६३

मन्त्रपद्धति (२)

लि०—सोमनाथ कृत। —कैट्. कैट्. १।४३०

मन्त्रपारायण

लि०—(१) श्लोक सं० १६०, पूर्ण (?)। (इसमें त्रिपुरोपनिषद् भी संमिलित है)। —डे० का० ३९१ (१८८२-८३ ई०)

(२) श्लोक सं० १८०, अपूर्ण। —सं० वि० २४६२७

(३) मन्त्रपारायण में विद्यार्थदीपिका। —कैट्. कैट्. १।४३०
उ०—कैवल्याश्रम ने इसका उल्लेख किया है।

मन्त्रपारायणक्रम

लि०—(१) इसमें मन्त्र-जप के नियम बतलाये गये हैं। —ए० बं० ६२८०
(२) —कैट्. कैट्. १।४३०

मन्त्रपारायणप्रयोग

लि०—श्लोक सं० ५२६, पूर्ण। बुद्धिराज विरचित। —सं० वि० २४२३२

मन्त्रपारायणविधि

लि०— —कैट्. कैट् २।९८

मन्त्रपुरश्चरण

लि०—गोविन्द कविकङ्कण कृत। —कैट्. कैट्. ३।९२

मन्त्रपुरश्चरणप्रकाश

लि०—श्लोक सं० २८०।
—डे० का० २३९ (१८८३-८४ ई०)

मन्त्रप्रकरण

लि०—पूर्ण। —डे० का० ४७८ (१८७५-७६ ई०)

मन्त्रप्रकाश

लि०—शावर मन्त्रों पर सोमनाथभट्ट विरचित। —कैट्. कैट्. १।४३०
उ०—पुरश्चर्यार्णव, शारदातिलक-टीका राघवभट्टी तथा चतुर्वर्गचिन्तामणि के परिशेष खण्ड में।

मन्त्रप्रदीप (१)

लि०—रुचिपति-पुत्र आगमाचार्य हरिपति विरचित, श्लोक सं० ४६४०, पटल सं० १५। विषय—दीक्षा की आवश्यकता, सिद्ध आदि मन्त्रों का निर्णय; अकडमादिचक्रविधि, नाडीविधि, राशिचक्र, नक्षत्रचक्र, ऋण धन जिज्ञासा, कुल, अकुल आदि का विचार, मन्त्रों के बालादि भेद, मन्त्र-संस्कार, दीक्षा का समय, देश, गुरु, शिष्य आदि का निरूपण, दीक्षाविधि, ग्रहण-काल आदि की दीक्षा, नवग्रहहोमविधि, वागीश्वरी, भुवनेश्वरी, नित्या,

दुर्गा,वाला, गणेश, चन्द्र, कार्तिकेय आदि के मन्त्र, सर्वदेवता-प्राणप्रतिष्ठा, प्रशस्त आसन, श्रीकण्ठादि न्यास, मालाद्रव्य, जपविधि, माला-संस्कार, त्रिशक्ति-पूजा, छिन्नमस्ता, उग्रतारा, उच्छिष्टचाण्डाली के पूजन आदि कथन, सुन्दरी तथा त्रिपुरसुन्दरी की पूजा-विधि, नवदुर्गा-पूजाविधि आदि । ——रा० ला० २०११

मन्त्रप्रदीप (२)

लि०——काशीनाथ भट्टाचार्य विरचित श्लोक सं० १२०७ तथा परिच्छेद सं० ४ है। मन्त्रार्थ, मन्त्रचैतन्यकरण, योनिमुद्रा निरूपण आदि विषय इसमें वर्णित हैं।

——रा० ला० ७४७

मन्त्रप्रयोग

लि०——(१) (क) श्लोक सं० १२७, अपूर्ण। (ख) दुर्गासप्तशती का एक दूसरा प्रयोग। श्लोक सं० २६, पूर्ण। ——सं० वि० (क) २३९१०, (ख) २६०६९

(२) श्लोक सं० ५००, अपूर्ण। इसमें मन्त्रों का संग्रह और उनकी प्रयोगविधि प्रतिपादित है । ——ट्रि० कै० १०९४ (ङ)

मन्त्रप्रयोगतन्त्र

लि०—— ——कैट्. कैट्. १।४३०, ३।९२

मन्त्रभागवत (सटीक)

लि० (१)——मूल-संग्रहकार तथा व्याख्याकार चतुर्धर नीलकण्ठ,श्लोक सं० ११००।

——अ० ब० १३६२४

(२) गोविन्द सूरि-पुत्र नीलकण्ठ कृत मन्त्ररहस्यप्रकाशिका नाम की टीका सहित। इसमें राम और कृष्ण के चरितानुसारी वेदमन्त्रों का व्याख्यान है।

——रा० ला० १५११

(३) यह २०० वैदिक मन्त्रों का संग्रह है। इस पर मन्त्ररहस्यप्रकाशिका नाम की गोविन्द सूरिपुत्र नीलकण्ठ चतुर्धर कृत टीका है। टीकाकार ने उक्त मन्त्रों को राम और कृष्ण परक लगाया है। ——कैट्. कैट्. १।४३०, २।९८, ३।९२

मन्त्रभूषण

उ०——अहल्याकामधेनु में।

मन्त्रमञ्जूषा

लि०—रामभारती-शिष्य त्रिविक्रम भट्टारक विरचित। (क) श्लोक सं० १५००। (ख) श्लोक सं० १५०० (यन्त्र सहित)। (ग) श्लोक सं० १५००। (घ) श्लोक सं० १०००, अपूर्ण। —अ० ब० (क) १०६०१, (ख) १०४३२, (ग) १३१४५, (घ) ९६३९

मन्त्रमयूख

लि०— —कैट्. कैट्. १।४३०

मन्त्रमहोदधि

लि०—(१) राजा लक्ष्मीनृसिंह की संरक्षकता में संवत् १६४५ में इसका निर्माण हुआ था। इसके निर्माता रत्नाकर के पौत्र, रामभक्त के पुत्र महीधर हैं। यह २५ तरङ्गों में पूर्ण तान्त्रिक पूजा का विवरणात्मक ग्रन्थ है। इस पर ग्रन्थकार की ही स्वरचित नौका टीका है। —इ० आ० २५७६

(२) महीधर विरचित, श्लोक सं० ३७६६ तथा तरङ्ग सं० २२। विषय—प्रातःकृत्य निरूपणपूर्वक भूतशुद्धि आदि का निरूपण, गणेश के मन्त्र आदि का निरूपण, काली, सुमुखी आदि के मन्त्र, तारा के मन्त्र आदि, तारा के विभिन्न मन्त्र, छिन्नमस्ता के मन्त्र, यक्षिणी के मन्त्र, पूजा आदि का निरूपण, बाला, लघुश्यामा आदि के मन्त्र आदि, अन्नपूर्णा के मन्त्र आदि, महाविद्या, श्रीविद्या आदि का निरूपण, हनूमान् के मन्त्र आदि, विष्णु, शिव, सूर्य, कार्तवीर्य आदि के मन्त्र आदि का निरूपण, कालरात्रि, चण्डिका, ताम्रचूड़ा आदि के मन्त्रों का निरूपण, नित्य पूजा के प्रकार आदि का कथन आदि। —रा० ला० १२५६

(३) इसमें विविध मन्त्र और यन्त्र, जो देवी-देवताओं की पूजा में व्यवहृत होते हैं, वर्णित हैं। —बी० कै० १२९२

(४) २५ तरङ्गों में पूर्ण, ग्रन्थ की श्लोक संख्या ३०००। इसके प्रारंभ में ग्रन्थकार ने लिखा है अनेक तन्त्रों का अवलोकन कर मैं (महीधर) मन्त्रमहोदधि का प्रतिपादन करता हूँ। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—उपासक के प्रातःकालीन कृत्य, भूतशुद्धि, गणेशमन्त्र, काली, सुमुखी तथा तारा के मन्त्र, तारामन्त्र-भेद कथन, छिन्नमस्ता आदि के मन्त्र कथन, यक्षिणी आदि के मन्त्र निरूपण, बाला, लघुश्यामा के मन्त्रों का निरूपण, अन्नपूर्णा आदि के मन्त्र कथन, बगला आदि के मन्त्र कथन, श्रीविद्या के मन्त्र कथन, सुन्दरी की पूजाविधि, हनूमान् जी के मन्त्र, विष्णु, शिव, सूर्य आदि के मन्त्र, पवित्रारोपण, मन्त्र-शोधन, षट्कर्म आदि का निरूपण आदि। —तै० म०, Tantric Litrature, Vol XIII

(५) (क) श्लोक सं० ३५५३, पूर्ण। निर्माण-काल सं० १६४५ वि०।
(ख) श्लोक सं० २६४०, अपूर्ण।

—र० मं० (क) ४९०२, (ख) ४८७७

(६) रत्नाकर-पौत्र नाथूभट्ट-पुत्र महीधर (शुक्ल यजुर्वेद-भाष्यकार) विरचित। इसमें २५ तरङ्ग हैं। उनमें प्रतिपादित विषयों की सूची ग्रन्थारंभ में विस्तारपूर्वक निरूपित है। —क० का० ५६—६०

(७) (क) श्लोक सं० ३४८०, पूर्ण। (ख) महीधर कृत, श्लोक सं० ३२०२, पूर्ण (?) इत्यादि ४५ प्रतियाँ हैं। —सं० वि० (क) २४०७९, (ख) २४१५८

(८) महीधर ने सन् १५८९ में इसका निर्माण किया।

—कैट्. कैट्. १।४३०

(९) महीधर कृत, (क) श्लोक सं० ३०००। (ख) श्लोक सं० ५०००, नौका टीका सहित। टीकाकार भी स्वयं ग्रन्थकार ही हैं। (ग) श्लोक सं० ५०००, नौका टीका सहित। (घ) श्लोक सं० ५०००, स्वयं ग्रन्थकार रचित नौका टीका सहित।

—अ० व० (क) ३५३५, (ख) १४८४, (ग) ९३२६, (घ) ११४००

(१०) महीधर कृत, चार प्रतियाँ है।

—रा० पु० ४४४४, ५७४४, ५७४८, ६६५६

उ०—मन्त्रमहार्णव, कालिकासपर्याविधि तथा सुन्दरीमहोदय में।

मन्त्रमहोदधि की टीकाएँ

(क) (१) नौका टीका ग्रन्थकार कृत, (२) पदार्थादर्श काशीनाथ कृत, (३) मन्त्रवल्ली गङ्गाधर कृत। —रा. ला. (१) १७१३, (२) १७१४, (३) २७७६

(ख) मन्त्रमहोदधि पर नौका टीका है, यह ग्रन्थकार द्वारा स्वयं रचित टीका पूरे २५ तरङ्गों तक है। —बी० कै० १२९३

(ग) मन्त्र महोदधि पर एक काशीनाथकृत टीका और है—

नत्वा श्रीदक्षिणामूर्तिचरणाम्भोरुहद्वयम्।
काशीनाथः प्रकुरुते टीकां मन्त्रमहोदधेः॥

—ए० बं० ६२५४, ६२५६

(घ) नौका टीका सहित। रचना-काल सं० १६४५ वि०।

—रा० ला० १७१३

(ङ) नौका तथा पदार्थादर्श ये दो टीकाएँ इसमें प्रतिपादित हैं। –रा० ला०१७१४

(च) (१) नौका, महीधर कृत, (२) पदार्थादर्श, काशीनाथ कृत।

--सं० वि० (१) २३९४७ आदि १० प्रतियाँ तथा (२) २४३४१ आदि ३ प्रतियाँ हैं।

मन्त्रमहोदय

उ०--प्राणतोषिणी में।

मन्त्रमार्तण्ड

लि०--रामभट्ट कृत, श्लोक सं० १०, अपूर्ण। --सं० वि० २६०४९

मन्त्रमाला

लि०--(१) इसमें विशेष-विशेष देवियों के मन्त्रों का संग्रह तथा तन्त्रसारानुसारी क्रियाएँ, ऋषि, न्यास, ध्यान आदि का वर्णन है। ये सब मन्त्र आदि भुवनेश्वरी, अन्नपूर्णा, पद्मावती, जयदुर्गा और लक्ष्मी के हैं। --ए० बं० ६२७८

(२) इसमें विशेष-विशेष देवी-देवताओं के तान्त्रिक मन्त्रों का संग्रह किया गया है। --बी० कै० १२९४

(३) --कैट्. कैट्. १।४३०

मन्त्रमुक्तामणि

लि०--श्लोक सं० २००। --अ० ब० ११२

मन्त्रमुक्तावली (१)

लि०--(१) परमहंस परिव्राजकाचार्य अनन्तप्रकाश के शिष्य पूर्णप्रकाश विरचित। इसमें २५ पटल हैं एवं उनमें बहुत-सी तान्त्रिक विधियाँ--दीक्षा, विभिन्न देवियों के पुरश्चरण, पूजा, मन्त्र आदि--वर्णित हैं। --इ० आ० २५८२

(२) श्लोक संख्या ५०००। २५ पटलों में दीक्षा, पुरश्चरण, पूजा आदि तान्त्रिक विधियां वर्णित हैं। --ए० बं० ६२३९

(३) (क) श्लोक सं० ७०००, अनन्तप्रकाश-शिष्य पूर्णप्रकाश कृत, पूर्ण।

(ख) श्लोक सं० १५००, अपूर्ण।

--अ० ब० (क) ८९३९, (ख) ९५३७

(४) (क) पूर्णप्रकाश कृत।

(ख) रामचन्द्र कृत। --कैट्. कैट्. १।४३०

(५) —कैट्. कैट्. २।९८, ३।९३

उ०—पुरश्चर्यार्णव, आगमकल्पलता, ताराभक्तिसुधार्णव, ललितार्चनचन्द्रिका, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, कुण्डमण्डपसिद्धि, मन्त्ररत्नावली, शारदातिलक की टीका राघवभट्टी तथा आगमतत्त्वविलास में। पद्मनाभ तथा रघुनन्दन ने भी अपने ग्रन्थ में इसका उल्लेख किया है।

मन्त्रमुक्तावली (२)

लि०—(१) पार्वती-महेश्वर संवादरूप। इसके १६ पटलों में विविध मन्त्र, ध्यान, न्यास, कवच, सहस्रनामस्तोत्र वर्णित हैं तथा १७ वें पटल में छिन्नमस्ता का सहस्रनाम दिया गया है। संभव है इसमें १७ से अधिक पटल हों किन्तु यह इ० आ० २५८२ से मेल नहीं खाता। —ए० वं० ६२७७

(२) (क) श्लोक सं० १००। (ख) श्लोक सं० १००। (ग) श्लोक सं० १००।
—अ० व० (क) ५१४०, (ख) ८४०२, (ग) ८८३७

(३) श्लोक सं० २२४, पूर्ण। —डे० का० ३९२ (१८८२-८३ ई०)

(४) (क) श्लोक सं० ७२, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग ७२, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० ७२ पूर्ण। (घ) श्लोक सं० ७२, पूर्ण। (ङ) श्लोक सं० ७०, पूर्ण।
—सं० वि० (क) २४३६९, (ख) २५२२०, (ग) २५३२७, (घ) २५३७२ (ङ) २५६७७

मन्त्रमुक्तावलीविधि

लि०—(१) तन्त्रसारोक्त। इसमें भुवनेश्वरी, अन्नपूर्णा, त्रिपुरा, अदूरिता, महिषमर्दिनी, जयदुर्गा, श्री, हरिद्रागणेश, सूर्य, अग्नि, विष्णु, रामचन्द्र, वासुदेव, नृसिंह, वराह, कृष्ण, शिव, क्षेत्रपाल, भैरव, भद्रकाली आदि के विविध मन्त्र, वीरसाधना आदि के मन्त्र, मारण, मोहन आदि के मन्त्र एवं अदर्शन-मन्त्र प्रतिपादित हैं। इस प्रकार यह कतिपय मन्त्रों का संग्रहग्रन्थ है। —नो० सं० ३।२१३

(२) इसमें कुछ अधिक १९ पटल हैं, अपूर्ण। गुरु शिष्य-लक्षण, दीक्षा-विचार, महामन्त्रों के अक्षरों का विचार तथा स्वरूप निर्देश, दीक्षा का प्रकार, प्राणायामादि का विचार, विशेष-विशेष देवताओं के मन्त्र आदि का विचार आदि विषय वर्णित हैं।
—क० का० ६१ से ६३ तक

(३) पन्ने १५, पूर्ण। —बं० प० १५४८ (क)

मन्त्रमोहनादिक्रिया

लि०—— ——कैट्. कैट्. ३।९३

मन्त्रयन्त्रचिन्तामणि

लि०——श्लोक सं० ६४० । ——अ० ब० ३४८५

मन्त्रयन्त्रप्रकाश

उ०——कृष्णानन्दकृत तन्त्रसार में ।

मन्त्रयन्त्रविधि

लि०——श्लोक सं० ३८४, अपूर्ण । ——सं० वि० २६२२६

मन्त्रयन्त्रादिसंग्रह

लि०——श्लोक सं० लगभग १६००, अपूर्ण । ——सं० वि० २४५१८

मन्त्रयोगप्रकाश

लि०——शिवसंहिता से गृहीत । ——कैट्. कैट्. १।४३०

मन्त्ररत्न

लि०——अनन्त पण्डित विरचित । ——कैट्. कैट्. १।४३०

मन्त्ररत्नदीपिका

उ०——अहल्याकामधेनु में ।

मन्त्ररत्नप्रकाश

लि०—— ——कैट्. कैट्. १।४३०

मन्त्ररत्नप्रदीपिका

लि०——शार्ङ्गधर मिश्र-प्रकाशिका के अन्तर्गत, श्लोक सं० १२०, पूर्ण ।
——सं० वि० २६०८२

मन्त्ररत्नमञ्जूषा

लि०——(१) श्लोकसं० १६०, अपूर्ण । ——र० मं० ४५०४
(२) त्रिविक्रमभट्ट विरचित , श्लोक सं० ८१०, पूर्ण ।
——डे० का० ३९३ (१८८२-८३ ई०)
(३) त्रिविक्रमभट्ट कृत । ——भ. रि. ३१०, ३११
(४) ८ पटलों में। त्रिविक्रम भट्टारक कृत ——कैट्. कैट्. १।४३०

मन्त्ररत्नाकर (१)

लि०—(१) चतुर्भुजाचार्य-शिष्य विजयराम आचार्य विरचित।

—इ० आ० २५८८

(२) इसमें १४ या १६ तरङ्ग हैं। उनमें केवल श्रीराधा के मन्त्र और स्तोत्र वर्णित है। इस ग्रन्थ पर एक टीका उपलब्ध है जो ग्रन्थकार कृत ही है। —ए० बं० ६२३६

(३) इसमें १६ वें (सोलहवें) तरङ्ग में कार्तवीर्योपासना का विवरण है।

—ए० बं० ६२३७

(४) (क) विजयरामकृत, (ख) मथुरानाथ (यदुनाथ ?) कृत।

—कैट्. कैट्. १।४३०-३१

(५) विजयरामकृत, तरंग १३, टीका-मन्त्ररत्नाकरमहापोत विजयराम कृत, केवल १म तरंग पर। —कैट्. कैट्. २।९८, ३।९३

(६) —भ० रि० ३१२

मन्त्ररत्नाकर (२)

लि०—(१) गौडदेशीय महामहोपाध्याय विद्याभूषण भट्टाचार्य-पुत्र श्रीयदुनाथ-चक्रवर्ती कृत। यह १० तरङ्गों में पूर्ण है। प्रत्येक तरङ्ग में कई पटल हैं। कुल पटलों की संख्या ४९ तक दीख पड़ती है। इसमें दीक्षा, चक्रविवेचन, माला-ग्रथनप्रकरण, आसन-विधि, मन्त्रशुद्धि-प्रकरण, प्रमाण-विवेचन, वास्तुयाग-प्रकरण, मण्डपनिर्माण, सर्वतोभद्र-मण्डल-विधि, मन्त्रदोषकथन, वर्णमयी दीक्षा की विधि, कलावती दीक्षा, मुद्राप्रकरण, दश विद्या, मातृकाप्रपञ्च, भुवनेश्वरीपूजा-प्रकरण, हरिद्रागणपति-मन्त्र, चन्द्रमन्त्र, धूमावती-मन्त्र, कौलेश भैरवी, चैतन्य भैरवी, कामेश्वरी भैरवी, षट्कूटा भैरवी, नित्या भैरवी, रुद्रभैरवी, भुवनेश्वरी भैरवी, अन्नपूर्णेश्वरी भैरवी आदि बहुत-से विषय प्रतिपादित हैं। —ए० बं० ६१९२

(२) यदुनाथकृत, श्लोक सं० ९४८८, अपूर्ण। —सं० वि० २५११६

मन्त्ररत्नाकर (३)

लि०—कृष्णभट्ट कृत, श्लोक सं० ३५०। —अ० ब० १३७३

मन्त्ररत्नाकरविवरण—मन्त्ररत्नाकरमहापोत

लि०—चतुर्भुज-शिष्य विजयरामाचार्य कृत, श्लोक सं० १०२४, प्रथम तरङ्गमात्र, पूर्ण। —र० मं० ४८५५

मन्त्ररत्नावली (१)

नामान्तर—मुरत्नावली, मनुरत्नमाला या मन्त्ररत्नमाला।

लि०—(१) जगद्वल्लभ भट्टाचार्य-शिष्य विद्याधर शर्मा विरचित। यह शारदातिलक से संगृहीत ग्रन्थ १० पटलों में पूर्ण है। इसमें योनिमुद्रा-निरूपण, राशि आदि का विचार, दीक्षा आदि का निरूपण, दीक्षा के १म दिन का कृत्य, होम आदि, विष्णु-पूजा-विधि, द्वादशाक्षर मन्त्र की विधि, हयग्रीव-मन्त्रविधि, वामन-मन्त्रविधि, यन्त्रधारण आदि का निरूपण, वराहमन्त्र-निरूपण, गोपाल आदि सब मन्त्रों की विधि, न्यासादि-विधि, उमा-महेश्वरादि के पूजन की विधि, मृत्युञ्जयविधि आदि विविध विषय वर्णित हैं। —नो० सं० १।२७२

(२) मूर्तिशर्मा के पौत्र जगद्धर के पुत्र विद्याधर कृत। —कैट्. कैट्. ३।९३

मन्त्ररत्नावली (२)

लि०—(१) भास्कर मिश्र विरचित विविध तान्त्रिक विषयों का प्रतिपादक यह ग्रन्थ २६ उल्लासों में पूर्ण है। कीर्तिसिंह की प्रेरणा से भास्कर मिश्र ने इसकी रचना की। इसमें २६ उल्लासों के विषय यों प्रतिपादित हैं—१. मन्त्रों के बालादि भेद, नक्षत्र प्रकार और ऋणशोधन, दीक्षा प्रकार, कुण्ड-निर्माण, भूमि पर पाँच रंगों से श्रीचक्र का पूरण तथा वायस्य देवता की पूजा, समयाचार, होमविधि, मन्त्रों के दस संस्कार, नित्य सृष्टि, स्थिति, लय, अपिधान और अनुग्रह रूप पञ्चकृत्यकारी शिव की स्तुति, विविध मुद्राएँ, कूर्मचक्र, विद्यापूजन, रत्नपूजाविधान, काम्य कर्म, न्यासविधि, दक्षिणापुण्य, वारादिभेद, प्राणाग्निहोत्रविधि, मात्रिक मन्त्र, शिरोमन्त्र, भुवनेश्वरी-मन्त्र, त्वरिता-मन्त्र, दुर्गामन्त्र, गणपति-मन्त्र तथा वर-मन्त्र। —इ० आ० २५८०

(२) महाराज कीर्तिसिंह की आज्ञा से भास्कर मिश्र ने इसका निर्माण किया। पुष्पिका में लिखा है—'महाराजाधिराजश्रीमत्कीर्तिसिंहविरचितायां मन्त्ररत्नावल्यां पञ्चचत्वारिंश उल्लासः।' ग्रन्थ की समाप्ति पर 'मिश्रश्रीभास्कराख्येन कीर्तिसिंहस्य चाज्ञया। मन्त्ररत्नावली नाम क्रियते बालबोधिनी॥' लिखा है। इससे ज्ञात होता है कि भास्कर मिश्र द्वारा अपने आश्रयदाता महाराज कीर्तिसिंह के नाम से रचित विविध तान्त्रिक विषयों का प्रतिपादक यह संग्रह ग्रन्थ ४५ उल्लासों में पूर्ण है। इसमें ज्ञानार्णव, जयद्रथयामल, मन्त्रमुक्तावली, तन्त्रराज, पञ्चरत्नतन्त्र, प्रपञ्चसार, शारदातिलक आदि के वाक्य प्रमाण रूप से उद्धृत किये गये हैं।

(३) भास्कर मिश्र कृत, मन्त्ररत्नावली में यक्षिणी तथा वेताल का साधन।
—कैट्. कैट्. १।४३१

(४) भास्करमिश्र कृत, कैट्. कैट्. २।९८, ३।९३

(५) लिपिकाल १७१४ वि०, ४५ उल्लासों में। —भ. रि. ३१३

मन्त्ररहस्य

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ९२ पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १६३८, अपूर्ण। (दोनों भिन्न २ हैं) २ य मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत कहा गया है पर मुद्रित पुस्तकों में यह नहीं है।
—सं० वि० (क) २५९३८, (ख) २६१८४

(२) सौम्योपयन्तृ कृत। —कैट्. कैट्. १।४३१

मन्त्ररहस्यप्रकाश

लि०—(क) मन्त्ररामायण-व्याख्या नीलकण्ठ चतुर्धर कृत, श्लोक सं० २३६६, पूर्ण। (ख) सरला (रामायण-व्याख्या) श्लोक सं० १६१९, पूर्ण।
—र० मं० (क) ३९१८, (ख) ३९१७

मन्त्ररहस्यप्रकाशिका

लि०—दे०, मन्त्रभागवत। —कैट्. कैट्. १।४३१

मन्त्रराज

लि०—चन्द्रचूड़ विरचित, श्लोक सं० १३५, पूर्ण।
—सं० वि० २४३६८

उ०—आगमतत्त्वविलास में।

मन्त्रराजपद्धति

लि०—श्लोक सं० ३२६, पूर्ण। —सं०. वि. २५९२४

मन्त्रराजरहस्यदीपिका

लि०—(१) श्लोक सं० २००० । —अ० ब० ५३१५

(२) श्लोक सं० ९८०, अपूर्ण। —सं० वि० २५९२३

मन्त्रराजविद्योपासनाक्रम

लि०—श्लोक सं० २४२, पूर्ण। —सं० वि० २५९२६

मन्त्रराजसमुच्चय

लि०—काशीनाथ विरचित (क) श्लोक सं० ९९४४, पूर्वार्द्धमात्र, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ५८५०, उत्तरार्द्धमात्र, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २६०३३, (ख) २६०३४

मन्त्रराजसाधनप्रकार

लि०—श्लोक सं० ४५, अपूर्ण। —सं० वि० २५९२८

मन्त्रराजानुष्ठानक्रम

लि०— —कैट्. कैट्. १।४३१

मन्त्रराजार्थदीपिका

लि०—लघुस्तव-टीका, हरदत्त मिश्र विरचित।

—कैट्. कैट्. २।९८

मन्त्ररामायण

लि०—(१) यह तान्त्रिक मन्त्रों का संग्रहात्मक ग्रन्थ है। संग्रहकर्ता नीलकण्ठ चतुर्धर। —बी० कै० १५९५

(२) मूल और टीका नीलकण्ठ कृत। —कैट्. कैट्. १।४३१

(३) इस पर (क) मन्त्ररहस्यप्रकाशिका टीका नीलकण्ठ कृत है। (ख) सरला-टीका शरणकवि कृत है। —कैट्. कैट्. २।९८

मन्त्रलीलावती

उ०—तारारहस्यवृत्ति में।

मन्त्रवल्लरी

लि०—(१) यह महायुकरोपनामक वीरेश्वरभट्ट अग्निहोत्री के पौत्र सदाशिव-भट्ट के पुत्र भगवद्भक्त-किङ्कर गङ्गाधर विरचित मन्त्रमहोदधि-टीका है। इसकी श्लोक सं० ४३४७ है। यह टीका २२ तरङ्गों तक पूरे ग्रन्थ में है।

—रा० ला० २७७६

(२) यह मंत्रमहोदधि की गङ्गाधर विरचित टीका है।

—कैट्. कैट्. १।४३१

मन्त्रवार्तिकटीका

रामकण्ठ २य कृत

उ०—मोक्षकारिका में ।

मन्त्रवारिधि

लि०—भास्कर-पुत्र टीकाराम विरचित । —कैट्. कैट्. २।९८

मन्त्रविधान

लि०—कात्यायनीतन्त्र से गृहीत । —कैट्. कैट्. २।९८

मन्त्रविधि

लि०—(१) श्लोक सं० ७५ । इसमें देव-देवियों की पूजा के समय उच्चारण किये जानेवाले मन्त्र प्रतिपादित हैं। —ट्रि० कै० १०२६ (ख)

(२) —कैट्. कैट्. १।४३१

मन्त्रविभाग

लि०—भास्कर कृत । —कैट्. कैट्. १।४३१

मन्त्रवैभव

लि०—श्लोक सं० ३६४, अपूर्ण । —सं० वि० २५९७६

मन्त्रव्यक्ति

लि०—मन्त्राक्षर आदि को व्यक्त करते हुए मन्त्राक्षर आदि का माहात्म्य इसमें प्रतिपादित है । —नो० सं० १।२७३

मन्त्रव्याख्याप्रकाशिका (कात्यायनीतन्त्र की टीका)

लि०—(१) रङ्गभट्ट-पुत्र नीलकण्ठ विरचित, श्लोक सं० लगभग ७१० । २० वें से २३ वें पटल तक ४ पटलों की टीका पूर्ण । —र० मं ५२९५

(२) कात्यायनीतन्त्र की टीका नीलकण्ठ कृत ।

—कैट्. कैट्. २।९८

मन्त्रशापविमोचन

लि०—शिवरहस्य से गृहीत, श्लोक सं० २० । —अ० ब० ४४५१

मन्त्रशास्त्र

लि०—(१) (क) श्लोक सं० २२००। (ख) श्लोक सं० १०००, अपूर्ण।
—अ० ब० (क) २३९१, (ख) ५५४४ (ख)

(२) ऊर्ध्वाम्नाय मात्र, श्लोक सं० ३८०, पूर्ण।
—डे० का० ३९४ (१८८२-८३ ई०)

(३) श्लोक सं० २७०, अपूर्ण। —डे० का ७०७ (१८८२-८३ ई०)

(४) कमलाकर कृत, मन्त्रशास्त्र में ऊर्ध्वाम्नाय मात्र।
—कैट्. कैट्. १।४३१

(५) —कैट्. कैट्. २।९८, ३।९३

मन्त्रशास्त्रप्रत्यङ्गिरा

लि०— —कैट्. कैट्. १।४३१

मन्त्रशास्त्रसारसंग्रह

लि०—(१) तैंजोर के तुलाजीराज विरचित, संवत् १७६५-८८ के मध्य इसका निर्माण हुआ था। (क) श्लोक सं० लगभग २५४४, पूर्ण। (ख) पूर्ण। (ग) अत्यन्त जीर्णशीर्ण, पूर्ण। (घ) पन्ने ११३। (ङ) १ म अध्याय उपोद्धात, २य अध्याय शिव-विषय-प्रतिपादन, ३ य अध्याय वैष्णव-प्रकरण, ४ र्थ अध्याय देवी-विषयक, ५ म अध्याय मोक्ष-विषयक।

—तैं० म० (क) ६६९८, (ख) ६६९९, (ग) १२१७०, (घ) १२१७१ (ङ) ६६९१

(२) तुलाजीराज (तुलसीराज) विरचित। —कैट्. कैट्. १।४३१

मन्त्रशुद्धि

लि०— —कैट्. कैट्. २।९८

मन्त्रशुद्धिप्रकरण

लि०—कौन मन्त्र किस व्यक्ति के लिए अनुकूल या प्रतिकूल है, इस विषय का इस ग्रन्थ में प्रतिपादन किया गया है। अपने नक्षत्र, तारा, राशि और कोष्ठ के अनुकूल मन्त्रों का जप करना चाहिए, यह इसका प्रतिपाद्य विषय है। —ए० बं० ६२८४

मन्त्रशुद्धिप्रकार

लि०—श्लोक सं० ८२, अपूर्ण। —सं० वि० २५९२९

मन्त्रशुद्ध्यादिसंग्रह

लि०—श्लोक सं० लगभग १६६३, अपूर्ण। —सं० वि० २५४९८

मन्त्रशोधन

लि०—(१) इसमें नौ प्रकार का मन्त्र-शोधन प्रतिपादित है। श्लोक सं० ४०, पूर्ण। —सं० वि० २४७८४

(२) कान्ताकर विरचित। —कैट्. कैट्. १।४३१

मन्त्र-संग्रह

लि०—(१) यह ५ प्रकाशों में पूर्ण है। इसमें मारण आदि तान्त्रिक क्रियाओं के मन्त्रों का हिन्दी में प्रतिपादन है। —ए० बं० ६२८९

(२) इसमें लोगों को वश में लाने के लिए शाबर मन्त्र तथा ओषधियाँ वर्णित हैं। —ए० बं० ६५५९

(३) (क) श्लोक सं० ३८००, खण्डित। (ख) श्लोक सं० ६००। (ग) श्लोक सं० ३५०। (घ) श्लोक सं० ४००।

—अ० व० (क) २६५६ (ख), (ख) ३४४७, (ग) ५६५९, (घ) ११२२३

(४) (क) श्लोक सं० २५७, अपूर्ण। (ख) भानुमतीचरितान्तर्गत, श्लोक सं० १६४, पूर्ण। (ग) शाबर तन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ४६८, पूर्ण। (घ) शाबर तन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ४१, अपूर्ण। (ङ) श्लोक सं० १७५, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४३८७, (ख)-(घ) २४५०१ से २४५०३ तक, (ङ) २५५७८

मन्त्रसंस्कार

लि०—श्लोक सं० १०॥, पूर्ण। —सं० वि० २६२०९

मन्त्रसंस्कारशोधन

लि०—श्लोक सं० १२५। —अ० व० ५१४७

मन्त्रसद्भाव

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

मन्त्रसाधना

लि०—नागार्जुनकृत, श्लोक सं० ११०, पूर्ण। —सं० वि० २४००६

मन्त्रसार

लि०—(१) (क) सिद्धनाथ (नित्यनाथ सिद्ध ?) कृत, श्लोक सं० ७३०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३२०, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २५४३९, (ख) २४३७७

(२) (क) दामोदर कृत, (ख) नित्यनाथ कृत, मन्त्रसार में कौतूहलविद्या तथा मन्त्रसार में सिद्धिखण्ड। —कैट्. कैट्. १।४३१

(३) (क) उत्पलदेव कृत। (ख) नित्यनाथ कृत, मन्त्रसार में सिद्धिखण्ड। —कैट्. कैट्. ३।९३

(४) नित्यनाथ कृत। लिपिकाल शकाब्द १६००। —म० रि० ३१८

मन्त्रसारसंग्रह

लि०—मन्त्रसार-संग्रह या मन्त्रसारपद्धति शिवराम विरचित। —कैट्. कैट्. २।९८

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा रामार्चनचन्द्रिका में।

मन्त्रसारसमुच्चय

लि०—(१) पूर्णानन्द कृत, (क) श्लोक सं० ७०००, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ८००, अपूर्ण। —अ० ब० (क) ८१५८, (ख) ८९३२

(२) पूर्णानन्द कृत। —कैट्. कैट्. १।४३१

(३) (क) पूर्णानन्द कृत, (ख) काशीनाथ कृत। —कैट्. कैट्. २।९८

मन्त्रसारोद्धार

लि०—नित्यनाथ कृत। —कैट्. कैट्. ३।९३

मन्त्रसिद्धान्तमञ्जरी

लि०—भडोपनामक काशीनाथभट्ट विरचित। यह ग्रन्थ तीन भागों में विभक्त है। —ए० बं० ६२२४

मन्त्रसिद्धिप्रकार

लि०—श्लोक सं० ५४, अपूर्ण। —सं० वि० २४५७७

मन्त्रसिद्धिप्रयोग

लि०—श्लोक सं० ८, अपूर्ण। —सं० वि० २६०८७

मन्त्रसिद्धिभाण्डागार

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

मन्त्रसिद्धिलक्षण

लि०—गौतमीतन्त्रोक्त। रा० पु० ४८५८

मन्त्राक्षरमाला या मानसपूजा

लि०— —कट्. कैट्. १।४३१

मन्त्राक्षरीभवानीसहस्रनामस्तोत्र

लि०—श्लोक सं० ५४०। —डे० का० २४० (१८८३-८४ ई०)

मन्त्राभिधान (१)

लि०—यदुनन्दन भट्टाचार्य कृत। इसमें यकारादि मातृकावर्णों के देवता और अर्थ का प्रतिपादन है। —नो० सं० ३।२१७

मन्त्राभिधान (२)

लि०—(१) भैरवी-भैरव संवादरूप। नन्द (नन्दन ?) भट्टाचार्य कृत (नन्दन भट्टाचार्य कृत किस आधार पर लिखा, यह समझ में नहीं आता)। इसमें मन्त्रों के भेद तथा मन्त्रों में व्यवहृत मातृकावर्णों के नाम दिये गये हैं। —क० का० ६४

(२) नन्दनभट्ट कृत। —कैट्. कैट्. ३।९३

मन्त्रदशसंस्कार

लि०—श्लोक सं० ३०, पूर्ण। —सं० वि० २४७३५

मन्त्राङ्गनिरूपण

लि०—श्लोक सं० लगभग ५०, अपूर्ण। —सं० वि० २६४०९

मन्त्राराधनदीपिका

लि०—(१) कंसारि मिश्र-पुत्र यशोधर विरचित। इसमें १० प्रकाश हैं। —इ० आ० २५८१

(२) इसमें १६ प्रकाश है, इसका रचनाकाल शकाब्द १४८० है। इसमें तान्त्रिक विधियाँ—दीक्षा, वास्तुयाग तथा विविध देवियों की पूजा वर्णित है। —ए०बं० ६२३३

(३) यशोधर कृत, श्लोक सं० ३९४,। —सं० वि० २५९३०

मन्त्रार्णफलश्रुति

लि०——श्लोक सं० ५२, अपूर्ण। ——सं० वि० २५१५९

उ०——आगमकल्पलता में।

मन्त्रार्थदीपिका

लि०——(१) गोविन्द न्यायवागीश भट्टाचार्य कृत। इसमें कतिपय मन्त्रों की व्याख्या की गयी है। ——नो० सं० ४।२०९

(२) गोविन्द न्यायवागीश भट्टाचार्य विरचित। श्लोक सं० ७३७८। मन्त्रार्थ के प्रकाशक बहुत से ग्रन्थ हैं फिर भी सब का सार ग्रहण कर इसमें कुछ कहा जाता है। विषय——शाक्त, शैव, आदि पञ्च देवोपासकों के हितार्थ विविध मन्त्रों के उद्धार, मन्त्र आदि का निरूपण, विविध चक्रों का निरूपण, मन्त्रों के दोष की निवृत्ति के लिए उपाय का निर्देश, काली, तारा आदि के विविध मन्त्र, भैरवी, भुवनेश्वरी, मातङ्गी, विपुला, इन्द्राणी, मङ्गला, चण्डी आदि के यन्त्र, देवप्रतिष्ठा, मन्त्रसंस्कार आदि।

——रा० ला० ३३०५

मन्त्रार्थदीपिका या सारसंग्रह

लि०——(१) श्रीहर्ष कवि विरचित। इसमें प्रतिपादित विषय हैं——हरचक्रनिर्णय, अकथहचक्रनिर्णय, ऋणी और धनी चक्र का निर्णय, नक्षत्र-गण-मैत्री का विचार, राशिचक्र का निरूपण, भौतिक चक्र कथन, अकडमचक्र का निरूपण, कूर्मचक्र का निरूपण, दीक्षाफल कथन, गुरु-लक्षण तथा शिष्यलक्षण का निर्देश, दीक्षा में मास, तिथि, नक्षत्र, लग्न, तीर्थस्थान आदि का निर्णय आदि। ——नो० सं० १।२७४

(२) हर्षकवि विरचित। श्लोक सं० ७३०, अपूर्ण। ——सं० वि० २५५६५

मन्त्रार्थनिर्णय

लि०——श्रीविश्वनाथसिंह विरचित। इसमें राममन्त्र तथा रामपूजा की सर्वोत्कृष्टता प्रमाणों द्वारा सिद्ध की गयी है। ——ए० बं० ६४९४

मन्त्रार्थभाष्य

लि०—— ——कैट. कैट्. १।४३१

मन्त्रिणीरहस्य

लि०—— ——कैट्. कैट्. १।४३१

मन्त्रोद्धार

लि०—(१) इसमें छह पटल हैं। उनमें तन्त्रोक्त मन्त्रों के रहस्य, अक्षर, पदों तथा वीजमन्त्रों का प्रतिपादन किया गया है। यह मौलिक तन्त्र प्रतीत होता है।

—ने० द० १।१६३३ (ङ)

(२) वैष्णवतन्त्रसार से गृहीत, श्लोक सं० ३००, अपूर्ण।

—अ० ब० ३५४०

(३) श्लोक सं० ४०५। —डे० का० २४१ (१८८३–८४ ई०)

(४) (क) श्लोक सं० २७२, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ६२, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २६२९०, (ख) २६५७३

मन्त्रोद्धारकोश या उद्धारकोश

लि०—दक्षिणामूर्ति विरचित, ७ कल्पों में, दे०, उद्धारकोश। (ख) श्रीहर्षकृत।

—कैट्. कैट्. १।४३१, २।९८, ३।९३

मन्त्रोद्धारदीपिका

लि०—श्लोक सं० ११७, अपूर्ण। —सं० वि० २४८१३

मन्त्रोद्धारप्रकरण

लि०—अखण्डानन्द विरचित। —कैट्. कैट्. १।४३२

मन्थानभैरव (तन्त्र)

लि०—(१) श्रीनाथ-श्रीवक्रा संवादरूप। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—क्षेत्रपाल-मन्त्र, भैरव-ध्यानसूत्र, महामूर्ति भैरव के आठ वदनों में चतुःषष्टि कलाचक्र, योनि-संस्कारविधि, स्रुक्स्रुवसंस्कारविधि, घृतसंस्कारविधि आदि।

इसमें पटल नहीं है। उनके स्थान पर आनन्द हैं। बीच-बीच में अधिकरण और सूत्र (पटलों के स्थान पर) दिये गये हैं। ये सब मिलाकर ४५ तक पहुँचे हैं तदुपरान्त ग्रन्थ खण्डित है। —ने० द० १।२७९

(२) यह कौलतन्त्र है। इसमें ९९ पटल और २४००० श्लोक हैं।

—ए० बं० ५८१९

उ०—नित्योत्सव तथा पुष्परत्नाकर-तन्त्र में।

मन्युसूक्तविधान

लि०—विनियोगदीपिका से गृहीत, श्लोक सं० १००। —अ० ब० ३४८२

मयूरशिखाकल्प

लि०—श्लोक सं० ५०। —अ० ब० ७४५५

मरीच (चिह्न) कल्प

लि०—कल्पार्णवान्तर्गत, श्लोक सं० २३, पूर्ण। —सं० वि० २४४०६

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

मरीचितन्त्र

लि०— —कैट्. कैट्. १।४३३

मल्लारिकल्प

लि०—मार्तण्डभैरवतन्त्र से गृहीत, (क) श्लोक सं० ३६००। (ख) श्लोक सं० ६००। (ग) श्लोक सं० ३०० (४८ से ५३ उल्लास पर्यन्त)।

—अ० ब० (क) ५६००, (ख) ५६०२, (ग) ५७०६

मल्लादर्श

लि०—प्रेमनिधि पन्त कृत। —कैट्. कैट्. १।४३३

मल्लारितान्त्रिकसन्ध्या

लि०—श्लोक सं० १३०, अपूर्ण। —अ० ब० ५७१४

मल्लारियन्त्रमन्त्रपद्धति

लि०—ब्रह्माण्डपुराण से गृहीत, श्लोक सं० ४०। —अ० ब० ४४५४

महाकपिलपञ्चरात्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, शारदातिलक-टीका राघवभट्टी तथा ताराभक्तिसुधार्णव में। रघुनन्दन ने देवप्रतिष्ठातत्त्व में तथा विट्ठल दीक्षित ने भी इसका उल्लेख किया है।

महाकालपञ्चाङ्ग

लि०—(१) इसमें (१) महाकालपटल, (२) महाकालपद्धति, (३) मन्त्रगर्भकवच, (४) महाकालसहस्रनाम तथा महाकालस्तोत्र हैं। ये श्रीविश्वसारोद्धारतन्त्र के ३४ से ३७ वें पटल में वर्णित हैं। —ए० बं० ६४७७

(२) महाकालकवच, श्लोक सं० ५७। —अ० ब० ३४२३ (ग)

(३) महाकालकवच, गन्धर्वतन्त्रान्तर्गत, पूर्ण।

—बं० प० ४६०

(४) महाकालपञ्चाङ्ग रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० ४४८, पूर्ण।

—र० मं० ४८३८

(५) महाकालपञ्चाङ्ग, रुद्रयामलान्तर्गत।

—कैट्. कैट्. २।९९

(६) महाकालकवच, (क) उत्तरतन्त्र से गृहीत,
(ख) रुद्रयामल से गृहीत।

—कैट्. कैट्. १।४३३

महाकालपञ्चरात्र

लि०—श्लोक सं० ९४५, पूर्ण। —सं० वि० २४५६३

महाकालभैरवतन्त्र

(शरभकवच मात्र)

लि०— —कैट्. कैट्. १।४३४, २।९९

महाकालयोगशास्त्र

(खेचरीक्रिया मात्र)

लि०—आदिनाथ विरचित। —कैट्. कैट्. १।४३४

महाकालसंहिता

लि०—(१) इसके बहुत-से स्तोत्र और मन्त्र अन्यान्य स्थलों में भी दृष्टिगोचर होते हैं। —ए० बं० ६८१८

(२) कालीसहस्रनामस्तोत्र, कालीस्वरूपसहस्रनामस्तोत्र आदि इसमें हैं। इसकी तीन प्रतियाँ हैं। —बं० प० ४९८, १६१३, १६२७

(३) (क) श्लोक सं० ६८१० पूर्ण। (ख) पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४७०७, (घ) २४८९७

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा कालिकासपर्याविधि में।

महाकालसंहिता में षोडशपात्र

लि०—तान्त्रिक पूजा में उपयुक्त तथा विशेष विधि से निर्दिष्ट संख्या वाले पात्रों में निहित मद्य की विशुद्धि के लिए मन्त्र इसमें वर्णित हैं। —ए० बं० ६०५८

महाकालसंहिताकूट

लि०—आदिनाथदेव विरचित। —कैट्. कैट्. १।४३४

महाकालीतन्त्र

लि०—(१) महादेव-पार्वती संवादरूप। पार्वतीजी के यह प्रार्थना करने पर कि आपने मुझसे जो यह देवदुर्लभ विद्या कही उसके ज्ञानमात्र से ही मैं कृतार्थ हो गयी हूँ, किन्तु हे नाथ, उसके तन्त्र, मन्त्र आदि मुझे ज्ञात नहीं है। उन्हें कहने की कृपा करें। महादेवजी ने महाकाली के तन्त्र, मन्त्र, पूजन, ध्यान आदि का निरूपण किया।

—रा० ला० २१७

(२) इसका नामान्तर—महाकालीमततन्त्र है। —कैट्. कैट्. १।४३४

महाकालीप्रस्ताररराजकवच

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० १२४, पूर्ण। —र० मं० ११२५

महाकालीपद्धति

लि०—श्लोक सं० १९८, अपूर्ण। —सं० वि० २६२९२

महाकालीमत

लि०—ऋषि-ईश्वर संवादरूप। आदि शिव ने ऋषिवरों के लिए इसका उपदेश किया। दुःख-द्रारिद्रय से प्रपीडित ब्राह्मण किस उपाय से दुर्गति से छुटकारा पावे इस प्रश्न पर शिवजी ने देवदुर्लभ इस निधिशास्त्र का, जो अत्यन्त गोपनीय है, उन्हें उपदेश दिया। इसमें गुप्त निधियों को ढूंढ निकालने की विधि वर्णित है। श्लोक सं० १७५।

—ट्रि० कै० १०१३ (क)

महाकाशभैरवकल्प

शरभेश्वरकवच मात्र

लि०—दे०, आकाशभैरवकल्प। —कैट्. कैट्. १।४३४

महाकालीसूक्त

लि०—(१) रुद्रयामल से गृहीत। श्लोक सं० २७०, पूर्ण।

—डे० का० ३९५ (१८८२–८३ ई०)

(२) कालीतन्त्र से गृहीत। —कैट्. कैट्. ३।९३

महाकुल

उ०—जन्ममरणविचार में।

महाकुलकुलान्तक

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

महाकौलक्रमपञ्चचक्रसदाचारविधिनिरूपण

लि०—श्लोक सं० १०१, पूर्ण। —सं० वि० २४४७५

महाकौलज्ञानविनिर्णय

मत्स्येन्द्रपाद कृत

लि०—श्लोक सं० ७२६, पहले के दो पन्ने नहीं हैं, अपूर्ण।

—ने० द० २।३६२ (ज)

महाक्रमार्चन

लि०—अनन्तानन्ददेव-शिष्य अजितानन्दनाथ विरचित। इसमें कुब्जिका के उपासकों के प्रातःकृत्यों के साथ कुब्जिका देवी की पूजा का विस्तार से वर्णन है।

—ए० वं० ६४३५

महाक्रमार्णवपद्धति

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

महागणपतिकल्प

लि०—(१) शङ्करनारायण विरचित। श्लोक सं० १०००, खण्डित।

—अ० ब० ६७५९

(२) श्लोक सं० ४००, पूर्ण। इसमें महागणपति के न्यास, ध्यान, पूजा, हवन, जप, स्तुति आदि का प्रतिपादन किया गया है। इसका फल भी पुमर्थपुष्कलफला लक्ष्मी की प्राप्ति बतलाया गया है। —ट्रि० कै० १०१४

(३) महागणपतिकल्प में पञ्चत्रिंशत्पीठिका।

—कैट्. कैट्. १।४३५

महागणपतिक्रम

लि०—(१) दाईदेवसम्प्रदाय के अनन्तदेव द्वारा विरचित। इसमें पूजक के प्रातः-कृत्य आदि के साथ महागणपति की पूजा का विवरण वर्णित है।

—ए० बं० ६५०५

(२) अनन्तदेव चिरचित। इसमें महागणपतिप्रयोग प्रतिपादित है।

—रा० ला० ४१४४

महागणपतिपञ्चाङ्ग

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० ३०९, अपूर्ण।

—सं० वि० २४००५

महागणपतिपद्धति

लि०—श्लोक सं० ३३२, अपूर्ण। —सं० वि० २५२९३

महागणपतिपूजापद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० १०५, अपूर्ण। —सं० वि० २४३२३

(२) —कैट्. कैट्. २।९९

महागणपतिमहामन्त्र

लि०—श्लोक सं० १०। —अ० ब० १०२११ (ख)

महागणपतिमालामन्त्र

लि०—वीरचिन्तामणितन्त्र से गृहीत, श्लोक सं० ६०।

—अ० ब० १३६४३

महागणपतिरत्नदीप

लि०—ब्रह्मेश्वर विरचित। श्लोक सं० ४००।

—अ० ब० ३४३६

महागणपतिलघुमालामन्त्रजप

लि०—श्लोक सं० १८, पूर्ण। —सं० वि० २४०७०

महागणपतिविद्या

लि०—(१) श्लोक सं० १४५, पूर्ण। —सं० वि० २४१४९

(२) —कैट्. कैट्. १।४३५

महागणपतिविधान (पञ्चाङ्ग)

लि०—रुद्रयामल में उक्त। —रा० पु० ५०४९

महागणपतिसहस्रनाम

लि०—(१) शिव-गणेश संवादरूप। श्लोक सं० २००। यह गणेशपुराण के उपासनाखण्डान्तर्गत है। त्रिपुरासुर के वध के समय विघ्ननिवृत्ति के लिए शिवजी के पूछने पर गणपति ने अपने पिता शिवजी से यह कहा। —रा० ला० ८९०

(२) (क) गणेशपुराण से गृहीत तथा
(ख) पद्मपुराण से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।४३५

महागणेशमन्त्रपद्धति

लि०—विश्वेश्वर-शिष्य श्रीगीर्वाणेन्द्र विरचित। —कैट्. कैट्. ३।९४

महागुह्यतन्त्र

लि०—इसमें गुह्यकाली की गुह्य पूजा प्रतिपादित है। गुह्यकाली नेपाल में प्रसिद्ध हैं। यह सारा तन्त्र अत्यन्त रहस्य तथा १२००० श्लोकात्मक कहा गया है। किन्तु इसका अत्यन्त रहस्य जो गुह्यातिगुह्य भाग है उसमें १३०० श्लोक हैं।—ने० द० २।३७७(ए)

महागौरीपूजापद्धति

लि०—श्लोक सं० १४०, अपूर्ण। —र० मं० ११२९

महाचीनक्रमाचार

लि०—(१) नामान्तर—चीनाचारतन्त्र या आचारसारतन्त्र अथवा आचारतन्त्र। शिव-पार्वती संवादरूप यह ७ पटलों में पूर्ण है। यह गुह्य तन्त्र है। इसका विषय है वशिष्ठाराधित भगवती तारा की उपासना।

प्रसिद्धि है कि वशिष्ठजी ने कामाख्यामण्डलवर्ती नीलाचल में दीर्घ काल (१०,००० वर्ष) तक संयम पूर्वक भगवती तारा की उपासना की, किन्तु भगवती का अनुग्रह प्राप्त नहीं हुआ। तदनन्तर वशिष्ठजी ने तारा को शाप दिया जिससे तारा की उपासना सफल नहीं होती। कहा जाता है कि चीनाचार को छोड़ कर अन्य साधना से तारा प्रसन्न नहीं होती। एकमात्र बुद्धरूपी विष्णु ही उनकी आराधना और आचार जानते हैं। यह जानकर वशिष्ठ चीन देश में बुद्ध रूपी विष्णु के समीप उपस्थित हुए। उनका वेदबाह्य आचार देख वशिष्ठ

मन ही मन बड़े विस्मित हुए। वशिष्ठ जी के सोच-विचार में पड़ने पर आकाशवाणी हुई। उसने कहा कि तारा की आराधना में यही आचार सर्वोत्तम है। दूसरे आचार से वह प्रसन्न नहीं होती, यह सुन कर वे बुद्ध रूपी विष्णु को नमस्कार कर तारादेवी की आराधनाविधि जानने के लिए बद्धाञ्जलि होकर उनके सामने खड़े रहे। बुद्धरूपी विष्णु ने तारादेवी की उपासना का विधान उन्हें बतलाया।

प्रसंगतः स्त्रियों की पूज्यता का उल्लेख करते हुए नौ (९) कन्याओं का उन्होंने निर्देश किया। वे नौ कन्याएँ हैं––नटिका, पालिनी, वेश्या, रजकी, नापिताङ्गना, ब्राह्मणी, शूद्र-कन्या, गोपाल-कन्या तथा मालाकार-कन्या। ––इ० आ० २५६३

(२) दे०, चीनाचारसारतन्त्र। ––कैट्. कैट्. २।९९, ३।९४

महाचीनतन्त्र

उ०––प्राणतोषिणी में।

महातन्त्र

लि०––वासिकेश्वर विरचित। श्लोक सं० ४५०, खण्डित।

––डे० का० २३६ (१८८३–८४ ई०)

उ०––आगमतत्त्वविलास में।

महातन्त्रराज

लि०––पार्वती-शिव संवादरूप। श्लोक सं० २४३। श्री पार्वतीजी के यह पूछने पर कि हे देव किससे जगत् की सृष्टि होती है, किससे वह सृष्टि विनष्ट होती है एवं ब्रह्मज्ञान कैसे होता है? भगवान् शिवजी ने पार्वतीजी के प्रश्नों का उत्तर देते हुए तन्त्रसम्मत ब्रह्मज्ञान का निरूपण इसमें किया है। ––रा० ला० ६४२

महात्रिपुरसुन्दरीपद्धति

लि०––

––कैट्. कैट्. ३।९४

महात्रिपुरसुन्दरीपादुकार्चनक्रमोत्तम

लि०––(१) निजात्मप्रकाशानन्द कृत। इसमें त्रिपुरसुन्दरी की पूजाविधि वर्णित है।

––इ० आ० २६००

(२) निजात्मप्रकाशानन्द कृत। ––कैट्. कैट्. २।९९

महात्रिपुरसुन्दरीपूजापद्धति

लि०––श्लोक सं० ५००, पूर्ण। ––ए० बं० ६३७१

महात्रिपुरसुन्दरीपूजाविधि

लि०—श्लोक सं० ७०, अपूर्ण। —सं० वि० २६५५१

महात्रिपुरसुन्दरीवरिवस्याविधि

लि०—भासुरानन्दनाथ कृत, श्लोक सं० ४३६, पूर्ण। —सं० वि० २४८०३

महादेवतन्त्र

लि०—दे०, शिवतन्त्र। —कैट्. कैट्. १।४३७

उ०—सौन्दर्यलहरी-टीका लक्ष्मीधरी में।

महादेवपञ्चाङ्ग

लि०—विश्वसारतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० २९६, पूर्ण। —र० मं० ४८४१

महादेवीपूजापरिमल

लि०—श्लोक सं० ५६०, पूर्ण। —सं० वि० २४००३

महाद्वादशीविचार

लि०—पूर्ण। —डे० का० ४७९ (१८७५-७६ ई०)

महानयपद्धति

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

महानयप्रकाश या महार्थप्रकाश

लि०—(१) पन्ने ३०, पूर्ण। —डे० का० ४८० (१८७५-७६ ई०)

(२) शितिकण्ठनाथ कृत। —कैट्. कैट्. १।४३८, २।१००

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

महानिर्णयतन्त्र (महानिरयतन्त्र ?)

लि०— —कैट्. कैट्. १।४३८

महानिर्वाणतन्त्र

लि०—(१) इसमें १म भाग के १९ पटल हैं। यह बहुत जगहों से प्रकाशित भी हो चुका है। —ए० बं० ६०३९

(२) आद्या-सदाशिव संवादरूप यह दो भागों में विभक्त है—पूर्वकाण्ड और उत्तरकाण्ड। यह पूर्व काण्डमात्र है। इसमें १४ उल्लास (पटल ?) हैं। उनमें प्रति-

पादित विषय——भगवती आद्या का महादेवजी से जीवों के निस्तार के उपाय के विषय में प्रश्न, परब्रह्म की उपासना के क्रम द्वारा जीवों का निस्तार हो सकता है यों भगवान् शिवजी का उत्तर, परब्रह्म की उपासना, प्रकृति-साधना का उपक्रम, देवी के दशाक्षर मन्त्र का उद्धार, कलश-स्थापन, तत्त्व-संस्कार, श्रीपात्रस्थापन, होम, चक्रानुष्ठान, कुलतन्त्र-कथन, वर्णाश्रमाचार, कुशकण्डिका, दस संस्कारों की विधि, वृद्धि श्राद्ध, अन्त्येष्टि, पूर्णाभिषेक आदि कथन, अपने तथा पराये अनिष्टकारी पापों का प्रायश्चित्त आदि।

——रा० ला० २८९

(३) पत्रे ९९, अपूर्ण। ——बं० प० १२९

(४) आद्या-सदाशिव संवादरूप यह दो खण्डों में विभक्त है——पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध। यह केवल उत्तरार्द्ध मात्र है। इसमें १४ उल्लास हैं। १म में कलियुग में पतित जीवों के उद्धार के लिए भगवती द्वारा महादेवजी के प्रति प्रश्न, २ य में महादेवजी का परम ब्रह्मोपासनाक्रम विषयक उत्तर, ३ य में परमब्रह्मोपासना का वर्णन, ४र्थ में प्रकृति-साधना का उपक्रम, ५ म में मन्त्रों के उद्धार, संस्कार आदि, ६ ष्ठ में पात्र-स्थापन, होम, चक्रानुष्ठान, ७ म में कुल-तत्त्व कथन, ८ म में वर्णाश्रम के आचार, ९ म में कुशकण्डिका, दशविध संस्कार, १० म में पूर्णाभिषेकादि, ११ श में अपने और पराये पापों का प्रायश्चित्त, १२ श में सनातन व्यवहार कथन, १३ वें में वास्तु, ग्रहयाग एवं १४ वें में शिवलिङ्ग स्थापन आदि।

——क० का० ५५

(५) सदाशिव प्रोक्त, पूर्ण। ——जं० का० १०६६

(६) पूर्वकाण्ड मात्र, पत्रे १४९। ——रा० पु० ६२६२

उ०——प्राणतोषिणी तथा सर्वोल्लास में।

[सर्वोल्लास तन्त्र में महानिर्वाण तन्त्र के वचन उद्धृत हैं। परन्तु सर्वोल्लासतन्त्र में उद्धृत वचन महानिर्वाणतन्त्र के किसी भी मुद्रित संस्करण में उपलब्ध नहीं होते। इससे किसी-किसी का यह अनुमान है कि मुद्रित ग्रन्थ उक्त तन्त्र का १म खण्डमात्र है। इसका उत्तर खण्ड Sir John Woodroffe, सर जॉन वुडरफ, ने किसी नेपाली पण्डित के निकट देखा था। (द्रष्टव्य, सर्वोल्लासतन्त्र की भूमिका दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य लिखित]।

महानीलतन्त्र

लि०——हर-गौरी संवादरूप। इसमें ३१ पटल हैं। शिव और शक्ति की महिमा तथा उनके मन्त्रों का प्रतिपादन है। ——रा० ला० २१५

महान्यास

लि०--(१) (क) श्लोक सं० ३१२। (ख) श्लोक सं० ३३०।

--अ० ब० (क) १२४६१ (ञ), (ख) ६१९८

(३) --कैट्. कैट्. १।४३८

महापञ्चरात्र

उ०--हेमाद्रि ने चतुर्वर्गचिन्तामणि के परिशेष खण्ड में इसका उल्लेख किया है।

--कैट्. कैट्. २।१००

महापथकल्प

लि०--श्लोक सं० ८३१। --अ० ब० ६८६२

महापीठनिरूपण

लि०--महाचूड़ामणितन्त्र के अन्तर्गत, शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें ५१ महापीठों का वर्णन है। --ए० बं० ५९५६

महापीठनिर्णय

लि०--महाचूडामणि के अन्तर्गत, श्लोक सं० ९३, पूर्ण।

--सं० वि० २४२१०

महाप्रत्यङ्गिराकल्प

लि०--श्लोक सं० ३७००। --अ० ब० ७८५६

महाबल

उ०--स्पन्दप्रदीपिका में।

महाभिषेकविधिपटल

लि०--श्लोक सं० ५०। --अ० ब० ६८३२ (ग)

महाभैरवतन्त्र

लि०-- --कैट्. कैट्. ३।९५

उ०--सौन्दर्यलहरी-टीका लक्ष्मीधरी में।

महामायातन्त्र

उ०--सर्वोल्लास में।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों में अन्यतम है।

महामायाष्टक

लि०—— ——ने० द० १।१६४८ (झ)

महामायाशंबरतन्त्र

उ०——सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी में।

महामायास्तव

लि०——इसमें शिव-शक्ति का सामरस्य प्रतिपादित है।

——ने० द० १।१६३३ (ज) तथा १।१६४५ (ञ)।

महामालासंस्कार

लि०——श्लोक सं० २४, पूर्ण। ——सं० वि० २६२९६

महामुण्डमालातन्त्र

लि०——शिव-पार्वती संवादरूप यह १२ पटलों में पूर्ण तथा ८०० श्लोकात्मक है। इसमें दिव्य, वीर और पशुओं के आचार, भावसाधन, समयाचार आदि का निरूपण, दुर्गा-माहात्म्यवर्णन, शाक्तों की प्रशंसा, दुर्गापूजा-विधान, केवल दुर्गा के पूजन से सर्वसिद्धि कथन, पुष्प आदि का माहात्म्यवर्णन, पुष्प-विशेष से पूजा में वैशिष्ट्य कथन आदि विषय वर्णित हैं।

——नो० सं० ४।२१२

महामृत्युञ्जयकल्प

लि०——(१) ——कैट्. कैट्. १।४४१

(२) त्र्यम्बकतन्त्र से गृहीत। ——कैट्. कैट्. २।१०१

महामृत्युञ्जयजपविधि

लि०——(१) श्लोक सं० ७२, पूर्ण। ——सं० वि० २५०७९

(२) दे०, मृत्युञ्जयविधि। ——कैट्. कैट्. ३।९५

महामृत्युञ्जयमन्त्र

लि०——(१) श्लोक सं० १००। ——अ० ब्र० ६०५५

(२) श्लोक सं० २१। ——सं० वि० २६२०८

महामृत्युञ्जयविधि

लि०——(१) इसमें महामृत्युञ्जय मन्त्र की जपविधि रोगों से मुक्तिपूर्वक दीर्घ जीवन-लाभ के लिए वर्णित है। ——ए० बं० ६४७२

(२) ——कैट्. कैट्. १।४४१

महामोहस्वरोत्तर

उ०—आगमतत्त्वविलास में।

महामोक्षतन्त्र

लि०—(१) शङ्करी-शङ्कर संवादरूप। यह तन्त्र ६४ पटलों में पूर्ण तथा लगभग ३००० श्लोकात्मक है। पिण्ड और ब्रह्माण्ड की एकरूपता, अन्तर्यागादि के विषय में दिशाओं का विचार, अठारह महाविद्याओं की उत्पत्ति, अठारह भैरवों की उत्पत्ति, कालिका के शववाहन होने में कारण, शिवलिङ्ग की उत्पत्ति, शिवजी के शवरूप होने में कारण, शिवजी की पृथिवी आदि आठ मूर्तियों की कथा, योनिबीज, लिङ्गबीज, महाबीज, बं बं कह कर गाल बजाने का माहात्म्य, कालीस्वरूप ककारादिशतनामस्तोत्र, तारा, एकजटा, नीलसरस्वती के स्वरूप, तकारादि शतनामस्तोत्र आदि अनेक विषय वर्णित हैं।

—नो० सं० १।२७८

(२) ६४ पटलों में। —कैट्. कैट्. ३।९५

महाम्नाय

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

महायोनिकवच

लि०—कालीकुलामृततन्त्र के साथ। —सं० वि० २६०४१

महारसायनविधि (१)

लि०—नामान्तर—काकचण्डेश्वरीमत, काकचण्डेश्वरी या काकचामुण्डा। यह भैरवी-ईश्वर संवादरूप है। —इ० आ० २५८७

महारसायनविधि (२)

लि०—महादेव कृत। यह कतिपय तन्त्रों से संगृहीत प्रतीत होता है। इसमें तान्त्रिक वैद्यक वर्णित है। —कैट्. कैट्. १।४४१, २।१०१, ३।९५

महाराज्ञीकवच

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, (क) श्लोक सं० ६०, पूर्ण, (ख) श्लोक सं० ६२, पूर्ण। —र० मं० (क) ११५४, (ख) ५०१३ (ग)

महारात्रिचण्डिकाविधान

लि०— —कैट्. कैट्. १।४४१

महाराज्ञीप्रादुर्भाव

लि०—भृङ्गीशसंहिता से गृहीत। —कैट्. कैट्. २।१०१

महारुद्रमञ्जरी

लि०—भट्ट श्रीत्यगल-पुत्र मालजी नामान्तर वेदाङ्गराय विरचित, श्लोक सं० १६००।
—अ० व० ९६४१

महार्णवतन्त्र

लि०— —कैट्. कैट्. १।४४२

उ०—मन्त्रमहार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

महार्णवकर्मविपाक

लि०—श्लोक सं० ८००। —अ० व० ९९५ (ख)

महार्थप्रकाश या महानयप्रकाश

लि०—(१) (क) पत्रे १८, पूर्ण। (ख) पत्रे ३८, पूर्ण।
डे० का० (क) ४८१, (ख) ४८२, (१८७५–७६ ई०)

(२) शितिकण्ठ कृत, (क) श्लोक सं० ११६१। (ख) श्लोक सं० १३८० दोनों अपूर्ण प्रतियाँ हैं। —डे० का० (क) २३७, (ख) २३८ (१८८३-८४ ई०)

(३) दे०, महानयप्रकाश। —कैट्. कैट्. १।४४२

महार्थमञ्जरी (सटीक)

लि०—(१) महेश्वरानन्द विरचित। श्लोक सं० ३००। यह ग्रन्थ परिमल टीका के साथ अनन्तशयन संस्कृत ग्रन्थावली में प्रकाशित हो चुका है। उक्त टीका ५२ वें श्लोक तक ही है। —ट्रि० कै० १०६५ (ग)

(२) (क) टीका रहित, पूर्ण। (ख) महेश्वरानन्दकृत टीका सहित, पूर्ण।
—डे० का० (क) ४८३, (ख) ४८४, (१८७५-७६ ई०)

(३) (क) महार्थमञ्जरी टीका (टीकाकार अज्ञात) पूर्ण। (ख) महार्थमञ्जरी-टीका भद्रेश्वर विरचित।
—डे० का० (क) ४८५, (ख) ४८६, (१८७५-७६ ई०)

(४) मूल और टीका दोनों महेश्वरानन्द कृत, टीका का नाम परिमल, श्लोक सं० ९३२, पूर्ण।

—डे० का० २३९ (१८८३–८४ ई०)

(५) महार्थमञ्जरी-परिमल। श्लोक सं० १००, पूर्ण।

—डे० का० २४० (१८८३–८४ ई०)

(६) (क) इस पर मूलकार की स्वरचित एक टीका है। (ख) महार्थमञ्जरी-परिमल। (ग) भद्रेश्वर रचित टीका। (घ) क्षेमराज कृत टीका।

—कैट्. कैट्. १।४४२, २।७१ और ३।९५

महाविद्यासारचन्द्रोदय

लि०—(१) महन्त योगिराज राजपुरी कृत, श्लोक सं० २०३०। आरंभ के ३ पन्ने नहीं हैं।

—र० मं० ४८५९

(२) महन्त योगिराज राजपुरी रचित। —कैट्. कैट्. १।४४३

महार्थोदय

गोरक्ष अथवा महेश्वर विरचित।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

महालक्ष्मीकल्प

लि०— —कैट्. कैट्. १।४४२, २।१०१

महारात्र्यादिनिर्णय समयाचारनिर्णययुत

लि०—श्लोक सं० ३०४, पूर्ण। —सं० वि० २४५०५

महालक्ष्मीपञ्जरमन्त्र

लि०—श्लोक सं० २४, पूर्ण। —सं० वि० २५४०१

महालक्ष्मीपद्धति

लि०—(१) महालक्ष्मीपद्धति, श्लोक सं० ४५०।

—कैट्. कैट्. १।४४२, २।९५

(२) प्रकाशानन्द विरचित। —अ० ब० ३४८६

महालक्ष्मीपूजा

लि०-- —कैट्. कैट्. ३।९५

महालक्ष्मीपूजाकल्पवल्ली

लि०--श्री गोविन्द विरचित, श्लोक सं० ५००, प्रकाश सं० ४।

—अ० व० ८०३१

महालक्ष्मीपूजापद्धति

लि०--श्लोक सं० २००। —अ० व० ५५४६

महालक्ष्मीबाह्यपूजनपद्धति

लि०-- —कैट्. कैट्. २।१०१

महालक्ष्मीमाहात्म्य

लि०-- —नें० द० १।१३७६ (क)

महालक्ष्मीमाहात्म्यव्याख्यानसमुच्चय

लि०--गालव ऋषि रचित। यह १६ अध्यायों में समाप्त है।

—नें० द० १।१६४५ (ढ)

महालक्ष्मीमतभट्टारक

लि०--उमा-महेश्वर संवादरूप। यह २४००० श्लोकात्मक महामन्त्रसार नाम के तान्त्रिक ग्रन्थ का एक अंश है। इसमें १८०० श्लोक और १० आनन्द हैं।

—नें० द० १।१३२० (द)

महालक्ष्मीरत्नकोष

लि०--(१) शङ्कर विरचित, (क) श्लोक सं० १७५, केवल ६०, ६७ और ६८ वाँ अध्याय। (ख) श्लोक सं० ३०००। —अ० ब० (क) १३३८३, (ख) १०३०१

(२) यह ब्रह्मा और महेश्वर संवादरूप है। शिवजी से यह देवी को प्राप्त हुआ। इसकी श्लोक सं० ४५८० और अध्याय सं० १०५ है। —तै० म० ६७०३

(३) शङ्कराचार्य विरचित। —कैट्. कैट्. १।४४२, २।१०२

महालक्ष्मीव्रत या महालक्ष्मीचरित

लि०--श्रीराम कविराज कृत। यह ५ अध्यायों में पूर्ण है।

—नें० द० १।१३२० (ज)

महालक्ष्मीव्रतकथा

लि०—

—ने० द० १।१६४५ (त)

महालक्ष्मीव्रतमाहात्म्यव्याख्यान

लि०—

—ने० द० १।९१० (घ)

महालक्ष्मीसूक्त

लि०—

—कैट्. कैट्. १।४४२

महालक्ष्मीहृदयस्तोत्र

लि०—(१) अथर्वणरहस्यान्तर्गत। —ए० बं० ६७२७

(२) महालक्ष्मीहृदय, श्लोक सं० १०७। अथर्वणरहस्य से गृहीत।

—अ० ब० ५७३१

(३) महालक्ष्मीहृदय या महालक्ष्मीहृदयस्तोत्र, अथर्वणरहस्य से गृहीत।

—कैट्. कैट्. १।४४२, २।१०२

महालिङ्गयन्त्रविधि

लि०—श्लोक सं० १००। —अ० ब० १०३८२ (ख)

महालिङ्गार्चनपद्धति

लि०—श्लोक सं० ६०। —अ० ब० ९९५ (ख)

महालिङ्गार्चनप्रयोगविधि

लि०—शिवरहस्य से गृहीत। —कैट्. कैट्. २।१०२

महावाक्यदर्शनसूत्र (कारिकासहित)

लि०—सूत्र सं० ३९९, कारिका सं० ५९२। —अ० ब० ११२३९

महाविद्या

लि०—(१) पत्रे ५५। —रा० पु० ५८३२

(२) यह महाविद्या काली आदि की पूजा का प्रतिपादक है। द्रंष्ट्राओं से भीषण, कृष्णवर्णा, पञ्चमुखी, त्रिनेत्रा, दशभुजा, लम्बे ओठों वाली, अरुणवस्त्र, खड्ग, मुसल, शूल, माला, वाण इन अस्त्रों को धारण की हुई काली देवी की पूजाविधि, मन्त्र आदि इसमें वर्णित हैं।

—क० का० ९३

(३) —कैट्. कैट्. १।४४२, २।१०२

महाविद्यासारचन्द्रोदय

लि०—महन्त योगिराज राजपुरी कृत। —र० मं०

महाविद्याप्रयोग

लि०—(१) श्लोक सं० ७४, अपूर्ण। —सं० वि० २५६११

(२) श्लोक सं० १५०। —अ० ब० ६०२५ (क)

महाविद्यादशश्लोकीविवरण

लि०—पन्ने ४। —रा० पु० ४२९६

महाविद्यादीपकल्प

लि०—(१) शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें ब्रह्मस्वरूपिणी महाविद्या के लिए प्रज्वलित दीपदानविधि वर्णित है। महाविद्या के जप, पूजन आदि भी इसमें वर्णित हैं। —बी० कै० १२९०

महाविद्यापारायणविधि

लि०—पन्ने २७। —रा० पु० ५६३६

महाविद्याप्रकरण

लि०—नरसिंह विरचित। —कैट्. कैट्. १।४४३

महाविद्यामन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० १००, अपूर्ण। —अ० ब० ११८१५

(२) वाञ्छाकल्पलता के अन्तर्गत। रक्तचामुण्डामन्त्र इसका नामान्तर है। श्लोक सं० २३, पूर्ण। —सं० वि० २४१०९

महाविद्यारत्न

लि०—हरिप्रसाद माथुर विरचित। श्लोक सं० ९६९, पूर्ण। —सं० वि० २४९२१

महाविद्याषोडशाक्षरी

लि०—श्लोक सं० ३५। इसमें यक्षीदुर्गामन्त्र, वगलाविधान, कार्तवीर्यार्जुन-मन्त्र आदि भी हैं। —अ० ब० १३३८२ (डी)

महाविद्यासहस्रनाम

लि०—मृत्युञ्जयतन्त्रान्तर्गत, अपूर्ण। —बं० प० १३९७

महाविद्यास्तुति

लि०—श्लोक सं० १०० । —अ० ब० ३४८७

महाशङ्खमालासंस्कार

लि०—(१) इसमें शक्तिपूजा में उपकरणभूत शंखमाला का लक्षण, उसका शोधन-प्रकार, धारणविधि आदि। शंखमाला गूंथने के लिए सूत का विवरण सनत्कुमारसंहिता से उद्धृत है—कपास का सूत सब काम, अर्थ और मोक्ष का प्रदानकर्ता है। ब्राह्मण-कन्याओं का काता हुआ सूत बहुत उत्तम है। चारों वर्णों के लिए क्रमशः सफेद, लाल, पीला और काला सूत उत्तम है। सब वर्णों के लिए लाल सूत सर्वेप्सित प्रदान करनेवाला कहा गया है।

—रा० ला० ९९८

(२) (क) श्लोक सं० ५४, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३९, पूर्ण। चषकपात्रशोधन भी इसमें सम्मिलित है। —सं० वि० (क) २५७५२, (ख) २६१४२

महाशक्तिन्यास

लि०—(१) श्लोक सं० २००। —अ० ब० ३६५८

(२) श्लोक सं० ३५०। —अ० ब० १३६७०

महाशैवतन्त्र

लि०—(१) अपूर्ण। —तैं० म० ११४२५

(२) श्लोक सं० लगभग ८२०, अपूर्ण। —सं० वि० २३९९०

(३) महाशैवतन्त्र में आकाशभैरवकल्पान्तर्गत गणेशस्तोत्र पञ्चावरण-स्तोत्र मात्र।

—कैट्. कैट्. १।४४३

महाशैवतन्त्र—आकाशभैरवकल्प

लि०—(१) उमा-महेश्वर संवादरूप। इसमें १म कल्प में १ से ११ अध्याय, २ य कल्प में १ से १५ अध्याय एवं ३ य कल्प में १ से ५० अध्याय हैं। यह अतिरहस्य शैवतन्त्र है।

—ए० बं० ५८९५

(२) नारदजीने कैलास-शिखर पर शिवजी से निवेदन किया—भगवन् देवाधिदेव, मुझे शूलिनी-मन्त्र का माहात्म्य सुनने की इच्छा है। उसका क्या बीज है, क्या अङ्ग हैं, क्या स्वरूप है, कौन मुनि है, क्या विधान है, क्या उसका कर है और क्या उद्धार है। यह सब मन्त्रों का हृदय कहा गया है। इस पर शङ्करजी ने शूलिनी (दुर्गा) के पूजन, माहात्म्य आदि का प्रतिपादन किया। यह २० उपदेशों में पूर्ण है। —क० का० ५४

महाषोडशीसहस्रनाम

लि०—— ——कैट्. कैट्. २।२१७

महाषोढान्यास

लि०——(१) (क) श्लोक सं० १८०। (ख) श्लोक सं० २५०।
——अ० व० (क) ५६१३, (ख) ११९९५

(२) विरूपाक्ष विरचित, श्लोक सं० २००। बाह्यमातृका-न्यास भी इसमें संमिलित है। यह ऊर्ध्वाम्नाय के अन्तर्गत है। इसमें करन्यास, अङ्गन्यास आदि की विधि निर्दिष्ट है। ——रा० ला० ३८२, ३५६

(३) अपूर्ण। ——र० मं० ९६

(४) (क) श्लोक सं० ४०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १४५, पूर्ण। वरणविद्यान्यास तथा षोडश मूलविद्यान्यास भी इसमें संमिलित हैं। (ग) श्लोक सं० २९, अपूर्ण।
——सं० वि० (क) २४७००, (ख) २५९३१, (ग) २६०४०

(५) ऊर्ध्वाम्नाय से गृहीत। ——कैट्. कैट्. ३।९६

महासंमोहनतन्त्र

लि०——श्लोक सं० २५०। इसमें तान्त्रिक सिद्धान्तों का विस्तार से प्रतिपादन किया गया है। यह १० पटलों में पूर्ण है। ——ट्रि० कै० १०१६ (क)

उ०——सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी में।

महासरस्वतीसूक्त

लि०—— ——कैट्. कैट्. १।४४३

महासिद्धामोघक्रियाप्रयोग

लि०——शाङ्खयायनतन्त्र से गृहीत। ——कैट्. कैट्. १।१०२

महासुन्दरीतन्त्र

उ०——वाल्मीकिरामायण की नागेशभट्ट कृत टीका रामाभिराभीय तथा अहल्याकामधेनु में।

महास्वच्छन्दतन्त्र

उ०——योगिनीहृदयदीपिका तथा सौभाग्यभास्कर में।

महास्वच्छन्दसंग्रह

उ०—योगिनीहृदयदीपिका में।

महास्वच्छन्दसारसंग्रह

लि०—देवी-भैरव संवादरूप। इसमें शक्ति देवी की पूजा के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण दिया गया है। मन्त्रोद्धार, मन्त्रविद्या, न्यासमन्त्र आदि बहुत विषय वर्णित हैं। इसमें ४५ पटल हैं। —म० द० ५६९१–९२

महिषमर्दिनीतन्त्र

लि०—शङ्कर-पार्वती संवादरूप, यह १० पटलों में है।

—नो० सं० १।२८२

उ०—शाक्तानन्दतरङ्गिणी तथा प्राणतोषिणी में।

महिषमर्दिनीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) इसमें—१. महिषमर्दिनीपटल, २. महिषमर्दिनीकवच, ३. महिषमर्दिनीसहस्रनाम, ४. महिषमर्दिनीस्तोत्र तथा महिषमर्दिनीपद्धति आदि वर्णित हैं।

—ए० बं० ६४३३

(२) श्लोक सं० १४४, पूर्ण। —सं० वि० २४८८६

महिषमर्दिनीसहस्रनाम

लि०—ईश्वर प्रोक्त। —ए० बं० ६७०६

महिषमर्दिनीस्तवरहस्यप्रकाश

लि०—जगदीश पञ्चानन भट्टाचार्य कृत। यह महिषमर्दिनीस्तव का व्याख्यान है।

—नो० सं० १।१६०

महिषमर्दिनीस्तोत्रटीका

लि०—कालीचरण कृत। —कैट्. कैट्. ३।९६

महेन्द्रजाल

लि०—पट्टनाथ विरचित, श्लोक सं० १५०। —अ० ब० ८२९५

महेश्वरकवच

लि०—पूर्ण। —बं० प० ४६६

महेश्वरतन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० ३२०० (खण्डित)। —अ० ब० १२२६१

(२) —कैट्. कैट्. २।२१७

महोग्रतन्त्र

उ०—आगमतत्त्वविलास में।

महोग्रताराकल्प

उ०—पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव तथा तारारहस्यवृत्तिका में।

महोग्रतारामन्त्रविधान

लि०—श्लोक संख्या लगभग १२०, अपूर्ण। —सं० वि० २४३००

महोच्छुष्मभैरवतन्त्र

दे०, उच्छुष्मभैरवतन्त्र।

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

महोड्डीशतन्त्र

लि०—पार्वती-परमेश्वर संवादरूप यह तन्त्र लगभग ५०० श्लोकात्मक है। इसमें वशीकरण, उच्चाटन, मोहन, स्तंभन, शान्तिक, पौष्टिक आदि विविध तान्त्रिक कर्म कहे गये हैं। जिनमें उन्मादन, विद्वेषण, अन्धीकरण, मूकीकरण, शरीरसंकोचन, स्तब्धीकरण, भूतज्वरोत्पादन, शस्त्र और शास्त्र को दूषित (बेकार) कर देना, नदी आदि का जल शोष लेना, दही, शहद आदि नष्ट कर देना, हाथी, घोड़े आदि को क्रुद्ध बना देना, सर्प का विष नष्ट कर देना, वेताल-सिद्धि, खड़ाऊँ की सिद्धि आदि भी कई विधियाँ हैं।

—नो० सं० १।२८३

मातङ्गिनीपद्धति

लि०—(१) रामभट्ट विरचित, श्लोक सं० ५५०। पूजाकाण्ड मात्र।

—अ० ब० १००

(२) रामभट्ट कृत। —कैट्. कैट्. १।४४७

मातङ्गीकल्प

लि०—श्लोक सं० ९२, पूर्ण। —सं० वि० २४२०२

मातङ्गीकवच

लि०—(१) श्लोक सं० ४२ । —अ० ब० ८७७०

(२) यह सौभाग्यलक्ष्मीकल्प का १० वाँ पटल है।

—कैट्. कैट्. ३।९७

मातङ्गीक्रम

लि०—कुलमणि शुक्ल कृत । —कैट्. कैट्. १।४४७

मातङ्गीडामर

लि०—हर-गौरी संवाद रूप। इसमें उच्चाटन, मारण, मोहन, वशीकरण, आकर्षण, तथा विद्वेषण का वर्णन विशेष रूप से किया गया है।

मातङ्गीतन्त्र

लि०— —कैट्. कैट्. २।१०३

उ०—पुरश्चर्यार्णव में ।

मातङ्गीदीपदानविधान

लि०—रुद्रयामल से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।४४७

मातङ्गीदीपदानविधि

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें देवी मातङ्गी के लिए प्रज्वलित दीपदान-विधि प्रतिपादित है और साथ ही साथ मातङ्गी के मन्त्र, उनके ऋषि, छन्द, देवता आदि, करन्यास, अङ्गन्यास आदि के साथ देवी-पूजा का भी विवरण दिया गया है। —बी० कै० १३१३, १२९६

मातङ्गीध्यान, न्यास आदि

लि०—श्लोक सं० ९८, अपूर्ण। —सं० वि० २४२०४

मातङ्गीपञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक सं० ३५३, अपूर्ण। —सं० वि० २४२०३

मातङ्गीप्रयोग

लि०—श्लोक सं० १६४, पूर्ण। 'घटस्थापनप्रमाण' भी इसमें सम्मिलित है।

—सं० वि० २६४८३

मातङ्गीमन्त्रपद्धति

लि०—शिवानन्दभट्ट कृत। —कैट्. कैट्. २।१०३

मातङ्गीरहस्य

लि०— —कैट्. कैट्. १।४४७

मातङ्गीविद्या

लि०—श्लोक सं० ६५, पूर्ण। —सं० वि० २५९३२

मातङ्गीश्यामाकल्प

लि०—श्लोक सं० ११५, पूर्ण। मातङ्गीमन्त्र भी इसमें संमिलित हैं।
—सं० वि० २५२१८

मातृकाकवच

लि०—चिन्तामणितन्त्रान्तर्गत। देवी-ईश्वर संवादरूप। इसका दूसरा नाम मातृकाश्रीजगन्मङ्गल है। इसमें शरीर के विभिन्न अङ्गों की रक्षा के लिए विभिन्न वर्णों का विनियोग कहा गया है। —ए० बं० ६७३१

मातृकाकेशवनिघण्टु

लि०—महीधर विरचित। —डे० का०

मातृकाकोष

लि०—(१) इसमें भी अक्षरों के नाम सज्जनों के उपकार के लिए वर्णित हैं। इसके धारण से मनुष्य को मन्त्रोद्धार में क्षमता प्राप्त होती है। —ए० बं० ६२९५

(२) श्रीमच्चतुर्भुजाचार्य-शिष्य कृत, श्लोक सं० २७०। यह मातृकाकोष सब कोषों में परमोत्तम है। इसके धारण से मनुष्य मन्त्रोद्धारण में समर्थ होता है। इसमें अकारादि अक्षरों के मान्त्रिक पर्याय कहे गये हैं। —रा० ला० ४२५

(३) इसमें ओंकार आदि मन्त्रों तथा मातृकावर्णों के नाम दिये गये हैं। कादि-मत में पार्वतीजी के प्रति शिवजी ने अकार से लेकर क्षकार तक जो वर्णसंज्ञा कही थी, वही यहाँ कही गयी है। इसके कर्ता का नाम ज्ञात नहीं हो सका।
—क० का० ६५

(४) पूर्ण। —र० मं० ४०४

मातृकाक्षरनिघण्टु

लि०—महीधर विरचित, श्लोक सं० ६६।

—डे० का० २४३ (१८८३–८४ ई०)

मातृकाचक्रविवेक

लि०—(१) स्वतन्त्रानन्दनाथ कृत। इसमें वर्णमालिका की प्रतिनिधिभूत शक्ति देवी का परमरहस्य मातृकार्थस्वरूप स्पष्टतया प्रतिपादित है। यह छह खण्डों में पूर्ण है। उनके नाम हैं—१. तात्पर्यविवेक, २. सुषुप्तिविवेक, ३. स्वप्नविवेक, ४. जाग्रद्-विवेक, ५. तुर्यविवेक तथा ६. मातृकाचक्र-संग्रह।

—म० द० ५६९३, ५६९४

(२) शिवानन्द कृत (?), श्लोक सं० १९०, पूर्ण।

—सं० वि० २५५६३

[संभवतः यह मातृकाचक्रविवेक ला व्याख्यान होगा, न कि मातृकाचक्रविवेक —सं०]

मातृकाचक्रविवेकव्याख्या

लि०—शिवानन्द कृत। मातृकाचक्रविवेक नाम का निबन्ध परम्परा द्वारा प्राप्त महामन्त्र के अर्थोपदेश में अत्यन्त श्लाघ्य है। उक्त ग्रन्थ के उपदेश से ही बोध हो सकता है और वह सिद्धजनों का परमप्रिय ग्रन्थ है, इसलिए शिवानन्द नामक महात्मा ने उस पर सुबोध वृत्ति लिखने की कृपा की। —म० द० ५६९५, ९७

मातृकाजगन्मङ्गलकवच

लि०—(१) देवीश्वर संवादरूप यह चिन्तामणितन्त्रान्तर्गत है। श्लोकसं० १२५। इसमें मातृकाकवच तथा उसके धारण की प्रशंसा प्रतिपादित है।

—रा० ला० ४८६

(२) भूतशुद्धितन्त्रान्तर्गत, पूर्ण। —बं० प० ११९४

मातृकातन्त्र

उ०—सर्वोल्लास तथा आगमतत्त्वविलास में।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों में अन्यतम है।

मातृकानिघण्टु (१)

लि०—(१) महीदास कृत, श्लोक सं० ६३, पूर्ण। —सं० वि० २४६९२
(२) महीधराचार्यकृत, श्लोक सं० ५५, पूर्ण। —सं० वि० २५६४८
(३) नामान्तर—तन्त्रकोश। श्लोक सं० ८३, पूर्ण। —सं० वि० २५८२९
(४) श्लोक सं० २१५, अपूर्ण। —सं० वि० २४२६२
(५) श्लोक सं० १४०, पूर्ण। —सं० वि० २६३२१
(६) (क) श्लोक सं० ८८, पूर्ण। (ख) श्लोक सं. ९३, पूर्ण। (ग) श्लोक सं. ८१, पूर्ण। (घ) श्लोक सं० ८५, पूर्ण। (ङ) श्लोक सं० ८०, पूर्ण। (च) श्लोक सं. ६६, पूर्ण। (छ) श्लोक सं० ८७, पूर्ण।
—सं० वि० (क) २४१५३, (ख) २४१६५, (ग) २५२०३, (घ) २५९३३, (ङ) २५९३४, (च) २६२१५, (छ) २४१५३
(७) लि०— —कैट्. कैट्. २।२१७
(८) (क) महीदास विरचित, श्लोक सं० ६२, पूर्ण।
(ख) महीधराचार्य विरचित, श्लोक सं० ५५, पूर्ण।
(ग) नामान्तर—तन्त्रकोश, श्लोक सं० ८०, पूर्ण।
(घ) श्लोक सं० ८४ पूर्ण, श्लोक सं० ८०, पूर्ण।
(ङ) श्लोक सं० १४०, अपूर्ण।
—सं० वि० (क) २४६९२, (ख) २५६४८, (ग) २५८२९, (घ) २५९३३, (ङ) २६३९१ आदि।

(९) ५९ श्लोकों में पूर्ण। क० का० की प्रति में ६५ श्लोक हैं, पर अन्तिम श्लोक, जिसमें कर्ता का नामोल्लेख है, नहीं है। परन्तु इ० आ० में वह श्लोक है। तान्त्रिक टेक्स्ट में यह प्रकाशित हो चुका है। इसके ३५ और ४० वें पेज पर अन्तिम पुष्पिका में इसके कर्ता का नाम महीधर दिया गया है किन्तु अन्तिम श्लोक में कर्ता का नाम महीदास कहा गया है। —ए० बं० ६२५७–५९

(१०) —कैट्. कैट्. १।४४१, २।२१६

मातृकानिघण्टु (२)

लि०—श्रीमद्देशिकमण्डलीमुकुटमाणिक्योपम परमहंस आचार्य विरचित। इसमें मातृका-बीज आदि का निरूपण किया गया है। —नो० सं० ३।२२७

मातृकानिघण्टु (३)

लि०—(१) नृसिह विरचित। —रा० पु० ५०००

(२) दे०, मन्त्राभिधान। —क० का० ६८

मातृकानिघण्टु (४)

आनन्दतीर्थ कृत। —कैट्. कैट्. ३।९७

मातृकान्यास

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ७०, पूर्ण, (ख) श्लोक सं० ७००, अपूर्ण।

—अ० ब० (क) ५१४९, (ख) १०८३३

(२) अपूर्ण। —बं० प० ७०४

(३) (क) श्लोक सं० १८०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ७८, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० ३०, पूर्ण। (घ) श्लोक सं० ३४, पूर्ण। (ङ) श्लोक सं० ४०, पूर्ण। (च) श्लोक सं० ९२, अपूर्ण। (छ) श्लोक सं० १३६, पूर्ण। (ज) श्लोक सं० ५२, पूर्ण। (झ) श्लोक सं० ५४, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४०७६, (ख) २४५९१, (ग) २४६८३, (घ) २४७७०, (ङ) २४८४६, (च) २५०४१, (छ) २५५६२, (ज) २५७३७, (झ) २६०४१

मातृकान्यासविधि

लि०—(क) श्लोक सं० १९, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ५७, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० १०२, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २४४४७, (ख) २४७७१, (ग) २५२३८

मातृकान्यासाङ्गुलिनियम

लि०—श्लोक सं० १८, पूर्ण। —सं० वि० २४७६७

मातृकापूजन

लि०—(१) इसमें गौरी आदि षोडश मातृकाओं की पूजा प्रतिपादित है।

—बी० कै० १२९७

(२) —कैट्. कैट्. १।४४७, २।१०३

मातृकाभिधान

लि०—श्लोक सं० २१५, पूर्ण। —सं० वि० २३९६८

मातृकाभूतलिपि

लि०——श्लोक सं० १६, अपूर्ण। ——सं० वि० २५९३६

मातृकाभेदतन्त्र

लि०——(१) चण्डिका-शङ्कर संवादरूप, १४ पटलों में पूर्ण। श्लोक सं० ५८६। सोना-चाँदी बनाने के उपाय, सन्तानोत्पत्ति-नियम, कुण्डलिनी भोगों को भोगती है जीव नहीं, ऐसा विचार कर भोजन करने से भोजन मोक्ष-साधन होता है, यह प्रतिपादन, देह के भीतर स्थित कुण्ड आदि, शिवनिर्माल्य की अग्राह्यता में हेतु, मद्य-पान की प्रशंसा, पारद-भस्म करने के उपाय, पारद-भस्म की महिमा, चन्द्र और सूर्य के ग्रहण का रहस्य, चामुण्डा के मन्त्र और उसकी आराधनाविधि, त्रिपुरा के मन्त्र, पूजा, स्तोत्र आदि का प्रतिपादन, पारद के शिवलिङ्ग का माहात्म्य आदि विषय इसमें वर्णित हैं।

——रा० ला० ४२०५

(२) यह मूल तन्त्र है। इसमें शाक्त आचार वर्णित है। सोना-चाँदी बनाने की विधि, मातृगर्भ में पुत्रोत्पत्ति आदि कई विषय भी इसमें प्रतिपादित हैं। १४ पटलों में यह पूर्ण है। ——क० का० ८६

(३) (क) श्लोक सं० ५५४, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० २८६, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ४३२, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० ५५०, अपूर्ण। (ङ) अपूर्ण। (च) श्लोक सं० लगभग ६०, अपूर्ण।——सं० वि० (क) २४७२२, (ख) २४९१०, (ग) २६०६५, (घ) २६४३९, (ङ) २६४४०, (च) २६४४४

(४) श्लोक सं० ५००, पूर्ण। यह तन्त्र विविधमूलतन्त्र तथा विविध-तन्त्रसंग्रह के नाम से १५ पटलों में बंगाक्षरों में छप चुका है। ——ए० बं० ५८२३

(५) पार्वती-शङ्कर संवादरूप। इसका १४ पटलों में पूर्ण होने का उल्लेख किया गया है। सब रत्नों के निर्माण की विधि, यदि किसी को सुवर्ण की आकाङ्क्षा हो तो उसके लिए युग-भेद से जप, पूजा आदि का नियम निर्देश, पुत्रोत्पादन कारण, नाभिपद्म आदि का निरूपण, भोग से मोक्ष-प्राप्ति कथन, कुण्डलिनी के मुख में आहुति-क्रम कथन, होमकुण्ड-विधि, आहुति का परिमाण, ब्राह्मणों का कारण (वारुणी) पान में अधिकार कथन, ब्राह्मण-लक्षण कथन, कारण की ग्रहणविधि, शिवनिर्माल्य की ग्रहणविधि, गङ्गामाहात्म्य कथन, सुरादेवी का माहात्म्य कथन आदि बहुत विषय वर्णित हैं। ——नो० सं० १।२८४

(६) यह शिव प्रोक्त है। पत्रे १९, सम्पूर्ण। ——जं० का० १०६८

(७) मातृकाभेदतन्त्रे यज्ञसूत्रविधानम्। —कैट्. कैट्. १।४४८

उ०—शक्तिरत्नाकर, सर्वोल्लास, प्राणतोषिणी तथा कालीसपर्याविधि में।

मातृकार्णनिघण्टु

लि०—नारायणदीक्षित-पुत्र भानुदीक्षित विरचित। मातृकावर्णसंग्रह और मातृकार्णवनिघण्टु भी इसका नाम कहा गया है। —र० मं० ४८५८

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव तथा तारारहस्यवृत्ति में।

मातृकार्णव

उ०—तन्त्रसार, आगमतत्त्वविलास तथा तारारहस्यवृत्तिका में।

मातृकाविधि

लि०—यह भैरवयामल का द्वितीय उल्लास है। श्लोक सं० ६६।

—सं० वि० २५०१८

मातृकाशकुनावली

लि०—यह रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत है। श्लोक सं० ६४, अपूर्ण।

—र० मं० ११७५

मातृकासरस्वतीमहामन्त्र

लि०—श्लोक सं० २५। —अ० ब० १०२११ (ख)

मातृकाहृदय

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्धिनी तथा भावार्थदीपिका में।

मातृकोदय

उ०—प्राणतोषिणी में।

मातृभेद या मातृकाभद

दे०, मातृकाभेदतन्त्र।

मातृरोदन

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

मातृसद्भाव या मातृकासद्भाव

लि०——(क) श्लोक सं० ३१५०, अपूर्ण। पुष्पिका में इसके २७ पटल कहे गये हैं। सब यामलों की अपने सामर्थ्यानुसार आलोचना कर सबका सार संग्रह-रूप यह ग्रन्थ बनाया गया है। इसमें पूजा के विभिन्न प्रकार तथा न्यास, मुद्रा आदि के विभिन्न प्रकारों के लक्षण दिये गये हैं।

(ख) श्लोक सं० १६००, अपूर्ण। यह १३ वें पटल तक ही है।

——ट्रि० कै० (क) १०१७, (ख) १०१७(ख)

उ०——परात्रिंशिका तथा तन्त्रालोक में।

मानसपूजन (१)

लि०——(१) इसमें ५२ श्लोक या मन्त्र हैं। यह श्रीशङ्कराचार्य विरचित मानसिक पूजन, जो रा० ला० २२३६ में वर्णित है, से मिलता-जुलता है।

——ए० बं० ६६७४

मानसपूजन (२)

लि०——(१) चतुर्भुजाचार्य-शिष्य श्री विजयरामाचार्य विरचित, श्लोक सं० ४५०। इसमें जयदुर्गास्तोत्र वर्णित है। ——रा० ला० १९३

(२) चतुर्भुजाचार्य-शिष्य विजयरामाचार्य कृत।

——अ० ब० १३३७५ (क)

लि०——(१) मानसपूजा श्लोक सं० १२६। ——कैट्. कैट्. १।४५१

(२) श्लोक सं० २५, पूर्ण। ——सं० वि० २६१३२

मानसपूजापद्धति (देवी की)

लि०——श्लोक सं० ४८, अपूर्ण। ——सं० वि० २४८६७

मानसपूजाविधि

लि०——श्लोक सं० २७, अपूर्ण। ——सं० वि० २५७४९

मानसार्चन

लि०——पूर्णानन्द गिरि विरचित। श्लोक सं० ६७, अपूर्ण।

——सं० वि० २६११०

मानसिकस्नान

लि०—श्लोक सं० २२। इसमें मानसिक स्नान और उनका फल वर्णित है।
—ट्रि० कै० ११०२ (ख)

मानसोपचारपूजापद्धति

लि०—
—कैट्. कैट्. १।४५२

मानसोल्लास

लि०—(१) मानसोल्लास-वृत्तान्ताख्य टीका सहित। मानसोल्लास श्रीशङ्कराचार्य कृत दक्षिणामूर्ति की स्तुति पर व्याख्यान है। दूसरा (मानसोल्लासवृत्तान्त) पूर्व व्याख्यान की व्याख्या है। पूवव्याख्याकार हैं शङ्कराचार्य-शिष्य विश्वरूपाचार्य और २ य व्याख्याकार हैं रामतीर्थ।
—रा० ला० १७६३

(२) मानसोल्लासविलाससहित, श्री शङ्कराचार्यजी ने दक्षिणामूर्ति-स्तोत्र के व्याज से समस्त वेदान्तरहस्य जिन दस श्लोकों से आविष्कृत किया उन दस श्लोकों का तत्त्व शङ्कराचार्य-शिष्य विश्वरूपाचार्य ने मानसोल्लास से व्यक्त किया। उस पर रामतीर्थ ने उक्त व्याख्या की।
—रा० ला० १७८३

(३) मानसोल्लास सटीक टीकाकार रामतीर्थ। —रा० पु० ५६११

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्धिनी, आगमतत्त्वविलास तथा ताराभक्ति-सुधार्णव में।

मानाङ्गुलमहातन्त्र

उ०– शाक्तानन्दतरङ्गिणी में

मायातन्त्र

लि०—(१) हर-पार्वती सवादरूप। —ए० बं० ५९८५

(२) यह तन्त्र १७ तटलों में है। पुष्पिका में "मायातन्त्रे सप्तदशः पटलः" लिखा है। १७ वें पटल के विषय—भावादिनिरूपण, भुवनेश्वरी कवच, चण्डीपाठविधि, चण्डी-पाठ-फल आदि, दिव्य, पशु आदि तीन भावों का निरूपण तथा कलियुग में ज्ञानोपाय निरूपण वर्णित हैं।
—नो० सं० १।२८५

(३) इसमें ७ पटल तथा ३२० श्लोक हैं। ७ पटलों के विषय है क्रमशः—मायोत्पत्ति, मायाराज (?) देवी के यन्त्र, स्तोत्र आदि का विधान, मन्त्रपुरश्चरण, दुर्गा नाम के उच्चारण का फल, योगतत्त्व तथा अन्यान्य यन्त्र। —रा० ला० २१४

(४) श्लोक सं० ३००, खण्डित । —अ० ब० १०२१७

(५) केवल ९ म पटल का कुछ अंश, पन्ने १३, अपूर्ण । —वं० प० ११२

(६) श्लोक सं० २८६, पूर्ण । —र० मं० ४९६३

(७) (क) १ से ७ पटल तक पूर्ण, श्लोक सं० २५५ । (ख) श्लोक सं० १६५, अपूर्ण । —सं० वि० (क) २४७१३, (ख) २५५६१,

(८) मायातन्त्रे दुर्गानाममहात्म्यम् । —कैट्. कैट्. १।४५२

उ०—प्राणतोषिणी, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, शक्तिरत्नाकर, ताराहस्यवृत्ति, आगमतत्त्वविलास तथा सर्वोल्लास में ।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है ।

मायाबीजकल्प (ह्रींकारकल्प)

लि०—पन्ने ३ । —रा० पु० ६४१३

मायाबीजकल्प

लि०—शक्तिदास विरचित, पूर्ण । —डे० का० ४८७ (१८७५-७६)

मायावामनसंहिता

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में ।

मायिभैरवतन्त्र

उ०—Oxford (आक्सफोर्ड) १०९ (A) के अनुसार इसका उल्लेख है ।

—कैट्. कैट्. १।४५२

मारणप्रयोग

लि०—(१) श्लोक सं० १२०, पूर्ण । —अ० ब० ५१५०

(२) यक्षिणीप्रयोगान्तर्गत, श्लोक सं० ३०, पूर्ण । —सं० वि० २५५११

मारणादिप्रयोग

लि०—दत्तात्रेयतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक सं० १४५, अपूर्ण ।

—सं० वि० २६१५३

मारुतिमन्त्रविधान

लि०—श्लोक सं० २७, पूर्ण । —सं० वि० २४३९८

मार्जारीतन्त्र

लि०—पार्वती-ईश्वर संवादरूप इस तन्त्र में उच्छिष्टगणेशपूजासम्बन्धी १० श्लोक हैं।

—ए० बं० ५८९७

मार्तण्डदीपिका

उ०—अहल्याकामधेनु में।

मार्तण्डभैरव

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

मार्तण्डमाहात्म्य

लि०—(१) भृङ्गीशसंहिता के अन्तर्गत, पत्रे १५। —रा० पु० ५७८०

(२) भृङ्गीशसंहिता से गृहीत। —कैट्. कैट्. २।१०४

मालापञ्चदशक्रम

लि०—श्लोक सं० ३०, अपूर्ण। —सं० वि० २५०५२

मालाप्रकरण

लि०—तन्त्रसारान्तर्गत, श्लोक सं० १६३, अपूर्ण। —सं० वि० २५३१२

मालामन्त्रमणिप्रभा

लि०—कोङ्कणस्थ रङ्गनाथ विरचित। श्लोक सं० लगभग ५००, पूर्ण। यह श्रीविद्याविवरणमालामन्त्र की व्याख्या है। त्रिपुरार्णव के अन्तर्गत मालामन्त्रोद्धार नामक १८ वें तरङ्ग के अन्तर्गत है। —सं० वि० २४९२५

मालामन्त्रसंग्रह

लि०—श्लोक सं० ३७०, अपूर्ण। —सं० वि० २४५९२

मालाविधानतन्त्र

लि०—(१) इसमें विविध प्रकारों से मालामन्त्र के जपादि का प्रतिपादन है।

—नो० सं० २।२१७

(२) श्लोक सं० १६, पूर्ण। —सं० वि० २४७४०

मालाविवेक

लि०—अपूर्ण। —सं० वि० २५१५७

मालाशोधन

लि०— —कैट्. कैट्. १।४५४

मालासनदीपिका

लि०—इसमें संभवतः माला और आसन के विषय में विचार किया गया है।
—कैट्. कैट्. १।४५४

मालासंस्कार

लि०—(१) श्लोक सं० २०। इसमें कहा गया है—प्राणप्रतिष्ठापूर्वक माला का संस्कार करना चाहिए। सर्वत्र नौ कोने के (नवकोण) पीपल के पत्ते पर माला की स्थापना करनी चाहिए। इसमें माला धारण के लिए अपेक्षित अनुष्ठान का प्रतिपादन है।
—रा० ला० ३८०

(२) (क) श्लोक सं० ५७, अपूर्ण। (ख) यह सनत्कुमारसंहिता के अन्तर्गत है। श्लोक सं० २०, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ६५, पूर्ण। (घ) श्लोक सं० ४८, पूर्ण। (ङ) श्लोक सं० २७, पूर्ण।
—सं० वि० (क) २३८९८, (ख) २४०६८, (ग) २४१४२, (घ) २४६९९, (ङ) २४७३७

(३) —कैट्. कैट्. १।४५४

मालासंस्कारप्रयोग

लि०—श्लोक सं० ३६, पूर्ण। —सं० वि० २६३४०

मालासंस्कारविधि

लि०—श्लोक सं० २५, पूर्ण। —सं० वि० २६४६४

मालिनीतन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, फेत्कारिणीतन्त्र, आगमतत्त्वविलास, ताराभक्तिसुधार्णव तथा सर्वोल्लास में।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

मालिनीविजय

नामान्तर—श्रीपूर्वशास्त्र। मालिनीमत त्रिकशास्त्र का सार है। त्रिकशास्त्र दश शिवागम, अष्टादश रुद्रागम और चतुःषष्टि भैरवागम का सार है।

लि०—पत्रे ४२, पूर्ण । —डे० का० ४८८ (१८७५-७६ ई०)

उ०—तन्त्रसार, योगिनीहृदयदीपिका, महार्थमञ्जरी-परिमल, स्पन्दविवृति, शक्ति-रत्नाकर, स्पन्दप्रदीपिका तथा आगमतत्त्वविलास में ।

मालिनीविजयोत्तर

लि०—गोविन्दाश्रम संगृहीत । —ए० बं० ५८२१

उ०—तन्त्रालोक में ।

मालिनीविजयवार्त्तिक

अभिनव गुप्त कृत ।

यह मालिनीविजयतन्त्र की प्रथम कारिका का व्याख्यान है ।

माहेश्वरतन्त्र

लि०—यह तन्त्र उमा-शिव संवादरूप है । पूर्व और उत्तर खण्डों के रूप में इसके दो भाग हैं । उत्तर खण्ड में ५१ पटल हैं, उनमें कृष्ण-कथा, कृष्ण-महिमा तथा कृष्ण-पूजा-विधि का वर्णन है । —ए० बं० ६०३३

उ०—वीरसिंहावलोक तथा शाक्तानन्दतरङ्गिणी में ।

माहेश्वरीतन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी में ।

माहेश्वरीविद्या

लि०—इसमें बहुत-से इन्द्रजाल या जादूगरी के मन्त्र हैं । उनके साथ नृसिंहसहस्र-नाम भी सम्मिलित है । —ए० बं० ६२८७

मिथुनमालामन्त्र

लि०—श्लोक सं० १६२, अपूर्ण । —सं० वि० २४७१३

मीनादिशोधनविधि

लि०—श्लोक सं० ३२, अपूर्ण । पात्रवन्दना भी इससे संलग्न है ।

—सं० वि० २६६५६

मुकुटसंहिता

उ०—इसका अभिनव गुप्त ने उल्लेख किया है । —इ० आ० पे० ८४०

मुकुटागम

दे०, मुकुटसंहिता ।

किरणागम के अनुसार अष्टादश (१८) रुद्रागमों में अन्यतम। किसी-किसी के मतानुसार यह १० शिवागमों के अन्तर्गत है ।

उ०—शतरत्नसंग्रह तथा स्वच्छन्द-तन्त्रसंग्रह पर क्षेमराज की टीका में।

मुकुन्दकेलि

गोरक्ष या महेश्वरान्द कृत ।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

मुक्तिमहानन्दकथा

लि०—(१) श्लोक सं० ८७८, अपूर्ण । —र० मं० ४८५८

मुक्तिसोपान

लि०—(१) अखण्डानन्द विरचित। इसमें छिन्नमस्ता देवी की उत्पत्ति तथा पूजा का विस्तृत वर्णन है । —ए० बं० ६३८६

(२) श्लोक सं० लगभग १०७५, अखण्डानन्द विरचित, पूर्ण। —सं० वि० २३९०२

(३) अखण्डानन्द विरचित । —कैट्. कैट्. १।४६०

मुखबिम्ब

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह अष्टादश (१८) रुद्रागमों के अन्तर्गत है।

मुखशोधनविधि

लि०—यह काली आदि के मन्त्रजप का अङ्गभूत है तथा सेतु, महासेतु, कुल्लूकादि निरूपण भी इसमें है। श्लोक सं० ३५, पूर्ण। —सं० वि० २६४०४

मुख्याम्नायरहस्य

उ०—योगिनीहृदयदीपिका में

मुख्याम्नायविधि

उ०—योगिनीहृदयदीपिका में।

मुण्डमाला

लि०—श्लोक संख्या १८९, पूर्ण। लिपिकाल सं० १७११ वि०।
—सं० वि० २३८४४

मुण्डमालातन्त्र

लि०—(१) शिव-पार्वती संवादरूप यह तन्त्रग्रन्थ शक्ति-पूजा विशेषतः दशमहाविद्यापूजा विषयक है। इसमें १५ पटल हैं। महाविद्याओं में से प्रत्येक की उपासना का फल भी इसमें पृथक्-पृथक् रूप से वर्णित है। —ए० बं० ५९७२

(२) श्लोक सं० १८७। इसमें ६ पटल तक का ही अंश है। प्रतिपाद्य विषय हैं—भुवनेश्वरी आदि कुछ महाविद्याओं का प्रतिपादन, रुद्राक्ष आदि कुछ मालाओं के निर्माण का प्रकार, जपस्थान, आसन आदि का प्रतिपादन, मत्स्य, बकरा आदि के बलिदान का प्रकार, मन्त्र-पुरश्चरणविधि तथा भुवनेश्वरीपूजन का प्रकार आदि।
—रा० ला० ४६९

(३) देव-देवी संवादरूप। श्लोक सं० ४१६, पटल सं० ६, अपूर्ण। पहले देवराज द्वारा साधित एकाक्षरी विद्या का निरूपण, अक्षमाला के नाम और फल, साधना योग्य स्थान, निवेदन योग्य वस्तुएँ, बलिदान, दीक्षाविधि, गुरु के लक्षण, पूजा, यन्त्र आदि। इसकी पटल १ म से ६ष्ठ तक की ही प्रति प्राप्त है। —रा० ला० ७४०

(४) श्लोक सं० ३००, अपूर्ण। —अ० ब० १०२३९

(५) (क) ११ पटल पर्यन्त, अपूर्ण। (ख) ८ पटल तक, अपूर्ण।
—बं० प० (क) ९२५ (क), (ख) १४१४

(६) श्लोक सं० ६०, अपूर्ण। —र० मं० ४८६५ (ख)

(७) (क) श्लोक सं० ९६, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० २१६, पूर्ण। (ग) छठे पटल तक पूर्ण, श्लोक सं० ३००।
—सं० वि० (क) २४४५९, (ख) २४९०७, (ग) २६२२९

(८) —कैट्. कैट्. ३।९९

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, शक्तिरत्नाकर, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, आगमतत्त्वविलास तथा सर्वोल्लास में।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

मुद्रा (करण)

लि०—(१) (क) वामकेश्वरतन्त्र से गृहीत, श्लोक सं० ४०, पूर्ण।
(ख) मुद्रा (करण) श्लोक सं० १२०, पूर्ण।

—अ० ब० (क) ३५३९, (ख) ८२९४

(२) श्लोक सं० १४१, इसमें 'मुद्रा' शब्द की निरुक्ति, भिन्न-भिन्न देवताओं के लिए भिन्न-भिन्न मुद्राओं का निर्देश तथा उनके लक्षण प्रतिपादित हैं। —रा० ला० ४२०३

मुद्राज्ञान

लि०—श्लोक सं० ९, पूर्ण। —सं० वि० २६०४३

मुद्रानिघण्टु

लि०—वामकेश्वरतन्त्र से गृहीत। —कैट्. कैट्. ३।९९

मुद्रापटल

लि०—कालोत्तरान्तर्गत। —ए० बं० ५८९८

मुद्राप्रकरण

लि०—(१) इसमें कृष्णानन्द कृत तन्त्रसार का मुद्रा प्रकरण निर्दिष्ट है।

—ए० बं० ६५७६

(२) मुद्राओं से देवताओं को प्रसन्नता होती है एवं पापराशि भाग खड़ी होती है। इसलिए मुद्रा सर्वकर्मसाधिका कही गयी है। पूजा, जप, ध्यान, आवाहन, नैवेद्य-निवेदन आदि में मुद्रा आवश्यक है। इसमें 'मुद्रा' की निरुक्ति यों की है—'मोदनात् सर्वदेवानां द्रावणात्पापसन्ततेः। तस्मान्मुद्रेति सा ख्याता सर्वकर्मार्थसाधिनी॥'

—रा० ला० ४२०३

(३) इसमें मुद्राओं के लक्षण और विनियोग कहे गये हैं, अंकुश, कुम्भ, अग्निप्राकार, मालिनी, धेनु, शंख, योनि, मत्स्य, आवाहनादि विविध मुद्राएँ प्रतिपादित हैं।

—म० द० ५७९६

(४) श्लोक सं० १९२, पूर्ण —सं० वि० २४४१५

(५) —कैट्. कैट्. ३।९९

मुद्राप्रकार

लि०—श्लोक सं० १०, अपूर्ण। —सं० वि० २४६३२

मुद्राप्रकाश

लि०—(१) श्रीरामकिशोर विरचित। ग्रन्थकार का जन्मकाल १७५२ शकाब्द है। साधारण मुद्राओं के निर्णय के साथ-साथ उमेशमुद्रा, उपेन्द्रमुद्रा, गजाननमुद्रा, शक्ति-मुद्रा आदि मुद्राओं का निर्णय भी इसमें क्रिया गया है। इस ग्रन्थ में छह परिच्छेद हैं।

—ए० बं० ६५७३

(२) श्लोक सं० ४०५। इसमें मुद्रा शब्द की निरुक्ति पूर्वक मुद्राओं के प्रमाण, लक्षण आदि का प्रतिपादन किया गया है। अंकुश, कुन्त, तत्त्व, कालकर्णी, वासुदेवाख्या, सौभाग्यदण्डिनी, रिपूजिह्वासना, कूर्म, त्रिखण्डा, शालिनी, मत्स्यमुद्रा, आवाहनी, स्थापनी आदि बहुत-सी मुद्राएँ इसमें प्रतिपादित हैं। —रा० ला० १८६६

(३) श्लोक सं० १५०, अपूर्ण। —अ० ब० १७३४

(४) (क) श्रीरामकिशोर कृत, श्लोक सं० ६०५, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ५८१, पूर्ण, श्रीरामकिशोर कृत।

—सं० वि० (क) २४८२०, (ख) २६२१९

(५) (क) रामकिशोर कृत

(ख) कृपाराम कृत। —कैट्. कैट्. १।४६१

मुद्रार्णव

लि०—श्रीरामकृष्ण विरचित। —कैट्. कैट्. १।४६१

मुद्रार्णवलक्षणटीका

लि०— —कैट्. कैट्. १।४६१

मुद्रालक्षण

लि०—(१) श्लोक संख्या ११५, पूर्ण। —अ० ब० १०६२३

(२) (क) श्लोक सं० २६४, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ८०, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० २४, पूर्ण। (घ) श्लोक सं० २२, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २३८९९, (ख) २४६३१, (ग) २५४२४, (घ) २६०४४

(३) कृष्णनाथ विरचित। —कैट्. कैट्. १।४६१

मुद्रालक्षणसंग्रह

लि०—पौण्डरीकभट्ट विरचित, श्लोक सं० ३५२, पूर्ण। —सं० वि० २५८८७

मुद्राविचार

लि०—श्लोक सं० ९६, पूर्ण। —सं० वि० २५३३३

मुद्राविधान

लि०—श्लोक सं० १४५, पूर्ण। —सं० वि० २५२०७

मुद्राविधानलक्षण

लि०—इसमें वनमालिका, शंखसंज्ञिका आदि मुद्राओं के लक्षण और माहात्म्य वर्णित हैं। —म० द० ५७९७

मुद्राविधि

लि०—(१) श्लोक सं० २८, पूर्ण। —सं० वि० २५२९६

(२) (क) पञ्चरात्रागम से गृहीत

(ख) पञ्चदेवप्रकाशिका से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।४६१

(३) —कैट्. कैट्. २।१०६

मुद्राविवरण

लि०—(१) इसमें तन्त्रराज, प्रयोगसार, लक्षणसंग्रह, राजतन्त्र आदि तान्त्रिक ग्रन्थों से अंकुशमुद्रा, कुंभमुद्रा, अग्निप्राकारमुद्रा, ऋष्यादिन्यासमुद्रा, षडङ्गमुद्रा, मालिनी-मुद्रा, शंखमुद्रा, मत्स्यमुद्रा, आवाहनादि नौ मुद्राएँ, ७ गणेशमुद्राएँ, १० शाक्तमुद्राएँ, १९ वैष्णवमुद्राएँ, १० शैवमुद्राएँ, ५ गन्धादिमुद्राएँ, चक्रमुद्रा, ग्रासमुद्रा, प्राणादि ५ मुद्राएँ, ७ जिह्वामुद्राएँ, भूतबलिमुद्रा, नाराचमुद्रा, नमस्कारमुद्रा, संहारमुद्रा, ९७ मुद्राएँ, पाशमुद्रा, गदामुद्रा, शूलमुद्रा तथा खड्गमुद्रा वर्णित हैं। फिर इनके लक्षण कहे गये हैं। —ए० बं० ६५७८

(२) श्लोक सं० १००। —अ० ब० ३४८८

(३) —कैट्. कैट्. १।४६१, २।१०६

मूर्तिलक्षण

लि०—(१) श्लोक सं० ६५०, अपूर्ण। पार्थिवलिंग-पूजाविधान पर्यन्त। —अ० ब० १७२० (ख)

(२) मूर्त्तिनिर्माण पर, गरुडसंहिता से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।४६४

मूलतन्त्र

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

मूलप्रकाश

लि०—प्रेमनिधि विरचित। —कैट्. कैट्. १।४६४

मूलविद्या

लि०—श्रीविद्याख्य मूलविद्या का एक भेद। —कैट्. कैट्. ३।१००

मूलशान्ति

लि०—शिवप्रसाद विरचित, श्लोक सं० १५०, पूर्ण। —अ० ब० ७४४४

मृगेन्द्रटीका

मृगेन्द्रवृत्ति

लि०—विद्याकण्ठ-पुत्र (या शिष्य) भट्ट नारायणकण्ठ कृत। (क) श्लोक सं० ३२२० पूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग ७७५, अपूर्ण।

—र० मं० (क) ४३८७, (ख) १९९९

मृगेन्द्रागम (सटीक)

उ०—रामकण्ठ ने नरेश्वरपरीक्षाप्रकाश में तथा सायण ने सर्वदर्शनसंग्रह में इसका उल्लेख किया है। यह शैव तन्त्र है।

मृगेन्द्रतन्त्र

लि०—इस पर अघोरशिवाचार्य विरचित मृगेन्द्रवृत्तिदीपिका टीका है। टीका के नाम से ज्ञात होता है कि दीपिका नारायण कण्ठ कृत टीका पर टीका है।

—कैट्. कैट्. ३।१००

उ०—शतरत्नसंग्रह में।

मृगेन्द्रवृत्तिदीपिका

अघोरशिव कृत नारायणी वृत्ति के ऊपर व्याख्या।

उ०—रत्नत्रयवृत्ति में।

मृगेन्द्रतन्त्रविवृति

लि०—श्लोक सं० ३७५, पूर्ण। —सं० वि० २५९३७

मृगेन्द्रोत्तर

लि०—(१) श्लोक सं० १७५०। यह ग्रन्थ २७ पटलों में पूर्ण है। इसमें शिवजी की पूजा तथा महिमा प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० १०१८

(२) कामिकोपभेद से गृहीत। इस पर नारायण कण्ठ भट्ट कृत टीका है। —कैट्. कैट्. १।४६४

मृडानीतन्त्र

लि०—शिव-पार्वती संवादरूप। श्लोक सं० ३८०। पार्वतीजी (अम्बिकाजी) के शिवजी से यह प्रार्थना करने पर कि भगवन्, आपके अनुरक्त भक्तों को आपकी अर्चा-पूजा करने में जिससे साहाय्य प्राप्त हो ऐसा कोई दारिद्र्य-नाशकारी उपाय कहने की कृपा करें। इस पर शिवजी ने स्वर्ण बनानेकी प्रक्रिया का वर्णन किया। और और रसायन विधियाँ भी बतलायीं। उन्हीं सबका इसमें प्रतिपादन है। यह प्रति १२ पटलों तक ही है। —ट्रि० कै० १०१९ (क)

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा प्रयोगामृत में।

मृतकक्षोभतन्त्र

उ०—तन्त्रालोक में।

मृतसंजीवनी

लि०—श्लोक सं० ६१६। यह आद्या काली देवी का त्रैलोक्य-विजय नाम का परम अद्भुत शक्तिशाली कवच है। यदि कोई इसे सोने के तावीज में मढ़ कर धारण करे तो उसे कल्याण, धन, कीर्ति, दीर्घ आयु आदि सब कुछ प्राप्त होता है। यदि कोई प्रातः काल नियम से इसका पाठ करे तो उसका सारा दारिद्र्य मिट जाता है। सब पाप, अकाल मृत्यु, सब संकट नष्ट हो जाते हैं। प्रति दिन तीन बार जो इसका पाठ करता है वह मोक्ष को प्राप्त होता है। इस प्रकार इसमें दीर्घजीवन का उपाय, विविध मन्त्र, औषध आदि का प्रतिपादन है। —रा० ला० २८८५

मृतसंजीवनीविद्या

लि०—इसमें शुक्रोपासित मृतसंजीवनी विद्या भी है। श्लोक सं० ४४, अपूर्ण। —सं० वि० २४३७९

मृतसंजीवनी सुधा

लि०——श्लोक सं० ११।।, पूर्ण। योगिनीतन्त्र के सप्तम पटल के अन्तर्गत।

—सं० वि० २६४६५

मृतितत्त्व

लि०—— —कैट्. कैट्. १।४६५

मृतितत्त्वानुस्मरण

लि०——श्लोक सं० २५५। —डे० का० २४४ (१८८३–८४ ई०)

मृत्युकालज्ञानोपाय

लि०——श्लोक सं० ५४, अपूर्ण। —सं० वि० २५४७९

मृत्युजिदमृतीशविधान या मृत्युजिदमृतेशतन्त्र

लि०——पार्वती-परमेश्वर संवादरूप यह ग्रन्थ २४ अधिकारों (अध्यायों) में पूर्ण है। इसमें प्रतिपादित विषय हैं——मन्त्रावतार, मन्त्रोद्धार, यजमानाधिकार, दीक्षाधिकार, अभिषेक-साधन, स्थूलाधिकार, सूक्ष्माधिकार, कालवञ्चन, सदाशिव, दक्षिण चक्र, उत्तर तन्त्र, कुलाम्नाय, सर्वविद्याधिकार, सर्वाधिकार, व्याप्ति-अधिकार, पञ्चाधिकार, वश्य-कर्षणाधिकार, राजरक्षाधिकार, इष्टपाताद्यधिकार, जीवाकर्षणाधिकार, मन्त्रविचार, मन्त्रमाहात्म्य आदि। —ने० द० १।२८५ (ख)

उ०——क्षेमराज ने इसका उल्लेख किया है। —कैट्. कैट्. १।४६५

मृत्युजिद्भट्टारक (अमृतेशतन्त्र)

उ०——शिवसूत्रविमर्शिनी तथा प्रत्यभिज्ञाहृदय में।

मृत्युञ्जयगीता

लि०—— —कैट्. कैट्. ३।१००

मृत्युञ्जयजपविधान

लि०——इसमें मृत्युञ्जय-जप की विधि वर्णित है। यह जप दीर्घायु की प्राप्ति तथा रोगादि उपद्रवों की निवृत्ति के लिए किया जाता है। —ए० बं० ६४७३, ६४७४

मृत्युञ्जयजपविधि

लि०——(१) श्लोक सं० ४८, अपूर्ण। —र० मं० ११६८

(२) दे०, महामृत्युञ्जय-जपविधान। —कैट्. कैट्. ३।१००

मृत्युञ्जयतन्त्र

लि०—(१) शिव-पार्वती संवादरूप। यह महातन्त्रों में अन्यतम है। पार्वतीजी ने शिवजी से पूछा—भगवन्, जिस ज्ञान से मोक्ष हो उसे संक्षेपतः कहने की कृपा करें। इस पर शिवजी ने इस तन्त्र का उन के प्रति प्रतिपादन किया। इसकी श्लोक संख्या ३०० है और ४ अध्याय हैं।

इसमें प्रतिपादित विषय हैं—देहोत्पत्ति-क्रमकथन, देह की ब्रह्माण्डरूपता का प्रतिपादन, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, समाधि—इन छह योगाङ्गों के लक्षण आदि का वर्णन।

—रा० ला० ४२०४

(२) विवरण रा० ला० ४२०४ में दे०। —ए० बं० ५९७६

(३) —कैट्. कैट्. १।४६५, ३।१०७

मृत्युञ्जयपञ्चाङ्ग

लि०—(१) यह देवीरहस्यान्तर्गत शिव-पार्वती संवादरूप है। इसमें निम्नलिखित मृत्युञ्जयसम्बन्धी पाँच अङ्ग वर्णित हैं।

(१) मृत्युञ्जयपटल, (२) मृत्युञ्जयपद्धति, (३) मृत्युञ्जयसहस्रनाम, (४) मृत्युञ्जयकवच तथा (५) मृत्युञ्जयस्तोत्र। —नो० सं० २।१६८

(२) देवीरहस्यान्तर्गत, श्लोक सं० ५६०। —र० मं०

(३) देवीरहस्य से गृहीत। —कैट्. कैट्. ३।१००

मृत्युञ्जयपटल

लि०—श्लोक सं० १५०, पूर्ण। —सं० वि० २४१७०

मृत्युञ्जयमन्त्रोद्धारटीका सारदाख्या

लि०—(१) —नो० सं० १।२९२

(२) गीर्वाण योगीन्द्र विरचित श्लोक संख्या १००, अपूर्ण।

—अ० ब० ९९१६ (डी)

मृत्युञ्जययन्त्र

लि०—सब रोगों की शान्ति तथा विजयाकांक्षियों की विजय के लिए जो मृत्युञ्जय यन्त्र है उसके निर्माण का प्रकार इसमें दिया गया है। इस पर टीका भी है।

—ए० बं० ६५८८, ६५८९

मृत्युञ्जययन्त्रविधान

लि०—श्लोक सं० ४२, पूर्ण। —सं० वि० २६३३२

मृत्युञ्जयविधान

लि०—श्लोक सं० १४०, अपूर्ण। —अ० ब० ७१८१

मृत्युञ्जयविधि

लि०—(१) (क) इसमें मृत्युञ्जय-मन्त्र के जप, जो दीर्घ जीवन प्राप्ति तथा रोगादि उपद्रवों की शान्ति के लिए किया जाता है, की विधि वर्णित है।

(ख) कमलाकरभट्ट विरचित शान्तिरत्नाकर का यह एक भाग है। इसमें शिवजी के विशेष-विशेष मन्त्रों का शान्तिक, पौष्टिक आदि कर्मों में उपयोगार्थ नियम आदि वर्णित हैं। —ए० बं० (क) ६४७५, (ख) ६४६९

(२) श्लोक सं० ७०। —अ० ब० ७१४३

मृत्युञ्जयसंहिता

लि०—शम्भु प्रोक्त। —ने० द० १।३३९

मृत्युलाङ्गूल

लि०— —कैट्. कैट्. २।२१८

मृत्युलाङ्गूलमन्त्र

लि०—श्लोक सं० २०। —अ० ब० ७२८७ (च)

मेघमाला

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत उमा-महेश्वर संवादरूप यह ग्रन्थ ११ अध्यायों में है। इसमें राजादिफलाध्याय, शनैश्वर-क्रियाफलाध्याय, राशिगत ग्रहोत्पात फलाध्याय, संक्रान्तिफलाध्याय, ग्रहों के उदय और अस्त के फलाध्याय, मासफलाध्याय, काकरुतफलाध्याय आदि विषय वर्णित हैं। —ए० बं० ५८७५

(२) रुद्रयामलान्तर्गत शिव-पार्वती संवादरूप यह ग्रन्थ मेघों के प्रकार, उनके कार्य, उनके गर्जन का फल आदि का प्रतिपादन करता है। यह ११ अध्यायों में पूर्ण है। —क० का० ८२

(३) यह रुद्रयामलान्तर्गत शिव-पार्वती संवादरूप है। इसमें मेघप्रभेद, मेघगर्जन, काकरुत आदि का फलाफल निर्दिष्ट है। —बी० कै० १३१४

(४) रुद्रयामलान्तर्गत श्लोक सं० १०४४, पूर्ण। —र० मं० ३९९६

(५) रुद्रयामल से गृहीत। —कट्. कैट्. १।४६६

मेधादक्षिणामूर्तिकल्प

लि०—शारदातिलकान्तर्गत। श्लोक सं० ४०, पूर्ण।

—सं० वि० २५३३९

मेधादीक्षा

लि०—शक्तिसंगमतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ९८, पूर्ण।

—सं० वि० २४१३०

मेधादीक्षाप्रकरण

लि०—ज्ञानार्णव से गृहीत। —कैट्. कैट्. ३।१००

मेरुचन्द्रतन्त्र

उ०—आगमतत्त्वविलास में।

मेरुतन्त्र

लि०—(१) यह शिव-पार्वती संवादरूप महातन्त्र ३५ प्रकाशों में पूर्ण है। शिवजी द्वारा उपदिष्ट १०८ तन्त्रों में इसका स्थान सबसे ऊँचा है, इसलिए इसका नाम मेरुतन्त्र है। जलन्धर के भय से मेरु की शरण में गये हुए देवता और ऋषियों के लिए शिवजी ने इसका उपदेश दिया था। इसमें प्रतिपादित प्रधान-प्रधान विषय हैं—व्यवस्थाप्रकाश, संस्कार-प्रकाश, दीक्षा-प्रकाश, होमविधिप्रकाश, आह्निक-प्रकाश (या आम्नायरहस्य), पुरश्चर्या-प्रकाश, सिद्धिस्थिरीकरण-प्रकाश, मुद्रालक्षण-प्रकाश, पार्थिवपूजनविधि-प्रकाश, पुरश्चर्याकौलिकाचार, कलिसंस्थित सविधि मन्त्रकथनप्रकाश, वेदमन्त्रप्रकाश, नवग्रह-मन्त्रकथन, प्रत्यङ्गिरामन्त्रकथन, वैदिकमन्त्रकथन, दक्षिणाम्नाय गणपतिमन्त्रकथन, ऊर्ध्वाम्नाय गणपतिमन्त्रकथन, पश्चिमाम्नाय गणपतिमन्त्रकथन, उत्तराम्नाय गणपति-मन्त्रकथन, सूर्यमन्त्र, नवग्रहमन्त्र, ब्राह्म्याद्यष्टशक्तिमन्त्र, दश दिगीशों के मन्त्र, दीप-विधि आदि। यह वाममार्गी और दक्षिणमार्गी दोनों को समान रूप से मान्य है।

—इ० आ० २५७०

(२) यह ग्रन्थ ३५ प्रकाशों में पूर्ण है। इसका खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई द्वारा, १९०८ ई० में प्रकाशन भी हो चुका है। अन्य विवरणों के लिए इ० आ० २५७० देखें।

—ए० बं० ६०४३, ६१५५

(३) श्लोक सं० ८०० (मन्त्र-खण्ड मात्र)। —अ० ब० २६५६ (क)

(४) मेरुभट्टारक। यह महातन्त्र सात करोड़ श्लोकात्मक या शब्दात्मक कहा गया है। मालूम होता है यही मूल मेरुतन्त्र है।

—नें० द० भाग २ य की भूमिका पृ० २६ तथा २। पेज ११५

(५) मेरुतन्त्र, श्लोक सं० लगभग १५०००। व्यवस्था-प्रकाश, विधवा विवाह कथन, संस्कार-प्रकाश, दीक्षा-प्रकार कथन, होमविधि, आह्निक-प्रकाश, पुरश्चर्या-प्रकाश, सिद्धि-स्थिरीकरण-प्रकाश आदि विषय इसमें प्रतिपादित हैं।

—नो० सं० १।२९४, २।१६९

(६) यह ५० प्रकाशों में पूर्ण है। शिव-पार्वती संवादरूप यह मेरुपर्वत पर स्थित देवता और ऋषियों की सभा में प्रतिपादित महातन्त्र है। —क० का० ६९

(७) यह महातन्त्र है। प्रकाशित भी हो चुका है।

—बी० कै० १२६७

(८) श्लोक सं० १५८०१, केवल ४४–४६ तक। —र० मं० ४९६

(९) (क) श्लोक सं० १४६०, पूर्ण; (?)। (ख) श्लोक सं० १९५६, अपूर्ण; दशम प्रकाश तक। (ग) श्लोक सं० ५७५ (११ वां प्रकाश मात्र)। (घ) श्लोक सं० १६०३०, पूर्ण, पञ्जिकासहित। (ङ) १३ वाँ प्रकाश मात्र, श्लोक सं० ४७२। इसमें वैदिक मार्ग के अनुसार नवग्रह-पूजा का प्रकार बतलाया गया है।

—सं० वि० (क) २३९००, (ख) २३९७३, (ग) २३९७४, (घ) २५६६४, (ङ) २६३६९

(१०) —कैट्. कैट्. १।४६६, ३।१००

(११) मेरुतन्त्र में दीपदानविधि। —कैट्. कैट्. २।१०८

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा प्राणतोषिणी में।

मेरुविरहतन्त्र

भुवनेश्वरीसहस्रनामस्तोत्र।

लि०— —कैट्. कैट्. १।४६७

मेरुसाधना

लि०—श्लोक संख्या ४००। —अ० ब० १०५०८

मैरालतन्त्र

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

मोक्षलक्ष्मीसाम्राज्यतन्त्र

लि०—(१) काण्डद्वयातीत योगी विरचित। मालूम होता है इसके द्वारा तान्त्रिक और वेदान्त सिद्धान्त में सामञ्जस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है। पत्रे २२३। —तै० म० १२१८८

मोक्षसोपानटीका

लि०—इसके रचयिता तथा मूल ग्रन्थ, जिस पर यह टीका रची गयी है, का नाम ज्ञात नहीं। —ने० द० १।१४९८

(२) काण्डद्वयातीत योगी कृत। —कैट्. कैट्. १।४६८

मोक्षोपायतन्त्र

उ०—महार्थमञ्जरी की टीका परिमल में।

मोहचूडोत्तर

उ०—हेमाद्रि ने दानखण्ड में, नीलकण्ठ ने दानमयूख में तथा कमलाकर ने निर्णय-सिन्धु में इसका उल्लेख किया है।

मोहनतन्त्र

लि०—श्लोक सं० १२९५, अपूर्ण। —सं० वि० २४५२८

मोहनप्रयोग

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

मोहशूरोत्तर

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा कुण्डकल्पलता में।

—इ० आ० पे. ११४९

मोहिनीतन्त्र

लि०— —कैट्. कैट्. १।४६८, २।१०८

यक्षडामर

लि०—भैरव प्रोक्त श्लोक सं० लगभग ४००, पूर्ण। लिपिकाल सं० १९१४ वि०। —सं० वि० २४४८९

उ०—प्राणतोषिणी तथा आगमतत्त्वविलास में।

यक्षडामरबीजकोष

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

यक्षिणीकल्प

लि०—(१) किरंकिणीमततन्त्रान्तर्गत। यह तन्त्र यक्षिणी-साधना के विषय में है।
—ए० बं० ६०२८

(२) (क) श्लोक सं० लगभग ४५, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग १००।
—सं० वि० (क) २५३७६, (ख) २६३५३

यक्षिणीतन्त्र

उ०—प्राणतोषिणी में।

यक्षिणीपद्धति

लि०—मल्लीनाथ कृत, श्लोक सं० ३०। यह रत्नमालाशाबरतन्त्र से गृहीत है।
—अ० ब० ८३७०

यक्षिणीप्रयोग

लि०—(१) श्लोक सं० १००। —अ० ब० १२३२७ (क)

(२) (क) श्लोक सं० लगभग १५५, अपूर्ण। (ख) श्लोक संख्या ४५, अपूर्ण।
—सं० वि० (क) २५२८८, (ख) २५३६४

यक्षिणीसाधन

लि०— पूर्ण। —बं० प० ५७४

यक्षिणीसाधनविधि

लि०—श्रीनाथ विरचित, श्लोक सं० लगभग ४०, पूर्ण। —सं० वि० २५७१८

यजनावली

लि०—यह नौ प्रकरणों में पूर्ण है। इसकी श्लोक सं० १४०० है। इसमें विष्णु भगवान् की अर्चा-पूजा वर्णित है। —ट्रि० कै० १०२० (क)

यज्ञसूत्रप्रमाण

लि०—मातृकाभेदतन्त्र के अन्तर्गत, चण्डिका-शङ्कर संवादरूप यह मातृकाभेदतन्त्र का ११ वाँ पटल है। इसमें कितना लम्बा यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए इत्यादि का विधान है। इसकी श्लोक सं० ३४ है। —रा० ला० ९९२

यन्त्रकल्प

लि०--यन्त्रचिन्तामिणि के अन्तर्गत, हर-गौरी संवादरूप। इसमें प्रतिपादित विषय--अभीष्ट फलप्रद विविध यन्त्रों की विधि, जिनमें से ये मुख्य हैं--मोहनयन्त्र, राजवशीकरणयन्त्र, जीवनपर्यन्त स्वामी को वश में रखने वाला यन्त्र, दिव्य स्तम्भनयन्त्र, राजकीयमोहनयन्त्र, दुष्टवशीकरणयन्त्र, मृत्युञ्जययन्त्र, धनिकवशीकरणयन्त्र, विवाद में विजय कराने वाला यन्त्र, जगद्वशीकरणयन्त्र, भृत्यवशीकरणयन्त्र, स्वामी को वश में करने वाला कालानलयन्त्र, कोपहरण करने वाला यन्त्र, स्त्रीसौभाग्यप्रद यन्त्र, प्रियवशीकरणयन्त्र, कामराजयन , कामिनीमदनभञ्जनयन्त्र, राजाङ्गना को वश में करने वाला यन्त्र, आकर्षणयन्त्र, प्रियदर्शनयन्त्र, मानिनीकर्षणयन्त्र, मुखस्तंभनयन्त्र आदि।

--नो० सं० १।२९७

यन्त्रचिन्तामणि (१)

लि०--(१) दामोदर पण्डित विरचित। यह नौ पीठिकाओं में पूर्ण है। इसमें मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण तथा विपत्ति से मोचन करानेवाले विविध प्रकार के यन्त्रों का वर्णन है।

--क० का० ७६ (क)

--बं० प० १०९८

(२) पञ्चमपीठिका के कुछ अंश तक, अपूर्ण। --र० मं० ४९११

(३) गङ्गाधर पुत्र दामोदर विरचित, श्लोक सं० ८५०, पूर्ण।

(४) दामोदर पण्डित कृत श्लोक सं० ६९६।

--डे० का० २४५ (१८८३--८४ ई०)

(५) गङ्गाधर-पुत्र दामोदर कृत। यह ग्रन्थ नौ पीठिकाओं में पूर्ण है। इसकी प्रथम और २य पीठिकाओं में ग्रन्थकार का वृत्तान्त तथा इस ग्रन्थ के मूल आधारों तथा कतिपय अन्यान्य सामान्य विषयों का निर्देश है। अवशिष्ट ७ पीठिकाओं में विभिन्न यन्त्रों के विभिन्न कार्य--वशीकरण, आकर्षण, विद्वेषण, मारण, उच्चाटन, शान्ति और मोक्ष--कहे गये हैं।

--ए० बं० ६५७९

(६) (क) श्लोक सं० ७००। (ख) श्लोक सं० ७००। (ग) श्लोक सं० ७००। (घ) श्लोक सं० ७००। (ङ) श्लोक सं० ७००। (च) श्लोक सं० ७००; (छ) श्लोक सं० ७००।

--अ० ब० (क) १९११, (ख) ५६२७, (ग) ७१३७, (घ) ९७४९, (ङ) ११४६ (च) १३४०२ (छ) ३४४६

(७) श्लोक सं० १३२०, इसमें वशीकरण, मारण, स्तंभन, उच्चाटन आदि की विधियाँ वर्णित हैं। —रा० ला० २५७

(८) (क) दामोदरभट्ट कृत, श्लोक सं० लगभग ९३०, अपूर्ण। (ख) दामोदरभट्ट कृत श्लोक सं० लगभग १०००, पूर्ण। लिपिकाल शकसंवत्सर १७१०। (ग) श्लोक सं० ६७५, पूर्ण (?)। लिपिकाल संवत् १८०७ वि०। (घ) दामोदर कृत, श्लोक सं० ८४०, पूर्ण। लिपिकाल संवत् १८५३ वि०। (ङ) दामोदर कृत। श्लोक सं० ७८५, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४२५२, (ख) २४४१३, (ग) २५१८३, (घ) २५४२७, (ङ) २६१९३

यन्त्रचिन्तामणि (२)

लि०—श्लोक सं० ५८५, पूर्ण। —सं० वि० २४१७६

यन्त्रचिन्तामणि (३)

लि०—नामान्तर—यन्त्रराजागमशास्त्र। श्यामाचार्य विरचित,श्लोक सं० लगभग १४४०, लिपिकाल १८३१ वि०। —सं० वि० २५४२६

[इनके अतिरिक्त ४ पुस्तकें सं० वि० संग्रह में और हैं, जिनकी सं० २३९०८, २४४१६ तथा २५४४१ है? ये सब प्रायः अपूर्ण हैं]।

यन्त्रचिन्तामणि (४)

(वश्याधिकार मात्र)

लि०—हर-गौरी संवादरूप। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—महामोहनयन्त्र, राजमोहनयन्त्र, मृत्युञ्जययन्त्र, शत्रुस्वानुकूलकर यन्त्र, क्रोधशमनयन्त्र, स्त्रीसौभाग्यकर यन्त्र, स्त्रीवश्यकर यन्त्र, मदनमर्दनयन्त्र, कामराजयन्त्र। —नो० सं० ११२९८

यन्त्रपूजनप्रकार

लि०—इसमें विविध देव-देवियों के यन्त्रों के पूजन का प्रकार प्रतिपादित है। —बी० कै० १३७१

यन्त्रप्रकार

लि०—श्लोक सं० लगभग ३०, पूर्ण। —सं० वि० २३८७७

यन्त्रप्रतिष्ठाविधि

लि०—श्लोक सं० लगभग ५०, अपूर्ण। —सं० वि० २५९३९

यन्त्रभेद

लि०——श्लोक सं० १२५। इसमें विभिन्न तन्त्रों में गुप्त विभिन्न यन्त्रों का, जिनसे तान्त्रिक जन अपना मनोवाञ्छित सिद्ध करते हैं, भलीभाँति विशद रूप से प्रतिपादन किया गया है। ——ट्रि० कै० १०२६ (घ)

यन्त्रमन्त्रसंग्रह

लि०——श्लोक सं० लगभग १६००, अपूर्ण। ——सं० वि० २५८६३

यन्त्रराज या यन्त्रराजागमशास्त्र

नामान्तर——यन्त्रचिन्तामणि (३)।

लि०——(क) श्यामाचार्य विरचित। श्लोक सं० लगभग १५००, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० २४२, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० २२५, अपूर्ण।

——सं० वि० (क) २३८४५, (ख) २४३४८, (ग) २४५७८

यन्त्रलेखनप्रकाश

लि०——श्लोक सं० १५७। ——अ० व० १३४२५

यन्त्रविधान

लि०——शिव प्रोक्त, श्लोक सं० लगभग १६०, पूर्ण। ——सं० वि० २३८६९

यन्त्रसंग्रह

लि०——(१) इसमें वागीश्वरी, छिन्नमस्ता, विन्ध्येश्वरी, बालात्रिपुरसुन्दरी, श्रीविद्या और गणेश के यन्त्र उल्लिखित हैं। ——ए० बं० ६५८५

(२) (क) श्लोक सं० लगभग ११५, अपूर्ण। (ख) इसमें विविध यन्त्र उल्लिखित हैं। (ग) इसमें रामयन्त्र, श्यामायन्त्र, कृष्णयन्त्र, प्रसवयन्त्र, गोपालयन्त्र, बगलामुखीयन्त्र, श्मशानकालीयन्त्र, भुवनेश्वरीयन्त्र एवं अन्नपूर्णा, बटुकभैरव, गुह्यकाली, तारा, वागीश्वरी तथा गणेश के यन्त्र उल्लिखित हैं।

——सं० वि० (क) २४१३७, (ख) २४९८३, (ग) २५७६६

यन्त्रशोधनविधि

लि०——इसमें यन्त्रशोधन की विधि, यन्त्रशोधनप्रयोग तथा शेष विषय यन्त्रसंस्कार नामक पुस्तक में प्रतिपादित विषयों के तुल्य हैं। ——ए० बं० ६५९१

यन्त्रसंस्कार

लि०—(१) इसमें यन्त्रसंस्कार के सम्बन्ध में तान्त्रिक प्रमाण तथा प्रयोग दोनों प्रतिपादित है। —ए० बं० ६५९०

(२) श्लोक सं० लगभग २५, अपूर्ण। —सं० वि० २४३७२

यन्त्रसंस्कारपद्धति

लि०—कामेश्वरतन्त्रान्तर्गत, अपूर्ण। —र० मं० ४७५८

यन्त्रसार

लि०—इसकी श्लोक सं० ३८०० है। इसमें वैदिक और तान्त्रिक विविध यन्त्रों के निर्माण का प्रकार प्रदर्शित है। —ट्रि० कै० १०२१

यन्त्रावली

लि०—श्लोक सं० ५००। इसमें यन्त्रों के निर्माण का प्रकार और यन्त्र दोनों का प्रतिपादन है। —अ० ब० ७६७९

यन्त्रोद्धार

लि०—श्लोक सं० लगभग २५, अपूर्ण। —सं० वि० २४१३९

यन्त्रोद्धारपटल

लि०—सुदर्शनसंहितान्तर्गत, श्लोक सं० लगभग १४०, अपूर्ण। —सं० वि० २५४०४

यामलतन्त्र

उ०—कुलप्रदीप, श्यामारहस्य, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव तथा तारा-भक्तिसुधार्णव में।

यामलाष्टकतन्त्र

(१) अर्थरत्नावली के अनुसार ८ आठ यामलों के नाम—१ ब्रह्मयामल, विष्णुयामल रुद्रयामल, लक्ष्मीयामल, उमायामल, स्कन्दयामल, गणेशयामल और जयद्रथयामल। द्रष्टव्य–सेतुबन्ध।

लि०—(१) श्लोक सं० ४२००। —अ० ब० १३७६५

(२) पार्वती-परमेश्वर संवादरूप, (क) प्रारंभिक पटल यों हैं—महासिद्ध ध्यान, पार्वतीप्रश्न, यामलसृष्टि, विश्वसृष्टि, विष्णुसृष्टि, ब्रह्मसृष्टि, जगत् के आयुःकाल की क्लृप्ति, चतुर्दशानन्द संभूत यमलस्वरूप आदि। (ख) पटल १ से १०० तक। (ग) पटल १ से ११० तक।

—तं. कै. (क) १२३२२, (ख) ९३३५, (ग) ९३३६

रुद्रयामल, स्कन्द०, ब्रह्म०, विष्णु०, यम०, वायु०, कुबेर०, इन्द्र० (ब्रह्मयामल के अनुसार ये ८ यामल विद्यापीठ के अन्तर्गत है।) द्रष्टव्य, वागची का Studies in Tantric Literature

यामलोद्धार

उ०—आगमकल्पलता में।

युद्धजयार्णवतन्त्र

लि०—(१) भट्टोत्पल विरचित इसमें १० पटल हैं जिनमें स्वरोदय का प्रतिपादन है। यद्यपि यह शिव-पार्वती संवादरूप है, तथापि शिवप्रसाद से प्राप्त इसे भट्टोत्पल ने भूलोक में अवतारित किया, इसीलिए यह भट्टोत्पल विरचित कहा गया है।

—ए० बं० ६१०९

(२) पन्ने सं० ८१ में उक्त युद्धजयार्णव में १० पटल हैं। यह स्वरोदयसम्बन्धी है। इ० आ० नं० १०८०।८१ से यह पूरा मिलता है, किन्तु पे० नं० १ में उक्त युद्धजयार्णव भिन्न विषय का तान्त्रिक ग्रन्थ प्रतीत होता है। संभवतः इसमें पूजा तथा अन्य तान्त्रिक विषय वर्णित हों। इसमें कितने पटल हैं इसका भी ठीक पता नहीं चलता।

—ने० द० १।७२ और १।१६३४ (छ)

(३) शिव-पार्वती संवादरूप होने पर भी पूर्वोक्त न्याय से यह भट्टोत्पल विरचित कहा गया है। इसमें १० पटल हैं।

—ने० द० २।३६० (ख)

योगकल्पलतिका

लि०—श्रीकृष्णदेव विरचित। यह ग्रन्थ योगविषयक प्रतीत होता है। इसमें योग का लक्षण यों किया है—'ऐक्यं जीवात्मनोराहुर्योगं योगविशारदाः।' अर्थात् योग में निष्णात पुरुष जीवात्मा और परमात्मा की एकता (अभेद) को योग कहते हैं।

—ए० बं० ६६०३

योगगुह्य

लि०—यह कण्ठनाथ द्वारा स्वर्ग से भूमि में अवतारित है। इसमें तान्त्रिक योग की शिक्षा दी गयी है। —ने० द० १।२२६ (छ)

योगजागम

दश (१०) शिवागमों में अन्यतम।

उ०—वीरशैवानन्दचन्द्रिका में।

योगज्ञान

लि०—श्लोक सं० लगभग ५०, पूर्ण। लिपिकाल वंगसंवत् ११७४। इसमें पञ्चतत्त्व लय-प्रकार वर्णित है। —सं० वि० २६२५३

योगतारावली

लि०—श्रीशङ्कराचर्य कृत, श्लोक सं० २९, पूर्ण। इसमें विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाओं का प्रभाव वर्णित है। यह शङ्करग्रन्थावली में वाणीविलास प्रेस श्रीरंगम् से प्रकाशित हो चुका है। —ए० बं० ६८०७

योगपीठ

लि०—इसमें कुलालिका पर आरूढ़ होने के लिए क्रम का प्रतिपादन है। —ने० द० १।१४७३ (घ)

योगबीज

लि०—(१) शिव-पार्वती संवादरूप। यह नाथसम्प्रदायानुसारी योग का प्रतिपादन करता है। —ए० बं० ६११६

(२) श्लोक सं० लगभग १५०, पूर्ण। —सं० वि० २३९९७

योगरत्नमाला (सटीक)

लि०—मूलकार नागार्जुन, टीकाकार गुणाकर।

(क) श्लोक सं० ४८०। (ख) श्लोक सं० ४८०।

—अ० व० (क) १४१३, (ख) ८३०३

योगरत्नावली

लि०—(१) श्रीकण्ठ शम्भु विरचित। इसमें १० परिच्छेद हैं। प्रारंभिक दो परि-

च्छेदों में बहुत-सी ऐन्द्रजालिक क्रियाएँ वर्णित हैं। ३ य में त्रिपुरानित्यार्चनविधि तथा ४ र्थ परिच्छेद में अभिषेकविधि आदि विषय वर्णित हैं। —ए० बं० ६६०१

(२) श्रीकण्ठ शिवाचार्य विरचित (क) श्लोक सं० ३७००। (ख) श्लोक सं० ३५० (४ र्थ परिच्छेद मात्र)। (ग) श्लोक सं० ३७००।

—अ० व० (क) ६१८, (ख) ३५३६, (ग) ५७८९

(३) श्रीकण्ठ शम्भु कृत। ३ य परिच्छेद पर्यन्त, पूर्ण। —र० मं० ३२९४ (क)

(४) श्लोक सं० लगभग १७००, अपूर्ण। —सं० वि० २३९६५

योगशास्त्र

दत्तात्रेय विरचित।

उ०—आनन्दलहरी की टीका तत्त्वबोधिनी में।

योगसंचार

उ०—अभिनवगुप्त कृत तन्त्रसार में।

योगसागर

लि०—शुक्र-भृगु संवादरूप। इसमें मुख्य रूप से ५० योगों का वर्णन है। भवयोग, सौम्ययोग, यातुवान्ययोग, भीष्मयोग, जीमूतयोग, जययोग आदि योगों और उनके फलों का भी प्रतिपादन किया गया है। —ए० बं० ६११४

योगसार (१)

लि०—शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें ११ परिच्छेद हैं। उनमें योगियों द्वारा सम्पादनीय बहुत-सी विधियाँ वर्णित है। शरीरस्थित षट्चक्र दर्शनोद्दीपन, मूलाधार-स्थित देवता आदि का कथन, बाणलिङ्गोपाख्यान, हृदयकमल के ध्यान, पूजन आदि विविध विषय वर्णित हैं। —ए० बं० ६११५

योगसार (२)

लि०—श्री लक्ष्मण ज्योतिर्वित्पुत्र हरिशङ्कर विरचित। इसके १म अध्याय में गुरु के महत्त्व का वर्णन और २य में कुम्भक का वर्णन है। —ए० बं० ६५९९

योगसार (३)

लि०—गङ्गानन्द विरचित। इसमें योग का मुख्य सिद्धान्त वर्णित है।

—ए० बं० ६६२१

योगसार (४)

लि०—शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें नौ परिच्छेद हैं। विषय—शिवजी के प्रति देवी का ब्रह्मस्वरूप कथन, ब्रह्म की योगगम्यता कथन, नीरोग का ही योग में अधिकार है यह प्रतिपादन करते हुए व्याधियों के विनाश का उपाय कथन, तृष्णानाश का उपाय, अनाहारीकरण का उपाय, मल-मूत्रविनाशन का उपाय, शुक्रस्तंभन का उपाय, आलस्यशमन का उपाय, निद्रानिवृत्ति का उपाय, इन्द्रियों के निग्रह का उपाय, मन्त्रसिद्धि कथन, इष्ट विद्याओं के मन्त्र कथन, पुरश्चरणविधि, भक्ष्य, अभक्ष्य, आसन आदि का निरूपण, जपमाला का निरूपण, जप की गणना के लिए निषिद्ध द्रव्यों का निर्देश, वर्णमाला कथन, त्रिविध योग का निरूपण, शरीरस्थ चक्रों का निरूपण, षट्चक्र के देवताओं के ध्यान, पूजा आदि की विधि इत्यादि प्रतिपादित हैं।

—नो० सं० १।३०१

उ०—प्राणतोषिणी तथा पुरश्चर्यार्णव में।

योगसारतन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० ४५०, पटल सं० १४। —अ० व० १०२६३

(२) ४ र्थ परिच्छेद से लेकर १४ वें परिच्छेद पर्यन्त, अपूर्ण। —बं० प० १३१३

योगसारसमुच्चय

लि०—(१) इसका अकुलागममहातन्त्र भी नामान्तर है। यह शिव-पार्वती संवादरूप है। इसमें १० पटल हैं। पार्वतीजी ने साङ्ख्ययोग तथा अकुलागम के साधकों के कर्तव्य के विषय में जो-जो प्रश्न किये भगवान् शिवजी ने उनका इसमें उत्तर दिया है।

—इ० आ० २५६५

(२) अकुलागममहातन्त्र से गृहीत, ९ म पटल पर्यन्त।

—डे० का० ३९६, (१८८२–८३ ई०)

(३) अकुलागमतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ३९०, पूर्ण। —सं० वि० २५६५०

योगसिद्धान्त

लि०—विष्णु-शिव संवादरूप। श्लोक सं० १८०, पूर्ण। —ए० बं० ६१२३

योगसिद्धान्तमञ्जरी

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित। श्लोक सं० १५०, पूर्ण। इसमें योग का प्रतिपादन है।

यथा :—शिवशम्भ्वात्मकं ज्ञानं जगुरागमवेदिनः।

योगाध्याय

लि०—भूपति संसारचन्द्र विरचित। भाषा टीका सहित, अपूर्ण। —र० मं० ४९९६

योगार्णव (१)

लि०—(१) हरिशङ्कर विरचित। नाना मतों से विभूषित विविध शास्त्रों का गंभीर अध्ययन कर ग्रन्थकार ने इस योगार्णव नामक ज्ञानमार्ग का काशीराज के प्रबोधार्थ निर्माण किया। —ए० बं० ६६००

उ०—प्राणतोषिणी में।

योगार्णव (२)

नामान्तर—योगसारसंग्रह।

लि०—दामोदराचार्य विरचित, श्लोक सं० ३३०। —सं० वि० २५६५१

योगावलीतन्त्र

लि०—(१) महादेव प्रोक्त। इसमें स्त्री, पुरुष और नपुंसक के जन्म में कारण, शरीरों में मांस, हड्डी आदि की उत्पत्ति का काल, देहस्थित वायु आदि का निरूपण, नाड़ियों का निरूपण, नाडी आदि की स्थिति का निरूपण, वायु, नाडी आदि के निरोध आदि से चिन्तन का उपाय कथन। —नो० सं० १।३०३

(२) श्लोक सं० २७२, पटल सं० ५। हर-गौरी संवादरूप इस तन्त्र में देहोत्पत्ति आदि का निर्वचन करते हुए योग आदि का निरूपण किया गया है। —रा० ला० २५९

योगिनाथ (ग्रन्थकर्त्ता ?)

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

योगिनीचक्रपूजन

लि०—श्लोक सं० २००। —डे० का० (१८८३-८४ ई० का संग्रह)

योगिनीजालशंबर

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी में।

योगिनीतन्त्र (१)

लि०—(१) देवी-ईश्वर संवादरूप। इसमें १म और २य दो भाग हैं। १म भाग में १९ पटल हैं। २य भाग का नाम कामरूपनिर्णय है। उसमें १४ पटल हैं। २य भाग में ४ पीठों का विवरण भी दिया हुआ है। इससे ज्ञात होता है कि उड्यान पीठ का आविर्भाव सत्ययुग में, पूर्णशैल का त्रेता में, जालन्धर का द्वापर में तथा कामरूप या कामाख्या का आविर्भाव कलियुग में हुआ। —इ० आ० २५५५

(२) कलकत्ता और बम्बई में १८८७ ई० में इसका मुद्रण हो चुका है। —ए० बं० ६०१९

(३) योगिनीतन्त्र, २य भाग, श्लोक सं० ३५१०, पटल सं० ९। इसमें प्रतिपादित विषय—योगिनीतन्त्र का माहात्म्य आदि कथन, काली का रूप वर्णन, गुरु-माहात्म्य, दीक्षाविधि, पूजा, जप आदि के काल आदि का कथन, काली, तारा आदि विद्याओं का अभेद कथन, दिव्य, वीर आदि भावों का निरूपण। —रा० ला० २२१३

(४) कामरूपाधिकार या कामरूपनिर्णय। शिव-पार्वती संवादरूप। योगिनीतन्त्र दो भागों में विभक्त है, यह पहले कहा जा चुका है। इसके १म भाग में १९ पटल हैं और २य भाग का नाम कामरूपाधिकार या कामरूपनिर्णय है। यह १४ पटलों में पूर्ण है। इसका भी पूर्व में निरूपण हो चुका है। इस प्रति में उक्त २य भाग का ही कुछ अंश है। —क० का० ७०

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

(५) (क) श्लोक सं० लगभग १४७२, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३७८, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० लगभग ११२; काशीमाहात्म्यमात्र, पूर्ण। (घ) श्लोक सं० ८८, सोलहवाँ पटलमात्र। (ङ) श्लोक सं० १६५०, पूर्वार्द्ध १ से १९ पटल तक पूर्ण। (च) द्वितीय भाग में नवम पटल मात्र, श्लोक सं० लगभग ५५; अपूर्ण। (छ) केवल १६ वाँ पटल मात्र श्लोक सं० लगभग ६५, अपूर्ण। (ज) केवल १६ वाँ पटल पूर्ण, श्लोक सं० ८८। (झ) श्लोक सं० ७७, सोलहवाँ पटल मात्र, पूर्ण। (ञ) श्लोक सं० १७०, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४४६१, (ख) २४८९०, (ग) २४९१२, (घ) २५०२९,

(ङ) २५६५२, (च) २५८८१, (छ) २५९८४, (ज) २५९९१, (झ) २६११७, (ञ) २६३४३

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमकल्पलता, ललितार्चनचन्द्रिका, तत्त्वबोधिनी (आनन्दलहरी की टीका), कालिकासपर्याविधि तथा सर्वोल्लास में।

योगिनीतन्त्र (२)

लि०—श्लोक सं० २८०० और पटल सं० १०। —अ० ब० १०२५९

योगिनीदशा

लि०—रुद्रयामल से गृहीत, श्लोक सं० १८७। —अ० ब० ९३५७

योगिनीदशाविभाग

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० लगभग ५००, अपूर्ण। —सं० वि० २४३३६

योगिनीन्यास

लि०—श्लोक सं० लगभग २००, अपूर्ण। इसमें सौभाग्यविद्येश्वरी-महामन्त्र तथा महाषोढान्यास आदि भी संनिविष्ट हैं। —सं० वि० २५८५९

योगिनीपूजा

लि०—श्लोक सं० १००, पूर्ण। इसमें चौसठ योगिनियों की पूजाविधि, महाबलि आदि का वर्णन है। —ए० बं० ६४४८, ६४४९

योगिनीभैरव

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी में।

योगिनीमत

उ०—तन्त्ररत्न में।

योगिनीमन्त्रयन्त्रादि

लि०—श्लोक सं० लगभग ५०, चतुःषष्टि योगिनियों के नाम भी इसमें संनिविष्ट हैं। —सं० वि० २५६१०

योगिनीविजय या योगिनीविजयस्तवराज

लि०—(१) देवदेव भैरव प्रोक्त। यह स्तव भोग और मोक्ष दोनों का देने वाला है। पिप्पलाद मुनि ने इसे भूमि पर उतारा। —ए० बं० ६७२९

(२) ब्रह्मयामलान्तर्गत, शेष पूर्ववत्। —ने० द० ११५४२

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

योगिनीसाधन

लि०—भूतडामरतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० लगभग ६०, पूर्ण।

—सं० वि० २५७५५

योगिनीसाधनाप्रयोग

लि०—श्लोक सं० लगभग ११५, पूर्ण। —सं० वि० २४८५२

योगिनीहृदय (सटीक)

लि०—(१) व्याख्या दीपिका के रचयिता पुण्यानन्दनाथ-शिष्य अमृतानन्द। (क) श्लोक सं० २७०० अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३०००। (ग) श्लो० सं० ३०००। (घ) श्लोक सं० ३०००।

—अ० ब० (क) ३४९०, (ख) ५७९३, (ग) १०६९६, (घ) १०८५५

(२) योगिनीहृदय मूल मात्र। देवी-शङ्कर संवादरूप, श्लोक सं० ५००, पटल सं० ६। उनके विषय ये हैं—१ श्रीचक्रसंकेत, २ मन्त्रसंकेत, ३ पूजासंकेत, ४ मन्त्रोद्धार, ५ दीक्षाकालनिर्णय आदि तथा ६ वीरसाधना। —रा० ला० २८२

(३) ईश्वर प्रोक्त, पूर्ण। —जं० का० १०७१

(४) देवी-शङ्कर संवादरूप। वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत यह ग्रन्थ त्रिपुरा देवी के चक्र-संकेत, मन्त्रसंकेत और पूजासंकेत से युक्त तीन उपदेशों में समाप्त है। मनुष्य जब तक पूर्वोक्त संकेतों का ज्ञान प्राप्त नहीं करता तब तक त्रिपुराचक्र में परमाज्ञाधर नहीं हो सकता। —म० द० ५७०२

(५) श्लोक सं० लगभग ३०६, अपूर्ण। —सं० वि० २४०४४

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, ललितार्चनचन्द्रिका, महार्थमञ्जरी-परिमल तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

योगिनीहृदयतन्त्र

लि०--श्लोक सं० लगभग १००; केवल सृष्टिसंकेत तथा पूजासंकेत नाम के २य और ३ य दो पटल।
--सं० वि० २५९८५

योगिनीहृदयदीपिका

लि०--(१) यह योगिनीहृदय की अमृतानन्दनाथ रचित दीपिका टीका है।
--ए० बं० ५९४६

(२) पुण्यानन्दनाथ-शिष्य अमृतानन्द रचित, श्लोक सं० १०००।
--अ० ब० ५७२९

(३) इसमें योगिनी-हृदय की तात्पर्य विवृत्ति है। यह १५०० श्लोकात्मक है।
--रा० ला० २८३

(४) योगिनीहृदय पर योगीन्द्र पुण्यानन्द-शिष्य अमृतानन्द योगिप्रवर कृत दीपिका टीका है, ३ य संकेतपर्यन्त।
--क० का० ७२

(५) योगिनीहृदय पर अमृतानन्द कृत व्याख्या दीपिका नाम की है।
--बी० कै० १३७२

(५) योगिनीहृदय, जो वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत और देवी-शंकर संवादरूप है, पर पुण्यानन्दनाथ-शिष्य अमृतानन्दनाथ योगिप्रवर रचित दीपिका टीका है। इस टीका के निर्माता अमृतानन्दनाथ ही हैं, न कि पुण्यानन्दनाथ। निम्नलिखित मूल ग्रन्थस्थ श्लोक इसमें प्रमाण है--

तदनेकार्थसन्दर्भान्नानासंकेतसंकुलम्।
विवृणोत्यमृतानन्दः शिवयोरेव शासनात्॥
--म० द० ५७०८, ५७०९

(७) यह अमृतानन्द योगिप्रवर कृत दीपिका टीका २य संकेत तक पूर्ण है।
--र० मं० ४९००

(८) आनन्दनाथ (?) योगिप्रवर कृत, पूर्ण।
--डे० का० ३९७ (१८८२-८३ ई०)

(९) योगिनीहृदय की दीपिका व्याख्या पुण्यानन्दनाथ योगिप्रवर कृत है।
[उपर्युक्त श्लोकानुसार यह लिखना भ्रान्तिमूलक ही प्रतीत होता है]।
--म० द० ५७०३ से ५७०७ तक

(१०) (क) अमृतानन्दनाथ विरचित, श्लोक सं० लगभग १२३०, अपूर्ण। लिपिकाल १७१२ वि०। (ख) अमृतानन्दनाथ विरचित, श्लोक सं० लगभग १४००, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४९६६, (ख) २५०९९

योगिन्यादिपूजनविधि

लि०—श्लोक सं० लगभग ३६०।

—डे० का० २४६ (१८८३–८४ ई०)

योगेशीसहस्रनामस्तोत्र

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत विष्णु-हर संवादरूप यह २०० श्लोकात्मक है। इसमें योगेशी देवी का सहस्रनामस्तोत्र तथा उसका पाठ करने का फल वर्णित है।

—रा० ला० ८७८

योनिकवच

लि०—(१) उमा-महेश्वर संवादरूप यह नीलतन्त्र के अन्तर्गत है और 'त्रैलोक्य-विजय' नाम से प्रसिद्ध है। इसके प्रारंभ में कुलचूडामणितन्त्रान्तर्गत लघुयोनिस्तव है।

—ए० बं० ६७३५

(२) पुरश्चरणरसोल्लास में योनिमुद्राप्रकरण के साथ सन्निविष्ट।

—सं० वि० २६४७६

योनिगह्वरतन्त्र

लि०—यह श्री ज्ञाननेत्र द्वारा भूलोक में प्रकाशित हुआ। देवी-महादेव संवादरूप यह नाथसम्प्रदाय से संबद्ध प्रतीत होता है। नाथसम्प्रदाय का गुरु-क्रम भी इसमें वर्णित है। यह उत्तराम्नाय का १६००० श्लोकात्मक तन्त्र है। —ए० बं० ५९०३

योनितन्त्र

लि०—(१) इसमें ८ अध्याय (पटल ?) हैं। —ए० बं० ५८९९

(२) हर-पार्वती संवादरूप इसमें १७ पटल हैं। योनिपूजा-प्रशंसा, पूज्य और अपूज्य योनियों का विचार, अक्षतयोनि के पूजन में दोष, पञ्चतत्त्व-विधि, कौलो में उत्तम, मध्यम आदि का भेद कथन, योनि में महाविद्या की उपासनाविधि, तत्त्व से तिलकविधि, तत्त्व से

पूजा की विधि, वीरसाधनविधि, आसन की उपासना, अन्तर्याग, मन्त्रराज आदि की विधि, कालीको प्रसन्न करनेवाले उपचार आदि, वीरपुरश्चरणविधि, पञ्चतत्त्वशोधनविधि, पूजा स्थान आदि का निरूपण, साधनविधि आदि विषय वर्णित हैं।

—नों० सं० १।३०४

—र० मं० ४९८१ (क)

(३) श्लोक सं० १९०, पूर्ण।

(४) हर-पार्वती संवादरूप, श्लोक सं० ३०५, इसमें ८ ही पटल हैं। विषय—योनिपीठ की प्रधानता, हरिहर आदि का योनि से संभव (जन्म) कथन, शक्ति-मन्त्र की उपासना कर योनिपूजा न करने में दोष, दिव्यभाव और वीरभाव की प्रशंसा, योनिपूजाविधि, रजकी, नापिताङ्गना आदि ९ कन्याओं का कथन, योनिपूजा के स्थान, काल और नैवेद्य, योनिपूजा का फल कथन, राम, कृष्ण आदि की योनि-उपासकता, वैदिक, वैष्णव, शैव, दक्षिण और वाम सिद्धान्त की कौल शास्त्रों में उत्तरोत्तर प्रधानता। श्राद्ध में कौलिकों को भोजन कराने का फल, योनिदर्शन का माहात्म्य, योनितत्त्व की प्रशंसा, वीरसाधन-विधान, वीरसाधनकाल में नायिका की उर्वशी तुल्यता, कलियुग में योनिपूजन ही श्रेयस्कर है।

—रा० ला० ३१८५

—बं० प० १३८८

(५) आरंभ से ८ वें पटल तक, पूर्ण।

उ०—मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, सर्वोल्लास तथा कालिकासपर्याविधि में। सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों में अन्यतम है।

(६) (क) श्लोक सं० लगभग १७५, १ से ६ पटल तक, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग ११२, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० लगभग २३०, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४७१२, (ख) २४९०९, (ग) २६०२९

योनिमन्त्रचिन्तामणितन्त्र

लि०—देवी-ईश्वर संवादरूप इसमें केवल १ ही पटल है। इसमें योनिपूजा वर्णित है। योनिकवच भी इसमें वर्णित है।

—ए० बं० ६०४६

योनिमुद्रा

लि०—(क) श्लोक सं० लगभग ९०, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग १४४। बिल्वमूलसाधन भी इसमें संनिविष्ट है। (ग) श्लोक सं० १२०, पूर्ण। इसमें षट्चक्र-निर्णय तथा अभिलाषाष्टक भी संनिविष्ट है।

—सं० वि० (क) २४०६९, (ख) २४८५५, (ग) २५०२८

योनिमुद्राकवच

लि०—चैतन्यप्रकाश से गृहीत। श्लोक सं० ३५। —अ० ब० १२२८२ (ख)

योनिमुद्राप्रकरण

लि०—पुरश्चरणरसोल्लास ग्रन्थ में संनिविष्ट। —सं० वि० २६४७६

योनिस्तव

लि०—कुलचूड़ामणितन्त्रान्तर्गत। यह स्तोत्र मुद्रित कुलचूडामणितन्त्र में उपलब्ध नहीं होता है।

—ए० बं० ५८२९

रकारादिरामसहस्रनाम

लि०—(१) श्रीब्रह्मयामल से गृहीत। उमा-महेश्वर संवादरूप। इसमें श्रीरामचन्द्रजी के रकारादि सहस्र नाम प्रतिपादित हैं। —नो० सं० ३।२४३

(२) ब्रह्मयामलान्तर्गत, उमा-महेश्वर संवादरूप। विशेष विवरण देखें Oxford (आक्सफोर्ड) नं० १५२ में। —ए० बं० ६७६९

रक्तचामुण्डामन्त्रविधि

लि०—(क) श्लोक सं० १२, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० २१, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २५७१९, (ख) २६५६८

रक्तागम

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) आगमों में अन्यतम है।

रघुनाथप्रतिष्ठाविधि

लि०—श्लोक सं० ३०। —अ० ब० ४०४५

रजस्वलामन्त्रोद्धार

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत कालीतन्त्रस्थ। श्लोक सं० लगभग ४०, अपूर्ण।

—सं० वि० २५०६०

रजस्वलास्तोत्र

लि०—(१) रुद्रयामल के अन्तर्गत, उमा-महेश्वर संवादरूप।

—ए० बं० ६७३२

(२) कालीप्रस्तार से गृहीत, श्लोक सं० १७। —अ० व० ८४९५ (ख)

(३) पूर्ण। —रा० पु० ९६ (ख)

(४) कुलचूड़ामणि के अन्तर्गत, पूर्ण। —वं० प० २२३

रतिशेखर आगम

उ०—परात्रिंशिका-टीका में।

रत्नकोश

लि०—नृसिंहपुरी परिव्राजक विरचित। श्लोक सं० ३५००, अपूर्ण।
—डे० का० (१८७९-८० ई०)

रत्नत्रय

रामकण्ठ श्रीकण्ठ कृत।

रत्नदेव

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल तथा महामोक्षतन्त्र में।

रत्नपञ्चकावतार

लि०—देवी-भैरव संवादरूप यह एक मौलिक तन्त्र है। इसमें देवी (कुब्जिका) और भैरव संवादक हैं एवं पाँच रत्नों— कुल, अकुल, कौल, कुलाष्टक तथा कुल-षट्क—का वर्णन है। इसकी श्लोक सं० १२००० और पटल सं० ११ है। यह रत्न-पञ्चकावतार-श्रीमत्संहिता का सार से भी सार अंश है। इसके मुख्य वर्ण्य विषय पूर्वोक्त पाँच रत्न, पूजा और मन्त्र हैं। उन्हीं का स्पष्टीकरण इसमें किया गया है।
—ने. द. १।१५५२

रत्नपरीक्षा तथा मणिपरीक्षा

लि०—इसमें रत्न और मणियों के लक्षण, धारण में शुभाशुभ फलदान आदि विषय वर्णित हैं। —इ० आ० २६१८

रत्नमाला

लि०—इसमें स्तुति के व्याज से भगवती के रूप, गुण, माहात्म्य आदि का वर्णन किया गया है। —नो० सं० १।३०६

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल, तत्त्वबोधिनी आनन्दलहरी-टीका में।

रत्नावली

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

रश्मिप्रकरण

लि०—श्लोक सं० लगभग १९०, अपूर्ण। —सं० वि० २४५१०

रश्मिमालामन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० ९०। —अ० ब० ५६८२

(२) यह गायत्री आदि मन्त्रों का संग्रहरूप तन्त्रनिबन्ध है। इसमें ध्यान, मुद्रा आदि के साथ विविध मन्त्रों का निर्देश है। —क० का० ७३

(३) श्लोक सं० लगभग १००, पूर्ण। —सं० वि० २४३३९

रसकर्ममञ्जरी

लि०—राजाराम तर्कवागीश विरचित। इसमें मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, स्तंभन आदि षट् कर्मों की काल आदि के नियम से सामान्य विधि, त्र्यम्बकादि प्रयोग तथा शान्तिविधि वर्णित है। इसमें संभवतः ३ पटल हैं। —नो० सं० ३।२४५

रसकल्प

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, उमा-महेश्वर संवादरूप। इसमें पारद से विविध रसों के निर्माण का प्रतिपादन है। रसशोधन, रसमारण, सत्त्वपातन तथा सर्वलौह द्रुति-पातन आदि विषय इसमें वर्णित है। —ए० बं० ५८७१

(२) रुद्रयामल के अन्तर्गत, पूर्ण। —बं० प० १०८३

रसरत्नाकर

लि०—(१) पार्वती और शंखगुप्त के पुत्र नित्यनाथ सिद्ध विरचित यह ग्रन्थ ५ खण्डों में पूर्ण है। वे हैं—रसखण्ड, रसेन्द्रखण्ड, सिद्धखण्ड आदि। इसमें मारण, मोहन, स्तंभन, उच्चाटन, वशीकरण आदि छह तान्त्रिक कर्म (षट्कर्म) वर्णित हैं।

—ए० बं० ६५४६, ६५४९

(२) मन्त्रखण्ड मात्र, नित्यनाथ कृत, श्लोक सं० १८००। लिपिकाल संवत् १७४३ वि०।

—डे० का० (१८८०–८१ ई०)

(३) रुद्रयामल से गृहीत, श्लोक सं० ५७८।

—डे० का० २४८ (१८८३-८४ ई०)

(४) श्लोक सं० लगभग २७५, पूर्ण।

—सं० वि० २६७०५

रसवतीशत

लि०—धरणीधर विरचित। शक्तिरूप रसवती के प्रति इसमें ११९ श्लोक कहे गये हैं।

—इ० आ० २६२६

रसहृदय (तन्त्र) सटीक

लि०—(१) चन्द्रवंशी हैहयकुल के श्रीमदन (किरातदेशाधिपति) के लिए भिक्षु गोविन्द विरचित। टीकाकार—महेशमिश्र-पुत्र चतुर्भुज। इसमें १९ अवबोध हैं।

—इ० आ० २६१७

(२) श्री गोविन्द भगवच्छ्रीपाद विरचित, श्लोक सं० ६७५, पूर्ण। यह १८ पटलों में पूर्ण है। इसमें पारद की अपूर्व महिमा वर्णित है—पारद मूर्च्छित होकर रोग हरता है, बन्धन का अनुभव कर मुक्ति देता है और मर कर अमर कर देता है। पारद से बढ़कर करुणासिन्धु दूसरा कौन है इत्यादि। इसमें रसायनविधि वर्णित है।

—ट्रि० कै० १०१९ (ग)

रसाङ्कुश

लि०—रहस्यसंहिता के अन्तर्गत देवी-ईश्वर संवादरूप इस तन्त्र का मुख्य प्रतिपाद्य विषय रसायनविधि है। इसमें सुवर्ण बनाने की विधि वर्णित है। यह छह पटलों में पूर्ण है।

—ट्रि० कै० १०१९ (ख)

रसान्वय

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

—प्राप्त ग्रन्थ-सूची से

रसाम्नाय

लि०—

रसार्णवकल्प

लि०—रुद्रयामल के अन्तर्गत। इसमें शिवपूजा तथा पारद के विविध रासायनिक निर्माणों का प्रतिपादन है। इसमें कोई विभाग, परिच्छेद या अध्याय नहीं है। कलकत्ते से प्रकाशित रसार्णव से इसका कुछ भी मेल नहीं मिलता।

—ए० बं० ५८७०

रसोपनिषद्

लि०––श्लोक सं० ४००। इसमें रसोपनिषद् शास्त्र की शिष्य-परम्परा प्रतिपादन पूर्वक रसायनविधि वर्णित है। इसके २५ विरतियों (अध्यायों) में विभक्त होने की बात अन्तिम पुष्पिका से ज्ञात होती है। ––ट्रि० कै० १०१९ (घ)

रहस्यकल्लोलिनी

इसका उल्लेख पुष्पमाहात्म्य नामक पुस्तक में 'पुष्परहस्यं रहस्यकल्लोलिन्याम्, रहस्यकल्लोलिन्यां पुष्परहस्यम्' इत्यादि रूप में किया गया है। ––इ० आ० २६१४

रहस्यतन्त्र

लि०––

––प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

रहस्यनाम

उ०––सौभाग्यभास्कर में।

रहस्यनामसहस्रविवृति

लि०––वुद्धिराज विरचित। श्लोक सं० लगभग ३००, पूर्ण।

––सं० वि० २५९७४

रहस्यपुरश्चरणविधि

लि०––स्वतन्त्रतन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० लगभग ८८, पूर्ण। लिपिकाल १७१८ शकसंवत्सर।

––सं० वि० २६४६७

रहस्यप्रकाश

लि०––११ पटल पर्यन्त। पूर्ण। ––बं० प० १३७९

रहस्यमाला

उ०––तारारहस्यवृत्ति में।

रहस्यशास्त्र

उ०––स्पन्दप्रदीपिका में।

रहस्यसिद्धिसोपान

उ०––सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्धिनी में।

रहस्यस्तोत्र

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

रहस्यातिरहस्यपुरश्चरण

लि०—श्लोक सं० १०० । इसमें श्मशान आदि में विशिष्ट पुरश्चरण की विधि प्रतिपादित है। —रा० ला० ३५५

रहस्याम्नाय

उ०—चिद्वल्ली में।

रहस्यार्णव

लि०—(१) त्रिगर्त (लाहोर) देशाधिपति जयचन्द नरेन्द्र की प्रेरणा से हृदयानन्द-शिष्य वनमाली विरचित। इसमें १५ पटल हैं। उनमें निम्नलिखित विषय प्रतिपादित हैं—गुरु-क्रमविधान (गुरु-निर्णय), त्रिविध भाव का निर्णय, कुमारी-पूजन (कुमारिका-कल्प), कुलाचार (समयाचार), पीठपूजाविधि, निशीथपूजापद्धति, पाण्डव-महापूजा-पद्धति, द्रौपदी-संस्कार, पुरश्चर्याक्रम, चिन्नाडीपटल, बलिदानविधि, विभूति-धारण-विधि, अन्तर्यागविधि, योगवर्णन, रहस्योक्त द्रव्यशोधनविधान आदि। विविध तन्त्रों का अवलोकन कर यह ग्रन्थ संगृहीत किया गया है। —इ० आ० २५८१ —वं० प० १४०८

(२) १५ पटल तक, अपूर्ण।

रहस्योच्छिष्ट सुमुखीकल्प

लि०—शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें पहले उच्छिष्ट गणपति-मन्त्र के ऋषि, छन्द, देवता, बीज और शक्ति वर्णित हैं। इसी प्रकार अन्यान्य देव-देवियों के भी मन्त्रों के ऋषि, छन्द, देवता आदि कहे गये होंगे। इसके अन्त में लिखा है कि इसके विधान से साधकों के सब कार्य सदा सिद्ध होते हैं तथा दीर्घ आयु प्राप्त होती है। किसी-किसी ने इसे "रहस्योच्छिष्ट गणपतिकल्प" पढ़ा है। —बी० कै० १२७८

राजकल्पद्रुम

लि०—राजेन्द्र विक्रमदेव शाह विरचित। यह ग्रन्थ १४ पटलों में पूर्ण है। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—दीक्षा-प्रयोग, पुरश्चरण-निर्णय, द्वारपूजादि मातृकान्यासान्त, पीठपूजादि लोकपालान्त पूजा कथन, अग्नि का प्रादुर्भाव, हवन, यजुर्वेदविधानोक्त धनुर्वेद-मन्त्र दीक्षा प्रकरण, पूजापटल आदि। —ने० द० १।२३२

राजभैरवसूत्र

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

राजराजेश्वरनित्यदीपविधिक्रम

लि०—हरिराय विरचित। श्लोक सं० लगभग २५०, पूर्ण। लिपिकाल १८१८ वि०। शिवपञ्चाक्षरमन्त्रविधि भी इसमें संनिविष्ट है। —सं० वि० २६२३८

राजराजेश्वरीकवच

लि०—वामकेश्वरतन्त्र से गृहीत, श्लोक सं० ९२। —अ० ब० ८४९६

राजराजेश्वरीतन्त्र

(शाक्ताभिषेक मात्र, दे०,शाक्ताभिषेक।)

लि०—(१) पूर्ण। —बं० प० १३०६

(२) अभिषेकाध्यायमात्र। श्लोक सं० लगभग २००, अपूर्ण।

—सं० वि० २४६२२

उ०—आगमतत्त्वविलास में।

राजराजेश्वरीपूजाविधि

लि०—(क) श्लोक सं० लगभग ४००, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० २००, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४५६१, (ख) २६४५०

राजराजेश्वरीमन्त्रोद्धार

लि०—श्लोक सं० २५। —अ० ब० ९९८५ (क)

राजीसाधन

लि०—इसमें सुवर्ण बनाने की विधि वर्णित है। —ए० बं० ६५६६

राजेश्वरीतन्त्र

लि०—

—प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

राजेश्वरीस्तव

लि०—यह नामसिद्धान्तनिर्णय ग्रन्थ के साथ संनिविष्ट।

—सं० वि० २५६४९

राज्ञीदेवीपञ्चाङ्ग

लि०—(क) श्लोक सं० २५२। (ख) श्लोक सं० ५३२।
—डे० का० (क) २४९, (ख) २५० (१८८३-८४ ई०)

राज्ञीनित्यपूजापद्धति

लि०—यह दो भागों में विभक्त है। १ म भाग में राज्ञी के उपासक के करणीय स्नान, सन्ध्या, तर्पण आदि प्रातःकृत्यों का उल्लेख है और २य भाग में राज्ञी देवी की पूजाविधि वर्णित है। —ए० बं० ६४०१

राज्ञीपञ्चाङ्ग

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ४९४, पूर्ण। —र० मं० ४८४६

रात्रिनिर्णय

लि०—श्लोक सं० लगभग २२, अपूर्ण। —सं० वि० २५२६४

राधाकृष्ण-अष्टोत्तरशतनाम

लि०—श्रीरासतन्त्रान्तर्गत, पूर्ण। —बं० प० ४६७

राधाकृष्णपञ्चाङ्ग

लि०—विश्वसारतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक सं० ४४८, पूर्ण। —र० मं० ४८२३

राधातन्त्र

लि०—(१) कौलसम्प्रदाय से सम्बद्ध यह तन्त्र ३५ पटलों में पूर्ण है। —ए० बं० ६७०२
—अ० ब० १०१०८

(२) पटल १८ से ३२ तक, श्लोक सं० २५०, अपूर्ण। —रा० ला० ३८३

(३) वासुदेवरहस्य के अन्तर्गत हर-पार्वती संवादरूप, श्लोक सं० १२०। इसमें कुलाचारसंमत पूजा, जप आदि प्रतिपादित हैं। —क० का० ७६

(४) यह शक्ति के उपासकों के पूजन, जप आदि का निरूपण करनेवाला निबन्ध तन्त्र है। —जं० का० १०७४

(५) ईश्वर प्रोक्त, पूर्ण।

(६) (क) श्लोक सं० ३७५, अपूर्ण। (ख) वासुदेवरहस्यान्तर्गत। श्लोक सं० लगभग २३३० गणना से। अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० १८७५, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४८७६, (ख) २५९५२, (ग) २६३९१

उ०—कालिकासपर्याविधि तथा सर्वोल्लास में।

राधासहस्रनाम

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, शिवनारद संवादरूप, श्लोक सं० ३१७। इसमें राधा के नाम-माहात्म्य के वर्णन के व्याज से उनके हजार नाम वर्णित हैं।

—रा० ला० ३१२४

राधिकासहस्रनाम

लि०—(१) नारदपञ्चरात्र के अन्तर्गत, पूर्ण। —बं० प० ६६०

(२) सनत्कुमारसंहिता के अन्तर्गत, पूर्ण। —बं० प० २०५

रामकवच या रामत्रैलोक्यमोहनकवच

लि०—(१) ब्रह्मयामलान्तर्गत गौरीतन्त्रोक्त, उमा-महेश्वर संवादरूप। इसका नाम त्रैलोक्यमोहनकवच है। —ए० बं० ६७७४

(२) (क) श्लोक सं० १००, ब्रह्मयामल से गृहीत।

(ख) श्लोक सं० २८, ब्रह्मयामल से गृहीत।

—अ० ब० (क) ३५३७ (ख) ५०८३

(३) पूर्ण। —बं० प० ४१०

(४) रामकवच वज्रपञ्जर नामक। यह यन्त्रात्मक है। —सं० वि० २६३७२

रामचतुरक्षरमन्त्रपद्धति

लि०—श्लोक सं० लगभग ६०, पूर्ण। लिपिकाल १८१९ वि०।

—सं० वि० २६६०६

रामचन्द्रपूजापद्धति

लि०—(क) श्लोक सं० लगभग १३५, खण्डित। (ख) श्लोक सं० लगभग १००, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० लगभग ६२, पूर्ण। प्रतीत होता है ये सब पुस्तकें पृथक् पृथक् हैं।

—सं० वि० (क) २४९९९, (ख) २५७७१, (ग) २६०९८

रामचन्द्रपूजाविधि

लि०—पूर्ण। —बं० प० ५०६

रामनामलिखनविधि

लि०—(१) रुद्रयामल के अन्तर्गत। इसमें रामनाम लिखने की विधि तथा उसका फल साङ्गोपाङ्ग वर्णित है। —ए० बं० ५८८६

(२) रुद्रयामल के अन्तर्गत गौरी-ईश्वर संवादरूप। इसमें राम-नाम लिखने की विधि कही गयी है। अधिक संख्या में लिखने पर फल विशेष कहा गया है। —रा० ला० ४२१७

(३) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० ४५, पूर्ण। —र० मं० ११२१

रामनामलिखनविधिप्रयोगचक्र

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक सं० ३८, पूर्ण। —सं० वि० २४७६६

रामपञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक सं० ६०८, पूर्ण। —र० मं० ४८११

रामपद्धति

लि०—(१) नृसिंहाश्रम-शिष्य लक्ष्मीनिवास विरचित, पन्ने १८। —रा० पु० ५८७८

(२) श्लोक सं० लगभग ४२०, अपूर्ण। —सं० वि० २६५०८

रामपूजापद्धति

लि०—(१) (क) श्रीरामोपाध्याय विरचित, पन्ने १६१।
(ख) नृसिंहाश्रम-शिष्य श्रीनिवास विरचित, पन्ने २९।
—रा० पु० (क) ६७४२, (ख) ६८०४

(२) लोक सं० ६१६, खण्डित। —र० मं० ४६०२

रामपूजाप्रकार

लि०—श्लोक सं० लगभग १६५, अपूर्ण। लिपिकाल १६०४ वि०। —सं० वि० २६६५९

राममन्त्रपद्धति

लि०—श्लोक सं० १२१, पूर्ण। —र० मं० ५०३७

राममन्त्रविधि

लि०—रुद्रयामलोक्त, श्लोक सं० ५६, पूर्ण। —सं० वि० २३९७१

राममन्त्राराधनविधि

लि०—श्लोक सं० लगभग १९५, अपूर्ण। —सं० वि० २५१६८

राममालामन्त्रविधि

लि०—श्लोक सं० लगभग ५५, अपूर्ण। —सं० वि० २६६११

रामयन्त्र

लि०—श्लोक सं० लगभग १५, अपूर्ण। —सं० वि० २५८८३

रामरक्षाबीजमन्त्रप्रयोग

लि०—श्लोक सं० लगभग ७२, पूर्ण। —सं० वि० २६५५९

रामषडक्षरमन्त्र

लि०—(क) श्लोक सं० १०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३४, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० १४, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४४५४, (ख) २४५६८, (ग) २६००४

रामसहस्रनाम

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, हर-गौरी, संवादरूप। इसमें राम के सहस्रनाम अकारादि क्रम से वर्णित हैं। इसका प्रकाशन कवचमाला में हो चुका है।

—ए० बं० ६७६५

(२) लिङ्गागमान्तर्गत, उमा-महेश्वर संवादरूप। यह गुह्य से भी गुह्यतर कहा गया है। यह स्तोत्ररत्नाकर में (मद्रास १९२७ में) प्रकाशित हो गया है।

—ए० बं० ६७६८

(३) प्रथम शिव-पार्वती संवादरूप, तदुपरान्त विनायक-सनत्कुमार संवादरूप। यह सहस्रनाम द्विजहत्यापापहर अतीव पुण्य कहा गया है।

—म० द० ८९६४

(४) शिव-पार्वती संवादरूप। श्लोक सं० २७७। श्रीरामचन्द्रजी के गुण, माहात्म्य आदि का वर्णन करते हुए उनके सहस्र नाम तथा उनके पाठ का फल इसमें वर्णित है

—रा० ला० ४२२५

रामानुष्ठान

लि०—श्लोक सं० लगभग ५०, पूर्ण। —सं० वि० २६००३

रामार्चनचन्द्रिका (१)

लि०—(१) मुकुन्दवन-शिष्य आनन्दवन विरचित। साङ्गोपाङ्ग रामपूजा का प्रतिपादक यह तन्त्र ५ पटलों में पूर्ण है। उक्त पटलों में प्रतिपादित विषय हैं—१. पूजासम्बन्धी विविध विषय तथा राम-मन्त्रोद्धार, २. आचमन आदि साधारण कर्तव्य कथन पूर्वक विविध न्यासों का प्रतिपादन, ३. ध्यान, होम, पात्रासादन, अन्तर्याग, पीठपूजा, स्तोत्र आदि, ४. आठ प्रकार के यन्त्र आदि। —इ० आ० २६०७

(२) पटलैः पञ्चभिः प्रोक्ता श्रीरामार्चनचन्द्रिका।
आनन्दवननाम्ना हि यतिना हरितुष्टये ॥

अर्थात् हरि की प्रसन्नता के लिए आनन्दवन नामक यति ने रामार्चनचन्द्रिका को पाँच पटलों से वर्णन किया। इसमें वर्णित विषय हैं—गुरु-शिष्य के लक्षण, सुप्तप्रबोधक काल आदि का वर्णन, राशि-शुद्धि आदि, मन्त्र के संस्कार आदि, राम और सीता के ध्यान आदि, बीज आदि का अर्थ निरूपण, मास, नक्षत्र आदि की शुद्धि का निरूपण, होमविधि आदि, दीक्षाप्रकरण आदि, तिलकधारणविधि आदि, दिन के २ य भाग के कृत्य, चार शुद्धियाँ भूतशुद्धि आदि, न्यास आदि का निरूपण, ध्यान, पूजाप्रयोग आदि, तीर्थधारण आदि, दिन के छठे भाग के कर्म, पुरश्चरण आदि। —नो० सं० ११३१८

—बं० प० ११३, १७३

(३) आनन्दवन कृत, अपूर्ण।

(४) मुकुन्दवन-शिष्य आनन्दवन कृत। (क) श्लोक सं० १२००, केवल २ पटल। (ख) श्लोक सं० २५००, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० २५००, पूर्ण। (घ) श्लोक सं० १००० (३ पटल पूरे ४र्थ चालू)। (ङ) श्लोक सं० ६०० (४र्थ और ५म पटल)। (च) श्लोक सं० ६०, अपूर्ण। (छ) श्लोक सं० १५०० (३ पटल पूरे चौथा पटल चालू)। (ज) श्लोक सं० २५०० पूर्ण। (झ) श्लोक सं० १२० केवल रामार्चनविधि।

—अ० ब० (क) ८५, (ख) १३०४१, (ग) २२७०, (घ) ११९८, (ङ) १०५२७, (च) १२९७९, (छ) १०५६३, (ज) १४९७, (झ) ५१५२

(५) पाँच पटलों में पूर्ण यह ग्रन्थ मुकुन्दवन-शिष्य आनन्दवन द्वारा विरचित है। इसमें अगस्त्यसंहिता, अथर्वणरहस्य, श्रीरामोत्तरतापिनीय, गौतमीयतन्त्र, देव्यागम, नारदतन्त्र आदि के वचन उद्धृत हैं। —क० का० ७४, ७५

(६) मुकुन्दवन-शिष्य आनन्दवन कृत, (क) श्लोक सं० २७६९, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० २५२३, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० २१७०, पूर्ण। (घ) श्लोक सं० ६८२, अपूर्ण, आदि और अन्त रहित।

—र० मं० (क) ४७४४, (ख) ४७४०, (ग) ४७२२, (घ)४७०८

(७) (क) आनन्दवनयति कृत, श्लोक सं० लगभग १४१५, पूर्ण। (ख) आनन्दवन कृत, श्लोक सं० लगभग ८८५, अपूर्ण। (ग) आनन्दवनयति कृत, श्लोक सं० लगभग २४६०, (खण्डित)। —सं० वि० (क)२४१५२, (ख) २६६७१, (ग) २३९७९

रामार्चनचन्द्रिका (२)

लि०—भविष्योत्तरपुराणान्तर्गत, श्लोक सं० लगभग २०५०, अपूर्ण।

—सं० वि० २६६६६

रामार्चनदर्पण

लि०—इसमें त्रिपुरसुन्दरी की पूजा आदि का विधान है। पत्रे १२२।

—रा० पु० ५७९२

रामार्चनपद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० लगभग २६६, अपूर्ण। —सं० वि० २५५९२

(२) प्रकाशानन्दनाथ-शिष्य गोविन्ददशपुत्र कृत। श्लोक सं० ११००। निर्माण-काल शकाब्द १६६४। —अ० ब० ५१५३

रामार्चनसोपान

लि०—शिवलालशर्मा द्वारा विरचित। श्लोक सं० ६००। लिपिकाल १८५० वि०।

—अ० ब० १३०३८

रामार्चापद्धति

लि०—श्लोक सं० लगभग ३८०, अपूर्ण। —सं० वि० २६५४९

रामार्चासरणि

लि०—श्लोक सं० लगभग ५५०, पूर्ण। लिपिकाल १६०७ वि०।

—सं० वि० २६५२६

रावणोड्डीश

लि०—दे०, वीरभद्रमहातन्त्र । —ए० वं० ५८४६

रावणचेटक

लि०—(१) आगमोक्त। यह शावरमन्त्र की तरह रावणमन्त्र है ॐ नमो भगवते दशकण्ठाय दशशीर्षाय दशाननविंशतिनेत्रधराय एकादशजिह्वाष्टादशश्रोत्रनवनासाविंशत्योष्ठाय.....इत्यादि। इसमें इसी तरह निम्ननिर्दिष्ट चेटक भी हैं—रावणचेटक के अतिरिक्त रञ्जकचेटक, भृङ्गिचेटक, विश्वावसुचेटक, चोलाचेटक, कुम्भकर्णचेटक, वाचाटचेटक, विश्वचेटक, रक्तकम्बलचेटक, क्षोभचेटक, सागरचेटक, निशाचरचेटक, चुञ्चुकचेटक, सुपथचेटक, प्रेरकचेटक, भवचेटक तथा अर्जुनचेटक। इनमें से अर्जुनचेटक, कुम्भकर्णचेटक आदि कतिपय के नमूने भी रावणचेटकवत् दिये हैं। —नो० सं० १।३१९

(२) श्लोक सं० लगभग ८१, पूर्ण। लिपिकाल १९२७ वि०। —सं० वि० २४५०६

रावणोड्डीशडामरतन्त्रसार

लि०—यह गौरी-शङ्कर संवादरूप है। इसमें नृपति का आकर्षण, उन्मादन, विद्वेषण, उच्चाटन, ग्रामोच्चाटन, जलस्तंभन, अग्निस्तंभन, अन्धीकरण, मूकीकरण, स्तब्धीकरण आदि के बहुत-से प्रयोग वर्णित हैं। —ए० वं० ५८४७

रासगीता

लि०—श्लोक सं० १३७। इसमें रासोत्सव के अवसर पर श्रीराधा और श्रीकृष्ण की स्तुति की गयी है। —रा० ला० २११३

रासोल्लासतन्त्र

लि०—(१) नारदप्रोक्त, श्लोक सं० २६०। इसमें श्रीकृष्ण का राससंकीर्तनस्तोत्र, रासलीलास्वरूपवर्णन, रासगीताप्रतिपादन आदि विषय वर्णित हैं। —रा० ला० २१५१

(२) अपूर्ण। इसकी पुष्पिका में लिखा है—'रासोल्लासतन्त्रे राधाकृष्णयो रासवर्णनम् ।' —वं० प० ७१३

रुद्रचण्डी या रुद्रचण्डिका

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत हर-गौरी संवादरूप यह चार अध्यायों में है। छात्र-पुस्तकालय (कलकत्ता) द्वारा यह प्रकाशशित किया जा चुका है। —ए० बं० ५८७२

(२) यह रुद्रयामल के अन्तर्गत हर-गौरी संवादरूप है। इसमें वर्णित विषय हैं—शिव-कार्तिकेय के संवादरूप में रुद्रचण्डिका-कवच, हर-गौरी संवाद में चण्डीरहस्य, शिव दुर्गा के संवाद से साधनरहस्य कथन, हर और गौरी के संवाद से भिन्न-भिन्न वारों में रुद्र-चण्डिका की भैरवी आदि विभिन्न मूर्तियों के पूजन से भिन्न भिन्न फलों की प्राप्ति आदि।

—नो० सं० १।३२२

(३) रुद्रयामलान्तर्गत, अपूर्ण। —बं० प० ७२५

(४) श्लोक सं० लगभग ७०, पूर्ण। —सं० वि० २५२३१

रुद्रचण्डीकवच या रुद्रचण्डिकाकवच

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। पूर्ण। —बं० प० ११४८

रुद्रजपसिद्धान्तशिरोमणि

लि०—राम अग्निहोत्री कृत, श्लोक सं० ६४००। —अ० ब० १३९७

रुद्रतन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चौसठ आगमों में अन्यतम है। (तन्त्रालोक-टीका)।

रुद्रयामल या रुद्रयामलतन्त्र

लि०—(१) भैरव-भैरवी (उमा-महेश्वर) संवादरूप यह अनुत्तरतन्त्र और उत्तर-तन्त्र भेद से दो भागों में विभक्त है। दोनों में कुल मिलाकर ५४ पटल हैं।

—ए० बं० ५८६२, ५८६३

(२) यह भैरव-भैरवी संवादरूप है। भैरव प्रश्न-कर्ता और भैरवी उत्तर देनेवाली हैं। श्रीयामल, विष्णुयामल, शक्तियामल और ब्रह्मयामल इन सब यामलों का उत्तरकाण्ड रूप रुद्रयामल है। इसमें ९३ पटल हैं। —ने० द० २।२४६ (छ)

(३) भैरव-भैरवी संवादरूप यह ३२ पटलों में पूर्ण है।

—ने० द० २।२४६ (ई)

(४) यह ६४ पटलों में पूर्ण है। इसमें प्रतिपादित विषय—आनन्दभैरव के प्रति आनन्दभैरवी की उक्ति रूप यह निगम है यह कथन, यामल-शब्द की व्युत्पत्ति, तन्त्र

का माहात्म्य निरूपण भाव शब्द का निर्वचन, सुरा-पानविधि, दिव्य, वीर और पशुभाव के भेद से भाव तीन प्रकार का है, यह कथन आदि। —नो० सं० १।३२३

(५) महादेव-पार्वती संवादरूप। इसमें गायत्री महाचक्र का प्रतिपादन है। श्लोक सं० १३५। —ट्रि० कै० १००७ (ख)

(६) भैरव-भैरवी संवादरूप। इसमें ९००० श्लोक, ६७ पटल हैं। इनमें प्रतिपादित विषयों में कतिपय मुख्य-मुख्य विषय हैं—सिद्धमन्त्र-प्रकरण, महागुरु-प्रकरण, भावनिर्णय-प्रकरण, चक्रानुष्ठान-प्रकरण, कुमारी-उपचर्या विन्यास प्रकरण, कुमारीपूजनादि निरूपण, कुमारीकवच, कुमारी के अष्टोत्तर शत और सहस्र नाम, पशुभाव-विचार, आज्ञाचक्र-संगतिसिद्धमन्त्र-प्रकरण, आज्ञाचक्रसारसंकेत कथन, भरणी आदि सत्ताईस नक्षत्रों के फलाफल का कथन, वेद-प्रकरण, वेदभाषापरिच्छेद, अथर्ववेद-प्रकरण, चतुर्वेदोल्लास आदि। —रा० ला० २९२

(७) यह मौलिक तन्त्र है। इसमें प्रायः सम्पूर्ण शाक्त-सिद्धान्त, ज्ञान, धार्मिक और सामाजिक रीतिरश्म, विधियाँ, जातियाँ, तीर्थ, व्रत, उत्सव आदि वर्णित हैं।
—बी० कै० १३०९
—जं० का० १०७५

(८) भैरव प्रोक्त, उत्तरकाण्ड सम्पूर्ण। —र० मं० ४९५०

(९) श्लोक सं० ६३२७, पूर्ण।

(१०) (क) श्लोक सं० लगभग १०००, रसार्णवकल्पकथन पर्यन्त पूर्ण।
(ख) श्लोक सं० लगभग ७५०, अपूर्ण।
(ग) श्लोक सं० लगभग १४०, अपूर्ण।
—सं० वि० (क) २३८४८, (ख) २५५३६, (ग) २६००८

उ०—सौन्दर्यलहरी-टीका लक्ष्मीधरी, कुलप्रदीप, तारारहस्यवृत्ति, ताराभक्ति-सुधार्णव, आगमतत्त्वविलास, सर्वोल्लास, कालिकासपर्याविधि, तत्त्वबोधिनी (आनन्द लहरी की टीका) तथा तन्त्रसार में।

रुद्रयामल (उत्तरषट्क)

लि०—(१) उमा-महादेव संवादरूप रुद्रयामल अनुत्तर और उत्तर दो षट्कों में विभक्त है जैसा पहले कहा गया है। उसका यह उत्तर षट्क छह पटलों में पूर्ण है। उनके विषय ये हैं—षट्चक्र-ध्यान, त्रिपुरा के मन्त्रों का निर्णय, कामतत्त्वसाधन, त्रिपुरा का ध्यान, सिद्धियाँ और विद्याकोष। सुना जाता है कि रुद्रयामल सवा लाख श्लोकात्मक है। —म० द० ५७१०—११

(२)—रुद्रयामलतन्त्र। यह धातुकल्प का प्रतिपादक तन्त्र है। इसके अन्त में सुवर्ण-प्रशंसा दी गयी है।

[यह पूर्वोक्त रुद्रयामल से भिन्न प्रतीत होता है]। —तं० म० ६५५

रुद्रयामलमतोत्सवतन्त्र

लि०—उमा-महेश्वर संवादरूप। —ए० बं० ५८५८

रुद्रविधि

लि०—इसमें न्यासपूर्वक रुद्रकी जप-होम-पूजा-विधि वर्णित है।

—ए० बं० ६४८६

रुद्रव्याख्यान

लि०—श्लोक सं० ४२७, अपूर्ण। —अ० ब० १३४३३ (घ)

रुद्राक्षकल्प

लि०—यह शिव-पार्वती संवादरूप है। इसमें रुद्राक्ष की उत्पत्ति, उसके धारण का फल आदि प्रतिपादित है। —ए० बं० ५९९० (६)

रुद्राक्षफल

लि०—यह शिव-गौरी संवादरूप है। इसमें रुद्राक्ष-धारण से होने वाले फल आदि का कथन है।

—नो० सं० ३।२५७

रुद्राक्षोत्पत्ति

लि०—श्लोक सं० ३५। —अ० ब० ४०५१

रुद्रागम

(१) किरण के मतानुसार अष्टादश (१८) रुद्रागम—विजय, पारमेश, निःश्वास, प्रोद्गीत, मुखबिम्ब, सिद्धमत, सन्तान, नारसिंह, चन्द्रहास, भद्र, स्वायंभुव, विरज, कौरव्य, मुकुट, किरण, ललित, आग्नेय और पर।

(२) श्रीकण्ठी के अनुसार अष्टादश (१८) रुद्रागम—विजय, निःश्वास, मद्गीत, मुखबिम्ब, सिद्ध, सन्तान, नारसिंह, चन्द्रांशु, वीरभद्र, आग्नेय, स्वायंभुव, विसर रौरव, विमल, किरण, ललित और सौरभेय।

रुद्रादिमन्त्र

लि०—श्लोक सं० ८४, अपूर्ण । —अ० ब० ७३७२

रुरुतन्त्र

श्रीकण्ठ के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) आगमों में अन्यतम है (तन्त्रालोक-टीका)

रुरुशासन

उ०—तन्त्रालोक में ।

रूपभेद

उ०—सौन्दर्यलहरी की लक्ष्मीधर रचित टीका में।

रुरुभेद

यह श्रीकण्ठ के मतानुसार चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों में अन्यतम है।

रेणुकाकवच

लि०—श्लोक सं० ३८। —अ० ब० ५६९९

रेणुकाम्बापूजा

लि०—श्लोक सं० ३०, इसमें रेणुकाम्वा-मन्त्र भी हैं। —अ० ब० ११७८५

रेणुकारानक

उ०—सौभाग्यभास्कर में ।

रोगशान्ति

लि०—वौधायन द्वारा उक्त, श्लोक सं० १९८। इसमें प्रतिपदा आदि तिथियों और भिन्न नक्षत्रों के दिन रोग आदि की उत्पत्ति होने पर कितने दिनों तक रोग-भोग करना पड़ता है, इसका प्रतिपादन किया गया है और प्रत्येक रोग की शान्ति का प्रकार भी वतलाया गया है । —रा० ला० ४२१८

रोगहरचिन्तामणिमन्त्र

लि०—इसमें वे मन्त्र प्रतिपादित हैं जिनके जप से रोगों की निवृत्ति होती है। वे मन्त्र वामकेश्वरतन्त्र से गृहीत हैं । —ए० बं० ६५६०

रोगहरणमन्त्र

लि०—इसमें रोगों की निवृत्ति के लिए शावर मन्त्र प्रतिपादित हैं।

—ए० बं० ६५६१

रौरवागम

यह अष्टाविंशति (२८) रुद्रागमों के अन्तर्गत है (तन्त्रालोक-टीका)।

लक्षणसारसमुच्चय

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

लक्ष्मीकुलतन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

लक्ष्मीकौलार्णव

उ०—श्यामासपर्याविधि तथा सौभाग्यभास्कर में।

लक्ष्मीचरित्र

लि०—लक्ष्मी-केशव संवादरूप। इसमें भगवान् केशव ने लक्ष्मीजी से प्रश्न किया है कि किस उपाय से तुम मनुष्य के लिए निश्चल होती हो? भगवान् के प्रश्न का लक्ष्मीजी ने उत्तर दिया। इसमें साथ ही लक्ष्मीयुक्त और लक्ष्मीवियुक्त जीवों के लक्षण आदि भी दिये गये हैं। इसकी श्लोक सं० ६७ है। —रा० ला० ५८६

लक्ष्मीतन्त्र

लि०—(१) यह नारदपञ्चरात्र के अन्तर्गत है। इसमें ५० अध्याय हैं एवं नारायण विष्णु की शक्ति लक्ष्मी की पूजा और स्तुति विस्तार से वर्णित है। प्रत्येक अध्याय का विवरण इ० आ० कैटलाग में देखा जा सकता है। —इ० आ० २५३३

(२) (क) श्लोक सं० ३०००, पञ्चरात्र से गृहीत, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३०००, पञ्चरात्र से गृहीत, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० ३०००, पञ्चरात्र से गृहीत, पूर्ण। (घ) श्लोक सं० ३०००, पञ्चरात्र से गृहीत, ४९ अध्याय पूर्ण तथा ५० वाँ अध्याय चालू, अपूर्ण। —अ० ब० (क) ६६३७, (ख) ६६५३, (ग) ७८४५, (घ) ११४८३

(३) यह लक्ष्मी की पूजा तथा स्तुति आदि का प्रतिपादक तन्त्र है।

—बी० कै० १२८९

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

लक्ष्मीनारायणपञ्चाङ्ग

लि०—रुद्रयामल के अन्तर्गत, श्लोक सं० ५००, पूर्ण। —र० मं० ४८१२

लक्ष्मीनृसिंहमन्त्र

लि०—श्लोक सं० लगभग ७२, पूर्ण। रामदुर्ग और मालामन्त्र भी इसमें संनिविष्ट हैं। —सं० वि० २५३४३

लक्ष्मीनृसिंहविधान (सटीक)

लि०—श्लोक सं० लगभग ५८६, अपूर्ण। —सं० वि० २५१४०

लक्ष्मीनृसिंहसहस्राक्षरीमहाविद्या

लि०—श्लोक सं० लगभग १००, अपूर्ण। —सं० वि० २६२६५

लक्ष्मीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) ईश्वरतन्त्र में उक्त। पत्रे ३१। —रा० पु० ४१६१

(२) श्लोक सं० ६५८, पूर्ण। —र० मं० ४८३०

लक्ष्मीपटल

लि०—श्लोक सं० १४०। —अ० व० ९३११ (ग)

लक्ष्मीपद्धति

लि०—डामरतन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० लगभग ७५, अपूर्ण। —सं० वि० २६०२०

लक्ष्मीपूजन

लि०—श्लोक सं० ७० (लक्ष्मीयन्त्रसहित)। —अ० ब० ९५८७

लक्ष्मीपूजाप्रयोग

लि०—श्लोक सं० लगभग ३०। पुरश्चरणविधि भी इसमें संनिविष्ट है। पूर्ण। —सं० वि० २४८६३

लक्ष्मीपूजाविवेक

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

लक्ष्मीमत

श्रीकण्ठी के अनुसार अष्टादश (१८) रुद्रागमों में अन्यतम।

लक्ष्मीमन्त्र

लि०—श्लोक सं० ४०। —अ० ब० १३८९४

लक्ष्मीयन्त्र

लि०—श्लोक सं० लगभग ५५, अपूर्ण। —सं० वि० २६१५८

लक्ष्मीयामल

द्रष्टव्य, यामलाष्टक।

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

लक्ष्मीवासुदेवपूजापद्धति

लि०—श्लोक सं० २००। —अ० ब० ५८४९

लक्ष्मीव्रत या लक्ष्मीचरित्र

लि०—श्रीराम कविराज कृत। यह ५ अध्यायों में पूर्ण है।

—ने० द० १।१३२० (ञ)

लक्ष्मीसंहिता

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

लक्ष्मीसपर्यासार

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

लक्ष्मीहृदय या लक्ष्मीहृदयस्तोत्र

लि०—(१) अथर्वरहस्य से गृहीत, श्लोक सं० १०६।

—अ० ब० ९३११ (क)

(२) अथर्वणरहस्य से गृहीत, श्लोक सं० १०७, पूर्ण।

—डे० का० ७६८ (१८८२-८३ ई०)

लघुचक्रपद्धति

लि०—पूर्ण। इसमें श्रीचक्रनिर्माण की विधि बतलायी गयी है।

—म० द० ५७१४

लघुचन्द्रिका

लि०—(१) सच्चिदानन्दनाथ विरचित। ग्रन्थकार ने स्वकृत ललितार्चनचन्द्रिका का लघुतर (संक्षिप्त) श्रीविद्याक्रम-पूजन लघुचन्द्रिका के नाम से प्रस्तुत किया। इसमें उपासक के आह्निक कृत्य, न्यासविधि, अर्घ्यसाधनादिविधि, आवरण पूजा से लेकर विसर्जनान्त पूजन विधान, आसनोत्थापनविधि आदि विषय वर्णित है। इसमें ५ प्रकाश हैं।

—ए० बं० ६३४३

(२) (क) श्लोक सं० ८००, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ८०० (मुद्रालक्षण-सहित)। (ग) श्लोक सं० ८००।

—अ० ब० (क) ६४७२, (ख) ९७२३, (ग) ११७७०(क)

(३) सच्चिदानन्द कृत, श्लोक सं० १३०, पूर्ण (?)। —सं० वि० २४७०४

लघुचन्द्रिकापद्धतिसंकेत

लि०—श्लोक सं० १००। —अ० ब० ११७७० (ख)

लघुदीपिका

लि०—आनन्दवन विरचित रामार्चनचन्द्रिका की टीका गदाधर विरचित।

—रा० सो० ब०

लघुपद्धति

लि०—(१) विद्यानन्दनाथ विरचित, श्लोक सं० १०००।

—अ० ब० ९९०९ (ख)

(२) श्लोक सं० २१२, अपूर्ण। कर्ता पूर्ववत्।

—डे० का० १७ (१८८३-८४ ई०)

लघुपूजापद्धति

लि०—विद्यानन्दनाथकृत, श्लोक सं० लगभग २२०, पूर्ण। —सं० वि० २६१८०

लघुबृंहिणी

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

—म० द० ५७१५

लघुमातंगीकल्प

लि०—इसमें मातङ्गी-पूजा संक्षेपतः वर्णित है।

लघुवृत्ति या अनुत्तरत्रिंशिकाविमर्शिनी

लि०—यह अनुत्तरत्रिंशिका की लघुव्याख्या है। इसके रचयिता का नाम अज्ञात है। इसकी श्लोक सं० ३०० है। —ट्रि० कै० १०७४ (ख)

लघुवृत्तिविमर्शिनी

लि०—यह अनुत्तरत्रिंशिका की व्याख्या है। इसके रचयिता श्रीकृष्णदास हैं। श्लोक सं० ६००। —ट्रि० कै० १०७४ (घ)

लघुसूत्रपूजापद्धति

लि०—उमानन्दनाथ (?) कृत। श्लोक सं० ७००। —अ० ब० ५७९५

लतार्चन या लतार्चनतन्त्र

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों में अन्यतम है।

उ०—महामोक्षतन्त्र में।

लम्पट

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) रुद्रागमों में अन्यतम है।

ललित

यह अष्टादश (१८) रुद्रागमों में अन्यतम है।

लि०—ब्रह्माजी द्वारा प्रोक्त। इसकी श्लोक सं० १६० है। यह ७ पटलों में पूर्ण है। यह अपूर्व शास्त्रयाग पहले ब्रह्माजी के द्वारा कहा गया था। तदनन्तर शिवजी ने इसे कहा। यह सब भूतों के लिए ऐश्वर्य प्रदान करने वाला है। इसमें पहले भूतनाथ को स्नान कराने की विधि प्रतिपादित है। उससे पहले आचार्य-वरण आवश्यक कहा गया है। पूजा, बलिदान, होमविधि आदि विविध विषय इसमें वर्णित हैं।

—ट्रि० कै० ९८१ (ग)

ललितरहस्य

लि०—(१) राजेन्द्र तर्कवागीश भट्टाचार्य संकलित यह ग्रन्थ पुराण और तन्त्रों के वचनों का संग्रह कर रचा गया है। इसकी श्लोक संख्या १४६६ है और ९ पटलों में यह पूर्ण है। इसमें निम्न निर्दिष्ट विषय प्रतिपादित हैं—गुरुतत्त्व, ब्रह्मतत्त्व, दुर्गा का त्रिगुणा-

त्मत्व आदि कथन, हंसतत्त्व, उसके स्वरूप तथा ऋषि आदि का निरूपण, कामकलातत्त्व कथन, चित्शक्ति के स्वरूप आदि का निरूपण, कामकला के ध्यान आदि का प्रतिपादन, नादतत्त्व कथन, नाद, बिन्दु आदि की उत्पत्ति का निरूपण, शब्दब्रह्म का निरूपण, योनिमुद्रा, योगसाधना का प्रकार, कुण्डलिनी-तत्त्व का निरूपण, उसके स्वरूप का निर्देश, ध्यान आदि, षट्चक्रों का निरूपण, महामुद्रा-लक्षण, महाबन्धमुद्रा, उड्डीयानमुद्रा, जालन्धरमुद्रा, करणीमुर्द्रा, विपरीतमुद्रा, शक्ति-चालनमुद्रा, मन्त्रतत्त्व का विवेक, मन्त्रों में स्त्री, पुम्, नपुंसकत्व कथन, मन्त्रों का स्वापकाल आदि कथन, निशाचार, दिवाचार, पल्लव, बीज, संयोगाभाव, संयोगादि का निरूपण, वर्णमालातत्त्व कथन, अन्तर्याग का विवेचन, मालारहस्य, योगतत्त्व तथा कामेश्वरतत्त्व का निरूपण आदि। —रा० ला० १६७४

(२) राजेन्द्र तर्कवागीश कृत, अपूर्ण। —बं० प० ७५३

ललिताकामेश्वरीप्रयोग

लि०—श्लोक सं० लगभग ४२, अपूर्ण। —सं० वि० २४१८२

ललिताक्रम

नामान्तर—ललितापद्धति।

लि०—श्लोक सं० लगभग ७८०, अपूर्ण। लिपिकाल शक-संवत्सर १८४१। —सं० वि० २५२५३

ललिताक्रमदीपिका

लि०—(१) योगीश विरचित। इसमें ग्रन्थकार ने ललिता देवी की पूजा-विधि का विस्तारपूर्वक प्रतिपादन किया है। "योगीशः कुरुते यत्नात् ललिताक्रमदीपिकाम्।" ग्रन्थारंभ में यह ग्रन्थकार की प्रतिज्ञा है। —बी० कै० १२८७

(२) योगीश कृत, श्लोक सं० लगभग १०८०, पूर्ण। लिपिकाल १८१७ वि०। —सं० वि० २४८०२

ललितातन्त्र

उ०—सर्वोल्लास में।

ललितातिलक (सटीक)

लि०— काशीनाथ विरचित, श्लोक सं० लगभग १७९५। पूर्ण। —सं० वि० २५६५३

ललितात्रिशती

(श्रीशङ्कराचार्य कृत टीका सहित)

यह ग्रन्थ मुद्रित हो चुका है।

ललिता-ध्यानादि

लि०—श्लोक सं० १३०। —अ० ब० ५७९४

ललितानित्यपूजाविधि

लि०—सहजानन्दनाथ विरचित, श्लोक सं० ५००। —अ० ब० १७६

ललितानित्याह्निकविधि

लि०—श्लोक सं० १६८, अपूर्ण। —सं० वि० २६५७४

ललितानित्योत्सवनिबन्ध

लि०—उमानन्दनाथ विरचित। अपूर्ण। लिपिकाल १७३९ वि०

—सं० वि० २३९५०

ललितापरशिवजयमालामन्त्र

लि०—श्लोक सं० ३०। —अ० ब० ११८२४ (ख)

ललितापरिशिष्ट

लि०—इसमें त्रिपुरा के मन्त्र और उनके ऋषि, देवता, विनियोग आदि का प्रतिपादन करते हुए मन्त्रों के नाम दिये गये हैं—मिथुन शुद्धमाला०, मिथुन नमो०, मिथुन स्वाहा०, मिथुनतर्पण०, मिथुनजप० आदि। —ए० बं० ६३८०

ललितापूजन

पञ्चाक्षर ललिताबीजमन्त्र सहित।

लि०—श्लोक सं० लगभग ७५, पूर्ण। —सं० वि० २४२६९

ललितापूजनपद्धति

(कादिमतानुसार)

लि०—(१) श्लोक सं० ४००। —अ० ब० १२०६९

(२) कादिमतानुसारिणी। श्लोक सं० ५४०, पूर्ण।

—सं० वि० २४२८२

ललितापूजनविधि

लि०—श्लोक सं० ५००। —अ० व० १०४५०

ललितापूजा

लि०—उमानन्दनाथ कृत। श्लोक सं० लगभग ४००, पूर्ण। —सं० वि० २४०४५

ललितारहस्य

लि०—श्लोक सं० लगभग ७०, पूर्ण। इसमें वीरतन्त्र के चतुर्दश पटलस्थ भद्रकाली-प्रयोग भी संनिविष्ट है। —सं० वि० २५७५१

ललितार्चनचन्द्रिका

लि०—(१) सच्चिदानन्दनाथ अथवा सुन्दराचार्य कृत यह ग्रन्थ २५ प्रकाशों में पूर्ण है। इसकी श्लोक सं० ५००० है। जालन्धर पीठ पर शिष्यों की प्रार्थना से ग्रन्थकार ने सबको सुखप्रदायक चन्द्रिका (ललितार्चनयुक्त) का निर्माण किया जिसके अवलम्बन से वे देवी के चरणयुगल का अर्चन कर नित्य धाम को प्राप्त हों।

इसमें प्रतिपादित विषय हैं—प्रातःकाल निष्क्रमण विधि, तान्त्रिक स्नान, सन्ध्या-वन्दन, सूर्यार्घ्यदान द्वारा पूजा आदि की विधि, पूजा प्रारंभ, भूतशुद्धि, प्राण-प्रतिष्ठा, मातृकान्यास, षड्विंश तत्त्वन्यास, श्रीचक्रन्यास आदि न्यासविधियाँ, करशुद्धि, मूलविद्या, महाषोढा न्यास, मुद्राविचार, पात्रासादन, आत्मपूजा, दूतीयजन, पञ्चायतन-पूजा आदि की विधि। —ने० द० ११९७

(२) ललितादेवी के पूजन के विषय में यह चन्द्रिका रूप प्रकाश डालने वाला ग्रन्थ है। पन्ने २२५। —बी० कै० १२८६

(३) सच्चिदानन्दनाथ कृत, श्लोक सं० लगभग २००, अपूर्ण।—सं० वि० २६०५६

(४) —रा० सो० ब० ८७०

उ०—सेतुबन्ध में।

ललितार्चनचन्द्रिकारहस्य

लि०—श्लोक सं० २५००, अपूर्ण। —अ० ब० १२०४६

ललितार्चनदीपिका

लि०—श्लोक सं० २५०। —अ० ब० १०४५८

ललितार्चनपद्धति

लि०—(१) इसमें ललिता देवी की पूजाविधि प्रतिपादित है।

—ए० बं० ६३७९

(२) श्लोक सं० ३५००, प्रकाशानन्दनाथ (?) विरचित, पूर्ण।—अ० ब० ५७९०

(३) श्लोक सं० २५००, पूर्ण, सच्चिदानन्दनाथ विरचित।

—अ० ब० ३५३८

(४) (क) श्लोक सं० २५०। (ख) श्लोक सं० ६००। (ग) श्लोक सं० ६००।

—अ० ब० (क) ३४९१, (ख) १०३०१ (ख), (ग) १०३०४(ख)

(५) स्वयं प्रकाशानन्दनाथ-शिष्य चिदानन्दनाथ विरचित, यह ग्रन्थ पूर्व और उत्तर दो परिच्छेदों में विभक्त है। इसमें ललिता देवी की पूजाविधि वर्णित है। ग्रन्थकार ने ग्रन्थ की समाप्ति में स्वयं कहा है—'श्रीचिदानन्दनाथेन कृतायां देशिकाज्ञया। ललितार्चनपद्धत्यां परिच्छेदस्तथोत्तरः।' —म० द० ५७१६

ललितार्चनविधि (१)

लि०—भासुरानन्दनाथ विरचित। (क) श्लोक सं० २८००। (ख) श्लोक सं० २८००। (ग) श्लोक सं० ४०० (कादिमत के अनुसार)।

—अ० ब० (क) २४२२, (ख) ११४०७, (ग) ८९१५

ललितार्चनविधि

लि०—निरञ्जनानन्दनाथ विरचित, श्लोक सं० १३२५, पूर्ण।

—सं० वि० २४८०१

ललिताविलास

उ०—कुलप्रदीप में।

ललितासपर्यापद्धति

लि०—इसमें ललिता देवी की पूजापद्धति प्रतिपादित है।

—बीं० कै० १२८८

ललितासहस्रनाम (सटीक)

लि०—(१) ब्रह्मपुराण के अन्तर्गत। इसका एक संस्करण निर्णय सागर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हो चुका है। इस पर भास्करराय की व्याख्या है। —ए० बं० ६६६६

(२) ललितासहस्रनाम की श्लोक सं० २३१ है। पूर्ण।

—डे० का० (१८८२-८३ई०)

ललितासहस्राक्षरीमन्त्र

लि०—श्रीपुराण से गृहीत, श्लोक सं० १००। —अ० ब० १०७४२

ललितास्तवरत्न

लि०—दुर्वासा विरचित, रा० ला० १५०९ और म० द० १०८२७-२८ में भी इसका निरूपण है। —ए० बं० ६६७५

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

ललितास्वच्छन्द

(अन्यान्य तान्त्रिक ग्रन्थों सहित)

लि०—पूर्ण। —डे० का० १७) (१८८३-८४ ई०

ललितोपाख्यान (१)

लि०—ब्रह्माण्डपुराण से गृहीत, अपूर्ण। —रा० पु० ७०५४

ललितोपाख्यान (२)

लि०—महालक्ष्मीतन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० ५४०, पूर्ण। लिपिकाल १८४७ वि०।

—सं० वि० २५०८८

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

लवणमन्त्रप्रयोगविधि

लि०—गणेशनाथ विरचित, श्लोक सं० ३२५, पूर्ण। लिपिकाल १९७१ वि०।

—सं० वि० २३९४२

लिङ्गागम

उ०—कुलप्रदीप तथा आगमतत्त्वविलास में।

लिङ्गार्चनचन्द्रिका

लि०—(१) सदाशिव दशपुत्र विरचित, श्लोक सं० २५००। —अ० ब० ५५९१

(२) विष्णु-पौत्र गदाधर-पुत्र सदाशिव दशपुत्र विरचित, श्लोक सं० ३३३२। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—प्रमाणों द्वारा शिवजी की श्रेष्ठता का प्रतिपादन, मूर्ति के

भेद से देवता की मन्त्रव्यवस्था कथन, शिव के अतिरिक्त अन्य देवताओं के भजन में दोष कथन, शिव-पूजा का माहात्म्य-प्रतिपादन, लिङ्ग-माहात्म्य, पद्मराग, काश्मीर, पुष्पराग, तथा विद्रुमादिमय लिङ्गों की पूजा का भिन्न-भिन्न फल कथन, पारद, बाण, हैम आदि लिङ्गों की क्रमशः ब्राह्मण आदि के लिए मङ्गलप्रदता कथन, अधिकारी भेद से अन्य प्रकार के लिङ्गों की आवश्यकता का निरूपण, कलियुग में पार्थिव लिङ्ग की प्रधानता, भिन्न-भिन्न कामनाओं से लिङ्गपूजा में विशेष कथन आदि । —रा० ला० १९४४

लिङ्गार्चनतन्त्र

लि०—(१) शिव-पार्वती संवादरूप यह मूल तन्त्र १८ पटलों में पूर्ण है। इसमें शिवजी ने देवी पार्वतीजी से शिवलिङ्ग की महिमा, पूजा-फल, पूजा न करने में प्रत्यवाय आदि तथा पार्थिव लिङ्ग के भेद आदि विविध विषय कहे हैं। पुष्पिका में यह ज्ञानप्रकाश के नाम से भी अभिहित हुआ है। संभवतः इसका नामान्तर ज्ञानप्रकाश हो। जैसे—इति लिङ्गार्चनतन्त्रे ज्ञानप्रकाशे देवीश्वरसंवादे अष्टादशः पटलः।

—क० का० ८३

(२) केवल २ य पटल तक, अपूर्ण। —बं० प० ५७०

(३) इसमें शिवलिङ्गपूजा तथा उसके उपकरणों का वर्णन है। यह १८ पटलों में पूर्ण है। —ए० बं० ६०२२

(४) इस प्रति में १७ पटल हैं।

—ने० द० २।३४० (ग)

(५) (क) श्लोक सं० लगभग ६६०, पूर्ण।

—सं० वि० २४८०१

सर्वोल्लासतन्त्र के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

(६) शिव-पार्वती संवादरूप इस प्रति में १००० श्लोक और १८ पटल हैं। मुख्य रूप से लिङ्गार्चनविधि तथा लिङ्गपूजा-माहात्म्य इसमें वर्णित हैं। पटलों में प्रतिपादित विषयों की सूची यों है —सब पूजाओं के पूर्व शिवलिङ्ग-पूजा की व्यवस्था, शिवलिङ्ग-पूजन आदि की विधि, भस्मादि के धारण की विधि, पूजाङ्ग की ध्यान आदि की विधि, पूजा के आधार मण्डल, यन्त्र आदि का वर्णन, उलूकोपाख्यान, अष्टमूर्ति आदि की पूजाविधि, भ्रामरी शक्ति का माहात्म्य आदि, षोडश उपचारों का निर्देश, प्रलय आदि काल में पूजा की व्यवस्था, बिल्वपत्र से लिङ्गपूजा की विधि आदि। —रा० ला० २८८

लोपामुद्रासंहिता

लि०—वार्तालितन्त्रान्तर्गत । श्लोक सं० ५९ ।

—अ० ब० १०२११ (ग)

वंशकवच

—बं० प० ४३३ (क)

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, पूर्ण ।

वक्रतुण्डकल्प

उ०—मन्त्रमहार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में ।

वक्रतुण्डगणेशपटल

—सं० वि० २६३०४

लि०—श्लोक सं० लगभग ८०, पूर्ण ।

वक्रतुण्डपञ्चाङ्ग

लि०—(१) विश्वसारतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक सं० ३९४, पूर्ण । इसका गणेश-पञ्चाङ्ग नामान्तर है ।

—र० मं० ४८२१

(२) विश्वसारतन्त्र से गृहीत ।

—कैट्. कैट्. २।१२९

वगलाक्रमकल्पवल्ली

लि०—रेणुकापुरवासी अनन्तदेव विरचित । इसमें उपासक के प्रातःकृत्यों के साथ वगलामुखी की पूजा-प्रक्रिया प्रतिपादित है। यह ग्रन्थ तीन स्तवकों में पूर्ण है।

—ए० बं० ६३९०

वगलापञ्चाङ्ग

—सं० वि० २४१२८

लि०—श्लोक सं० लगभग १४५, पूर्ण ।

वगलापटल

लि०—(१) इसमें संक्षेपतः वगलामुखी की पूजाप्रक्रिया प्रदर्शित है। प्रतीत होता है कि इसका निर्माण कृष्णानन्द रचित तन्त्रसार के आधार पर हुआ है।

—ए० बं० ६३९७

(२) श्लोक सं० ७८, इसमें वगला के मन्त्र और पूजन-प्रकार प्रतिपादित हैं।

—रा० ला० ४६४

(३) श्लोक सं० ७०, पूर्ण ।

—सं० वि० २६२११

वगलामुखी

लि०—श्लोक सं० ५००, अपूर्ण। —अ० ब० १०८२२

वगलामुखीकवच

लि०—रुद्रयामल और जयद्रथयामल के अन्तर्गत, पूर्ण।

—बं० प० ८०१

वगलामुखीक्रम

लि०—श्लोक सं० ९१, अपूर्ण। —सं० वि० २५०८४

वगलामुखीजपविधि

लि०—श्लोक सं० ५७, अपूर्ण। —सं० वि० २६३६०

वगलामुखीदीपदान

रुद्रयामल के अन्तर्गत, शिव-पावती संवादरूप इसमें वगलामुखी देवी के लिए प्रज्वलित दीपदानविधि प्रतिपादित है। बी० कं० १३१७

वगलामुखीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) (क) वगलामुखी पटल (ईश्वरमततन्त्र के अन्तर्गत)।

(ख) ,, नित्यपूजा।

(ग) ,, त्रैलोक्यविजयनामक कवच, रुद्रयामलतन्त्र से गृहीत।

(घ) ,, सहस्रनाम, ईश्वरमततन्त्र से गृहीत।

(ङ) ,, स्तोत्र।

—ए० ब० ६३९१

(२) श्लोक सं० ४१६, ईश्वरयामल और रुद्रयामल के अन्तर्गत, पूर्ण।

—र० मं० ४८५१

(३) रुद्रयामलान्तर्गत वगलामुखी कवच; श्लोक सं० २४। महाभय या विपत्ति प्राप्त होने पर जो भक्तिपूर्वक इसका स्वयं पाठ करता है या अन्य द्वारा पाठ कराता है उसकी सकल मनोकामनाएँ सिद्ध हो जाती हैं और संकट मिट जाते हैं। मन्त्र आदि द्वारा आत्मरक्षण ही इसका मुख्य विषय है। —रा० ला० ४३७

(४) रुद्रयामलान्तर्गत श्लोक सं० १५६७, पूर्ण।

—सं० वि० २४२०५

वगलामुखीपद्धति (१)

लि०—(१) सन्तों के हित तथा आततायियों के स्तम्भन के लिए वगलामुखी देवी की पूजा-प्रक्रिया इसमें वर्णित है। —ए० बं० ६३९५

(२) सर्वागमसारान्तर्गत शिव-पार्वती संवादरूप। वगलामुखी देवी की पूजा-प्रक्रिया तथा विविध प्रकार के स्तम्भन इसमें प्रतिपादित हैं। —बी० कै० १३६४

(३) श्लोक सं० लगभग ८०, पूर्ण। —सं० वि० २५७२३

वगलामुखीपद्धति (२)

लि०—अनन्तदेव विरचित। श्लोक सं० ८८२, पूर्ण। —सं० वि० २५१५३

वगलामुखीपरिच्छेद

लि०—श्लोक सं० लगभग ७०, पूर्ण। —सं० वि० २५०८५

वगलामुखीपूजनपद्धति

लि०—आगमसारान्तर्गत। श्लोक सं० १६५, अपूर्ण। —सं० वि० २३९९३

वगलामुखीपूजापद्धति

लि०—श्लोक सं० ४००। —अ० ब० १०६८०

वगलामुखीपूजाप्रयोग

लि०—श्लोक सं० लगभग १००, अपूर्ण। —सं० वि० २६४६०

वगलामुखीप्रयोग

लि०—(क) श्लोक सं० लगभग ४५, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग ४५, पूर्ण।
—सं० वि० (क) २५७३४, (ख) २६१२६

वगलामुखीमन्त्र

लि०—(क) श्लोक सं० लगभग १०, पूर्ण। (ख) कालीनाथ कृत, श्लोक सं० लगभग ९, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० लगभग २०, अपूर्ण (?)।
—सं० वि० (क) २४१४४, (ख) २४४६६, (ग) २५१६५

वगलामुखीमन्त्रप्रयोग

लि०—श्लोक सं० लगभग ११०, अपूर्ण। —सं० वि० २४३८०

वगलामुखीमूलविद्याविधि

लि०—श्लोक सं० १२०, अपूर्ण; इसमें यन्त्र-पूजा भी संनिविष्ट है।

—सं० वि० २६२७५

वगलामुखीयन्त्रमन्त्रप्रयोग

लि०—संमिलित श्लोक सं० लगभग ३०। अश्वारूढामन्त्रप्रयोग के साथ संबद्ध।

—सं० वि० २३८९०

वगलामुखीविधान

लि०—श्लोक सं० लगभग ७८, पूर्ण। पीठपूजन, न्यास, यन्त्रविधि तथा मन्त्र सहित।

—सं० वि० २५५१३

वगलामुखीसाधन

लि०—श्लोक सं० लगभग १००, पूर्ण। —सं० वि० २४९२४

वगलारहस्य

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० ६००।

—अ० ब० १०६६१

(२) (क) श्लोक सं० लगभग ६९६, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग २१२, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २४९६४, (ख) २४९६५

वगलार्चनपद्दी

लि०—राधवानन्दनाथ विरचित। श्लोक सं० ४००। —अ० ब० १३९९

वज्रपञ्जरकवच

लि०—कालीकल्प से गृहीत, श्लोक सं० २५। —अ० ब० ३४३०

वज्रपञ्जरसूर्यकवच

लि०—रुद्रयामल के अन्तर्गत देवीरहस्यस्थ।

ए० बं० ६७८६

वज्रयोगिनीमिश्रसंग्रह

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

वडवानलहनुमन्मालामन्त्र

लि०—श्लोक सं० ४०। —अ० ब० ५७३०

वनदुर्गाकल्प

लि०—(१) गुह-अगस्त्य संवादरूप। इसमें १६ पटल हैं। वनदुर्गा के यन्त्र, मन्त्र, मन्त्रोद्धार, पूजाविधि आदि का प्रतिपादन है।

—ए० बं० ६०६७

(२) गुह-अगस्त्य संवादरूप। इसमें अगस्त्य मुनि के इस प्रश्न पर कि वनदुर्गा का क्या रूप है, कौन अंग हैं, उनके मन्त्र का उद्धार कैसा है और उसका विनियोग किस प्रकार का है? गुह ने उनका समाधान किया है। इसकी श्लोक सं० ११०० और पटल सं० १५ है।

—ट्रि० कै० १०२५ (क)

वनदुर्गापूजा

लि०—(१) मार्कण्डेयपुराण के अनुसार इसमें वनदुर्गा की पूजाविधि प्रतिपादित है। श्लोक सं० १२०।

—अ० ब० १०३८३ (घ)

(२) छाग-बलिदानविधि के साथ श्लोक सं० लगभग ६५ पूर्ण।

—सं० वि० २५००१

वनदुर्गाप्रयोग

लि०—श्लोक सं० ७९७, पूर्ण।

—डे० का० १७ (१८८३–८४ ई०)

वनभोजनविधि

लि०—भारद्वाजसंहिता के अन्तर्गत। भारद्वाजसंहिता का ३५ वाँ अध्याय पूरा वन-भोजन-विधि रूप है। इसमें विशेष-विशेष तिथियों में स्त्री, बालक और बृद्धों के साथ गृहस्थ को आँवले, आम, बेल, पीपल, कदम्ब, वट आदि वृक्षों से परिवृत वन में प्रवेश कर पुण्याहवाचन पूर्वक आँवले के तले ब्राह्मण-भोजन कराकर स्वयं भोजन करना चाहिए, यों वन-भोजनविधि वर्णित है।

—म० द० ५८०२

वरणविद्यान्यास

लि०—महाषोढान्यास तथा षोडशमूल विद्यान्यास के साथ श्लोक सं० लगभग १४४, पूर्ण।

—सं० वि० २५९३१

वरदगणेशपञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामल के अन्तर्गत, पत्रे २६।

—रा० पु० ५१२९

(२) श्लोक सं० लगभग ४००, पूर्ण।

—सं० वि० २५९७५

वरदतन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से ।

वरदातन्त्र

लि०—पार्वती-ईश्वर संवादरूप इस तन्त्र में काली देवी कैसे वरप्रदा होती है ? पार्वतीजी के इस प्रश्न पर शिवजी का उत्तर प्रतिपादित है। इसमें ८ पटल हैं। उनके विषय हैं—१. काली-मन्त्र और दक्षिणा विद्या के मन्त्रों का वर्णन, २. शाक्तों की दैनिक चर्या, ३. कलियुग में काली-पुरश्चरण की प्रशंसा, ४. कालीपुरश्चरण का समय निरूपण, ५. राज्यलाभ के लिए कालिका के त्र्यक्षर मन्त्र का साधन, ६. योनिमुद्रा कथन, ७. गुरु-पूजादिविधि, ८. कालिका-मन्त्र का काल और मन्त्रगुण कथन।

—रा० ला० २२८

उ०—सर्वोल्लास में।

वरिवस्यातिरहस्य (सटीक)

लि०—श्लोक सं० लगभग १२६०, सुरा (भासुरा?) नन्दनाथ कृत, अपूर्ण।

—सं० वि० २५५०६

वरिवस्याप्रकाश

भास्करराय विरचित।

लि०—वरिवस्यारहस्य की टीका वरिवस्याप्रकाश या प्रकाश, भास्करराय कृत।

—कैट्. कैट्. १।५५३

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

वरिवस्यारहस्य

लि०—(१) मूल तथा व्याख्या के रचयिता भास्करराय। इसके कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इसमें त्रिपुराषोडशाक्षरमन्त्र वर्णित है। —ए० बं० ६३४४

(२) भास्करराय उर्फ भासुरानन्दनाथ कृत मूल तथा टीका।

(क) श्लोक सं० १३२०। (ख) श्लोक सं० १३२०।

—अ० ब० (क) ५५८७, (ख) ६२४० (घ)

(३) तान्त्रिक पूजा रहस्य का प्रतिपादक यह ग्रन्थ नरसिंहानन्दनाथ के शिष्य भास्कर-राय उर्फ भासुरानन्दनाथ द्वारा विरचित है। इस पर प्रकाश नामक टीका भी उन्हीं की

रची हुई है। इसमें वामकेश्वरतन्त्र, योगिनी-हृदय आदि अनेक तन्त्रों से वाक्य उद्धृत किये गये हैं।

—क० का० ८५

(४) वरिवस्यारहस्य या त्रिपुरावरिवस्यारहस्य (सटीक)। इसमें त्रिपुरसुन्दरी के ध्यान, जप, पूजाविधि, मुद्रा, न्यास आदि प्रतिपादित हैं। इसमें लिखा है 'गोविन्दाश्रमपूज्यस्य कैवल्याश्रमसंज्ञकः। शिष्यस्तनोति त्रिपुरावरिवस्याविधिं बुधः॥'

—बी० कै० १३६७

[संभवतः यह दूसरा ग्रन्थ है]

(५) नरसिंहानन्दनाथ के शिष्य भास्करराय (नामान्तर भासुरानन्दनाथ) (इनके पिता का नाम गंभीरराय भारती था) कृत यह ग्रन्थ श्रीचक्र और श्रीविद्या की पूजा का प्रतिपादक है। इस पर इन्हीं की रची हुई, प्रकाश और वरिवस्या-प्रकाश नाम की टीका है। 'गुरुचरणसहायो भास्कररायो जगन्मातुः। वरिवस्यातिरहस्यं वीरनमस्यं प्रणिजगाद॥......उपदेष्टा जयतितरां नरसिंहानन्दनाथगुरुः।'

—म० द० ५७१७-१८

(६) भास्करराय कृत, श्लोक सं० १३८५, पूर्ण।

—डे० का० ७३४ (१८८३-८४ ई०)

(७) (क) भासुरानन्दनाथ विरचित, सटीक, श्लोक सं० ३२८४, पूर्ण।

(ख) नरसिंह-शिष्य भासुरानन्दनाथ विरचित सटीक, श्लोक सं० १८४०, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २५११९, (ख) २४९२०

—कैट्. कैट्. १।५५३

(८) भास्करराय विरचित।

वरुणपद्धति या वारुणपद्धति

लि०—नामान्तर—सिद्धान्तदीप है। यह तान्त्रिक उत्सवों की प्रतिपादक पद्धति है। (क) श्लोक सं० नहीं दी गयी है पन्ने २९९। (ख) पन्ने २६८ (१९ पन्ने कम हैं) अपूर्ण।

—तै० म० (क) ११३९८, (ख) ११३९९

उ०—शतरत्नसंग्रह में।

वर्णकोष

लि०—(१) मन्त्रोद्धार के लिए अकार आदि ५० वर्णों का यह कोष है।

—ए० बं० ६२९३

—सं० वि० २४०४६

(२) गोविन्दभट्ट विरचित, श्लोक सं० ११५, पूर्ण।

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

वर्णकोषवर्णन

लि०—भैरवयामल-पूर्वखण्डान्तर्गत। श्लोक सं० लगभग २०८, पूर्ण। लिपिकाल १९४५ वि०।

—सं० वि० २३८४७

वर्णचक्र

लि०—

—प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

वर्णभद्रकालीमन्त्र तथा मानसपूजास्तोत्र

लि०—अश्वारूढा-मन्त्रविधान के साथ श्लोक सं० लगभग १०२; अपूर्ण।

—सं० वि० २६३०८

वर्णभैरवतन्त्र

लि०—लक्ष्मीनारायण-पौत्र, रामनाथ-पुत्र रामगोपाल पञ्चानन विरचित। इसमें अकार से लेकर क्षकार तक के प्रत्येक वर्ण की उत्पत्ति, स्वरूप और माहात्म्य बतलाया गया है। यह ग्रन्थ ३९० श्लोकात्मक कहा गया है। —रा० ला० २००

वर्णमातृकान्यास

लि०—श्लोक सं० १००। —अ० ब० ८४३७

वर्णमाला

लि०—श्लोक सं० लगभग २५, अपूर्ण। —सं० वि० २४३६४

वर्णमालाजपप्रयोग

लि०—श्लोक सं० लगभग १५, पूर्ण। —सं० वि० २६४८८

वर्णविलास

उ०—मन्त्रमहार्णव तथा आगमतत्त्वविलास में।

वर्णाभिधान

लि०—(१) श्रीविनायक शर्मा द्वारा विरचित। इसमें अकारादि वर्णों (अक्षरों) के तान्त्रिक अर्थ दिये गये हैं तथा बहुत-से बीजमन्त्रों के नाम भी बतलाये गये हैं।

—ए० बं० ६२६३

(२) (क) श्लोक सं० ११२, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग ९६, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २३८७६, (ख) २४७३७

वर्णाभिधान

लि०——(१) यदुनन्दन भट्टाचार्य विरचित। रा० ला० ५६० तथा इ० आ० १०४६ में इसके रचयिता का नाम क्रमशः श्रीनन्दन भट्टाचार्य तथा श्रीनन्दनभट्ट बतलाया है। इसके कई संस्करण हो गये हैं। उनमें इसके कर्ता का नाम दिया है। तान्त्रिक टैक्स्ट VoL I कलकत्ता १९१३ के संस्करण की भूमिका में इसे रुद्रयामल के अन्तर्गत बतलाया है। इसकी श्लोक सं० १९० है।

——ए० बं० ६२६२

(२) श्रीनन्दन भट्टाचार्य विरचित। इसमें अकारादि वर्णों के अभिधान एवं अकार से लेकर क्षकार पर्यन्त वर्णों के विविध अर्थ प्रतिपादित हैं। श्लोक सं० १७८।

——रा० ला० ५६०

——इ० आ० १०४६

(३) श्रीनन्दनभट्ट विरचित।

(४) यदुनन्दनभट्ट विरचित, श्लोक सं० २००, प्रथम पाद मात्र।

——अ० ब० १०१८१

(५) यह वर्णों का कोष है। इसके रचयिता नन्दनभट्ट हैं।

——कैट्. कैट्. १।५५३

(६) श्लोक सं० ४०, पूर्ण। रुद्रयामल-वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत।

——सं० वि० २४७४५

वर्णोद्धार

उ०——मन्त्रमहार्णव में।

वशकार्यमञ्जरी

लि०——राजाराम तर्कवागीश भट्टाचार्य विरचित। इसका दूसरा नाम षट्कर्ममञ्जरी भी प्रतीत होता है। इसमें मन्त्रों की सहायता से शान्ति, वशीकरण, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन, मारण आदि षट्कर्मविधि वर्णित है।

——ए० बं० ६५५१

वशिष्ठतन्त्र

उ०——सौभाग्यभास्कर, ताराभक्तिसुधार्णव, शक्तिरत्नाकर तथा आगम-तत्त्व-विलास में।

वशिष्ठसंहिता

लि०——(१) श्लोक सं० ३७, पूर्ण।

——र० मं० ११७०

(२) गायत्रीकल्पान्तर्गत, श्लोक सं० १७००।

——अ० ब० १०६७२

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमकल्पलता, रघुनन्दन कृत तीर्थतत्त्व तथा दीक्षातत्त्व, सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी, आगमतत्त्वविलास तथा सौभाग्यभास्कर में।

वशीकरणतिलकविधान

लि०—श्लोक सं० लगभग ५, पूर्ण। —सं० वि० २४२६०

वशीकरणप्रयोग

लि०—(१) इसमें वशीकरण की विभिन्न क्रियाएँ वर्णित हैं।

—ए० बं० ६५५६

(२) श्लोक सं० १२, पूर्ण। —सं० वि० २५३८४

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

वशीकरणमन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० २५। —अ० ब० ११८७७

(२) (क) श्लोक सं० ३२, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३२, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४६९५, (ख) २६४४७

वशीकरणमन्त्रप्रयोग

लि०—(क) श्लोक सं० १२, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग ७५, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २५३८५, (ख) २६३०७

वशीकरणस्तोत्र

लि०—(१) यह वशीकरणोपायभूत स्तोत्र वाराही देवी के उद्देश्य से कहा गया है।

—ए० बं० ६७३०

(२) जगत् को वश में करने की उपायभूत वाराहीदेवी की स्तुति इसमें प्रतिपादित है। श्लोक सं० २५। —रा० ला० ३२४८

वशीकरणादिप्रयोग

लि०—श्लोक सं० १९०, अपूर्ण। —सं० वि० २५४०७

वशीकरणादिविधि

लि०—श्लोक सं० १३९। इसमें तन्त्रोक्त विधि से वशीकरण, उच्चाटन, मारण, स्तंभन, मोहन, विद्वेषण आदि के प्रकार प्रतिपादित हैं। —रा० ला० ४२४७

वश्याकर्षणादियन्त्र

लि०—श्लोक सं० ३०० (प्रयोग सहित), अपूर्ण। —अ० ब० १२३३१

वसन्तललितभैरवी

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

वसन्तललितायक्षिणीविधि

लि०—श्लोक सं० २२, पूर्ण। —सं० वि० २५८८८

वागीश्वरीकल्प

लि०—श्लोक सं० १३०। —अ० ब० १३४२२ (ङ)

वाङ्मयाकमल

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

वाञ्छाकल्पलता

लि०—(क) श्लोक सं० ३०० (गणेशविषयक ग्रन्थ)। (ख) श्लोक सं० २५। (ग) श्लोक सं० १००। (घ) श्लोक सं० १२५। (ङ) श्लोक सं० २००।
—अ० ब० (क) ५६०५, (ख) ५६८९, (ग) ८३३५, (घ) ११७२०, (ङ) ११७४६

वाञ्छाकल्पलताप्रयोग

लि०—(१) वुद्धिराज विरचित। श्लोक सं० २००। —अ० ब० ७५
(२) श्लोक सं० लगभग १७५, पूर्ण। —सं० वि० २६०१५

वाञ्छाकल्पलताविधि

लि०—श्लोक सं० १२००। —अ० ब० ५१५५

वाञ्छाकल्पलतासूक्तविवरण

लि०—गणपतिकल्पान्तर्गत २७ वाँ अध्याय। श्लोक सं० ५७।
—अ० ब० ८४१३ (क)

वाञ्छाकल्पलतोपस्थान

लि०—(१) श्लोक सं० २००। —अ० ब० ५६९१
(२) श्लोक सं० १३५, अपूर्ण। —सं० वि० २४३४२

वाञ्छाकल्पलतोपस्थानप्रयोग

लि०--व्रजराज-पुत्र बुद्धिराज विरचित, श्लोक सं० ७२, पूर्ण।

--र० मं० ४८८७

वाडवानलीय

उ०--पुरश्चर्यार्णव में।

वाणीविलास

उ०--कालिकासपर्याविधि में।

वातुलनाथसूत्र (सवृत्ति)

लि०--मूल के रचयिता--वातुलनाथ। वृत्तिकार--अनन्तशक्तिपाद। श्लोक सं० २००। --अ० ब० १८४५

वातुलशुद्धागमसंहिता या वातुलशुद्धागम

लि०--(१) श्लोक सं० ४००, अपूर्ण। --अ० ६८२७ (क)

(२) (क) शिवानुभवसूत्र अधिकरण १ से ८ तक। यह उत्तर तन्त्र से शुरू है।

(ख) पटल १ से १० तक, सदाशिव-षण्मुख संवादरूप।

--तै० म० (क) ३६५०

वातुलशुद्धि

उ०--सौभाग्यभास्कर में।

वातुलसूत्र (सवृत्ति)

लि०--(१) वृत्तिकार--नूतनशङ्कर स्वामी। वृत्ति-नाम--विद्यापारिजात। श्लोक सं० १५०। --अ० ब० १२५३३

(२) वातुलसूत्र सटीक, पूर्ण।

--डे० का० ८ (१८७५--७६ ई०)

वातुलोत्तर

उ०--सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी, शारदातिलक की टीका राघवभट्टी, मायिदेवकृत अनुभवसूत्र, षट्स्थलब्रह्मनिर्णय तथा शतरत्न में।

वातुलागम

उ०--वीरशैवानन्दचन्द्रिका तथा शैवपरिभाषा (शिवाग्रयोगीन्द्रज्ञान कृत) में।

वामकेश्वरतन्त्र

लि०——(१) भैरव-भैरवी संवादरूप इस तन्त्र में ५५ पटल हैं। इसके नित्या-षोडशिकार्णव और योगिनीहृदय——दो भाग हैं। योगिनीहृदय पर पुण्यानन्द-शिष्य अमृतानन्दनाथ की (दीपिका) टीका[1] है। यह प्रिंस आफ वेल्स सरस्वती भवन सीरीज से पृथक् (दीपिका के साथ) छप चुका है। नित्याषोडशिकार्णव भी भास्करराय की टीका के साथ आनन्दाश्रम सं० सीरीज में छप गया है। इसमें चक्रसंकेत, मन्त्रसंकेत, पूजासंकेत, अभिषेक, पूर्ण अभिषेक, यन्त्र आदि विविध विषयों का उल्लेख है।

——ए० बं० ५९४२

(२) वामकेश्वर टिप्पन, इसके मङ्गलाचरण में त्रिपुरा के मन्त्रों के प्रभाव की तुलना सूर्य, चन्द्र और अग्नि से की गयी है। ——ने० द० २।३८० (क)

(३) श्लोक सं० ३७६। लिपिकाल १५९३ वि०। ——अ० ब० १०४३०

(४) (क) श्लोक सं० २५६, पटल १ म से ५ म तक, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३६० पटल १म से ५ म तक, पूर्ण। नित्याषोडशिकार्णवान्तर्गत। (ग) श्लोक सं० २७२, अपूर्ण।

(घ) श्लोक सं० २४८, अपूर्ण। (ङ) श्लोक सं० ११२, अपूर्ण।

——सं० वि० (क) २४०१०, (ख) २४०११, (ग) २४६६६१, (घ) २४६६२, (ङ) २५४८३

(५) यह मौलिक तन्त्र है। इसमें तान्त्रिक पूजाविधियाँ, उत्सव आदि प्रतिपादित हैं।

——बी० कै० १३६५

उ०——तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमकल्पलता, आनन्दलहरी की टीका तत्त्वबोधिनी तथा सर्वोल्लास में।

वामकेश्वरतन्त्रटिप्पणी

लि०——(१) टिप्पणी का नाम——अर्थरत्नावली, विद्यानन्द विरचित, श्लोक सं० १६००। लिपिकाल १६२३ वि०। ——अ० ब० ३४४३

(२) वामकेश्वरतन्त्र-व्याख्या (अर्थरत्नावली), श्लोक सं० ६५०, अपूर्ण। रत्नेश-शिष्य विमलस्वात्मशंभु विरचित। उन्होंने लिखा है——"तं रत्नेशं गुरुं भजे।" एवम्

१. नोट——नित्याषोडशिकार्णव पर भी अमृतानन्दनाथ की टीका है। टीका का नाम चन्द्रसंकेत है। वह बीकानेर में है। द्रष्टव्य, न्यू कैट्. कैट्. १।२६३।

"सम्प्रदायद्वयज्ञेन विमलस्वात्मशंभुना। क्रियते टिप्पणं सम्यग्वामकेश्वरशास्त्रके ॥"

—ट्रि० कै० १०४१ (ख)

(३) वामकेश्वरतन्त्र-विवरण—जयद्रथ विरचित श्लोक सं० ७२५।

—डे० का० २५३ (१८८३-८४ ई०)

(४) (क) वामकेश्वरतन्त्रदर्पण विद्यानन्दनाथ विरचित।
(ख) वामकेश्वरतन्त्रटीका मुकुन्दलाल कृत।
(ग) ,, सदानन्द कृत।
(घ) ,, जयद्रथ कृत। —कैट्. कैट्. १।५६३

वामकेश्वरपञ्चाङ्ग

लि०—विश्वसारतन्त्रान्तर्गत, पत्रे ५०, श्लोक सं० ६५०, पूर्ण।

—र० मं० ४८२४

वामकेश्वरीपूजापद्धति

लि०— —ने० द० १।४९

वामकेश्वरीमतटिप्पन

लि०—विस्मृति हो जाने के भय या आशङ्का से वामकेश्वरीमत पर यह विषम टिप्पणी लिखी गयी है। यह ५ पटलों तक ही है। त्रिपुराप्रयोग, मुद्रापटल, बीजत्रयसाधन, त्रिपुरा-होमविधि आदि विषय इसमें वर्णित है।

—ने० द० १।१५५९ (ट) तथा २३८० (क)

वामकेश्वरीस्तुति-न्यास-पूजाविधि

लि०—(१) वामकेश्वरीस्तुति, इसके कर्ता हैं महाराजाधिराज विद्याधर चक्रवर्ती वत्सराज।

(२) न्यास-विधि।
(३) पूजा-विधि। —ने० द० १।१०७७ (घ)

वामजुष्ट

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी में।

वामदेवसंहिता

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

वामपूजाविधान

लि०—वामाचार दृष्टिकोण के अनुसार शक्ति की पूजा इसमें वर्णित है।
—म० द० ५७१९

वामाचारमतखण्डन

लि०—(१) श्लोक सं० २०६, पूर्ण। —सं० वि० २४४६९

(२) भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथभट्ट कृत। इस ग्रन्थ में वामाचार द्विजों के लिए कदापि पालनीय (सेव्य) नहीं है अपितु शूद्रों को ही इसका पालन करना चाहिए, यह सिद्ध करने के लिए आकर ग्रन्थों के प्रमाण वचन उद्धृत किये गये हैं।
—ए० बं० ६४४६

(३) श्लोक सं० २०६, पूर्ण। —सं० वि० २४४६९

वामाचारसिद्धान्त

लि०—विश्वेश्वर-पुत्र महेश्वराचार्य विरचित। इसमें कुलधर्मों के अनभिज्ञ शिष्य के लिए कुलधर्म-पद्धति प्रदर्शित की गयी है।
—म० द० ५७२१

वामाचारसिद्धान्तसंग्रह

लि०—ब्रह्मानन्दनाथ विरचित। भडोपनामक काशीनाथ ने वामाचारमतखण्डन नाम का जो ग्रन्थ वामाचारखण्डन के विषय में लिखा है उसका खण्डन करते हुए वामाचार-सिद्धान्त की पुष्टि इसमें की गयी है।
—म० द० ५७२०

वाराहकल्प

लि०—श्लोक सं० ५७, अपूर्ण। —सं० वि० २६२७३

वाराहीकल्प

लि०—कुष्ठकल्प तथा स्वर्णकल्प सहित, श्लोक सं० १६०, पूर्ण। —सं० वि० २५४१६

वाराहीक्रम

लि०—श्लोक सं० ३५, पूर्ण। —सं० वि० २५२५४

वाराहीतन्त्र (१)

लि०—(१) गुह्यकालिका-चण्डभैरव संवादरूप यह तन्त्र ३६ पटलों में पूर्ण है। इसमें वाराही, महाकाली आदि देवी देवताओं के ध्यान, जप, पूजन, होम, आसन, साधन आदि विषय वर्णित हैं। यह तन्त्र दक्षिणाम्नाय से संबद्ध है। —ने० द० २।३१५ (क)

(२) यह मूलभूत तन्त्रों में अन्यतम है और ५० पटलों में पूर्ण है। इसकी श्लोक सं० २५४५ है। इसमें आगम, यामल, कल्प और तन्त्रों की संख्या और उनके अवान्तर भेद, प्रत्येक की श्लोक संख्या, आगम, यामल, कल्प और तन्त्रों के लक्षण, दीक्षाविधि, अकडमहर चक्र, कौलचक्र, कामनाभेद से भिन्न-भिन्न देवताओं के मंत्र-जप आदि का कथन, कलियुग में शक्तिमन्त्र की प्रधानता कथन, मन्त्रोद्धारविधि, वैष्णव और शैवों के भेद से मन्त्रों में प्रणव आदि जोड़ने का नियम,मन्त्रों की बाल्य,यौवन आदि अवस्थाओं का निरूपण,गृहस्थ और यतियों के लिए मन्त्रों की विशेष व्यवस्था, उपांशु और मानस के भेद से दो प्रकार के जप का वर्णन, जपविधि, स्तोत्र आदि के पाठ की विधि, विविध देव देवियों की पूजा, के मन्त्र, न्यास, स्तोत्र आदि, पीठ और उपपीठों के माहात्म्य आदि विषय वर्णित हैं।

—रा० ला० २४८१

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमकल्पलता, सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी, सौभाग्यभास्कर, तारारहस्यवृत्ति, आगमतत्त्वविलास तथा सर्वोल्लास में।

वाराहीतन्त्र (२)

लि०—(१) श्रीकृष्ण-राधिका संवादरूप इस तन्त्र में ५०० श्लोक और आठ पटल हैं। इन ८ पटलों में ये विषय प्रतिपादित हैं—श्रीकृष्ण से राधा के गोपकुलवास आदि के विषय में विविध प्रश्न और उनका उत्तर, ब्रह्मशिला आदि तथा ब्रह्मलिङ्ग आदि का तत्त्व कथन, सिद्धि के स्थान आदि का विशेष रूप से निर्णय, पञ्च कुण्डों से युक्त स्थान आदि का कथन, चन्द्रशेखर,महादेव की अवस्था आदि का निरूपण, चम्पकारण्य आदि का वर्णन, चण्डीस्तोत्र की एकावृत्ति पाठ आदि का कथन।

(२) (क) श्लोक सं० ४६३१, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ५०८, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २३९१६, (ख) २४७१५

वाराहीविधान

लि०—श्लोक सं० ३०, पूर्ण। —सं० वि० २५३१८

वाराहीसंहिता

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

वाराहीसहस्रनाम

लि०—उड्डामर तन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक सं० ११४, पूर्ण। —र० मं० ४४७६

वाराह्यादितन्त्र

लि०—केवल १७ यन्त्र, पन्ने १७। —अ० व० १२२८७

वारुणपूजा तथा वारुणयागविधि

लि०—नन्दिकेश्वरमतान्तर्गत प्रतिष्ठामन्त्रस्थ।
—ने० द० ११६३३ (ख), ११६३३ (घ)

वासुदेवरहस्य

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

वासुरीकल्प

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

वास्तुपूजन

लि०—श्लोक सं० १००। —अ० व० १४६८

वास्तुवेधटीका

लि०—श्रीकण्ठाचार्य विरचित, श्लोक सं० ७००। —अ० व० १२९८५

वास्तुशान्ति

लि०—श्लोक सं० ११००। वासनाविधि पर्यन्त। —अ० व० ७०८६

विजयबलिकल्प

लि०—श्लोक सं० १०७५। भगवान् शिव के लिए बलि देने की विधि इसमें वर्णित है। —ट्रि० कै० १०२६ (क)

विजययन्त्रकल्प

लि०—आदिपुराण से गृहीत, श्लोक सं० ३६०
—डे० का० १८ (१८८३-८४ ई०)

विजयाकल्प

लि०—इसमें विद्याधिष्ठात्री वाग्वादिनी या सरस्वती देवी, जो दुर्गाजी की पुत्री कही गयी है, की पूजा-अर्चा आदि साङ्गोपाङ्ग (मन्त्र, जप, ध्यान आदि के साथ) वर्णित है। —बी० कै० १३६९

उ०—तन्त्रसार तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

विजयागम

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह अष्टादश (१८) रुद्रागमों में अन्यतम है।

विजयामालिनीतन्त्र

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

विजयायन्त्रकल्प

आदिपुराण से गृहीत। श्लोक सं० ३६०। —डे० का० (१८८३-८४ ई०)

विज्ञानभट्टारक

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल तथा प्रत्यभिज्ञाहृदय में।

विज्ञानभैरव या विज्ञानभट्टारक

लि०—(१) रुद्रयामल के अन्तर्गत। यह रुद्रयामल से गृहीत लघु तन्त्र ज्ञानप्रतिपादक है। —नें० द० २।२४६ (डी)

(२) अपूर्ण। —डे० का० ४९० (१८७५-७६ ई०)

(३) श्लोक सं० १८९, पूर्ण। —डे० का० २४२ (१८८३-८४ ई०)

(४) सटीक। मूलकार क्षेमराज, टीकाकार शिवोपाध्याय, टीका नाम उद्योत-संग्रह, श्लोक सं० १४४०। —अ० ब० १२४४२

उ०—योगिनीहृदयदीपिका, आगमकल्पलता, महार्थमञ्जरी-परिमल, स्पन्दप्रदीपिका, शिवसूत्रविमर्शिनी तथा प्रत्यभिज्ञाहृदय में।

विज्ञानलतिका

उ०—आगमतत्त्वविलास में।

विज्ञानललित

उ०—आगमकल्पलता में।

विज्ञानेश्वर

उ०—आगमकल्पलता में।

विज्ञानोद्योत

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

विद्याकल्पसूत्र

लि०---भगवत्परशुराम मुनि प्रोक्त, श्लोक सं० ११२६, इसमें श्रीविद्यादीक्षा, पूजन आदि विषय वर्णित हैं।
---रा० ला० १४६७

विद्यागणेशपद्धति

लि०---प्रकाशानन्दनाथ विरचित, (क) श्लोक सं० ४००। (ख) श्लोक सं० ४००।
---अ० ब० (क) ५५७५, (ख) ५६७४

विद्यागोपालमन्त्र

लि०---श्लोक सं० ८।
---अ० ब० १३८६७

विद्याधिपति

उ०---स्पन्दप्रदीपिका में।

विद्यापीठ

लि०---गुह्यकाली के विषय में ३ परिच्छेदों का ग्रन्थ है।
---ने० द० १।१६९३ (घ)

विद्यामाहात्म्य

लि०---श्लोक सं० ४०, दक्षिणकालिका का जो स्मरण करता है उसके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है, यों आद्या विद्या का माहात्म्य इसमें प्रतिपादित है।
---रा० ला० ३३६

विद्यारत्नसूत्र

गौड़पाद कृत।

उ०---सौभाग्यभास्कर में।

विद्यारत्नसूत्रदीपिका

लि०---विद्यारण्य विरचित, श्लोक सं० ३८० पूर्ण।
---सं० वि० २५६५८

विद्यार्चनचन्द्रिका

लि०---नृसिंह ठक्कुर विरचित। श्लोक सं० २०००।
---अ० ब० ८३२४

विद्यार्णव

लि०---(१) श्रीशङ्कराचार्यजी के चार शिष्यों में अन्यतम विष्णु शर्मा के शिष्य प्रगल्भाचार्य द्वारा देवभूपाल की प्रार्थना पर निर्मित। इसमें ११ आश्वास (अध्याय) हैं। इसमें बहुत-सी शक्ति देवियों की पूजाविधियाँ वर्णित हैं।
---ए० बं० ६२०६

(२) विष्णुशर्माचार्य-शिष्य प्रगल्भाचार्य विरचित, श्लोक सं० ८१३+४५, पूर्ण।
—र० मं० ४९०६

विद्यार्णवतन्त्र

लि०—विद्यारण्यपति विरचित, (क) श्लोक सं० नहीं दी गयी है। पन्ने ४०८, १ म भाग एवं, (ख) पन्ने ६३३, २ य भाग।
—जं० का० (क) १०७७, (ख) १०७८

विद्यार्थप्रकाशिका

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्द्धिनी में।

विद्युमत

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

विद्युल्लेखा

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

विद्योत्पत्ति

लि०—इसमें कालिका, छिन्नमस्ता आदि विद्याओं की उत्पत्ति कही गयी है। इसकी श्लोक सं० १३८ है।
—रा० ला० ४४८

विद्योत्पत्तिविधि

लि०—श्लोक सं० ११२। इसमें नाना विद्याओं की उत्पत्ति कही गयी है।
—रा० ला० ३३४

विधानमाला

लि०—श्लोक सं० २५० (१६ वीं शताब्दी में लिखित)।
—अ० ब० ७२३५

विधानमुक्तावली

उ०—रुद्रयामलमतोत्सव में।

विनायकशान्तिपद्धति

लि०—श्लोक सं० १०००।
—अ. ब. ८९५३

विनायकसंहिता

लि०--भार्गव-ईश्वर संवादरूप इस तन्त्र में विनायक-मन्त्रों द्वारा स्तंभन, मोहन, मारण, उच्चाटन आदि तान्त्रिक षट्कर्मों की सिद्धि कही गयी है। यह आठ पटलों में पूर्ण है।
--ए० बं० ६०८८

उ०--आगमतत्त्वविलास में।

विपरीतप्रत्यङ्गिरा

लि०--महामहोपाध्याय श्रीमहादेव वेदान्तवागीश द्वारा संगृहीत। यह ७० लाख श्लोकात्मक सुरतन्त्र में निर्दिष्ट है। कालिका की प्रलयकालीन मूर्ति के ध्यान, पूजा-पद्धति आदि विषय इसमें निर्दिष्ट हैं। विपरीत महाकाली सब प्राणियों को भयभीत करती है। उसकी चर्चा से भी तीनों लोक काँप उठते हैं।
--रा० ला० ९९७

विपरीतप्रत्यङ्गिराप्रयोग

लि०--(क) श्लोक सं० ७५, पूर्ण। भैरवतन्त्रान्तर्गत, इसमें दुर्गापूजाप्रयोग भी संमिलित है। (ख) भैरवतन्त्रान्तर्गत श्लोक सं० ४०, पूर्ण।
--सं० वि० (क) २४५६२, (ख) २५३१३

विभूतिदर्पण

लि०--श्लोक सं० ५००।
--अ० ब० १६९५

विमर्शदीपिका

विज्ञान भैरव टीका, शिव उपाध्याय कृत।
--मुद्रित।

विमर्शिनी

(तन्त्रसमुच्चय-व्याख्या)

लि०--(क) श्लोक सं० १५००, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३५०, १म से ७म तक ७ पटल पूरे, ८ वाँ आरंभ है। --अ० ब० (क) ७८८७(ख), (ख) ७८७६

विमलागम

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) आगमों में अन्यतम है।

विमलातन्त्र

लि०—हर-गौरी संवादरूप यह ७ पटलों में पूर्ण है। इसमें वीरों का नित्य कृत्य वर्णित है। ७ पटलों की विषय सूची यों दी गयी है—१. ग्राम्यव्यवहार से स्वकीय स्त्री द्वारा शक्ति साधना, २. परकीय स्त्री द्वारा शक्ति साधना, ३. योगाचार कथन, ४. गौरी-स्तवक्रम के सम्बन्ध में प्रश्न और उत्तर, ५. प्रचण्डचण्डिका-कवच ६. कुलाचार के विषय में प्रश्नोत्तर, ७. कुलाचारविवेक। —रा० ला० २३०

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव, तारारहस्यवृत्ति तथा कालिकासपर्याविधि में।

विमलावती

लि०—पूजाविधि, होमविधि, पवित्रविधि, दामनविधि, दीक्षाविधि, प्रतिष्ठाविधि आदि विषय इसमें वर्णित हैं। —ने० द० १।१५३६ (ड)

विरूपाक्षपञ्चाशिका

लि०—(१) श्लोक सं० ५०, स्कन्ध ८। —अ० ब० १८१८

(२) श्लोक सं० ६९, पूर्ण। —सं० वि० २५५५९

उ०—सौभाग्यभास्कर तथा महार्थमञ्जरी-परिमल में।

विलोममातृकाकवच

लि०—पूर्ण। —बं० प० १४१५

विवेकाञ्जन

भास्कराचार्य (?) कृत।

उ०—भट्ट दिवाकर वत्स कृत। ईश्वरप्रत्याभिज्ञाविमर्शिनी में अभिनव गुप्त ने इसका उल्लेख किया है। —कैट. कैट. १।५८१

विंशत्यङ्कत्रिवर्गयन्त्रनिरूपण

लि०—श्लोक सं० १००। —अ० ब० ७१७१

विशुद्धेश्वरतन्त्र

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, तारारहस्यवृत्ति तथा आगमतत्त्वविलास में।

विशेषदीक्षाविधि

लि०—क्रियाक्रमद्योतिका के अन्तर्गत अघोर शिवाचार्य विरचित, (क) श्लोक सं० ५००। (ख) श्लोक सं० ५००। —अ० ब० (क) ७९५८, (ख) ७९७४

विश्वसार

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमतत्त्वविलास, कालिकासपर्याविधि, शतरत्नसंग्रह तथा सर्वोल्लास में।

विश्वसारतन्त्र

लि०—(१) महाकाल विरचित यह सब तन्त्रों का सारभूत महातन्त्र है। इसकी श्लोक सं० ५१०८ है। ८ पटलों में यह पूर्ण है। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—आगमनाम-निरुक्ति, माया (मूल प्रकृति) का माहात्म्य, सृष्टि, महामाया की प्रसन्नता से हरि, हर आदि सबकी प्रसन्नता, विन्दु और नाद का स्वरूप, पीठपूजा का प्रकार, योगलक्षण आदि, गुरु-शिष्य-लक्षण, षोडश मातृकाएँ, विविध चक्रों का वर्णन, दीक्षा-भेद वर्णन पूर्वक दीक्षाविधि, गुरु और शिष्य के कर्तव्य, विद्याकथन, गायत्रीकथन, गायत्री-बीजकथन, पुरश्चरण, छिन्न-मस्तामन्त्र, प्रचण्डचण्डिकास्तोत्र, मद्य, मांस आदि का बलिदान पूर्वक रजस्वला के नानाविध साधनाओं का विधान, कालिकार्चनविधि, दुर्गामन्त्रकथन गुह्यकालिका के बीजमन्त्र कथन आदि, महिषमर्दिनी, त्रिपुरसुन्दरी के बीजमंत्र आदि तथा पूजोपयोगी द्रव्यों का निरूपण आदि।

—रा० ला० ३१९२

(२) (क) पत्रे १२५, पूर्ण। (ख) पत्रे ५८, अपूर्ण। (ग) पत्रे २३, अपूर्ण। (घ) पत्रे ५७, अपूर्ण।

—वं० प० (क) १२९९, (ख) १३००. (ग) १३०१, (घ) १४१२

विश्वसारोत्तरतन्त्र

—वं० प० ७७०

लि०—उत्तरखण्ड, केवल ११ पटल, पूर्ण।

उ०—शतरत्नसंग्रह में।

विश्वरूपनिबन्ध

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

विश्वसंहिता

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

विश्वकर्मासिद्धान्त

उ०—आगमकल्पलता में।

विश्वाद्य

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों में अन्यतम है।

विश्वामित्रकल्प

लि०—(१) इसमें द्विजों के दैनिक कृत्यों का वर्णन है। भूतशुद्धि, गायत्री-मन्त्र की दीक्षा तथा पुरश्चरण का प्रतिपादन है। —ए० बं० ६०६२

(२) श्लोक सं० १६००, इसमें द्विजों के दैनिक कृत्यों का वर्णन प्रातः काल उठकर आत्मचिन्तन का प्रकार, देवता ध्यान की रीति, दन्तधावनादि प्रातःकृत्य, स्नानविधि, रुद्राक्ष-धारण, भूतशुद्धि आदि का प्रकार, त्रिकाल सन्ध्याविधि, वेदादि मन्त्र पाठरूप ब्रह्मयज्ञ-विधि, अन्नशुद्धि आदि के प्रकार, प्रस्तुतान्न होम प्रकार रूप वैश्वदेव विधि, गोग्रास आदि, भोजनविधि, भक्ष्य पदार्थों की विधि, अभक्ष्य पदार्थों का निषेध, दीक्षा के लिए वेदी का निर्माण, दीक्षाप्रकार, गायत्री के पुरश्चरण की विधि, नित्य कर्तव्य कर्मों की विधि, गायत्री-मन्त्र से होमविधि का कथन आदि विषय वर्णित हैं। —रा० ला० ८८५

(३) (क) श्लोक सं० ५४। यह २ य अध्याय के अन्त से आरंभ होता है ४ र्थ अध्याय के अन्त तक है। (ख) श्लोक सं० १५००। (ग) श्लोक सं० ७५०।

—अ० ब० (क) १३३६२ (ढ), (ख) १०६६६, (ग) १०६९२

विश्वामित्रसंहिता

लि०—(१) श्लोक सं० २८००। —अ० ब० ६६४०

(२) यह गायत्री-मन्त्र-प्रयोग और माहत्म्य का प्रतिपादक ग्रन्थ है। इसमें १मसे १२ वें तक १२ अध्याय पूर्ण हैं और १३ वाँ अधूरा है। —म० द० ४५११, ४५१२

(३) श्लोक सं० लगभग ३६२, अपूर्ण। —सं० वि० २५५५८

विश्वालयैकतन्त्र

लि०—श्लोक सं० १२० (?) पूर्ण। यह १९ पटलों में पूर्ण है।

—र० मं० ५२९८

विश्वावसुगन्धर्वमन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० २०। —अ० ब० १३८४९

(२) श्लोक सं० २८, सम्पूर्ण। इसका नाम "विश्वावसुगन्धर्वमन्त्रविधि" है।

—र० मं० ११७८

(३) श्लोक सं० २५, पूर्ण। —सं० वि० २५१३२

विश्वावसुगन्धर्वमन्त्रविधि

लि०—श्लोक सं० ३०, अपूर्ण। —सं० वि० २६५६६

विश्वावसुगन्धर्वराजतन्त्र

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक सं० ४२५, पूर्ण। —सं० वि० २५४६१

विषयपञ्चिका

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

विष्णुकल्पलता

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

विष्णुपूजापद्धति

लि०—चैतन्यगिरि कृत। रचनाकाल सं० १७७९ वि०।
—कैट्. कैट्. १।५९१, २।१४०

विष्णुयामल (ज्योत्स्नाटीकासहित)

लि०—(१) (क) सबसे अधिक श्रेष्ठ महादेव को उमा के साथ प्रणाम कर सब लोगों के हितार्थ मैं विष्णुयामल का वर्णन करता हूँ। पुराने समय में नारदजी के पूछने पर महादेवजी ने सब दोषों की निवृत्ति करने वाला और सब पुरुषार्थों का साधन तथा परम रहस्य यह विष्णुयामल तन्त्र कहा। इसके प्रथम भाग में परशुदान विधि वर्णित है। (ख) ऊपर लिखी प्रति की ही यह नूतन प्रतिलिपि है। —तै० म० (क) ६५०, (ख) ६५१

(२) विष्णुयामले गायत्र्यष्टोत्तरसहस्रनाम।
—कैट्. कैट्. १।५९२, ३।१२४

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव, सर्वोल्लास तथा स्पन्दप्रदीपिका में। इनके अतिरिक्त रुद्रयामलतन्त्र, प्राणतोषिणी तथा आचारार्क में भी इसका उल्लेख है।

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

विष्णुरहस्य

लि०—शौनक आदि ऋषि और सूत संवादरूप, श्लोक सं० ३८२८, अध्याय ६०। इसका आरम्भ इस प्रकार है—'यतो भूतानि जायन्ते यत्र तिष्ठन्ति तान्युत। यो हन्ति

मोक्षदस्तेषां तं विष्णुं प्रणमाम्यहम् ।। नैमिषे निमिषक्षेत्रे ऋषयः शौनकादयः । दीक्षिता वैष्णवे यज्ञे सूतं पप्रच्छुरादरात् ।।' —तैं० म० १७७१

उ०—सौभाग्यभास्कर तथा प्राणतोषिणी में।

विष्णुसहस्रनाम

लि०—कुलानन्द-संहिता में भैरव-भरवी संवादरूप। यह प्रसिद्ध विष्णुसहस्रनाम, जो महाभारतान्तर्गत है, से भिन्न है। —ए० बं० ६७५८

विष्वक्सेनसंहिता

लि०— —कैट्. कैट्. १।५९४

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

विसर-आगम

श्रीकंठी के मतानुसार यह अष्टादश (१८) रुद्रागमों के अन्तर्गत है।

विहगेन्द्रसंहिता

(पञ्चरात्र)

लि०—(१) यह वैष्णव पूजा तथा तान्त्रिक षट्कर्म—वशीकरण, स्तंभन, मारण, मोहन आदि पर है। (क) सुदर्शनकल्प २२ पटलों में श्लोक सं० १२५०। (ख) परमेश्वर-क्रियापाद तथा सुदर्शनकल्प। —तैं० मं० (क) १७४१, (ख) ११४२०

(२) —कैट्. कैट्. १।५९४, २।१४१

वीणाजुष्ट

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी में।

वीणातन्त्र

उ०—आक्सफोर्ड १०९ (क) में इसका उल्लेख है। —कैट्. कट्. १।५९४

वीरकल्प

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

वीरकाम्यार्चनविधि

लि०—श्लोक सं० ७५, पूर्ण। —सं० वि० २४८४३

वीरचूड़ामणि

लि०--(१) श्लोक सं० ८००, पटल सं० ११; पूर्ण।

--र० मं० ४८६४ (क)

--कैट्. कैट्. २।१४१

(२) पटल १ से ११ तक।

उ०--ताराभक्तिसुधार्णव में।

वीरतन्त्र (१)

लि०-(१) इसमें १४ पटल हैं, परन्तु रा० ला० २२९ में इसके १५ पटल कहे गये हैं। इसमें सपर्यापटल, पुरश्चरणपटल, कामनाविधिपटल, सिद्धविद्यापटल, आचारपटल, कालिकापटल आदि विषय वर्णित हैं।

--ए० बं० ५९२५, ६१४६

(२) ब्रह्मा-विष्णु संवादरूप, इसमें छिन्नमस्ता की पूजा वर्णित है। इसके विषय है--मन्त्र-माहात्म्य का कथन, करन्यास और अङ्गन्यास का निरूपण, १६ प्रकार के न्यासोंका वर्णन, छिन्नमस्ता की पूजाविधि, जप आदि का प्रतिपादन, छिन्नमस्तास्तोत्र तथा च्छिन्नमस्तापटल आदि।

--ने० द० २।२४६ (च)

(३) यह १५ पटलों में पूर्ण है। इसमें प्रतिपादित विषय हैं--गुरुरहस्य, ताराप्रकरण, मन्त्रोद्धार, पूजा-क्रम, पुरश्चरणविधि काम्यकर्म का निर्णय, दक्षिणकालिकाप्रकरण, गुप्तविद्यारहस्य। व्यस्तसमस्तादि कथन, निग्रहकथन, महावीरक्रम, महाविद्यानुष्ठान, उग्रचण्डाप्रकरण, मन्त्रकोषादि कथन तथा रोग आदि का प्रतीकार।

--रा० ला० २२९

--बं० प० १४०९

(४) १३ पटल तक पूर्ण।

(५)

--कैट्. कैट्. १।५९४, १।१२५

उ०--ताराभक्तिसुधार्णव, श्यामारहस्य, तन्त्रसार, शक्तिरत्नाकर, आगमतत्त्वविलास, ताराहस्यवृत्ति तथा श्यामारहस्य में।

वीरतन्त्र (२)

लि०--हर-गौरी संवादरूप, श्लोक सं० ४२०; इसमें वशीकरण, उच्चाटन, मोहन, स्तंभन, शान्तिक, पौष्टिकादि विविध उपाय कहे गये हैं। (यह पूर्व वर्णित वीरतन्त्र से भिन्न है)

--रा० ला० २६८

वीरतन्त्र (३)

लि०---ब्रह्म-विष्णु संवादरूप इस तन्त्र में छिन्नमस्ता देवी की भोग-मोक्षप्रद पूजाविधि, छिन्नमस्तामन्त्र, मन्त्रोद्धार, ध्यान, आवाहन आदि तथा कवच वर्णित है। मन्त्र-माहात्म्य, करन्यास, अङ्गन्यास, छिन्नमस्ता-पूजा, जप आदि कथन, छिन्नमस्तापटल तथा ब्रह्मप्रोक्त छिन्नमस्तास्तोत्र। —ने० द० २।१२५

वीरतन्त्रयामल

उ०---प्राणतोषिणी तथा शिवराज कृत विज्ञानभैरव-टीका में।

वीरतन्त्रसारसंग्रह

उ०---पुरश्चर्यार्णव में।

वीरभद्रतन्त्र

लि०---(१) शिव-पार्वती संवादरूप। यह उड्डीशकोषशास्त्र तथा उड्डीशमन्त्रसार भी कहा गया है। (देखिए, ए० बं० ५८३९, ४०) इसमें मन्त्र, यन्त्र आदि बहुत वर्णित हैं। --ए० बं० ५८३६

(२) पार्वती-ईश्वर संवादरूप। इसमें ४ पटल हैं। उनमें प्रतिपादित विषय हैं—भूतों का आकर्षण, मोहन आदि, विशोषण आदि, उच्चाटन, स्तंभन, वशीकरण आदि। —नो० सं० १।३३९

(३) १७ पटल पर्यन्त, पूर्ण। --बं० प० १३९०

(४) --कैट्. कैट्. १।५९४, २।१४१, ३।१२५

(५) श्लोक सं० २५१, पूर्ण। —सं० वि० २४६०५

उ०---मन्त्रमहार्णव, आगमतत्त्वविलास तथा प्राणतोषिणी में।

वीरभद्रतन्त्रोक्तप्रयोग

लि०---शिव-शिवा संवादरूप। इसमें बहुत-से मन्त्र, जिनका प्रयोग इन्द्रजाल आदिमें होता है, हिन्दी में वर्णित हैं। उक्त मन्त्र वीरभद्रतन्त्र से लिये गये हैं। —ए० बं० ६२८३

वीरभद्रमहातन्त्र

लि०---श्लोक सं० ३३६, पूर्ण। --सं० वि० २५३२५

वीरभद्रवाडवानलमन्त्र

लि०---शिवागमसार से गृहीत, श्लोक सं० ५०। —अ० ब० १३८५४

वीरभद्रागम

श्रीकण्ठी के अनुसार यह अष्टादश (१८) रुद्रागमों के अन्तर्गत है।

वीरभद्रकालीकवच

लि०—इसमें वीरभद्रतन्त्रान्तर्गत कालीकवच प्रतिपादित है। —वी० कै० १३७०

वीरभद्रयामल

—प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

लि०—

वीरभद्रोड्डीश

उ०—मन्त्रमहार्णव तथा सर्वोल्लास में।

वीरबाहुमन्त्र आदि

लि०—श्लोक सं० ८७५। इसमें वीरभद्रमन्त्र, बालास्तव और गरुडकवच है। —अ० ब० ७०६१

वीरयामल

उ०—विज्ञानभैरवटीका शिव उपाध्याय कृत में।

वीररात्र्यादिनिर्णय

लि०—श्लोक सं० १५, अपूर्ण। —सं० वि० २६०९६

वीरसाधन

लि०—(क) श्लोक सं० ४२, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ५८, चितासाधन भी इसमें संनिविष्ट है। पूर्ण। —सं० वि० (क) २४०६६, (ख) २४६९८

वीरसाधनविधि

लि०—श्लोक सं० ७८, पूर्ण। —सं० वि० २६१३६

वीरसाधनाविधि

लि०—नृसिंह ठक्कुर कृत। श्लोक सं० १४८, पूर्ण। —सं० वि० २५०९५

वीरागम

लि०—(१) मुद्रा और न्यास पर। पटल सं० १ से २५ तक। नवीन, अतिशुद्ध परन्तु खण्डित (अपूर्ण)। —तै० म० ६७२१

(२) द्रष्टव्य, वीरशैवागम । —कैट्. कैट्. १।५९६, २।१४२

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा वीरशैवानन्दचन्द्रिका में।

वीरातन्त्र

उ०—तन्त्रसार में।

वीरावली

उ०—तन्त्रालोक की टीका जयरथी में।

वीरेन्द्रकल्प

लि०—श्लोक सं० ३६, अपूर्ण। —सं० वि० २४५२२

वीरेश्वरसंवाद

लि०—(१) स्कन्द-पुराणकाशीखण्डान्तर्गत। वीरेश्वर शिवजी के पूजन, व्रत आदि पर यह ग्रन्थ है। पुत्रकामना से स्त्रियाँ इनकी पूजा, व्रत आदि करती हैं।

—क० का० ८४

(२) स्कन्दपुराण-काशीखण्ड से गृहीत (अध्याय ८२,८३)।

—कैट्. कैट्. ३।१२५

वृद्धगौतमतन्त्र

लि०—श्लोक सं० लगभग १४०४, अपूर्ण। —सं० वि० २३९५१

वृन्दावनरहस्य

लि०—श्लोक सं० २११। —अ० ब० १२९००

वृषसारसंग्रह

लि०—यह शैव तन्त्रग्रन्थ है। —ने० द० १।३६ (ग)

वेतालकल्प

लि०— —कैट्. कैट्. २।१४४

वेतालतन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

वेदपारायणविधि

लि०—(१) श्लोक सं० ३०। —अ० ब० १२९२

(२) महार्णव से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।६०४

वेदरहस्य

उ०—योगिनीहृदयदीपिका में।

वैखानसतन्त्र

लि०—(१) मरीचि विरचित। पटल १म से ५० तक। महामुनिश्रेष्ठ मरीचि जब स्वशिष्यों द्वारा बिछाये गये आसन पर विराजमान थे नाना लोक निवासी श्रेष्ठ-श्रेष्ठ ऋषियों ने उनके निकट आ उन्हें प्रणाम कर पूछा—'भगवन्, किन मन्त्रों से किस देव की पूजा कर रहे लोग स्वकीय लोक को जाते हैं?' मरीचि ने उत्तर दिया 'मानव प्रसन्न परमात्मा नारायण का ध्यान कर, उनका अभिवादन कर वैदिक मन्त्रों द्वारा भगवान् की पूजा करे, ऐसा करने से परमधाम की प्राप्ति होती है।' —तै० म० ३६५२

(२) —कैट्. कैट्. १।६१०

वैखानसागम

लि०—(१) भृगुद्वारा प्रोक्त, (क) यज्ञाधिकार। श्लोक सं० २४६०। इसमें भगवान् विष्णु के यज्ञ, पूजन आदि का विशद रूप से प्रतिपादन किया गया है। यह ग्रन्थ ४९ अध्यायों में पूर्ण है।

(ख) क्रियाधिकार, श्लोक सं० ३६९०, अध्याय सं० ३५। इसमें भगवान् की प्रतिमा-प्रतिष्ठा तथा पूजा की विधि वर्णित है।

(ग) यज्ञाधिकार, नित्याग्निकार्य विशेष श्लोक सं० ६२८०। इसमें ४८ अध्याय हैं।

(घ) श्लोक सं० २३६०, अर्चनाधिकार इसमें ३८ अध्याय हैं।

—ट्रि० कै० (क) १०३७, (ख) १०३८, (ग) १०३९, (घ) १०४०

(२) —कैट्. कैट्. १।६१०

उ०—परशुरामप्रकाश में।

वैदिकतान्त्रिकाधिकारनिर्णय

लि०—भडोपनामक दक्षिणाचारमतप्रवर्तक काशीनाथ विरचित। इसमें उपासकों या पूजकों की रुचि के अनुसार उनके वैदिक, तान्त्रिक, वैदिकतान्त्रिक, तान्त्रिक-वैदिक आदि विभिन्न भेद दिखलाये गये हैं। —ए० बं० ६२२५

—अ० ब० १०१९३

वैदिकसर्वस्व

लि०—कृष्णानन्द विरचित। श्लोक सं० १०००।

वैवस्वततन्त्र

(युगलाष्टकस्तोत्र मात्र)

लि०—पूर्ण । —वं० प० १०१७

वैशम्पायनसंहिता

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमकल्पलता, तन्त्रसार, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, आगमतत्त्वविलास तथा ललितार्चनचन्द्रिका में।

वैश्वानरतन्त्र

उ०—मन्त्रमहार्णव में ।

वैष्णवतान्त्रिकपूजा

श्रीकृष्णपूजापद्धति सहित

लि०—पूर्ण । —वं० प० १३८

वैनायकसंहिता

लि०—महेश्वर-भार्गव संवादरूप। श्लोक सं० २२०। इसमें हरिद्रागणपतिप्रयोग, तत्सम्बन्धी मन्त्र तथा यन्त्रों के निर्माण का प्रकार प्रतिपादित है। यह सम्पूर्ण ग्रन्थ ८ पटलों में विभक्त है । —ट्रि० कै० १०४१ (क)

वैष्णवपूजाध्यानादि

लि०—श्लोक सं० ६७५०। इसमें वैष्णव और शैव पूजापद्धतियों का स्पष्टीकरण किया गया है । —ट्रि० कै० १०४३ (क)

वैष्णवरहस्य

लि०—यह ग्रन्थ ४ प्रकाशों में पूर्ण है। इसमें नामोपदेश, गुरुपद का आश्रय, आराध्य का निर्णय, साध्य के साधन का निरूपण आदि विषय वर्णित हैं। ग्रन्थकार ने लिखा है—

गुरुणा कथितं यद् यद् रहस्यं वैष्णवान्वये ।
तदेव लिखितं किञ्चित् न तु स्वमतिवैभवात् ।।

—नो० सं० १।३४४

वैष्णवामृत

लि०—भोलानाथ शर्मा द्वारा विरचित, श्लोक सं० १५७२। गुरु बनाने की आवश्यकता, सद्गुरु का लक्षण, निषिद्ध गुरु का लक्षण, गुरुशब्द की व्युत्पत्ति, शिष्य का लक्षण,

दीक्षा के अधिकारी का निर्णय, मन्त्र शब्द तथा दीक्षा शब्द की व्युत्पत्ति, दीक्षा अवश्य लेनी चाहिए यह कथन, आगम शब्द का अर्थ, नक्षत्र, राशिचक्र आदि का विचार, वैरी मन्त्र के परित्याग का प्रकार, दीक्षा में मास, तिथि, वार आदि का कथन, जपमाला का निर्णय आदि, जपसंख्या गणना करने में विहित और अविहित द्रव्य आदि का निर्देश, विष्णुपूजा-विधि, विष्णु-पूजा में दिशा का निर्णय, माला के संस्कार की विधि, आसनभेद, हरिनाम-ग्रहण की विधि, विष्णु-मन्त्रोपदेश, वैष्णवों की षट्कर्मविधि का निर्देश इत्यादि विषय प्रतिपादित हैं। —रा० ला० ५६३

वैष्णवामृतसंग्रह

लि०—प्राणकृष्ण विरचित। श्लोक सं० २११०, पूर्ण। लिपिकाल १७४८ शकाब्द।
—सं० वि० २४४१४

वैष्णवीकल्प

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

वैष्णवीसंहिता

उ०—आगमकल्पलता में।

वैहायसीमन्त्रकोष

उ०—शारदातिलक की टीका राघवभट्टी में।

व्यावहारिक प्रज्ञापत्रिका

लि०—श्लोक सं० ११। इसमें श्रीचक्र के निर्माण की विधि प्रदर्शित है।
—अ० व० ६१९२

व्योमकेशसंहिता

उ०—श्यामापूजाव्यवस्था में।

शकुन

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ६७५, पूर्ण। —र० मं० ४०४१

शक्तिकागमसर्वस्व या शक्तयागमसर्वस्व

लि०—योनिकवचमात्र, पूर्ण। —बं० प० ५२०

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

शक्तिचक्रतन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों में अन्यतम है।

शक्तितन्त्र

लि०——(१) पार्वती-ईश्वर संवादरूप, श्लोक सं० ३०६। यह अपूर्ण (५ म पटल तक) है। इसमें वर्णित विषय हैं——महाकाली के अंश से जगत् की उत्पत्ति, परा, पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी शक्तियों का निरूपण, दुर्गादि नामों का माहात्म्य, त्रिशक्तिके १०० नाम, त्रिशक्ति-भेद कथन पूर्वक दुर्गा-मन्त्र निरूपण, षडङ्गन्यास आदि कथन, पुरश्चरणविधि, पूजा सामग्री-निरूपण, बलिदान योग्य पशु तथा पक्षियों का निरूपण, ध्यान, यन्त्र आदि, नव शक्तियों की पूजादि-विधि, भुवनेश्वरी आदि शक्तियों का वर्णन, भुवनेश्वरी, विपुला, शूलिनी, वज्रप्रस्तारिणी, नित्या, महिषमर्दिनी, शक्तिगायत्रीके मन्त्र, ध्यान आदि, त्रिपुराके मन्त्र, ध्यान आदि, पुरश्चरणविधि, पश्यन्ती शक्ति गणना आदि। ——रा० ला० २२०१

(२) पार्वती-ईश्वर संवादरूप यह तन्त्र १३ पटलों में पूर्ण है। इसमें सिद्धियोग कथन, आकर्षण, स्तंभन आदि कर्मों में ऋतुभेद, दिशा आदि का नियम, मारण आदि में माला-विधानकथन पूर्वक जपविधि, आसनादिविधि, शवसाधनविधि, कुलवृक्षादिविधि, दूती-यागविधि, संवित् और आसव की विधि, संवित् आदि के शोधन की विधि, पञ्चमकार-विधि, शक्ति का निरूपण, कुलीनों की पुरश्चरणविधि, कुमारीपूजनविधि, पञ्च मकार से अन्तर्यजन की विधि, शाक्ताभिषेकविधि आदि विषय वर्णित हैं।

——नो० सं० १।३४८

(३) चतुर्थ पटल मात्र, श्लोक सं० लगभग ९२; पूर्ण।

——सं० वि० २६४७५

उ०——आगमन्ततत्त्व विलास में।

शक्तिन्यास

लि०——(१) योगिनीमत से गृहीत, श्लोक सं० १६०। ——अ० ब० ८४९७

(२) इसमें देवी के मूल मन्त्र के पदों का उच्चारण करते हुए शरीर के विशेष-विशेष अवयवों की स्पर्शक्रिया, जो अङ्गन्यास नाम से प्रसिद्ध है, प्रतिपादित है।

——म० द० ५७२२

(३) श्लोक सं० लगभग १००, अपूर्ण। ——सं० वि० २६२३९

शक्तिपूजन

लि०—कादिमतानुसार, श्लोक सं० १४० । —अ० व० ७१५५

शक्तिपूजनविधि

लि०—रुद्रयामल से गृहीत, श्लोक सं० १०० । —अ० व० ९५८०

शक्तिपूजा

लि०—(१) यह शक्ति पूजा पर विविध तन्त्रों से संगृहीत है। —वी० कै० १३१९

(२) —कैट्. कैट्. १।६२३

शक्तिपूजातरङ्गिणी

लि०—काशीनाथ कृत, श्लोक सं० लगभग ८७, पूर्ण । —सं० वि० २५२९५

शक्तिपूजापटल

लि०—श्लोक सं० ६२; पूर्ण । —सं० वि० २६४२३

शक्तिपूजापद्धति

लि०—श्लोक सं० लगभग ११५, शक्तिस्तोत्र के साथ । —सं० वि० २४५५२

शक्तिपूजाविधि

(१) देवीपूजाविधि आदि ७ पुस्तकें इसमें सन्निविष्ट हैं। सबकी संमिलित श्लोक सं० ६४०, पूर्ण । —सं०वि० २६२५४

शक्तिभैरवतन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी में ।

शक्तियामल

उ०—पुरश्चर्यार्णव, तारा भक्तिसुधार्णव, तन्त्रसार, रुद्रयामल, शक्तिरत्नाकर तथा शाक्तानन्द तरङ्गिणी में ।

शक्तिरत्नाकर

लि०—(१) राजकिशोर विरचित। यह ५ उल्लासों में पूर्ण है। शक्ति की महिमा, महाविद्याओं की सूची (तालिका) आदि विषय इसमें वर्णित है। —ए० बं० ६२१६

(२) यह ५ उल्लासों में पूर्ण है। इसकी श्लोक सं० ९३६ कही गयी है। उक्त पाँच उल्लासों में प्रतिपादित विषय यों हैं—१म में ब्रह्मनिरूपण, २य में दुर्गास्वरूपनिरूपण, ३य में भगवती के नाम का माहात्म्य, ४ र्थ में दुर्गाराधन-माहात्म्य, ५ म में श्रीविद्या और महाविद्या का निरूपण। —रा० ला० २४२

(३) शक्ति का प्रतिपादक यह ग्रन्थ देवीपुराण, कालिकापुराण, कूर्मपुराण, बृहत्स्वयंभू, मार्कण्डेय, स्कन्द आदि पुराणों तथा कुलचूड़ामणि, शक्तियामल, ज्ञानार्णव आदि तन्त्रों से संगृहीत है और ५ उल्लासों में पूर्ण है। —क० का० ९४

(४) —कैट्. कैट्. १।६२३

(५) प्रथम और द्वितीय उल्लास मात्र, श्लोक सं० लगभग ४००, अपूर्ण। —सं० वि० २६३८१

शक्तिरहस्य

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

शक्तिरहस्य (व्याख्यासहित)

लि०—व्याख्या का नाम—अर्थदीपिनी। व्याख्याकार—अरुणाचार्य, श्लोक सं० ५०००, (२०००+३०००) वैराग्यखण्ड और ज्ञानखण्ड मात्र। अ० ब० ९६५८ (क)

शक्तिसंगमतन्त्र

लि०—(१) यह अक्षोभ्य-महोग्रतारा (शिव-पार्वती) संवादरूप है। इसमें चार खण्ड हैं—(१) कालीखण्ड, (२) ताराखण्ड, (३) सुन्दरीखण्ड और (४) छिन्नमस्ताखण्ड। पूर्ण तन्त्र में ६०००० श्लोक हैं। इसके १ म और ३ य खण्ड में २०–२० पटल हैं एवं ४ थे खण्ड में ११ पटल और २ य खण्ड में ६५ पटलों का उल्लेख मिलता है। पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध भेद से इसके दो भाग हैं। पूर्वार्द्ध का नाम कादि और उत्तरार्द्ध का नाम आदि है। कादि में ४ खण्ड और हादि में ४ खण्ड। इस प्रकार इसके ८ खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड में तीन हजार छह सौ श्लोक हैं। —इ० आ० २५८९

(२) इसमें चार खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड का नाम स्पष्ट रूप से कहा नहीं गया है। ३ य खण्ड के १० और ११ वें पटलों की पुष्पिका में क्रमशः तपस्याखण्ड और कालीखण्ड नाम प्राप्त होते हैं। —ए० बं० ५९५१-५२ तथा ६१५९-६०

(३) अक्षोभ्य-तारा संवादरूप। (क) श्लोक सं० १८०० (१० म पटल पर्यन्त)। (ख) श्लोक सं० २००० (२० वें पटल तक)। (ग) श्लोक सं० ७००० (चारों खण्ड)। (घ) श्लोक सं० ७०० (६ पटल पूरे ७ वाँ आरंभ)।

अ० ब० (क) १३७६३, (ख) १३७६४, (ग) ५६०३, (घ) १०४१८

(४) १ म खण्ड के ९ वें पटल के कुछ अंश तक (८ पटल पूरे ९ वाँ अधूरा) अपूर्ण।

—बं० प० १२२८

(५) श्रीमदक्षोभ्य-तारा संवादरूप। इसमें ४ खण्ड हैं। १म खण्ड में २० पटल हैं। उनमें प्रतिपादित विषयों में मुख्य-मुख्य है—अकाराक्षर का तत्त्व कथन, भूगोल वर्णन, सत्य आदि युगों का निर्णय, देवीशक्ति आदि का अष्टगुण करण, पूजापात्र का निर्णय, ऋणी तथा वनी चक्रों का वर्णन, नाना देवताओं के नामों का विवरण, दीक्षा का विवरण, प्रदोष के समय करणीय कर्म, पूजा के द्रव्य आदि का निर्देश, साधक के पूर्णाभिषेक आदि का निरूपण, तारासिद्धिप्रयोग आदि।

२ य खण्ड में ६५ पटल मिलते हैं। उनमें प्रतिपादित विषय जैसे—तन्त्र आदि ग्रन्थों के नाम, उनकी श्लोक संख्या, षोडश महाविद्याओं का साधन प्रकार आदि, तन्त्रोक्त विधि से साधक के संस्कार, शाक्त आम्नाय आदि का कथन, काली-मन्त्र और उनके साधन का प्रकार, यक्षिणी, गन्धर्व आदि के समूह का कथन, महाविद्या की सिद्धि का प्रकार आदि। ३ य खण्ड का आदि भाग खण्डित है। २० पटलों में खण्ड की समाप्ति दिखलायी देती है।

—रा० ल० ४०५

(६) यह मौलिक तन्त्र शाक्त सम्प्रदाय के सब विषयों का साकल्येन प्रतिपादक है। यह ६०००० श्लोकात्मक कहा गया है। यह ४ खण्डों में विभक्त है। १ म खण्ड में २०, २ य में ६५, ३ य में १९ तथा ४ र्थ में ११ पटल हैं।

—बी० कै० १३२०

—जं० का० १०८०

(७) शिवप्रोक्त, पूर्ण।

(८) (क) श्लोक सं० १७३३, प्रथम खण्ड मात्र, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १५३०, पूर्ण (संभवतः यह द्वितीय खण्ड, तृतीय खण्ड या चतुर्थ खण्ड में कोई एक खण्ड होगा)। (ग) श्लोक सं० १२४८, पूर्ण। (घ) श्लोक सं० २०७९, पूर्ण। (ङ) श्लोक सं० १६३२, पूर्ण।

[यहाँ दी गयी श्लोक सं० पृथक्-पृथक् खण्डों की है, पूर्ण ग्रन्थ की नहीं]।

—सं० वि० (क) २३९३०, (ख) २३९३१, (ग) २४५२७, (घ) २४५३६, (ङ) २६१११

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा प्राणतोषिणी में।

शक्तिसंगमतन्त्रराज

लि०—श्लोक सं० लगभग २५२५; पूर्ण।

—सं० वि० २४९२७

शक्तिसिद्धान्तमञ्जरी

लि०—श्लोक सं० लगभग २००, पूर्ण। —सं० वि० २३९५७

शक्तिसूत्र (१)

नामान्तर—नित्यनैमित्तिकविधि।

लि०—इसमें शक्ति के उपासकों के दैनिक कृत्य वर्णित हैं।

—ने० द० १।६१९ (घ)

शक्तिसूत्र (प्रत्यभिज्ञाहृदय) (२)

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

शक्तिसूत्र (३)

अगस्त्य कृत। द्रष्टव्य, सरस्वती भवन स्टडीज खण्ड १०।

लि०—अगस्त्यकृत, श्लोक सं० ५४४ पूर्ण। —सं० वि० २६६७६

शक्त्यादिपञ्चतत्त्वनिरूपण

लि०—शारदातिलक का टिप्पण रूप। पूर्ण, श्लोक सं० लगभग १००।

—सं० वि० २६१४८

शतचण्डीपद्धति

लि०—(१) गोविन्द (कृत) सरलीकृत, (क) श्लोक सं० ११०० (१ म और २ य खण्ड)। (ख) श्लोक संख्या ११०० (१ म और २ य खण्ड) गोविन्द दशपुत्र कृत। (ग) श्लोक संख्या ११०० (१ म और २ य खण्ड) गोविन्द दशपुत्र कृत। (घ) श्लोक संख्या ५००।

—अ० ब० (क) १०५०, (ख) ५१५६, (ग) ५७९६, (घ) १०५५७

(२) श्लोक सं० ९२८, पूर्ण। —डे० का० ३९९ (१८८२-८३ ई०)।

(३) गोविन्द विरचित। —कैट्. कैट्. १।६३१, २।१४९, ३।१३१

शतचण्डीपूजन

लि०—श्लोक सं० ३२० । —अ० स० ७६४३

शतचण्डीप्रयोग

लि०—(१) चित्पावनकर नृसिंहभट्ट-पौत्र नारायणभट्ट-पुत्र श्रीकृष्णभट्ट विरचित। यह मन्त्रमहोदधि के १८ वें तरङ्ग से आरंभ होता है। —ए० वं० ६४०८

(२) (क) शिवराम विरचित, श्लोक सं० ७५ । अपूर्ण ।
(ख) श्लोक सं० ७५, अपूर्ण ।
—अ० व० (क) ९१२८, (ख) ८६३०

(३) मन्त्रमहोदधि के अन्तर्गत । नारायणभट्ट-पुत्र श्रीकृष्णभट्ट कृत, श्लोक सं० १७५, पूर्ण । —र० मं० ४६३४

(४) नारायणभट्ट-पुत्र कृष्णभट्ट विरचित । —कैट्. कैट्. २।१४९, ३।१३१

शतचण्डीविधान

लि०—(१) इसमें प्रतिपादित विषय ये हैं—चण्डिकातर्पण, सूर्यार्घ्यदान, वरुण, कलशस्थापन, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका, वहिर्मातृका, एकादश न्यास, गणपतिपीठ-स्थापन, पूजन, वलिदान, ग्रहपूजन, योगिनीपूजन, खातपूजन, कुण्डपूजा, योनिपूजन, योगिनियों के निमित्त वलिदान आदि । —इ० आ० २६१५

(२) (क) श्लोक सं० ४५०। (ख) श्लोक सं० ६००। (ग) श्लोक सं० ३५०। (घ) श्लोक सं० ४००। (ङ) श्लोक सं० ५००। (च) श्लोक सं० १२०, अपूर्ण। (छ) श्लोक सं० ३००। (ज) श्लोक सं० ४५०। (झ) श्लोक सं० २००।
—अ० व० (क) १२३४, (ख) २३९७, (ग) १२०१, (घ) ९२६, (ङ) ३४९६, (च) ३४९७, (छ) ३४९८, (ज) ९७६२, (झ) १०४६५

(३) अपूर्ण। सप्तशतीविधान से संनिविष्ट । —सं० वि० २५४०२

शतचण्डीविधानपूजापद्धति

—र० मं० ४७००

लि०—श्लोक सं० ३८५, सम्पूर्ण ।

शतचण्डीसहस्रचण्डीपद्धति

लि०--नरहरि-पुत्र सामराज विरचित, (क) श्लोक सं० १२००। (ख) श्लोक सं० १२००।

--अ० ब० (क) ९६५६, (ख) ५७९८

शतचण्डीसहस्रचण्डीप्रयोगपद्धति

लि०--अपूर्ण। --रा० पु० ७१२९

शतचण्डीहोमविधि

लि०--श्लोक सं० ९४, पूर्ण। --र० मं० ४७९६।

शतचण्ड्यादिप्रदीप

लि०--भारद्वाज महादेव-पुत्र दिवाकर सूरि विरचित। इसमें शतचण्डी तथा सहस्र-चण्डी आदि के सम्बन्ध में प्रमाण और प्रमेय का प्रतिपादन है, एवं रुद्रयामल आदि के अनुसार शतचण्डी नियम दिये गये हैं। --ए० बं० ६४०७

शतमङ्गला

लि०--श्लोक सं० १००। --अ० ब० ३५००

शतरत्नसंग्रह

उमापति शिवाचार्य (चिदम्बर के) कृत

यह मतङ्ग, मृगेन्द्र, किरण, देवीकालोत्तर, विश्वसार और ज्ञानोत्तर आगमों का सारसंग्रह रूप है। इस पर सद्योज्योति, रामकण्ठ, नारायण और अघोर शिवाचार्य की टीकाएँ हैं।

शताङ्क

नामान्तर--यन्त्रश्लोकव्याख्या।

लि०--श्रीहर्ष कृत, श्लोक सं० १५०। --अ० ब० ९०८६

शत्रुनिग्रहप्रयोग

लि०--(क) श्लोक सं० २०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १६, पूर्ण। (ग) पुरश्चरणविधि तथा शीतलाकवच के साथ संनिविष्ट। संमिलित श्लोक सं० १०८, पूर्ण।

--सं० वि० (क) २४५४१, (ख) २५७६९, (ग) २६४६१

शत्रुविमोचन नामक वगलामुखीकवच

लि०---रुद्रयामलान्तर्गत उमामहेश्वर संवादरूप। इसमें वगलामुखी के मन्त्रों से आत्मरक्षा प्रतिपादित है। देवी श्रीवगलामुखी के कवच पाठ से सब सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। श्लोक सं० २८।

---रा० ला० ९९०

शत्रूच्चाटनादिप्रयोग

लि०---उड्डामरतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० लगभग १०५, अपूर्ण।

---सं० वि० २४४९७

शनैश्चरकवच

लि०---दशरथ कृत यह स्तोत्र, जो शनि और दशरथ के संवादरूप में है, स्तोत्र-रत्नाकर में मुद्रित शनैश्चरस्तोत्र से मेल नहीं खाता। उसके अन्तिम अंश में यह दशरथ कृत वतलाया गया है।

---ए० बं० ६७८८

शब्दप्रकाश या दीपप्रकाशटिप्पन

लि०---(१) प्रेमनिधि शर्मा विरचित श्लोक सं० ३२१०। इसमें ग्रन्थकार ने स्वनिर्मित दीपप्रकाश में आये कठिन पदों का अर्थ स्पष्ट किया है।

---रा० ला० २०५६

(२) यह ग्रन्थकार द्वारा रचित स्वग्रन्थ दीपप्रकाश की टीका है।

---ए० बं० ५६११ (क)

शम्भु-ऐक्यदीपिका

उ०---महार्थमञ्जरी-परिमल में।

शम्भुनाथार्चन

लि०---शिव-पार्वती संवादरूप, श्लोक सं० ४०। इसमें महादेवजी के ध्यान, मन्त्र आदि प्रतिपादित हैं।

---रा० ला० ३६९

शय्याशुद्धि

लि०---श्लोक सं० लगभग २०, पूर्ण।

---सं० वि० २४५५८

शय्याशोधन

लि०---श्लोक सं० १६, पूर्ण।

---सं० वि० २४५४५

शय्यासाधन

लि०—श्लोक सं० लगभग ४४। इसमें त्रिपथ-साधन, चतुष्पथ-साधन, बिल्वमूल-साधन तथा त्रिमुण्डसाधन की विधि भी संनिविष्ट है। —सं० वि० २४७७८

शरन्निशा

(बृहत् टीका)

यह नारायण कण्ठ कृत है।

शरभकल्प

लि०—श्लोक सं० ४५०। —अ० ब० ९८२० (डी)

शरभकवच

लि०—(क) आकाशभैरव तन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक सं० ११०।
(ख) श्लोक सं० १०५। (ग) श्लोक सं० १४०, अपूर्ण।
(घ) श्लोक सं० ५०।
—अ० ब० (क) ५१५७, (ख) ८१५९, (ग) ५७३८, (घ) ९८२०

शरभतन्त्र

लि०—(१) —कैट्. कैट्. ३।१३२
(२) श्लोक सं० ४५०, अपूर्ण। —सं० वि० २४८११

शरभदारुणसप्तक

लि०—श्लोक सं० ३०। —अ० ब० ६०४६

शरभपञ्चाङ्ग

लि०—(ग) आकाशभैरवकल्पान्तर्गत, (क) शरभपटल, (ख) शरभकवच, (ग) शरभपद्धति, (घ) शरभहृदय, (ङ) शरभ-सहस्रनामस्तोत्र आदि इसमें वर्णित हैं। —ए० बं० ६४८५

(२) (क) शरभकवच, आकाशभैरवकल्पान्तर्गत, पूर्ण।
(ख) शरभसहस्रनाम, आकाशभैरवकल्पान्तर्गत, पूर्ण।
(ग) शरभसहस्रनाम, आकाशभैरवकल्पान्तर्गत, पूर्ण।
—र० मं० (क) ४८६७, (ख) ४४९५, (ग) ४८५६

(३) आकाशभैरव कल्पान्तन्तर्गत, श्लोक सं० २४२, अपूर्ण।
—सं० वि० २५४४४

शरभपद्धति

लि०—(१) (क) मल्लारि कृत, श्लोक सं० ८००, अपूर्ण।
(ख) श्लोक सं० २४०, अपूर्ण।
—अ० व० (क) ५६७५, (ख) ५१५८
—सं० वि० २६५३७

(२) श्लोक सं० ११३, अपूर्ण।
—कैट्. कैट्. १।६३७

(३)

शरभपूजापद्धति

लि०—(१) आकाशभैरवतन्त्रार्गत, उमा-महेश्वर संवादरूप। इसमें पक्षिराज शरभ के पूजा-प्रकारों का वर्णन है। यह लगभग३२५ श्लोकात्मक ग्रन्थ है।
—नो० सं० २।२०७
—अ० ब० ५६३०

(२) मल्लारि कृत, श्लोक सं० ८००।

शरभमन्त्र

अ० ब० ५१६०

लि०—श्लोक सं० ३०।

शरभमन्त्रराज

—र० मं० ५००२

लि०—अपूर्ण।

शरभमन्त्रविधि

—सं० वि० २६३०९

लि०—श्लोक सं० लगभग ५०, अपूर्ण।

शरभविधान

लि०—(१) वर्तुलातन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० लगभग १००, पूर्ण।
—सं० वि० २६१७२
—कैट्. कैट्. १।६३७

(२)

शरभसालुव

—अ० ब० १०४२५

लि०— श्लोक सं० ३००।

शरभशालुवपक्षिराजकल्प

—सं० वि० २४६३७

लि०—श्लोक सं० लगभग ४६०, अपूर्ण।

शरभस्तोत्र

लि०—श्लोक सं० ३१, पूर्ण। —र० मं० ४४९४

शरभार्चनचन्द्रिका

लि०—सदाशिव विरचित। —कैट्. कैट्. ११६३७

शरभार्चापारिजात

लि०—(१) आपदेव-पुत्र रामकृष्ण विरचित, (क) श्लोक सं० १००।
(ख) श्लोक सं० ११००, आरंभ में अपूर्ण।
(ग) प्रथम स्तवक मात्र।

—अ० ब० (क) १२६१५, (ख) ५६३७, (ग) ९७०७

(२) नीलकण्ठवंशीय आपदेव-सुत भवानीगर्भज रामकृष्ण दैवज्ञ विरचित।

—रा० पु० ५६४१

(३) रामकृष्ण विरचित, श्लोक सं० २१७४, पूर्ण; तन्त्रसारोद्धार से संकलित।

—सं० वि० २५८२७

शरभेशकवच या शरभेश्वरकवच

लि०—(१) आकाशभैरवकल्पान्तर्गत, उमा-महेश्वर संवादरूप। यह शरभेश-कवच भूत, प्रेत आदि के भय की निवृत्ति के लिए धारण किया जाता है और प्रत्यक्ष सिद्धि-प्रद है। —नो० सं० २।२०८

(२) आकाशभैरवकल्प से गृहीत।

—कैट्. कैट्. ११६३७

शरभेश्वरतन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

शरभेश्वरपूजा

लि०—इसमें शरभेश्वर देव की पूजा-प्रक्रिया प्रतिपादित है।

—ए० बं० ६४८४

शरभेश्वरमन्त्रप्रकाश

लि०—श्लोक सं० लगभग १९०, अपूर्ण; इसमें शरभेश्वराष्टक भी संनिविष्ट है।

—सं० वि० २५४७०

शरभेश्वरमन्त्रविधान

लि०—श्लोक सं० लगभग ५०, अपूर्ण । —सं० वि० २६५५७

शरभेश्वरमालामन्त्र

लि०—श्लोक सं० ४० । —अ० ब० ८६८४

शवरीतन्त्र

लि०—श्लोक सं० ८३२, पूर्ण । —सं० वि० २४३४०

शवसाधन

लि०—श्लोक सं० ७०, अपूर्ण । —सं० वि० २४१४७

शल्यतन्त्र

लि०—(१) (क) श्लोक सं० २५० । (ख) श्लोक सं० १६० । (ग) श्लोक सं० ४०० । —अ० ब० (क) ३४९९, (ख) ५६१५, (ग) ८२९३

(२) उमा-महेश्वर संवादरूप । विष, अपस्मार (मृगी) आदि की शान्ति के लिए विविध उपाय इसमें प्रतिपादित है। भूतबाधा और ग्रहबाधा दूर करने के उपाय भी निर्दिष्ट हैं। श्लोक सं० ३८७ । —रा० ला० २२५५

शाक्तक्रम

लि०—(१) पूर्णानन्द परमहंस विरचित । ग्रन्थकार पूर्णानन्द गिरि भी कहे गये हैं। रचनाकाल १४६३ शकाब्द । (कालाङ्गवेदेन्दुशाके) अर्थात् १५४१ ई० । पाठान्तर कालाङ्कवेदेन्दुशके तदनुसार १४९३ शकाब्द अर्थात् १५७१ ई० —ए० ब० ६११७-६११९
—अ० ब० १०६२४

(२) पूर्णानन्द गिरि कृत, श्लोक सं० ५०० ।

(३) श्लोक सं० १५०३, अंश सं० ७ । इसमें ये विषय वर्णित हैं—एकलिङ्गस्थान, कूर्मचक्र, कोमल चूड़कादि शव का लक्षण, अन्तर्याग, महायज्ञविधि, दिव्यादि भावों का निरूपण , दिव्यभाव आदिके लक्षण आदि, श्रवण, मनन आदिके लक्षण कथन, आत्म-साक्षात्कार का उपाय, चीनाचार आदि का निरूपण, कौलिक कर्तव्य कथन, पञ्चमकार साधन, कुमारीपूजा आदि । —रा० ला० २०६७

(४) पूर्णानन्दगिरि कृत, श्लोक सं० ९३५, पूर्ण । —सं० वि० २४७२४

शाक्तसन्ध्याविधि

लि०—शक्ति देवीके उपासकों द्वारा प्रातःकाल और सायंकाल की जाने वाली एक प्रकार की प्रार्थना। —म० द० ५७२३

शाक्तसाधनसंग्रह अथवा साधनसंग्रह अर्थात् शय्या-त्रिपथ-चतुष्पथ-बिल्वमूल-त्रिमुण्ड-वीर-श्मशानसाधन

लि०—(क) श्लोक सं० लगभग ११५, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग १३५, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २५७५८, (ख) २५७६१

शाक्तानन्दतरङ्गिणी (१)

लि०—(१) ब्रह्मानन्दगिरि पूर्णानन्द परमहंस के गुरु द्वारा विरचित। इस ग्रन्थ में १८ तरंग(?) है, यह छप चुका है। —ए० बं० ६१९४

(२) इसमें १८ उल्लास कहे गये हैं। इस प्रति में श्लोक सं० २८३८ निर्दिष्ट है। विषय—प्रकृति पुरुष का अभेद कथन, गर्भस्थ जीव की चिन्तन रीति, दीक्षा की आवश्यकता, दीक्षासम्बन्धी अन्यान्य विषय, प्रातःकृत्य आदि, आसन-नियम आदि, नित्य पूजाविधि आदि, करमाला आदि, जपविधि आदि, महासेतु आदि, पुरश्चरणविधि, यन्त्रप्रकरण, अष्टादश उपचार आदि, समयाचार आदि, अग्नि उत्पादन, कुण्डनिर्माण आदि वर्णित हैं। —रा० ला० ३१८२

(३) (क) अठारह उल्लासों में पूर्ण। (ख) अठारह उल्लासों में पूर्ण। —बं० प० (क) २३, (ख) ९१९

शाक्ताभिषेक

लि०—(१) राजराजेश्वरीतंत्रान्तर्गत देवी-ईश्वर संवादरूप इसकी दूसरी हस्तलिखित प्रति बं० प० (पे. ४५) में दिखो। —ए० बं० ६०३४

(२) शाक्त धर्म में दीक्षित होते समय आवश्यक विधियों, रीतियों का प्रतिपादक ग्रन्थ। —रा० ला० १११६

(३) (क) श्लोक सं० लगभग २५२०, पूर्ण। लिपिकाल वङ्गाब्द १२१२। (ख) श्लोक सं० ८५४, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ४६१, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं०

१७६८, १ से १६ वें उल्लास तक, अपूर्ण। (ङ) श्लोक सं० २८०८, १म से १८ वें उल्लास तक, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४४६२, (ख) २४९०५, (ग) २५२५५, (घ) २६६७७ (ङ) २६३८०

शाक्ताभिषेकपद्धति

लि०—(क) राजराजेश्वरीतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक सं० ५४, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ८२, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४७७२, (ख) २६४०६

शाक्ताभिषेकप्रयोग

लि०—(क) श्लोक सं० १०३, पूर्ण। दक्षिणकालीस्तोत्र भी इसमें संनिविष्ट है।
(ख) श्लोक सं० ८२, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४५३९, (ख) २६०१४

शाक्ताभिषेकविधि

लि०—(क) पूर्णाभिषेक विधि के साथ संनिविष्ट। संमिलित श्लोक सं० लगभग १४०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग ४४४, पूर्ण। इसमें पञ्चतत्त्वशोधन, पात्रवन्दना, पूर्णाभिषेक संस्कारविधि तथा शान्तिस्तोत्र भी संनिविष्ट हैं। (ग) कामाख्यातन्त्र का १० म पटल रूप, श्लोक सं० लगभग ७०, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २५७३१, (ख) २५७६४, (ग) २६०३२

शाक्तामोद

लि०—(१) शङ्करद्रविडाचार्य कृत।

विषय—शक्तिपूजाविधि, पञ्चशुद्धि कथन, पूजासूत्र, जपसूत्र, मन्त्र, चौरमन्त्र, तथा दीपनीमन्त्र, मन्त्रसिद्धि-लक्षण, पूजाप्रयोग, जपादिनियम, मन्त्रों के स्वापकाल आदि, ब्राह्मण आदि वर्णों के भेद से सेतुकथन, महासेतु कथन, कामकलावर्णन, मन्त्रसंकेतकथन, मन्त्र का स्थानकथन, भूतलिपिकथन, चौर मन्त्र के जप का स्थान, मन्त्र और साधक की एकता का कथन, जीवतत्त्वकथन, मंत्रों के शिखादि अङ्ग कथन, पुरश्चरणविधि, पुरश्चरण का स्थान निर्देश, भक्ष्याभक्ष्य का प्रतिपादन, वर्ज्यावर्ज्य कथन आदि वर्णित हैं।

—नो० सं० १।३५८

शाक्तामोदतरङ्गिणी

लि०-- —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

शाङ्खायनतन्त्र

लि०--(क) षड्विद्यागमान्तर्गत, श्लोक सं० ७६६, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १०४०, अपूर्ण (?), लिपिकाल १९३६ वि०।(ग) षड्विद्यागमान्तर्गत, श्लोक सं० लगभग २१५, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २३९३३, (ख) २४२०६, (ग) २६१७३

शातातपसंहिता

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

शान्तिकर्म

लि०—विविध ग्रन्थों से संगृहीत, श्लोक सं० १५०।

—अ० ब० १०१७८

शान्तिप्रयोग

लि०--यक्षिणी प्रयोगान्तर्गत। श्लोक सं० २६, पूर्ण

—सं० वि० २५५१०

शान्तिरत्न

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

शाबरचिन्तामणि

लि०—पार्वती-पुत्र आदिनाथ विरचित।

इसमें षट्कर्म देवताओं—रति, वाणी, रमा, ज्येष्ठा, दुर्गा और कालिका—के ध्यानों और मन्त्रों का प्रतिपादन है, तदनन्तर शान्तिक, वशीकरण आदि षट्कर्म कहे गये हैं।

—ए० बं० ६१००

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

शाबरतन्त्र

लि०—(१) गोरखनाथ विरचित यह तन्त्र ३ प्रकरणों में पूर्ण है।

—ए० बं० ६०९९

(२) आदिनाथ, अनादि, काल, अतिकाल, कराल, विकराल, महाकाल, कालभैरवनाथ, बटुकनाथ, भूतनाथ, वीरनाथ और श्रीकण्ठ ये बारह कापालिक हैं। इनके शिष्य भी बारह है—नागार्जुन, जड़भरत, हरिश्चन्द्र, सत्यनाथ, मीननाथ, गोरक्षनाथ, चर्पटनाथ, अवघटनाथ, वैरागी, कन्थाधारी, धलन्धरि और मलयार्जुन। ये सब शावर मन्त्रों के प्रवर्तक हैं। इस ग्रन्थ के मुख्य २ विषय हैं—शावर-सिद्धिविधि, सब विपत्तियों को दूर करनेवाले सिद्ध और बली मन्त्र आदि योगिनीमन्त्र, क्षेत्रपालमन्त्र, गणेशमन्त्र, कालीमन्त्र। वगलामन्त्र, भैरवीमन्त्र, त्रिपुरसुन्दरीमन्त्र हेलकीमन्त्र, मातङ्गीमन्त्र, डाकिनी, शाकिनी, भूत, सर्प आदि का भय निवारक मन्त्र, उच्चाटन, वशीकरण आदि के मन्त्र आदि।

—नो० सं० १।३५९

(३) श्लोक सं० ५८०, पूर्ण।

—डे० का० ७३५ (१८८३–८४ ई०)

(४) (क) श्लोक-सं० ६९६, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ६५० अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ५६, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २३८६७, (ख) २४५१५, (ग) २४५७९

शाबरतन्त्रसर्वस्व

लि०—

—प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

शाबरमन्त्र

लि०—(१) इसमें शावर मन्त्र हिन्दी तथा अशुद्ध संस्कृत में कहे गये हैं। इसका बहुत अंश दिव्य शावर तन्त्र से मिलता-जुलता है।

—ए० बं० ६५५८

(२) श्लोक सं० १०० ।

—अ० ब० ५६१४

(३) (क) श्लोक सं० १३६, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग १००, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २३८५६, (ख) २६२३२

शाबरमन्त्रचिन्तामणि

लि०—

—ए० बं० ६१००

शाम्भव

लि०—श्लोक सं० २००। इसमें शैवमतानुसार आह्निक क्रिया का स्पष्टीकरण किया है।

—ट्रि० कै० ११२७ (छ)

शाम्भवकल्पद्रुम

लि०—माधवानन्द कृत। —कैट्. कैट्. १।६४२

शाम्भवदीपिका

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल, सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्द्धिनी में।

शाम्भवसूत्र

उ०—तारारहस्यवृत्ति में।

शाम्भवाचारकौमुदी

लि०—(१) भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित। इसमें शिवपूजा का विस्तार से प्रतिपादन किया गया है। —ए० बं० ६४६१

(२) काशीनाथ कृत, श्लोक सं० लगभग १८५, पूर्ण। —सं० वि० २४७९२

शाम्भवीतन्त्र

लि०—(१) केवल १४ वाँ और १५ वाँ २ पटल, अपूर्ण। —बं० प० ८९४

(२) शाम्भवीतन्त्र (ज्ञानसंकुलीमात्र) उमा-महेश्वर संवादरूप। श्लोक सं० २००, पूर्ण। —ए० बं० ६०३५

उ०—उत्पत्तितन्त्र में (रा० ला०) इसका उल्लेख है।

शाम्भवानन्दकल्पलता

उ०—सौभाग्यभास्कर में।

शाम्भवीय

उ०—तारारहस्यवृत्ति में।

शाम्भवीसंहिता

उ०—तारारहस्यवृत्ति में।

शारदातन्त्र

उ०—कालिकासपर्याविधि में।

शारदातिलक (सटीक)

लि०—(१) विजयाचार्य पण्डित के पौत्र, श्रीकृष्ण-पुत्र लक्ष्मण, देशिकेन्द्र विरचित। इसमें २५ पटल हैं। —इ० आ० २५४२

(२) मन्त्र-यन्त्र-प्रकाशिका शीरपाणि कृत तथा शारदातिलकटीका पूर्णानन्दाश्रम कृत। यह टीका संवत् १६७५ विक्रम में रची गयी।

—ए० बं० ६१७७ से ६१८४ तक

(३) शारदातिलक-प्रकाश (महाराजाधिराज पुण्यपालदेव कृत) टीका से विभूषित ।

—ने० द० १।२८७

(४) (क) श्लोक सं० १२०० (१० वाँ और ११ वाँ पटल आरंभ मात्र)। (ख) श्लोक सं० १५० (३ य पटल)। (ग) श्लोक सं० १६४ (८वाँ पटल)।

—अ० व० (क) ३५४१, (ख) २२५०, (ग) ७७

(५) (क) अपूर्ण । (ख) शारदातिलक-व्याख्या पदार्थादर्श से विभूषित, अपूर्ण।

—वं० प० (क) १५७९, (ख) १४१९

(६) (क) श्लोक सं० १२०००, हर्ष दीक्षित कृत टीका युक्त।
(ख) श्लोक सं० ८०० (केवल ३ य पटल)।
(ग) श्लोक सं० ४६०।

—अ० व० (क) ५५३४, (ख) ११५५, (ग) ९३०१

(७) शारदातिलक सब तन्त्रों का सार है एवं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का हेतु है। ग्रन्थकार कहते हैं—'सारं वक्ष्यामि तन्त्राणां शारदातिलकं शुभम् । धर्मार्थ काम-मोक्षाणां प्राप्तेः परमकारणम् ॥' इसमें २५ पटल हैं। उनमें प्रतिपादित विषय हैं—देवदेवियों के अलग-अलग मंत्रों की अक्षर-संख्या का निर्देश आदि, देवता और उनकी शक्तियों के नाम और मन्त्रों का प्रतिपादन, दीक्षा के अङ्गभूत कर्मों का निरूपण, दीक्षादान के विविध प्रकारों का वर्णन, साधक के १८ अठारह संस्कारों का निर्देश, वर्ण-तनु आदि कथन, ४० अक्षरों की भूतलिपि का वर्णन, श्रीमन्त्र और उसके जप, ध्यान, पूजन आदि का निरूपण, जगद्धात्री का मन्त्र, उसके जप, ध्यान, पूजन आदि का कथन, त्रिपुरामन्त्र उसके जप, ध्यान, पूजन आदि, त्वरिता देवी के मन्त्र, उसके जप, ध्यान, पूजन आदि का कथन, दुर्गा देवी के मन्त्र, उनके जप, ध्यान, पूजन आदि। नृसिंह, पुरुषोत्तम आदि के मन्त्र तथा उनके जप, पूजन, ध्यान आदि का प्रकार आदि ।

—रा० ला० ७३३

(८) विजयाचार्य के पौत्र, श्रीकृष्ण-पुत्र देशिकेन्द्र लक्ष्मण विरचित । इसमें २५ पटल है। विभिन्न देवियों के बीजमन्त्र, देवीदेवता, उनकी शक्तियाँ, दीक्षा, १८ संस्कार, वर्णमाला के अक्षर, तान्त्रिक मन्त्रों से पूजा, जगद्धात्री, त्वरिता, दुर्गा, त्रिपुरा, गणेश आदि के मन्त्र ।

—बी० कै० १३२३

(९) लक्ष्मण देशिकेन्द्र कृत। इसमें २० ही पटल है। —ट्रि० कै० १०४५

(१०) कृष्णात्मज लक्ष्मण देशिकेन्द्र कृत, पूर्ण। —जं० का० १०८७

(११) श्रीकृष्ण-शिष्य लक्ष्मणदेशिकेन्द्र कृत (क) श्लोक सं० ४३३०, पूर्ण। (ख) अपूर्ण। —र० मं० (क) ४९१७, (ख) ४९९१

(१२) २५ पटलों में पूर्ण। कर्ता पूर्ववत्। इस संग्रह में ४ प्रतियाँ हैं, ३ पूर्ण और १ अपूर्ण।

—तै० म० (१) ६६९२, (२) ६६९३, (३) ६६९८, (४) ६६९५

(१३) (क) अपूर्ण। (ख) पूर्ण।

—डे० का० (क) ७३६, (ख) २५५ (१८८३-८४ ई०)

(१४) (क) श्लोक सं० २११६, पूर्ण। (ख) लक्ष्मणाचार्य कृत, श्लोक सं० ३५४०, पूर्ण (सटीक ?)। (ग) श्लोक सं० ३१८६, पूर्ण। (घ) श्रीलक्ष्मण देशिकेन्द्र कृत श्लोक सं० २५११। १ म से १७ वें पटल तक, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २३९७६, (ख) २४९५१, (ग) २५५३३, (घ) २५९५८

उ०—पुरश्चर्यार्णव, तन्त्रसार, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमकल्पलता, तत्त्वबोधिनी (आनन्दलहरी की टीका) तथा मन्त्ररत्नावली में।

शारदातिलक की टीकाएँ—

लि०—(१) गूढार्थदीपिका या सुगूढार्थदीपिका राम-भारती-शिष्य त्रिविक्रमज्ञ भट्टारक रचित। (क) श्लोक सं० १४४०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १३७२, पूर्ण। (ग) शब्दार्थचिन्तामणि, प्रेमनिधिशर्मपन्त विरचित, श्लोक सं० १५२०४, पूर्ण।

—र० मं० (क) ४९५२, (ख) ३९१६, (ग) ४९५६

(२) हर्षकौमुदी श्रीहर्ष दीक्षित कृत, पटल १ से ५ और १० से २० तक। अपूर्ण। —तै० म० ६६९४

उ०—सेतुबन्ध में इसका उल्लेख है।

(३) (क) शारदातिलक-टीका, माधव कृत।

(ख) पदार्थादर्श टीका, राघवभट्ट कृत।

—बी० कै० (क) १३२५, (ख) १३२६

(४) शारदातिलक-टीका गूढार्थप्रकाशिका कामरूप पण्डित अथवा जगद्गुरु भट्टाचार्य सिद्धान्तवागीश कृत। लिपिकाल १८४६ वि०। —इ० आ० २५४५

शारदानवरात्रविधि

लि०—इसमें युद्ध-विजय के लिए यात्रार्थ आवश्यक विधि वर्णित है।

—इ० आ० २६३१

शारदापञ्चाङ्ग

—र० मं० ४८४७

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, पूर्ण।

शारदास्तव

लि०—पत्र ६, अक्षर नेवारी, संवत् (नेपाली) ५२० चैत्रवदी में लिखित।

—ने० द० १।१३६३ (ण)

शारिकानित्यपूजापद्धति

लि०—इसमें उपासक के प्रातःकृत्यों का वर्णन पूर्वक शारिका देवी की नित्यपूजा-विधि का प्रतिपादन है।

—ए० बं० ६४००

शारिकाभगवतीपञ्चाङ्ग

—इ० आ० २५४९

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत।

(२) इसमें ये पाँच स्तोत्र वर्णित हैं—

(क) शारिकास्तव साहिब कौलानन्दनाथ विरचित।

(ख) भैरवनाथस्तोत्र अभिनव गुप्त विरचित।

(ग) स्तोत्र, अभिनव गुप्त विरचित।

(घ) स्तोत्र, उत्पलाचार्य विरचित।

(ङ) स्तोत्र, साहिब कौलानन्दनाथ विरचित।

—ए० बं० ६४००

—र० मं० ४८२०

(३) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० ५०५, पूर्ण।

शिरश्छेदतन्त्र

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) आगमों के अन्तर्गत है। इस विषय में विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, Studies in the Tantras, Part I, by Dr. P. C. Bagchi.

शिवकवच

—ए० बं० ६७५१

लि०—(१) यह कवच कई जगह छप चुका है।

—ने० द० १।१३७६ (च)

(२) भैरवतन्त्र के अन्तर्गत।

शिवचन्द्रिका

लि०--(१) वासुदेव दीक्षित कृत। श्लोक सं० ३५००, अपूर्ण।

--अ० ब० ६९९४

(२) (क) श्लोक सं० ३२५०। यह ११ पटलों में पूर्ण है। ग्रन्थकार कहते हैं--'श्रीवासुदेवेन विनिर्मितायां शिवावहायां शिवचन्द्रिकायाम्।
यथावदेकादशमुल्लसन्त्यां तमो हरन्त्यां पटलं प्रणीतम्।।'

(ख) श्लोक सं० ३३००, अपूर्ण। वासुदेव विरचित।

--ट्रि० कै० (क) १०४६, (ख) १०४७

शिवचूडामणि

दामोदर समाधि संगृहीत। उमा-महेश्वर संवादरूप। यह १२ उल्लासों में पूर्ण है।

--नो० सं० ४।२९६

शिवज्ञानबोधसंग्रह

उ०--शतरत्नसंग्रह में।

श्रीसंहिता

उ०--आगमकल्पलता में।

शिवज्ञानविद्याविधि

उ०--मन्त्रमहार्णव में।

शिवतत्त्वरत्नाकर

(६-९ कल्लोल)

लि०--श्लोक सं० १०६६६, पूर्ण। लिपिकाल १६३१ शकाब्द।

--सं० वि० २६३२४

शिवतत्त्वविवेक

लि०--शिवजी की देवाधिदेवता के विषय में प्रमाणों का उपन्यास करते हुए उनकी पूजा का प्रतिपादन इस पुस्तक में किया गया है।

--बी० कै० १३३३

शिवताण्डव (सटीक)

लि०--(१) पार्वती-ईश्वर संवादरूप। यह पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध भेद से दो भागों में विभक्त है। पूर्वार्द्ध में १४ और उत्तरार्द्ध में १५ पटल हैं। राजा अनूपसिंह की प्रेरणा से गोविन्दराज-पुत्र श्रीनीलकंठ ने इस पर अनूपाराम नामक टीका लिखी है।

श्रीघनश्याम-पुत्र की प्रेरणा से प्रेमनिधिपन्त रचित मल्लादर्श नाम की टीका भी इसपर है।

—ए० बं० ५९६६, ५९६७, ५९६८, ५९७१

(२) इस पर प्रथम भाग में प्रेमनिधि की मल्लादर्श टीका है।

—ए० बं० ६८१७

—अ० ब० १३०९८

(३) श्लोक सं० ३८००।

(४) दक्षिणामूर्ति-पार्वती संवादरूप। अनूपसिंह की प्रेरणा से श्रीनीलकण्ठ रचित अनूपाराम नामक टीका संयुक्त, यह १४ पटलों का ग्रन्थ है।

—ने० द० २।३१७ (ख)

शिवताण्डव

लि०—(१) श्लोक सं० २२६८, आदि और अन्त रहित, अपूर्ण।

—र० मं० ४९३५

(२) नगेन्द्रप्रयाणमहातन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० ५७८, अपूर्ण।

—सं० वि० २४०३४

शिवताण्डवतन्त्र

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ३५०, श्रीनाथ कृत। (ख) श्लोक सं० १३००। (ग) श्लोक सं० १५००। (घ) श्लोक सं० ३३०, यह अन्य प्रतियों से भिन्न है, पटल ८ से १४ तक पूर्ण १५ वाँ पटल चालू।

—अ० ब० (क) ५३२७, (ख) ५३२९, (ग) १०६८४, (घ) ११११९

(२) दक्षिणामूर्ति प्रोक्त (क) ६४ पन्ने। (ख) २५ पन्ने। (ग) गोविन्द सूरिपुत्र नीलकण्ठ कृत टीका सहित।

—रा० पु० (क) ५६९७, (ख) ६४४४, (ग) ६४९६

(३) (क) श्लोक सं० लगभग १७१०, पूर्ण। लिपिकाल १९७१ वि०। (ख) श्लोक सं० लगभग १२२०, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २३९४५, (ख) २४११४

शिवताण्डवतन्त्रटीका

लि०—श्लोक सं० लगभग ३१८।

—सं० वि० २३९९६

शिवताण्डवाभिनय

लि०—कामराज विरचित। यह शिवताण्डव पर टीका है। श्लोक सं० ३५०, अपूर्ण।
—अ० ब० ५१

शिवदृष्टि

शमानन्द कृत, इसमें प्रायः ७०० श्लोक हैं और ७ अध्याय हैं।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

शिवदृष्टिविवृति

शमानन्द कृत।

विवरण द्रष्टव्य, के. सी. पाण्डेय विरचित अभिनवगुप्त में।

शिवद्युतितन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

शिवधर्मशास्त्र

लि०—(१) नन्दिकेश्वर प्रोक्त। इसमें दुष्ट ग्रह आदि की शान्ति करने वाले विविध देवों के स्तवों का संग्रह आदि प्रतिपादित है। —ने० द० १।१६७६ (छ)

उ०—प्राणतोषिणी में।

शिवधर्मसंग्रह

विवरण द्रष्टव्य—

Govt. Collection in Asiatic Society Library Vol XI p. p. 7–8 में।
—ने० द० १।३६ (ख)

शिवधर्मोत्तर

लि०—(१) यह शैव सम्प्रदाय का ९४०० श्लोकों का ग्रन्थ है।

विवरण देखें—रा० ला० २२०८ में।

(२) श्लोक सं० ३०००, अपूर्ण। —अ० ब० ७९७१ (ख)

उ०—वीरशैवानन्दचन्द्रिका तथा शतरत्नसंग्रह में।

शिवनृत्यतन्त्र

लि०—(१) दक्षिणामूर्ति-पार्वती संवादरूप। इसमें ९ पटल हैं। तान्त्रिक पूजा सम्बन्धी विविध यन्त्रों का प्रतिपादन है। —ए० बं० ५९६५

(२) श्लोक सं० १२४, अपूर्ण। —सं० वि० २६४१३

शिवनेत्रतन्त्र

लि०—— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

शिवपञ्चाक्षरविधि

लि०——श्लोक सं० १२०, पूर्ण। —र० मं० ४८७०

शिवपञ्चाक्षरी

लि०——इसमें शिवपूजक के प्रातःकृत्यों के साथ शिवपूजापद्धति वर्णित है।
—ए० बं० ६४७१

शिवपञ्चाक्षरीन्यासविधि

लि०—— —रा० पु० ४४६१

शिवपञ्चाक्षरीमन्त्रपूजाविधि

लि०——नृसिंह कृत, श्लोक सं० ४००। —अ० व० ९२००

शिवपञ्चाक्षरीमन्त्रप्रयोग

लि०——सरस्वती प्रार्थना सहित, श्लोक सं० लगभग ४०, पूर्ण।
—सं० वि० २३९४४

शिवपञ्चाङ्ग

लि०——(१) (क) रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ५०९, पूर्ण।
(ख) श्लोक सं० ६६२, पूर्ण।
—र० मं० (क) ४८२२, (ख) ४८३२

शिवपटल

लि०——श्लोक सं० ५१, पूर्ण। —सं० वि० २४६३४

शिवपूजा, अघोरपद्धति

लि०——अघोर रूप के अनुसार शिवजी की पूजा पर। यह पूजा रात्रि में की जाती है मदिरा, महिला आदि द्वारा। —बी० कै० १३३१

शिवपूजातरङ्गिणी

लि०——काशीनाथ कृत। श्लोक सं० २००, अपूर्ण। —अ० ब० ८४४४

शिवपूजानुक्रमणी

लि०—श्लोक सं० ७००। —अ० ब० ६८२६ (ख)

शिवपूजापद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक सं० १४००। (ख) श्लोक सं० ४००। (ग) श्लोक सं० २५। —अ० ब० (क) ८६२, (ख) १७०८, (ग) ६९३०

(२) श्लोक सं० ५००, इसमें शिवपूजाविधि वर्णित है।

(३) (क) श्लोक सं० ३०, अपूर्ण। (ख) दक्षिणकालिका पूजापद्धति के साथ संलग्न, संमिलित श्लोक सं० लगभग ८२, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४०६५, (ख) २६२५०

शिवपूजाविधि

लि०—(क) श्लोक सं० ३२०। यह पूजा श्रौत पद्धति के अनुसार है।

(ख) शिवपूजाविधि, पूर्ण। —अ० ब० (क) ५५५६, —(ख) ४५४

शिवप्रसादसुन्दरस्तव

लि०—शङ्करकण्ठ कृत, श्लोक सं० १०८, पूर्ण।

—डे० का २४३ (१८८३-८४ ई०)

शिवबोधज्ञानदीपिका

लि०—नवगुप्तानन्दनाथ विरचित। श्लोक सं० ३८, पूर्ण। इसमें शिवस्वरूपज्ञान का प्रतिपादन किया गया है। —ट्रि० कै० ११२७ (ड)

शिवभक्तिरसायन

लि०—भडोपनामक जयराम-पुत्र काशीनाथ विरचित।

इसके आदि के दो उल्लासों में शिवपूजा की विधि वर्णित है। तीसरे उल्लास में देवी की पूजापद्धति वर्णित है। आरम्भ में पूजक के प्रातःकृत्य बतलाये गये हैं। अन्त के दो उल्लासों में देव की नैमित्तिक पूजा का वर्णन है। —ए० बं० ६४५८

शिवभुजङ्गप्रयात

लि०— —ए० बं० ६७५६

शिवमन्त्रजपविधि

लि०—श्लोक सं० लगभग २४, पूर्ण। —सं० वि० २४२६८

शिवमुक्तिप्रबोधिनी

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित। इसका मुख्य उद्देश्य यह दरसाना है कि मुक्ति ज्ञान से होती है और शिवपूजा से उसे शक्ति प्राप्त होती है।

—ए० बं० ६४६०

शिवरहस्य (१)

लि०—(१) यह स्कन्द-सदाशिव संवादरूप शैव तन्त्रग्रन्थ है। इसमें १२ अंश हैं। शिवरहस्य का केवल सप्तम अंश का, जिसमें २९ (किसी किसी के मत में २५) अध्याय है, विषय विवरण इसमें यों हैं—शिवसहस्रनाम, काशी-प्रशंसा, काशीमाहात्म्य, काशीवास-नियमविधि, ज्ञानवापी की प्रशंसा, मुक्तिमण्डपाख्यान, वीरेश्वर का इतिहास, पशुपतीश्वर का इतिहास, दक्षिण-कैलास का वर्णन, वृद्धाचल की महिमा आदि। यह बड़ा विशाल ग्रन्थ है।

—इ० आ० २५९४

(२) इसमें शिवमाहात्म्य आदि वर्णित है। पुष्पिका में ग्यारहवें अंश के ५० अध्याय कहे गये हैं।

—नो० सं० २।२१३

—अ० ब० ५९१३

(३) श्लोक सं० ७५००, अपूर्ण।

(४) शिव-गौरी संवादरूप। इसमें २९ अध्याय हैं, उनमें शिवपूजा, जप, होम, पुरश्चरण, मन्त्रोद्धार, यन्त्रोद्धार, स्तव, कवच आदि प्रतिपादित हैं एवं उनकी विचारपूर्ण व्यवस्था का भी प्रतिपादन किया गया है।

—रा० ला० २३३

(५) यह महान् तन्त्रग्रन्थ १००००० श्लोकात्मक है, इसमें शैव विधियाँ परिपूर्ण-रूप से वर्णित हैं। यह विविध मूल तन्त्रग्रन्थों से संगृहीत है, ऐसा प्रतीत होता है। इसका सायणाचार्य के शङ्करविलास में उल्लेख आया है।

—ए० बं० ५९०९

(६) (क) श्लोक सं० १३६२५, पूर्ण। सं० १७६४ वि० का लिखित। (ख) श्लोक सं० २२९८, अपूर्ण। —डे० का० (क) ४००, (ख) ४०१ (१८७५—७६ ई०)

उ०—सौभाग्यभास्कर तथा वीरशैवानन्दचन्द्रिका में।

शिवलिङ्गपूजापद्धति

—बं० प० ४१२

लि०—शिवस्तोत्र सहित, पूर्ण।

शिवविद्याप्रकाश

लि०—श्लोक सं० ३५०, अपूर्ण।
इसमें तीन प्रकाश हैं और शिवजी देवाधि-देव रूप में वर्णित हैं।
—ट्रि० कै० १०७४ (ङ)

शिवशक्तिपूजनविधि

लि०—श्लोक सं० १९२। —डे० का० (१८८३-८४ ई०)

शिवशतनामस्तोत्र

लि०—शिव-पार्वती संवादरूप। महालिङ्गेश्वरतन्त्रान्तर्गत।
इसमें शिवशतनामस्तोत्र के ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति, कीलक, विनियोग तथा फल प्रतिपादित हैं। —नो० सं० ३।३०२

शिवसंहिता

लि०—(१) ईश्वर विरचित। यह ५ पटलों में है। इसमें वर्णित विषय हैं—१ म पटल में योगशास्त्र प्रतिपादन पूर्वक लयप्रकरण का वर्णन, २ य में ज्ञानोपदेश, ३ य में योगाभ्यासतत्त्व कथन, ४ र्थ में मुद्रा कथन, ५ म में साधक-लक्षण, प्रतीकोपासना आदि का निरूपण है। —नो० सं० २।२१४

(२) शिव-नन्दी संवादरूप। नन्दी के यह पूछने पर कि भगवन्, आप सब देवों में सर्वश्रेष्ठ हैं। आप भी बड़े भक्तिभाव से रातदिन किस देवता की स्तुति करते हैं, इसका मुझे बड़ा सन्देह है, कृपया उसे निवृत्त करें। इस पर नन्दी के सन्देह की निवृत्ति करते हुए भगवान् शिव ने इसका प्रतिपादन किया। इसमें प्रकृति, पुरुष आदि का निरूपण, विष्णु, महादेव आदि के शरीर पदार्थों का निरूपण, प्राकृत जीवों की देह में स्थित प्राण आदि का वर्णन, ब्रह्मचर्य आदि आश्रम और उनके धर्मों का प्रतिपादन, जीवात्मा और परमात्मा का परस्पर तारतम्य कथन इत्यादि विषय वर्णित हैं। इसमें ४१ परिच्छेद और २५११ श्लोक हैं।
—रा० ला० ४७४

शिवसद्भाव

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

शिवसमयाङ्कमातृका

लि०—श्री शिङ्गक्षितिपति कृत। शक्ति कीपूजा से संबद्ध आवश्यक विविध विषयों का इसमें प्रतिपादन है।

—म० द० ५७२४, २५, २६

शिवसहस्रनाम

लि०—(स्कन्दसदाशिव संवादात्मक) शिवरहस्य के सप्तमांशान्तर्गत। मुक्ति के उपाय का प्रश्न पूछने पर जो शिवपूजा, शिवसहस्रनाम पाठ आदि करते हैं, वे ही धन्य और मुक्तिभाजन हैं, यह उत्तर। यह शिवस्तोत्र है।

—रा० ला० २१९

शिवसहस्रनामस्तोत्र

लि०—(१) (रुद्रयामलान्तर्गत, हर-गौरी संवादरूप)। परमशिवसहस्रनाम भी इसका नामान्तर है, ऐसा ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञात होता है।

—नो० सं० ३।३०३

(२) (क) शिवसहस्रनामस्तोत्र, रुद्रयामलान्तर्गत, (क) पूर्ण। (ख) पूर्ण।

—बं० प० (क) ५१०, (ख) ४४९

शिवसहस्रनामावलि

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, यह स्तोत्र गद्यमय है। इसमें चतुर्थ्यन्त नाम (नमः) शब्द के साथ कहे गये हैं।

—ए० बं० ६७४३

(२) रुद्रयामलीय शिव-पार्वती संवादरूप यह महास्तोत्र देवदुर्लभ तथा महापुण्य है। पूजा, ध्यान, आचार और जप के बिना केवल इसके पाठमात्र से मनुष्य कल्याण प्राप्त करता है।

—नो० सं० २।२१५

शिवसार

उ०—सर्वोल्लास में।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

शिवसिद्धान्तमञ्जरी

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-सुत काशीनाथ विरचित। विविध ग्रन्थों तथा मुख्यतया पुराणों के उद्धरणों द्वारा शिवजी की श्रेष्ठता तथा महत्त्व सिद्ध करने की इसमें चेष्टा की गयी है। देव-पूजक के आचार सम्बन्धी कृत्यों का भी उल्लेख है।

—ए० बं० ६४५७

शिवसिद्धि

लि०--पञ्चमीरहस्य कृकलासतन्त्रान्तर्गत, कुलपूजासूत्र से संलग्न, श्लोक सं० लगभग २०, पूर्ण। --सं० वि० २६३७६

शिवसुन्दरीविवरण

लि०--श्लोक सं० लगभग १६, पूर्ण। --सं० वि० २५५२३

शिवसूत्र या स्पन्दसूत्र

लि०--वसु गुप्त कृत। --डे० का० ५१८, ५१९ (१८७५-७६ई०)

शिवसूत्रवार्तिक

भास्कराचार्य कृत।

शिवसूत्रविमर्शिनी

लि०--(१) श्री क्षेमराज कृत। यह शिवसूत्र का व्याख्यान है। ग्रन्थकार ने कहा है--इस शिवसूत्रविमर्शिनी व्याख्या द्वारा शिव प्रोक्त परम उज्ज्वल रहस्य शिवसूत्रों का विचार करने से संसार सागर से बड़ी जल्दी पार हो जाओगे, परम पद में प्रवेश हो जायगा एवं नित्य प्रकाश और आनन्द से परिपूर्ण धाम में अविचल पद प्राप्त हो जायगा।
--नो० सं० २।२१६

(२) श्री क्षेमराजकृत, (क) श्लोक सं० लगभग ८९८, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ८५५, पूर्ण।
--सं० वि० (क) २५११७, (ख) २५,२९८

शिवागम

उ०--कुलप्रदीप में।

शिवागमसार

उ०--मन्त्रमहार्णव में।

शिवाद्वैतप्रकाशिका

(१) लि०--भडोपनामक जयरामभट्ट-सुत काशिनाथभट्ट विरचित। इसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप चतुर्विध पुरुषार्थों में मोक्ष ही परम श्रेष्ठ पुरुषार्थ है और वह आत्म-तत्त्व ज्ञान के अधीन है तथा आत्मतत्त्व ज्ञान शिवाधीन है एवं महाशक्ति की आत्मा शिव हैं जिनकी पूजा मोक्ष की ओर अग्रसर करती है यह निर्देश किया गया है। इसमें पूजा का वैदिक आकार-प्रकार निर्दिष्ट है जो तान्त्रिक पूजा के आकार-प्रकार से विशिष्ट है।
--ए० बं० ६४५४

इसकी दूसरी प्रति इ० आ० में वर्णित है (सं० २५१३)।

शिवानन्दलहरी

उ०--सौभाग्यभास्कर में।

शिवाग्निपद्धति

लि०--(क) श्लोक सं० २००। (ख) श्लोक १५०।
--अ० व० (क) १०२८, (ख) ८०४४

शिवापराधभञ्जनस्तोत्र

लि०--शङ्कराचार्य कृत। पूर्ण। --वं० प० १०९५

शिवाम्बुकल्प

लि०--(१) ईश्वर-पार्वती संवादरूप। मूत्र का पान के रूप में तान्त्रिक उपयोग, जिससे सर्वविध रोगों का विनाश कहा गया है, इसमें वर्णित है। --ए० बं० ६०६५

(२) --रा० पु० ६७३३

(३) रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक सं० १०४, पूर्ण। --र० मं० ११२३

(४) रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक सं० १२५, पूर्ण। --सं० वि० २४५५३

शिवाम्बुविधिकल्प

लि०--श्लोक सं० १८०। --अ० ब० २५०९

शिवाराधनदीपिका

लि०--(१) हरि विरचित, श्लोक सं० १५००। --अ० ब० ९०८१

(२) हरि विरचित, श्लोक सं० १४६२, अपूर्ण। --सं० वि० २३९०७

शिवार्चनचन्द्रिका

लि०--(१) श्रीनिकेतन-पुत्र श्रीनिवासभट्ट विरचित। इस ग्रन्थ में तान्त्रिकक्रिया--दैनिक पूजा, पुरश्चरण आदि तथा गणेश, शक्ति, विष्णु, सूर्य, शिव आदि की उपासना वर्णित है। --ए० बं० ७२३१

(२) इसमें गुरुलक्षण, सत् और असत् शिष्यों के लक्षण, गुरु और शिष्य की परीक्षा, दीक्षा के काल आदि का निरूपण, दीक्षा के अधिकारी का निर्देश, ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि के विभिन्न मन्त्र, वर्णसङ्करों के दीक्षाधिकार का विवेचन, मन्त्रों के पुंल्लिंग, स्त्रीलिंग आदि लिङ्गों का कथन इत्यादि विषय वर्णित हैं। --नो० सं० २।३००

(३) सुन्दरराज-शिष्य श्रीनिवास विरचित। श्लोक सं० ५८४०, १६ प्रकाशों में पूर्ण। —तं० म० ६६९१

(४) (क) श्रीनिवासभट्ट कृत। श्लोक सं० २०००। (ख) श्लोक सं० १६००० ३ य प्रकाश से लेकर ४० प्रकाश तक पूर्ण तथा ४१ वाँ प्रकाश चालू। श्रीनिवासभट्ट विरचित। (ग) श्लोक सं० ४००, अपूर्ण। सुन्दराचार्य-शिष्य श्रीनिवासभट्ट कृत। (घ) श्लोक सं० ५०००(१ म से १४ वें प्रकाश तक) अपूर्ण। (ङ) श्लोक सं० ५००, अपूर्ण। (च) श्लोक सं० २७००, अपूर्ण। श्रीनिवास कृत। यह शिवपूजा पर निबन्ध ग्रन्थ है।

—अ० व० (क) १३७८, (ख) १२८७८, (ग) १०७२६, (घ) १२८५०, (ङ) ८१५५, (च) ५८५१

(५) श्रीनिवास कृत, यह शिवपूजा पर निबन्ध ग्रन्थ है।

—बी० कै० १३३२

(६) श्रीनिकेत-पुत्र श्रीनिवास कृत (क) श्लोक सं० १८३३०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ११५००, अपूर्ण। —र० मं० (क) ४९६१, (ख) ४९६९

(७) श्रीनिवासभट्ट कृत, श्लोक सं० १८१८०, अपूर्ण।

—सं० वि० २४९५९

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

शिवार्चनतत्त्व

लि०—पन्ने १७, पूर्ण। —बं० प० १०१५

शिवार्चनदीपिका

लि०—अद्वैतानन्दनाथ विरचित। श्लोक सं० २०००।

—अ० ब० ३५०२

श्रीनिवासार्चनमहारत्न

लि०—(१) गौड़भूमिनिवासी शङ्कराचार्य कृत। इसमें शिवपूजा के काल और अकाल, आधार, न्यास आदि का निरूपण करते हुए शिवपूजाविधि प्रतिपादित है।

—नो० सं० १।३६२

(२) 'संसारार्णवमग्नानां समुद्धरणहेतवे। शिवार्चनमहारत्नं शङ्करेण विरच्यते॥' यों ग्रन्थ का आरम्भ करते हुए अन्तिम पुष्पिका में लिखा है—'गौड़भूमिनिवासिश्रीशङ्कराचार्य विरचिते शिवार्चनरत्ने सप्तमः प्रकाशः।' गौड़भूमिनिवासी शङ्कराचार्य विरचित

यह ग्रन्थ ७ प्रकाशों में पूर्ण है। इसकी श्लोक सं० ७७७ है। इसमें वर्णित विषय हैं–शिवपूजा-माहात्म्य, पूजाविधि, लिङ्गनिर्माण आदि कथन, पुष्प आदि का विचार, होम आदि का निरूपण, पुरश्चरण, स्तव, कवच आदि का प्रतिपादन आदि ।

—रा० ला० २३७९

शिवार्चनमहोदधि

लि०—(१) भद्रानन्द विरचित, (क) श्लोक सं० १६०० (६ ष्ठ और ७ म परिच्छेदमात्र) अपूर्ण । (ख) श्लोक सं० ४२००, अपूर्ण ।

—अ० ब० (क) ५५३७, (ख) ५५४१

(२) (क) श्लोक सं० ५४२, अपूर्ण ; (ख) भद्रानन्द कृत, श्लोक सं० लगभग १३०२, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४०५७, (ख) २६०४७

शिवार्चनविधि

लि०—श्लोक सं० ३५० । इसमें शिवपूजा-विधि प्रतिपादित है ।

—ट्रि० कै० १०८४ (छ)

शिवार्चनशिरोमणि

लि०—(१) ब्रह्मानन्दनाथ विरचित, श्लोक सं० ४०००, १ उल्लास पूरे १२ वाँ उल्लास चालू, अपूर्ण ।

—अ० ब० १२१०२

(२) लोकानन्दनाथ-शिष्य ब्रह्मानन्दनाथ विरचित । उल्लास २१, अन्तिम २१ वें उल्लास की दो पुष्पिकाएँ दी गयी हैं—एक में ग्रन्थकार को पूर्णविद्येश्वरीसंविदानन्दनाथ-शिष्य नारायणानन्दनाथ कहा गया है और दूसरी में श्रीलोकानन्दनाथ-शिष्य ब्रह्मानन्द कहा गया है। इसमें १ म पुष्पिका का लेख गलत हो या ग्रन्थकार और उनके गुरुका उपनाम क्रमशः विद्येश्वरीसंविदानन्दनाथ तथा नारायणानन्द हों । क्योंकि अन्यत्र भी ब्रह्मानन्दनाथ ग्रन्थकार का नाम निर्दिष्ट है ।

—म० द० ५७२७

शिवार्चाक्रमकल्पवल्ली

लि०—(क) श्लोक सं० लगभग १३६०, अपूर्ण । (ख) श्रीनिवासभट्ट कृत, श्लोक सं० २८३०, पूर्ण ।

—सं० वि० (क) २४९५२, (ख) २६४२५

शिवार्चारत्न

लि०—श्लोक सं० १२० ।

—अ० ब० १०५०१

शिवोपनिषत्

लि०—विवरण द्रष्टव्य ए० बं० १८१२ में। —ए० बं० ६१६२

शिष्यलक्षण

लि०—देवी-ईश्वर संवादरूप। देवी के यह प्रार्थना करने पर कि भगवन्, कृपा कर सत् शिष्य-लक्षण, उपदेशक्रम और दीक्षा-भेद मुझे बतलावें। भगवान् ने देवी से सदाचार-सम्पन्न, शमादि गुणयुक्त, गुरुभक्त, वेदाभ्यासरत शिष्य होना चाहिये यों सब प्रश्नों का इसमें समाधान किया है। —म० द० ५७२३

शीतलासाधनविधि

लि०—धूमपान विधि के साथ संलग्न। संमिलित श्लोक सं० लगभग ६६, पूर्ण।
—सं० वि० २५८३५

शुकसंहिता

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी में।

शुक्रोपासितमृतसंजीवनी

लि०—श्लोक सं० १०३, पूर्ण। —सं० वि० २५९६४

शुद्धविद्याम्बापूजापद्धति

लि०—श्लोक सं० ४७२। पूर्ण। —र० मं० १०४६

शुद्धशक्तिमालामन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० ३०। —अ० ब० ८८१३ (ख)
(२) (क) श्लोक सं० ४०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ५४, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० ३५ अपूर्ण। —सं० वि० (क) २४१४१, (ख) २४३३०, (ग) २४४२

शुद्धशक्तिमालास्तोत्र

लि०—श्लोक सं० १२०। —अ० ब० १८२

शूलिनीकल्प

लि०—श्लोक सं० २००, अपूर्ण। —अ० ब० ९८२० (ग)

शूलिनीकवच

लि०—'क्रियाभेदवर्णन' के साथ संनिविष्ट। संमिलित श्लोक सं० ८२, पूर्ण।
—सं० वि० २५७२५

शूलिनीप्रयोग

लि०--श्लोक सं० लगभग ७५, पूर्ण । --सं० वि० २५४२०

शूलिनीमन्त्रप्रयोग

लि०--श्लोक सं० ५, पूर्ण । --सं० वि० २५९६५

शूलिनीविधान

लि०--(क) श्लोक सं० लगभग ३०, अपूर्ण । (ख) आकाशभैरवकल्पान्तर्गत श्लोक सं० लगभग २९०, अपूर्ण । --सं० वि० (क) २४१९७, (ख) २६०२७

शूलिनीस्तोत्र

लि०-आकाशभैरवकल्प के अन्तर्गत, उमा-महेश्वर संवादरूप । श्लोक सं० २८४० । इसमें शूलिनी देवी का यन्त्र, प्राणवीज, शक्तिवीज, नेत्रवीज, श्रोत्रवीज, जिह्वावीज, महावाक्य, मन्त्रगायत्री, यन्त्रगायत्री, अकारादि ५० वर्ण, दिक्पालवीज आदि यन्त्र के १० अङ्ग, जपमन्त्र, स्तोत्र आदि, पूजाविधि आदि प्रतिपादित हैं । यह ग्रन्थ २९ अध्यायों में पूर्ण है । --ट्रि० कै० ११२२

शेषसमुच्चय

लि०--(१) इसमें श्लोक सं० २००० और पटल सं० १० है । --अ० ब० १३१२८

(२) (क) श्लोक सं० १७५०, १० पटलों में पूर्ण । इसमें देवताओं की प्रतिष्ठा, पूजा आदि वर्णित हैं । (ख) श्लोक सं० १६०० । (ग) श्लोक सं० १२३५, यह ८ पटलों तक है । (घ) श्लोक सं० १२२५, यह छह पटल पर्यन्त ही है ।

--ट्रि० कै० (क) १०४८, (ख) १०४९, (ग) १०५०, (घ) १०५१ (क)

शेषसमुच्चयविमर्शिनी

लि०--(क)श्लोक सं० ५०० । यह शेषसमुच्चय की १० पटल पर्यन्त व्याख्या है, अपूर्ण । (ख) श्लोक सं० १८००, पूर्ण । (ग) श्लोक सं० ७००, अपूर्ण । (घ) श्लोक सं० १७०० । --ट्रि० कै० (क) १०५१(ख), (ख)-१०५३ (ग)१०५४, (घ) १०५५

शेषार्या सव्याख्या

लि०--मूलकार, शेषनाग । व्याख्याकार, राघवानन्द मुनि । श्लोक सं० ११५० । यह परमार्थसार के नाम से भी प्रख्यात है । --अ० ब० ७७८१ (क)

शैवकल्पद्रुम

लि०--(१) प्रद्युम्न-पौत्र रामकृष्ण-पुत्र लक्ष्मीधर विरचित। इसमें ५ काण्ड हैं। यह जगत् किससे उत्पन्न हुआ, इसमें कौन-कौन कारण हैं उनमें से कौन पूज्यतम हैं इत्यादि वहुत विषय वर्णित हैं। --ए० बं० ६४६३

(२) यह आठ ८ काण्डों में पूर्ण है। इसकी श्लोक सं० लगभग ३३०० है। आरंभ में जगत्कारणादि का निरूपण कर दीक्षा, जप, मण्डप आदि के लक्षण, गार्हस्थ्यविधि, प्रातः कृत्य, न्यासविधि, पूजा आदि, पार्थिव लिङ्गार्चनविधि,भस्म-स्नान, व्रतविधि, शिव-स्तोत्र आदि, शिवमाहात्म्यादि विषय इसमें वर्णित हैं। यह भुवनेश्वर में रचित हुआ है। --नो० सं० ४।३०४

शैवचिन्तामणि

लि०--यह ८ पटलों में पूर्ण है। इसमें शिवजी की पूजा विस्तार सेव र्णित है। रुद्राक्षधारण, मातृकान्यास, पञ्चाक्षरोद्धार, अन्तर्याग, मुद्रा, ध्यान, आसन, उपचार आदि उपवासनान्त शिवरात्रिव्रत वर्णन आदि विषय इसमें वर्णित है। --ए० बं० ६४७०

शैवतत्त्वामृत

लि०--पत्रे २७७। --तं० म० ११४००

शैवधर्मसंग्रह

लि०-- --प्राप्त ग्रन्थसूची से।

शैवपरिभाषामञ्जरी

लि०--शिवयोगिशिष्य निगमज्ञानदेव विरचित। श्लोक सं० १११६। १० पटलों में पूर्ण। --ट्रि० कै० १०५६

शैवभूषण

लि०--श्लोक सं० ४००, अपूर्ण। शैवसिद्धान्तानुसार पूजाविधि इसमें वर्णित है। ७ प्रकार के शैवों का निर्देश करते हुए शिवपूजा वर्णित है। --ट्रि० कै० १०५७

शैवरत्नाकर

लि०--ज्योतिर्नाथ कृत, श्लोक सं० लगभग १९२५, पूर्ण। --सं० वि० २५१०५

उ०--वीरशैवानन्दचन्द्रिका में।

शैवरश्मिमालामन्त्र

लि०—श्लोक सं० लगभग ४१, पूर्ण। —सं० वि० २५१३१

शैवसिद्धान्तमञ्जरी

लि०—श्रीकाशीनाथ कृत, श्लोक सं० लगभग १९०, पूर्ण। —सं० वि० २६२३५

शैवसिद्धान्तमण्डन

लि०—भड़ोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथभट्ट विरचित। इसमें प्रधानतः पौराणिक वाङमय के उद्धरणों द्वारा भगवान् शिव की सर्वश्रेष्ठता और महत्ता सिद्ध करने का यत्न किया गया है। —ए० वं० ६४५६

शैवागम

लि०—श्लोक सं० ७००। इसमें शिवपूजाविधि, मन्दिरोत्सव, ध्वजदण्ड-प्रतिष्ठा-विधि आदि विषय वर्णित है। —ट्रि० कै० १०५९

शैवागमनिबन्धन

लि०—मुरारिदत्त विरचित, श्लोक सं० ४७००, मन्त्र प्रयोग, मन्त्रसिद्धि, मुद्रा, दीक्षा, अभिषेक, शैवमण्डल, प्रतिष्ठा, जीर्णसंस्कार, सब प्रकार के स्नानों का निरूपण, उनके अङ्गभूत अन्यान्य कर्मों के साथ इसमें संक्षेपतः वर्णित हैं। यह ग्रन्थ २७ पटलों में पूर्ण है। —ट्रि० कै० १०५९-६०

शैवानुष्ठानकलापसंग्रह

लि०—गर्तवनशङ्कर कृत, श्लोक सं० १०५००। इसमें शैवानुष्ठानसंग्रह वर्णित है। देव-विग्रह की यथाविधि पूजा, अन्नदान आदि से सब की परितुष्टि, नवें दिन रात्रि में निशाहोम, विधिपूर्वक भूतबलिका विकिरण कर देवताओं को नमस्कार करना और क्षमा माँगना, तदुपरान्त उत्सवविधि आदि विषय वर्णित हैं। यह ग्रन्थ अति गोपनीय कहा गया है। —ट्रि० कै० १०६१

श्मशानकालीमन्त्र

लि०—इसमें श्मशान काली के बीजमन्त्र, पूजादि की पद्धति तथा प्रसङ्गतः बगला-मुखी-ध्यान आदि विषय वर्णित हैं। श्लोक सं० ११९। —रा० ला० ९९६

श्मशानार्चनपद्धति

लि०--श्लोक सं० ६०, अपूर्ण। --सं० वि० २५४७१

श्यामलारहस्य

उ०--सौभाग्यभास्कर में।

श्यामलाकल्पलतिका

लि०-- --प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

श्यामलासहस्रनाम

उ०--सौभाग्यभास्कर में।

श्यामाकल्पलता

लि०--(१) माधव कविकण्ठाभरण चक्रवर्ती के पुत्र रामचन्द्र कविचक्रवर्ती विरचित। यह ग्रन्थ अनिन्दित आचार मार्ग से साधकों को तान्त्रिक सिद्धि प्रदान करनेवाला है। यह ११ स्तवकों में पूर्ण है। --ए० बं० ६३०५

(२) यह लगभग ३००० श्लोकात्मक ग्रन्थ है। इसमें गुरु और शिष्य के लक्षण, दीक्षा की प्रशंसा, नवचक्रों का वर्णन, दक्षिणादेवी की नित्य पूजा, आसनादि विधि, विजया-शुद्धि, विविध न्यास, अवगुण्ठनादि नानाविध मुद्राएँ, विविध स्तव, कुमारीपूजन, वीर-साधन, आकर्षण-प्रयोग आदि पचासों विषय वर्णित हैं। नौ० सं० १।३७२

(३) श्लोक सं० ३२४०, स्तवक सं. ११। इसमें वर्णित विषय है--विद्यामाहात्म्य, दीक्षा-प्रकरण का उपदेश, नित्यपूजा के प्रमाण, श्यामा की स्तुति, श्यामाकवच, पुरश्चरण-विधि, विशेष प्रकार की साधना, रहस्य साधनविधि, भावादिका निर्णय, होमविधान आदि। --रा० ला० २६७

श्यामाकल्प

लि०-- --प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

श्यामाकल्पलतिका

लि०--(१) मथुरानाथ विरचित। इसके संस्करण बंगलालिपि में अनुवाद के साथ साथ प्रकाशित हो चुके हैं। इसका रचनाकाल १५१४ शकाब्द अथवा १५९२ ई० कहा गया है। --ए० बं० ६६५७--५९।

(२) इस पर एक टीका भी उपलब्ध है। --ए० बं० ६६६०

(३) महामहोपाध्याय मथुरानाथ कवि विरचित। श्लोक सं० २७९। इसमें श्यामास्तोत्र वर्णित है। --रा० ला० १६१३

श्यामाकवच

लि०--(१) भैरवयामल से गृहीत, श्लोक सं० ३६। --अ० ब० ३४२३ (ख)

(२) भैरवतन्त्रान्तर्गत भैरव-भैरवी संवादरूप यह कवच कालीकल्प, जो भैरव-तन्त्रान्तर्गत है, से लिया गया है। इसमें कालिका की आराधना में प्रवृत्ति कराने वाले प्रयोजन आदि वर्णित हैं। --रा० ला० ३८६

(३) (क) भैरवतन्त्रान्तर्गत, पूर्ण। (ख) भैरवतन्त्रान्तर्गत, जगन्मङ्गल नामक श्यामाकवच, पूर्ण। (ग) भैरवतन्त्रान्तर्गत। श्यामाकवच, पूर्ण। --बं० प० (क) ८७७, (ख) ३९१, (ग) १०६८ (ख)

श्यामाचारतन्त्र

लि०--इसमें श्यामादेवी की पूजाविधि प्रतिपादित है। --बी० कै० १३४३

श्यामापद्धति

लि०--(१) स्वप्रकाश विरचित, श्लोक सं० १०००। --अ० ब० १०४८३

(२) पत्रे ८, अन्त में भैरवतन्त्रोक्त जगन्मङ्गलकवच भी है। --रा० पु० ५८०९

(३) (क) श्लोक सं० ६३६, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ७३०। लिपिकाल १८०२ शकाब्द। --सं० वि० (क) २६३२०, (ख) २६५२५

श्यामापद्धतिरत्नाकर

लि०-- --ए० बं० ६३०९

श्यामापूजा

लि०--इसमें श्यामादेवी की पूजाविधि वर्णित है। --बी० कै० १३४४

श्यामापूजापद्धति (१)

लि०--(१) विवरण द्रष्टव्य रा. ला. ७२६। --ए० बं० ६३१३

(२) इसमें दक्षिणकाली की पूजापद्धति प्रतिपादित है। दक्षिणकालिका की पूजा की अङ्गभूत विधियाँ भी वर्णित हैं। श्लोक सं० २५०। --रा० ला० ७२६

(३) श्लोक सं० ३००, पूर्ण। --र० मं० ४८७२

(४) श्लोक सं० १६२, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ९६, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० लगभग १४०, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४९०२, (ख) २६१२३, (ग) २६२४९

श्यामापूजापद्धति (२)

लि०—चक्रवर्ती विरचित। इसमें उपासक के प्रातःकृत्य आदि तथा कालीपूजा वर्णित है। —ए० बं० ६३०९

(२) (क) पन्ने १९, पूर्ण। (ख) पन्ने १३ पूर्ण।

—बं० प० (क) ५६१ (क), (ख) ५६१ (ख)

श्यामापूजाप्रयोग

लि०—श्लोक सं० ३७२, अपूर्ण। —सं. वि. २४६१७

श्यामापूजाविधि

लि०—(क) श्लोक सं० लगभग ६०, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग १२४, पूर्ण। (ग) श्यामारहस्यान्तर्गत, मुण्डमालातन्त्रोक्त कालीककारादिशतनामस्तोत्र भी इसमें संनिविष्ट है। संमिलित श्लोक सं० ८६४, पूर्ण। (घ) श्लोक सं० लगभग ६५, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४६८०, (ख) २४६८१, (ग) २५७६३, (घ) २५७८१

श्यामापूजाव्यवस्था

लि०—श्लोक सं० लगभग १००, अपूर्ण। —सं० वि० २५२५१

श्यामाप्रकरण

लि०—(क) श्लोक सं० लगभग १४४, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० २४० (दो अपूर्ण पुस्तकों की), अपूर्ण। —सं० वि० (क) २४७५५, (ख) २६०९०

श्यामामन्त्र

लि०—इसमें दश महाविद्याओं के मन्त्र और बीजमन्त्र संगृहीत हैं तथा देवी की पूजा पद्धति भी सप्रमाण वर्णित है। इसकी श्लोक सं० ४३२ है।

जो मन्त्रवान् पुरुष काली का चिन्तन करता है उसे सब ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त होतीहैं। उसके मुँह से सभा में गद्यपद्यमयी वाणी अनायास अप्रतिहत रूप से प्रादुर्भूत होती है। उसके दर्शनमात्र से वादी हतप्रभ हो जाते हैं। राजा तक दासवत् उसकी सेवा करते हैं औरों की तो बात ही क्या? अग्नि को शीतल बना देना, जलधारा को रोक देना, सूर्य की गति रुद्ध

कर देना, दिन को रात और रात को दिन कर देना उसके बाँयें हाथ के खेल हैं। वह सबको वश करने में समर्थ होता है एवं अन्त में अत्यन्त दुर्लभ देवीगण होता है।

—रा० ला० ९३४

श्यामामानसार्चनविधि

लि०—शङ्कराचार्य विरचित, श्लोक सं० १४२। —अ० ब० १०६९४

श्यामामोदतरङ्गिणी

लि०—(१) महाभूत प्रोक्त, पार्वती-महाभूत संवादरूप। इसमें १२ पटल हैं। यह ग्रन्थ ककार मन्त्र, आकार मन्त्र, लकारमन्त्र, ईकार मन्त्र इत्यादि रूप से काली के विभिन्न मन्त्रों का प्रतिपादक है। अति सूक्ष्म रूप से काली पूजाविधि भी इसमें वर्णित है।

—ए० बं० ५९६४

(२) श्लोक सं० २७५, पूर्ण। —सं० वि० २५७२७

श्यामारत्न

लि०—यादवेन्द्र विद्यालङ्कार विरचित, श्लोक सं० १२००। इसमें दश महाविद्याओं के मन्त्रोद्धार, पुरश्चरण, जप, होम, दक्षिणा आदि विषय वर्णित हैं। दक्षिणाकाली की पूजापद्धति भी इसमें संनिविष्ट है। —रा० ला० ३७७

श्यामारहस्य

लि०—(१) पूर्णानन्द परमहंस विरचित। इसमें २२ परिच्छेद हैं। प्रतिपाद्य विषय हैं—न्यास-विवरण, अन्तर्यजन-विवरण, साधक का कुलवेष-निर्णय, रहस्यमाला, मन्त्र-सिद्धार्थविवरण, भिन्न-भिन्न मन्त्रों का विवरण, कालीतत्त्व-विवरण, पुरुषार्थसाधन विवरण, वीर्यमोचन, सामान्य-साधन, पुरश्चरणके बिना मन्त्र सिद्धि के उपाय, पीठजपनिर्णय, कुलाचारनिर्णय, महानीलक्रम-वर्णन, पुरश्चरणविवरण आदि।

—इ० आ० २५९७

—ए० बं० ६२९९

(२) विवरण, द्रष्टव्य रा० ला० ५९१

(३) पूर्णानन्द विरचित, (क) श्लोक सं० २५००। (ख) श्लोक सं० १५५० परिच्छेद ६ से १८ तक अपूर्ण, (ग) श्लोक सं० २५००।

—अ० ब० (क) १६४७, (ख) ३५०३, (ग) १२०१३

—बं० प० ११८

(४) पूर्णानन्द कृत, पन्ने १४५, पूर्ण।

(५) पूर्णानन्द गिरि कृत, (क) पत्रे १८५, पूर्ण। (ख) पत्रे ९६।

—जं० का० १०९०

(६) श्लोक सं० २३००। —डे० का० (१८८३–८४ ई०)

(७) पूर्णानन्दगिरि कृत (क) पत्रे १०४। (ख) पत्रे २२। (ग) पत्रे ६९।

—रा० पु० (क) ५६०५, (ख) ६२२१, (ग) ५६६२

(८) ब्रह्मानन्द गिरि-शिष्य वेदान्तागमतत्त्वविशारद, श्रीपूर्णानन्द परमहंस परिव्राजकाचार्य विरचित। श्लोक सं० २८३५, पटल सं० २२। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—कालीमाहात्म्य, कालीमन्त्र, उसके जप की प्रशंसा, प्रातःकाल के कर्म, तान्त्रिक सन्ध्या, कालीका ध्यान, पूजन आदि, कालीकवच, मन्त्रपुरश्चरण, शक्ति रूप स्त्रीसाधन, मद्य आदि में घृणा करने में दोष कथन, नीलसाधन, शवसाधन, ग्रहणकालीन पुरश्चरण, काम्य कर्म के लिए कुण्डविधान, शत्रुमारण, वशीकरण, उच्चाटन, वेतालादिसिद्धि, कौलप्रायश्चित्त आदि। —रा० ला० ५९१

(९) (क) श्लोक सं० २६१०, पूर्ण। (ख) पूर्णानन्द कृत, श्लोक सं० ३४९८, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० २९२५, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४०३७, (ख) २४८३१, (ग) २४९०४

उ०—सर्वोल्लास तथा कालीसपर्याविधि में।

श्यामार्चनचन्द्रिका

लि०—स्वर्णग्रामनिवासी गौड़महागमिक रत्नगर्भ सार्वभौम कृत, श्लोक सं० ५२५०। इसमें छह पटल हैं। शक्ति-माहात्म्य, विद्यामाहात्म्य, सामान्य और विशेष पूजा, उनके अङ्गभूतन्यास, भूतशुद्धि आदि, पुरश्चरण, शाक्तों के आचार, वीरसाधन आदि साधनभेद प्रभृति बहुत-से प्रकरण इसमें वर्णित हैं। —रा० ला० २२०

श्यामार्चनतरङ्गिणी

लि०—(१) श्री विश्वनाथ सोमयाजी विरचित। इसमें ११ वीचियाँ हैं। इसकी श्लोक सं० लगभग ३५०० है।

ब्राह्ममुहूर्त में जाग कर गुरु नमस्कारपूर्वक, कुलवृक्षों को नमस्कार, कुल वृक्षों का निर्देश, प्रातःकृत्य, स्थान-शुद्धि, द्वारपाल-पूजन का क्रम, अवरोह, संहार और आरोह रूपिणी भूतशुद्धि तथा प्राणायाम विवेचन, अन्तर्याग, मधुदान निषेध विवेचन, द्रव्यशुद्धि,

उपचार विवेचन, पूजाक्रमविवेचन, कुण्ड के १८ संस्कारों का विचार, होम प्रकार विचार तथा पशुप्रोक्षणविधि इत्यादि विषय इसमें वर्णित हैं। —नो० सं० ४।३०५

(२) श्यामार्चनतरङ्गिणी विश्वनाथ सोमयाजी कृत। कैट्. कैट्. २।१५९

श्यामार्चनमञ्जरी

लि०—अनारगिरि-शिष्य लालभट्ट विरचित, पत्रे ९३। —रा० पु० ५६२७

श्यामार्चापद्धति

लि०—श्लोक सं० १५००। —अ० ब० १०४५९

श्यामासंतोषणस्तोत्र

लि०—काशीनाथ तर्कपञ्चानन विरचित, निर्माणकाल १७५६ शकाब्द। यह चार उल्लासों में पूर्ण है। इसके १ म उल्लास में देवी की पूजा के नियम और अन्तिम ३ उल्लासों में देवीमाहात्म्य वर्णित है। —ए० बं० ६६६१

श्यामासपर्यापद्धति

लि०—विमलानन्दनाथ विरचित, श्लोक सं० ७००। —अ० ब० ७१४९

श्यामासपर्याविधि

लि०—(१) काशीनाथ तर्कालङ्कार विरचित। इसमें कालीपूजा का विस्तार से विवरण दिया हुआ है। नो० सं० २।२२४ में इसके ७ विभाग (अध्याय) बतलाये गये हैं और इसका निर्माण-काल दिया है १६९९ शकाब्द (१७७७ ई०)। इसके विभागों के विषयों में भी ऐकमत्य नहीं है। —ए० बं० ६३०३

(२) निगमागम विद्याविद्योतित श्री काशीनाथ भट्टाचार्य ने वन्दनीय जनों के बार-बार प्रेरणा करने पर तीनों तन्त्रों का विचार कर श्यामासपर्या की रचना की। विष्णुसहस्र-नाम की तीन आवृत्ति पाठ करने से मनुष्य को जो फल लाभ होता है उसे एक बार 'काली' कहने से मनुष्य प्राप्त करता है। काली नामोच्चारण मात्र से सब कुछ प्राप्त हो जाता है। इस ग्रन्थ की रचना शकाब्द १६९१ रविवार मार्ग कृष्ण ४ को काशी में पूर्ण हुई। यह ग्रन्थ सकल पदार्थों का साधक है। यह ७ विभागों में पूर्ण है। इसमें निम्न निर्दिष्ट विषय प्रतिपादित है—प्रातःकृत्य, अन्तर्याग, बहिर्याग, महापीठपूजा, कुलाचारादि कथन, नैमित्तिक पूजन, काम्यसाधन, विद्यामाहात्म्य कथन आदि। —नो० सं० २।२२४

(३) काशीनाथ भट्टाचार्य विरचित, श्लोक सं० ५०००, अपूर्ण।

—अ० ब० १०१२१

(४) (क) काशीनाथ शर्मा कृत, श्लोक सं० २६८, अपूर्ण। (ख) काशीनाथ तर्कालङ्कार भट्टाचार्य कृत, श्लोक सं० लगभग ३४४०, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २६४०५, (ख) २६५०४

श्यामास्तोत्र

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत भैरवतन्त्र से गृहीत। यह स्तोत्र 'महत्' विशेषण से विशिष्ट नामों का संग्रह है। यह अष्टोत्तरशतनामस्तोत्र कहा गया है।

—ए० बं० ६६३५

(२) वीरतन्त्रान्तर्गत महाकाल कृत, श्लोक सं० ५४, इसमें दक्षिणकाली की स्तुति वर्णित है।

—रा० ला० ४२१

श्रीकण्ठन्यासप्रमाण

लि०—श्लोक सं० लगभग ६०, इसमें 'श्रीविद्यासुन्दरीन्यास' भी संनिविष्ट है। अपूर्ण।

—सं० वि० २६४०१

श्रीकण्ठाचार्य (ग्रन्थकार)

उ०—ललितार्चनचन्द्रिका में।

श्रीकण्ठीसंहिता

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल, तन्त्रालोक, स्वच्छन्दतन्त्र तथा श्यामासपर्याविधि में

श्रीकान्तकल्पवल्ली

लि०—

—प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

श्रीकापालेश्वरीभीमादेवीपूजापद्धति

लि०—पितृनिर्मोचनिका नामक। अक्षर नेवारी। पत्रे ५।

—ने० द० १।१५५९ (ङ)

श्रीकुल

उ०—योगराज कृत अभिनवीय परमार्थसार-टीका में।

श्रीकृष्णकवच

लि०—सनत्कुमारतन्त्रान्तर्गत, यह कवच त्रैलोक्यमङ्गल नाम से ख्यात है।

—नो० सं० ३।३०९

श्रीकृष्णतन्त्र

लि०—गोशालाकल्पान्तर्गत, श्लोक सं० ५९२०। इसमें ज्येष्ठातन्त्र, नागवलिकल्प, तृणगर्भविधि, शक्तिदण्डवलि, सर्पवलि, कुवेरकल्प और श्रीकृष्णतन्त्र इत्यादि विषय वर्णित हैं। इसलिए इसका नाम यदि इससे व्यापक होता तो उत्तम होता।

—ट्रि० कै० १०६२

श्रीक्रम

उ०—तन्त्रसार में।

श्रीक्रमचन्द्रिका

लि०—रामभट्ट सभारञ्जक विरचित, श्लोक सं० १०००। ४ परिच्छेदों में।

—अ० ब० ९११४

श्रीक्रमसंहिता

लि०—पूर्णानन्द परमहंस विरचित। यह २५ प्रकाश पर्यन्त है।

—वं० प० १४०३

उ०—पुरश्चर्यार्णव, तन्त्रसार, मन्त्रमहार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

श्रीक्रमोत्तम

लि०—निजानन्द प्रकाशानन्द मल्लिकार्जुनयोगीन्द्र कृत (४ अध्यायों में) इसकी एक हस्तलिखित पूरी प्रति (१–९७ पृष्ठ की) मैंने (सम्पादक ने) काशीवासी पण्डित अम्बिकादत्त व्यासजी के संग्रह में श्री गिरिधारीलाल व्यास के सौजन्य से देखी थी।

श्रीगुरुकवच

लि०—पार्वती-महादेव संवादरूप यह निगमसार के अन्तर्गत है। कौलिकों के कुलाचार और योगियों के योगसाधन का प्रतिपादक यह परम दिव्य कवच सर्वसिद्धि प्रदायक कहा गया है।

—रा० ला० ४७९

श्रीगुरुस्तोत्र

लि०—शिव-पार्वती संवादरूप। निगमसारान्तर्गत। भगवान् शिवजी ने पार्वतीजी से पूछा कि लोकहितार्थ ऐसा कोई कवच बतलाइए जिसके अनुष्ठानमात्र से नर योगी हो

जाय। पार्वतीजी ने यही कवच बतलाया और कहा कि यह अत्यन्त दुर्लभ स्तोत्र है। विधिपूर्वक इसका अनुष्ठान करने से मनुष्य भवार्णव पार कर लेता है। श्लोक सं० २०।
—रा० ला० ४०७८

श्रीचक्रकल्प

लि०—श्लोक सं० २६६ (१ प्रकरण)। —अ० ब० १३२६०

श्रीचन्द्रक्रमदर्पण

लि०—अनुभवानन्दनाथ-शिष्य प्रकाशानन्दनाथ कृत। श्लोक सं० ५४००। इसमें कमलमन्त्र, लीलानिघण्टु और दारकरण मन्त्र हैं। —अ० ब० १३३७५ (ख)

श्रीचक्रन्यास

लि०—श्लोक सं० १२५, अपूर्ण। —अ० ब० ५६८०

श्रीचक्रन्यासकवच

लि०—श्लोक सं० ७७। —अ० ब० ११७५९

श्रीचक्रपुष्पाञ्जलि

लि०—श्लोक सं० लगभग ७२, पूर्ण। इसमें दिव्यौघ, गुरुपारम्पर्यक्रम, तत्त्वशोधन आदि विषय वर्णित हैं। —सं० वि० २४२८३

श्रीचक्रपूजन

लि०—कमलजानन्दनाथ कृत, श्लोक सं० १२००। —अ० ब० ८३०६

श्रीचक्रपूजा

लि०—यह श्रीचक्र की पूजा का प्रतिपादक ग्रन्थ है। इसमें गुरु के उपदेशानुसार ऋष्यादि करन्यास, पञ्चाङ्गन्यास कर तथा देवी का ध्यान कर पूजा आरंभ करनी चाहिए। अपने दक्षिण भाग में कलशाधार की प्रतिष्ठा कर तथा महात्रिपुरसुन्दरी के अर्घ्यपात्र के आधार को नमस्कार कर पूजा करे, यों पूजाविधि प्रतिपादित है। —म० द० ५७२९

श्रीचक्रपूजाविधान

लि०—इष्ट देवता के यजन का संकल्प कर हेतुकलशस्थापन विधि के उपरान्त चर्मान्वाक् पठन की विधि है। उसके पश्चात् योगिनी के हाथों में स्थित कलश को लेकर वामदेवाय फं नमः ७ वार अभिमन्त्रित कर स्वयं पूर्णपात्र को स्वीकार कर सब पात्रों का प्रक्षालन कर यथासुख विहार करे इत्यादि विधि वर्णित है। —म० द० ५७३०

श्रीचक्रपूजाविधि

लि०—श्लोक सं० लगभग २५६, अपूर्ण। —सं० वि० २५१६९

श्रीचक्रमयूखविवरण

लि०—श्लोक सं० लगभग ११६, अपूर्ण। —सं० वि० २३८६५

श्रीचक्रलक्षण

लि०—श्लोक सं० लगभग २८, पूर्ण। —सं० वि० २६२८२

श्रीचक्रलेखनप्रकार

लि०—इसमें श्रीचक्रलेखनविधि वर्णित है। —म० द० ५७३१

श्रीचक्र विवरण

लि०—इसमें श्रीचक्र या श्रीविद्याचक्र के लिखने के प्रकार का विवरण दिया गया है। —म० द० ५७३२

श्रीचक्राधिष्ठानदेवताश्लोक

लि०—ये श्लोक श्रीचक्र के विभिन्न भागों में स्थित देवियों के नाम का निर्देश करते हैं। —म० द० ५७३३

श्रीचक्रार्चनलघुपद्धति

लि०—यह पद्धति परशुराम कल्पसूत्रानुसारिणी है। श्लोक सं० ४२०, पूर्ण। —र० मं० ४८८२

श्रीचक्रार्चनविधि

लि०—(१) जगन्नाथ-पुत्र हरपुरनिवासी शाण्डिलगोत्र पृथ्वीधर मिश्र विरचित परशुराम कल्पसूत्र के अनुसार। पन्ने छह। —रा० पु० ५८०५

(२) इसमें वरिवस्याप्रकाश के अनुसार चक्रार्चनविधि वर्णित है; श्लोक सं० २४०। —अ. ब. १३४७०

श्रीचक्रोद्धारविधि

लि०—षोडशाक्षरी विद्या की दुर्बोध पदव्याख्या से संसृष्ट संमिलित श्लोक सं० ७८, अपूर्ण। —सं० वि० २६५२८

श्रीतत्त्वचिन्तामणि

ब्रह्मानन्द-शिष्य पूर्णानन्द परमहंस कृत। यह प्रकाशित हो चुका है।

लि०—(क) पूर्णानन्द कृत, श्लोक सं० ७८, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग २००, पूर्ण। —सं० वि० (क) २४०३९, (ख) २६३६४

श्रीतत्त्वबोधिनी

लि०—श्रीनाथ-शिष्य कृष्णानन्द विरचित। यह २५०० श्लोकात्मक ग्रन्थ १५ पटलों में विभक्त है। उनमें प्रतिपादित विषय हैं—गुरुस्तोत्र, कवच आदि, नित्यकर्मानुष्ठान, पूजा आदि, शिवपूजा-विधि, पूजा के आधार आदि तथा न्यासों का विवरण, साधारण पूजा कथन, जपरहस्य, पञ्चाङ्ग, पुरश्चरणकथन, ग्रहणावसर के पुरश्चरण आदि का विवरण, होम, कुमारीपूजा आदि, षट्चक्रविधि, शान्ति, पुष्टि, वश्य आदि षट्कर्म कथन, शान्तिकल्पविधि, आथर्वणोक्त ज्वरशान्ति कथन इत्यादि। यह पुस्तक अपूर्ण प्रतीत होती है। —रा० ला० २८१

श्रीतन्त्र

लि०—देवी-महादेव संवादरूप। यह छह पटलों में पूर्ण है। इसमें कुल ४२५ श्लोक हैं। —ए० बं० ५८२०

श्रीतन्त्रसद्भाव

उ०—श्यामासपर्यापद्धति में।

श्रीदेवीपूजाविधान

लि०—इसमें शक्ति देवी की पूजाविधि प्रतिपादित है। —म० द० ५७३४

श्रीनाथादिषडाम्नायक्रम

लि०—स्वयंप्रकाशेन्द्र सरस्वती कृत, श्लोक सं० लगभग ३२१, पूर्ण। लिपिकाल १७९२ वि०। —सं० वि० २३८६८

श्रीनाथादिक्रमबलि

लि०—श्लोक सं० ६०। —अ० ब० ११९७३

श्रीपञ्चार्थक्रम

लि०—श्लोक सं० १२५, इसमें शक्तिपूजा का विवरण दिया गया है। —ट्रि० कै० ११२७ (ठ)

श्रीपद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० २५०, अपूर्ण। —अ० ब० १०७०४
(२) श्लोक सं० लगभग ३९२, पूर्ण। —सं० वि० २६५६४
(३) पन्ने ९६, पूर्ण। —डे० का० ४९५ (१८७५–७६ ई०)

श्रीपराक्रम

उ०—योगिनीहृदयदीपिका में।

श्रीपरापूजन

लि०—ईश्वरयोगी चिद्रूपानन्द विरचित, श्लोक सं० ९६९, पूर्ण।
—डे० का० ४०२ (१८८३–८४ ई०)

श्रीपादुकानमस्कार

लि०—श्लोक सं० लगभग १९१, अपूर्ण। —सं० वि० २५१५८

श्रीपूजनपद्धति

लि०—श्लोक सं० लगभग १०७, अपूर्ण। —सं० वि० २६०८५

श्रीपूजापटल

लि०—कालीकल्पान्तर्गत। श्लोक सं० १५०, पूर्ण। —सं० वि० २६२२२

श्रीपूजापद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० ५००। —अ० ब० ५७२७
(२) (क) श्लोक सं० लगभग ११७, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग ३००, अपूर्ण (?)। —सं० वि० (क) २५००६, (ख) २५२८९

श्रीपूजामहापद्धति

लि०—भूर्जपत्रलिखित। —डे० का० (१८७५-७६ई०)

श्रीपूजारत्नमयूख

लि०—सत्यानन्दकृत, श्लोक सं० लगभग ८८०, पूर्ण। लिपिकाल संवत् १७९६ वि०।
—सं० वि० २६११०

श्रीपूर्वशास्त्र

उ०—जन्ममरणविचार में।

श्रीमतरहस्यतिलक

उ०—जन्ममरणविचार में।

श्रीमतसारटिप्पन

लि०—यह श्रीमतसार पर किये गये टिपनों Notes का संग्रह है। नौ सिद्ध, प्रत्येक सिद्ध की दो-दो शक्तियाँ तथा परमात्मा के शरीर की अकारादि वर्णों से रचना आदि विषय इसमें विस्तार से वर्णित हैं। यह ८ पटलों में है। —ए० बं० ५८०७

श्रीमतोत्तरतन्त्र

लि०—श्रीकण्ठनाथावतारित। यह २४००० श्लोकों का तन्त्र ग्रन्थ २५ पटलों में पूर्ण है। —ने० द० १।१४१२

श्रीमन्त्रविधान

लि०—श्लोक सं० लगभग ३७, अपूर्ण। —सं० वि० २५९२७

श्रीयन्त्रचिन्तामणि

लि०—दामोदर कृत, श्लोक सं० १०२०, पूर्ण। लिपिकाल संवत् १८८० वि०। —सं० वि० २६२०४

श्रीयन्त्रार्चन

लि०—श्लोक सं० लगभग ३८, पूर्ण। —सं० वि० २५८७७

श्रीराजिका

उ०—मन्त्ररत्नावली में।

श्रीरामपद्धति

लि०—सहजानन्दशिष्य विरचित। इसका पुरश्चरण छह लाख है। इसमें श्रीरामचन्द्र की पूजाविधि आदि विषय वर्णित हैं। श्लोक सं० २५९। —रा० ला० ४२११

श्रीविद्यागोपालचरणार्चनपद्धति

लि०—गगनानन्दनाथ-शिष्य चिदानन्दनाथ विरचित। इसमें पूजक के दैनिक कृत्यों से आरंभ कर त्रिपुरा और गोपाल दो देवताओं की संयुक्त पूजापद्धति वर्णित है। —ए० बं० ६३४६

श्रीविद्या

लि०—पत्रे ३२१, पूर्ण। —डे० का० ८ (१८७५-७६ ई०)

श्रीविद्या और भैरवप्रयोग

लि०—पत्रे २५, श्लोक सं० ४३७। —डे० का० २५८ (१८८३-८४ ई०)

श्रीविद्याजपविधि

लि०—श्लोक सं० लगभग ३०, अपूर्ण। —सं० वि० २६६७१

श्रीविद्याटीका

लि०—(१) अगस्त्य कृत, (क) श्लोक सं० १२०। (ख) श्लोक सं० १२०।
—अ० ब० (क) ६२०३, (ख) ७७९०

(२) अगस्त्यमुनि कृत, श्लोक सं० १४४, पूर्ण। —सं० वि० २५६५७

श्रीविद्यानित्यपूजापद्धति

लि०—साहिव कौलानन्दनाथ विरचित। —ए० बं० ६३५४

श्रीविद्यानिरूपण

लि०—श्लोक सं० १८, अपूर्ण। —सं० वि० २६०८०

श्रीविद्यान्यासदीपिका

लि०—काशीनाथ रचित, लगभग २४८, पूर्ण। —सं० वि० २५४७५

श्रीविद्यापञ्चाक्षरीमन्त्र

लि०—श्लोक सं० ८०। —अ० ब० ५७७

श्रीविद्यापटल

लि०—दक्षिणामूर्त्तिसंहितोक्त। पत्रे १५। —रा० पु० ५७५५

श्रीविद्यापद्धति

लि०—(१) कादिमतानुसार, (क) श्लोक सं० १०००। (ख) श्लोक सं० १०००।
—अ० ब० (क) १०५७०, (ख) १२०४५

(२) षट्चक्रों में देवीपूजा के लिए इसमें निर्देश दिये गये हैं। श्री निजात्मप्रकाशानन्द योगीन्द्र विरचित। ये ज्ञानानन्द के शिष्य थे। यह ग्रन्थ दो खण्डों में है। २य खण्ड में ४ उल्लास हैं। —बी० कै० १३३५

(३) श्लोक सं० ५५४, पूर्ण। —र० मं० ४८७३

श्रीविद्यापरिवारपूजन

लि०—श्लोक सं० लगभग २००, अपूर्ण। मन्त्रमहोदधि के अन्तर्गत।

—सं० वि० २५८६६

श्रीविद्यापूजनसंकेत

लि०—श्लोक सं० ६०। —अ० ब० ११८२४ (क)

श्रीविद्यापूजापद्धति (१)

लि०—श्रीकर विरचित, श्लोक सं० ३०००, पटल सं० ८।

—अ० ब० १०३५७

श्रीविद्यापूजापद्धति (२)

लि०—(क) रामानन्द रचित, श्लोक सं० ६२१, पूर्ण। लिपिकाल शकाब्द १७४६। (ख) श्लोक सं० ८२८, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २५२७७, (ख) २६५४१

श्रीविद्यापूजाविधान

लि०—इसमें श्रीचक्र की षोडशोपचार पूजाविधि प्रतिपादित है।

—म० द० ५७३५

श्रीविद्यामन्त्रदीपिका

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित। इसमें त्रिपुरामन्त्र का अर्थ दिया गया है। देवता के यथार्थ स्वरूप के प्रतिपादक वाक्य विविध मूल तन्त्रों से इसमें उद्धृत है।

—ए० बं० ६३४५

श्रीविद्यामन्त्ररत्नसूत्र

लि०—(१) गौड़पादाचार्य विरचित। श्लोक सं० ४०। अपूर्ण।

—अ० ब० १०३५७

(२) श्रीशुकयोगीन्द्र-शिष्य श्रीगौड़पादाचार्य विरचित। इसमें श्रीविद्यामन्त्र के प्रत्येक वर्ण का तान्त्रिक तात्पर्य, उन वर्णों की प्रतिनिधि देवियाँ तथा शाक्त सम्प्रदाय के सिद्धान्त वर्णित हैं।

—म० द० ५७३७ से ४०

श्रीविद्यामन्त्ररत्नसूत्रव्याख्या (दीपिका)

लि०—श्लोक सं० ५००, अपूर्ण। —अ० ब० १०६५९

श्रीविद्यामालामन्त्र

लि०—ललितापरिशिष्टतन्त्रोक्त, पन्ने १४। —रा० पु० ५७९८

श्रीविद्याम्नायोपनिषत्

लि०—इसमें श्रीविद्यामन्त्र का आम्नाय उपनिषत् की शैली में वर्णित है। —म० द० ५७३६

श्रीविद्यारत्नदीपिका

लि०—शङ्करारण्य विरचित। श्लोक सं० ११०४, पूर्ण। —सं० वि० २५११८

श्रीविद्यारत्नसूत्र

लि०—श्रीशुकयोगीन्द्र के शिष्य श्रीगौड़पादाचार्य विरचित। इसमें श्रीविद्यामन्त्र के प्रत्येक वर्ण का तान्त्रिक तात्पर्य, उन वर्णों की प्रतिनिधिभूत देवियाँ तथा शाक्त सम्प्रदाय के मूल सिद्धान्त वर्णित हैं, पूर्ण। —म० द० ५७३७ से ४० तक

श्रीविद्यारत्नसूत्रदीपिका

लि०—(१) विद्यारण्य विरचित, पन्ने ४४। —रा० पु० ५६६५

(२) (क) पन्ने २७, पूर्ण। परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीविद्यारण्य विरचित श्री-विद्यारत्नसूत्रकी दीपिका नाम की व्याख्या। (ख) पन्ने ३७, इस प्रति की पुष्पिका में दीपिका-कार का नाम परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमद्विद्यारण्य मुनिवर्य-शिष्य श्रीशङ्करारण्य मुनि दिया है। —म० द० (क) ५७४१, (ख) ५७४२

श्रीविद्यार्चनपद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० ५००, अपूर्ण। —अ० ब० ५४३५

(२) मन्त्रमहोदधि के अनुसार, पन्ने ४७। —रा० पु० ७५०२

श्रीविद्यार्चनसंक्षेपपद्धति

लि०—मन्त्रमहोदधि में उक्त, पन्ने ३७। —रा० पु० ५४६८

श्रीविद्यार्णव

लि०—श्लोक सं० ५९६, अपूर्ण। —सं० वि० २३९०१

श्रीविद्यार्थदीपिका

विद्यारण्य विरचित।

उ०——सौन्दर्यलहरी की सौभाग्यवर्द्धिनी टीका में।

श्रीविद्यालघुपद्धति

लि०——श्लोक सं० ५००, ४ प्रकाशों में। ——अ० ब० १०८२०

श्रीविद्याविधान

लि०——श्लोक सं० ९, अपूर्ण। ——सं० वि० २५०५५

श्रीविद्याविलास

लि०——श्रीशङ्कराचार्य-शिष्य मगनानन्दनाथ कृत, ७ उल्लासों में श्रीविद्या के उपासक की दिनचर्या, सुन्दरीपूजा, प्राणायाम, श्रीचक्रपूजा, आवरणपूजा, पारायणक्रम तथा पुरश्चरणविधि इसमें वर्णित है। ——म० द० ५७४३-४५

श्रीविद्याविशेषपद्धति

लि०——श्लोक सं० ९४५, अपूर्ण। ——र० मं० ४८५७

श्रीविद्याविशेषपूजापद्धति

लि०——श्लोक सं० लगभग ५२५, पूर्ण। ——सं० वि० २६२४७

श्रीविद्यासंक्षेपपद्धति

लि०——श्लोक सं० ७५। ——अ० ब० १६८८

श्रीविद्योपासनापद्धति

लि०——श्लोक सं० ५१८, पूर्ण; लिपिकाल संवत् १८७५ वि०।
——सं० वि० २५०७४

श्रीसिद्धसूक्ति

लि०——श्रीसिद्धशाम्भवतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ६५०। महेशादि सिद्धों ने जिस रसशास्त्र को पहले प्रकाशित किया उसी से उद्धृत अनुभूतार्थ यह श्रेष्ठ सिद्धसूक्ति है। इसमें रसायनविधि वर्णित है। पारद के १८ संस्कार इसमें प्रतिपादित हैं। यह १३ पटलों में है।
——ट्रि० कै० १०१९ (ग)

श्रीसूक्तपद्धति

लि०——श्लोक सं० २२५। ——अ० ब० ११७१६

श्रीसूक्तविद्याचन्द्रिका

लि०—भासुरानन्द ? कृत, श्लोक सं० ५२७। —अ० व० १२६१२

श्रीसूक्तविधान

लि०—(१) इसमें भाग्योदय के लिए श्रीसूक्त का तान्त्रिक प्रयोग वर्णित है। श्रीसूक्त के प्रत्येक सूक्त से विभिन्न न्यास करने का इसमें निर्देश किया गया है। उसके अनन्तर लक्ष्मी की सूक्त मन्त्रों से पूजा प्रतिपादित है। इसे ही तान्त्रिक भाषा में पुरश्चरण कहते हैं। —ए० बं० ६५००, ६५०१

(२) (क) श्लोक ६०। (ख) श्लोक २००। (ग) श्लोक २५। विद्यारण्यकृत बीज सहित। —अ० व० (क) ५५८४, (ख) ८२३६, (ग) ११७६१

श्रीसूक्तविधानकारिका

लि०—श्रीवैद्यनाथ पायगुण्डे कृत। श्लोक सं० ७८६। —अ० ब० १३७८०

श्रीसूक्तविधि

लि०—श्लोक सं० १५०। —अ० ब० ८३४७

श्रुतिसारसमुद्धरणप्रकरण

लि०—त्रोटकाचार्य विरचित। इसमें देवी की तान्त्रिक पूजा प्रतिपादित है। पत्रे ६५। —बी० कै० १३३६

श्वेतकालीस्तोत्र

लि०—वाडवानलीयमहातन्त्रान्तर्गत, इसमें श्वेतकाली-कवच, श्वेतकाली-सहस्रनाम, श्वेतकाली-स्तवराज तथा श्वेतकाली-मातृकास्तोत्र वर्णित है। —ए० बं० ६६४८

षट्कर्म

लि०—वशीकरण मात्र, श्लोक सं० २५, अपूर्ण। —सं० वि० २५२३७

षट्कर्मदीपिका

लि०—(१) श्रीकृष्ण विद्यावागीश भट्टाचार्य विरचित। इसमें तन्त्र के स्तम्भन, मोहन, मारण, उच्चाटन आदि षट्कर्म वर्णित हैं। यह बंगला लिपि में प्रकाशित हो चुका है। —ए० बं० ६५२९

(२) ९ उपदेशों में पूर्ण है। इसमें षट् कर्म देवियों—कृत्या देवी, महात्रिपुरसुन्दरी, भद्रकाली—को नमस्कार कर आभिचारिक षट् कर्मों के उपाय और विधि कही गयी है।

—नो० सं० ४।३०९

(३) कृष्णानन्द कृत, अपूर्ण।

—जं० का० १०९७

(४) (क) श्लोक सं० लगभग ७५, अपूर्ण। (ख) कृष्णानन्द भट्टाचार्य कृत, श्लोक सं० लगभग ९४०, अपूर्ण। (ग) श्रीकृष्ण विद्यावागीश भट्टाचार्य कृत, श्लोक सं० ९२०, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २४३८४, (ख) २४७३४, (ग) २६३८२

षट्कर्मप्रदीपिका

श्रीकृष्ण विद्यावागीश भट्टाचार्य कृत, श्लोक सं० १०००, उद्देश सं० ९।

—अ० ब० १०६६२

(६) श्रीकृष्ण विद्यावागीश कृत (नवमोद्देशान्त)। पूर्ण।

—बं० प० ३६३

षट्कर्मप्रयोग

लि०—(१) श्लोक सं० ५०, अपूर्ण।

—अ० ब० ७३०६

(२) कालरात्रिकल्पान्तर्गत। इसमें, विशेष रात्रि में (काल रात्रि में), देवीजी की तान्त्रिक पूजा के सम्बन्ध में निर्देश प्रतिपादित है।

—बी० कै० १२७०

(३) श्लोक सं० २२, पूर्ण।

—सं० वि० २४६४७

षट्कर्मलक्षण

लि०—(१) इसमें शान्तिक, वशीकरण, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन और मारण इन तान्त्रिक कर्मों के लक्षण, इनके देवता, आवश्यक द्रव्य, स्थान, काल, प्रयोगविधि आदि विषय वर्णित हैं।

—नो० सं० ३।३१४

(२) श्लोक सं० २८, अपूर्ण।

—सं० वि० २४१६३

षट्कर्मविधि

लि०—(१) कुलार्णवान्तर्गत, इसमें कुल ३० श्लोक हैं। तन्त्र के छह कलुष कर्मों—मारण, मोहन, उच्चाटन आदि कर्मों—की विधि वर्णित है। यह ग्रन्थ कुलार्णव का १६ वाँ पटल है।

—ए० बं० ५९१४

(२) पन्ना १, मन्त्रमहोदधि में उक्त षट्कर्मनिरूपणान्तर्गत।

—सं० वि० २५८६५

षट्कर्मोल्लास

लि०—(१) ब्रह्मानन्द-शिष्य पूर्णानन्द परमहंस कृत। यह १२ उल्लासों में पूर्ण है। इसमें विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, स्तंभन, मारण तथा मोहन, इन षट्कर्मों के विषय में तिथि, नक्षत्र तथा आसनों का नियम उक्त है। माला का नियम, कुण्डनिर्णय, नायिका-सिद्धि, वीरसाधना, शान्तिविधान और षट्क्रियाओं की पृथक्-पृथक् दक्षिणा ये विषय भी इसमें वर्णित हैं। —नो० सं० ४।३०८

षट्क्रम

लि०—(१) उड्डीशमतान्तर्गत। इसमें मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, स्तम्भन, संमोहन ये छह तन्त्रिक क्रूर कर्म ही नहीं कहे गये हैं, जलस्तम्भन, अग्निस्तंभन, पादप्रचार, केशरञ्जन, रसायनाधिकार, राज्यकरणयोग, स्त्रीयोगमाला आदि विविध विषय वर्णित हैं। यह लगभग दो दर्जन पटलों में पूर्ण है। —ने० द० २।३६० (इ)

षट्चक्रक्रमदीपिका

लि०—श्रीतन्त्रचिन्तामणि के अन्तर्गत, पूर्णानन्द कृत नन्दराम तर्कवागीश कृत टीका सहित, पूर्ण। —बं० प० ३६२

षट्चक्रटीका (१)

लि०—(१) श्रीशङ्कर कृत। यह षट्चक्र नामक तन्त्र ग्रन्थ की व्याख्या है। ज्ञात होता है कि यह षट्चक्र पूर्णानन्द विरचित षट्चक्रनिरूपण से अतिरिक्त नहीं है। —नो० सं० १।३८२

(२) श्लोक सं० लगभग ३०, अपूर्ण। —सं० वि० २६०८९

षट्चक्रदीपिकाटीका (२)

(१) —नो० सं० २।३८४

(२) पूर्णानन्द विरचित षट्चक्र पर यह रामनाथ सिद्धान्त कृत टीका है। इसका नाम षट्चक्रदीपिका है। यह कौलोपासना से सम्बद्ध तन्त्रग्रन्थ है। —रा० ला० २१३०

षट्चक्रदीपिका

लि०—रत्नेश्वर तर्कवागीश कृत। श्लोक सं० लगभग ४७०, पूर्ण। —सं० वि० २६००७

षट्चक्रनिरूपण (१)

लि०—(१) पूर्णानन्द विरचित। श्रीतत्त्वचिन्तामणि का एक अंश। ये श्रीतत्त्वचिन्तामणि के आरम्भिक छह अध्याय हैं। किसी-किसी ने इसे ब्रह्मानन्द गिरि विरचित कहा है। इस पर दो टीकाएँ हैं—(१) चक्रदीपिका, रामवल्लभ (नाथ ?) कृत, (२) षट्चक्रक्रमदीपिनी, श्रीनन्दराम कृत। यह ग्रन्थ किस ग्रन्थ का अंश है और इसका कौन निर्माता है इस विषय में बहुत वैमत्य दिखायी देता है।

—ए० बं० ६३५६ से ६३६०

(२) इस पर रामवल्लभ (रामदुर्लभ ?) कृत टीका है। —नो० सं० १।३८५

(३) पूर्णानन्द कृत, श्लोक सं० लगभग १२०, अपूर्ण। —सं० वि० २५७६२

[यह कालीचरण, शङ्कर और विश्वनाथ विरचित टीकाओं के साथ प्रकाशित हो चुका है]

षट्चक्रनिरूपण (२)

लि०—कैवल्यकलिकातन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० लगभग १००, अपूर्ण।

—सं० वि० २६३३५

षट्चक्रनिर्णय

लि०—योनिमुद्रा तथा अभिलाषाष्टक के साथ संनिविष्ट, संमिलित श्लोक सं० लगभग ६०, पूर्ण। —सं० वि० २५०२८

षट्चक्रनिलय

लि०— —डे० का० २४४ (१८७५–७६ ई०)

षट्चक्रप्रकाश

लि०—(१) पूर्णानन्द कृत, पूर्ण। —बं० प० १३९१

(२) श्लोक सं० लगभग १६०, पूर्ण —सं० वि० २५५५४

षट्चक्रप्रपञ्च

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, पूर्ण। —बं० प० १२१२

षट्चक्रप्रभेद

लि०—पूर्णानन्द विरचित, इसमें मूलाधारादि षट्चक्रों के विवरण के साथ तन्त्रानुसार षट्चक्रादि के क्रम से निःसृत परमानन्द का निरूपण है। —रा० ला० २२७

षट्चक्रभेदटिप्पणी

लि०—गौडभूमिनिवासी श्रीशङ्कराचार्य कृत। इसमें शरीरस्थित मूलाधारादि षट् चक्र, उनके अधिष्ठाता देवता आदि का निरूपण करने वाले षट्चक्रप्रभेद ग्रन्थ का अर्थ विशद किया गया है। श्लोक सं० ३३०। इस ग्रन्थ के कर्ता श्री शङ्कराचार्य ने विविध तन्त्र ग्रन्थ रचे हैं। —रा० ला० ४२८

षट्चक्रविचार

लि०—श्लोक सं० लगभग १७५, अकथहचक्र आदि में और अकडमचक्र अन्त में है। पूर्ण। —सं० वि० २५०३०

षट्चक्रविधि

लि०—(क) ऊर्ध्वाम्नायान्तर्गत; श्लोक सं० लगभग ६५, पूर्ण। (ख) वीराचार-संमत पूजाविधि के साथ, पूर्ण। —सं० वि० (क) २४९९८, (ख) २६२५४

षट्चक्रविवरण (१)

लि०—(१) पूर्णानन्द विरचित। (क) पूर्ण, (ख) अपूर्ण।
—वं० प० (क) १३११, (ख) १३१६

(२) (क) पूर्णानन्द कृत, श्लोक सं० लगभग १४०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १४०, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० १२०, अपूर्ण। (घ) पूर्णानन्द कृत श्लोक सं० लगभग १३६, पूर्ण। (ङ) दीपिका टीका सहित, श्लोक सं० लगभग ८००, अपूर्ण।
—सं० वि० (क) २४४४२, (ख) २४४५७, (ग) २४८५७, (घ) २४८६४, (ङ) २५३०३

षट्चक्रविवरण (२)

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० लगभग ७५, पूर्ण। —सं० वि० २४६४९

षट्चक्रविवृतिटीका

लि०—नारायण भट्टाचार्य-पौत्र, वामदेव भट्टाचार्य-पुत्र श्री विश्वनाथ भट्टाचार्य कृत, श्लोक सं० ४६८। यह षट्चक्रविवृति नामक ग्रन्थ की टीका है। इसमें शरीरस्थित स्वाधिष्ठान आदि षट्चक्रों के विवरण आदि हैं। —रा० ला० ४२९

षट्चक्रविवेचन

लि०—इसमें षट्चक्रों का विवेचन है—

अथाधारं गुदे चक्रं स्वाधिष्ठानं तु शेफसि ।
मणिपूरं तथा नाभौ हृदि चक्रमनाहतम् ।
कण्ठे विशुद्धिचक्रं च आज्ञाचक्रं तु मस्तके । इत्यादि ।

—ए० बं० ६६२३

षड्धातुसमीक्षा

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में ।

षट्पद्यमाला

लि०—श्रीरामराम भट्टाचार्य कृत । इसमें १०८ शार्दूलविक्रीडित छन्दों से नाडियों के नाम, स्थान और वर्ण आदि का वर्णन किया गया है ।

—नो० सं० ११३८७

षट्शतीमत

उ०—ललितार्चनचन्द्रिका में ।

षट्शाम्भवरहस्य

लि०—श्लोक सं० लगभग २२१०, पूर्ण ।

—सं० वि० २४९७८

षट्साहस्रिका

लि०—कुलालिकाम्नायान्तर्गत ।

—ने० द० ११२८५ (ग)

उ०—शतरत्नसंग्रह में ।

षडक्षरनिर्णय

लि०—इसमें शिव के षडक्षर मन्त्र का विनिर्णय किया गया है। श्लोक सं० ५५ ।

—ट्रि० कै० ९७३ (ख)

षडन्वयमहारत्न

उ०—पुरश्चर्यार्णव, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव तथा शारदातिलक-टीका राघवभट्टी में ।

षडाम्नाय

लि०—(क) श्लोक सं० ३०० । (ख) श्लोक सं० ३०० ।

—अ० ब० (क) १०७१२, (ख) १३६५६

षडाम्नायमञ्जरी

लि०—श्लोक सं० १५००। —अ० व० १००५९

षडाम्नायवर्णन

लि०—श्लोक सं० लगभग ५०, अपूर्ण।

—सं० वि० २५३५६

षड्दर्शन

लि०—श्लोक सं० १०, इसमें गुरुपादुकाष्टक भी संलग्न है।

—अ० व० ५७६० (ग)

षड्योगिनी

लि०—श्लोक सं० १०। लिपिकाल १८४० वि०, —अ० व० ५७६० (क)

षड्विद्यागमसांख्यायनतन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० १०००। यह तन्त्र ३३ पटलों में पूर्ण है। इसमें विविध तन्त्र-क्रियाएँ प्रतिपादित हैं। उनकी सिद्धि में उपयोगी मन्त्र भी वर्णित है।

—ट्रि० कै० १०६३

—तै० म० ११४०८

(२) इसमें ३२ पटल हैं।

षष्ठीविद्याप्रशंसा

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। रुद्रयामल १२५०६० श्लोकात्मक है। यह उसका एक अंश १२ पटलों में पूर्ण है, ऐसा पुष्पिका से ज्ञात होता है। "षष्ठीविद्याप्रशंसायाम् उत्तरषट्कं समाप्तम्" लिखा है, तथा 'इति षष्ठः पटलः' भी लिखा है। पूर्व षट्क के छह पटल+उत्तर षट्क के छह पटल=१२ पटल।

—ने० द० २।३६१ (डी)

षाड्गुण्यविचार (षाड्गुण्यविवेक ?)

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

षोडशनित्यातन्त्र

लि०—(१) देखिए, तन्त्रराजतन्त्र। —ए० बं० ५८१७

(२) गणेश-शिव संवादरूप। यह ३६ अध्यायों में पूर्ण है। प्रत्येक अध्याय में १०० श्लोक हैं। कुल श्लोक ३६०० हैं। कुछ लोगों के मतानुसार इसमें ४००० श्लोक हैं।

१६ नित्यातन्त्र हैं—१. नित्यातन्त्र०, २. ललिता०, ३. कामेश्वरी०, ४. भगमालिनी०, ५. नित्यक्लिन्ना०, ६. भेरुण्डा०, ७. वज्रेश्वरी०, ८. दूती०, ९. त्वरिता०, १०. कुलसुन्दरी०, ११. नित्यानित्या०, १२. नीलपताका०, १३. विजया०, १४. चित्रा०, १५. कुरुकुल्ला०, १६. वाराही०। कालीकादि कही जाती है, क्योंकि उसका नाम 'क' से आरंभ होता है, इसलिए काली विषयक तन्त्रकादि कहे जाते हैं।

—ने० द० २।२६३

(३) श्लोक सं० लगभग ५००, अपूर्ण।

—सं० वि० २५९६७

षोडशनित्यातन्त्रव्याख्या (मनोरमा)

लि०—प्रपञ्चसार सिंह राज प्रकाश सुभगानन्दनाथ विरचित। श्लोक सं० १००००, अपूर्ण। इस ग्रन्थ की पूरी श्लोक सं० १९९५१ बतलायी गयी है। काश्मीर राजगुरु श्री कण्ठेश कदाचित् रामसेतु के दर्शनों के निमित्त दक्षिण देश में गये। वहाँ जाते हुए मार्ग में उन्होंने नृसिंहराज पर अनुग्रह किया। नृसिंह राज ने उनसे तन्त्र ग्रन्थ पढ़े। वहीं पर सुभगानन्द नाथ ने उक्त कादिमत पर मनोरमा टीका रची, २२ पटलों तक। शेष पटलों की टीका उनके शिष्य प्रकाशानन्द देशिक ने उनकी आज्ञा से रची।

—ट्रि० कै० १०६४

षोडशनित्यातन्त्रे कादिमतव्याख्या

लि०—सुभगानन्दनाथ कृत। श्लोक सं० ७००, क्षत-विक्षत।

—अ० ब० १३४०२ (क)

षोडशनित्यापूजाप्रकार

—अ० ब० १०७७४

लि०—श्लोक सं० २५०।

षोडशमूलविद्या

—अ० ब० ५७६० (ग)

लि०—श्लोक सं० २०।

षोडशमूलविद्यान्यास

लि०—महाषोढ़ान्यास के साथ। संमिलित श्लोक सं० १४५, पूर्ण। वरणविद्यान्यास भी इसमें संनिविष्ट है।

—सं० वि० २५९३१

षोडशसंस्कारविधि

—अ० ब० ५६१७

लि०—तन्त्रचिन्तामणि से गृहीत। श्लोक सं० ७०।

षोडशार्णव

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

षोडशार्णासरस्वतीपुरश्चरण

लि०—श्लोक सं० लगभग १००, अपूर्ण। —सं० वि० २६६०३

षोडशीत्रिपुरसुन्दरीपद्धति

लि०—श्लोक सं० लगभग २२५, अपूर्ण। —सं० वि० २५२१४

षोडशीत्रिपुरसुन्दरीविधान

लि०—श्लोक सं० ६००, अपूर्ण। —सं० वि० २५६३७

षोडशीपद्धति

लि०—(क) श्लोक सं० लगभग ४३० अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग ८७५, पूर्ण। —सं० वि० (क) २४३७६, (ख) २६६३४

षोडशीविद्या

लि०—श्लोक सं० लगभग ४४, पूर्ण। —सं० वि० २४९४४

षोढान्यास (१)

लि०—(१) रुद्रयामल से गृहीत, (क) श्लोक सं० ४००। (ख) श्लोक सं० २३०। —अ० ब० (क) ७१४१, (ख) ११७३०

(२) वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत। षोडशाक्षरी मन्त्र के उपयोगार्थ शक्तिपूजा का विवरण इसमें दिया गया है। —म० द० ५७४६

(३) श्लोक सं० ९४, पूर्ण। —र० मं० ४९४७

(४) (क) श्लोक सं० लगभग ४३५, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ६४५, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २४६११, (ख) २४६२६

षोढान्यास (२)

लि०—(क) श्लोक सं० १८, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० १९, पूर्ण। —सं० वि० (क) २४७२५, (ख) २४७४६

षोढामकरन्दस्तवराज

लि०—डामरेश्वरतन्त्र से संगृहीत, श्लोक सं० ६०। —अ० ब० ५६२४

संकटासहस्रनामाख्यान

लि०—पद्मपुराणान्तर्गत। इसमें प्रत्येक श्लोक में देवी के आठ नाम हैं।

—ए० बं० ६७३८

संकर्षणसूत्र

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

संकर्षिणीयामल

उ०—तन्त्रालोक की टीका जयरथी में।

संकेतचन्द्रोदय

उ०—तन्त्रसार में।

संकेततन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा तारारहस्यवृत्ति में।

संकेतपद्धति

उ०—योगिनीहृदयदीपिका, सौभाग्यभास्कर, सेतुबन्ध तथा ललितार्चनचन्द्रिका में।

संकेतयामल

लि०—यह मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, स्तंभन आदि तान्त्रिक षट्कर्मों की सिद्धि के उपायों का प्रतिपादक है।

—वी० कै० १३२१

संकोचक्रिया विधि

लि०—(क) श्लोक सं० १६००, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० २२००।

—अ० ब० (क) ६४२९, (ख) ६८२८

संक्षिप्ततृचार्घ्यपद्धति

लि०—भास्करराय कृत, श्लोक सं० १५०।

—अ० ब० ५६८५

संक्षिप्तश्यामापूजापद्धति

लि०—पूर्णानन्द विरचित। इसमें श्यामादेवी की संक्षिप्त पूजा प्रतिपादित है। नैवेद्य साधकों को बाँट कर और शेष स्वयं भी ग्रहण कर अपने को देवीरूप जान (भावना द्वारा) सुखपूर्वक विहार करे, अन्त में यन्त्रलेप-चन्दनादि और पुष्प शिर पर धारण कर, यों लिखा है।

—वी० कै० १३२२

संक्षिप्तगायत्रीन्यासप्रयोग

लि०––इसमें अङ्ग, प्रत्यङ्ग आदि में गायत्री के अक्षरों से संक्षिप्त न्यास तथा गायत्री का मानस पूजन आदि प्रतिपादित हैं। ––रा० ला० ८९९

संक्षेपदीक्षापद्धति

लि०––श्लोक सं० २००, अपूर्ण।

––र० मं० २०७१

संक्षेपपुरश्चरणविधि

लि०––(१) नितान्ततन्त्रोक्त, शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें १०० श्लोक हैं। समय-समय पर करणीय संक्रान्ति-पुरश्चरण आदि एवं तिथि आदि के पुरश्चरणों का विवरण दिया गया है। ––रा० ला० ३८७

(२) अपूर्ण। ––बं० प० १३०७

संक्षेपार्चनविधि

लि०––श्लोक सं० ५८७, पूर्ण।

––डे० का० ४०३ (१८८२–८३ ई०)

संक्षेपार्चा

लि०––इसमें सब देवी-देवताओं की संक्षेप में नित्य पूजाविधि निर्दिष्ट है तथा श्री-विद्या की संक्षेप में नित्य पूजाविधि भी उसके लिए निर्दिष्ट है, जो विस्तारपूर्वक उसका अनुष्ठान कराने में अक्षम है। अन्यथा श्रीविद्या का संक्षेपार्चन अनिष्टकारी होता है। ––ए० बं० ६२६८

संगोपनतन्त्र

उ०––कालिकासपर्याविधि में।

संजीवनीविद्या

लि०––ईश्वर-वसिष्ठ संवादरूप। इसमें १२ अध्याय हैं। मन्त्रोद्धार, अपस्मार-हरण, सालम्बयोग, अपूर्व सेवाविधि, होमविधि आदि विषय वर्णित हैं। ––ए० बं० ६१३८

संतान

श्रीकण्ठी के अनुसार यह अष्टादश (१८) रुद्रागमों में अन्यतम है।

संतानसंहिता

लि०--शिव-पार्वती संवादरूप। यह लिङ्गपूजा पर शैवतन्त्र है। अपूर्ण। ७८वाँ पटल खण्डित है।

आरंभ--

ॐ कैलास...मध्यमत्ररन्ध्ररं वरारोचितम्।
यक्षैश्च ऋषिभिः साध्यदेवैर्भूतैरनेकशः॥
प्रणिपत्य जगन्नाथं देवी वचनमब्रवीत्।

—तै० म० ११४०८

संतानागम

यह श्रीकंठी के मतानुसार अष्टादश (१८) रुद्रागमों के अन्तर्गत है।

(तन्त्रालोक-टीका)

संपुटितदीक्षाक्रम

लि०--परानन्दतन्त्र से गृहीत। १४ वाँ, १५ वाँ और १६ वाँ उद्रेक। अ०ब०५६६२

संप्रोक्षणकुंभाभिषेकविधि

लि०--विविध आगमों से संगृहीत। श्लोक सं० ७००।

—अ० ब० ६८३१

संभोहनतन्त्र

यह श्रीकण्ठी के अनुसार चतुःषष्टि (६४) भैरवागमों के अन्तर्गत है।

(तन्त्रालोक-टीका)।

संमोहनतन्त्र

लि०--(१) शिव-पार्वती संवादरूप। पुष्पिका में लिखा है--'इति श्रीमदक्षोभ्य-महोग्रतारासंवादे।' इसके अनुसार (अक्षोभ्यमहोग्रतारा संवादरूप) यह १० पटलों में पूर्ण है। इसकी श्लोक सं या १७०० कही गयी है। यह द्वितीय खण्ड का परिमाण है। इसके और भी खण्ड हैं, ऐसा इससे ज्ञात होता है। इसका विषय-४० प्रकार की भूत, ब्रह्मराक्षस आदि जातियों को तान्त्रिक मन्त्रों से वश में कर उनसे दुष्टों का विनाश करना है।

—ने० द० २।३१२ (क)

(२) शिव-पार्वती संवादरूप। पुष्पिका पूर्ववत्। श्लोक सं० १८००। षोडश महाविद्या--काली, तारा, छिन्नमस्ता, सुन्दरी, वगला, रमा आदि--महाकाल-

मत में ५१ कही गयी हैं। इसमें पीठ तथा वाणी के भेद से और लिपि तथा भाषा के भेद से शांभवों के विंशति (बीस) प्रकार की विद्या और पीठों का निर्णय, पुण्यनिर्णय, गौड़ादि देशों के भेद से तन्त्र आदि का भेदनिरूपण, १० महाविद्यानिरूपण, यन्त्रभेद आदि का निरूपण—ये विषय वर्णित हैं। —नो० सं० १।४००

(३) श्लोक सं० ४००। यह प्रति अपूर्ण है। इसमें केवल उत्तर तन्त्र का ही अपूर्ण वर्णन है। इसमें कुलकुण्डलिनी देवी के प्रातः कृत्य, षोढामन्त्र, सर्वतोभद्र, कवच आदि प्रतिपादित हैं। —रा० ला० ३७१

उ०—मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, आगमतत्त्वविलास तथा तन्त्रसार में।

संवित्कल्प

लि०—पार्वती-शिव संवादरूप। इसमें भाँग या गाँजे की उत्पत्ति और तान्त्रिक उपयोग वर्णित है। —ए० बं० ६०६८

संवित्प्रकाश

उ०—स्पन्दप्रदीपिका, विज्ञानभैरव टीका (क्षेमराज कृत) तथा महार्थमञ्जरी-परिमल में।

संविदुल्लास

गोरक्ष अथवा महेश्वरानन्द कृत।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

संविन्मन्त्र

लि०—श्लोक सं० ४०। —अ० ब० ५७६० (च)

संविन्माहात्म्य

(त्रिपुरासिद्धान्त का १५ वाँ कल्प)

लि०—शिव-पार्वती संवादरूप। ब्रह्मज्ञानप्रद होने के कारण कलञ्ज संवित् कहलाता है। संवित् के सदृश न कोई धर्म है, न कोई तप और न कोई शास्त्र। इस प्रकार इसमें कलञ्ज-भक्षण की महिमा प्रतिपादित है। साथ ही कौलिक पुरुष, कौल ज्ञान और भगवती तथा शिव की उत्कृष्टता कही गयी है। —म० द० ५७४७

संवित्सेवनप्रकार

लि०—श्लोक सं० १७, अपूर्ण। —सं० वि० २६४१०

संवित्सेविनीमन्त्र

लि०—रुद्रयामल से गृहीत। श्लोक सं० २५।

—अ० ब० ८३३४

संवित्स्तोत्र

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

संविदाशोधन

लि०—श्लोक सं० २४। नित्यहोम भी इसमें संनिविष्ट है। पूर्ण।

—सं० वि० २४७४४

संविदाशोधनविधि

लि०—(क) समयातन्त्रान्तर्गत। समयामाहात्म्य के साथ संनिविष्ट। संमिलित श्लोक सं० लगभग २१, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग ३५, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० लगभग १८, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २५०३६, (ख) २५७५३, (ग) २६०९७

संविन्मन्त्र

लि०—श्लोक सं० लगभग ४५, पूर्ण।

—सं० वि० २४२७४

संहारसृष्टिश्रीचक्रन्यास

लि०—इसमें वामकेश्वरतन्त्र रुद्रयामल-मत के अनुसार संहार, सृष्टि और स्थिति रूप से श्रीविद्या मन्त्र के ऋषि आदि, करन्यास और षडङ्ग न्यास प्रतिपादित हैं। पूर्ण।

—म० द० ५७४८, ५७४९

सकलजननीस्तव

लि०—श्लोक सं० ३२४।

—डे० का० २५९ (१८८३-८४ ई०)

सकलागमसंग्रह

लि०—इसमें आकर्षणादि प्रयोग वर्णित हैं।

—तं० म० ३६४३, ११४२६

सकलागमसारसंग्रह

लि०—श्लोक सं० १६००।

—अ० ब० ७९७१

सज्जनतरङ्गिणी

लि०—रचयिता रामवल्लभ शर्मा। यह पूर्णानन्द कृत षट्चक्र प्रकरण पर टीका है। श्लोक सं० ५७० । —रा० ला० २९३०

सत्कार्यसिद्धि

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

सत्तर्करत्नाकर

लि०—श्री कालरात्रिपद्धति, कृष्णपुत्र अद्वयानन्दनाथ विरचित। इसमें कालरात्रि की पूजा का विधान वर्णित है। —बी० कै० १३३४

सत्त्वादिगुणनिर्णय

लि०—परमानन्दतन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० लगभग २६, अपूर्ण। —सं० वि० २४४६४

सदाशिवकवच

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। पूर्ण। —वं० प० ८९२

सदाशिवनित्यार्चनपद्धति

लि०—श्लोक सं० ६००। —अ० ब० ८५९

सद्यःसिद्धिप्रदहृदय

लि०—श्लोक सं० ७०। —अ० ब० ११२८२ (क)

सनत्कुमारतन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० १०००। —अ० ब० ९८१३ (क)

(२) सनत्कुमार-पुलस्त्य संवादरूप। श्लोक सं० ५०४। यह ११ पटलों में है। १ म में विष्णुमन्त्र, २, ३ य और ४ र्थ में श्रीकृष्ण-पूजा आदि, ५ म में श्रीकृष्ण विषयक अन्य मन्त्रों का निरूपण, ६ष्ठ में गोपालमन्त्र, ७ म में गोपाल-पूजा, ८ म में होमादि-निर्णय, ९ म में त्रैलोक्य-मङ्गल कवच, १० म में पुरश्चरणविधि और ११ श में दीक्षाविधि वर्णित है। —रा० ला० २३२

(३) शिव प्रोक्त। पूर्ण। —जं० का० १०९३

(४) (क) श्लोक सं० लगभग ११५, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० २४०, पटल १–८ तक। अपूर्ण। —सं० वि० (क) २५२५६, (ख) २६३२५

उ०——मन्त्रमहार्णव, तन्त्रसार तथा आगमकल्पलता में।

सनत्कुमारसंहिता

लि०——(१) सनत्कुमार-पुलस्त्य संवादरूप। ११ पटलों में पूर्ण यह वैष्णवतन्त्र है। संभवतः सनत्कुमारतन्त्र इसी का नामान्तर है।

—ए० बं० ६०३१

(२) (क) श्लोक सं० ९००। (ख) श्लोक सं० ४१७६।

—अ० ब० (क) ६६३९, (ख) ६६५४ (घ)

(३) केवल ३६ वाँ पटल मात्र। मन्तव्य इसका ३६ वाँ पटल होना विचारणीय है, क्योंकि अन्य लोगों ने इसके ११ पटलों में पूर्ण होने का उल्लेख किया है।

—बं० प० २०६

उ०——सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी में।

सनत्कुमारीय

उ०——तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

सन्तानकामेश्वरीगोप्यविधान

लि०——श्लोक सं० लगभग ७०, पूर्ण। इसमें विधान महाराष्ट्र भाषा में हैं। एवं मन्त्र आदि देवभाषा में हैं। —सं० वि० २५६५

सन्तानगोपालमन्त्रविधि

लि०——(क) श्लोक सं० २०। (ख) श्लोक सं० ४००।

—अ० ब० (क) १३८०४, (ख) १०९०६

सन्ध्याविधिरत्नप्रदीप

लि०——आशाधर कृत। श्लोक सं० ५००। चौथा और पाँचवाँ किरण नहीं है।

—अ० ब० ९७३१

सन्ध्याप्रयोग

लि०——इसमें श्रुति और तन्त्र सम्मत त्रैकालिक संध्याविधि वर्णित है। श्लोक सं० १३२। —रा० ला० ४२५७

सपर्याक्रमकल्पवल्ली

लि०—(१) (क) श्रीनिवास कृत। श्लोक सं० १०००। (ख) श्लोक सं० ४५०। केवल ५ वाँ स्तवक। —अ० ब० (क) ७९८७, (ख) ८३१९

(२) श्री श्रीनिवास द्राविड कृत। 'श्रीदेशिकेन्द्रं शिरसा प्रणम्य श्रीश्रीनिवासो द्रविडोद्‌भवोऽहम्। श्रीमत्सपर्याक्रमकल्पवल्यां श्रीचण्डिकाया यजनं प्रवक्ष्ये॥' इसमें श्रीचण्डिका देवी की पूजा का क्रम प्रतिपादित है। यह ५ स्तवकों में पूर्ण है। —म० द० ५७५०

सपर्याचिन्तामणि

लि०—श्लोक सं० ९९०, पूर्ण। —सं० वि० २४९७९

सपर्यासार

लि०—काशीनाथ भट्टाचार्य कृत। श्लोक सं० लगभग ११३०, अपूर्ण। —सं० वि० २५९९०

सप्तपारायणविषय

लि०—(१) उत्तरज्ञानार्णव से गृहीत। श्लोक सं० १८०। —अ० ब० ५६८१

(२) नाथपारायण, घटिकापारायण, तत्त्वपारायण, नित्यापारायण, मन्त्र-पारायण, नामपारायण, अङ्गपारायण के साथ ये ७ पारायण हैं। नौ गुरु, शक्ति का आविर्भाव, तत्त्व, देवीमन्त्र, शक्ति के नाम और सहायक मन्त्र इन सातों की पारायणविधि इसमें प्रतिपादित है। —म० द० ५७५१

सप्तविंशतिरहस्यमन्त्र

लि०—श्लोक सं० १६०। —अ० ब० ५७६० (ख)

सप्तशतिकाविधान

लि०—ताराभक्तितरङ्गिणीस्थ। श्लोक सं० लगभग १७८१, पूर्ण। —सं० वि० २५२४७

सप्तशतीकल्प आदि

लि०—(१) मार्कण्डेयपुराण से गृहीत। श्लोक सं० ३००। —अ० ब० ५५८३

(२) श्लोक सं० ३६४, पूर्ण। ···लिपिकाल १८९३ वि०। —सं० वि० २४८१६

सप्तशतीकवचविवरण

लि०—रङ्गभट्ट-पुत्र नीलकण्ठभट्ट कृत । —र० मं० ४९२८ (क)

सप्तशतीचण्डीस्तोत्रव्याख्यान में चण्डीस्तोत्रप्रयोगविधि

लि०—शिवभट्ट-पुत्र नागोजीभट्ट कृत। श्लोक सं० ५९२, पूर्ण।
—र० मं० ४९२६

सप्तशतीचण्डी प्रयोग व्याख्यान में चण्डीस्तोत्रविधि

लि०—शिवभट्ट पुत्र नागोजीभट्ट। श्लोक सं० ९२५, पूर्ण।
—र० मं० ४९४५

सप्तशतीजपार्थन्यासध्यान

लि०—श्लोक सं० १५। —डे० का० ३६३ (१८७९-८० ई०)

सप्तशतीदीपदानविधि

लि०—ताराभक्तितरङ्गिणी से गृहीत। श्लोक सं० १७०। —अ० ब० ३५०५

सप्तशतीध्यान

लि०—श्लोक सं० १३६०। —अ० ब० १३७२१

सप्तशतीपूजा

लि०—श्लोक सं० ७०। —अ० ब० ११७३४

सप्तशतीप्रयोग

लि०— (क) श्लोक सं० २००। (ख) विमलानन्दनाथ कृत। श्लोक सं० ३७०। —अ० ब० (क) २०२४, (ख) ५६५४

सप्तशतीप्रयोगविधि

लि०—श्लोक सं० लगभग ५५, पूर्ण। —सं० वि० २५१२२

सप्तशतीपाठादिविधि

लि०—श्लोक सं० १००। —अ० ब० ३५०६

सप्तशतीमन्त्रप्रयोग

लि०—कात्यायनीतन्त्रोक्त, श्लोक सं० २५, पूर्ण। —सं० वि० २४२५६

सप्तशतीमन्त्रप्रयोगविधि

लि०—नागोजीभट्ट कृत। श्लोक सं० ३००। —अ० ब० ८५२६ (क)

सप्तशतीमन्त्रविभाग

लि०—(१) श्लोक सं० १००, अपूर्ण। —अ० ब० ९९८५

(२) (क) श्लोक सं० लगभग ६२, पूर्ण। लिपिकाल १७७९ वि०। (ख) कात्यायनीतन्त्रोक्त, श्लोक सं० लगभग ६२, पूर्ण। (ग) नागोजीभट्ट कृत, श्लोक सं० लगभग ४६५, लिपिकाल १७६४ शकाब्द। इसमें कात्यायनीतन्त्रोक्त चण्डीस्तोत्रप्रयोगविधि भी संनिविष्ट है। —सं० वि० (क) २३९८३, (ख) २५३१९, (ग) २६५६३

सप्तशतीमन्त्र व्याख्यासहित

लि०—व्याख्या कर्ता–शिवराम। श्लोक सं० ३००। —अ० ब० ८७४०

सप्तशतीमन्त्रहोमविभागकारिकाटीका

लि०—(१) मूल कण्व गोविन्द कृत। टीका भगीरथ कृत। श्लोक सं० ५५०। —अ० ब० ३५०४

(२) कृष्ण (कण्व ?) गोविन्द कृत मूल तथा भगीरथ कृत जगच्चन्द्रिका टीका। श्लोक सं० लगभग ६२०, पूर्ण। —सं० वि० २५३९४

सप्तशतीमालामन्त्रजपविधि

लि०—मन्त्रमहोदधि के अन्तर्गत, नवार्णमन्त्रविधि भी इसमें संनिविष्ट है। श्लोक सं० संमिलित ८०, पूर्ण। —सं० वि० २६५७०

सप्तशतीविधान

लि०—(१) रहस्यतन्त्र में उक्त गुरुकीलक, भास्करराय कृत गुरुकीलक-विवरण, चण्डीपाठप्रयोग, शतचण्डी-विधान, चण्डीपाठफल (वाराहीतन्त्र से गृहीत), चण्डी पाठ का काम्यफल प्रयोग (हरगौरीतन्त्र से गृहीत), चण्डीपाठ-विधान (मारीचकल्प से गृहीत) तथा कात्यायनीतन्त्र में कहा गया सप्तशतीपाठप्रकार आदि विषय इसमें वर्णित हैं। —ए० बं० ६४१७

(२) (क) श्लोक सं० १७५। (ख) श्लोक सं० ३०००। वाराहीतन्त्र, कात्यायनीतन्त्र, योगिनीतन्त्र तथा ताराभक्तितरंगिणी से संगृहीत सार।

—अ० ब० (क) १७३०, (ख) १०६९९

(३) श्लोक सं० ५१२, इसमें शतचण्डी विधान भी संमिलित है। अपूर्ण।
—सं० वि० २५४०२

सप्तशतीस्तोत्रपठनविधि

लि०—श्लोक सं० १२२। पूर्ण। —र० मं० ४९२७

सप्तशतीहोम

लि०—श्लोक सं० ३५। —अ० ब० ५०३०

सप्तशत्यङ्गषट्कव्याख्यान

लि०—भट्ट रङ्गनाथ-पुत्र शैव नीलकण्ठभट्ट कृत। इसमें सप्तशती के छह अङ्ग—कवच, अर्गला, कीलक तथा रहस्यत्रय की व्याख्या की गयी है। इसमें प्रारंभ में एक प्रस्तावना है, जिसमें शक्ति की पूजा का वास्तविक तत्त्व निर्दिष्ट है।
—ए० बं० ६४०९

समयाङ्क

उ०—तन्त्रसार में।

समयाचार

लि०—(१) गौरीयामलान्तर्गत। श्लोक सं० २८६। —अ० ब० ५६६४

(२) श्लोक सं० ५२, अपूर्ण। —र० मं० १२०३

(३) श्लोक सं० ३६०, पूर्ण। लिपिकाल १८५४ वि०। (ख) श्यामा-रहस्यान्तर्गत दशम परिच्छेद। श्लोक सं० ४०, पूर्ण।
—सं० वि० (क) २५४४६, (ख) २५७७६

समयाचारतन्त्र

लि०—(१) ३०० या अधिक श्लोकों का यह ग्रन्थ है। यह रा० ला० ७५५ में वर्णित है, किन्तु उसमें यह गद्यमय कहा गया है। वास्तव में इसका मन्त्रभाग तथा विधान अंश ही गद्य में है, शेष साराग्रन्थ पद्यमय है। —ए० बं० ५९२०

(२) ९०० या अधिक श्लोकों का यह ग्रन्थ है। इसमें 'शिवशक्त्यात्मक समयाख्य परात्पर परब्रह्म, जो सब शास्त्रों में गुप्त हैं जिनसे अतिरिक्त कुछ नहीं, उनके सम्बन्ध में कहने की कृपा करें' यों देवी की शिव से प्रार्थना करने पर शिवजी द्वारा इसमें नित्यानन्द ज्ञान आदि का वर्णन, रहस्य योग आदि का वर्णन, परमा विद्या के बीज आदि, विद्या-साधन

के प्रकार आदि, पूजारहस्य आदि का कथन, मुद्रा कथन, कुण्ड-साधन, होम आदि, बीजादि के साधन का प्रकार तथा भावनिर्णय वर्णित है। यह १० या अधिक पटलों में पूर्ण है।

—नो० सं० २।२४१

(३) (क) श्लोक सं० ३००। (ख) श्लोक सं० ३००।

—अ० ब० (क) २०६, (ख) ५५४०

(४) उमा-महेश्वर संवादरूप। श्लोक सं० ३००। विषय—'समयाचार' शब्द का अर्थ, वाग्वादिनीमन्त्र, विजयास्तोत्र, तन्त्रोक्त कर्म समय पर करणीय हैं यह कथन। खीर, दही, मट्ठा आदि १४ पदार्थ, उनका शोधन प्रकार, प्रातःकाल, मध्याह्न आदि पाँच जपकाल, शान्तिक, वश्य, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन, मारण आदि षट्कर्मों के अनुरूप मुद्रादि कथन, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तरादि आम्नाय कथन, पूर्व आदि तत्तत् आम्नायों के देवता आदि कथन, उक्त आम्नायों की भिन्न-भिन्न मालाएँ, शान्तिक आदि कर्मों में आसन भेद, जपस्थान, मन्त्रों के पुल्लिङ्ग, नपुंसक आदि कथन, वामाचार, दक्षिणाचार आदि, तन्त्र, यामल आदि की संख्या, मत्स्य, मांस, मुद्रा, मैथुन, मद्यादि पञ्च मकारादि का कथन, शक्तिसाधनादि।

—रा० ला० ७५५

(५) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० लगभग ३८५, पूर्ण। लिपिकाल सं० १८२२ वि०। (ख) श्लोक सं० लगभग ३६०, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० ७५, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० ३४४, पूर्ण। (ङ) श्लोक सं० लगभग २८० पूर्ण।

—सं० वि० (क) २३९८४, (ख) २४१०३, (ग) २४२०९, (घ) २४७९३, (ङ) २४८००

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, कुलप्रदीप, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, कौलिकार्चनदीपिका तथा सर्वोल्लासतन्त्र में।

समयाचारनिर्णय

लि०—महारात्र्यादिनिर्णय के साथ संलग्न। संमिलित श्लोक सं० ३४८, पूर्ण। लिपिकाल १९३५ वि०।

—सं० वि० २४५०५

समयाचारपद्धति

लि०—श्लोक सं० ५८८, अपूर्ण।

—सं० वि० २६६३८

समयाचारसंकेत

लि०—श्लोक सं० लगभग २८८, पूर्ण।

—सं० वि० २४७९६

समयातन्त्र

लि०—(१) देवी-ईश्वर संवाद रूप। इसमें १० पटल हैं। श्लोक सं० १२००। १ म पटल में गुरुक्रमवर्णन, २ य में ताराप्रकरण, ३. दक्षिणकालिकाप्रकरण, ४. नित्यपूजा-प्रकरण, ५. शवसाधनप्रकरण, ६. उच्छिष्ट-चाण्डालिनीसिद्धि-साधनप्रकरण, ७. प्रचण्डा-सिद्धिविधिप्रकरण, ८. षट्कर्मविवरण। —ए० बं० ५९२४

(२) श्लोक सं० ५००। १ से ५ पटल हैं। —अ० ब० ३५०७

(३) (क) श्लोक सं० ३१२, अपूर्ण। लिपिकाल १७६१ वि०।(ख) श्लोक सं० २३२, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० १२० प्रथम पटल मात्र, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २५८७९, (ख) २५९५१, (ग) २६४४२

उ०—पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, कौलिकार्चनदीपिका, तथा कालिका-सपर्याविधि में।

समयापूजन

लि०—श्लोक सं० १५०। —अ० ब० १२०६३

समयाषट्कनिरूपण

लि०—देवीपूजाविधि के साथ संलग्न। संमिलित श्लोक सं० लगभग ६२५, पूर्ण। —सं० वि० २६२५५

समयाष्टक

लि०—(१) श्लोक सं० ६०। —अ० ब० ४४८२

(२) रुद्रयामलोक्त। कौलाचारक्रम पञ्चचक्रसदाचारविधि के साथ संलग्न। संमिलित श्लोक सं० लगभग ९० पूर्ण। —सं० वि० २५३८३

समाधिपञ्चदशी

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

सम्पत्करीसंवित्स्तुतिचर्चा

लि०—श्लोक सं० ७५०। भगवती समग्रैश्वर्यसम्पन्ना संपत्करी संवित्स्तुति इसमें प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० ११२७ (क)

सम्पत्करीसंवित्स्तोत्रचर्चोद्योत

लि०—श्लोक सं० ७५०। यह ५ उदयों में पूर्ण है। इसमें सम्पत्करी देवी की स्तुति का व्याख्यान है। —ट्रि० कै० ११२८

सम्पद्विमर्शिनी

लि०—प्रसन्न विश्वात्मा देशिकेन्द्र-शिष्य शम्भुदेवानन्दनाथ कृत। इसमें त्रिपुरा देवी की पूजापद्धति वर्णित है।
—ए० बं० ६३४७

सम्प्रदायदीपिका

लि०—भट्ट नाग विरचित। श्लोक सं० ४००। यह ग्रन्थ १० पटलों में पूर्ण है। इसमें मन्त्रों के प्रतीक देकर उनकी व्याख्या की गयी है। अन्त में स्तुति के मन्त्र संनिविष्ट किये गये हैं।
—ट्रि० कै० १०१६ (ख)

सम्प्रदायसारोल्लास

लि०—कुलार्णवतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ६००।
—अ० ब० १०६७७

सम्मीलनतन्त्र

लि०—इसमें नृसिंहसुन्दरीकवच है। इसकी पुष्पिका में लिखा है—इति श्रीसंमीलनतन्त्र महासिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसंवादे नृसिंहसुन्दरीकवचम्।
—ने० द० २।४८

सरस्वतीतन्त्र

लि०—(१) इसमें ७ पटल हैं और उनमें तन्त्रानुसार योनिमुद्रा का विधान है।
—ए० बं० ६००७

(२) यह शिव-पार्वती संवादरूप है। इसमें ६ पटल और १५३ श्लोक हैं जिनमें निम्नलिखित विषय प्रतिपादित हैं—मूलाधार आदि चक्रों में इष्ट देवता आदि के ध्यान का प्रकार, निर्वाणमुक्ति का प्रकार विशेष, कालिका आदि कतिपय देवियों के मन्त्राक्षरों की संख्या, विद्यामन्त्र का शोधन, यन्त्र में प्राणप्रतिष्ठा का प्रकार आदि।
—रा० ला० ४४७

(३) यह जपविधि का प्रतिपादक तन्त्र है। इसमें छह पटल हैं। शेष रा० ला० ४४७ में द्रष्टव्य।
—ए० बं० ६०६

(४) श्लोक सं ५०।
—अ० ब० १०२४१

(५) श्लोक सं० १४०। यह छह पटलों में पूर्ण है। इसमें कहा गया है कि जो साधक मन्त्रार्थ, मन्त्रचैतन्य और योनि-मुद्रा नहीं जानता सैकड़ों करोड़ जप करने से भी उसकी विद्या (सरस्वती) सिद्ध नहीं होती। निम्ननिर्दिष्ट विषय इसमें प्रतिपादित हैं—मन्त्र का चैतन्य कथन, योनि मुद्रा का निरूपण, कुल्लुका कथन, महासेतु, शंखादि का निरूपण, मुखशोधनविधि, प्राणयोग कथन आदि।
—रा० ला० २६१

(६) श्लोक सं० लगभग १६०। १ से ६ पटल तक, पूर्ण।
—सं० वि० २६१३८

उ०—कालिकासपर्याविधि में।

सरस्वतीपञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक सं० ४१६, पूर्ण। —र० मं० ४८३४

सरस्वतीपूजापद्धति

लि०—श्लोक सं० लगभग १०८, अपूर्ण। —सं० वि० २६१२२

सरस्वतीमन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० ५०। —अ० ब० ५१५४ (क)
(२) श्लोक सं० लगभग २०, पूर्ण। —सं० वि० २५०७८

सरस्वतीस्तोत्र

उ०—शारदातिलक की टीका राघवभट्टी में।

सर्वकालिकागम

लि०—शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें श्री कालीजी का माहात्म्य, यन्त्र, कवच आदि, जिनसे आपत्तियाँ, संकट आदि निवृत्त होते हैं, वर्णित हैं। —बी० कै० १३२७

सर्वज्ञभैरव

उ०—स्पन्दप्रदीपिका में।

सर्वज्ञान

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी में।

सर्वज्ञानोत्तर

लि०—इसमें योगपाद और क्रियापाद—ये दो पाद हैं। निम्न निर्दिष्ट विषय प्रतिपादित हैं—स्वात्मसाक्षात्कार प्रकरण, विमलीकरण, स्थूलवर्णमन्त्रोद्घाटनप्रकरण, प्राणदमन्त्रोद्धारप्रकरण, अन्त्येष्टिप्रकरण, जीर्णोद्धारप्रकरण, प्रतिमादिप्रकरण, वारुणस्नानप्रकरण, भस्मस्नानप्रकरण आदि। यह पौष्करागम का ही एक भाग प्रतीत होता है।
—इ० आ० २६०६

इस ग्रन्थ का विद्यापाद हमारे दृष्टिगोचर हुआ। उसमें निम्नलिखित प्रकरण दृष्टिगोचर हुए। त्रिपदार्थविचार, शिवानन्दसाक्षात्कारप्रकरण, भूतात्मप्रकरण, अन्तरात्मप्रकरण, तत्त्वात्मप्रकरण, मन्त्रात्मप्रकरण, परमात्मप्रकरण। इसमें कुल पत्र सं० २४१ है।

उ०—शैवपरिभाषा (शिवाग्रयोगीन्द्रशैवाचार्य कृत), शतरत्नसंग्रह तथा शिवसूत्र-विमर्शिनी में।

सर्वज्ञानोत्तरटीका

शिवाग्रयोगीन्द्र शैवाचार्य विरचित।

उ०—शैवपरिभाषा (शिवाग्रयोगीन्द्र शैवाचार्य कृत) में।

सर्वज्ञानोत्तरतन्त्र

लि०—शिव-षडानन संवादरूप। जैसे देवता और असुरों ने समुद्र का मन्थन कर अमृत प्राप्त किया वैसे ही सब तन्त्र शास्त्रों का मन्थन कर यह उत्तम तन्त्र उद्धृत किया गया है। वातुलतन्त्र के समाप्त होने पर षडानन ने शिवजी से यह पूछा।

—ने० द० १।१६४८ (ख)

सर्वज्वरविपाक

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। शिव-पार्वती संवादरूप। इसमें ८ पटल हैं जिनमें विविध प्रकार के ज्वरों की चिकित्सा और निवृत्ति के उपाय निर्दिष्ट हैं।

—बी० कै० १३१५

सर्वतोभद्रचक्र

लि०—श्लोक सं० १००। —अ० ब० १२२८२

सर्वतोभद्रचक्रटीका

लि०—गौरीकान्त चक्रवर्ती विरचित। इसमें तन्त्रोक्त सर्वतोभद्रचक्र आदि की व्याख्या की गयी है। —नो० सं० १।४०१

सर्वतोभद्रपूजन

लि०—श्लोक सं० १२०। —अ० ब० ८५५

सर्वतोभद्रमण्डल

लि०—श्लोक सं० २५। —अ० ब० १३४४२ (ग)

सर्वदेवप्रतिष्ठा

लि०—(क) पद्मनाभ विरचित, श्लोक सं० ११२०। (ख) प्रतिष्ठासारसंग्रह से गृहीत, श्लोक सं० ८५०। —अ० ब० (क) १४७९, (ख) २२६०

सर्वदेवप्रतिष्ठापद्धति

लि०--(क) श्लोक सं० २५००, त्रिविक्रम विरचित। (ख) श्लोक सं० ७५०, अपूर्ण।
—अ० ब० (क) २५७७, (ख) ५९१४ (क)

सर्वदेवप्रतिष्ठाविधि

लि०--(१) श्लोक सं० २२००। —अ० ब० १२०७
(२) पत्र १५४। —रा० पु० ५००६

सर्वप्रतिष्ठाविधि

लि०--श्लोक सं० ६५०। —अ० ब० २०२०

सर्वमङ्गलतन्त्र

यह श्रीकण्ठी के अनुसार चतुःषष्टि (६४) भैरवागमों के अन्तर्गत है।
(तन्त्रालोक-टीका)

सर्वमङ्गलमन्त्रपटल

लि०--रुद्रयामल के अन्तर्गत। श्लोक सं० १६८, पूर्ण। यह चण्डीसर्वस्वान्तर्गत भी कहा गया है। —र० मं० ४९४४

सर्वमङ्गला

उ०--शिवसूत्रविमर्शिनी तथा परमार्थसार की योगराज कृत टीका में।
श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) भैरवागमों के अन्तर्गत है।

सर्वमन्त्रशापविमोचन

लि०--शिवरहस्य के अन्तर्गत। श्लोक सं० ८०, पूर्ण। —र० मं० १०२०

सर्वमन्त्रोत्कीलन

लि०--(क) श्लोक सं० ३८, पूर्ण। लिपिकाल १९२५ वि०। (ख) श्लोक सं० ५२, पूर्ण। इसमें गायत्री-ब्रह्मशापविमोचन यन्त्र भी संनिविष्ट है। (ग) गोपालपटल आदि अनेक ग्रन्थों के साथ संबद्ध।
—सं० वि० (क) २४२१६, (ख) २४४०२, (ग) २६४४५

सर्वमन्त्रोत्कीलनमन्त्रप्रयोग

लि०--श्लोक सं० ४२, पूर्ण। इसमें 'सर्वमन्त्रशापविमोचनमन्त्रविचार' भी संनिविष्ट है। —सं० वि० २४४३०

सर्वमन्त्रोत्कीलनशापविमोचनस्तोत्र

लि०—शिवरहस्यान्तर्गत। श्लोक सं० १६२, पूर्ण। —र० मं० ४९४९

सर्वमन्त्रोपयुक्तपरिभाषा

लि०—स्वामी शास्त्री विरचित। प्रपञ्चसारसंग्रह से नवीन संग्रह, श्लोकसं० ४०००। —तं० म० ७१४३

सर्ववीरभट्टारक

उ०—महार्थमञ्जरी की परिमल टीका, प्रत्यभिज्ञाहृदय तथा तन्त्रालोक की टीका में।

सर्वशत्रुविनाशिनीविद्या

लि०—कुब्जिकातन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० १२, अपूर्ण। —सं० वि० २५१३९

सर्वसंमोहिनीतन्त्र

लि०—श्लोक सं० २८८, पूर्ण। —सं० वि० २४२७७

सर्वसाम्राज्यमेधानामसहस्रक

लि०—कालीरूप ककारात्मक सहस्रनाम, श्लोक सं० १८३। —अ० ब० ११८२२

सर्वसार

लि०—श्री विष्णुचन्द्र विरचित। पुराण और तन्त्रों से उद्धरण लेकर इस ग्रन्थ का निर्माण हुआ है। इसकी श्लोक सं० ५२६७२ है। रुक्मिणी श्रीकृष्ण के अष्टोत्तर सहस्रनाम, युगलस्तोत्र, सरस्वतीस्तोत्र, पञ्चवक्त्रशिवस्तोत्र, बगलामुखी-शतनाम, प्रतिमा-लक्षण, नृत्येश्वररूपवर्णन, अर्धनारीश्वररूपवर्णन, उमा-महेश्वररूपवर्णन, शिवनारायण, नृसिंह तथा त्रिविक्रम का रूप वर्णन, ब्रह्मा, कार्तिकेय, गणेश, दशभुजादेवी, इन्द्र, प्रभाकर, वह्नि, यम, वरुण, वायु, कुबेर आदि का रूप वर्णन, धवलेश्वर, ब्राह्मी आदि मातृकाओं तथा लक्ष्मी का रूप वर्णन आदि अनेक विषय इसमें वर्णित हैं। —रा० ला० १२४०

सर्वसारनिर्णय

लि०—श्लोक सं० २००, (२१ प्रसंग तक)। —अ० ब० ७५७१

सवस्रोतःसिद्धान्तसार

उ०—शतरत्नसंग्रह में।

सर्वागमसार

लिउ——इसमें गुरु-शिष्य के लक्षण के साथ दीक्षा का विस्तार से प्रतिपादन है तथा साथ ही मन्त्रों के १० संस्कार भी वर्णित है। न्यास, जप, होम और मुद्राओं का वर्णन आदि विषय भी प्रतिपादित हैं।
—ए० बं० ६२७१

सर्वाङ्गसुन्दरी

(प्रयोगसार-व्याख्या)

लि०——(क) श्लोक सं० १८७५, यह ५४ पटलों तक है। इसके निर्माता श्री देवराज-गिरि-शिष्य श्रीवासुदेव विद्वान् है। प्रतीत होता है कि प्रयोगसार के ५४ पटल हैं। (ख) श्लोक सं० १५००, इसमें उत्तर भाग के २७ वें पटल तक यह व्याख्या है। (ग) टीकाकार का नाम पुष्पिका में 'वासुदेव:' लिखा है परन्तु समाप्ति श्लोक में लिखा है—— 'ईश्वरेण सुधीसार्थपादपद्मरजोजुषा प्रयोगसार-व्याख्येयं लिखिता सदनुग्रहात्।'

[या वासुदेव का द्वितीय नाम ईश्वर होगा।]

——ट्रि० कै० (क) १००२, (ख) १००३, (ग) १००४७

सर्वाचार

उ०——शिवसूत्रविमर्शिनी तथा तन्त्रालोक में।

सर्वानन्दतरङ्गिणी

लि० (१) सर्वानन्दनाथ-पुत्र शिवनाथ भट्टाचार्य विरचित। श्लो० सं० ५००, पूर्ण। ग्रन्थकार सर्वानन्दनाथ के पुत्र तथा शिष्य थे। कहते हैं श्रीसर्वानन्दनाथ को भवानीचरण-युगल का साक्षात्कार था। वे जिला कुमिल्ला के अन्तर्गत मेहार राज्य के निवासी थे। उनकी जन्मतिथि का ठीक-ठीक पता नहीं किन्तु जब दासनामक राजा मेहार का शासन करते थे तब सर्वानन्दनाथ विद्यमान थे।

——नो० सं० ३।३३६

(२) (क) विश्वनाथ (?) विरचित, श्लोक सं० ३२४, अपूर्ण। (ख) सर्वा-नन्दात्मज शिवनाथ भट्टाचार्य विरचित, श्लोक सं० ३२५, पूर्ण।

——सं० वि० (क) २६२२०, (ख) २६३९८

सर्वोक्तागम

लि०——

प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

सर्वोपदेश

लि०——कुलार्णव से गृहीत, श्लोक सं० २७६।

——अ० ब० ७१५०

सर्वोल्लासतन्त्र

लि०--(१) सर्वानन्दनाथ विरचित। इसमें ६३ उल्लास हैं।

--ए० बं० ६२०४

(२) इसमें प्रतिपादित विषय--निगम और आगम के लक्षण, निगम और आगमों के प्रकाश का वृत्तान्त, आगमों की उत्पत्ति, शास्त्रों की उत्पत्ति, युगभेद से देशाचार, देवता-मूर्ति निरूपण, वेदोत्पत्ति कथन, "तन्त्र" नामकरण, सृष्टि की उत्पत्ति, पुनः अन्य प्रकार से सृष्टि की उत्पत्ति कथन, पुनः प्रकारान्तर से सृष्टि की उत्पत्ति का निरूपण, कृत्यप्रकरण, भाव-प्रशंसा, विविध भावाचारों के लक्षण, दूसरे तन्त्रों के भावाचारों के लक्षण, गुरुतन्त्र का गुरुलक्षण, सद्गुरु-लक्षण, वैष्णवाचार, इष्टभक्ति, बलिदान, शैवाचार, शाक्ताचार, विभाव पशु-लक्षण, यन्त्र-प्रमाण, साधकलक्षण, श्रीचक्र का स्थान बोधन, जातिभेदक्रम से श्रीचक्र का निरूपण इत्यादि।

--रा० ला० १०७१

सहस्रचण्डयादिप्रयोगपद्धति

लि०--कमलाकर विरचित। श्लोक सं० ५१८१

--डे० का० (१८८३-८४ ई०)

सहस्रनाममालाकला

लि०--सहस्रनाममाला के निर्माता तथा कला नामक उसकी व्याख्या के निर्माता तीर्थस्वामी हैं। तीर्थस्वामी ने स्वयं संकलित ४० सहस्रनामों में गूढार्थ नामों की कला नामक व्याख्या लिखी है। इसमें भुवनेश्वरी का १, अन्नपूर्णा के २, महालक्ष्मी का १, दुर्गा के ७, काली के ४, तारा के ५, त्रिपुरा के ३, भैरवी के २, छिन्नमस्ता का १, मातङ्गी का १, सुमुखी का १, सीता के २, शिव के ७, राम के २ और कृष्ण के २ सहस्र नाम हैं।

--रा० ला० १०३८

सहस्रागम

यह दश (१०) शिवागमों के अन्तर्गत है।

साङ्ख्यायनतन्त्र

लि०--(१) शिव-कार्तिकेय संवादरूप। श्लोक सं० ११७६, पटल सं० २४। इसमें प्रतिपादित विषय --ब्रह्मास्त्रविद्या का निरूपण, उसमें अभिषेक आदि का निरूपण, एकाक्षरी विधि का निरूपण, महापाशुपत के प्रसंग में बगलामुखी आदि का प्रयोग, यन्त्र का प्रयोग, शताचार्य आदि का प्रयोग कथन, दूर्वाहोम की विधि, अन्य की विद्या भक्षण

करने आदि की विधि, वगलास्त्रविधि कथन, अस्त्रविद्याप्रयोग-विधि का निरूपण, स्तंभिनीविद्या आदि का प्रयोग कथन। —रा० ला० २२५९

(२) षड्विद्यागमान्तर्गत। श्लोक सं० ८३४, २४ वें पटल तक पूर्ण है। —र० मं० ४०९८

(३) नामान्तर—षड्विद्यागम। इसमें ३४ पटल हैं। प्रत्येक पटल का विवरण इ० आ० में देखें। —इ० आ० २५३७

(४) यह तन्त्र वगलामुखी की पूजाविधि का प्रतिपादक है। यह षड्विद्यागम से संवद्ध प्रतीत होता है। किसी-किसी प्रति में इसके ३८ पटल भी पाये जाते हैं। —ए० बं० ६०८४–८७ तथा ६१६१, ६८२३

(५) (क) श्लोक सं० ८५०, पटल सं० ३०। (ख) श्लोक सं० १२००। (ग) श्लोक सं० ८००, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० १०५०, अपूर्ण। —अ० व० (क) १०४, (ख) ३५०८, (ग) २१६१, (घ) ३५५५

(६) ३५ पटल। —रा० पु० ५५८५

सात्वततन्त्र

लि०—शिव-नारद संवादरूप। श्लोक सं० ७८१, पटल सं० ९। यह शिव प्रोक्त और गणेश लिखित है। भगवान् श्रीकृष्ण का विराड् रूप वर्णन, भक्तों की विभिन्न प्रकार की भक्तियाँ, उनके पृथक्-पृथक् लक्षण, भगवान् की सेवा से युग के अनुरूप मोक्ष साधन, भगवान् के सहस्र-नाम, नाम-माहात्म्य, भगवान् विष्णु के नामग्रहण से वैष्णवों की अपराधों से मुक्ति, सर्वसार-रहस्य, तन्त्रोत्पत्ति का कारण, प्रश्न के अनुसार हिंसा की विधि और निषेध का कथन आदि विषय इसमें वर्णित हैं। —रा० ला० १०८६

सात्वतसंहिता

(पञ्चरात्र)

लि०—इसमें २५ अध्याय हैं। यह प्रधान रूप से वैष्णव पूजा का प्रतिपादक है। इसकी श्लोक सं० लगभग ३००० है। —तं० म० १७३५

उ०—शतरत्नसंग्रह में।

साधकाचारचन्द्रिका

लि०—वङ्गनाथ शर्मा द्वारा रचित, श्लोक सं० ४००० और प्रकाश सं० १४। —अ० व० १०१८७

साधकसर्वस्व

लि०—शिवपार्वती संवादरूप, इसकी श्लोक सं० २४९, पटल २। यह प्राणनाथ मालवीय द्वारा संगृहीत है। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—बटुकजी की वीर साधन-विधि, वीरसाधनविधि-प्रयोग, बटुकभैरव-दीपविधि, मुद्राविधि, आसन आदि का निरूपण, पञ्चशुद्धिविधि कीर्तन। —रा० ला० १९५०

साधनदीपिका

लि०—(१) शङ्कर-शिष्य नारायणभट्ट विरचित। इसमें विष्णु-पूजा का विवरण दिया हुआ है। —ए० बं० ६४९३

(२) यह ७ प्रकाशों में पूर्ण है। इसमें विविध विषय वर्णित हैं जिनमें दीक्षा की आवश्यकता, गुरु-लक्षण, शिष्यलक्षण, मन्त्रोद्धार का प्रकार, दीक्षाविधि आदि मुख्य है। ग्रन्थकार के गुरु शङ्कर कान्यकुब्ज थे यह उनके मङ्गलाचरण श्लोक से स्पष्ट प्रतीत होता है—

शङ्करं शङ्करं नत्वा सर्वशास्त्रार्थवेदिनम्।
सेवितं सर्वधर्माणां कान्यकुब्जकुलोद्भवम्॥

—रा० ला० १७२१

(३) पत्रे १२१। —डे० का० ४९८ (१८७५–७६ ई०)

साधनमुक्तावली

लि०—नव कवि शेखर विरचित। श्लोक सं० ११३२, इसमें प्रतिपादित विषय हैं—वशीकरण, आकर्षण आदि में ऋतु, तिथि, योग, नक्षत्र आदि का विचार, कैसे वृक्ष के मूल आदि ग्राह्य है यह निरूपण, वृक्ष-निमन्त्रण के लिए मन्त्र आदि, खोदना, काटना आदि के मन्त्र, वशीकरण तथा उसके साधन चक्र, विजय प्राप्त करना उसमें उपयोगी चक्र का निरूपण, सौभाग्य मिटाना, उसके अनुकूल चक्र, बिगड़े हाथी को अपने सामने से हटाना, उसके उपयुक्त चक्र, बाघ को हटाना, उसके उपयोगी चक्र, स्तंभनविधि, उसमें उपयोगी चक्र, वाजीकरण, वन्ध्या आदि के गर्भधारण के उपाय, विविध ओषधियाँ, चक्र आदि, शत्रु-कुलनाशन, स्त्री-सौभाग्यकरण आदि। —रा० ला० ३१८४

साधनसंग्रह

लि०—दे०, शाक्तसाधन संग्रह।

—सं० वि० (क) २५७५८, (ख) २६०९१

साधनसमुच्चय

उ०--पुरश्चर्यार्णव में।

साम्बपञ्चाशिका

लि०--साम्ब विरचित, पूर्ण।

—डे० का० ४९९ (१८७५-७६ ई०)

साम्बपञ्चाशिकाविवरण

लि०--क्षेमराज विरचित, पूर्ण।

—डे० का० ५०० (१८७५-७६ ई०)

साम्बसंहिता

लि०--श्लोक सं० १२००, अपूर्ण। —अ० ब० ६१६३

साम्राज्यषोडशीलघुमकरन्दस्तोत्र

लि०--रुद्रयामलतन्त्र के अन्तर्गत। दक्षिणामूर्ति विरचित। श्लोक सं० ७२, पूर्ण।

—र० मं० १०६४

सारचिन्तामणि

लि०--भवानीप्रसाद विरचित। श्लोक सं० ५५४४। इसमें दीक्षा-व्यवस्था, अकडम आदि चक्रों की विधि, नित्यानुष्ठान पूजा, मन्त्रोद्धार आदि, विविध शक्ति विषयक अनुष्ठान आदि विषय वर्णित हैं।

—रा० ला० २५३

सारशास्त्र

उ०--तन्त्रालोक में।

सारसंग्रह

लि०--भट्टारक अकुलेन्द्रनाथ विरचित। इसमें निम्ननिर्दिष्ट अनेक ग्रन्थों का सार बतलाया गया है, ऐसा प्रतीत होता है--इष्टोपदेशशिवधर्मोत्तरसार, अकुलनाथ द्वारा उद्धृत निर्वाण कारिका तथा निःश्वासकारिका का सार, वेदोत्तरसार, स्मृतिसार, कृष्णयोग-सार, कुलपञ्चाशिकासार, महाज्ञानसार, श्रीमतसार, श्रीमदुत्तरशङ्खसार, चिञ्चिणी-मतसार, महामायास्तोत्रसार, शंखयोगमहाज्ञानसार, गीतासार आदि।

—ए० बं० ६६२०

उ०--पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव तथा तन्त्रसार में।

सारसमुच्चय

लि०—(१) हरिसेवक विरचित, इसका निर्माणकाल संवत् १७७० वि० (१७१३ ई०) बतलाया गया है तथा इसका विशुद्ध नाम योगसारसमुच्चय बतलाया गया है।

—ए० बं० ६६०४

(२) श्लोक सं० ७५०। इसमें १० पटल है।

—ट्रि० कै० १०४३ (ग)

उ०—आगमकल्पलता तथा मन्त्ररत्नावली में।

सारसमुच्चयपद्धति

लि०—श्लोक सं० ६३८, पूर्ण।

—र० मं० ५२९७

सारस्वतमत

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

सारस्वतस्तव

लि०—वाष्कल-आश्वलायन संवादरूप। श्लोक सं० ७५। इसमें सरस्वती की स्तुति प्रतिपादित है।

—ट्रि० कै० ११२९ (क)

सारात्सारसंगह

लि०—रामशङ्कर राय विरचित। इसकी श्लोक सं० १९९७७ है। १२ परिच्छेदों में यह पूर्ण है। इसमें प्रतिपादित मुख्य-मुख्य विषय हैं—शिवा और शिव की विभूतियों का वर्णन, अर्धनारीश्वर-मूर्ति का प्रतिपादन, अर्धनारीश्वर-स्तोत्र कथन, इन्द्र आदि का अभिमान भञ्जन, जो मुनि नहीं उन्हें मोक्ष प्राप्ति (नहीं ?) हो सकती, यह कथन, तन्त्रों की असंख्यता का प्रतिपादन, ब्रह्मतत्त्व के विषय में ब्रह्मा आदि का सन्देह निराकरण, संक्षेप में दुर्गामाहात्म्य का वर्णन, प्रसिद्ध-प्रसिद्ध तन्त्रों के नामोंका निरूपण, पीठों का निर्णय, महाविद्याओं का निरूपण, कुण्डलिनी के अंगभूत मातृकाओं का वर्णन, महाकामिनी के ध्यान आदि का वर्णन, पञ्च बाणों का निर्णय, वेदोत्पत्ति-वर्णन, वर्णमाला-निरूपण, आद्या के एकाक्षर मन्त्र के अर्थादि का निर्देश, महादुर्गा, तारा, श्रीविद्या, भुवनेश्वरी, वाग्भवी, धूमावती, बगलामुखी, कमला, मातङ्गी आदि के एकाक्षर मन्त्रों के अर्थ आदि का निरूपण, विद्याओं के विशेष नामों का निर्देश, काली, तारा और दुर्गा के एक होने से परस्पर अविशेष वर्णन, गुरु, शिष्य आदि के लक्षण, दीक्षाकाल आदि का निरूपण, विविध देवदेवियों की पूजा आदि।

—रा० ला० ५८९ और २४७१

सारावली

लि०--इसमें दीक्षित के अवश्य करणीय दैनिक कृत्यों तथा दीक्षाविधि का वर्णन, दीक्षा के सम्बन्ध में आकर ग्रन्थों के प्रमाण वचनों का प्रतिपादन है एवं प्रसङ्गतः गुरु और शिष्य के लक्षण भी प्रतिपादित हैं। --ए० बं० ६२७०

सावित्रीकल्प

लि०--(१) ब्रह्मा द्वारा उक्त। ब्रह्मा और सनत्कुमार संवादरूप। इसकी श्लोक सं० १२५ है। इसमें सन्ध्योपासनाविधि, गायत्री के ऋषि, छन्द और देवताओं का प्रतिपादन किया गया है। --ट्रि० कै० ९७४ (ग)

(२) श्लोक सं० ८८, अपूर्ण। --सं० वि० २४३६०

सिंहसिद्धान्तसिन्धु

लि०--(१) गोस्वामी श्रीनिवासभट्ट के पौत्र गोस्वामी जगन्निवास के पुत्र गोस्वामी शिवानन्द विरचित। इसमें १४ तरंग हैं। उनमें प्रतिपादित विषय हैं--प्रातः कृत्य, स्नान, सन्ध्या और तर्पण की विधि, सूर्यार्घ्यदान, शिवपूजा, ध्यान, आसन कथन, पूजा द्रव्योंकी शुद्धि, करशुद्धि, दिग्बन्धन, अग्नि प्राकार का आश्रयण, प्राणायामविधि, भूतशुद्धि, प्राण-प्रतिष्ठा, मातृकान्यास, उनके विविध भेदों का निर्देश, न्यासों का फल कथन, स्वेष्टदेव के मन्त्रों के ऋषि आदि, षडङ्गन्यास, योगपीठन्यास, मूलमन्त्र के अङ्गभूत न्यासों का न्यसन, मुद्राप्रदर्शन, मुद्राओं के लक्षण, स्वेष्टदेव का ध्यान, अन्तर्यागविधि, पूजा, चक्र और प्रतिमा के निर्माण का निरूपण, शालग्रामशिलाओं के लक्षण, पूजा का फल आदि। --ए० बं० ६१९३

(२) (क) श्लोक सं० १३५००, तरंग सं० ३३। (ख) श्लोक सं० ५०० केवल ८ तरंग। (ग) श्लोक सं० १२००, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० ३८० केवल ३० वाँ तरङ्ग। --अ० ब० (क) ५५३३, (ख) ८३१७, (ग) १२६८०, (घ) १२६९३

(३) गोस्वामी शिवानन्द विरचित, रचनाकाल सं० १७३१ वि०। --रा० पु० ४२०५

(४) यह वैष्णवों के धार्मिक कृत्य आदि विविध विषयों का प्रतिपादक ग्रन्थ है। शेष विवरण पूर्व में दिया गया है। --बी० कै० १३३०

(५) (क) शिवानन्द कृत, श्लोक सं० लगभग १२६०, अपूर्ण। (ख) शिवानन्द कृत, श्लोक सं० १०५५४, अपूर्ण। (ग) शिवानन्दभट्ट कृत, श्लोक सं० १५४५, अपूर्ण।

इस प्रति में पुस्तक का नाम--"सिंहसिद्धान्तसिन्धुतन्त्र" लिखा है। (घ) शिवानन्द-भट्ट कृत, श्लोक सं० ३७०२५, पूर्ण। यह तन्त्रनिबन्ध ग्रन्थ है।

--सं० वि० (क) २३९१८, (ख) २४८१९, (ग) २५११०, (घ) २६६३६

सिंहासनविद्यातन्त्र

लि०--त्रिपुरासिद्धान्तान्तर्गत। श्लोक सं० १५४, अपूर्ण। --सं० वि० २५४२१

सिद्धखण्ड

लि०--(१) (क) श्लोक सं० ५००। (ख) श्लोक सं० ६०० (७उपदेश)। (ग) श्लोक सं० ६५० (मन्त्रसार)।

--अ० व० (क) १०३५, (ख) ८३२२, (ग) १०३२९

(२) नित्यनाथ कृत, श्लोक सं० लगभग ७७०, अपूर्ण। --सं० वि० २४६६०

सिद्धघुटिका

उ०--सौन्दर्यलहरीव्याख्या (लक्ष्मीधर कृत) में।

सिद्धज्ञान

लि०-- --प्राप्त ग्रन्थसूची से

सिद्धनागार्जुनीय

लि०--(१) सिद्धनागार्जुन विरचित। श्लोक सं० १८००। दे०, कक्षपुट।

--रा० ला० २५६

(२) दे०, नागार्जुनतन्त्र, सिद्धान्तनागार्जुनतन्त्र में कक्षपुटी।

--कैट्. कैट्. १।७१७

सिद्धनाथ

उ०--स्पन्दप्रदीपिका में।

सिद्धपञ्चाशिका

लि०--उमा-महेश्वर संवादरूप। मूलनाथ द्वारा स्वर्ग से भूमि पर अवतारित। यह पाँच पटलों में समाप्त है तथा कुलालिकाम्नाय का एक अंश है।

--ने० द० १।१४७३ (घ)

सिद्धभैरवतन्त्र

उ०--सौन्दर्यलहरीव्याख्या (लक्ष्मीधर कृत) में।

सिद्धमूलीकल्प

लि०--श्लोक सं० लगभग १००, पूर्ण। --सं० वि० २६३७१

सिद्धयामल (सिद्धियामल)

लि०—सिद्धयामलतन्त्र में बालाकवच।

—कैट्. कैट्. १।७१७, २।१७१

उ०—तन्त्रसार (कृष्णानन्द कृत), आगमतत्त्वविलास, मन्त्रमहार्णव, तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

सिद्धयोगेश्वरतन्त्र

उ०—फेत्कारिणीतन्त्र में।

सिद्धयोगीश्वरमत

उ०—तन्त्रालोक और उसकी टीका में।

सिद्धयोगेश्वरीतन्त्र

लि०—(१) सिद्धयोगेश्वरीमत अथवा भैरववीरसंहिता भी यह कहलाता है। व्याप्तिपटल, शक्तित्रयोद्धार, विद्याङ्गोद्धार, लोकपालोद्धार आदि विषयों का इसमें विवरण है।

—इ० आ०

(२) मत्स्येन्द्रनाथ अवतारित कामाख्यागुह्यक के अन्तर्गत, पुष्पिका में कामाख्या-गुह्यक २४००० श्लोकात्मक कहा गया है।

—ने० द० २।३२

(३) श्लोक सं० १३००, नेवारी लिपि। लिपिकाल ७९३ नेपाली संवत्, अपूर्ण। इसमें इसके ३२ पटलों के विषय भी दिये गये हैं, २ य व्याप्ति पटल, ३ य शक्ति-त्रयोद्धार पटल, ४ र्थ विद्याङ्गोद्धार पटल, ५ म लोकपालोद्धार पटल, ६ ष्ठ समयमंडल, १० म विद्याव्रतपटल इत्यादि। किसी किसी पटल का विषय दिया ही नहीं गया है जैसे 'सिद्धयोगीश्वरीतन्त्रे प्रथमः पटलः' आदि।

—ए० बं० ५९४८

सिद्धलहरीतन्त्र

लि०—(१) जातूकर्ण्य-नारद संवादरूप। इसमें मुख्य रूप से काली-पूजाविधि वर्णित है। ५० मातृका वर्णों की महिमा तथा द्वाविंशत्यक्षरी विद्या की महिमा वर्णित है।

—ए० बं० ५९९९

—कैट्. कैट्. ३।१४८

(२)

उ०—सर्वोल्लास में।

सिद्धविद्यादीपिका

लि०—जगन्नाथ-शिष्य श्रीशङ्कराचार्य विरचित। इसकी श्लोक सं० ९७२ एवं पटल

सं० ९ है। प्रतिपाद्य विषय है--दक्षिणकालिकाकल्प, दक्षिणकाली-पूजाविधि, उनके विशेष साधनों का निर्देश, पुनः पूजन कथन, मन्त्रोद्धार, पुरश्चरणविधि तथा नैमित्तिकानुष्ठान।

--रा० ला० २६२

सिद्धवीरेश्वरीतन्त्र

लि०--इस प्रति में केवल पाँच पटल हैं। १८५३ संवत् में इसकी प्रतिलिपि की गयी थी। वंगाक्षरों में लिखित, अपूर्ण।

--ए० वं० ५९४७

सिद्धशाबरतन्त्र

लि०--(१) ईश्वरी-ईश्वर संवादरूप तथा महादेव दत्तात्रेय संवादरूप यह प्रथम, मध्यम और उत्तम इन तीन खण्डों में विभक्त है। इसमें मारण, मोहन, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण, इन्द्रजाल आदि विविध विषय वर्णित हैं।

--ए० वं० ६०९७

(२) शावरतन्त्र दे०, सिद्धशावर में महाविद्यास्तव किरात ऋषि कृत।

--कैट्. कैट्. १।७१७

सिद्धसन्तान

उ०--तन्त्रालोक में।

सिद्धसन्तानसाधनसोपानपङ्क्ति

लि०--गोपात्मज यशोराज विरचित। इसकी पुष्पिका में लिखा है "इति श्री गोपात्मज श्री यशोराज विरचित सिद्धसन्तानसोपानपङ्क्ति नामक सिद्धमार्गप्रकाशिका में दृष्टि विज्ञान-विनिर्णय नामक १८ वाँ पटल समाप्त" इससे ज्ञात होता है कि यह ग्रन्थ १८ पटलोंमें पूर्ण है। यशोराज का पूरा नाम यशोराजचन्द्र था। वे बालवागीश्वर भी कहलाते थे।

--ने० द० २।४०१

सिद्धसन्तानसाधनसोपानपद्धति

लि०--श्रीमतपद्धति भी इसका नामान्तर है। गोप-पुत्र यशोराज विरचित यह १५ पटलों में पूर्ण है। इसमें गुरु और शिष्य का विचार, वेधदीक्षा विधान, अवस्थाभ्युदय विचार, वेध प्रवृत्ति विचार, परोक्षानुग्रह, समयवर्णन, संकेतनिर्णय, मन्त्रोद्धार आदि विषय वर्णित हैं।

--ने० द० १।१५३६ (ट)

सिद्धसरस्वतीस्तोत्र

लि०--(१) श्रीसनत्कुमारसंहिता के अन्तर्गत। इसमें प्रारंभ में मन्त्र और ध्यान वर्णित है। यह सरस्वतीस्तोत्र, जो बंगाल में बहुत प्रसिद्ध है, से मिलता है।

(२) सिद्धसारस्वतस्तोत्र। दे०, भुवनेश्वरीस्तोत्र। --कैट्. कैट्. १।७१७

सिद्धसारस्वत

उ०--मन्त्रमहार्णव, तन्त्रसार, तारारहस्यवृत्ति, नरसिंहकृत ताराभक्तिसुधार्णव तथा आगमतत्त्वविलास में।

सिद्धसिद्धाञ्जन

लि०--(१) यह विविध प्रकार के तान्त्रिक और ऐन्द्रजालिक प्रयोगों का प्रतिपादक ग्रन्थ है। --बी० कै० १३२९

(२) --कैट्. कैट्. १।७१७

सिद्धसिद्धान्तपद्धति

लि०--(१) गोरक्षनाथ विरचित, पत्रे २६। --रा. पु. ७७७३

(२) गोरक्षनाथ कृत इस निबन्ध में मुख्यतः यह दरसाया गया है कि देवी शक्ति ही प्राधान्येन पूजायोग्य है। उसी में जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और संहार करने की असाधारण शक्ति है। यह ग्रन्थ छह उपदेशों में पूर्ण है। ग्रन्थकार स्वयं कहते हैं--

आदिनाथं नमस्कृत्य शक्तियुक्तं जगद्गुरुम्।
वक्ष्ये गोरक्षनाथोऽहं सिद्धसिद्धान्तपद्धतिम्॥

--म० द० ५७५२

(३) नित्यनाथ कृत। श्लोक सं० २६४, पूर्ण। --सं० वि० २५५२९

(४) --गोरक्षनाथ विरचित। योग विषयक।
--नित्यनाथ सिद्ध विरचित।
--नित्यानन्द विरचित। --कैट्. कैट्. १।७१७

सिद्धागम

लि०-- --कैट्. कैट्. २।१७१
--Hall पे० १९८

उ०--क्षेमराज ने इसका उल्लेख किया है।
यह श्रीकण्ठ के मतानुसार अष्टादश (१८) रुद्रागमों के अन्तर्गत है।
(तन्त्रालोक-टीका)

सिद्धातन्त्र या सिद्धामत

उ०—अभिनव गुप्त ने इसका उल्लेख किया है। —इ० आ० पे० ८४०

उ०—महार्थमञ्जरी परिमल तथा तन्त्रालोक में भी इसका उल्लेख है। इसका नामान्तर सिद्धमत या सिद्धयोगीश्वरमत है।

सिद्धान्तचक्र

नामान्तर—सिद्धारिप्रयोग अथवा सिद्धान्तचन्द्रिका।

लि०—(क) श्लोक सं० ६६, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग १५०, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २५३८७, (ख) २५३८८

सिद्धान्तचक्रमालिनीविजय

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

सिद्धान्तचन्द्रिका

लि०—वसुगुप्त विरचित। शैव तन्त्र, पूर्ण।

—डे० का० ५०१ (१८७५–७६)

सिद्धान्तदीपिका

(सर्वात्मशंभु कृत)

लि०—शाक्त ग्रन्थ। —कैट्. कैट्. १।७१७

उ०—शतरत्नसंग्रह में।

सिद्धान्तबोध

उ०—शैवपरिभाषा (शिवाग्रयोगीन्द्रज्ञान शिवाचार्य कृत) में।

सिद्धान्तरहस्यसार

उ०—शतरत्नसंग्रह में।

सिद्धान्तशिखामणि

लि०—(१) विश्वेश्वर विरचित। शैव तान्त्रिक सिद्धान्त की एक झलक।

—तै० म० ३६४६

—कैट्.कैट्. १।७२१

(२) विश्वेश्वर विरचित।

उ०—वीरशैवानन्दचन्द्रिका में।

सिद्धान्तशेखर

उ०--शाक्तानन्दतरङ्गिणी, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, व्रतप्रकाश, कुण्डमण्डपसिद्धि, ललितार्चनचन्द्रिका, वीरशैवानन्दचन्द्रिका, प्रयोगरत्न, परशुरामप्रकाश, संस्कारकौस्तुभ, आचारमयूख, दानमयूख आदि में।

सिद्धान्तसंग्रह

उ०--पुरश्चर्यार्णव में।

सिद्धान्तसार

उ०--इसका देवनाथ ने तन्त्रकौमुदी में उल्लेख किया है। पुरश्चर्यार्णव, आगमकल्पलता, वीरशैवागम में भी इसका उल्लेख आया है।

सिद्धान्तसारपद्धति

लि०--(१) महाराजाधिराज भोजदेव विरचित। इसमें सूर्यपूजा, नित्यकर्म, मुद्रालक्षण, प्रायश्चित्त, दीक्षा, साधक का अभिषेक, आचार्य का अभिषेक, पादप्रतिष्ठाविधि, लिङ्ग-प्रतिष्ठाविधि, द्वारप्रतिष्ठाविधि, हृत्प्रतिष्ठाविधि, जीर्णोद्धारविधि आदि विषय वर्णित हैं। —ने० द० ११३६३ (ठ)

(२) महाराज भोजदेव विरचित। --कैट्. कैट्. ३।१४९

सिद्धान्तसारस्वत

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

सिद्धान्तसारावली

लि०--(१) त्रिलोचन शिवाचार्य विरचित। शैव तन्त्र सिद्धान्त की एक झलक। (क) पूर्ण। (ख) अपूर्ण, क्रिया और योगपाद।

--तै० म० (क) ३६४५, (ख) ११४०५

(२) त्रिलोचन शिवाचार्य विरचित। --कैट्. कैट्. ११७२२

उ०--शैव-परिभाषा (शिवाग्रयोगीन्द्रज्ञान शिवाचार्य कृत) में।

सिद्धामृत

उ०--शिवसूत्रविमर्शिनी में।

सिद्धिखण्ड

लि०--(१) श्रीपार्वती-पुत्र विनायक रचित यह ८ उपदेशों (अध्यायों) में पूर्ण

है। इसमें आकर्षिणी, वशीकरणी, मोहकारिणी, अमृतसंचारिणी आदि के मन्त्र तथा उन मन्त्रों के साधकद्रव्य आदि का निरूपण है। —नो० सं० २।२४७

(२) नित्यनाथ के मन्त्रसार से गृहीत। —कैट्. कैट्. ३।१४९

सिद्धिनाथसंग्रह

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

सिद्धिनाथसंहिता

उ०—नरसिंह कृत ताराभक्तिसुधार्णव में।

सिद्धिभैरवतन्त्र

उ०—गौरीकान्त ने इसका उल्लेख किया है। —कैट्. कैट्. १।७२२

सिद्धिलक्ष्म्यर्चन

लि०—इसमें सिद्धिलक्ष्मी की पूजा प्रतिपादित है।

—ने० द० १।१५५९ (२)

सिद्धिविद्यारजस्वलास्तोत्र

लि०—श्यामारहस्य के अन्तर्गत। श्लोक सं० २५८, पूर्ण।

—र० मं० ११२४

सिद्धिवीरेश्वरीतन्त्र

लि०—इस ग्रन्थ का केवल ५ वाँ ही पटल उपलब्ध है। —ए० बं० ५९४७

सिद्धिसार

उ०—मन्त्रमहार्णव में।

सिद्धीश्वरतन्त्र

उ०—मन्त्रमहार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

सिद्धेश्वरतन्त्र

लि०—सिद्धेश्वरतन्त्र में जानकीसहस्रनाम स्तोत्र।

—कैट्. कैट्. १।७२२, २।१७३

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव, तन्त्रसार तथा सर्वोल्लासतन्त्र में।

सिद्धेश्वरीतन्त्र

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

सिद्धैकवीरतन्त्र

उ०—प्राणतोषिणी में।

सुग्रीवतन्त्र (विषतन्त्र)

यह योगरत्नावली का आकर ग्रन्थ है। —ए० बं० ६६०२

सुग्रीववशीकरणविद्या

लि०—इसमें सुग्रीव तथा अन्य देवताओं के मन्त्र मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, स्तंभन आदि के सम्बन्ध में वर्णित है। —ए० बं० ६५५७

सुदर्शनचक्र

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक सं० ११०, पूर्ण। —र० मं० २९७३

सुदर्शनमन्त्र

लि०—(१) इसमें सुदर्शन (नारायणास्त्र) का नाममाला मन्त्र है एवं मन्त्रजप के लिए आवश्यक प्रारंभिक क्रिया का भी निर्देश किया गया है।

—ए० बं० ६७७७

(२) —कैट्. कैट्. १।७२४

सुदर्शनसंहिता

लि०—(१) उमामहेश्वर संवादरूप यह पूर्व और उत्तर दो खण्डों में विभक्त है। प्रस्तुत पुस्तक केवल उत्तर खण्ड मात्र है। श्लोक सं० २६८९ तथा पटल सं० १२।

इसमें विषय यों प्रतिपादित हैं— १-२ दो पटलों में राज्यप्राप्ति, विजयप्राप्ति, वशीकरण आदि के विषय में मन्त्रोद्धार आदि का निरूपण, ३रे पटल में दत्तात्रेय, हनुमान् तथा सुदर्शन के मन्त्रों का निरूपण, ४थे पटल में पूजाविधि, मन्त्र-सन्ध्या आदि, अन्तर्यागविधिकथन, ५वें में विशेषरूप से बहिर्याग विधि का प्रतिपादन, ६ठे में वर्ण, चक्र, न्यास आदि का निरूपण, ७वें पटल में कवच, न्यास आदि का निरूपण, ८वें में विविध प्रकार के भिन्न-भिन्न मन्त्रों का निरूपण, मन्त्रसिद्धि का लक्षण तथा उसके उपायों का प्रतिपादन, ९वें पटल में जप, होम, तर्पण, मार्जन, तथा ब्राह्मण-भोजन रूप पञ्चाङ्ग पुरश्चरण का विस्तार, १०वें पटल में दूसरे के चक्र के निवारण के लिए उपाय कथन, ११वें में विजयपताका यन्त्र निरूपण पूर्वक कवच के परिमाण आदि का निरूपण एवं १२वें पटल में दीपदानविधि, महादीपदान, रक्षा, न्यास आदि की विधि वर्णित है। —रा० ला० २२८४

(२) सुदर्शनसंहिता (हनुमत्कल्प मात्र), श्लोक सं० २६४, पूर्ण।
—डे० का० २४६ (१८८३–८४ ई०)

(३) सुदर्शनसंहिता में कार्तवीर्यदीपदान कल्प।
,, पञ्चायुधस्तोत्र।
,, सरस्वतीस्तोत्र।
,, हनुमत्कल्प।
,, हनुमत्कवच।
,, हनुमत्पद्धति।
,, हनुमद्दीप।
,, हनुमद्बलि।
,, हनुमन्मन्त्रगह्वर।
—कैट्. कैट्. १।७२४

(४) (क) श्लोक सं० ८०, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग ३२५, अपूर्ण।
—सं० वि० (क) २५५२७, (ख) २५५२८

सुदर्शना

(तन्त्रराज-व्याख्या)

लि०—(१) प्रेमनिधि-पन्त विरचित। श्लोक सं० ६६८२, खण्डित।
—र० मं० ४८९१
—कैट्. कैट्. १।७२४

(२) तन्त्रराजटीका, प्रेमनिधिपन्त विरचित।

सुधातरङ्गिणी

लि०—शक्तिवल्लभ भट्टाचार्य विरचित। गुरुजनों की सम्मति प्राप्त कर सबके हितार्थ ग्रन्थकार द्वारा यह तन्त्रग्रन्थ रचा गया।
—ने० द० १।१५३९

सुन्दरप्रथमतन्त्र

लि०—श्लोक सं० २२ —अ० ब० १०२०९ (झ)

सुन्दरीकल्प

लि०—(१) सुन्दरी देवी की पूजा पर यह तान्त्रिक निबन्ध है।
—बी० कै० १३४०
—कैट्. कैट्. १।७२६

(२)

सुन्दरीचरणपूजनपद्धति

लि०--यह परशुरामकल्पसूत्र पर आधारित त्रिपुरा-पूजा का प्रकरण ग्रन्थ है।
—ए० बं० ६३७४

सुन्दरीपद्धति

लि०--श्लोक सं० ६१२, पूर्ण। ---सं० वि० २६५९९

सुन्दरीपूजापद्धति

लि०--(१) कुलार्णवतन्त्रान्तर्गत। इसमें त्रिपुरसुन्दरी की पूजा, होम, दूतीयजन, सौभाग्यकवच आदि विषय वर्णित हैं। —ए० बं० ६३७३

(२) सुन्दरीमहोदयान्तर्गत, श्लोक सं० ३९४, अपूर्ण। —र० मं० ४८७४

(३) सुन्दरीमहोदयान्तर्गत, श्लोक सं० ३९४, अपूर्ण।
—कैट्. कैट्. १।७२६, २।१७४

सुन्दरीपूजारत्न

लि०--(१) सामराजशर्म-प्रपौत्र, कामराज-पौत्र, व्रजराज दीक्षित-पुत्र श्रीबुद्धिराज विरचित। नानाविध सम्मत तन्त्रों का अवगाहन कर यह त्रिपुरार्चनविधि शकाब्द १८४३ में श्रीबुद्धिराज द्वारा रची गयी। —म० द० ५७६३

(२) नित्यानन्द विरचित। —कैट्. कैट्. १।७२६

सुन्दरीमहोदय या त्रिपुरसुन्दरीमहोदय

लि०-(१) रामानन्दनाथ या रामानन्द सरस्वती के शिष्य शङ्करानन्दनाथ कविमण्डल शम्भु विरचित। यह ग्रन्थ ५ उल्लासों में विभक्त है। दीक्षा विधि, उपोद्घात, न्यासादि खण्ड, नित्य पूजाविधि और विविध तिथियाँ इसमें वर्णित है। यह ज्ञानार्णव से सम्बद्ध है।
—इ० आ० २५९९

(२) इसके छठे उल्लास का मुख्य अंश नित्य नैमित्तिक पूजा का प्रतिपादन करता है। इसके छह या उससे भी अधिक उल्लास होंगे, ऐसा प्रतीत होता है। —ए० बं० ६३४८

(३) शङ्करानन्दनाथ विरचित। इसकी श्लोक सं० ३००० है।
—अ० ब० ९१६५

(४) शङ्करानन्दनाथ विरचित, श्लोक सं० लगभग २४६२, पूर्ण।
—सं० वि० २४०८१

उ०--सेतुबन्ध में।

सुन्दरीमहोदयार्चनपद्धति

लि०—श्लोक सं० १०००। —अ० ब० ८९२९

सुन्दरीयजनक्रम

लि०—सच्चिदानन्द नाथ उर्फ रामचन्द्र भट्ट विरचित। श्लोक सं० ३०००। —अ० ब० १०५०३

सुन्दरीयन्त्र

लि०—शिवताण्डव यन्त्र से गृहीत, श्लोक सं० ३० (५ म पटल मात्र)। —अ० ब० ८११२ (क)

सुन्दरीरत्नावली

इसमें द्रविड़ शिशु का आख्यान है।

उ०—ज्ञानानन्द ने इसका तत्त्वप्रकाश में उल्लेख किया है।

दे०, नो० सं० (पे० १४०) १।१३७ में ज्ञानानन्द परमहंस कृत तत्त्वप्रकाश।

सुन्दरीरहस्यवृत्ति

लि०—मुकुन्द-पौत्र, नारायण-पुत्र रत्ननाभागमाचार्य विरचित। यह १० पटलों में पूर्ण है। इसमें त्रिपुरा की पूजा का विस्तार से वर्णन किया गया है। ग्रन्थकार ने अपने अनेक गुरुओं तथा पूर्वजों का उल्लेख भी इसमें किया है। —ए० बं० ६३५०

सुन्दरीविद्या

लि०—श्लोक सं० लगभग २५, अपूर्ण। —सं० वि० २५८९७

सुन्दरीशक्तिदानस्तोत्र

लि०—(१) आदिनाथ महाकाल विरचित महाकालसंहिता के अन्तर्गत काली-काल संवादरूप यह सुन्दरीशक्तिदान नामक कालीस्वरूपमेधासाम्राज्यस्तोत्र है। इसमें काली की स्तुति की गयी है। श्लोक सं० ५००। —रा० ला० ३९२

(२) इसमें कालीस्वरूपमेधासाम्राज्यस्तोत्र के स्थान पर कालीस्वरूपसहस्रनाम-स्तोत्र लिखा है। शेष सब पूर्ववत् है। —रा० ला० ४७८

सुन्दरीशक्तिदानाख्यकालिकासहस्रनामस्तुतिरत्न टीका

लि०—पूर्णानन्द परमहंस विरचित। ककारादि क्रम से पढ़े गये काली के सहस्र नामों का अर्थ इसमें है। देखिए, सुन्दरीशक्तिदान स्तोत्र रा० ला० ३९२ —रा० ला० ४७७

सुन्दरीसपर्या

लि०—श्रीकृष्णभट्ट-शिष्य सभारञ्जक रामभट्ट विरचित। —ए० बं० ६३४९

सुन्दरीस्तव

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

सुप्रभेद

लि०—श्लोक सं० ८०, पटल सं० २। ये दो पटल ज्ञानपाद के अन्तर्गत हैं और इनका नाम है शिवसृष्टिपटल और पशुसृष्टिपटल। यह ग्रन्थ दस शिवागमों के अन्तर्गत है। —अ० ब० ६८२७ (ख)

उ०—शतरत्नसंग्रह में।

सुप्रभेदप्रतिष्ठातन्त्र

(बलिस्थापन आदि)

लि०—(१) श्लोक सं० ३००। —अ० ब० ९८७७

(२) इसके चर्या, ज्ञान और क्रिया नाम के तीन पाद हैं। —तँ० म० ११४०२

सुब्रह्मण्यमन्त्र

लि०—श्लोक सं० १५। —अ० ब० ७२९७ (ग)

सुभगार्चनापद्धति

लि०—श्लोक सं० १०००। —अ० ब० ९९४४

सुभगार्चापारिजात

उ०—सौभाग्यभास्कर और सेतुबन्ध में।

सुभगार्चारत्न

लि०—(१) रामचन्द्र विरचित। इसमें ८ तरंग हैं। उनमें लक्ष्मीपूजा, मन्त्र, मुद्रा आदि विषय वर्णित हैं। —ए० बं० ६३४२

(२) आगमी रामचन्द्र कृत, (क) श्लोक सं० ५००। (ख) श्लोक सं० ५००। (ग) श्लोक सं० ५००। —अ० ब० (क) ९९३८, (ख) १०२९१, (ग) १०६१

(३) इसमें ८ मयूख (?) हैं। सुभगादेवी (दुर्गादेवी का एक रूप) की पूजा-विधि प्रतिपादित है। —बी० कैं० १३३७

(४) श्लोक सं० ४३८ (चतुर्थ मयूख तक) —र० मं० ४८९९

(५) रामचन्द्र कृत, पूर्ण। —डे० का० ५०२ (१८७५–७६ ई०)

(६) (क) श्लोक सं० ३४८, अपूर्ण। (ख) रामचन्द्र विरचित, श्लोक सं० लगभग ६००, पूर्ण। लिपिकाल सं० १७९६ वि०। (ग) श्लोक सं० लगभग २९९। लिपिकाल १७६८ वि०। इसका नामान्तर—सुन्दरीपद्धति है। संभवतः यह ऊपर लिखे दो ग्रन्थों (क) और (ख) से अतिरिक्त है।

—सं० वि० (क) २५१९९, (ख) २५८९६, (ग) २६५९९

(७) —कैट्. कैट्. १।७२७

उ०—सेतुवन्ध में।

सुभगोदयदर्पण

लि०—(१) यह ललितादेवी की पूजा का प्रतिपादक है। ग्रन्थकार ने कहा है—'ललितायाः सभेदायाः पूजाविधिरत्र वर्णितः।' दस प्रकार के मातृकादि मन्त्र के न्यासादि का क्रम भी इसमें कहा गया है। तदनन्तर पुरश्चरण—१००० वार या १०० वार मन्त्र-जप—करने का विधान है। —बी० कै० १३३८

(२) श्रीनिवास राजयोगीश्वर विरचित, पूर्ण। यह शक्ति की पूजा का प्रतिपादक है।

—म० द० ५७५४

सुभगोदयवासना

उ०—चिद्वल्ली में।

सुभगोदयटीका

लक्ष्मीधर विरचित।

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी में।

सुभगोदयस्तुति (सटीक)

शङ्कराचार्य के परम गुरु आचार्य गौडपाद विरचित।

लि०—(क) गौडपादाचार्य कृत, श्लोक सं० लगभग २५०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० २२०, पूर्ण। —सं० वि० (क) २१९१९, (ख) २१९२१

उ०—योगिनीहृदयदीपिका, सौन्दर्यलहरी-टीका (लक्ष्मीधर कृत) और महार्थ-मञ्जरी-परिमल में।

सुमुखीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामल के अन्तर्गत, पूर्ण। —रा० पु० परिशिष्ट ९६ (क)

(२) श्लोक सं० ४४८, अपूर्ण। इसमें सुमुखीस्तोत्र नहीं है। शेष चार—सुमुखीकल्प, सुमुखीकवच, सुमुखीसहस्रनाम तथा सुमुखीहृदय—हैं। —र० मं० ४८३७

सुमुखीपटल

लि०—(१) रुद्रयामल से उद्धृत। इसमें उच्छिष्ट मातङ्गी, वगलामुखी तथा श्रीविद्या की पूजा वर्णित है। —ए० बं० ६३०९ (२)

(२) नन्द्यावर्ततन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० ९०। —अ० ब० १२४६२

सुमुखीकवच

लि०—श्लोक सं० २०। —अ० ब० ३५११

सुमुखीपद्धति

लि०—(१) श्लोक सं० १००। —अ० ब० ३५१२

(२) श्लोक सं० लगभग ४००, पूर्ण। लिपिकाल १७५६ वि०। —सं० वि० २५८९५

सुमुखीविधान

लि०—रुद्रयामल में उक्त। —रा० पु० ७६९२

सुराशोधन

लि०—पूर्ण। —डे० का० ५०३ (१८७५–७६ ई०)

सुरेन्द्रसंहिता

लि०—उमा-महेश्वर संवादरूप। यह १४ पटलों में पूर्ण है। श्री उमादेवी के यह निवेदन करने पर कि भगवन्, आपने श्यामला के विशेष मन्त्र और उनकी पूजा मुझे नहीं बतलायी। कृपया उन्हें मुझे बतलावें। भगवान् महेश्वर ने श्यामला के विभिन्न मन्त्र और उनकी पूजा का प्रतिपादन कर उनकी जिज्ञासा पूर्ण की। —म० द० ५७५५

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

सुवर्णतन्त्र

लि०—(१) शिव-परशुराम संवादरूप यह तन्त्र दो खण्ड और १६ पटलों में पूर्ण है। इसमें ताँबे और पारे का सुवर्ण बनाने की विधि वर्णित है। —ए० बं० ६१०१

(२) (क) श्लोक सं० लगभग ३४०, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३६८, पूर्ण। लिपिकाल १७३५ वि०। —सं० वि० (क) २५०९७, (ख) २५७२८

सुव्रततन्त्र

उ०—विष्णुपूजापद्धति (चैतन्यगिरि कृत) में।

सूक्ष्मतन्त्र

लि०— —कैट्. कैट्. १।७३०, ३।१५०

उ०—वीरशैवानन्दचन्द्रिका में।

सूक्ष्मस्वायंभुव

उ०—नारायणभट्ट कृत मृगेन्द्रवृत्ति (विद्यापाद) में।

सूक्ष्मागम

यह दश (१०) शिवागमों के अन्तर्गत है।

लि०— —कैट्. कैट्. ३।१५०

उ०—वीरशैवानन्दचन्द्रिका में।

सूर्यकवच

लि०—(१) यह कवच त्रैलोक्यमङ्गल कहा जाता है। यह बहुत प्रचलित है एवं प्रायः सभी स्तोत्र-संग्रहों में छपा हुआ है। —ए० बं० ६७८७

(२) यह कवच वज्रपञ्जर नाम से प्रसिद्ध है। यह रुद्रयामल तन्त्र के अन्तर्गत है। इसकी श्लोक सं० ५८ है, पूर्ण। —र० मं० १००९

सूर्यपञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामल के अन्तर्गत भैरव-भैरवी संवादरूप।

(क) श्री सूर्यदेवपटल, (ख) श्री सूर्यदेवपूजा-पद्धति, (ग) श्री सूर्यदेव-सहस्रनाम, (घ) श्री सूर्यदेव-कवच तथा (ङ) श्री सूर्यदेव-स्तवराज इसमें वर्णित हैं।

—नो० सं० २।२५१

(२) देवीरहस्यतन्त्र से गृहीत। श्लोकसं० ५००। —अ० ब० ९५१

(३) सूर्यकवच मात्र ब्रह्मयामलान्तर्गत, पूर्ण। —बं० प० ४४६

(४) वज्रपञ्जर नामक सूर्यकवच देवीरहस्यान्तर्गत, पूर्ण। —र० मं० ४९२०

(५) रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोकसं० ६१२, पूर्ण। —सं० वि० २५२२४

सूर्यपटल

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। भैरवभैरवी संवादरूप। इसमें कौलमतानुसार सूर्यदेव की पूजा वर्णित है। इसमें दो पटल हैं—१ ले में सूर्यदेव के मन्त्र और उनके विनियोग के नियम हैं और दूसरे पटल में, जो गद्यमय है, सूर्यपूजा-पद्धति है।

—ए० बं० ५८८८

(२) श्लोक सं० ११०, पूर्ण। देवीरहस्यान्तर्गत। लिपिकाल संवत् १८४१ वि०।

—सं० वि० २५८९४

सृष्टिक्रमचक्रन्यास

लि०—श्लोक सं० १००। —अ० ब० ३५४४

सेतुबन्ध

लि०—वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत नित्याषोडशिका की टीका गंभीरराय भारती दीक्षितपुत्र भासुरानन्दनाथ दीक्षित उपनाम—भास्करराय विरचित। श्लोक सं० ८१२६।८ विश्रामों में पूर्ण। ग्रन्थकार का कहना है कि जो लोग नित्याषोड़शिका रूप महासागर को पार करना चाहें वे आठ विश्रामों से युक्त सेतुबन्ध का सहारा अवश्य लें।

—रा० ला० २२६७

सोमभुजगावली

उ—ता० राभक्तिसुधार्णव तथा तारारहस्यवृत्तिका में।

सोमराज

उ०—तन्त्रालोक-टीका में।

सोमशम्भुतन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव, आगमकल्पलता, ललितार्चनचन्द्रिका तथा शारदातिलक-टीका राघवभट्टी में।

सोमसिद्धान्त

उ०—शतरत्नसंग्रह में।

सौत्रामणितन्त्र

उ०—शारदातिलकटीका राघवभट्टी, पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

सौन्दर्यलहरी या आनन्दलहरी (सटीक)

लि०—(१) श्रीशङ्कराचार्य कृत शक्ति की स्तुति १०१ या १०३ श्लोकों में। टीका—सौभाग्यवर्द्धिनी कैवल्याश्रम यति कृत।

—इ० आ० २६२१

(२) भाषा व्याख्यायुक्त। (क) श्लोक सं० ८७५, इसमें देवी की स्तुति प्रतिपादित है। (ख) श्लोक सं० ९००। (ग) श्लोक सं० २३७५, टीका लक्ष्मीधर विरचित। (घ) श्लोक सं० १४५० टीका सौभाग्यवर्द्धिनी कैवल्याश्रम कृत। (ङ) श्लोक सं० ३००० अपूर्ण, टीका—सुधाविद्योतिनी।

—ट्रि० कै० (क) ११३५, (ख) ११३६, (ग) ११३७, (घ) ११३८, (ङ) ११३९

द्रष्टव्य, आनन्दलहरी।

उ०—सौभाग्यभास्कर आदि में

सौन्दर्यलहरी की व्याख्याएँ—

लि०—(क) सुधाविद्योतिनी अरिजित् विरचित। श्लोक सं० ११५०। सुधाद्योतिनीकार ने सौन्दर्यलहरी का कर्ता प्रवरसेन को माना है—'पूर्वजन्मसमयोपासनाह्लादितमत्या भगवत्या स्तन्यपानसमुल्लसितचित्तवृत्तिः प्रवरसेनामिधः स्तोत्रराजरचनां चकार।' अन्य लोगों ने सौन्दर्यलहरी का कर्ता शंकराचार्य को माना है।

(ख) लक्ष्मीधराभिधा (लक्ष्मीधर विरचित) श्लोक सं० ३२७५।

—ट्रि० कै० (क) १०६५, (ख) १०९५ (ख)

सौभाग्यकल्पद्रुम

लि०—(१) माधवानन्दनाथ विरचित। इसमें दैनिक पूजाविधि का विस्तार से वर्णन है। —ए० बं० ६३३८

(२) (क) श्लोक सं० १४०० (केवल १म और ५ म से ७ म स्कन्ध तक) अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ४०००, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० ४०००, पूर्ण। (घ) श्लोक सं० ९०० (केवल न्यास स्कन्ध)।

—अ० ब० (क) १७७, (ख) ३५१७, (ग) ११७८७, (घ) ११७७८

(३) श्लोक सं० ११५५, अपूर्ण। —र० मं० ४८९६

(४) (क) श्लोक सं० लगभग २९९२, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग क्रमशः १७४७, २६३, अपूर्ण, ६५६ (२ स्कन्ध मात्र) पूर्ण। (ग) श्लोक सं० लगभग ३८५ षष्ठ स्कन्ध, माधवानन्दनाथ कृत श्लोक सं० ३२० (पञ्चम स्कन्ध मात्र) पूर्ण, लिपिकाल

१८८५। (घ) माधवानन्दनाथ कृत श्लोक सं० १०४५ अष्टम स्कन्ध मात्र, पूर्ण। (ङ) माधवानन्दनाथ कृत। श्लोक सं० ५६० सप्तम स्कन्ध मात्र, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २५२०४, (ख) २५६६० से २५६६२ तक, (ग) २५८९२–९३, (घ) २५९०१, (ङ) २५९१९

सौभाग्यकल्पद्रुमटीकासौरभ

लि०—क्षेमानन्द कृत, श्लोक सं० २१५०, अपूर्ण —सं० वि० २४९१८

सौभाग्यकल्पलता

लि०—क्षेमानन्द विरचित। श्लोक सं० १२००। —अ० ब० ५५४३

सौभाग्यकल्पलतिका

लि०—(१) क्षेमानन्दनाथ विरचित। इसमें प्रातः स्मरण, स्नान, त्रैकालिक सन्ध्या, जप, भूतशुद्धि आदि, पाँच सामान्य मन्त्रों के न्यास, पाठ, मुख्य मन्त्र-जप, देवता-पूजन, स्तोत्र, कवच, निमित्त पूजा, प्रायश्चित्त, देवतात्मैक्यानुसन्धान आदि विषय वर्णित हैं। यह ८ पटलों में (स्तवकों में) पूर्ण है। —ए० बं० ६३३९

(२) श्लोक सं० १५००। —अ० ब० ९९४२

(३) (क) श्लोक सं० १६८०, पूर्ण। (ख) क्षेमानन्द कृत, श्लोक सं० १४५१, अपूर्ण। लिपिकाल १८८७ वि०। (ग) श्लोक सं० ३०८, पूर्ण (संभवतः यह ग्रन्थ क्षेमानन्द-नाथ कृत नहीं है)। (घ) श्लोक सं० ६५८ क्षेमानन्द विरचित; पूर्ण।

—सं० वि० (क) २४१२३, (ख) २४९१७, (ग) २५६६३, (घ) २५८७०

सौभाग्यकवच

लि०—(१) नित्याषोडशिकार्णवान्तर्गत शिव-पार्वती संवादरूप। श्लोक सं० ७०। इस कवच में साधकों को सौभाग्य-प्राप्ति के उपाय बतलाये गये हैं।

—रा० ला० ४२१५

(२) विवरण ऊपर दिया जा चुका है। —ए० बं० ६६७१

(३) (क) वामकेश्वर तन्त्र से गृहीत। श्लोक सं० ७०। (ख) श्लोक सं० १००। (ग) महारहस्य से गृहीत। श्लोक सं० ७०

—अ० ब० (क) ३५१८, (ख) ६०२५ (ग) १०८११

(४) वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० १०७, पूर्ण। —र० मं० ४५१३

सौभाग्यगद्यवल्लरी

लि०—निजात्मप्रकाशानन्द (मल्लिकार्जुनयोगीन्द्र) कृत । श्लोक सं० लगभग २९०, अपूर्ण । —सं० वि० २५९५०

सौभाग्यतन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० ३००, पटल सं० ११। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—जप-समय, मन्त्र के पारायण का लक्षण, षोडशाङ्ग विधान में उक्त बीजतत्त्व कथन आदि, पारायण के भेद, विद्यामन्त्रों के पारायण का निर्देश, नामपारायण कथन, तन्त्र-पारायण का प्रतिपादन, हंस-पारायण-लक्षण कथन, चक्रपारायण-लक्षण कथन, रमापारायण-लक्षण कथनादि, आम्नाय-पारायण के लक्षण कथनादि । —रा० ला० ९०९

(२) (क) श्लोक सं० ८०, पारायणविधि मात्र, अपूर्ण । (ख) श्लोक सं० ३०० (केवल ३ य पटल से ११ पटल तक) । (ग) श्लोक सं० ३००, पारायणविधि मात्र ।

—अ० व० (क) ५५, (ख) १०१४२, (ग) १०७९७

(३) श्लोक सं० २९०, अपूर्ण । —र० मं० १०४२

(४) —ए० वं० ६८२५

(५) (क) श्लोक सं० लगभग १०१०, अपूर्ण । (ख) श्लोक सं० १३०, अपूर्ण ।

—सं० वि० (क) २४५७५, (ख) २५१५४

सौभाग्यतरङ्गिणी

लि०—मुकुन्द विरचित, त्रिपुरसुन्दरी-पूजा का प्रतिपादक यह तान्त्रिक ग्रन्थ ४ लहरियों में पूर्ण है । —ने० द० १।१४५८

सौभाग्यभास्कर

लि०—यह भास्करराय विरचित ललितासहस्रनाम-भाष्य है। रचना काल १७२८ ई० । —कैट्. कैट्. १।७३८

सौभाग्यरत्नाकर

लि०—(१) सच्चिदानन्दनाथ-शिष्य विद्यानन्दनाथ विरचित, यह ३६ तरंगों में पूर्ण है। बी० कै० १३२८ तथा म० द० ५७५६ में विशेष विवरण द्रष्टव्य । यह त्रिपुरा-पूजा-पद्धति का निर्देशक है । —ए० वं० ६३४०

(२) यामल आदि सब तन्त्रों का आद्योपान्त पर्यालोचन कर तथा गुरुमुख से उनका

रहस्य यथार्थ रूप में जानकर प्रयागराज में विद्वन्मण्डली द्वारा प्रार्थित अधिकारी ग्रन्थकार ने सब लोगों के हितार्थ इसमें अशेष त्रैपुर विधान का प्रतिपादन किया।

—नें० द० १।१४७२

(३) विद्यानन्दनाथ (श्रीनिवासभट्ट गोस्वामी) कृत। पत्रे २७२।

—रा० पु० २५६५८

(४) सच्चिदानन्दनाथ शिष्य विद्यानाथ (नन्दनाथ ?) विरचित, (क) श्लोक सं० ५०००(२१ तरंग पूरे २२ वाँ शुरू)। (ख) श्लोक सं० २३०० (आरंभ से २० वें तरंग तक। (ग) श्लोक सं० १०००० (केवल ५ पत्रे त्रुटित हैं)। (घ) श्लोक सं० २५०० (आदि और अन्त में अपूर्ण। (ङ) श्लोक सं० २०० (केवल छठा तरंग)। (च) श्लोक सं० १००००, ३६ तरंगों में। (छ) श्लोक सं० १००, अपूर्ण।

—अ० ब० (क) ८६, (ख) ७०६७, (ग) ९१६७, (घ) ९९०९, (ङ) १०४४४, (च) १०६९७, (छ) ११८५८

(५) ग्रन्थ की समाप्ति में ग्रन्थकार ने स्वयं अपना परिचय दिया है—

सच्चिदानन्दनाथाङ्घ्रिसरोरुहयुगं भजे ।
यत्कटाक्षलवोल्लासात् शिवोऽहं पञ्चकृत्यकृत् ॥
श्रीविद्यानन्दनाथेन शिवयोः प्रियसूनुना ।
कृते सिन्धावगादेष षट्त्रिंशः सत्तरङ्गकः ॥

इसमें तान्त्रिक पूजा प्रतिपादित है। ३६ तरङ्गों में यह पूर्ण है। —बी० क० १३२८

(६) श्रीविद्यातत्त्ववेत्ता जगति करुणयोपात्तकायः शिवो यः
श्रीमान् सौसुन्दराख्यक्षितिसुरतिलकः सच्चिदानन्दनाथः ।
तच्छिष्यश्रीनिवासो द्रविडविषयजस्तत्प्रसादात्ततत्त्वः
श्रीविद्यानन्दनाथः परशिववचसां भाववेत्ता विधेयः ॥
श्रीविद्यायाः सभेदाया नित्यनैमित्तिकार्चनम् ।
काम्यार्चनं च दीक्षाङ्गभूतं प्राच्याङ्गसाधनम् ॥
दीक्षाभेदः पुरश्चर्या तत्कर्म नियमादिकम् ।
काम्यहोमविधिश्चैव लिख्यते रत्नवारिधौ ॥
क्षेत्रेऽविमुक्ते शिवराजधान्यामास्ते निजाराध्यनिदेशवर्ती
श्रीविद्यानन्दनाथेन शिवयोः प्रियसूनुना ।
कृते सौभाग्यरत्नाब्धौ षट्त्रिंशोऽगात्तरङ्गकः ॥

यह ३६ तरंगों का ग्रन्थ, जिसमें श्रीविद्या की साङ्गोपाङ्ग सर्वविध पूजा वर्णित है, काशी में श्रीविद्यानन्दनाथ द्वारा रचा गया। —म० द० ५७५६, ५७५७

(७) सच्चिदानन्दनाथ-शिष्य विद्यानन्दनाथ विरचित, (क) श्लोक सं० ९४००, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ६९१६, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ३५८५ (१४ वें तरंग तक)।

—र० मं० (क) १०३९, (ख) ४९२१, (ग) ४८९२

(८) यह तान्त्रिक पूजापद्धति ३६ तरंगों में पूर्ण है। (क) ४४० पन्ने, संवत् १५७५ वि० में लिखित, श्लोक सं० १५०००। (ख) अभिनव लिखित। (ग) पन्ने २४८।

—तै० म० (क) ६७०४, (ख) ६७०५, (ग) ६७०६

(९) विद्यानाथ कृत। पूर्ण। —डे० का० (१८७५,७६ ई०)

(१०) विद्यानन्दनाथ विरचित।

—कैट्. कैट्. १।७३८, २।१७७, ३।१५१

(११) (क) विद्यानन्दनाथ कृत, श्लोक सं० ८३८४, अपूर्ण। लिपिकाल संवत् १७८९ वि०। (ख) विद्यानन्दनाथ कृत, श्लोक सं० लगभग ११६५८, पूर्ण। (ग) विद्यानन्दनाथ कृत, श्लोक सं० ३८७, अपूर्ण। लिपिकाल सं० १६३० वि०। (घ) विद्यानन्दनाथ कृत, श्लोक सं० लगभग १४८२, अपूर्ण। (ङ) विद्यानन्दनाथ कृत, श्लोक सं० लगभग १९३५, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २४९५४, (ख) २५१०४, (ग) २५९४६, (घ) २६५३८, (ङ) २६६७३

उ०—पुरश्चर्यार्णव, सेतुवन्ध तथा सौभाग्यभास्कर में।

सौभाग्यरहस्य

लि०—सच्चिदानन्दनाथ-शिष्य विद्यानन्दनाथ विरचित। ज्ञानार्णव से संकलित।

—अ० ब० ५५८० (ख)

सौभाग्यवर्द्धिनी

लि०—गोविन्दाश्रम के शिष्य कैवल्याश्रम विरचित आनन्दलहरी की व्याख्या।

—कैट्. कैट्. १।७३८

सौभाग्यविद्या

गौतमीय तन्त्र का उत्तर भाग।

लि०— —कैट्. कैट्. २।१७७

सौभाग्यसुधोदय

लि०—(१) सच्चिदानन्दनाथ-शिष्य विद्यानन्दनाथ कृत। (क) श्लोक सं० ६००, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० २०००। (ग) श्लोक सं० ६००, अपूर्ण।

—अ० ब० (क) ५३९१, (ख) १०५३७, (ग) १०६१५ (ख)

(२) पुण्यानन्दनाथ-शिष्य अमृतानन्द योगिप्रवर विरचित। श्लोक सं० १७५। देवी की स्तुतिरूप सौभाग्यलहरी की यह व्याख्या है। —ट्रि० कै० ११२७ (झ)

(३) विद्यानन्दनाथ विरचित, श्लोक सं० २३७६, पूर्ण। —सं० वि० २४९१४

सौभाग्यसुभगोदय

अमृतानन्दनाथ कृत।

उ०—योगिनीहृदयदीपिका में।

सौभाग्यहृदय

लि०—गोरक्ष या महेश्वरानन्द के परम गुरु विरचित। —कैट्. कैट्. २।१७७

उ०—महार्थमञ्जरी की परिमल नामक टीका में।

सौभाग्यानन्दसन्दोह

उ०—कौलमतरहस्य में।

सौरकल्पविधि

लि०—श्लोक सं० ५००। —अ० ब० १०३१५

सौरभेयतन्त्र

यह श्रीकण्ठ के मतानुसार अष्टादश (१८) रुद्रागमों के अन्तर्गत है।

उ०—सर्वदर्शनसंग्रह में।

सौरसंहिता

लि०—(१) शिव-कार्तिकेय संवादरूप। यह मौलिक तन्त्र ग्रन्थ है तथा १० पटलों में पूर्ण है। यह तन्त्र शिव या शक्ति का प्रतिपादन न कर सूर्य का प्रतिपादक है।

—ने० द० १।१२३० (झ)

—अ० ब० १३२५५

(२) श्लोक सं० ५५०।

स्कन्दयामल

यह यामलाष्टकों में अन्यतम है।

उ०—रघुनन्दन तथा प्राणतोषिणी में प्राणतोषण मिश्र द्वारा।

स्कन्दसद्भाव

लि०——शिवप्रोक्त, (क) श्लोक सं० १३००, पूर्ण। स्कन्द की उत्पत्तिकथा से युक्त यह अठारह अध्यायों में पूर्ण है। यह सर्वार्थसाधक है। इसमें १ म अध्याय में शास्त्रसंग्रह है, २ य में उत्पत्ति, ३ य में तन्त्रोद्धार, ४ र्थ में पूजनविधि, ५ म में अग्निकार्य, ६ ष्ठ में दीक्षाविधि, ७ म में आचार आदि विषय वर्णित हैं।

(ख) श्लोक सं० १३००। इसमें स्कन्द-पूजा आदि विषय प्रतिपादित हैं।

—ट्रि० कै० (क) १०७१, (ख) १०७२ (क)

स्कन्दानुष्ठानसंग्रह

लि०——ग्रन्थकार——क्रियासंग्रहकार के पौत्र हैं। श्लोक सं० ४७७५, अपूर्ण। इसमें स्कन्द की पूजा विस्तार से वर्णित। —ट्रि० कै० १०७३

स्तवचिन्तामणि (सवृत्ति)

लि०——मूलकार——भट्टनारायण तथा वृत्तिकार——क्षेमराज, शैव तन्त्र; (क) पूर्ण, (ख) पूर्ण। —डे० का० (क) ५०५, (ख) ५०६ (१८७५-७६ ई०)

उ०——रत्नकण्ठ द्वारा स्तुतिकुसुमाञ्जलि-टीका में।

स्तोत्रभट्टारक

उ०——महार्थमञ्जरी-परिमल में।

स्तोत्रमाला

लि०——शितिकण्ठ कृत। —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

स्तोत्रावली

लि०——उत्पलाचार्य विरचित। देखिए, परमेशरतोत्रावली।

—कैट्. कैट्. ११७४४

उ०——योगिनीहृदयदीपिका में।

स्त्रीवशीकरण

लि०——श्लोक सं० लगभग २६२, पूर्ण। —सं० वि० २३९४३

स्त्रीसौभाग्यकवच

लि०——वामकेश्वरतन्त्र से गृहीत। श्लोक सं० ८१।

—डे० का० २६१ (१८८३-८४ ई०)

स्पन्दकारिका

लि०—वसुगुप्त विरचित, पूर्ण।

उत्पल वैष्णव के मतानुसार वसुगुप्त से उपदेश प्राप्त कर कल्लट ने इसकी रचना की। नामान्तर—स्पन्दसूत्र।

स्पन्दकारिकाविवरण

लि०—राजानक रामकण्ठ विरचित। दो पूर्ण प्रतियाँ

—डे० का (१) ५०८, (२) ५०९ (१८७५-७६ ई०)

स्पन्दनिर्णय

लि०—(१) क्षेमराज विरचित। श्लोक सं० ८००। इसमें शिवजी की विश्वसृष्टि-शक्ति का विवरण दिया गया है।

—ट्रि० कै० १०७४ (क)

(२) पूर्ण।

—डे० का० ५११ (१८७५-७६ ई०)

स्पन्दप्रदीपिका

लि०—उत्पल देव विरचित। पूर्ण।

—डे० का० ५१२ (१८७५-७६ ई०)

स्पन्दप्रदीप

लि०—विद्योपासक भट्टारक स्वामी कृत। अपूर्ण।

—डे० का० ५१३ (१८७५-७६ ई०)

स्पन्दविवरणसारमात्र

उत्पलदेव-शिष्य राजानक रामकण्ठ कृत।

स्पन्दसन्दोह

लि०—क्षेमराज विरचित। पूर्ण। —डे० का० ५१७ (१८७५-७६ ई०)

उ०—महार्थमजरी-परिमल में।

स्पन्दसर्वस्व

लि०—कल्लट विरचित, (क) पूर्ण। (ख) पूर्ण। (ग) पूर्ण।

—डे० का० (क) ५१४, (ख) ५१५, (ग) ५१६ (१८७५-७६ ई०)

स्पन्दसूत्र (सटिप्पण) या शिवसूत्र

लि०—वसुगुप्त विरचित। टिप्पण के निर्माता अज्ञात। (क) पूर्ण। (ख) पूर्ण।

—डे० का० (क) ५१८, (ख) ५१९ (१८७५-७६ ई०)

स्पन्दामृत

वसुगुप्त कृत (द्रष्टव्य Kashmir Shaivism, पृ० ३७)। किसी-किसी के मत से यह स्पन्दकारिका का नामान्तर है। (द्रष्टव्य Abhinava Gupta, पृ० ९२ और ९३)।

स्वच्छन्दतन्त्र

लि०—इसमें ९ पटल हैं। यह काश्मीर सं० सीरीज में ७ भागों में छप चुका है। इसकी श्लोक सं० ११०० है। —ए० वं० ५८२२

स्वच्छन्दपद्धति

लि०—(१) विमलानन्द-शिष्य चिदानन्द विरचित। (क) श्लोक सं० ४००। (ख) श्लोक सं० ४००, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ६०० (अन्त में खण्डित)।

—अ० व० (क) ८२५६, (ख) १०८१९, (ग) ९०११

(२) काशीवासी श्री नीलकण्ठाश्रम यति के शिष्य माधवात्मज चिदानन्द विरचित। श्रीविद्याराधन में बालकों के प्रवेश के निमित्त सिद्धसरणि की यह संक्षिप्त पद्धति चिदानन्द द्वारा रची गयी है। पत्रे ४३। १९ स्पन्दों में यह पूर्ण है। —म० द० ५७५८

स्वच्छन्दभट्टारकबृहत्पूजापत्रिकाविधि

लि०—(१) श्लोक सं० २८८।

—डे० का० २६३ (१८८३–८४ ई०)

(२) —कैट्. कैट्. १।७४९

स्वच्छन्दभैरव या कौलस्वच्छन्दभैरव

लि०—(१) इसमें स्वच्छन्दभैरव की पूजा का विवरण दिया गया है विविध प्रकार की मुद्राओं के साथ। —बी० कै० १३४१

(२) पूर्ण। —डे० का० ५२० (१८७५–७६ ई०)

यह चतुःषष्टि (६४) भैरवागमों के अन्तर्गत आठ भैरवतंत्रों में है—श्रीकण्ठ।

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा योगिनीहृदयदीपिका में।

स्वच्छन्दयामलतन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

—तन्त्रालोक-टीका

उ०—योगिनीहृदय, सौभाग्यभास्कर, सुभगोदय, योगिनीहृदयदीपिका तथा महामोक्षतन्त्र में।

स्वच्छन्दोद्योत (स्वच्छन्दनयटीका)

लि०—(१) राजानक अभिनवगुप्त के शिष्य राजानक क्षेमराज विरचित। (क) श्लोक सं० ११९४, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १३२८, पूर्ण।

—डे० का० (क) ५२१, (ख) ५२२ (१८७५-७६ ई०)

(२) क्षेमराज कृत। —कैट्. कैट्. १।७४९

स्वच्छन्दतन्त्र

उ०—तन्त्रसार, सौभाग्यभास्कर, महार्थमञ्जरीपरिमल, चिद्वल्ली, तन्त्रालोक, आगमतत्त्वविलास, शतरत्नसंग्रह तथा प्राणतोषिणी में।

स्वच्छन्दसंग्रह

उ०—योगिनीहृदय, सौभाग्यभास्कर, सुभगोदय, योगिनीहृदयप्रदीपिका तथा महामोक्ष में।

स्वतन्त्रतन्त्र

लि०—(१) —ए० बं० ५८२२

(२) (क) श्लोक सं० ३३२, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ५२, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४०६१, (ख) २४०६२

उ०—तन्त्रसार, श्यामारहस्य, ताराहस्यवृत्ति, कालिकासपर्याविधि तथा शतरत्नसंग्रह में।

स्वप्नवाराहिकाकल्प

लि०—श्लोक सं० लगभग १२४, पूर्ण। —सं० वि० २६१६७

स्वप्नवाराहीकल्प

लि०—(१) इसमें स्वप्नों के शुभाशुभ फल का निरूपण है तथा दुःस्वप्नों की निवृत्ति के लिए जगन्मयी की पूजा आदि उपाय प्रतिपादित है। —वी० कै० १३४२

(२) आगमकल्पद्रुमसंग्रह से गृहीत। श्लोक सं० लगभग १४०, पूर्ण।

—सं० वि० २४४४४

स्वप्नवाराहीप्रयोग

लि०—श्लोक स० लगभग २५, पूर्ण। —सं० वि० २६५९८

स्वप्नाध्याय

लि०––उत्तरतन्त्र में उक्त। पार्वती-महादेव संवादरूप, इसमें स्वप्नों के फलाफल का वर्णन किया गया है। ––ए० बं०५८९६

स्वबोधोदयमञ्जरी

उ०––स्पन्दप्रदीपिका में।

स्वरूपाख्यस्तोत्र (फेत्कारिणीतन्त्रान्तर्गत)

लि०––फेत्कारिणीतन्त्र के अन्तर्गत ताराखण्ड में महाकाल भाषित। इसमें माया बीजोद्धार पूर्वक भगवती की पूजाविधि और स्तुति प्रतिपादित है। ––रा० ला० ९९४

स्वरूपाख्यस्तोत्रटीका (आनन्दोद्दीपिनी)

लि०––ब्रह्मानन्द सरस्वती कृत। यह फेत्कारिणीतन्त्र में उक्त प्रकृति के स्वरूप के निरूपक स्तोत्र का व्याख्यान है। ––नो० सं० ३।३६१

स्वरूपाख्यानस्तवटीका

लि०––नन्दराम विरचित, पूर्ण। ––बं० प० १३५६ (क)

स्वर्गलक्षण

लि०––श्लोक सं० २५०। ––अ० ब० ९६८७

स्वर्णतन्त्र

लि०––(१) श्लोक सं० १०००। ––अ० ब० १०६६३

(२) ––ए० बं० ६३२४

स्वर्णतन्त्रकल्प

लि०––कुष्ठकल्प तथा वाराहीकल्प भी इसमें संनिविष्ट हैं। संमिलित श्लोक सं० १६२, पूर्ण। ––सं० वि० २५४१६

स्वर्णाकर्षणभैरवकवच

लि०––श्लोक सं० ११४, पूर्ण। ––सं० वि० २५९४७

स्वर्णाकर्षणभैरवतन्त्र

लि०––श्लोक सं० ३८२, पूर्ण। लिपिकाल संवत् १९१२ वि०। ––सं० वि० २४४११

स्वर्णाकर्षणभैरवदीपप्रकाश

लि०––रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक सं० ५६, पूर्ण। ––सं० वि० २५८७५

स्वर्णाकर्षणभैरवपटल

लि०——(क) श्लोक सं० ७३, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ११२, पूर्ण।
—सं० वि० (क) २४१६७, (ख) २५९४७

स्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्र

लि०——(क) श्लोक सं० ३७, अपूर्ण। लिपिकाल सं० १९४१ वि०। (ख) श्लोक सं० १५, पूर्ण। —सं० वि० (क) २४१६८, (ख) २५३९८

स्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रविधि

लि०——त्रिपुरसिद्धान्त के अन्तर्गत। श्लोक सं० ४१, पूर्ण। —सं० वि० २४३२५

स्वर्णाकर्षणभैरवी

लि०——श्लोक सं० १००, पूर्ण। —डे० का० (१८८३-८४ ई०)

स्वस्वभावसंबोध

उ०——स्पन्दप्रदीपिका में।

स्वात्मसंबोध

इसका नामान्तर——आत्मसंबोध है।

उ०——स्पन्दप्रदीपिका में।

स्वामिवश्यकरीमन्त्र

लि०——श्लोक सं० ११, अपूर्ण। —सं० वि० २६१६८

स्वायंभुव आगम

श्रीकण्ठी-मत से यह दश (१०) रुद्रागमों में अन्यतम है। इस पर खेटपाल विरचित व्याख्या है।

उ०——तन्त्रालोक-टीका जयरथी तथा शतरत्नसंग्रह में।

स्वायम्भुववृत्ति

(१) नारायणकण्ठ कृत। यह शैव तन्त्र है। इसका श्रीरामकण्ठ ने नरेश्वर-परीक्षाप्रकाश में उल्लेख किया है। इस पर एक वृत्ति भी है जिसका उल्लेख हैमाद्रि ने चतुर्वर्गचिन्तामणि के व्रतखण्ड तथा दानखण्ड में किया है एवं रघुनन्दन ने भी तीर्थतत्त्व में किया है। —कैट्. कैट्. ११५५

उ०——रामकण्ठ कृत परमोक्षनिरासकारिका तथा अघोरशिवाचार्य कृत रत्नत्रय-टीका में।

हंस

उ०--सर्वोल्लासतन्त्र में (चतुःषष्टि तन्त्रों के अन्तर्गत) इसका उल्लेख है।

हंसकल्प

लि०--अर्घ्यप्रदानविधि मात्र। --कैट्. कैट्. ३।१५५

हंसपारमेश्वर

उ०--तन्त्रसार, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमतत्त्वविलास, स्पन्दप्रदीपिका, योगिनी-हृदयदीपिका तथा तारारहस्यवृत्ति में।

हंसपारायण

उ०--आगमकल्पलता में।

हंसभेद

उ०--महार्थमञ्जरी-परिमल में।

हंसमन्त्र

लि०--श्लोक सं० १०। --अ० ब० १३८९३

हंसमहेश्वर

उ०--सर्वोल्लास, आगमतत्त्वविलास, तन्त्रसार, मन्त्रमहार्णव तथा ताराभक्ति-सुधार्णव में।

हंसयन्त्र

लि०--पूर्ण। --सं० वि० २६१६९

हंसयामलतन्त्र

लि०--श्लोक सं० लगभग ९२५, अपूर्ण। --सं० वि० २६२३६

हंसविधान

लि०--(क) श्लोक सं० १०४, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ९०, अपूर्ण। लिपिकाल १६७७ शकाब्द। --सं० वि० (क) २६५१९, (ख) २६५२०

हंसविलास

लि०--हंसभिक्षु कृत। इसमें ४४४ टुटके हैं। श्लोक सं० ५६०० (फोटोकापी)। --अ० ब० १३६९७

हंसातन्त्र

उ०--श्रीकण्ठ के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

—(तन्त्रालोक-टीका)

हंसादितन्त्र

उ०--प्राणतोषिणी में।

हंसोपनिषत्

उ०--चिद्वल्ली में।

हठप्रदीपिका

लि०--(१) स्वात्माराम कृत। यह पाँच पटलों में पूर्ण है। इस पर ब्रह्मानन्द ने टीका लिखी है। इसके पञ्चम पटल में छायापुरुष-दर्शन का विधान है।

—ए० बं० ६५९२-९६

(२) नामान्तर--हठदीपिका। स्वात्माराम कृत। इस पर निम्नलिखित टीकाएँ है--(१) उमापति कृत, (२) ब्रह्मानन्द कृत ज्योत्स्ना टीका, (३) महादेव कृत टीका, (४) रामानन्द तीर्थ कृत टीका तथा (५) व्रजभूषण कृत टीका। --कैट्. कैट्. १।७५३

हत्यापल्लवदीपिका

लि०--श्रीकृष्ण विद्यावागीश भट्टाचार्य कृत। श्लोक सं० ९९२। उन्मत्त भैरवी, फेत्कारिणी, डामरमालिनी, कालोत्तर, सिद्धयोगीश्वरी, योगिनी आदि तन्त्रों से शान्तिक, पौष्टिक, मारण, वशीकरण, स्तंभन, उच्चाटन आदि षट्कर्म प्रकरण को उद्धृत कर, इसमें स्पष्ट रूप से उनका प्रतिपादन किया गया है। इस पुस्तक में एक विस्तीर्ण यन्त्र भी विद्यमान है।

—रा० ला० १०८७

हनुमत्कल्प (१)

लि०--(१) (क) जनार्दनमोहन कृत। श्लोक सं० ४००।

(ख) श्लोक सं० ५००। --अ० ब० (क) ५६७३, (ख) १०७३१

हनुमत्कल्प (२)

लि०--(१) रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक सं० लगभग ३३, पूर्ण।

—सं० वि० २६१८१

—कैट्. कैट्. १।७५३

(२) सुदर्शनसंहितान्तर्गत।

हनुमत्कवच

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, ईश्वर-पार्वती संवादरूप। —ए० बं० ६७८०

(२) श्लोक सं० ६०। —अ० ब० ५४२७

हनुमत्कवचादि (१)

लि०—श्लोक सं० २१८। इसमें पञ्चमुखी हनुमत्कवच तथा पञ्चमुखी हनुमन्महामन्त्र हैं।

हनुमत्कवच (२) तथा मालामन्त्र

लि०—(क) नाम—हनुमत्कवचादि। श्लोक सं० ५०। इसमें पञ्चमुखी हनुमत्कवच और पञ्चमुखी हनुमन्महामन्त्र ये दो ग्रन्थ हैं। (ख) हनुमत्कवच और मालामन्त्र ये दो ग्रन्थ है। श्लोक सं० ५०। —अ० ब० (क) १३३८२, (ख) ९४४६

हनुमच्छान्तिक

लि०—फेत्कारिणीतन्त्रान्तर्गत। इसमें हनुमान् जी का कौलमार्ग प्रदाता के रूप में उल्लेख किया गया है। —ए० बं० ६७७८

हनुमत्पञ्चमन्त्रपटल

लि०—सुदर्शन संहितान्तर्गत। श्लोक सं० २२०, पूर्ण। —सं० वि० २४८९२

हनुमत्पञ्चाङ्ग

लि०—(१) हनुमत्सहस्रनाम (हनुमत्स्तोत्र इसमें नहीं है) अपूर्ण। —र० मं० ४८४९

(२) (क) श्लोक सं० ७५६, अपूर्ण। (ख) सुदर्शनसंहितान्तर्गत। श्लोक सं० ४२९, पूर्ण। (ग) सुदर्शनसंहितान्तर्गत, श्लोक सं० ७४२, पूर्ण। —सं० वि० (क) २४०४९, (ख) २४८९१, (ग) २४८९३

—कैट्. कैट्. १।७५३

(३) —कैट्. कैट्. ३।१५६

हनुमत्पञ्चाध्यायी

लि०—

हनुमत्पटल

लि०—सुदर्शनसंहिता से गृहीत। —कैट्. कैट्. २।१८१

हनुमत्पताकासिद्धि

लि०— —रा० पु० ६३७१

हनुमत्पद्धति

लि०—श्लोक सं० २५०। —अ० ब० ५१६३

हनुमत्पुरश्चरणविधि

लि०— —र० मं०

हनुमत्सहस्रनाम

लि०—सुदर्शनसंहिता के अन्तर्गत। —कैट्. कैट्. २।१८१, ३।१५६

हनुमदुपासना

लि०—यन्त्रसहित, श्लोक सं० लगभग १०, पूर्ण। —सं० वि० २५०४३

हनुमदेकमुखकवच

लि०— —कैट्. कैट्. १।७५४

हनुमद्गायत्री

लि०—ब्रह्माण्डपुराण से गृहीत। श्लोक सं० २८। —अ० ब० ७४४८

हनुमद्दीपदान

लि०—सुदर्शनसंहिता के अन्तर्गत। श्लोक सं० ७०। —अ० ब० ५४७९

हनुमद्दीपपद्धति

लि०—हरि आचार्य विरचित। —कैट्. कैट्. ३।१५६

हनुमद्दुर्ग

लि०—(१) इसमें हनुमान् का मालामन्त्र है और उसके जप की विधि बतलायी गयी है। —ए० बं० ६५०३

(२) वीरता के साधन हनुमन्मन्त्र आदि इसमें कहे गये हैं। यह अथर्ववेदोक्त कहा गया है। —नो० सं० २।२६४

(३) (क) श्लोक सं० ५०। अथर्ववेद से गृहीत। (ख) श्लोक सं० १००। —अ० ब० (क) ५६१२, (ख) ९४१

(४) (क) अथर्ववेद से गृहीत। श्लोक सं० ७२, पूर्ण। (ख) अथर्ववेदान्तर्गत। श्लोक सं० लगभग ३१, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २४२७०, (ख) २५०८०

हनुमद्दुर्गमन्त्र

लि०—श्लोक सं० ५५, अपूर्ण। —सं० वि० २६२२७

हनुमद्देहलीविधान

लि०—श्लोक सं० ७०, पूर्ण। —सं० वि० २५५६९

हनुमद्द्वादशाक्षरमन्त्रपुरश्चरणविधि

लि०—श्लोक सं० २४०, पूर्ण। —र० मं० ४७०३

हनुमद्द्वादशाक्षरमन्त्रविधान

लि०—श्लोक सं० १८, अपूर्ण। —सं० वि० २५९४९

हनुमद्यन्त्रराज

लि०—अगस्त्यसंहिता के रामकल्प से गृहीत। श्लोक सं० २५।
—अ० ब० १०२०९ (ग)

हनुमन्मन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० २५। —अ० ब० ८६०९

(२) (क) श्लोक सं० ७८, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० १५, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ६३, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० ६०, पूर्ण। (ङ) श्लोक सं० १४, पूर्ण।
—सं० वि० (क) २४११, (ख) २४६१६, (ग) २५३९३, (घ) २५६९९, (ङ) २५८७८

हनुमन्मन्त्रगह्वर

लि०—(१) सुदर्शनसंहिता से गृहीत, श्लोक सं० २००।
—अ० ब० ५७३२

(२) नामान्तर—हनुमद्गह्वर। सुदर्शनसंहिता से गृहीत।
—कैट्. कैट्. ११७५४

हनुमन्मालामन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० ४४०। —अ० ब० ८४३८

(२) (क) श्लोक सं० २७, पूर्ण। (ख) शौनकसंहितान्तर्गत। श्लोक सं० लगभग ६०, अपूर्ण। —सं० वि० (क) २४०९४, (ख) २५०८३

हनुमन्मालामन्त्रकल्प

लि०--(क) श्लोक सं० ६७, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ६०, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २४४२०, (ख) २४४२१

हनुमन्मालामन्त्रजपविधि

लि०—श्लोक सं० लगभग १२, पूर्ण। —सं० वि० २६६४३

हनुमन्मालामन्त्रविधान

लि०—श्लोक सं० लगभग ३०, पूर्ण। —सं० वि० २४२८४

हयग्रीवपञ्जर

लि०— –कैट्. कैट्. १।७५४, २।१८१

हयग्रीवसंहिता

लि०—इसमें हयग्रीव के विभिन्न मन्त्रों के प्रयोगों का वर्णन है।

—ए० बं० ६५०२

हयग्रीवसहस्रनाम

लि०—हर-पार्वती संवादरूप।

विवरण देखें, रा० ला० २६०७। यह प्रकाशित पुस्तक से (मद्रास सन् १९२७ ई० VOL. I से) मिलता नहीं। यह महादेवरहस्यान्तर्गत है। —ए० बं० ६७६५

हयग्रीवौङ्कारकल्प

लि०—पराशरसंहिता में उक्त, यह हयग्रीवौङ्कारकल्प पराशरसंहिता के सात अध्यायों का एक अंश है। इसमें हयग्रीव-पूजा वर्णित है। —ए० बं० ६०५९

हयशीर्षपञ्चरात्र

लि०—(१) यह मन्दिर और मूर्ति की प्रतिष्ठा से सम्बन्ध रखता है। यह दो काण्डों में विभक्त है—(१) देवप्रतिष्ठापञ्चककाण्ड तथा (२) संकर्षणकाण्ड। लिङ्गकाण्ड संकर्षणकाण्ड का ही एक अंश है। इसमें ७४ पटल हैं और १२००० श्लोक हैं।

—इ० आ० २६११

(२) भृगु-मार्कण्डेय संवादरूप। श्लोक सं० ३५१४। नाभिकमल से ब्रह्मोत्पत्ति, वेदों का आविर्भाव, वेदाभ्यासनिरत ब्रह्मा के स्वेदबिन्दुओं से मधु और कैटभ नामक दैत्यों की उत्पत्ति, उनके द्वारा वेदों का हरण, हयग्रीव का आविर्भाव, २५ तन्त्रों का नामतः निर्देश,

हयग्रीवपञ्चरात्र का प्रामाण्यकथन, अन्यान्य पञ्चरात्रों का नामोल्लेख, आचार्य और गुरु का लक्षण, जैमिनि आदि तार्किकों के मत आदि विविध विषय इसमें वर्णित हैं।

—रा० ला० २०३४

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, प्राणतोषिणी तथा ताराभक्तिसुधार्णव में।

हरगौरीसंवाद

उ०—प्राणतोषिणी में।

हरमेखला

लि०—(१) इसमें ऐन्द्रजालिक क्रियाएँ वर्णित हैं। रा० ला० ९८९ में उड्डीशतन्त्र हरमेखला कहा गया है। उन ग्रन्थों में से भी एक हरमेखला कहा गया है जिनपर कक्षपुट आधारित है।

—ए० बं० ६५५५

(२) —ने० द० २।१६

(३) श्लोक सं० ४००। १३ पटलों में पूर्ण। इस ग्रन्थ में मन्त्र तथा ओषधियों का माहात्म्य और प्रयोग बतलाया गया है एवं तान्त्रिक षट्कर्म—मारण, मोहन, उच्चाटन, स्तंभन, विद्वेषण तथा वशीकरण—के उपाय प्रतिपादित हैं। —ट्रि० कै० ९९९ (ख)

हरिलीलामृततन्त्र

लि०—श्लोक सं० १८२, पूर्ण। —सं० वि० २५५५०

हर्षकौमुदी (शारदातिलककी टीका)

लि०—शारदातिलक की टीका हर्षदीक्षित विरचित। —तै० म०

हारकतन्त्र

लि०—शंकर-पार्वती संवादरूप। इसमें पञ्चाग्निसाधन, धूमपानविधि, शीत-साधन-विधि आदि तान्त्रिक विधियाँ निर्दिष्ट हैं।

—ए० बं० ६०४१

हारावलीतन्त्र

लि०—यह तन्त्र १५ पटलों में पूर्ण है। इसमें महामाया तथा मातृका की पूजा, होम और पूजाविधि का फल विशेष रूप से वर्णित है। नित्य, नैमित्तिक और काम्य परस्पर पूर्व की अपेक्षा रखते हैं, अतएव मन्त्री को पहले नित्य उसके सिद्ध होने पर नैमित्तिक तदुपरान्त काम्य अर्चन करना चाहिए, यह भी वर्णन इसके प्रारम्भ में किया गया है।

—ने० द० २।१३३५

हारीतस्मृति

लि०--यद्यपि यह स्मृति कही गयी है, पर विभिन्न देवियों के तान्त्रिक मन्त्रों से पूर्ण है। मुद्रित हारीतसंहिता से यह पृथक् है, किन्तु वृद्धहारीतस्मृति से मिलती-जुलती है।

—ए० बं० ६१३७

हृदयामृत

लि०--उमानन्द कृत। रचनाकाल १७४२ ई०।

हृल्लेखातन्त्र

यह श्रीकण्ठी के मतानुसार से चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

(तन्त्रालोक-टीका)

होममन्त्रविभाग

लि०--कात्यायनीतन्त्रान्तर्गत। यह सप्तशती का मन्त्र-विभाग प्रतीत होता है।

--र० मं० ४६५३

होमविधि

लि०—(१) इसमें होमविधि वर्णित है। यह होम वैष्णवों का विशेष होम है। वसाधारण होम नहीं है।

—ए० बं० ६५३७

(२) गौडवासी शङ्कराचार्य विरचित। श्लोक सं० १००। यह ताराहस्यवृत्ति के अन्तर्गत १४ वाँ अध्याय हैं।

--अ० ब० ५७१२

होमकर्मपद्धति

लि०--हरिराम कृत, श्लोक सं० २००।

—अ० ब० १०५७२

होमसार

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

होमसारोद्धार

उ०—ललितार्चनचन्द्रिका में।

परिशिष्ट

सर्वविद्यानिधान कवीन्द्राचार्य सरस्वती[1] के ग्रन्थसंग्रह के तान्त्रिक ग्रन्थों की सूची—

पुराणागम

१. नारदीयपञ्चरात्रागम, सम्पूर्ण
२. हयशीर्षपञ्चरात्र
३. कामिकाख्यागम
४. कारणागम
५. अजितागम
६. अचिन्त्या ह्वयागम
७. योगन्याख्यागम
८. दीप्त्यागम
९. सहस्राख्यागम
१०. अनुमताख्यागम
११. सुप्रभेदागम
१२. वामदेवाख्यागम
१३. प्रपञ्चयोगागम
१४. स्वायंभुवाख्यागम
१५. विश्वासकाख्यागम
१६. अनलाख्यागम
१७. कौरवाख्यागम
१८. मुकुरागम
१९. बिम्बागम व चन्द्रज्ञानागम
२०. विमलाख्यागम
२१. प्रोज्झिताख्यागम
२२. सिद्धागम

१. कवीन्द्राचार्य सरस्वती मुगलसम्राट् शाहजहाँ के समकालिक थे। वे काशीनिवासी संन्यासी एवं महान् विद्वान् थे। दिल्ली-सम्राट् के भी वे विशेष अनुग्रह-भाजन थे। प्रसिद्धि है कि उन दिनों तीर्थयात्रियों पर सम्राट् ने तीर्थ-कर लगाया था। काशी आने-वाले तीर्थयात्रियों को उससे बड़ा कष्ट होता था। यात्री-कर से तीर्थयात्रियों को मुक्ति दिलाने के लिए काशी तथा उत्तर भारत के विद्वानों का एक शिष्टमण्डल कवीन्द्राचार्य सरस्वतीजी के नेतृत्व में सम्राट् शाहजहाँ से मिला। कवीन्द्राचार्यजी ने अपना पक्ष इस प्रकार प्रभावोत्पादक ढंग से उपस्थित किया कि बादशाह अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होंने तीर्थयात्री-कर उठा लिया और कवीन्द्राचार्य को सर्वविद्यानिधान पदवी से विभूषित किया एवं दरबार से उनके लिए पेन्शन नियत कर दी।

कवीन्द्राचार्य सरस्वती का एक विशाल पुस्तकालय था जिसमें भारतीय संस्कृति के विविध विषयों के बहुत दुर्लभ ग्रन्थ संगृहीत थे। कवीन्द्राचार्य ने अपने संग्रह के सभी ग्रन्थों के आवरण पृष्ठ पर पुस्तक का नाम तथा 'सर्वविद्यानिधानकवीन्द्राचार्यसरस्वतीनां पुस्तक-मिदम्' यह वाक्य अपने हाथ से मोटे अक्षरों में लिखा था।

२३. ललितागम
२४. सन्तानाख्यागम
२५. पारमेश्वरागम
२६. सर्वोत्तरागम
२७. किरणागम
२८. वालुकाख्यागम

उपागम

१. नारसिंहागम
२. भैरवोत्तरागम
३. उत्तराख्यागम
४. कारणाख्यागम
५. पापनाशागम
६. मारणागम
७. महेशानागम
८. चन्द्राह्वयागम
९. भीमतन्त्रागम
१०. परोद्भूतागम
११. प्रश्नसंहितागम
१२. पार्वतीयागम
१३. प्रभूतागम
१४. वामतन्त्रागम
१५. पापनाशनागम
१६. सूत्राख्यागम
१७. चिन्त्याख्यागम
१८. सर्वोद्भवाख्यागम
१९. अमृताख्यागम
२०. वेणूत्तरागम
२१. सौत्यागम
२२. शान्त्यागम
२३. तुलागम
२४. अनन्ताख्यागम
२५. प्रभूतागम
२६. भागाख्यागम
२७. माधवोद्भूतागम
२८. वस्वागम

उनके देहावसान के बाद उनके संग्रह के सब ग्रन्थ इधर-उधर विभिन्न स्थानों में बिखर गये ।

काशी के किसी मठ से उनके ग्रन्थों की एक सूची प्राप्त हुई । जिसे म० म० पं० गङ्गानाथ झा तथा पं० अनन्तकृष्णशास्त्रीजी ने गायकवाड ओरिएण्टल सीरीज में प्रकाशित किया। प्र ीत होता है कि यह सूचीपत्र उनके देहावसान के बाद बनाया गया, क्योंकि इसमें परवर्ती कार्य के ग्रन्थ लेखकों के ग्रन्थों का भी उल्लेख किया गया है। यह उनके सम्पूर्ण संग्रह के ग्रन्थों का सूचीपत्र है, यह भी निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता। फिर भी यह बहुत मूल्यवान् है। इससे बहुत दुर्लभ ग्रन्थों का पता चलता है। इस सूचीपत्र में श्रेणीगत विषय विभाग किया गया है किन्तु सर्वत्र विषयानुसार विभाग नहीं हुआ है। इसीलिए अन्य विषयों की पुस्तकें अन्य विषयों में दृष्टिगोचर होती हैं ।

इसमें अन्याय विषयों के ग्रन्थों के साथ तान्त्रिक ग्रन्थों का भी अच्छा संग्रह है। इसमें उपलब्ध तान्त्रिक ग्रन्थ जिस शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये हैं उनका यहाँ उल्लेख किया जाता है ।

२९. अमिताख्यागम
३०. संविदागम
३१. शुद्धागम
३२. ललितागम
३३. श्यामलागम
३४. हस्त्यागम
३५. जातिभेदागम
३६. विबुधागम
३७. अलङ्कारागम
३८. प्रमेयागम
३९. सुप्रशुद्धागम
४०. अजितागम
४१. विद्यागम
४२. पुराणार्थागम
४३. भास्वरागम
४४. सुतीर्थाख्यागम
४५. वैकृतागम
४६. श्रीकराख्यागम
४७. शिवभेदागम
४८. रुद्रभेदागम
४९. सुवर्धनागम
५०. शूलागम
५१. नन्दागम
५२. रूपभेदागम
५३. पञ्चभेदागम
५४. प्रापञ्चिकागम
५५. संकीर्णाख्यागम
५६. लिङ्गागम
५७. सौम्यतन्त्रागम
५८. अघोरतन्त्रागम
५९. नीललोहिततन्त्रागम
६०. प्रकरणागम
६१. महाघोरागम
६२. मृत्युनाशकागम
६३. कुबेराशागम
६४. वैनायकागम
६५. प्रस्तराख्यागम
६६. प्रस्फुरागम
६७. बन्धनागम
६८. प्रबोधाख्यागम
६९. समयागम
७०. अमोहसंज्ञागम
७१. शालाख्यागम
७२. विलेखनागम
७३. वीरागम
७४. शकटागम
७५. हल संज्ञागम
७६. भद्रागम
७७. निश्वासकार्यागम
७८. निश्वासनयनागम
७९. गुह्यागम
८०. निश्वासागम
८१. निश्वाससारागम
८२. सौख्यागम
८३. सौम्यागम
८४. अनलागम
८५. स्वयंभूतागम
८६. प्रश्नतन्त्रागम
८७. प्राजापत्यागम
८८. कालागम
८९. महाकालागम
९०. महारुद्रागम
९१. कौमारागम
९२. कालदहनागम
९३. मुकुटाख्यागम
९४. मुकुटोत्तारकाख्यागम
९५. चतुर्मुखाख्यागम
९६. बिम्बागम
९७. अर्थलिङ्कारागम
९८. महायोगागम
९९. स्तोभागम
१००. मन्यागम

१०२. वायुतन्त्रागम
१०३. वर्गशिखरागम
१०४. तुलायोगागम
१०५. कौतुकागम
१०६. सारागम
१०७. कुतुपनिकरागम
१०८. तुलावृत्तागम
१०९. वीरभद्रतन्त्रागम
११०. नीलभद्रतन्त्रागम
१११. कालभेदागम
११२. नन्दीसंहितागम
११३. पुराणाख्यागम
११४. देवीमतागम
११५. नन्दीश्वरागम
११६. स्थाणुसंहितागम
११७. स्थिरतन्त्रागम
११८. प्रबुद्धागम
११९. त्रैविक्रमाख्यागम
१२०. कालसंज्ञागम
१२१. वायुलोकोत्तरागम
१२२. प्ररोचितागम
१२३. वाधुलागम
१२४. विश्वकागम
१२५. सिद्धागम
१२६. महानागागम
१२७. विश्वात्मकागम
१२८. सर्वारिष्टकागम
१२९. सर्वागम
१३०. नित्यागम
१३१. श्रेष्ठागम
१३२. वैष्णवागम
१३३. पाशुपतागम
१३४. भागवतपञ्चरात्रागम
१३५. लोकमोहनपञ्चरात्रागम
१३६. अन्ते यागाख्यागम (?)
१३७. अप्रमेयाख्यागम (?)

संहिताप्रकरण

१. हयग्रीवसंहिता
२. गर्गसंहिता
३. शौनकसंहिता
४. बौधायनसंहिता
५. मानवसंहिता
६. जावालिसंहिता
७. व्याससंहिता
८. वार्हस्पत्यसंहिता
९. वाचलसंहिता
१०. सुमन्तुसंहिता
११. यमसंहिता
१२. गौतमसंहिता
१३. प्राजापत्यसंहिता
१४. मौद्गल्यसंहिता
१५. वसिष्ठसंहिता
१६. भार्गवीसंहिता
१७. वामदेवीसंहिता
१८. कौशिकीसंहिता
१९. सोमसंहिता
२०. जामदग्न्यसंहिता
२१. जातूकर्ण्यसंहिता
२२. जैमिनिसंहिता
२३. जाबालिलघुसंहिता
२४. जैलनृत्यसंहिता
२५. नान्दीसंहिता
२६. जाजलिसंहिता
२७. जानुसंहिता
२८. ज्योतिष्मतीसंहिता
२९. जनकसंहिता
३०. वीतिहोत्रसंहिता
३१. शालिहोत्रसंहिता
३२. सुहोत्रसंहिता
३३. बसुहोत्रसंहिता
३४. दशहोत्रसंहिता

३५. शतहोत्रसंहिता
३६. यज्ञहोत्रसंहिता
३७. लिप्तहोत्रसंहिता
३८. प्राणहोत्रसंहिता
३९. अत्रिसंहिता
४०. अगस्त्यसंहिता
४१. अनुसंहिता
४२. अष्टावक्रसंहिता
४३. प्रगाथसंहिता
४४. पिङ्गलसंहिता
४५. सुयज्ञसंहिता
४६. विश्वामित्रसंहिता
४७. मतङ्गसंहिता
४८. यमसंहिता
४९. राजलीसंहिता
५०. वृन्दावनीसंहिता
५१. अलुकसंहिता
५२. वात्स्यायनीसंहिता
५३. रुचकसंहिता
५४. मृकुण्ड (मृकण्डु) संहिता
५५. पितृलादसंहिता
५६. च्यवनसंहिता
५७. सूतसंहिता
५८. पिप्पलादसंहिता
५९. कपिलसंहिता
६०. नैध्रुवसंहिता
६१. काश्यपसंहिता
६२. फणीयसंहिता
६३. शुनःशेप संहिता
६४. दीर्घतमासंहिता
६५. आर्श्यसंहिता
६६. कुण्डन्यसंहिता
६७. मेधातिथिसंहिता
६८. लौगाक्षिसंहिता
६९. कालप्रदीपिका
७०. शुद्धप्रदीपिका
७१. विष्णुवृद्धसंहिता
७२. वत्ससंहिता
७३. नाद्रियसंहिता
७४. सात्वतिसंहिता
७५. सहयुक्तसंहिता
७६. कपिलसंहिता
७७. हारीतसंहिता
७८. कुत्ससंहिता
७९. जयसंहिता
८०. बभ्रुसंहिता
८१. मनुसिद्धिसंहिता
८२. वृद्धवाष्कलसंहिता
८३. लघुवाष्कलसंहिता
८४. कक्षीवान्संहिता
८५. पूतिमाषसंहिता
८६. शतादिसंहिता
८७. नारायणीसंहिता
८८. नकुलसंहिता
८९. कालिकासंहिता
९०. मन्त्रदीपिका
९१. योगनारायणसंहिता
९२. सनत्कुमारसंहिता
९३. भूमिसंहिता
९४. बालखिल्यसंहिता
९५. पवनसंहिता
९६. रत्नमाला
९७. ज्ञानकौमुदी
९८. सुधासार

अन्य संहिताएँ

१ महाकालसंहिता
२. व्योमसंहिता
३. सामसंहिता
४. शंकरसंहिता
५. वायुसंहिता
६. लक्ष्मीसंहिता

७. विघ्नेश्वरसंहिता
८. नारदसंहिता
९. मच्छसंहिता

वैदिक तन्त्र

१. सर्वोन्नयानतन्त्र
२. ज्ञानार्णवतन्त्र
३. अरुणेश्वरतन्त्र
४. विशुद्धेश्वरतन्त्र
५. त्रैपुर तन्त्र
६. महादेवतन्त्र
७. न्यायोत्तरतन्त्र
८. उत्तराम्नायतन्त्र
९. अनुत्तराम्नायतन्त्र
१०. कुण्डीश्वरीतन्त्र
११. गुह्यागुह्यतन्त्र
१२. कुलासारतन्त्र
१३. मातृभेदतन्त्र
१४. वातुलोत्तरतन्त्र
१५. सर्ववीरातन्त्र
१६. त्रोतलतन्त्र
१७. कलासारतन्त्र
१८. कलावादतन्त्र
१९. योगीश्वरीतन्त्र
२०. सर्वाम्नायतन्त्र
२१. दक्षिणाम्नायतन्त्र
२२. पश्चिमाम्नायतन्त्र
२३. ऊर्ध्वाम्नायतन्त्र
२४. वीणातन्त्र
२५. कुलचूडामणितन्त्र
२६. हृद्भेदतन्त्र
२७. वातुलतन्त्र
२८. बहुरूपाष्टकतन्त्र
२९. यामलाष्टकतन्त्र
३०. किरणाख्यतन्त्र

अवैदिक तन्त्र

१. महामायाशम्वरतन्त्र
२. योगिनीज्वालाशम्वरतन्त्र
३. कुलार्णवतन्त्र
४. महासंमोहनतन्त्र
५. रूपिकामततन्त्र
६. विरूपिकामततन्त्र
७. षोडशिका ह्वयतन्त्र
८. परिशिष्टानन्दतन्त्र
९. अमरेश्वरतन्त्र
१०. वामजुष्टतन्त्र
११. कामिकतन्त्र
१२. रूपभेदतन्त्र
१३. पञ्चामृततन्त्र
१४. कल्याणतन्त्र
१५. भूताख्यतन्त्र
१६. भैरवाष्टकतन्त्र
१७. राजिकतन्त्र
१८. गारुडतन्त्र
१९. बालातन्त्र
२०. वासुकी (कि?) तन्त्र
२१. महाकालीमततन्त्र
२२. महावीरावतीतन्त्र
२३. महालक्ष्मीमततन्त्र
२४. महायोगाख्यतन्त्र
२५. मन्त्रोत्तराख्यतन्त्र
२६. विमलामततन्त्र
२७. वीरावतीसखतन्त्र
२८. ललिताज्ञानतन्त्र
२९. महाकालीश्वरीतन्त्र
३०. ललितामततन्त्र
३१. चूडामणितन्त्र

उपतन्त्र

१. मन्त्रार्णवाख्यतन्त्र
२. मन्त्रसाराख्यतन्त्र

३. महाकालतन्त्र
४. शाम्भवतन्त्र
५. षट्कलामततन्त्र
६. मालशातन्त्र
७. मूलकालेश्वरीतन्त्र
८. औड्डामहेश्वरतन्त्र
९. कालकेश्वरतन्त्र
१०. मृगमुखीतन्त्र
११. सौभाग्यवल्लरीतन्त्र
१२. तालचण्डेश्वरतन्त्र
१३. हरमेखलतन्त्र
१४. चण्डरुद्रेश्वरतन्त्र
१५. कौतुकतन्त्र

अन्यतन्त्र

१. भूतडामरतन्त्र
२. शक्तिसंगमतन्त्र
३. गौतमीतन्त्र
४. राजतन्त्र
५. मेरुतन्त्र
६. दत्तात्रेयतन्त्र

मन्त्रशास्त्रप्रकरण

१. सिद्धशावरग्रन्थ
२. मेरुतन्त्रग्रन्थ
३. प्रपञ्चसार
४. बीजकोश (लघु)
५. ,, ,, (गुरु)
६. मातृकाकोश
७. शारदातिलक सटीक
८. ,, पदार्थादर्श टीकायुत
९. ,, गूढार्थदीपिका टीकायुत
१०. श्यामारहस्य
११. विद्यारहस्य
१२. शक्तिसङ्गमरहस्य
१३. सौभाग्यरत्नाकर
१४. कुलार्णव
१५. परशुरामसूत्र (भाषा)
१६. सिंहसिद्धान्त
१७. ,, ,, तन्त्र
१८. मन्त्रमहोदधि (सटीक)
१९. सुन्दरीमहोदय
२०. कालीतन्त्र
२१. लक्ष्मीतन्त्र
२२. सरस्वतीतन्त्र
२३. जनार्दनमहोदधि
२४. रामार्चनचन्द्रिका
२५. तृचभास्कर
२६. पूर्णचन्द्रोदय
२७. परशुरामार्चनचन्द्रिका
२८. लिङ्गार्चनचन्द्रिका
२९. दुर्गाभक्तितरङ्गिणी
३०. सौन्दर्यलहरी (सटीक)
३१. वरिवस्यारहस्य
३२. त्रिपुरारहस्य
३३. तन्त्रसार
३४. दुर्गोत्साह
३५. लोकमोहनपञ्चरात्र
३६. मन्त्रयोगरत्न
३७. घण्टाकर्ण
३८. इन्द्रजाल
३९. स्वच्छन्दपद्धति
४०. ताराभगवती
४१. आकाशभैरवतन्त्र
४२. बटुकभैरवतन्त्र
४३. गणेशतन्त्र
४४. क्षेत्रपालतन्त्र
४५. डामरतन्त्र
४६. बाराहीतन्त्र
४७. कात्यायनीतन्त्र
४८. सप्तशती टीका
४९. ,, गुप्तवती
५०. ,, नागोजिभट्टी

५१. सप्तशती टीका शान्तनवी
५२. ,, लालमणि
५३. ,, नागार्जुनी
५४. ,, गौड़पादाचार्य कृत
५५. चण्डीसपर्याक्रमकल्पवल्ली
५६. रुद्रयामलतन्त्र
५७. विष्णुयामलतन्त्र
५८. ब्रह्मयामलतन्त्र
५९. शिवयामल
६०. देवीयामल
६१. शिवार्चनचन्द्रिका
६२. नृसिंहार्चनचन्द्रिका
६३. नरसिंहपरिचर्या
६४. दुर्गार्चाचन्द्रोदय
६५. कृष्णभक्तिचन्द्रिका
६६. ज्ञानवल्ली स्कन्ध ५ (बापुदीक्षित कृत)
६७. विश्वामित्रकल्प
६८. पुरश्चरणचन्द्रिका
६९. श्रीसूक्तविधान
७०. मन्युसूक्तविधान
७१. भास्कररायचन्द्रदीपिका
७२. नवरत्नेश्वर
७३. गायत्री (भाषा)
७४. वसिष्ठकल्प
७५. दत्तशाबर
७६. उड्डीशशाबर
७७. पद्मावती
७८. त्रिपुरसुन्दरी
७९. एकादशपञ्चाङ्ग
८०. अष्टभैरवपञ्चाङ्ग
८१. पिशाचाद्युपद्रवनिरास ग्रन्थ
८२. ,, यक्षध्यान मूल
८३. शतचण्डी-सहस्रचण्डी-विधान (कात्यायनोक्त)
८४. ज्योतिष्मतीकल्प
८५. शारदातिलकोक्त श्याम-भट्टकृत गायत्रीपुरश्चरण
८६. भीमसेनविरचित सप्तशतीटीका
८७. मन्त्रशास्त्रचन्द्रिका
८८. सुदर्शनसंहितोक्त शाबरकल्प हनुमन्त मन्त्रव्याख्या

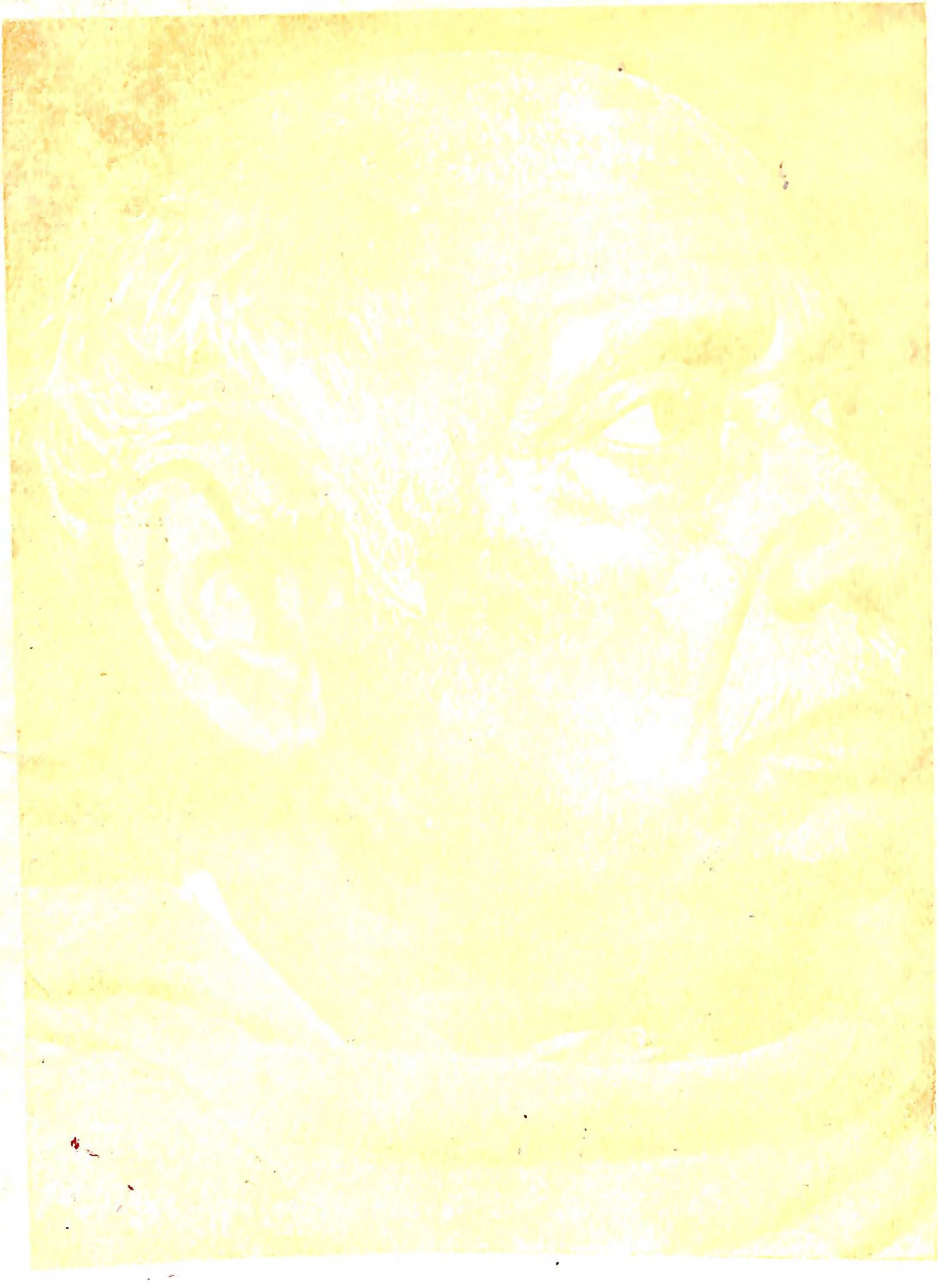

ग्रन्थकार